

114a

DIONYSI

HALICARNASENSIS

ANTIQUITATVM ROMANARVM

QVAE SVPERSVNT

RECENSUIT

ADOLPHVS KIESSLING

VOL. III

*Ca 18/2*

**EG**

LIPSIAE

IN AEDIBVS B. G. TEVBNERI

MDCCCLXVII

ADNOTATIO CRITICA

LIBER VII

1, 1 *Καμερίον Β Καμερίνον Α Μακερίνου* Sigonius |  
3 *ἀποστασίας* libri, correxit Sintenis Emend. Dionys. III  
p. 2 | 8 *εὐχερέστεροι* libri, *χαριέστεροι* Sintenis l. l. II p.  
13 | 18 *κεκακωμένην* libri, correxit Sylburg | *πολλῆς Α*.

2, 1 *πρὸς Α εἰς Β* | 18 *οἱ* addidi ex *B* | 23 *τοῦ* addidi  
ex *B* | 28 *ὠρογραφίας Α et Βa* ut videtur | 30 *εὐρεῖν*  
mauolt Sintenis l. l. III p. 3.

3, 1 *ἦν*] *ὄν* Reiske | *οὐκέτι μὴν ΑΒb οὐκέτι Βa* |  
5 *Σικελίας* libri, corr. Stephanus | 9 *τὸ* om. *B* | *κατὰ*  
*τὸ θέρος* maluerunt Sylburg et Portus | 18 *ἐν ταύτῃ τῇ*  
*πόλει Α αὐτόθι Β* | 23 *ταῦτα Β αὐτὰ Α* | 30 *ἐπεκαλεῖτο?* |  
*Μάλιος Βa* | 31 *κλήσιν Α* Suidas v. *Ἀριστόδημος*.

4, 2 *εἰς ὄργην Α* Suidas *πρὸς ὄργην Β* quod fortasse  
praestat | 11 *δὲ οἱ Α οἱ ΒaC οἱ δὲ Βb τε οἱ* maluit Syl-  
burg | 12 *ἐκεῖθεν δὲ? τε* abest a *AaC* | 17 *ἡ* om. *B* | 28 *γὰρ*  
inserui.

5, 4 *τότε* add. *B* | 15 *ἀρπασόμενοι* libri, corr. Reiske |  
*αὐτὸς περὶ ἑαυτῶ σφαλεῖς?* cf. Thuc. I 69 | 26 *ἔφυγεν Α*.

6, 3 *γὰρ* om. *B* | 5 *καταλυθέντος* coniecit Reiske |  
11 *ἅπας* addidi ex *B* | 20 *Μαλακὸς* melius abesset.

7, 7 *καιὸν*] *καινὸν* mauolt Sintenis l. l. III p. 5 |  
11 *ἐπὶ συμμαχίᾳ* Sylburg.

8, 1 *ἐν ταῖς ναυσὶ* libri, quod correxi | 8 *δ' ἐκ παρα-*  
*τάξεως ἀγῶνος Α* | 18 *αὐτοῦ ΑΒ* | 27 *πᾶσι* libri.

a\*

9, 4 αὐτοῦ *B* | 25 πονηρὰς *B* | διαλλαγὰς *B* | 30 συνελθόντων *B*.

10, 6 post δρόμος vel ἐγένετο vel simile verbum intercidisse suspicatur Sintenis l. l. III p. 5 | 16 ὅφ' αὐτοῦ *B* | 23 πᾶσα libri | 25 ποιήσασθαι *Ba* | 27 καταστήσονται *Bb*.

11, 11 καὶ om. *B* | 16 ἢ μία libri ἢν μία Reiske | τε καὶ πονηροτάτων quae a *Ba* abfuerant eicienda videntur, siquidem hoc additamento sermonis aequabilitas corrumpitur | 19 αὐτῶν *AB* | 27 χρυσίον καὶ ἀργύριον *B*.

12, 2 καὶ abesse malim | 3 υποτρέφεσθαι coniecit Stephanus | 10 ἀπείναι libri, correxit Sylburg | 26 ἐξανδιζομένας libri, correxit Stephanus | 28 τε καὶ ποικίλους *B* | 31 τὰς διδασκαλίας *AB*.

13, 5, ἐκπληρώσωσιν *Ba* ἐκπληρώσουσιν *ABb* | 15 πάντας libri | 18 ἐκέλευσε? | διατρέβειν κατεμέλησεν coniecit Reiske | 20 αὐτῶν addidit *B* | 21 διαχορησάμενος maluit Reiske | 29 οἱ addidi.

14, 3 ἀγρίους *B* | 10 χορὴν *B* | 19 αὐτῶ *B* | 21 προαχθεῖς *B* | 27 κατασκευάσας ταῦτα *A* | ἀκριβεῖς *AB* | 31 τε add. *B*.

15, 14 καὶ δὴ καὶ τοῦτο coniecit Reiske | 16 δι' αὐτῆς *B* | 17 τοῦτο in τότε mutare et in praecedens comma transferre maluit Sylburg | 18 εὐπέτειαν] ἄδειαν *A* | 19 παρὰ Sintenis l. l. III p. 10 περὶ libri.

16, 14 τὰς παρακλήσεις *B* articulum omisit *A* | 24 βραχὺν χρόνον τινα *B* | 26 αὐτοῦς] αὐτῆς maluit Reiske | 27 ἔτι om. *B* | 28 τὰ μὲν om. *B* | 30 παρημελημένοις *ABa*, quod recipiendum erat | 31 διὰ τὴν πενίαν Reiske.

17, 1 ἀπορρήτων? | 8 φθόρος ὁ λοιμικὸς ὅσος *B* φθόρος ἐνέσκηψε ὅσος *A* | 9 τόπω ἄλλω *AB* | 10 οὐθ' Ἑλλάδος om. *AB*, ex *C* ante οὔτε βαρβάρου γῆς inserui; cf. I 5. 24 II 19. 31. passim. | 14 οὐέντραι *AB* | 17 τελευτῶντες οὖν Reiske | 23 aut οὐδὲν ᾤοντο δεῖν aut οὐκ ᾤοντο δεῖν Dionysium scripsisse probabile est; δεῖν enim altero loco poni quaevis fere pagina docet. cf. exempli gratia III 10. 19. 24. 28. 54. 73. 74. 75. V 10. 17. 48. 55. | 26 Οὐέντραι *AB* | ἀναλαμβάνειν maluit Reiske.

18, 5 τὸν στόλον? | 12 τὴν inserui | 15 ἢ add. *B* | ἐγένετο? | 17 ἐδόκει τῷ δήμῳ *A* | ἢν om. *A* | 21 πόλει πόλῳ? | 22 ἀποίκους *Bb*.

19, 1 Οὐέντραι *AB* | 7 ἄλλ' οἱ] ἄλλοι *B* | 11 γινομένης *B* | 13 Σικίνιος, quod hic et cap. 17 libri praebent, in *Ἰκίλιος* mutare voluit Sylburg | 30 ἀποκειμένας Sintenis l. l. III p. 11, παρακειμένας libri.

20, 6 οὐς? | 10 εἰ μὴ βουληθεῖεν *A* | 12 ἐπὶ τούτοις διελέτεο c. Reiske | 17 ἐν add. *BCm* | 20 προσηνεῖα maluit Reiske | 23 κοινοῦ libri, quod correxi | 24 καὶ om. *AB*, unde malim μηδὲν [ἐνδιδόναι] μαλακίσεσθαι | 25 τὸν δῆμον om. *B*; in *A* leguntur post συμφέροντος v. 23 unde huc transtulit Reiske | θρασεία *AB* | 26 ἀνυποστῶ — μανία *AB*.

21, 1 πολλῆς πάνυ? | 19 αὐτὸ κρίνειν τε καὶ ψηφίσεσθαι aut κρίναι τε καὶ ψηφίσασθαι maluit Sylburg | 20 συνηγανέτεο *B* apud Hudsonum συνηγανέζοντο relicui | 30 παρελθῶν? | 31 δοῦναι Reiske Sintenis l. l. III p. 11 δοθῆναι libri.

22, 10 παθόντες *Bb* | 12 ὁ add. *Cm* | 23 φανερόν Sylburg φανεράν libri | καὶ ὑμεῖς δὲ? | 26 γνώσεσθε δὲ *B*.

23, 15 αὐτοῖς ἔθος *B* | 18 οὐδέπω ἐδόκει *AC* οὐπὼ ποτε ἐδόκει *B* οὐπὼ ποτε εἰώθει Sintenis l. l. I p. 21, idem postea III p. 13 proposuit οὐπώποτε δοκεῖ; οὐδεπώποτε ἐκεῖ Reiske | 24 δυνάμεθα *B* | 30 ἐξῆ *A* ἐξεῖναι *B*, quod correxi | 31 μὴ add. *BCm*.

24, 4 ἀναδίδωσι] ἄμα δίδωσι Sintenis l. l. III p. 13, quod recipere debueram | 26 ἀνήκεστόν τι *B*.

25, 6 παιδευόμενοι τοὺς υἱοὺς? πολιτευόμενοι uix sanum est | 22 ἐπιδρομάς τε καὶ λεηλασίας *B* | 25 ἐπιλογιζομένοις libri, corr. Reiske | 29 ἐν πολεμίων sive ἐπὶ τῆς πολεμίας c. Sylburg.

26, 2 τε om. *B* | 17 πόνον addidi praeter libros; alterum quo insolita haec praepositionis δίχα significatio defendi posse videbatur exemplum, apud Aesch. Sept. c. Theb. 25, iam diu correctum est | 19 καὶ οὐ μετ' οὐ πολὺ libri καὶ οὐ μετὰ πολὺ Sintenis l. l. III p. 11, quem male secutus sum; καὶ μετ' οὐ πολὺ scribendum erat ex more Dionysi | 22 ἀποστρεφίσθαι libri, quod correxi, ἀπεστρεφίσθαι maluit Sylburg.

27, 6 χρησαμένων? | 8 ὅτε] ὅθεν? | 12 ἰδία ἀμείβεσθαι? | 27 ἅπασιν] ἅπασαν mavolt Sintenis l. l. III p. 11, sed cf. VIII 20.

28, 21 προτέρων?

29, 20 περιβαλλόμενος *B* | 29 ἐλευθέραν φωνὴν *C* |

31 ἀνομολογήσετε *A* quod recipere debui, ἂν ὁμολογήσετε *B*.

30, 23 ἐὰν οὐκ ἄρχοντες Reiske | 24 ἀλλ' add. *B* | τοῦτο δρῶσιν?

31, 9 ἤς] καὶ *B* | 12 ἂ τέως *Cmg* ἄ τε *AB* | 28 τὰς γοῦν ἀγορᾶς?

32, 6 ἄλλα τινὰ ἠδικοῦσθαι *B* ἄλλα πολλὰ ἠδικοῦσθε *A* correxit Sylburg | 7 ἵνα δὴ καὶ γινώμεν maluit Reiske | 23 verba οἱ μὲν ἐπὶ ταῖς περὶ τὰ συμβόλαια βλάβαις, οἱ δὲ ἐπὶ τῇ περὶ τὰς τιμὰς ἐλαττώσει addidi ex *B*.

33, 4 οὖν om. *Ba* | 5 ὄν] καὶ *B* | περιοθεῖτο *B* | 19 δημαγωγοῦντες *B*.

34, 3 τε add. *B* | 4 τὴν om. *B* | 9 καὶ συνκέλλιος *AB*, quod in καὶ Γάιος Ουισέλλιος mutavi, idemque nomen reponere debueram VI 89 | 12 τινὰς libri, correxit Reiske | 19 βίων?

35, 10 τῶν μὲν ἐν τῇ βουλή? | 16 διαλυθείη *ABb*, διαλυθῆ *Ba* | 28 ἔσται?

36, 6 ἀποστροφῆν *ABa* quod recipere debui | 13 ἀναγκαιῶς *B* | 20 μαθόντες? | 24 τῆνεοσι γενομένη βουλή? | 31 ἐργασάμενοι libri, quod correxi.

37, 1 τοῦ τε οἴνου? | 7 οἴγε Sintenis l. I. III p. 11 εἶγε libri | 13 ἔστι] οὐσα *B* | 25 καὶ add. *B* | 26 εἴπομεν *B*.

38, 3 αὐτῶν *B* | 6 τὴν addidit Reiske | 7 καὶ] ἢ libri, correxit Sintenis l. I. III p. 11 | 9 παθόντες *A* | 11 εἰ om. *Ba* | ἐν delendum censet Reiske | μὴ cum Reiskio abesse malim | 13 τί δ' ἂν libri, quod correxi | 21 ἐγὼ δὴ?

39, 1 λέγοντες *Ba* | 6 ἐνέγκαιτε *ABa* | 8 ἀνανακτιήσετε *AB*, quod correxit Sylburg sed inserere debui ἂν. | 18 καὶ συμφέροντα addidit Reiske | 23 ἐνέγκητε *AB* | 30 ἐχρησάμεθα maluerunt Sylburg et Portus | 31 ὑμᾶς] ὑμῖν Portus idque recipere debui.

40, 2 ἀναγκαζόμενοι libri, corr. Sylburg et Sintenis l. I. III p. 3 | 10 ὑμῖν *Ba* | 20 εἴτε] ἦτοι Sylburg ἢ Portus | 26 ἐπαγόμενον maluit Stephanus | 31 πολιτῶν libri, correxit Reiske.

41, 2 οἴμενος ὁμονοῆσαι? | 3 οὐ γὰρ οἶον? | 5 κακῶς *Ba* κακός *ABb* | 10 δὴ Sylburg δὲ libri | χορὴν *B* | 24 ἐαντοῦ *Bb* αὐτοῦ *A* | 32 ἄρα delere malim; σοὶ δ' ἄρ' οὐ Sylburg.

42, 3 ὑπομένει *AB* | 20 ἀπαιτῶν *Cm* ἀπαιτεῖν *AB*.

43, 1 ὑπὸ χειρᾶς *ABa* | 4 ἐγίνετο *B* | μεθελκομένοις libri, correxit Sylburg | 12 ἐπιόντα ὄχλον maluit Sylburg | 13 ὄργας? | 16 προσῆν *AB* ἢν *C* | 19 βουλευμάσι? | 23 τῇ κατηγορίᾳ τέλος ἐπήνεγκε mavolt Krüger ad Dionysi historiogr. p. 474.

44, 5 κατελύθη coniecit Portus | 10 τμήμα libri σχῆμα Sintenis l. I. III p. 20 | 24 ὄντας *B* ἄπαντας *A* | 25 δὲ *B* τε *A*.

45, 1 καθάιρουσι *B* | γὰρ addidi ex *A* | 5 ὑπατικὸν libri, correxit Sylburg | 11 τίθενται *CD* | 12 γε add. *B* | 15 ἀφαιροῦνται αὐτόν? | 17 οὐδὲν μίμημα *B* οὐδὲν νόμιμα *A* | 20 εἶναι libri, quod correxi | 22 οὐ πολὺ *A*; an μετ' οὐ πολὺ παρεσόμενον? | 26 αὐτόν *Bb* | 29 αὐτοὶ inserui ex coniectura Reiskii.

46, 10 ἐξήνεγκον? | 12 ἀναγκαιῶν add. *B* | 27 τῶν *ABA* τὸν *Bb*.

47, 5 στρατείας *B* | 7 εἶπεν libri, quod correxi | 9 ἀθρόως *AB* ἀθρόους *C* | 18 γινόμενον *A* | 23 τάδε. ὑμῖν *B* | 30 προβουλευμάτα libri, quod correxi | 31 δύνασθε libri, quod correxi.

48, 3 ἐνήφισεν *AB* | 4 τὰ δ' delevit Sintenis l. I. II p. 33 | 7 ἀρχαῖον καὶ καλὸν? | 12 Δελίου ubique scribendum erat ex certissima emendatione Gelenii | 17 τοῖς ὑπ' αὐτοῖς *Ba* τοῖς ὑπ' αὐτοῖς *Bb* | 19 συναγορεύουσιν libri, correxit Reiske | 22 φέρειν δὲ libri, quod correxi | 25 σ. δ. τῶν δημάρχων, ὡ. ἢ. οἱ ὑπατοὶ maluit Sylburg | 31 ὁ λεύκιος *B* λεύκιος *A* Δέκιος Gelenius.

49, 1 ὑμᾶς *B* | 2 ἄς οἴμεθα libri ἐσόμεθα Reiske | 3 καὶ add. *BCm* | 4 βουλευμάτος? | 6 αἰτεῖν] ἔτι *B* | 8 μὴ ὡς maluit Reiske | 9 αἴσχιστα *A* | 14 τηλικούτων καὶ τισούτων scripsi coll. VI 79; τηλικούτων καὶ libri | 21 ἀπηλλάξατε *ABa* ἀπηλάσατε *BbC* | 25 δὴ pro δ' ἦν *Ba* | 27 χρησαμένου *AB* | 29 τῶν δήμων *ABa* | 31 ἀπίσασθε libri, quod correxi.

50, 1 ἄπαντας libri, correxit Sintenis l. I. II p. 36 | 5 προβουλεύσαι? | 9 οἷς quod in libris ante περὶ legitur huc transposuit Sylburg | 12 παρακιν-

δυνεύοντες Portus | 13 ὑφ' ἡμῶν *AB*, correxi ex *C* | 14 γράφω *B* | 15 τῶδε libri, correxit Sintenis l. I. II p. 36 | μὴ libri, correxit Sintenis l. I. II p. 36 | 16 γε οὐν *B* γε *A* | οἱ delevi cum *B* | 17 καὶ om. *B* | 18 πολέμιων? | 19 τῶ libri τοῦ Reiske | 22 τῶν μνημειῶν *Ba* | 24 κωλύετε *Bb* | 25 ὑφιστάντες libri, correxit Reiske | 27 ὑμῶν libri, correxit Sintenis l. I. II p. 36i | 29 κοινὰ πᾶσι τοῖς ἅμα πολιτευομένοις? | 32 εἰρηθεῖν *B*.

51, 8 τίς libri τίς δ' scripsi auctore Syllburg τίς οὖν Reiske | 13 ἀφέλεσθε *B* ἀφέλησθε *A* correxit Syllburg | 20 ἀχθῶνται *AbB* | τοῖς om. *B* | 21 κωλύωσιν *B* | 22 ἐλαχίστους libri, correxit Reiske | 23 ἃ libri ἦν Reiske | 26 ὑμῶν *B* | 27 ἐνθυμούμενοις *B* | 28 πολλὰ γὰρ παρὰ *Ba* | 32 μισοδημόταις libri, correxit Sintenis l. I. II p. 36.

52, 4 προειδόμενοι *ABb* προιδόμενοι *Ba*; an προελόμενοι? cf. de Thucyd. 14, 6 | 7 εἴτε libri εἰ δὲ Reiske | 8—10 verba εἴτε κατὰ λογισμόν γέγονε ταῦτα ὀρθῶν καὶ τὸ συμφέρον σκοποῦντα τῆς πόλεως om. *ABC* | 11 συγχορήσειν *AB*, correxit Syllburg | 12 συγχορήσαντες *ABa* | 14 lacunas indicavi auctore Sintenisio l. I. III p. 9 | 18 ἐγγόνοις *ABa* | ἐγγόνοις *Bb* | 20 ἃ καὶ *BbC* om. *ABa* | ἡμᾶς *B* | 21 ὡς προιδότας *B* ὡς περ εἰδότας Sintenis l. I. III p. 9. ego delere malim verba ὡς πρὸς εἰδότας ἅπαντας ex versu 28 male repetita | 30 ὑμῶν *B* | ἐνθάδε καθ' ἡμῶν maluit Reiske.

53, 1 τοῖον *B* | ἡμῶν *B* | 18 ἡμῶν libri, correxit Reiske | 22 ὡς libri ἐν ᾧ Reiske | 23 ἀχρηστίας *AB*, sed cf. VII 24 | 24 ὥστε om. *B* | αὐτῶ *AB* αὐτὸ *Cmg* | 25 ἐπιτρέψαι *AB*, correxit Sintenis l. I. I p. 10 et *Cmg* | 26 ἀνθέξειν ἡμᾶς εἴτι? | 29 τῇ πόλει *B* | ἐκλιπόντας *Bb* | 30 λιμῶ addidi coll. VI 86 | 32 ἡμᾶς *B*.

54, 1 δι' ὧν maluit Reiske | τὰς τῆς βουλῆς *A* τῆ βουλῆ *B* | 8 οὐδὲ om. libri, addidit Reiske | 9 τοῦ πατρικίου *ABa* | 16 ὑμῶν *A*, quod recipiendum erat | 19 διαστήσειν libri, correxit Syllburg | 20 ἐπεβάλλετο *ABa* | 21 περὶ ἑαυτὸν coniecit Syllburg | 26 ἐπὶ τούτῳ maluit Syllburg, sed cf. Lobeck ad Phrynichum p. 275 | 27 ἐπιχλευασμῶ *B* | 28 ἔργων *Bb* | 29 πῶς γὰρ ἂν?

55, 4 ἄρα libri ἄρ' οὐκ Syllburg | 7 προσκαλούμενοι

maluit Grimm | 8 βουλομένοις? | 9 ᾧ om. *B* | 12 εἴτε delevi, εἰ *ABa* | 13 συνήνεργαν ἂν *AB* συνήνεργεν Syllburg | 15 εἴτε οὐχ ὡς libri, correxit Syllburg | 17 ὅτι μὴ ποτε *AB* | 18 ἔχης *B* | 20 δημοτικῶν *A* δημοτικώτατον *B* quod correxi | 28 αὐτὸς *B* νῦν *A* | 30 διεξελθεῖν?

56, 5 σιτοδασίαν maluit Reiske | 15 δεῖσθαι γε libri, correxit Reiske | 16 ἅπαντες libri | 24 αὐτὸν *AB* | 25 ὧν ἐχρῆν *B* | ἀναδέχασθαι — ἐψηφίσασθε maluit Gelenius.

57, 8 τούτων *AB* | περιψύχοντες καὶ περιοροτοῦντες Reiske | 9 ἡμῶν *AB* | αὐτὸν *ABa* | 12 ὡς καὶ *ABb* καὶ *Ba*; ἢ καὶ Stephanus | 13 φύσει non intellego; an σφίσι? | 14 καὶ μὴ τὸ *AB*; an ἢ μὴν τὸ? | 17 καὶ χρόνον libri, correxit Syllburg | 26 οἱ πρεσβύτατοι καὶ ἐντιμώτατοι τῶν ὑπ. maluit Gelenius | 32 ἐπεκύρουν libri, correxit Reiske.

58, 2 παροῦσι libri, corr. Sintenis l. I. III p. 12 | 10 τῆς γνώμης? | 12 ἡμῶν *A* | 14 ἂν om. *B* | προσετέθη *B* | 16 ὑμᾶς τε libri, corr. Casaubonus | 21 ὡς οὐκ ὤμην *ABb* ὡς οἴομην *Ba* | 23 ἡμῶν libri, corr. Portus | ἡμᾶς *B* | 25 προσελθόντα libri, correxit Reiske | 28 πειρασόμεθα libri, quod correxi | 31 ἐνθυμούμενος *ABb* | εἶχε *AB*.

59, 1 λογιζόμενος *ABb* λογιζομένοις *Ba* ut videtur | 8 ἀφέλξει maluit Reiske | 10 οὖν addidit Reiske | 17 οὕτως *Ba* ὡς οὕτως *Bb* | 18 ἡμῶν *B* quod correxi; om. relicui libri | 20 συμβεβηκόσι *B* | 21 καὶ ἐψηφίσασθε libri, correxit Sintenis l. I. III p. 12 | 24 πάντας γε *B* πάντες γε *A* quod recipere debueram | 25 παρακρουσθέντας *AB* | ἄνυρῶσαι *Ba* ἵππυρῶσαι *ABb* | 28 δεδεημένος maluit Reiske.

60, 7 παραγενόμενον *C* | 12 προβέβηκε λέγοντος libri, correxit Syllburg | 13 ὑμῶν *A* | 17 an ἡμῶν ἐτι μάλλον ἐνέκειτο καὶ ἑρᾶν? | 21 τιμῶν *B* | 22 προγόνων libri, correxit Syllburg | 23 ἡμῶν *B*.

61, 2 ὥσπερ ἐχρῆν Sintenis l. I. III p. 22 ὥσπερ ἔφην libri | 6 ἄ? | 10 φιλοπόλεμον libri, corr. Syllburg | 17 πάντες? | 18 οἱ om. *AB* | 20 ἔσχετε coniecit Syllburg | 22 οὐκ ἂν? | 23 verba corrupta sic restitui posse coniecit Sintenis l. I. III p. 21 ut scribatur ἀλλὰ τὰς ψυχὰς ἂν πρότερον προέμενοι ἢ ταῦτα, ἀνήρησθε ἂν, οἱ μὲν etq̄s.

62, 7 ἔπαθε ἀγαθῶν πολλῶν? | 9 παρ' ὑμῶν maluit Syllburg | 10 κἀνεῖνο *Bb* | μετὰ τούτων *B* | 18 αὐτὸς om.

*B*; malim  $\delta$  αὐτὸς coll. VII 36 | 21 ἀντέστητε *A* | 23 ὅταν *AB*, correxit Sylburg | 25 ἤς om. *B* | ὑφείται *A* ὑφ' ἧς *B* | 30 ἡμῖν *B*.

63, 8 ἔξω τούτων Grimm | 10 προτρέπειν libri επιτρέπειν Camerarius | 11 ἀντιπράττειν cum Reiskio scribendum ex more Dionysi | 12 ἀμάργοι libri, correxit Sylburg | 23 οὖν delet Sintenis l. I. III p. 12 | 24 ᾧ scripsi ὄν libri | ἐκρατύντο *C* quod praestat | 28 αὐτὸς γε libri, correxit Reiske | 29 τουτο *B* | 31 ἐννεακαιδεκαέτης *ABb*.

64, 1 οὐδὲ *B* | 12 ἐπὶ τῷ νόμῳ maluit Reiske; an ἐν τῷ δῆμῳ? | δεδοκιμασμένην libri, correxit Reiske | 6 ἡμᾶς *ABa* | 11 κωλύσεως τῶν ἀδικούντων maluit Sylburg | 17 ἀξιώσει ἐτι *A*; an ἀξιώσειεν ἐτι? | 18 δίκαιον δὴ libri, quod correxi | 19 ἡμᾶς libri, quod correxi | 20 αἶς γε libri, correxit Reiske | 23 δίκην libri, quod correxi | 27 ἦ om. *Ba* | 31 αὖ addidit Reiske | 32 αὐτῷ *AB* | πρὸς ἀνδρὸς libri, correxit Reiske.

65, 1 γένονται *B* | 6 ἀξιῶ libri ἄξιον Reiske | ὅμας post βουλῆς add. *AC* | σκοπεῖν libri ὑποτοπεῖν Casaubonus | 23 πολιτεύονται *AB* | 30 αὐτοῖς *B*.

66, 10 περὶ θεῶν maluit Sylburg | 11 τί ἂν ἄλλο maluit Reiske | 19 πολέμων οὐδὲ libri, correxit Sintenis l. I. II p. 35 | 20 οἷς *ABa* | 22 ἐπαναταθείσας Sylburg | 24 δὴ περιδράστε *Ba*; malim εἴπερ δὴ.

67, 1 μὴ περιέχεσθαι *ABb*, μὴ om. *Ba* | 5 ἡμῖν *AB* | 7 εἴη Casaubonus ἦ libri | 17 πολέμων προσφάσεις *A* πολέμους προσφάσεις *B*, correxit Reiske | 26 οἰόμενον δεῖν coniecit Casaubonus | 27 γενήσοιτο? | 30 τὴν αὐτὴν χάριν libri, correxit Sintenis l. I. I p. 29.

68, 2 μηδὲν διαγνώσκειν maluit Sylburg | 5 οὐ μικρὰ... εἰς σωτηρίας ὁππῆν libri, quod correxi | 10 προτέραν libri, correxit Sylburg | 12 χρηστὸν deleui | 14 πάσχειν? | 29 ἀπολυσομένον maluit Reiske.

69, 11 τὸ λοιπὸν add. *B* | ἐξύφαινε maluit Sylburg | τὸν λόγον *Ba* | 16 προσλαβοῦσαν maluit Reiske | 17 τῆς δόξης scripsi, δόξης libri | 18 τὰ add. Reiske | 20 μηδὲ τὴν ἰσχύν? | 21 πάντων Sylburg, τούτων libri, | 24 ἀκρατον μήτε μοναρχίαν μήτε ὀλιγαρχίαν? cf. II 3 | 27 ἀποτρέπει *B* | 29 γενόμενον Stephanus | 32 ἔθεισιν?

70, 1 μὲν οὖν μὴ *AB*, quod correxi; μὲν οὖν ὡμῆ (*D*) | 12 τε add. *B* | 15 ἀποδείκνυνται libri, correxit Reiske; an ὤεσθε δεῖν ἀποδεικνύναι? | 17 ἦ δὴ βουλή *A* ἦδη ἢ βουλή *B*, correxit Reiske | 31 ὑμῖν add. *B* | ἐνθάδε libri, correxit Sylburg.

71, 1 συννοεῖν libri, correxit Reiske | 6 καὶ καὶν *B* καὶν *A* | 7 δὲ δὴ *Bb* δὲ δὲ *Ba* δὲ *A* quod praestat | 12 ἀνὴρ φρονήσει *B* | 24 ἀποδείκνυτε *AB*, correxit Portus | 25 ἠγησαμένους *B* | 32 σκεναζόμενος libri, quod correxit Reiske.

72, 2 κακῶν *B* | 22 ἐφ' οὗ libri, correxit Sylburg | μὲν *Ba* | 30 ἠτήσαντο *Bb*, ἠτιάσαντο *Ba* ut videtur.

73, 6 ἐπίδικον] ἐπὶ δίκην? | 18 ἀγορῶν *ABa* | 23 ὁκτὰ ἡμέρας maluit Casaubonus | 27 διεξελθόντες?

74, 4 ὡς] ὁ maluit Sylburg | 11 ἐν αἷς libri, correxit Hudson | 12 κατ' αὐτὰς libri, correxit Sylburg | 14 δὲ ἐναντιουμένων libri διεναντιουμένων Sintenis l. I. III p. 13 | 18 ὁ om. *B* | ἐπιτρέψει *B* | 25 ἅμα addidi; οὐχ ἅμα πάντες ἀναλ. mavolt Sintenis l. I. III p. 13.

75, 3 μαχομένων delendum censuit Reiske; ἐν ταῖς μάχαις contra spuria esse iudicavit Grimm | 6 λόγοι Portus φυλαί libri | 11 ἐλάττονα seiunxit Hudson | 17 σαλπικτῶν *Ba*, correxit *Bb* | 23 ἔσχατον *AB* | 24 στρατιῶται libri στρατιῶν τε Sylburg et Portus | 30 φρονήσειαν?

76, 1 μὴ τοῦτο] μετὰ τοῦτο *B* μετὰ τούτων *A*, correxit Hudson | 9 πέρας libri, quod correxi coll. III 20 τοῦτο δὲ ἦν σπάνιον καὶ οὐ μακρὰν ἀπέχον ἀδυνάτου | 15 ἀπὸ τῆς πρώτης κλήσεως libri, quod correxi | 19 ὄντο δεῖν συναγεῖν *A*, quem verborum ordinem recipere debui | 21 φυλετικοὶ libri ψιλοὶ Sylburg | 24 ψήφων quod om. *B* deleui | 27 αὐτοὶ libri, quod correxi | 32 λέγεσθαι] γενέσθαι?

77, 5 ἀνταποδοθῆναι? | 7 χοεῖαν libri χάριν Sintenis l. I. I p. 27 | 15 προορᾶν? cf. VIII 53 | 19 δικαίως *Ba* δικαιώσωσιν *ABb*; an ὥστε οὐκ ἂν δικαίως — ἀπιστεῖν? | 23 δι' αὐτὸν *B*.

78, 6 ἀδίκημ' ἀνδρὸς? | 7 καὶ τὰ παραπλήσια? | 29 Σικίνιος *B*.

79, 23 τὸ deleuit Reiske | 27 τις om. *B*.

80, 1 τὴν om. *Ba* | 7 ἢ delevi cum *B* | 16 οὐδ' *AB* οὐχ scripsi | 25 ἀπεμπολῶ? 29 οὗτος μὲν οὖν ὁ Μάρκιος? | 30 πρῶτος καὶ addidi ex *B*.

81, 3 περιβαλλομένων *B* | ταῦθ' ὑπέδειξεν *Bb* | 9 ἐν add. *B* | 32 γινομένη *B*.

82, 8 αὐτὴ καθ' ἑαυτὴν? | 11 ἄξιν libri ἐξάγειν scripsi | 27 ὄλῳ libri, quod correxi | 32 ὁ om. *B*.

83, 1 ἐπιφανείσης σφίσι malim cum Reiskio | 6 τιμήσαντες *B* correxit Reiske; θανάτῳ αὐτὸν τιμήσαντες *A* | 8 de tribuum numero falso a Dionysio relato cf. Mommsen de Tribubus p. 9 et Schwegler Hist. rom. II p. 352 | 13 πρόσκλησις Reiske | 14 καὶ add. *B* | 17 ὑπὸ τοῦ δήμου libri, quod correxi | 22 μεταλαμβάνειν? | 26 λέγω δὲ addidi ex *B* | 28 ἐγίνετο τότε κύριος?

84, 11 οἱ add. *B* | 14 ἐμὲ delevi cum *B* | 24 προἰὸν libri, quod correxi | 25 ἄλλοτρίας *B*.

85, 3 ὑπὲρ αὐτῆς maluit Sylburg | 10 εἶναι λόγος *B* | 11 εἰ] οὐ *ABb*; οὐ *Ba* ut videtur, quod stare possit si λογίζομενος reposueris | 15 μᾶλλον δὲ διὰ τοῦτο *A* | 17 μεθρημόσαντο maluit Reiske | 31 comma, quo vulgo post ἄξιον distinguitur oratio, delendum est | 32 πολλὰ add. *B*.

86, 3 ἐργασαμένοις *B* | 9 καὶ ante δικαίων addidi; in *B* post δικαίων tres litterae erasae sunt | 18 προειληφώς *B* | 28 καὶ τὴν καρτερίαν? cf. Suidam s. v. Μάρκιος.

87, 1 γὰρ add. *B*; οὐδὲ πρὸς Suidam l. l. | 4 παραθέμενος libri, correxit Reiske | 7 οὔτε διοικησάμενος addidit Sintenis l. l. I p. 24 | 18 καὶ βοσκημάτων Sintenis l. l. III p. 11 ἢ β. libri | 29 ἀλλὰ ταῦτα πάντα *Bb* ἀλλὰ..... ταῦτα καὶ τὰλλα πάντα *Ba*; quinque litterae post ἀλλὰ a *Bb* erasae legi nequeunt. | 32 Λατῖνος libri, quod correxi.

88, 6 Λατῖνις scribere debueram | 16 καὶ δεύτερον τὸ ὄναρ coniecit Sintenis l. l. III p. 16 | 18 ἔχειν delevi cum Reiskio | 19 ἐκφέρειν libri, correxit Reiz ad Lucian. rhet. praec. 24 | 22 νέον ὄντα maluit Reiske | 23 ἀναρπασθέντα? | 25 καὶ om. *B* | 31 προθεῖναι?

89, 1 καταστάσεως libri, correxit Sylburg | 4 ἦκεν *Bb* ἦκειν *Ba* | 11 πρὸ delevi secundum *CD* | 12 ἠγούμενος

scripsi, ἀγόμενος *B* προαγόμενος *A* προηγούμενος maluit Sylburg | 25 ἐν abesse malim | 28 ἐποιεῖτο *A* ἐκινεῖτο *B* idemque legerat Plutarchus Coriol. 24.

90, 4 συνοικήσαντα *Bb* | 16 δεῖν αὐταῖς? | 20 πατρῖου σεβασμοῦ *B*.

91, 4 πρῶτα ἱερά libri, correxi auctore Reiskio | 6 πᾶσιν *B* | 13 ἐπὶ τῇ πόλει libri, quod correxi | 14 ἀπολαβεῖν coniecit Sintenis l. l. III p. 10; ego ὑπολαβεῖν prorsus abesse malim | 16 εἴτε delerunt Portus Reiske, εἴτε κατ' ἄλλην εἴτε κατ' ἐκείνην mavolt Sintenis l. l. III p. 10 | 23 ἀνηρ scripsi, ὁ ἀνηρ *A* ἀνήρ *B*.

92, 5 πανηγυριασμούς *B* | 11 ἐξουσίαν] οὐσίαν mavolt Mommsen de tribubus p. 66 | 14 οἱ πρόσηβοι *B* πρόσηβοι relicui | 18 κατ' ἕλας τε καὶ λόχους? | 19 ὡς add. *Bb*, om. *Ba* | 22 τοὺς ἀξέκτους ἵππους libri, quod correxi | 25 τὰ δὲ Reiske | 29 ἀποδῦναι *Ba* | ὄλον τὸ σῶμα maluit Reiske.

93, 1 ἀναφαίνειν *A* | 6 μέσον *AB* | 21 διαφυλάττοντες Sintenis l. l. I p. 17 οἱ φυλάττοντες libri | 25 πολλοὶ inserui ex *B* | 28 τε addidit *B* | 30 καὶ abesse malim.

94, 3 περιηρημένα libri, correxit Reiske | 6 χωρίον *AB* correxit Sylburg | 7 ἀνεδίδον libri, correxit Sylburg | 8 an σχήματα· ὁ μὲν πρῶτος εἰδοφορῶν? | 9 προκλειύσασιν *AB* | 13 τοῖς addid. *BC* | 17 ἐνυθμῶ scripsi ἐν θυθμῶ *B* θυθμῶ *Aa* τε θυθμῶ *Ab* καὶ θυθμῶ vulgo | 23 καθίστη *AB*, correxit Sylburg | 25 καὶ delere maluit maluit Sylburg | 30 ἐν addidit Reiske.

95, 3 ἤσκησε *AB* | 13 προκατορχουμένους *B* | εἰσάγων Sylburg ἄγων *AB* | 17 μέσους *AB*.

96, 4 στρατηλάτας *B* | 5 τοῖς delevit Hudson | 6 παρορχουμένοις libri, correxit Sylburg | 9 σατυριστάς libri, correxit Sylburg | 20 ὄλην τὴν ὁδὸν? | 24 ἔχουσαι? | 27 παραδέδονται?

97, 2 ἀφ' ὧν *AB* | 3 Φερσεφόνης *AB* | 8 Ἑλένης vix sanum; an Σειληνοῦ? | 9 οἰκήσαντες *B* | 11 πάντας libri | 15 οὐχ ὡς ὑγιῆ *B* | 17 ὁ add. *B* | 20 δημητρος libri, correxit Meineke | 22 ὁ μὲν — ἔπαιεν? | 28 ἐπιθέντες?

98, 3 προῦβάλλοντο *B*; ceterum versus ex II. α 449 et

458 conflatus est | 18 δ' omisit B | 28 βαρβάρους καὶ τινὰς libri, quod correxi | 30 ἔτι scripsi ἔστι libri.

99, 1 ὡσπερ libri ὡς παρ' Sylburg | 2 lacunam statuit Reiske et totum locum sic restituit: Ολυμπιασὶ τε καὶ Πυθιάσι ἐποιοῦν καὶ μέχρι τοῦ νῦν παρόντος ἔτι ποιούσιν | 5 διατελεῖ? | 7 ὃν addidi | 12 τε add. B | μὴ add. Valesius | 13 ἕτερόν τε Reiske | 16 αὶ om. B | Ἰππιων Gelenius | 18 καλοῦσιν add. B | 27 τινὰς οἷς ἐτίμων libri, correxit Reiske.

100, 7 ἄρχοντα?

## LIBER VIII

101, 8 ἐπὶ scripsi ἐν libri | 12 ἐλασθεῖς Ba | τ' addidi ex A, om. B | 18 γοῦν libri, correxit Sintenis l. l. III p. 12.

102, 7 ἀντίον B | 24 ἐροίμενος libri, quod correxi.

103, 4 αὐτόν B | 5 post καὶ aliquod vocabulum, ut εὐεργεσίαν vel tale quid intercidisse videtur | 13 ἀπειροπόλεμος scripsi ἀπολέμους libri | 16 πράξεις δικαίας maluit Reiske | 26 ταῖς addidi | 31 ἀπάτης?

104, 2 ἐπὶ μέσον libri, correxit Reiske. | 13 ὡς om. B | 19 ἀρχῆς libri ἐορτῆς Sylburg | 23 κατασκευοῦν B.

105, 1 αὐτὸς delevi cum A τε τῆς αὐτὸς αὐτοῦ B | 3 ἐκφέρει malim cum Reiskio | 11 προσελθεῖν libri quod correxi, συνελθεῖν Sintenis l. l. III p. 22 | 13 ἀπασιν libri | 19 ἀπειναι libri, correxit Sylburg.

106, 11 πάντα libri | ἔναι libri, correxit Reiske | 16 καλλίστη κείσθαι συνόδῳ Ba ἐν καλλίστῳ κ. συνόδου maluerunt Reiske et Lobeck ad Phryn. p. 280 | 20 παρα τὰς σπονδὰς AB.

107, 1 πάντα B | 4 ἦθρσιν] πλήθρσιν? cf. VII 35 | 11 προσήκε B | 17 μικτόν add. B | 31 πρσβυτάτων libri, correxit Reiske.

108, 4 βουλόμενοι add. B | 5 ἔχειν delevi cum B | 17 προσεκαλέσαντο maluit Reiske | 21 ἐκ τῆς πόλεως ὁ τύραννος ἀναιρεῖ B τῆς πόλεως ἀναιρεῖ A.

109, 13 ὑμῖν Reiske τῆν libri | 16 πρότερόν γε etsi

dubitanter scripsi, ποτε ὄντες libri; ποτε ἐχθροὶ ὄντες Reiske | 23 παρ' ὑμῶν A | 24 εἰ addidi ex B | 32 ὡς om. AB.

110, 3 πολεμίων maluit Sylburg | 6 ἀποδείξωσι Bb | 7 ἔχουσι] ἀποδείξουσι B, de A non mihi constat | 11 περὶ τοῦ πολέμου? | 23 ἔχουσι addidit Sintenis l. l. III p. 6.

111, 6 ἂν ὁμολογήσουσιν libri, correxit Stephanus | 11 Ἀλβανοὶ Dionysium scripsisse vix crediderim, itaque aut Λατίνοι aut Σαβίνοι legendum videtur | 14 προτερον libri, correxit Reiske. | 17 ἀπολήψεσθαι Ba οὐκ ἀπολήψεσθε Bb | 25 ἕκαστα A | 26 post ἐπιτρέψατε nonnulla velut περὶ δ' ἐμοῦ ἀξιῶ ὑμᾶς ὡς περὶ φίλου βεβαίον intercidisse suspicatus est Reiske | 30 καταχορήσθαι AB.

112, 6 ἐπεσήμηναν libri, correxit Reiske | ὑποτιθεμένου Ba | ὑποτιθεμένου ABb | 7 προθέντες Ba προσθέντες ABb | ἔτι υροῦσι mavolt Sintenis l. l. III p. 3 | 11 τε add. B | 17 ἐπερρώσθησαν? | 18 ἡωμαίων B.

113, 7 τε add. B | 9 οὐκ ἀδικεῖσθε Sintenis l. l. III p. 14; ego transposito νῦν vocabulo malim εἰ — δόντες — ἔπειτα μεταδόξαν ὑμῖν ἀπαιτεῖτε, ἀδικεῖσθε μὴ κομιζόμενοι· νῦν δὲ πολέμῳ ἀφαιρεθέντες — ἀδικεῖτε eqs. | 14 αὐτῶν Bb | 15 ἀπαντας δὲ Reiske | 17 ἔτι ABb ὅτι Ba | 18 δορικτήτων A | 22 ἀρχητε maluit Reiske.

114, 4 τὰ add. B | 27 χώρα Sintenis l. l. III p. 15 χωρία B τὰ χωρία A | 31 αὐτὰ coniecit Sylburg.

115, 5 ἐξαιρεθῆ scribendum erat | 19 ἐκεῖ libri ἐκεῖνοι scripsi | 26 ἦδη add. B.

116, 10 αὐταῖς? idemque suaserat Portus | 12 ἦδη] γη δεῖ vel νῦν ἦδη Reiske; an ἡμῶν? | 13 ὀρθοῦν AB | 22 ἐπιτυχῆς ταῖς μάχαις AC | 30 verba ὁμοίε τοῖς πολεμίοις abesse malim.

117, 20 παρασκευάσασθαι? | 23 τῶν om. B | 27 ὡς delere voluit Sylburg.

118, 6 ἀποδείξει ἕως scripsi ἐκπέμπειν τε ὄσῃν libri, sed ὄσῃν in B in rasura positum; pro ἕως fortasse reponendum τέως | 16 ἀπαντα libri | 22 φρουροῖς libri χωροῖς scripsi | 26 αὐτοῖς maluit Sylburg | 27 ἐνδεῖν maluit Reiske.

119, 12 ταῖς πόλεσιν vix recte dictum; an τοῖς πλήθρσιν? ἐν τοῖς πολέμοις coniecit Reiske | 20 εἰ τινα B.



120, 11 στρατηγός delevi cum Reiskio | 21 πόλεις add. *B* | 25 τὸν addidit Sylburg.

121, 2 ἐπὶ τὰς πύλας ἀναλαβῶν libri, correxit Sylburg | 5 ἐφρασηκός coniecit Sylburg | 24 ἐξεκόμεστο *AB* | 25 Βωλανῶν ἐτέραν libri, correxit Sintenis l. I. II p. 29 praeunte Reiskio | 27 παρασκευασμένοι *ABA*.

122, 2 τούτων om. *B* | 6 χωρίῳ add. *B* | 8 συνίσταται καὶ *B* | 13 οἱ *B* | 22 ἐκβιασάμενος libri, quod correxi.

123, 3 αἱ ἄλλαι Sylburg καὶ ἄλλη libri | 6 ἐγκατεσκευασμένοι libri εὐκατεσκευασμένον Gelenius | 9 ἀπήρραξαν libri, quod correxi | 26 τοῦ τεύχους πλησίον *B* | 28 ἀπαντῶσι πάντες προτείνοντες? in *B* inter ἀντι et προ quattuor litterae erasae sunt. | 31 τε add. *B*.

124, 1 Κοπιολανῶν *AB* Κοριολανῶν vulgo. Καρυντανῶν maluit Niebuhr Hist. rom II, 198 | 2 ὡς delevi cum *A* | 5 δὴ inserui ex *A* | 6 αὐτοῖς libri, quod correxi | 14 Βολὰς *B* Βολὰς *A*, correxit Gelenius ex Steph. Byz. s. v. Βοίλλαι | τε omisi cum *B* | 24 Βολανοὶ *B* | ἐξέθειον ἀνοήγοντες libri, correxit Reiske | 26 ἐφισταμένους libri, correxit Sylburg | 28 πολὺς om. *B*.

125, 1 οὐ λόγος *B* | εἰς τὸ εὐψυχον? | 4 δὲ ταύτης omisso καὶ *B* | 10 τῶν ἄλλων χωρίων? | 11 χάραν *AB* | 13 τε Reiske γε libri | 17 προγόνους *Ba* προγόνοους *ABb*, corr. Sylburg | 21 ἡ πολιορκία libri, corr. Reiske | 22 πολιορκίας *AB*, sed in *A* additum γο τειχομαχίας quod recepi | 23 περιετέφρευσεν libri, corr. Sylburg | 25 αὐτῶν *AB*, corr. Sylburg | 32 τόδε om. *B* | χωρίον mavolt Sintenis l. I. III p. 15.

126, 3 τοῦτο add. *B* | 8 προσθεῖναι *ABA* | 13 ἐκαστῶ om. *B* | καὶ τῶ] ἢ τῶ libri, quod correxi | 15 ἰδίας Sintenis l. I. I p. 19 ἴσας *B* om. reliqui | 18 βούλημα *Ba* | 24 κλοιρίας *A* κλυ...ίας *B*, tribus literis erasis | 27 τὸν πόλεμον Portus | 31 τείχεσι libri, correxit Sylburg | 32 τοὺς ἄλλους τοὺς ἐρμυνοὺς *AB*.

127, 11 προδιδόμενοι libri, correxit Reiske | 17 ποστούμεος *ABb*.

128, 13 διαλύσεσθαι *Bb* | 19 ἤκον] ἀπήγον? | 23 ἐπὶ δίκη libri, correxit Stephanus | 28 ἐπιχειρεῖν Sintenis l. I. III p. 7 ἐπὶ libri.

129, 6 δυσὶ γὰρ (*D*) | 18 καὶ εἰ Reiske καὶ *B* εἰ δὲ

*A*, in archetypo fuerat καὶ 20 τὰ add. *B* | 21 ἅπαντα libri | 29 αὐτῶν add. *B*.

130, 3 ἀφαιρέσει δὲ δὴ libri, correxit Sintenis l. I. I p. 27 | μὲν om. *B* | 10 ἀνθρώπων add. *B* | 13 ὡς om. *B* | 15 οὖν om. *B* | 23 φιλονεικοῦντες *A* φιλων ἤκομεν Reiske; an φιλων εἰκοντι? | 29 ἅπαντα libri.

131, 2 πάντων libri | 26 μὴ τυχόντι *AB* ἐπιτυχόντι *D*.

132, 2 καθίστασθαι maluit Stephanus | 5 συμμαχῶν ἀπόικων libri, correxit Sylburg | 8 ὅσοι παρὰ πάσαις libri, quod correxi | 15 μὴδὲ πεδανοῖς libri, correxit Reiske | 19 φανλότητα τοιούτων ἐρμυμάτων coniecit Reiske | 23 ἐπαγόμενος? | 26 ὄντες] παρόντες?

133, 4 μὴ add. *B* | 5 πέσασι *B* | 13 κρίνεις *AB* | 16 φωνί *A* ut videtur | 20 μαθήματα φέρει *A* πάθη μεταφέρει *B* quod correxi | ἐπιχειρεῖν *Ba* | 27 ἐπὶ τουτοῖς *B*.

134, 1 ὑπάρξῃ κατὰ γνώμην? | 2 ὑποδεξαμένοις μίμνη δὲ καὶ αὐτὸς σεαυτὸν *A* | 3 καὶ ἀδυνάτοις scripsi ἢ δυνατοῖς *A* ἢ ἀδυνάτοις *B* | 9 ἀποκτείνων *AB* | 17 τὰ ἔσχατα maluit Reiske | 19 ἔσται Sylburg ἐστὶ *AB* | 21 τε add. *B*.

135, 1 εἰς om. *C* | | ὅμοια] οἰκεῖα? | 3 δεινοὺς add. *B* | 6 σὺ addidit Reiske | 7 δὴ add. *B* | 8 δὴ add. *B* | 10 καὶ om. *B* | 31 καὶ κόμισαι add. *B* | 32 γυναικὸς τε φιλ. libri correxit Reiske.

136, 6 τοῖς ἄλλοις om. *B* | 22 τὴν add. *B* | 24 δὴ scripsi δὲ libri.

137, 8 ἡγωνισάμεθα? | 18 εἰ μὴ καὶ libri, correxit Sylburg.

138, 12 ἀλλ' addidi ex *ACm* | 15 διατελεῖς *B* | 20 διαμένει *A* διαμένη *B*.

139, 3 ἀποδοθείσης? | 4 ἤξοντα libri ἐκόντα Reiske | 14 ἀπ' ἀνάγκης maluit Reiske | 18 μου om. *B* | 19 φέρε θὴ καὶ *C*.

140, 5 τὴν πόλιν add. *B* | 13 παρέδωκα *B* | 25 οὐδὲν om. *B* | οἶοί τε *B* βούλησθε *A*, correxit Sintenis l. I. III p. 25 | 28 μὲν add. *B* | 31 ἢ τιμὴν abesse malim.

141, τούτοις Οὐολούσκοις *B* τοῖς Οὐολούσκοις *A*; Volscorum nomen ex glossemate ortum expunxi | 7 ἐγένετο *Bb* | 8 ἀνέτρεψε *Bb* καὶ ἀνέστρεψε *A*; ἀλλ' ἀνέστρεψε maluit Reiske | 10 τούτοις add. *B* | 11 δεινότατα coniecit

- Reiske | 25 *πάλιν προδοσία* libri, correxit Sylburg | 26 *οὐκ deleuit Sylburg οὐκ ἂν ἐμπτύσειε* maluit Reiske.
- 142, 8 *τὰ* add. *B* | 28 *φυλάξων* addidi ex *A*.
- 143, 4 *ἄψως*] *φύσεως*? | 9 *αὐτῶν* *Ba* | 10 *τοῦ* add. *B* | 13 *φιλοποιούμεθα* *B* *φίλους ποιούμεθα* *A* | 18 *οὕτως* addidit Sylburg | 22 *ταῦτα* add. *B* | 24 *τὰ* expunxi cum *B* qui omisit.
- 144, 4 *ἐγὼ μὲν* Reiske | *δὲ* add. *B* | 6 *αἰτεῖσθε* *γε ἀνοχᾶς ἐπὶ διαλλαγαῖς* *B* | 16 *ἀποίκους* *Bb* | 20 *οὐ* — in cuius loco nescio quo casu *μη* typus expressum est — inserui; in *B* post *δὲ* duo litterae erasae | post *ταῦτα* trium litterarum rasura in *B*; an *ταῦτα* *δη ἀπαγγέλλετε*? | 27 *ὃ* om. *B* | 29 *εἰς ἃ* libri *ἴσα* Hudson | *τε* add. *B*.
- 145, 2 *πρὸς τούτοις* maluit Reiske | 9 *αἰρήσονται* *B* | 25 *ἢ* deleui cum *B* | 27 *λογγάδι* libri, correxit Sylburg | 32 *αὐτῶν* deleuit Portus.
- 146, 6 *Ἀλβήνας* *AB*, *Λαβινιάνας* Sylburg | 7 *Μογιλίνους* *B* | 8 *χωριελανοῦς* libri, *Κοριολανοῦς* Stephanus | 18 *καὶ* ante *καταλυσάμενοι* add. Portus | 30 *τοῖς* om. *B*.
- 147, 16 *αὐτοῖς* add. *B* | 26 *ὑπαίθριον* scripsi *ὑπερ-όριον* libri.
- 148, 1 *δι' οἰανῶν* Reiske *οἰανῶν* *B* *οἶον* *A* | *ἢ ἄλλης τινὸς ὀντείας*? | 6 *δὲ* add. *B* | 21 *ἐπέστειλεν*? | 26 *μηδὲνα* *Ba* | 29 *ὑπὸ* libri *ἐπὶ* Sintenis l. l. III p. 15.
- 149, 17 *θελήσωσι* *B* | 22 *δεόμεναι* libri, correxit Sintenis l. l. III p. 15 | 23 *ἀπελήλακεν*? | 24 *εὐνοίας* libri, correxit Reiske | 28 *βαδίζομεν* *B*.
- 150, 13 *προῆλθον* *B* | 17 *οὐελουμνία* *B* | 21 *αὐται* *B*.
- 151, 5 *νήπια καὶ ταυτὶ τὰς γενναίας ἴθι* *AB*, correxit Sintenis l. l. III p. 29 | 8 *σπείσεσθαι* *B* | 17 *ἀληθῶς* add. *B* | 17 *ἔκγονοι* *ABb* *ἔγγονοι* *Ba* | 19 *αὐται* *AB* | *διελύσαντο* libri, quod correxi | 21 *τὴν* add. *B* | 24 *ἔγγονοις* om. *B* | 29 *ἔσιγα* *συνουδορμένων*? | 31 *ἢ* om. *B*.
- 152, 7 *τὴν δύστηνον οἰκίαν* *A* | 9 *μαθοῦσαι* *λέγειν* add. *B* | 10 *τῇ δίκῃ* *ABb* | 11 *καθημένας* add. *B* | 14 *ἀνακαλουμένας* libri, corr. Portus | 15 *ἀποθεν* *Bb* | 23 *ἡμῶν* libri, corr. Gelenius.
- 153, 2 *τὸ νεώτερον* *B* | 31 *ταῦτα* addidi auctore Reiskio, qui maluit *καὶ ταῦτα μηδὲνα μηδὲν ἀδικῶν*.

- 154, 5 *εἰς αὐτὸν* add. *B* | 16 *παρουσῶν* add. *B* | 26 *οὐτετουρία καὶ τέλος ἀπῆει τὴν. π. ὕ. τ. π. ποιησαμένη ἦν ὑπέσχετο* *A* | 31 post *ἐλπίδος* septem litterarum litura in *B*; an fuerat *τέλος ἀπῆεσαν*?
- 155, 5 *ἀποροῦντες* add. *B* | 7 *στρατόπεδα* *B* | 28 *τὰ κράτιστα καὶ γενησόμενα* correxerunt Sylburg qui *καὶ* deleuit et Sintenis l. l. III p. 16 qui *τὰ* transposuit.
- 156, 16 *δεήσει* libri, correxit Reiske | *τὴν* add. *B* | 18 *προιοῦσαι* hic et v. 20 *προιῶν* *ABb*, *προσιοῦσα* et *προσιῶν* *Ba* | 28 *τοῦ* *μη* — *δράσθαι* maluit Sylburg.
- 157, 6 *καὶ* addidit Reiske | 13 *αὐτὸν* *A* | 19 *περιλαβῶν* *A* | 23 *προσελθοῦσαν* add. *B* | 27 *ἐμοὶ* *τε*?
- 158, 2 *ἀσμένως* libri, quod correxi | 3 *πολλῇ* add. *B* | 5 *ποιησόμενας* maluit Casaubonus | 19 aut *Μάριε* delendum aut *ὁ Μάριε* τέκνον transponendum videtur | 31 *εὐνοίαν* *ἔτι* libri, correxit Reiske.
- 159, 3 *πρὸς ἡμᾶς καὶ παραμυθουμέναις* omisi cum *B* | 6 *ἢ* ante *συνουκουροῦσα* add. Reiske | 23 *αὐτοῦς* add. *B* | 29 *αὐτοῦς* add. *B*.
- 160, 5 *ἄλλον* *Ba* *ἄλλων* *ABb* | 6 *ἐν τῷ* *μέρει*? | 7 *μη* *με παρακαλεῖν*? | 11 *οἶκον κεκτῆσθαι*, *ὄν* maluit Reiske | 14 *καὶ συγγενεῖς* om. *B* | 17 *τῷ* add. *B* | 21 *ποιεῖ* maluit Gelenius.
- 161, 3 *καταλύσεσθαι* *B* | 4 *μη* *δὴ ὑπολάβης* *A* | 22 *Οὐολούσκοι* *δὲ* *νῦν* *μὲν* *πολύ* maluit Reiske; *Οὐολούσκοις* *A* | 24 *δὲ* om. libri, add. Sylburg; an *Οὐολούσκοι* *δὲ* *πολύ* *τὸ* *αὐθαδὲς* *ἔχοντες*, *ἐὰν* *διδάσκης* *αὐτοῦς* — *ὑποβήσονται*? | 26 *γενομένη*? | 29 *εἰς ταπεινὰ καὶ φαῦλα*? *φαύλους* *A*.
- 162, 1 *σπουδάξετε* addidi auctore Sintenisio l. l. I p. 22 | *εὖ* addidit Reiske | 14 *ἀποίσεσθαι*? | 21 *καὶ πλήθει* add. *B* | 23 *ἀγαθὸν* *A* | 25 *ἀλλὰ καὶ πεπονήκας* Reiske | 26 *αὐτῆς ἀρχὴν* *Bh* *ἀρχὴν* *A* correxit Reiske | 27 *καταστησάμενος* *B*.
- 163, 3 *ἐγὼ μὲν οὖν οὐκ ο.* *A* | *εἰς* addidi coll. VIII 27 | 9 *ταύτην τὴν γνώμην*? | 14 *οὐδ' ἂν οὕτω* maluit Reiske | 19 *ἄδικος* *B* | 22 *λυποῦσι*? | 24 *ἱκανὸν* *ἐν* *παράδειγμα* *οἰκίον* sine *καὶ* *B*, quae verba deleui auctore

Cobetio V. L. p. 371 | ὅς Βα ὁ ΑΒβ | 28 ἐξελαθεῖς καὶ αὐτὸς maluit Reiske.

164, 9 κτησαμένη κατέσχευε libri, correxit Sylburg | 11 μέχρι Reiske περὶ libri | 13 προάγεις Βα προσάγεις Ββ | 18 ἔχοντας γηραιούς ἀνδρας προτείνοντας ΑΒ, correxit Portus | 19 verba τοὺς τῶν θεῶν σεβασμῶν ἐδέξω, om. ΑΒ | 22 αἰνέσω Β | τὰ om. ΑΒ | verba inde a versu 25 prorsus turbata vix lenius restitui posse videntur quam sic: *ἰκετηρίας καὶ λιτὰς, ὅφ' ὧν μαραινεται πᾶσα ὀργή καὶ ἀντι τοῦ μισεῖν τὸν ἐχθρὸν ἔλεει τὸ ἀδικούν καταφυγὸν ἐπὶ τοὺς ἡδικομένους (vel τὸ ἡδικομένον), [τὸ ταπεινὸν] θεῶν ἡμῖν ταῦτα τὰ ἔθνη καταστησαμένων.*

165, 1 παραστησαμένου libri, correxit Portus | 3 ἐξαμαρτάνοντες libri, correxit Portus | 8 ἀφείς αὐτῆ? | 9 μετανοούση τε καὶ δ.? | 18 οὔτε — οὔτε Β | αὐ add. Β.

166, 1 οὖν add. Reiske | 2 ἀνεῖλε libri, correxit Cobet V. L. p. 35 | 7 σε add. Β | 20 τὴν add. Β | 24 ἐξ οὗ maluit Gelenius.

167, 6 δὴ add. Β | 20 τὸν βίον? | 22 τὰς ἀνθρωπίνους Β.

168, 21 προσήκει maluit Reiske | 25 αἴσιον libri correxit Sylburg | 26 προκυλλέσθαι Α.

169, 5 περιλαβῶν Α | 8 μὲν add. Β | 14 τέλος Β μήτε ἄλλο Α | 16 τὰ om. ΑΒ | 27 ὑπομένειν ΑΒ.

170, 7 ἔτι δεινότερον maluit Reiske | 9 ἦν om. ΑΒ | 15 εἶ add. Β | 31 ἀναβαλέσθαι ΑΒ.

171, 2 πάλιν libri, πάλαι Sintenis l. I. III p. 16; an στήλης δημοσίας ἐπιγραφῆ? | 5 verba καὶ ὁ δῆμος ἐπεκύρωσε ταῦτα om. Β | 6 γνώμη εἰσηλθεν? ἐδόκει pro εἰσηλθεν Α | 8 ἐπὶ δελεῖ auctore Reiskio | 12 ἐψηφίσαστο ΑΒα | 16 ἂν add. Ββ | 17 αὐται libri, correxit Sylburg | 25 νεὸ Β | ἀνατεθῆναι? | 29 δευτέρω scripsi ἐτέρω libri | 30 Κυντιλλῶν ΑΒβ.

172, 1 Κυντιλλῶν ΑΒβ | 2 νόνων ΑΒβ | 9 ἀλλὰ add. Β | καὶ om. Β | 16 ἀναθέσθαι ἢ Reiske, malim περιῆ | 18 ἀπεχθάνεσθαι libri, quod correxi | 20 νεὸ Β | 22 αὐται libri, correxit Sylburg | 25 κατεσκευάσαντο? | 27 γεγωνὸς Ββ.

173, 11 τῆ add. Β | 12 ἐπιτεθῆναι libri, correxit Hudson | 13 χήρας Α χείρας Β | 20 μετὰ τοίνυν τὴν maluit Reiske | 25 ὑπολιπόμενος maluit Sylburg | 27 βαρεῖ Ββ.

174, 3 ἐτεράχυντο mavolt Cobet N. L. p. 582 | 4 μίσους libri, correxit Reiske | 6 Ἀττιδος Β | 7 αὐτῶ Α αὐτοῖς Suidas s. v. παραθήγων | 11 ὑποτάξας ἔλθοι Α | 17 γενομένοις malim cum Stephano | 20 ἡγεμῶν add. Β | 22 βούλουτο Β.

175, 2 ἀνῆρ, libri, quod correxi | 3 μένειν maluit Reiske | 5 προδότου maluit Sylburg | 9 ἀψιμαχιῶν scripsi ἀντιμαχήσεων ΑΒβ, in Βα fuerat ἀντιμ . . . ἡσεων | 10 καὶ κατὰ τὴν βουλὴν coniecit Reiske | 18 παρελθὼν maluit Sylburg. | 21 παύσειν libri, correxit Sylburg | πάση libri | 28 χαμαὶ add. Β.

176, 2 ἀνοσίῳ ἔργου? | 11 ἐκπροπεστάτης ΑΒ | 20 πολλὰ add. Β | 26 διὰ πολυχειρίας Α | 29 καὶ add. Β.

177, 11 ἀλλὰ γὰρ ἐν ἀδυνατῶ Suidas s. v. Μάρκιος | 12 ἄρα πάσας libri et Suidas, ἅμα πάσας scripsi | 13 φύσεται libri, correxi ex Suida | 17 ἐπὴν libri et Suidas, quod correxi | 19 προσαγορεύσει Α Suidas | 24 ἀκριτος Suidas | 29 λείπουσα Suidas.

178, 4 τε add. Β | 11 δοθείη libri, quod correxi | 26 χρόνον μετὰ τὴν ἀπαλλαγὴν τινα libri, correxit Reiske | ἐνδιαμένουσι libri Suidas ἔτι, διαμένουσι scripsi.

179, 4 αὐ add. Reiske | 8 αὐτὸν ἐνιαύσιον? | 13 ἐκ τῶν Οὐλοούσκων ΑΒ | 18 ὀλίγον Β | 23 καταστησάμενον addidi | 24 γε] τε Β | οὔτε μείζον οὔτε ἔλαττον scripsi auctore Sylburgio, οὐδὲν μείζον libri, sed in Β οὐδὲν in litura positum.

180, 4 λύουσι ΑΒβ | 14 καὶ ante ἀτάκτους addidit Reiske.

181, 11 αἰτιῶνται] οἴονται Gelenius ut videtur | 26 τριτημερίδα? coll. VIII 77 | 30 σημείαις libri, correxit Sylburg.

182, 2 Ἀτράτιον ΑΒ | 16 καὶ ante προῶτον v. 14 transponere maluit Sylburg | 28 ἀπείναι ΑΒ | 31 ἀλλήλους Βα.

183, 3 καὶ γὰρ καὶ οἱ τ. Ε. Reiske | 7 δὴ inseruit

Sylburg | 13 *Ῥωμαίου* libri, correxit Sylburg | 23 *τέως* *Ba* | *κέρως* Sylburg *μέρος* libri | 25 *παρέμνε* *Ba* *παρέμνε* *Bb*.

184, 3 *σὺν* om. *B* | 6 *τότε μὲν οὖν*· ἤδη γὰρ ἦν maluit Reiske | 15 *τέ* om. *B* | *ἀλλήλους* add. *B* | 28 *ἔθεον* add. *B*.

185, 8 *καὶ ταῦτα μὲν* maluit Reiske | 12 *ἀναλαβὼν* addidit Sylburg | *εἰσέβαλλεν* *B* *εἰσέβαλεν* *A* | 13 *Ἄτιδος* *B* | 29 *δοκῆ* *Ba* | 32 *τοῦ κάμνοντος* *μέρους*?

186, 3 *ἀνθρώπων ἰσάριθμον* maluit Reiske | 7 *οἱ* add. *B* | 15 *διὰ τοῦ λόφου* *B* | 10 verba unciis inclusa expunxit Reiske | 23 *στάσεως*? | 25 γὰρ add. *A* | 30 *ἐπέχοντες* maluit Reiske.

187, 3 *ἐν* add. Stephanus | 14 *Ἄτιδος* *A* *Ἄτιδος* *B* | 28 *προσέθεσαν* *Ba* *προέθεσαν* *ABb* | 30 *τῶν Οὐλοῦσων* *Ba*.

188, 4 *ὥσπερ* libri *ὡς περὶ* Reiske | 6 *ἄν* *B* *εὐάστην* *A*, correxit Casaubonus | 7 *πρότερον* *B* | 12 *Πρόκλος* scribendum esse vidit Sigonius | 13 *τὸ* add. Reiske | 26 *περιορᾶν* libri, quod correxi | 27 *τὴν πόλιν* libri, correxit Portus | 28 *ἀναληφθεῖται*?

189, 1 *δησομένης*? | 10 *πρότερον*? | 13 *λεγόντων* om. *AB* | 15 *ἕξ* add. ex coniectura Sylburgi | *διὰ μηνός*] *ἀνδιμήνου*? coll. VIII 36. 59. | 16 *τέως* *Ba* | *συμπορίσασσι* scripsi *εὐπορήσασσι* libri, in *B* tres litterae ante *εὐπορ.* erasae | 20 *τῆς* add. *B* | 25 *καταστήσασθαι* maluit Reiske.

190, 4 *φθόνον* abesse malim | 13 *τῆς τε ὑπεροψίας* libri, correxit Reiske | 14 *ὡς* *B* | 29 *οὐθὲν* *Cm*.

191, 4 totum locum recte constituisse videtur Sintenis l. l. III p. 13 *συμπεριλαμβάνων* corrigens et sermonem post *τὰ ἔθνη* v. 7 distinguens. | 11 *ἀπέδωκε* maluit Sintenis l. l. III p. 13 | 18 *μὲν* add. *B*.

192, 16 *πάντας* libri | 27 *αἰσχιστα* coniecit Sylburg.

193, 3 *ἐκατέρων* *B* | 7 *τιθέμενον* om. *B* | 11 *μὴ δοκεῖν* *B* *μηδ' ἐκεῖνο* *A* | 17 *καὶ* om. libri, add. Reiske, qui praeterea *τοῦτο* delevit | 18 *λάμβανον* *B* | *γυνομένην* *B*, quod correxi | 24 *αὐτῶν* maluit Portus.

194, 4 *συμπεριλαβεῖν*? | 6 *καλύσεως* *Ba* *καλύσαι* *ABb* | 8 *ὅμως* vel *βεβαίως* maluit Reiske | 20 *λαβόντας* libri, *λαβεῖν* Sylburg | 24 *θάτερον μόνον* coniecit Reiske | 27 *διανέμεσθαι* maluit Reiske.

195, 22 *τέως* *Ba*.

196, 9 *ὑπάρξει* maluit Sylburg | *ἐνὶ* Reiske *ἐπὶ* libri | 21 *οὐκ εἶναι* et *ὑπὲρ αὐτῆς* v. 22 maluit Reiske | 22 *τὴν δὲ* scripsi, om. *B* καὶ *A* | 23 *προσιὼν* *Ba* *προῖον* *ABb* | 28 *βία* *κατέχουσι* Sintenis l. l. III p. 23.

197, 4 *διδάξομεν* maluit Reiske | 7 *ἔχον* Sintenis l. l. III p. 24 | γὰρ om. *B* | 9 *τὸν* ante *γείτονα* add. Reiske | 15 *ἕκαστον εἰσφέρειν* malim cum Reiskio | 21 *νῦν ἐγὼ ἄρχομαι* coniecit Reiske | 29 *αὐτήν*] *τὴν αὐτήν* maluit Reiske | aut *προστίθεις* aut *προσθήσων* coniecit Reiske | 30 *δοκεῖ* maluit Sylburg.

198, 4 *ἀποκρινόμεθα* *ABb* | *τε]* *δὲ?* | 13 *εὐπρεπεστάτων* libri, correxit Sylburg.

199, 3 *ἔχοι* *A* | 7 *τὴν κληρουχίαν* coniecit Sylburg | 15 *χαλεπώτερα* *Bb* | 16 *ἀποτίσειαν* *ABb* *ὅτ* . . *σειαν* *Ba* *ἀπαντήσειαν* Stephanus | 22 *πάντα* libri | 25 *αὐτοῖς* *Bb*.

200, 1 *δέκα ἄνδρας ἀποδείξει καὶ* maluit Reiske | 8 *μεθ' ἐαυτὴν* *A* *μετὰ αὐτήν* *B* quod correxi | 13 *ἐν* abesse malim | 14 *τὴν γνώμην* Reiske | 20 *ἀποδειχθῆναι* om. *AB*.

201, 6 *γε* Stephanus *τε* libri | 10 *ἀδελφιδοῦς* vel *ἀδελφοπαῖς* maluit Glareanus | 21 *ὡς* add. *B* | 24 *πολιτεῖαν* *B* *υπατεῖαν* *A* *ἰσοπολιτεῖαν* maluit Sylburg | 28 *ἔχον* *B* | 31 *ἢν ἐὰν* *AB* ἢν *ἂν* *C* Portus.

202, 9 *τριτημορίδος* *A* *τριτημερίδος* *Ba* | 10 *vocabula* ἢ *οὐχ ἕξιν* *ὅτι δώσουσιν ἐκείνοις μέρος* volgo omissa, addidi ex *AB* | 12 *πρὸς δὴ* libri, correxit Sylburg | 13 *ἐπιβαλλόμενος* libri, correxit Reiske | 23 *ἢς οὐδὲν αὐτοῖς* libri, quod correxi.

203, 1 *τε οὖν ἐνέγκαιεν* *B* | 6 *αὐτῶν* *B* | 12 *πολλὴν* *AB* correxit *Cm* | 14 *δι' α'?* | 15 *λαβῶν* *ACm*, om. *B* | 21 *δράση* libri, quod correxi | *διαβαλῶν* libri, correxit Sylburg | 22 *ἐπανάγη* *A* | 28 *παραδιδόμενων* *B*.

204, 4 *ἔλθειν* libri, *ἔξελθειν* etsi dubitanter scripsi | 8 *υἱός* addidi cum Sylburgio | 10 *πρόφασιν* libri, cor-

rexit Sintenis l. l. III p. 17 | 15 ὃ ἐν scripsi ἐν libri | 18 ἐγκαλῶν maluit Sylburg | 26 οὔτε ἀπίθανα addidi ex A.

205, 5 οἰκία sine articulo B | 1 μεστῆναι AB.

206, 4 τε libri τέως Reiske | 5 ἤχθησαν libri, correxit Reiske | 19 ἐν ἀφανεί τῇ δόξῃ C, idemque voluit Sintenis l. l. III p. 27 | βίου ABC, probante Sintenisio l. l., ego malim ἐν ἀφανεί τῆς δόξης φ. καὶ βίου, εἰς ταπεινά συνεστάλησαν.

207, 1 καταστεῖλαι addidi ex A | 4 μὲν addidi ex A | 11 ἐλλειπόντων ABb | 30 οἱ add. B.

208, 7 σκοπᾶς ABa | 11 παραδόξον B | 14 οὐδεμία οὐδενὶ ἔτ' ἢν φροντίς coniecit Reiske | 17 τι add. B.

209, 1 διανομήν libri, correxit Reiske | 5 μετεῖναι AB | 14 τὰ add. B | 18 κύριον AB | 26 τε add. A.

210, 7 ἐμπολεμωμένου B (?) | 10 εἴτε ἐπὶ om. libri, addidit Sylburg | 26 ὁρέων A.

211, 15 οἱ add. B | 18 ἐπιγέωνται vel ἀγωνίσανται maluit Sylburg | 27 οἱ add. B.

212, 5 περὶ σκῦλα libri, correxit Sylburg | 6 ὑποχωρεῖν A | 7 καὶ γὰρ καὶ οὔτοι maluit Sylburg | 9 ὑπὸ τοῦ ὄρους B | 26 τε add. B | 27 προελθόντες ABb προσελθόντες Ba.

213, 6 εἰ om. Ba, unde malim ἀγαπητῶς δ' ἂν ἀπῆλθον | 10 τῶν ἐκ om. Ba | 18 τὰ περίξ σταυρώματα coniecit Sylburg | 32 πλέω libri, quod correxi.

214, 1 ἀπεχώρησαν? | 5 οἱ add. B | 6 τὰς ἐκ τ. π. δυνάμεις? | 9 ἢ καὶ ὁμολογίας AB | 21 ὁδῶν ἀφανῶν libri, correxit Sintenis l. l. III p. 8 | 26 ἐκεῖ libri εἰκῆ Reiske | 29 αὐτοῖς libri, αὐτοῖς Sylburg.

215, 4 βέλος τε libri, βέλος δὲ Reiske | περιλημένων γε libri, correxit Reiske | 5 ἀπαρράττονται Bb | 6 οἱ add. B | 9 vel τέως vel ἤδη delendum esse censuit Reiske | 21 οὐκ αὐτοὶ libri, correxit Sylburg | 22 ἤμουντες mavolt Sintenis l. l. III p. 18 | 25 κεχαρισμένοις Reiske.

216, 2 δόγμα ποιησαμένης τῆς βουλῆς? | 5 ὅλην add. B | 14 ζῶπυρεῖν B | Μάνιος B.

217, 12 Ἀλβανὸν? | 15 τὸν add. Stephanus | 17 μεί-

ζων addidi ex A | 18 μόνη add. Reiske | 20 τὰ add. B | 22 τῇ add. B | 25 ἢ πᾶν ἄγει ABb πᾶν ἄγει Ba, correxit Sylburg.

218, 1 σημείας AB | 17 φόβῳ libri ἐν φόβῳ Stephanus | 20 ἐδόκει libri ἔδει Reiske | 26 ποθὲν libri οἰκοθεν scripsi | ἐπικουρῶτα addidit Sintenis l. l. I p. 22, nisi forte id ipsum vocabulum in participio ἐπιούσα latet.

219, 10 μένειν B | 11 προβολὰς maluit Reiske | τετραμμένων libri, correxit Stephanus | 13 κόπου τέως Ba τοῦ κόπου τε ὅς Bb τοῦ κόπου ὅς A | 16 ἐν πύργῳ ὥρα A et Ba ut videtur | 26 μηδὲν ἠθέλησεν ἐργάσασθαι maluit Sylburg; an μηδὲν ἐργάσατο?

220, 1 δημοτικὰ Ba | 2 ἀληθεῖς Ba | 5 ὅτι addidit Sintenis l. l. III p. 26 duce Reiskio | χολοῦσθαι om. AB | 13 ἀδικήματα abesse malim | 14 κεφαλῆς? | 18 παραχορήματα ἀπέκτειναν καὶ μετὰ τοῦτο libri, correxit Reiske | 19 αὐτοῖς libri, αὐτοῖς scripsi.

221, 5 ἀποδείξαντες B | 8 ἀρχαιρεσιάζοντα AB | 11 ἐγίνοντο συνεχεῖς καὶ ἀψιμαχίαι? | 18 ἀρχαιρεσιῶν B | 25 τε καὶ τιμιωτάτους om. B | 28 ἐλλειπόντων B | 29 ἀποδείκνυνται AB, correxit Cm | 30 μεσοβασιλεῖς AB, correxit Cm; an ἀποδείκνυνται—μεσοβασιλεῖς, πρώτος μὲν Ἀῦλος Σ. Α.?

222, 3 κατὰ] καὶ libri, correxit Sylburg | 4 ἀποδεικνύουσιν AB | 5 Ἰουλλον libri | 7 μὲν addidit Reiske | 8 ἕνεκα libri ἐν Reiske | 9 τῆς om. B | 26 Ὀρῶνα libri, correxit Sylburg | 28 ἐπαγόμενοι maluit Reiske.

223, 3 τε om. B | 10 καινὸν maluit Reiske | ἀποφαίνοντες τὸν πόλεμον? | 12 στρατιωτῶν libri, correxit Sylburg | 17 ἀπὸ add. B.

## LIBER IX

224, 6 τέλος Portus ἕως libri | 10 φρούριος B | 12 ἰστρατοπέδευσε libri, correxit Portus | 13 δὲ om. B.

225, 7 συναραμένη B | 17 Σικίλιος libri, correxit Sylburg | 16 συγχωρήσειν ἐπὶ τῶν πολεμίων libri, correxerunt Sylburg et Sintenis l. l. III p. 10 | 18 πρώτον

libri, quod correxi | 25 verba inde a ταύτην usque ad ἐξουσίαν ἐχόντων v. 28 addita ex B. | 29 γίνηται B | μη add. Reiske.

226, 8 Σικίλων B, correxit Sylburg | 10 διώμυ Ba | 11 ἀνθαδέστερον libri, correxit Sylburg | 14 τὴν χώραν ABb | 16 τοῦ addidi ex A | 17 κωλύσειν Reiske | 19 Σικίλιος libri, correxit Sylburg | 25 φρούριος B | 28 στρατιᾶς libri, correxit Sylburg | 32 δοκῶν τε AB.

227, 2 στρατηγίας et 3 στρατείας fortasse sedem mutarunt | 3 ἀπάγων? | 9 οὐκ εἶχε μένον libri, correxit Sintenis l. I. III p. 26 | 12 τῷ προθύμῳ ἐπιτροπέοντας καὶ χρ. ? τῷ προθύμῳ καὶ πρόποντι χρ. AB | 14 ἀντιπολέμων libri, correxit Reiske | 17 μὲν om. AB | 18 τῷ ἡγεμόνι B | 19 δὲ ἦτρον libri, correxit Reiske | 20 ἄξια libri αἵτια scripsi | 20 κίνδυνον . . (duabus literis erasis) οὐ Ba; an κίνδυνόν τε οὐ? | 29 αὐτῶν AB | 31 ἐμβοησάντων libri, correxit Sylburg | 32 τῇ τε φωνῇ A τε φωνῇ B | καὶ om. B.

228, 1 ἀγαθὸς ἄνδρας maluit Reiske | 8 οὔτε τὰς ἀπειλὰς maluit Reiske | ἀναστάσεις Ba | 25 ἕως om. B | τε add. B | 30 ἐκ παντός libri et Suidas s. v. ἐκ παντός, ἐκ ποδός Sylburg.

229, 8 ἦσαν ἐσκευασμένοι ὡς εἰς χ. π. παρεσκευασμένοι AB | 10 ὡς δημοκρατοῦντες AB; an ὡς δῆλοι κρατοῦντες? ὡς ἦδη χρ. maluit Sylburg | 30 ἐπικουρικῶν libri, correxit Reiske.

230, 4 τὸν ἐν ἀκμῇ libri, quod correxi.

231, 2 αὐτοῖς AB | 5 ἀνέστρεψε libri, correxit Sylburg | 15 καὶ delendum? | 18 τοῖς om. B.

232, 5 μετεστρατοπεδεύσαντο B | 18 πονησόμενοι κατὰ τῆς ἐτέρας? | 23 τῶν om. B.

233, 11 πρὸς τὸν ὑπατον libri, correxit Reiske | 23 οὔτε libri, correxit Reiske | 24 ἔσεσθαι add. B | 27 πολλῷ πλήθει maluit Reiske.

234, 1 γινομένης B, quod correxi, γενομένης A, unde Sintenis l. I. III p. 4 effecit γενομένοις | 2 ἐκουσίους Ba | 9 ἐπειταν B | 20 τε add. B | 32 εἶγε libri, correxit Reiske.

235, 1 ἔστιν om. B | 2 εἰ γοῦν Bb | 4 νῦν δὲ φ. AB, νῦν δὲ Sylburg; an κατέλληφεν ὑμᾶς. φοβούμεθα δὲ μή? | 20 καὶ τοῦδὲ καὶ B.

236, 6 νῦν om. B | 11 καὶ ante καταβαλόντες add. Sintenis l. I. II p. 35 | νῦν delet Reiske | 12 εἰ γε δὲ B, om. A, correxit Sintenis l. I. | 13 ἦδη om. B | 19 ἡμῶν om. B | 26 πολὺ add. B | 29 δὴ om. B | 32 τε om. B.

237, 6 ὅτι σώζων Ba | 9 προσήκεν A, quod correxi; om. B | 10 ἀνδρῶν] ἀνδρείως sive ἀνδρωδῶς maluit Reiske | 17 ἐν om. B | 21 ἀναβοήσεις τε ἐξ B | 23 ἐπειδὴ τε Ba ut videtur | προσέρχεται AB | 24 ἀνῆρ om. B | 30 ὁ ante νόμος addidi.

238, 2 ἐπὶ τοῦτο A ἐπὶ τούτῳ B correxit Sintenis l. I. III p. 27 praeunte Reiskio | 6 ὅσοι δὲ ἐγνώκατε maluit Reiske | 10 κάρτιστον Reiske | 18 θράσος B | 20 ἐνέβαλλον Bb | 23 καὶ θυσίαις om. Ba καὶ λιταῖς om. A καὶ θυσίαις fortasse delendum, sed cf. IX 15.

239, 20 ἐπὶ delevit Gelenius | 21 παρήλλαξαν libri, quod correxit Portus | 27 μελῶν] πλείων A | 28 καὶ μελῶν om. B.

240, 1 πρότεροι B | 3 ἐνθα ὁ Μάλλιος ἦν transponenda post κέρας | 11 δὴ malim cum Gelenio | 12 κέρας A μέρος B | 20 ἀπὸ τοῦ στρατηγίου maluit Reiske | 30 Μάλλιος delevi.

241, 5 ἔσχον maluit Stephanus | 9 τὸ λοιπὸν add. B, in quo fortasse latet τὸν κόπον | 19 τὸ χωρὶον libri, correxit Reiske | 20 τῇ μάχῃ libri, correxit Sylburg | 20 Σικίλιος B | 28 οἱ Τυρρηνοὶ add. B.

242, 2 ἀπεσώζοντο? | 7 μὲν add. B | 12 τσαύτη δύναμις maluit Reiske | 14 νίκας τε καὶ ἦττας ABa | 18 οὐπω? | 29 Σικίλιῳ B | 30 ἀνασώσασθαι libri, correxit Reiske | 32 ὀρμῆς?

243, 9 σημείας libri, correxit Sylburg | 16 ὄχλους libri, correxit Schwegler hist. rom. II p. 466 | 28 τῆς λείας libri ἄλλης λείας Sintenis l. I. I p. 23 praeunte Reiskio.

244, 11 δὲ οἱ ιεντανοὶ B | 18 πολλὰ τε ἄλλα maluit Reiske | 21 ὡς om. B | 23 κινδυνεύουσιν maluit Sylburg.

245, 10 τὴν στρατιάν delenda videntur | 12 σημείων *B* | 21 οὐκ ἂν ἐπίσαντες *B* οὐκ ἐλάσαντες *A*, quod correxi | 23 ποιήσασθαι *AB* | 26 ἐν ταῖς πάνν libri, quod correxi | 28 Ἰανούκιου *B* | 29 κωλύσουσα γὰρ *Bb* ἢ δὲ κωλύσουσα *Ba* ut videtur ἢ κωλύσουσα *A* | 31 ἐπὶ σημείαις libri, correxit Portus.

246, 3 τῆς add. Sylburg | 14 προκειμένον *B* προσκειμένον *A*; an προκαθήμενον? | 17 δύο add. *B* | 28 ἐνίκησε libri, correxit Sylburg | 30 ἐτέρων *B*.

247, 1 ἦς om. *Ba* | 11 τὰ deleuit Reiske | 20 τοῖς στρατενομένοις ἰδιώταις | τοῖς στρατιώταις? | 22 βοεικα *AB* | 28 δέχεσθαι add. *Bb*.

248, 5 μένοντες *AaB* μὲν εἰς *Ab* | 7 οὕτως add. Reiske | 9 Στοιχίου libri, correxit Sigonius hic et p. 249, 7. 17 | 10 λευκανοὶ *A* et *Ba* ut videtur, Αἰκανοὶ *Bb* | 14 τὰς ἰδίας δυνάμεις maluit Reiske | 18 ἐπολεμεισθαι *B*.

249, 6 ἀνθυπάτου? | 8 φρουρίου *AB* | 11 ἐλάττων—δύναμις? | 28 μίαν addidi | 31 γενομένου coniecit Reiske.

250, 7 φυγοῦσι *B* | 19 ἐν ταῖς μάχαις ἐμπροπεστάταις libri, correxit Reiske; possis quoque ἐν ταῖς μάχαις servare coll. IX, 33 | 20 ἐγκαταλειφθέντα libri, correxit Reiske | 24 γὰρ ἤδη *B* | 26 ὑπεραγόμενον *AB*, correxit Reiske; περιηγόμενον maluerunt Gelenius et Schwegler hist. rom. II, 739.

251, 3 τοὺς πρῶσβευτάς *AB*, correxit Reiske | 5 ἀποστείλει πρὸς τὴν βουλὴν διαλεξομένους libri, transposui auctore Sylburgio | 15 θέσθαι *Ba* | 23 ἄλλην vel ἄλλως maluit Reiske | 24 ἐν deleuit Reiske.

252, 5 ὡς add. *B* | 10 ποστὸν coniecit Reiske | 11 καὶ deleui; lacunam statuere mavolt Sintenis l. I. III p. 10 auctore Reiskio, qui συνείρας ante καὶ intercidisse suspicatus est | 14 φρουρίου *AB* | 28 στρατιᾶς *AB*, correxit Sylburg.

253, 8 πρῶτον add. *B* | 14 ἦν om. *B* | 16 ἀποστειλάντων libri, correxit Reiske | 30 οὖν add. *B*.

254, 2 ὑπὸ σημεία *B* | 5 ἐλόχισαν *B* | 17 σημείαις *AB* | 26 περὶ libri ὑπὲρ Reiske | 28 ὅδε om. *B*.

255, 14 σκοπᾶς libri praeter Suidam s. v. σκοπιαί,

correxit Reiske | 20 αὐτὸ *ABb* αὐτῶν *Ba* | 29 αὐτοῖς om. *B*.

256, 5 ὁμοσε *ABb* ὅμως *Ba* ut videtur | φάλαγγα libri correxit Sylburg | 13 ἦξει *A* ἔσται *B* | 15 χωρίῳ libri, quod correxi.

257, 8 ἐαγότα *B* | 29 συγγενῶν libri, articulum addidit Sylburg.

258, 5 ἀπό libri, correxit Reiske | 13 ἐπανόγκαις *Ba* | 18 γε add. *B* | 21 ἐκόντες γε *B* | 26 ταῦτα, quod om. *AB*, delendum erat.

259, 1 λεγόμενον μόνον? | 2 δὲ inseruit Sintenis l. I. III p. 27 | τῷ *ABa* τὸ *Bb* | 10 γοῦν om. *Ba* | 20 φθόνῳ *Ba* | 22 γὰρ om. *B*.

260, 1 τῆς om. *Ba* | πλεονέκτημα om. *B* | 5 τῆς om. *B* | 11 ἀπήγαγε coniecit Sintenis l. I. III p. 13 | 14 μετὰ αἰσχύνῃς *AB* | 15 ἐφόδους dubitanter coniecit Reiske.

261, 1 ἐν πτώσει *B* | 2 πεσόντων δὲ πολλῶν τῶν ἐ. *A* | 5 σημείας *AB* | 17 ἐν τῆς πολλῆς τροπῆς ἔτι νυκτὸς οὐσῆς libri, quod correxi | 23 ὄλην add. *B* | 26 νυκτὶ καὶ σκότω διατά τε ὑπὸ *A* νυκτὶ σκότω (σκότος *Bb*) διαταῖται ὑπὸ *B*, quod correxi, nisi malis νυκτὶ σκοταιοτάτη | 27 στεγῶν? | τοσοῦτον *ABb* τοσοῦτοι *Ba*.

262, 3 μετατοχήματος *Ba* μεγάλου ἀνήκματος *ABb*, quod correxi | 11 τότε δὲ δὴ maluit Reiske | 15 περὶ? | 19 ποιησάμενοι deleuit Sintenis l. I. III p. 28 | καὶ deleuit Sylburg | 24 τοὺς om. *B* | 25 χρηστὸς libri χρυσός Cobet. Var. lect. p. 236 | 26 πρὸς maluit Reiske | 29 ἔτι *A* ὅτι *B*.

263, 4 τῶν om. *B* | 7 ἡαδίας *AB* | 12 αὐτοῖς *A* ἐν αὐτοῖς *B* | 16 post τύχην συνέβη vel tale quid intercidisse coniecit Sylburg | 18 πέμπουσι *A* ὥστε *B* | 20 τὸν *A* τῶν *B* | 25 ἐπιστροφῆν maluit Stephanus.

264, 7 ὡς add. *B* | 10 ὡς ἐν τῷ τότε *B* | 20 βάδην add. *B*.

265, 24 aut ἀνείχοντο aut ἀντεῖχον scribendum videtur.

266, 6 τοῖς ὑπάτοις *A* αὐτοῖς *B* | 9 πάντα maluit Sylburg | 18 τῶν om. *B* | 19 Κοιντίου *B*, correxit Gelenius | 21 λαβόντος?

267, 3 ἀφ' ἧς libri ἀφ' ἧς Casaubonus | 6 καὶ ὁμοίως τοῦτο coniecit Reiske | 12 ἐπιβουλαῖς *AaC* ἐπιβολαῖς *Ab* | 25 ἀποχῆς maluit Sylburg | 29 ἐρούινος hic et p. 269, 9<sup>1</sup> *B* pro Σερούλιος.

268, 1 δίκιος *Bb* | 6 ἀθρόον *ABb* ἀθρόον *Ba* ut videtur | 14 ὑφ' ὧν Reiske σφῶν libri | 22 δίκιος *Bb* | 28 κωλύσαν *B*.

269, 3 καταχόμενος *B* | 15 ἀκρίτω add. *B* | 17 ἄν οὐ σὺν δίκη coniecit Reiske | 26 τοι add. *B* | 31 οἱ om. *B* | 32 ἀρχῆς deleuit Reiske.

270, 11 εἰς ἃ maluit Sylburg | 14 κατὰ τὴν μάχην add. *B* | εὐτυχῶς libri, quod correxi | 15 σερούινος *B* | 31 λέγειν add. *A*.

271, 2 ὡς δεῖ κὰν μηδὲν *A*; ὡς δ' deleui | 18 φάστον libri ἀρίστου scripsi | 20 πρὸ ὀφθαλμῶν ἔχοντες maluit Reiske | αὐτοὶ *A* ἑαντοῖς *B* | 22 τῶν om. *B* 26 δ' add. *A*.

272, 7 αἰσθήσει *B* | 12 ὑμῖν add. *B* | 13 ἐπιβαλλόμενος *AB* | 19 ἦλθεν ἐπὶ νοῦν *A* ἔπεισι *B* | 21 σημείας *AB* | 24 ἔμψυχον *ABa*.

273, 17 συμφέρει *AB* | 28 τῶν ἀστῶν *B*, quod recepsem, si exemplis firmari potuisset.

274, 4 πάρεστιν libri, quod correxi | ὑμῖν *ABb* | 8 καλὰ καὶ om. *B* | ἐξ ἐκατέρων *Ba* | 17 ἦν om. *B* | 20 δημαγωγοὶ καὶ οὐτε *B* | 23 δὲ *ABb* δὴ *Ba* δ' ἡ Reiske | 24 πλεῖν add. Reiske.

275, 9 στρατηγεῖν mavolt Sintenis l. I. III p. 3 | 16 ὁ πέλιθων *Ba* | 17 ἀγαθὸς?

276, 3 τὰς ante Ῥωμαίων add. *B* | 7 καὶ inserui ex *Cm* | 9 οὐ περιμένοντες coniecit Reiske | 12 κατεργασόμενοι *AB* | 13 ἔτι *A* ἔπει *B* | 18 προσελθῶν *Ba* | 21 ἐν τάξει quod correxi | 30 αὐτῆς *B*.

277, 1 δὲ om. *B* | 3 ἔπιπον *AB* | 9 φυγόντες mavolt Sintenis l. I. III p. 13 | 26 ἔφυγον Sylburg.

278, 1 ἦν δ' ὁ *A* ὁ δὲ *B* | 9 ἀπῆγε mavolt Sintenis l. I. III p. 23 | 10 χάρας libri πόλεως Sylburg | 25 ἀπειρία maluit Sylburg | 30 ὅπερ *AB*.

279, 6 ἐπει *B* | τῇ add. *B* | 10 πάνν add. *B* | 16 φρούριος *AB* | 19 ἦν ἕθος *B* | 27 τοῦ λιμοῦ melius abeset | 30 ἀργύριον om. *Ba*.

280, 8 verba inde a πολλῶν usque ad πολέμον v. 11 propter homoeoteleuta omisit *Ba*, quorum priora usque ad μέση λόγων v. 9 supplevit *Bb* in margine codicis | 18 τρισχιλίων τε καὶ τρισκαίδεκα *B*, quod casu factum ut non receptum sit | 22 δάτις *A* δάντιος *Ba* δάντις *Bb* | 29 στρατιῶν *AB* | 32 ὁ add. *B*.

281, 4 οὐχ om. *B* | 6 περὶ Κάσσιον coniecit Portus | 7 καὶ om. *ABa* | 20 δέκα *B* | 24 αἰεὶ ποτε ὄντας maluit Reiske | 29 ἦγεν libri ἦκειν Sylburg | 30 ἐμμένειν et 31 κατηγορεῖν libri, quae correxi.

282, 9 τῆς δίκης libri, quod correxi; πρὸ τῆς δίκης Reiske | 15 ἐλέλυτο *B* | 27 ἀπὸ τῆς τοιαύτης *B*.

283, 3 τε om. *B* | 9 τῆς δίκης add. *B* | 14 τι add. *B* | 23 στάσις add. ex *Cm* | 24 ἕτερον libri, quod correxi | μείζον *Ba* | 27 ἐπιβάλλειν *ABb* | ἐπιβ. τὰς χειρὰς maluit Reiske | 31 κατ' αὐτῶν maluit Sylburg.

284, 11 φρούριος *AB* | εὐθύς add. *Bb* | 17 ἡ add. Reiske | 18 πρότερος *Ba* | 19 δ' add. Reiske | 23 αὐτοῖς *B* | 27 Ὀριβία *B*.

285, 12 ὅτι libri, correxit Sylburg | 13 ὑπὸ τοῦ τῶν πενήτων δήμου, προστάτης libri, correxit Sylburg | 25 καλοῦσι κυράτιν *B*, sed καλοῦσι additum in fine versus e *Bb* | 29 φρατρία *AB*.

286, ἑρῶν libri, correxit Reiske | 5 ταῦτα *AB*, correxit Sylburg | 26 θορυβοῦντες libri, quod correxi | 28 ψήφοις ἐχομένης μηνύματα *A*, unde mavolt Sintenis l. I. III p. 28 τῆς ἐν ταῖς ψήφοις ἀρχομένης.

287, 8 verba οὔτε (οὐκ libri) ἄλλο τι τῶν δοκούντων κουφίζειν τὴν νόσον quae in libris post οὐ τέχνην v. 10 leguntur huc transposui auctore Reiskio. | 10 τέχνην] τύχην? nisi fortasse praestat haec quoque verba οὔτε τέχνη post προσωφέλου inserere. | 12 μὴν om. *B* | 24 Ἰλατιώσαντα *AB* | 27 ὃν καὶ αὐτὸν maluit Reiske | 30 ἐψηφίσαν *AB*.

288, 2 Κόιντος libri hic et passim pro Κοίντιος | 5 ἐπὶ τὰς ἕξω maluit Sylburg περὶ ταῖς ἕξω στραταιαῖς Reiske | 10 συνδιοικοῦσι *A* συνοικοῦσι *B* correxit Sylburg | 13 ἔτι φθονομένη maluit Stephanus ἐπιφανῶς



φθονομένη Reiske | 16 κατά] μετά maluit Sylburg | 30 νόμον επικυρωθῆναι B.

289, 2 επικουρεῖσθαι libri, correxit Gelenius | 6 λόγος libri, quod correxi | 10 πρὸς om. Ba; πρὸς τὰ ὄπλα melius abessent | 17 παραληφθέντων om. B | 24 παρήσαν mavolt Sintenis l. I. III p. 12 | 26 δυναμένω ante λόγῳ inserere voluit Stephanus.

290, 2 ὑπ' delevi cum A Porto | 14 ὄπλα περιγνομένης B | αὐτοῖς AB | 19 ἐπὶ δὲ] ἐπειδὴ AB | 24 εἶναι B | ἀφ' εἰκασίων maluit Sylburg | 26 τῶν om. B | ἐσχάτων scripsi αἰσχρίτων libri | κινδύνων add. B | 29 ἐχρήτο B ἔδωκε κρίνειν A | 31 ὅτε A ὅτε B | 32 ἀνίσους AB.

291, 2 καταλιπόντες libri, corr. Reiske | 20 παροῦσα libri, corr. Sintenis l. I. II p. 4 | καὶ ὀνείλαις om. Ba | 23 ἐπει, quod om. Ba, delevi | 26 ποτε add. B | 27 περισσιν libri περιττόν ἐστιν Sintenis l. I. II p. 4.

292, 6 προβουλεύση Sintenis l. I. II p. 4 | 8 οὐδὲν AB, correxit Reiske | 12 δὴ om. B | 19 πρὸς Ἀππίου maluit Sylburg | 21 ἄν add. B | 32 ἔδωκαν addidi ex A.

293, 3 πάντων libri | 8 ᾧ pro ὡς malim cum Porto | 10 ἔτι εἶχε AB | 11 λοχίτην] κουριάτην maluit Reiske | ἐκκλησίαν A ἔξουσίαν B | τὴν φυλετικὴν maluit Reiske | 18 τιμὴ? | 19 τῶν καθ' ἑμᾶς Bb | οἱ σοὶ ABa σοὶ Bb | 32 πᾶσα om. B.

294, 17 δυναμένη σε B | 19 ἔξομαι Cobet Var. Lect. p. 41 | 26 τὸν ἄλλον ὄχλον A | 29 ἀπάγειν addidi ex A.

295, 20 καὶ γὰρ ὁ A.? | 24 αὐτοῦ om. B | 30 ἀντεῖχεν libri, quod correxi.

296, 16 ὑπὸ maluit Sylburg | 20 μὲν addidi ex A.

297, 4 παραχῆς ABb τῆς τύχης Ba ut videtur | 23 διατρέψας AB | 25 συνελθούσα libri, correxit Reiske | 27 στρατιᾷ ABa | 32 οἱ μὲν erasa a Bb | ῥίψαντες οἱ δὲ τὴν τάξιν om. B.

298, 17 οἱ add. B | 20 τῇ πατρίῳ Reiske, om. B; τῇ A | 29 δωδεκάδος A.

299, 19 τῇ βασιλείᾳ maluit Sylburg | 24 ἀναιρούμενος A Casaubonus | πρὸς AB, correxit Stephanus | 25 προσθήσειν AB | 27 τῇ επικυρώσει maluit Reiske | 28

συναρεῖσθαι libri, correxit Reiske | 29 παρήσαν mavolt Sintenis l. I. III p. 12.

300, 8 ἤξουν B | 13 τῆς add. Reiske | 15 ἀπέφαινευ B | 16 οἰκῶν maluit Reiske | 17 καθῆται intercidesse suspicatus est Reiske | ὄχλος addidi ex A | 18 δὲ om. AB | 19 πατρίοις B | 20 καὶ addidi ex A | 21 χρημάτων libri, correxit Sylburg; χρημάτων πρὸς ἄ μ. maluit Reiske | 22 ἀνάγκη ante ἧ inserere voluit Reiske | 24 οὐδενὶ ευτυχῇ Reiske.

301, 2 πράγματα om. B | 4 εἰς χρόνον ἕτερον καὶ διαγνώσειν maluit Stephanus | 8 λαβόντες libri, correxit Reiske; λαβόντες ὑπατεῖαν maluit Sylburg | 12 αὐτοῖς AB | 13 συνεφέρετο A συνέφερε τῷ B, quod correxi κοινῶ addendo | 32 οὗτός τε AB.

302, 1 τὸ om. B | δοκοῦν νῦν ἔτι maluit Reiske | 2 μεταδιδόναι addidi auctore Reiskio | 5 μέχρι παντός προῖον maluit Reiske | 16 ἐν ταῖς διανομαῖς add. B | 20 ἐβουλόμην δ' ἂν B | 21 οἱ om. B | 24 πλείω add. B | 27 σύμψασαι πάντων βασιλέων maluit Reiske | 29 τε B τι A γε Reiske.

303, 1 δεῖ om. Ba | 3 ἔθη libri, correxit Sylburg sive νῦν γὰρ ὁράτε sive ὁράτε maluit Portus | 12 κράτος scripsi πάθος libri; τρόπαιον Casaubonus κλέος Reiske | 13 ὑμετέροις AB | 15 αἶ om. AB | 16 κατασφαγῆς B | ὑμετέρων AB | 23 στήθεσιν? | ἐνοικεῖ? | 28 ἡλίκα add. B | 29 τὸ πανούργως σοφὸν AB; σοφὸν delevi | 31 μηδενὸς B | εὐπειθεῖν A.

304, 5 κοινοῦ ABa ut videtur | 14 τιμωρήσονται ABb.

305, 5 αὐτὸν A, quod correxi, om. B | 11 διεχορήσατο Reiske et fortasse Ba, διεχειρίσατο ABb | 21 ἠνέσχετο τὴν ὑβριν οὐδὲ περιεῖδεν ἄτιμον?

306, 4 προϊόντι libri, quod correxi | 5 ἐξ αἰθρίου A | 8 τε add. B | 10 ἔτι Sintenis l. I. III p. 29 ὅτι B, om. relicui | 11 γῆν ἐξ αὐτῶν ABa | 21 τε οἱ ἠγεμόνες τοὺς εἰκασίων ἐκήδευσαν καὶ B | 28 παρμενίτης B | 29 δὲ delevi cum A | 30 Νομεντανός AB, correxit Gelenius.

307, 2 ἐξ ἐφόδου add. B | 32 ἐάλω om. AB, add. Om.

308, 14 ἐκατέρων *Bb* | 15 στρατιά libri, corr. Sylburg | 18 Τίτου om. libri, add. Sylburg | Καπεταλιών *AB* | 22 στρατιάν libri, corr. Sylburg | 32 στρατιά libri, corr. Sylburg.

309, 11 πάντα libri | 14 αἰεὶ δὲ Reiske | 15 τοῖς ἐπιταῖς ἐφεσθῆναι *A* τοῖς σφετέροις *B* | 24 ὁ μάλιστα ἔκαμινεν maluit Sylburg; ἔκαμινεν *Ba* | 30 ἀληθῆ *Bb*.

310, 6 οἱ om. *ABA* | 12 ἐταίρων maluerat Sylburg | 19 νεκρῶν add. *B* | 21 τῶν om. *B*.

311, 10 τε om. *B* | ἅμα om. *B* | 11 καὶ add. *B*. | 13 οὖν om. *B* | 15 τε add. *B* | 29 ἐγκρατεῖς καὶ om. *B* | ἐγκατελείφθη *AB*.

312, 1 παρεσκευασάμενος *Ba* | 6 ἀποδορασμὸν? | 14 ὑπὸ Ῥωμαίων abesse malim | 23 Κρέμερα *AB*.

313, 1 φρούριος *AB* | 2 οὐκ ἀγαπῶσι scripsi οὐκ ἀγῶν πασιν ἀλλὰ *A* οὐκ ἀγῶν πασι *B* οὐκ ἀγῶν ἀσπαστή Reiske | 4 ὀλίγων γε maluit Reiske | 5 ὁ om. *B* | 10 στρατία libri, corr. Sylburg | 31 παραγγέλλη libri, corr. Sylburg | 32 αὐτὰς deleui.

314, 3 οἱ addidi | 4 λαοῦνιος *AB* | 10 ἀφορισθέντα *ABb* ἀφεσθῆναι *Ba* ut videtur, quod correxi | 22 ἐλόμενοι] ἀπέστειλαν? ἀπέστειλαν post ποιησάμενος inserere volt Sintenis l. I. III p. 6 | 26 εἰς add. *B* | 32 ἐκδότους αἰτεῖν libri ἐκδ. παραλαβεῖν Reiske ἐκδ. ἄγειν Sintenis l. I. III p. 6.

315, 1 οἱ add. *B* | 5 ἐν τῷ πεδίῳ libri, correxit Sintenis l. I. I p. 28 | 6 αὐτὸν libri αὐτῶν Sylburg | 11 τόπων *Ba* | δημοσίων τε καὶ ἰερῶν libri, corr. Sintenis l. I. III p. 7 | 12 πλήρη ὄρων om. libri, add. Sintenis l. I. III p. 7 | 16 ἀπήγγελλε *B* | 28 Κοίντιος *B*.

316, 3 ἐπ' ἐκείνου maluit Portus | 4 δὲ inserui ex *A* | 11 Ἰουλιανὸς *B* βωλιανὸς *A*, corr. Sylburg | 26 τὸ om. *B*.

317, 9 κρατίστην om. *B* | 31 φρούριον *AB*.

318, 3 ἐπὶ τῆς βουλῆς vel ἐπὶ τῇ βουλή maluit Reiske | 8 καὶ om. *B* | 21 φρούριον *AB* | 26 εἰς τὴν Ἐγκλίτων libri, corr. Gelenius | 27 ὠφθησάν τε καὶ εἶδον?

319, 27 ἐπέφωσκε c. Dindorf. in Steph. Thes. s. v.

διεπιφώσκει; malim διέφωσκε | 31 ἔμενον libri, corr. Sylburg | 32 καὶ addidi.

320, 2 αὐτοὺς *AB* | 5 βελῶν ἀπὸ om. *B* | τοξοτῶν libri, corr. Sylburg | 13 τεταγμένους om. *B* | 15 λήματος *Bb* | τε om. *B* | 16 ἐκφερόμενος maluit Reiske.

321, 13 οἱ add. *B* | 15 ἀπερύνειν *ABb* ἀπο .. ου. ειν *Ba*, unde effeci ἀποκρούειν | 22 ἐγένετο *ABA* | 32 γε add. *B*.

322, 3 μένοντες libri, corr. Sylburg | 11 τὰς ἐσχάτας ἔσχον *ABb* παρέσχον *Ba* ut videtur | ἀπαλλαγέντες libri, correxit Reiske | 13 πολεμουμένους libri, quod correxi | 22 ἤδη διεσκευασμένοι *A* om. *B*, correxit Reiske | 24 δὲ maluit Sylburg | 26 ἀποληφθέντες *B* | αὐτοὶ c. Sylburg | 28 πελάσαντες libri, correxit Hudson | 30 μέρος add. *B*.

323, 3 αὐτὸν om. *B* | 14 μετὰ τὴν μάχην. add. *B*. | 17 ὑστερίσαντας *ABb* | 30 φαβίου libri Αἰβουτίου Sylburg | 31 σερούλου libri, corr. Sylburg | 32 πολέμου *B*.

324, 2 ὄσης οὐπω? | 10 τε libri μὲν Reiske, quamquam librorum scriptura fortasse defendi potest | 11 τε libri δὲ Sylburg | 21 καιρὸν εἶναι?

325, 14 πολλοὺς μὲν ἀποβαλόντες τῶν σφετέρων, πολλῶ δ' ἐτι πλείους ἀποκτείναντες τῶν πολεμίων libri, quae correxi | μὲν add. *B* | 20 Σαβίνων libri Γαβίνων scripsi coll. Liv. III 6 | 30 ἔστιν add. Reiske.

326, 4 ὁ maluit Sylburg | 7 εἰσκυλίτων *A* ἰσκυλίτων *Bb*, de *Ba* non mihi constat | 8 κολλίμων *ABA* | 12 προσεχόμενον *B* προσκεχωμένον maluit Reiske | 28 γεμίνιον *AB* | 32 Τίτου libri Τιτίου Gelenius.

327, 10 φρούριος libri; φαβίος ex Livio III 8 maluit Sylburg | 21 πρῶτον add. *B* | 23 πύθοιτο ἕκαστος *Ba* | 24 ἠγγήσεσθαι libri, quod correxi | 30 τε add. *B*.

328, 9 ἀλαλαγμῶν *ABb* | κτύπων *Bb* | 17 Οὐολούσκων Sylburg ἐκείνων libri | 19 καὶ αὐτοί?

329, 13 τινός *A* | ἀπ' ὄχθου maluit Reiske | 27 τοῦ om. Reiske | 30 τίμια scripsi ταμεῖα *ABb* τάμια *Ba* τὰ τιμῆς Sintenis l. I. I p. 28 | πάντα maluit Schnelle.

## Corrigenda.

P. 13, 9 lego *τυραννίδα*, 13, 10 l. *ἤδη δίκας*. 19, 13 l. *Σικίνιος*. 23, 18 l. *Σικίνιος*. 37, 19 l. *ἔχειν*. 38, 9 l. *ἐμέλ-  
λετε*. 38, 18 l. *ὄρους*. 53, 12 l. *δημαρχικήν*. 65, 3 l. *ἐπιτορκίαν*. 71, 24 l. *ἀποδεικνύναι*. 80, 16 l. *οὐδ'*. 88,  
5 l. *Δατίειε*. 94, 17 l. *ἐνθύθμω*. 102, 19 l. *ἀποδείκνυ-  
σθαι*. 102, 21 l. *ἀνθρώπων*. 144, 20 l. *δὲ οὐ*. 115, 9 l. *ἐπαγόντων*. 118, 6 l. *ιδίους ἀποδείξει*. 124, 15 l. *ἐν*.  
238, 3 l. *λόγοις*. 291, 27 l. *ἀρχάς*. 309, 17 l. *περιήσαν*  
*τῶν*. 314, 32 l. *ἄγειν*.

## ΔΙΟΝΥΣΙΟΥ

ΑΔΙΚΑΡΝΑΣΕΩΣ

ΡΩΜΑΙΚΗΣ ΑΡΧΑΙΟΛΟΓΙΑΣ

ΛΟΓΟΣ ΕΒΔΟΜΟΣ.

Heiskianae  
editionis

p. 1307 Τίτου δὲ Γερανίου Μακερίνου καὶ Ποπλίου Μη-  
νυκίου τὴν ὑπατον ἐξουσίαν παραλαβόντων, σίτου  
σπάνις ἰσχυρὰ τὴν Ῥώμην κατέσχευ, ἐκ τῆς ἀποστά-  
σεως λαβοῦσα τὴν ἀρχὴν. ὁ μὲν γὰρ δῆμος ἀπέστη  
1308 τῶν πατρικίων περὶ τὴν μετοπωρινὴν ἰσημερίαν, ὑπ' 5  
αὐτὴν μάλιστα τὴν ἀρχὴν τοῦ σπόρου· ἐξέλιπον δὲ  
τὴν χώραν οἱ γεωργοῦντες ἅμα τῇ κινήσει, καὶ διέ-  
στησαν οἱ μὲν χαριέστεροι πρὸς τοὺς πατρικίους, τὸ  
δὲ θητικὸν μέρος ὡς τοὺς δημοτικούς· καὶ διέμειναν  
ἐξ ἐκείνου χωρὶς ἀλλήλων ὄντες, ἕως οὗ κατέστη καὶ 10  
συνῆλθεν ἡ πόλις εἰς ἑαυτὴν οὐ πολλῶ πρότερον  
διαλλαγεῖσα τῆς χειμερινῆς τροπῆς. τὸν δὲ μεταξὺ  
χρόνον, ἐν ᾧ ὁ πᾶς ἐπιτελεῖται σπόρος ὥρατος, ἔρημος  
ἡ χώρα τῶν ἐπιμελησομένων ἦν καὶ ἐπὶ πολὺν χρό-  
νον διετίλεσεν, ὥστε μηδὲ κατελθοῦσι τοῖς γεωργοῖς 15  
ἀναλαβεῖν αὐτὴν ἔτι ὄσδιον εἶναι, δούλων τε ἀπο-  
στάσει καὶ κτηνῶν ὀλέθρῳ μεθ' ᾧ αὐτὴν ἐμελλον  
ἐργάζεσθαι κεκακωμένοις, ἀφορμῆς τε οὐ πολλοῖς εἰς  
τὸν ἐπιόντα ἐνιαυτὸν ὑπαρχούσης οὔτε σπερμάτων  
οὔτε τροφῆς. ταῦτα ἡ βουλὴ μαθοῦσα πρῆσβεις διέ- 20

πεμπτε πρὸς Τυρρηνοὺς καὶ Καμπανοὺς καὶ τὸ κα- 1309  
 λούμενον Πωμεντίνον πεδίου σίτον ὅσον ἂν δύναιντο  
 πλεῖστον ὠνησομένους· Πόπλιος δὲ Οὐαλέριος καὶ  
 Λεύκιος Γεράνιος εἰς Σικελίαν ἀπεστάλησαν, Οὐα-  
 5 λέριος μὲν υἱὸς ὦν Ποπλικόλα, Γεράνιος δὲ θατέρου  
 τῶν ὑπάτων ἀδελφός. τύραννοι δὲ τότε κατὰ πόλεις 1310  
 μὲν ἦσαν, ἐπιφανέστατος δὲ Γέλων ὁ Δεινομένοους 1311  
 νεωστὶ τὴν Ἰπποκράτους τοῦ ἀδελφοῦ τυραννίδα παρ- 1312  
 ελληφώς, οὐχὶ Διονύσιος ὁ Συρακούσιος, ὡς Δικίν- 1313  
 10 νιος γέγραφε καὶ Γέλλιος καὶ ἄλλοι συχνοὶ τῶν Ῥω-  
 μαίων συγγραφέων, οὐθὲν ἐξητακότες τῶν περὶ τοὺς  
 χρόνους ἀκριβῶς, ὡς αὐτὸ δηλοῖ τοῦργον, ἀλλ' εἰκῆ  
 τὸ προστυχὸν ἀποφαινόμενοι. ἡ μὲν γὰρ εἰς Σικελίαν  
 ἀποδειχθεῖσα πρεσβεία κατὰ τὸν δεύτερον ἐνιαυτὸν  
 15 τῆς ἐβδομηκοστῆς καὶ δευτέρας ὀλυμπιάδος ἐξέπλευ-  
 σεν ἄρχοντος Ἀθήνησιν Ἰβριλίδου, ἐπτακαίδεκα  
 διεληθόντων ἐτῶν μετὰ τὴν ἐμβολὴν τῶν βασιλείων,  
 ὡς οὗτοί τε καὶ οἱ ἄλλοι σχεδὸν ἅπαντες συγγραφεῖς  
 ὁμολογοῦσι· Διονύσιος δὲ ὁ πρεσβύτερος ὀργδοηκο-  
 20 στίῳ καὶ πέμπτῳ μετὰ ταῦτα ἔτει Συρακουσίους ἐπα-  
 ναστίας, κατέσχε τὴν τυραννίδα κατὰ τὸν τρίτον  
 ἐνιαυτὸν τῆς ἐνενηκοστῆς καὶ τρίτης ὀλυμπιάδος  
 ἄρχοντος Ἀθήνησι Καλλίου τοῦ μετ' Ἀντιγένῃ. ὀλί-  
 25 γοις μὲν οὖν ἔτεσι διαμαρτεῖν τῶν χρόνων δοίη τις  
 ἂν ἱστορικοῖς ἀνδράσιν ἀρχαίας καὶ πολυετεῖς  
 συνταττομένοις πραγματείας, γενεαῖς δὲ δυσὶν ἢ  
 τρισὶν ὅλαις ἀποπλανηθῆναι τῆς ἀληθείας οὐκ ἂν  
 ἐπιτρέψειεν. ἀλλ' εἰκεν ὁ πρῶτος ἐν ταῖς χρονογρα- 1314  
 φίαις τοῦτο καταχωρίσας, ᾧ πάντες ἠκολούθησαν οἱ  
 30 λοιποί, τοσοῦτο μόνον ἐν ταῖς ἀρχαίαις εὐρῶν ἀνα-  
 γραφαῖς, ὅτι πρέσβεις ἀπεστάλησαν ἐπὶ τούτων τῶν  
 ὑπάτων εἰς Σικελίαν σίτον ὠνησομένοι καὶ παρήσαν

ἐκεῖθεν ἄγοντες ἦν ὁ τύραννος ἔδωκε δωρεάν, οὐκέτι  
 μὴν παρὰ τῶν Ἑλληνικῶν ἐξετάσαι συγγραφέων ὅστις  
 ἦν τύραννος τότε Σικελίας, ἀβασανίστως δὲ πως καὶ  
 κατὰ τὸ προστυχὸν θεῖναι τὸν Διονύσιον.

II. Οἱ μὲν οὖν ἐπὶ Σικελίαν πλείοντες πρέσβεις 5  
 χειμῶνι χρησάμενοι κατὰ θάλατταν καὶ κύκλῳ τὴν  
 νῆσον περιπλεῖν ἀναγκασθέντες, χρόνιοί τε κατή-  
 χθησαν πρὸς τὸν τύραννον, καὶ τὴν χειμερινὴν ἐκεῖ  
 διατρίψαντες ὤραν μετὰ [τὸ] θέρος ἐπανῆλθον εἰς Ἰτα-  
 λίαν πολλὰς κομίζοντες ἀγοράς. οἱ δ' εἰς τὸ Πω- 10  
 μεντίνον ἀποσταλέντες πεδίου, ὀλίγου μὲν ἐδέησαν  
 ὡς κατάσκοποι πρὸς τῶν Οὐολούσκων ἀναιρεθῆναι  
 διαβληθέντες ὑπὸ τῶν ἐκ Ῥώμης φυγάδων, χαλε-  
 1315 πῶς δὲ πάννυ διὰ τὴν προθυμίαν τῶν ἰδίων ξέ-  
 νων αὐτὰ διασῶσαι δυνηθέντες τὰ σώματα, δίχα 15  
 τῶν χρημάτων ἀνέστρεψαν εἰς τὴν Ῥώμην ἄπρακτοι.  
 ὅμοια δὲ τούτοις συνέβη παθεῖν καὶ τοῖς εἰς τὴν Ἰτα-  
 λιῶτιν ἀφικομένοις Κύμη. καὶ γὰρ ἐν ταύτῃ τῇ  
 πόλει πολλοὶ Ῥωμαίων διατρίβοντες, οἱ σὺν τῷ βα-  
 σιλεῖ Ταρκυνίῳ διασωθέντες ἐκ τῆς τελευταίας μάχης 20  
 φυγάδες, τὸ μὲν πρῶτον ἐξαιτεῖσθαι παρὰ τοῦ τυ-  
 ράννου τοὺς ἀνδρας ἐπεχείρησαν ἐπὶ θανάτῳ· ἀπο-  
 τυχόντες δὲ τούτου φύσια κατασχεῖν ταῦτα τὰ σώματα  
 παρὰ τῆς ἀπεσταλκνίας πόλεως ἤξιον, ἕως ἀπολά-  
 βωσι τὰς ἑαυτῶν οὐσίας, ἃς ἔφασαν ὑπὸ Ῥωμαίων 25  
 ἀδίκως δεδημεῦσθαι, καὶ ταύτης ᾤοντο δεῖν τῆς δί-  
 κης τὸν τύραννον αὐτοῖς γενέσθαι κριτήν. ὁ δὲ τυ-  
 ραννῶν τότε τῆς Κύμης Ἀριστόδημος ἦν ὁ Ἀριστο-  
 κράτους, ἀνὴρ οὐ τῶν ἐπιτυχόντων ἕνεκα γένους, ὃς  
 ἐκαλεῖτο Μαλακὸς ὑπὸ τῶν ἀστῶν καὶ σὺν χρόνῳ 30  
 γνωριστέραν τοῦ ὀνόματος ἔσχε τὴν ἐπίκλησιν, εἶθ'  
 1316 ὅτι θηλυδρίας ἐγένετο παῖς ὦν καὶ τὰ γυναιξίν ἀρ-

μόττοντα ἔπασχεν ὡς ἱστοροῦσί τινες, εἶθ' ὅτι πρῶτος ἦν φύσει καὶ μαλακὸς εἰς ὀργήν, ὡς ἕτεροι γράφουσιν. ἀφορμαῖς δὲ τῆς τυραννίδος ὁποῖαις ἐχρήσατο, καὶ τίνες ἦλθεν ἐπ' αὐτὴν ὁδοὺς, καὶ πῶς διώκησε 5 τὰ κατὰ τὴν ἀρχὴν, καταστροφῆς τε ὁποῖας ἐτύχεν, οὐκ ἀκαιρον εἶναι δοκῶ μικρὸν ἐπιστήσας τὴν Ῥωμαϊκὴν διήγησιν κεφαλαιωδῶς διεξελθεῖν.

III. Ἐπὶ τῆς ἐξηκοστῆς καὶ τετάρτης Ὀλυμπιάδος ἀρχόντος Ἀθηνησὶ Μιλτιάδου Κύμη τὴν ἐν Ὀπικοῖς 10 Ἑλληνίδα πόλιν, ἣν Ἑρετριεῖς τε καὶ Χαλκιδεῖς ἐκτικούντες ἐκαῖθ' ἐν θ' ὑπὸ τῶν Κελτῶν ἐξελαθέντες σὺν χρόνῳ, καὶ σὺν αὐτοῖς Ὀμβρικοὶ τε καὶ Λαύνιοι καὶ συχνοὶ τῶν ἄλλων βαρβάρων ἐπεχείρησαν ἀνε- 1317 λείν, οὐδεμίαν ἔχοντες εἰπεῖν τοῦ μίσους δικαίαν πρόφασιν ὅτι μὴ τὴν εὐδαιμονίαν τῆς πόλεως. ἦν γὰρ [ἡ] Κύμη κατ' ἐκείνους τοὺς χρόνους περιβόητος ἀνὰ τὴν Ἰταλίαν ὅλην πλούτου τε καὶ δυνάμεως καὶ τῶν ἄλλων ἀγαθῶν ἕνεκα, γῆν τε κατέχουσα τῆς Καμ- 20 πανῶν πεδιάδος τὴν πολυκαρποτάτην, καὶ λιμένων κρατούσα τῶν περὶ Μισσηνὸν ἐπικαιροτάτων. τούτοις ἐπιβουλεύσαντες τοῖς ἀγαθοῖς οἱ βάρβαροι στρατεύουσιν ἐπ' αὐτήν, πεζοὶ μὲν οὐκ ἐλάττους πεντήκοντα μυριάδων, ἵππεῖς δὲ δυεῖν χιλιάδων ἀποδέου- 25 τες εἶναι δισμύριοι. ἐστρατοπεδενόσι δ' αὐτοῖς οὐ μακρὰν ἀπὸ τῆς πόλεως τέρας γίνεται θαυμαστόν, οἷον ἐν οὐδενὶ χρόνῳ μνημονεύεται γενόμενον οὐθ' Ἑλλάδος οὔτε βαρβάρου γῆς οὐδαμόθι. οἱ γὰρ παρὰ τὰ στρατόπεδα ῥέοντες αὐτῶν ποταμοί, Οὐολτοῦρνος 30 ὄνομα θατέρῳ, τῷ δ' ἑτέρῳ Γλάνις, ἀφέντες τὰς κατὰ φύσιν ὁδοὺς ἀνέστρεψαν τὰ νάματα, καὶ μέχρι πολλοῦ διετέλεσαν ἀπὸ τῶν στομάτων ἀναχωροῦντες ἐπὶ

1318 τὰς πηγὰς. τοῦτο καταμαθόντες οἱ Κυμαῖοι τότε ἐθάρορσαν ὁμοσε τοῖς βαρβάροις χωρεῖν, ὡς τοῦ δαιμονίου ταπεινὰ μὲν τὰ κείνων μετέωρα θήσοντας, ὑψηλὰ δὲ τὰ δοκοῦντα εἶναι τότε σφῶν ταπεινά. νείμαντες δὲ τὴν ἐν ἀκμῇ δύναμιν ἄπασαν τριχῆ, μιᾶ 5 μὲν τὴν πόλιν ἐφρούρουν, τῇ δ' ἑτέρα τὰς ναῦς εἶχον ἐν φυλακῇ, τῇ δὲ τρίτῃ πρὸ τοῦ τείχους ταξάμενοι τοὺς ἐπιόντας ἐδέχοντο. τούτων ἵππεῖς μὲν ἦσαν ἑξακόσιοι, πεζοὶ δὲ τετρακισχίλιοι καὶ πεντακόσιοι καὶ οὕτως ὄντες τὸν ἀριθμὸν ὀλίγοι τὰς τοσαύτας 10 ὑπέστησαν μυριάδας.

III. Ὡς δὲ κατέμαθον αὐτοὺς οἱ βάρβαροι μάχεσθαι παρεσκευασμένους, ἀλαλάξαντες ἐχώρουν ὁμοσε τὸν βάρβαρον τρόπον ἄνευ κόσμου πεζοὶ τε καὶ ἵππεῖς ἀναμιξ ὡς ἄπαντας ἀναρπασόμενοι. ἦν δὲ 15 τὸ πρὸ τῆς πόλεως χωρίον, ἐν ᾧ συνέμισγον ἀλλήλοις, αὐτῶν στενὸς ὄρεσι καὶ λίμναις περικλειόμενος, τῇ μὲν ἀρετῇ τῶν Κυμαίων σύμμαχος, τῷ δὲ πλήθει τῶν βαρβάρων πολέμιος. ἀνατρεπόμενοι γὰρ ὑπ' ἀλλήλων καὶ συμπατούμενοι πολλαχῆ μὲν καὶ ἄλλῃ, 20 1319 μάλιστα δὲ περὶ τὰ τέλματα τῆς λίμνης, οὐδ' εἰς χεῖρας ἐλθόντες τῇ φάλαγγι τῶν Ἑλλήνων αὐτοὶ δι' αὐτῶν οἱ πλείους διεφθάρησαν· καὶ ὁ μὲν πεζὸς αὐτῶν στρατὸς ὁ πολὺς περὶ ἑαυτῶ σφαλεῖς, ἔργον δὲ γενναῖον οὐδὲν ἀποδειξάμενος, ἄλλος ἄλλῃ διασκε- 25 δασθεῖς ἐφευγεν· οἱ δ' ἵππεῖς συνῆλθον μὲν ὁμοσε, καὶ πολὺν τοῖς Ἑλλήσιν οὗτοι παρέσχον πόνον. ἀδύνατοι δὲ ὄντες κνικώσασθαι τοὺς πολέμιους διὰ στενοχωρίαν, καὶ τι καὶ τοῦ δαιμονίου κεραννοῖς καὶ ὕδασι καὶ βρονταῖς συναγωνισαμένου τοῖς Ἑλλήσιν, δεῖσαν- 30 τες εἰς φρυγὴν τρέπονται. ἐν ταύτῃ τῇ μάχῃ πάντες μὲν οἱ τῶν Κυμαίων ἵππεῖς λαμπρῶς ἠγωνίσαντο, καὶ

τῆς νίκης οὗτοι μάλιστα ὠμολογοῦντο αἰτιοὶ γενέ-  
σθαι, ὑπὲρ ἅπαντας δὲ τοὺς ἄλλους Ἀριστόδημος ὁ  
Μαλακὸς ἐπικαλούμενος· καὶ γὰρ τὸν ἡγεμόνα τῶν  
πολεμίων οὗτος ἀπέκτεινε μόνος ὑποστάς καὶ ἄλλους  
5 πολλοὺς καὶ ἀγαθοὺς. λυθέντος δὲ τοῦ πολέμου τὰς χα-  
ριστηρίους θυσίας ἀποδόντες οἱ Κυμαῖοι τοῖς θεοῖς καὶ  
ταφάς τῶν ἀποθανόντων ἐν τῇ μάχῃ λαμπράς ποιη- 1320  
σάμενοι, περὶ τῶν ἀριστείων, ὅτε χορὴ τὸν πρῶτον  
ἀποδοῦναι στέφανον, εἰς πολλὴν κατέστησαν ἔριν.  
10 οἱ μὲν γὰρ ἀκέραιοι κριταὶ τὸν Ἀριστόδημον ἐβού-  
λοντο τιμῆσαι, καὶ ἦν ὁ δῆμος ἅπας μετ' ἐκείνου· οἱ  
δὲ δυνατοὶ τὸν ἱππάρχῃν Ἰππομέδοντα, καὶ ἡ βουλή  
πᾶσα τούτῳ συναλάμβανεν· ἦν δ' ἀριστοκρατικὴ τότε  
παρὰ τοῖς Κυμαίοις ἡ πολιτεία, καὶ ὁ δῆμος οὐ πολ-  
15 λῶν τινῶν κύριος. στάσεως δὲ διὰ ταύτην τὴν ἔριν  
ἀνισταμένης, δεισαντες οἱ πρεσβύτεροι μὴ πρὸς ὄπλα  
καὶ φόρους χωρήσῃ τὸ φιλότιμον ἐπεισαν ἀμφοτέρως  
τὰς τάξεις συγχωρῆσαι τὰς ἴσας λαβεῖν τιμὰς ἐκάτε-  
ρον τῶν ἀνδρῶν· ἀπὸ ταύτης γίνεται τῆς ἀρχῆς δῆ-  
20 μων προστάτης ὁ Μαλακὸς Ἀριστόδημος, καὶ λόγου  
πολιτικοῦ δύναμιν ἀσκήσας ἐξεδημαγῶγει τὸ πλῆθος,  
πολιτεύμασί τε κεχαρισμένοις ἀναλαμβάνων καὶ τοὺς  
σφραγεριζομένους τὰ κοινὰ τῶν δυνατῶν ἐξελέγχων καὶ  
ἀπὸ τῶν ἑαυτοῦ χρημάτων πολλοὺς τῶν πενήτων εὐ- 1321  
25 ποιῶν· καὶ ἦν τοῖς προεστηκόσι τῆς ἀριστοκρατίας  
διὰ ταῦτα ἐπαχθῆς καὶ φοβερός.

V. Εἰκοστῷ δ' ὕστερον ἔτει τῆς πρὸς τοὺς βαρ-  
βάρους μάχης ἦλθον ὡς τοὺς Κυμαίους Ἀρικηνῶν  
πρέσβεις σὺν ἱκετηρίαις ἀξιούντες αὐτοὺς βοηθῆσαι  
30 σφίσιν ὑπὸ Τυρρηνῶν πολεμουμένους. μετὰ γὰρ τὰς  
διαλλαγὰς ἃς ἐποιήσατο πρὸς τὴν Ῥωμαίων πόλιν ὁ  
βασιλεὺς τῶν Τυρρηνῶν Πορσίνας, τὸν υἱὸν Ἀρροντα

δοὺς τὴν ἡμίσειαν τῆς στρατιᾶς ἐπεμψεν ἰδίαν ἀρχὴν  
κτήσασθαι βουλόμενον, ὡς ἐν τοῖς πρὸ τούτου δεδή-  
λωκα λόγοις· ὅς ἐπολιόρκει τότε τοὺς Ἀρικηνοὺς κα-  
ταπεφενγότας εἰς τὸ τεῖχος καὶ οὐ διὰ μακροῦ λιμῶ  
τὴν πόλιν αἰρήσειν ᾤετο. ταύτης τῆς πρεσβείας 5  
ἀφικομένης οἱ προεστηκότες τῆς ἀριστοκρατίας μι-  
σοῦντες τὸν Ἀριστόδημον καὶ δεδιότες, μὴ τι κακὸν  
ἐξεργάσῃται περὶ τὴν πολιτείαν, κάλλιστον ὑπέλαβον  
1322 εἰληφέναι καιρὸν ἐκποδῶν αὐτὸν ποιήσασθαι σὺν  
εὐσχήμουι προφάσει. πείσαντες δὲ τὸν δῆμον ἀποστει- 10  
λαι Ἀρικηνοὺς δισχιλίους ἄνδρας ἐπὶ συμμαχίαν, καὶ  
στρατηγὸν ἀποδείξαντες τὸν Ἀριστόδημον ὡς δὴ τὰ  
πολέμια λαμπρόν, τὰ μετὰ ταῦτα ἔπραττον, ἐξ ὧν ἡ  
κατακοπήσεσθαι μαχόμενον ὑπὸ τῶν Τυρρηνῶν αὐ-  
τὸν ὑπελάμβανον, ἢ κατὰ πέλαγος διαφθαρήσεσθαι. 15  
γενόμενοι γὰρ ὑπὸ τῆς βουλῆς κύριοι καταλέξαι τοὺς  
ἐπὶ τὴν συμμαχίαν ἐξελεussoμένους, τῶν μὲν ἐπισή-  
μων καὶ λόγου ἀξίων οὐδένα κατέγραψαν, ἐπιλέξαντες  
δὲ τοὺς ἀποροτάτους τε καὶ πονηροτάτους τῶν δημο-  
20 τικῶν, ἐξ ὧν ἀεί τινες ὑπώπτεον νεωτερισμούς, ἐκ  
τούτων συνεπλήρωσαν τὸν ἀπόστολον· καὶ ναῦς δέκα  
παλαιᾶς κάκιστα πλεούσας καθελκύσαντες, ὧν ἐτριη-  
ράρχουν οἱ πενέστατοι Κυμαίων, εἰς ταύτας αὐτοὺς  
ἐνεβίβασαν θάνατον ἀπειλήσαντες ἕαν τις ἀπολειφθῇ  
25 τῆς στρατείας.

1323 VI. Ὁ δ' Ἀριστόδημος τοσοῦτον εἰπὼν μόνον,  
ὡς οὐ λέληθεν αὐτὸν ἡ διάνοια τῶν ἐχθρῶν, ὅτι  
λόγῳ μὲν ἐπὶ συμμαχίαν αὐτὸν ἀποστέλλουσιν, ἔργῳ  
δ' εἰς προὔπτον ὄλεθρον, δέχεται μὲν τὴν στρατηγίαν,  
ἀναχθεὶς δ' ἅμα τοῖς πρέσβεσι τῶν Ἀρικηνῶν διὰ 30  
ταχίων καὶ τὸ μεταξὺ πέλαγος ἐπιπόνως καὶ κινδυ-  
νωδῶς διανύσας ὁρμίζεται κατὰ τοὺς ἔγγιστα τῆς

Ἀρικείας αἰγιαλούς· καὶ καταλιπὼν ἐπὶ ταῖς ναυσὶ  
φυλακὴν ἀποχωρῶσαν, ἐν τῇ πρώτῃ νυκτὶ τὴν ἀπὸ  
θαλάσσης ὁδὸν οὐ πολλὴν οὖσαν διανύσας, ἐπιφαί-  
νεται τοῖς Ἀρικηνοῖς περὶ τὸν ὄρθρον ἀπροσδόκητος.  
5 θήμενος δὲ πλησίον αὐτῶν τὸν χάρακα καὶ τοὺς κα-  
ταπεφρυγῶτας εἰς τὰ τεῖχη πείσας προελθεῖν εἰς  
ὑπαιθρον, προῦκαλεῖτο τοὺς Τυρρηνοὺς εὐθύς εἰς  
μάχην. γενομένης δὲ παρατάξεως καὶ ἀγῶνος καρ-  
τεροῦ οἱ μὲν Ἀρικηνοὶ βραχὺν πᾶν διαμείναντες  
10 χρόνον ἐνέκλιαν ἀθροοί, καὶ γίνεται πάλιν εἰς τὸ τεῖ-  
χος αὐτῶν φυγὴ· ὁ δὲ Ἀριστόδημος σὺν τοῖς περὶ  
αὐτὸν λογάσι Κυμαίων ὀλίγοις οὖσι πᾶν τὸ τοῦ πο-  
λέμου βάρος ὑποστάς καὶ τὸν ἡγεμόνα τῶν Τυρρη-  
νῶν αὐτοχειρία κτείνας τρέπει τοὺς ἄλλους εἰς φυγὴν  
15 καὶ νίκην ἀναιρεῖται πασῶν λαμπροτάτην. διαπραξά-  
μενος δὲ ταῦτα καὶ τιμηθεὶς ὑπὸ τῶν Ἀρικηνῶν πολ-  
λαῖς δωρεαῖς ἀπέπλει διὰ ταχέων, αὐτὸς ἄγγελος τοῖς  
Κυμαίοις τῆς αὐτοῦ νίκης βουλόμενος γενέσθαι· εἴ-  
ποντο δὲ αὐτῷ πολλὰ πᾶν τῶν Ἀρικηνῶν ὀλκάδες  
20 τὰ λάφυρα καὶ τοὺς αἰχμαλώτους τῶν Τυρρηνῶν  
ἄγουσαι. ὡς δὲ πλησίον ἐγένοντο τῆς Κύμης, ὀμίσας  
τὰς ναῦς ἐκκλησίαν τοῦ στρατοῦ ποιεῖται, καὶ πολλὰ  
μὲν τῶν προεστηκότων τῆς πόλεως κατηγορήσας,  
πολλοὺς δὲ τῶν ἀνδραγαθησάντων κατὰ τὴν μάχην  
25 ἐπαίνους διελθᾶν, ἀργυρίον τε διαδοὺς αὐτοῖς κατ'  
ἄνδρα, καὶ τὰς παρὰ τῶν Ἀρικηνῶν δωρεὰς εἰς κοι-  
νὸν ἅπασι καταθεῖς, ἤξιον μεμνησθαι τῶν εὐεργεσιῶν  
ἂν καταπλεύσωσιν εἰς τὴν πατρίδα, καὶ ἂν τις αὐτῷ  
ποτε συμβαίη κίνδυνος ἐκ τῆς ὀλιγαρχίας ὡς δύνα-  
30 μιν ἐκάστῳ βοηθεῖν. ἀπάντων δὲ πολλὰς ὁμολογούν-  
των αὐτῷ χάριτας εἰδέναι τῆς τε ἀνελεπίστου σωτη-  
ρίας ἣν δι' ἐκεῖνον ἔσχον καὶ τῆς ἐπὶ τὰ οἴκεια οὐ

σὺν κεναῖς χερσὶν ἀφίξεως, καὶ τὰς ἑαυτῶν ψυχὰς  
θάπτον ἢ τὴν ἐκείνου προήσασθαι τοῖς ἐχθροῖς ἐπαγ-  
γελαμένων, ἐπαινέσας αὐτοὺς ἀπέλυσε τὴν ἐκκλησίαν.  
καὶ μετὰ τοῦτο καλῶν εἰς τὴν αὐτοῦ σκηνὴν τοὺς  
5 πονηροτάτους ἐξ αὐτῶν καὶ κατὰ χεῖρα γενναιοτά-  
τους, δωρεῶν τε δόσει καὶ λόγων φιλανθρωπία  
καὶ ταῖς ἅπαντας ἐξαπατώσας ἐλπίσι διαφθείρας,  
ἑτοίμους ἔσχε συγκαταλῦσαι τὴν καθεστῶσαν πο-  
λιτείαν.

VII. Οὗς συνεργοὺς καὶ συναγωνιστὰς λαβὼν 10  
καὶ ἂ δέησει πράττειν ἐκάστοις ὑποθέμενος, τοῖς τε  
αἰχμαλώτοις οὗς ἐπήγετο προῖκα δοὺς τὴν ἐλευθερίαν,  
ἵνα καὶ τὴν ἐκείνων εὐνοίαν προσλάβῃ, κατέπλει κε-  
1326 κοσμημέναις ταῖς ναυσὶν εἰς τοὺς τῶν Κυμαίων λι-  
μένας. οἱ δὲ τῶν στρατευομένων πατέρες τε καὶ 15  
μητέρες καὶ πᾶσα ἢ ἄλλη συγγένεια παιδία τε καὶ  
γαμεταὶ γυναικες ὑπήντων ἐξιούσιν αὐτοῖς μετὰ  
δακρύων περιπλεκόμενοι καὶ καταφιλοῦντες καὶ ταῖς  
ἠδίσταις ἕκαστον ἀνακαλούμενοι προσηγορίαις. καὶ  
ἢ ἄλλη δὲ πληθὺς ἢ κατὰ τὴν πόλιν ἅπασα χαρᾶ καὶ 20  
κρότῳ δεξιουμένη τὸν ἡγεμόνα προῦπεμπευ εἰς οἶκον  
ἀπιόντα. ἐφ' οἷς οἱ προεστηκότες τῆς πόλεως ἀνιῶ-  
μενοι, μάλιστα δὲ οἱ τὴν στρατηγίαν αὐτῷ παραδόν-  
τες καὶ τᾶλλα τὰ πρὸς τὸν ὄλεθρον μηχανησάμενοι,  
πονηροὺς ὑπὲρ τοῦ μέλλοντος εἶχον διαλογισμούς. ὁ 25  
δὲ διαλιπὼν ὀλίγας τινὰς ἡμέρας, ἐν αἷς τὰς εὐχὰς  
ἀπεδίδου τοῖς θεοῖς καὶ τὰς ὑστεριζούσας ὀλκάδας  
ἀνιδέχτο, ἐπειδὴ καιρὸς ἦν ἔφη βούλεσθαι τὰ πρα-  
χθέντα κατὰ τὸν ἀγῶνα πρὸς τὴν βουλὴν ἀπαγγεῖλαι  
καὶ τὰ ἐκ τοῦ πολέμου λάφυρα ἀποδείξαι. συνεληθόν- 30  
των δὲ τῶν ἐν τέλει κατὰ πληθὸς εἰς τὸ βουλευτή-  
1327 ριον, ὁ μὲν ἐδημηγόρει παρελθὼν καὶ πάντα τὰ γενό-

μενα κατὰ τὴν μάχην διεξήει, οἱ δὲ παρασκευασθέν-  
 τος ὑπ' αὐτοῦ συνεργοὶ τῆς ἐπιθέσεως ἔχοντες ὑπὸ  
 τοῖς ἑματίοις ξίφη κατὰ πλήθος εἰσδραμόντες εἰς τὸ  
 βουλευτήριον ἀποσφάττουσιν ἅπαντας τοὺς ἀριστο-  
 5 κρατικούς. φυγὴ δὲ μετὰ τοῦτο τῶν κατ' ἀγορὰν καὶ  
 δρόμος, τῶν μὲν ἐπὶ τὰς οἰκίας, τῶν δὲ ἔξω τῆς πό-  
 λεως, πλὴν τῶν συνειδότην τὴν ἐπίθεσιν· οὗτοι δὲ  
 τὴν ἄκραν καὶ τὰ νεώρια καὶ τοὺς ἐρυννοὺς τόπους  
 τῆς πόλεως κατελάμβανον. τῇ δ' ἐπιούσῃ νυκτὶ λύσας  
 10 ἐκ τῶν δεσμοτηρίων τοὺς ἐπιθανατίους πολλοὺς  
 ὄντας καὶ καθοπλίσας ἅμα τοῖς ἄλλοις φίλοις, ἐν οἷς  
 ἦσαν καὶ οἱ τῶν Τυρρηγῶν αἰχμάλωτοι, φυλακὴν ἐκ  
 τούτων καθίσταται περὶ τὸ σῶμα. ἡμέρας δὲ γενο-  
 μένης συγκαλέσας τὸν δῆμον εἰς ἐκκλησίαν, καὶ πολ-  
 15 λὴν κατηγορίαν διαθέμενος τῶν φρονεθέντων ὑπ'  
 αὐτοῦ πολιτῶν, ἐκείνους μὲν ἔφη τετιμωρῆσθαι σὺν  
 δίκῃ πολλὰς ἐπιβουλευθεῖς ὑπ' αὐτῶν, τοῖς δὲ ἄλ- 1328  
 λοις πολίταις ἐλευθερίαν φέρων παρῆναι καὶ ἰσηγο-  
 ρίαν καὶ ἄλλα πολλὰ ἀγαθὰ.

20 VIII. Ταῦτ' εἰπὼν καὶ θανμαστῶν ἅπαντας ἐμ-  
 πλήσας ἐλπίδων τοὺς δημοτικούς δύο τὰ κάκιστα  
 τῶν ἐν ἀνθρώποις καθίσταται πολιτευμάτων, οἷς  
 ἅπαντα χρῆται προοιμίους τυραννίς, γῆς ἀναδασμὸν  
 καὶ χρεῶν ἄφρσιν· τούτων δὲ τὴν ἐπιμέλειαν αὐτὸς  
 25 ἀμφοτέρων ὑπισχνεῖται ποιήσεσθαι στρατηγὸς ἀπο-  
 δειχθεὶς αὐτοκράτωρ, ἕως ἐν ἀσφαλεῖ τὰ κοινὰ γέ-  
 νηται καὶ δημοκρατικὴν καταστήσονται πολιτείαν.  
 ἀσμένως δὲ τοῦ δημοτικοῦ καὶ πονηροῦ πλήθους τὴν  
 ἀρπαγὴν τῶν ἀλλοτρίων δεξαμένον, λαβὼν τὴν αὐτο-  
 30 κράτορα ἀρχὴν αὐτὸς παρ' ἑαυτοῦ ἕτερον ἐπιφέρει  
 βούλευμα, δι' οὗ παρακρουσάμενος αὐτοὺς ἀπάντων  
 ἀφείλετο τὴν ἐλευθερίαν. σκηψάμενος γὰρ ὑπο- 1329

πτεύειν ταραχὰς καὶ ἐπαναστάσεις ἐκ τῶν πλουσίων  
 εἰς τοὺς δημοτικούς διὰ τὸν ἀναδασμὸν τῆς γῆς καὶ τὰς  
 τῶν δανείων ἀφέσεις, ἵνα μὴ γένοιτο πόλεμος ἐμφύ-  
 λιος μηδὲ φόνοι πολιτικοὶ μίαν εὐρίσκειν ἔφη πρὶν  
 εἰς τὰ δεινὰ ἐλθεῖν φυλακὴν, εἰ τὰ ὄπλα προενεγκόν- 5  
 τες ἐκ τῶν οἰκιῶν ἅπαντες τοῖς θεοῖς καθιερώσειαν,  
 ἵνα κατὰ τῶν ἔξωθεν ἐπιόντων πολεμίων ἔχοισιν αὐ-  
 τοῖς ὅταν ἀνάγκη τις καταλάβῃ χρῆσθαι καὶ μὴ καθ'  
 ἑαυτῶν, κείσθαι δ' αὐτὰ τέως παρὰ τοῖς θεοῖς ἐν  
 καλῷ. ὡς δὲ καὶ τοῦτ' ἐπέσθησαν, αὐθημερόν 10  
 ἀπάντων παρελόμενος Κυμαίων τὰ ὄπλα [καὶ] ταῖς  
 ἔξῃς ἡμέραις ἔρευναν ἐποιεῖτο τῶν οἰκιῶν, ἐν αἷς  
 πολλοὺς καὶ ἀγαθοὺς ἀποκτείνας τῶν πολιτῶν, ὡς  
 οὐχ ἅπαντα τοῖς θεοῖς ἀποδείξαντας τὰ ὄπλα, μετὰ  
 ταῦτα φυλακαῖς τρισὶ κρατύνεται τὴν τυραννίδα· 15  
 ὧν ἦν μία μὲν ἐκ τῶν ὑπαρωπιάτων τε καὶ πονηροτά-  
 1330 των πολιτῶν μεθ' ὧν κατέλυσε τὴν ἀριστοκρατικὴν  
 πολιτείαν, ἑτέρα δὲ ἐκ τῶν ἀνοσιωπιάτων δούλων οὓς  
 αὐτὸς ἠλευθέρωσε ἀποκτείναντας τοὺς αὐτῶν δε-  
 σπότης, τρίτη δὲ μισθοφόρος ἐκ τῶν ἀγριωπιάτων βαρ- 20  
 βάρων· οὗτοι δισχίλων οὐκ ἐλάττους ἦσαν καὶ τὰ  
 πολέμια μακροῦ τῶν ἄλλων ἀμείνους. ὧν δὲ ἀπέ-  
 κτεινεν ἀνδρῶν τὰς εἰκόνας ἀνελών ἐκ παντὸς ἱεροῦ  
 καὶ βεβήλου τόπου, φέρων εἰς τοὺς αὐτοὺς τόπους  
 τὰς ἰδίας ἀντ' ἐκείνων ἀνέστησεν· οἰκίας δὲ αὐτῶν 25  
 καὶ κλήρους καὶ τὴν λοιπὴν ὑπαρξιν ἀναλαβὼν, ἐξε-  
 λόμενος χρυσὸν καὶ ἄργυρον καὶ εἰ τι ἄλλο τυραννίδος  
 ἦν ἄξιον κτήμα, τὰ λοιπὰ τοῖς συγκατασκευάσασιν τὴν  
 ἀρχὴν ἐχαρίσατο· πλείστας δὲ καὶ μεγίστας δωρεὰς τοῖς  
 ἀποκτείνασιν τοὺς ἑαυτῶν δεσπότης ἐδίδον· οἱ δ' ἠξίου- 30  
 ντι καὶ γυναιξὶ τῶν δεσποτῶν καὶ θυγατρῶσι συνοικεῖν.

VIII. Γενεάν δὲ τῶν πεφονευμένων τὴν ἄρρενα



κατ' ἀρχὰς ἐν οὐθενὶ λόγῳ ποιησάμενος, ὕστερον  
 εἶτ' ἐκ θεοπροπίου τινὸς εἶτε καὶ κατὰ τὸν εἰκότα  
 λογισμὸν οὐ μικρὸν αὐτῷ δέος ἐπιτρέφεσθαι νομίσας <sup>1331</sup>  
 ἐπεχείρησε μὲν ἐν ἡμέρᾳ μιᾷ πᾶσαν ἀπολέσαι· δεή-  
 5 σαι δὲ πολλῇ χρησαμένῳ ἀπάντων, παρ' οἷς ἔτυχον  
 αἶ τε μητέρες αὐτῶν οὔσαι καὶ οἱ παῖδες τρεφόμενοι,  
 χαρίσασθαι βουλόμενος αὐτοῖς καὶ ταύτην τὴν δω-  
 ρεάν, θανάτου μὲν ἀπολύει παρὰ γνώμην, φυλακὴν  
 δὲ ποιούμενος αὐτῶν, μή τι συστάντες μετ' ἀλλήλων  
 10 βουλεύσασσι κατὰ τῆς τυραννίδος, ἀπιέναι πάντας  
 ἐκέλευσεν ἐκ τῆς πόλεως ἄλλον ἄλλη καὶ δίαίταν  
 ἔχειν ἐν τοῖς ἀγροῖς μηθενὸς τῶν προσηκόντων ἐλευ-  
 θέρους παισὶ μήτε ἐπιτηδεύματος μήτε μαθήματος  
 μεταλαμβάνοντας, ἀλλὰ ποιμαίνοντας τε καὶ τᾶλλα  
 15 τὰ κατὰ τοὺς ἀγροὺς ἔργα πράττοντας· θάνατον  
 ἀπειλήσας εἴ τις ἐξ αὐτῶν εὐρεθείη παρελθὼν εἰς  
 τὴν πόλιν. οἱ δὲ καταλιπόντες τὰς πατρῴας ἐστίας  
 ἐν τοῖς ἀγροῖς ὥσπερ δοῦλοι διετρέφοντο τοῖς ἀπο-  
 κτείνασι τοὺς πατέρας αὐτῶν λατρεύοντες. ἵνα δὲ  
 20 μὴδὲ τῶν ἄλλων πολιτῶν ἐν μηθενὶ γένηται μήτε  
 γενναῖον μήτε ἀνδρωῶδες φρόνημα, πᾶσαν ἐκδηλῶναι  
 ταῖς ἀγωγαῖς τὴν ἐπιτεφομένην νεότητα τῆς πόλεως <sup>1332</sup>  
 ἐπεβάλετο, ἀνελῶν μὲν τὰ γυμνάσια καὶ τὰς ἐνο-  
 πλίους μελέτας, ἀλλάξας δὲ τὴν δίαίταν ἢ πρότερον  
 25 οἱ παῖδες ἐχρῶντο. κομᾶν τε γὰρ τοὺς ἄρρενας ὥσπερ  
 τὰς παρθένους ἐκέλευσε ξανθίζομένους καὶ βο-  
 στρυχιζομένους καὶ κεκρυφάλους τὰς πλοκαμίδας ἀνα-  
 δοῦντας, ἐνδύεσθαι τε ποικίλους καὶ ποδήρεις χιτω-  
 νίσκους, καὶ χλανιδίοις ἀμπέχεσθαι λεπτοῖς καὶ  
 30 μαλακοῖς, καὶ δίαίταν ἔχειν ὑπὸ σκιαῖς· ἠκολούθουν  
 τε αὐτοῖς εἰς τὰ διδασκαλεῖα τῶν ὀρχηστῶν καὶ αὐ-  
 λητῶν καὶ τῶν παραπλησίων τούτοις μουσοκολάκων

παραπορευόμενοι παιδαγωγοὶ γυναῖκες σκιαδεῖα καὶ  
 διπίδας κομίζουσαι, καὶ ἔλουον αὐτοὺς αὐταὶ κτένας  
 εἰς τὰ βαλανεῖα φέρουσαι καὶ μύρων ἀλαβάστρους  
 1333 καὶ κάτοπτρα. τοιαύτη διαφθείρων ἀγωγὴ τοὺς παῖ-  
 δας ἕως ἐκπληρώσωσιν εἰκοστὸν ἔτος, τὸν ἀπὸ τοῦδε 5  
 χρόνον εἰς ἀνδρας εἰα τελεῖν. πολλὰ δὲ καὶ ἄλλα Κυ-  
 μαίοις ἐνυβρίσας καὶ λωβησάμενος, καὶ οὔτε ἀσελ-  
 γείας οὔτε ὠμότητος οὐδεμιᾶς ἀποσχόμενος, ὅτε ἀσφα-  
 λῶς κατέχειν ὑπελάμβανε τὴν τυραννίδα γηραιὸς  
 ὦν ἦδη, δίκας ἔτισεν οὐ μεμπτὰς θεοῖς τε καὶ ἀν- 10  
 θρώποισι πρόρρηξος ἀπολόμενος.

X. Οἱ δ' ἐπαναστάντες αὐτῷ καὶ τὴν πόλιν  
 ἐλευθερώσαντες ἀπὸ τῆς τυραννίδος οἱ παῖδες τῶν  
 πεφονευμένων ὑπ' αὐτοῦ πολιτῶν ἦσαν, οὓς κατ'  
 ἀρχὰς ἅπαντας ἀποκτεῖναι ἐν ἡμέρᾳ μιᾷ προελόμενος, <sup>15</sup>  
 ἐπέσχευ ὥσπερ ἔφην ὑπὸ τῶν σωματοφυλάκων οἷς  
 ἔδωκε τὰς μητέρας αὐτῶν ἐκλιπαρηθεῖς, καὶ κατ'  
 ἀγροὺς κελεύσας διατρίβειν. ὀλίγοις δὲ ἔτεσιν ὕστε-  
 ρον, ἐπειδὴ τὰς κώμας διεξιὼν πολλὴν καὶ ἀγαθὴν  
 εἶδεν αὐτῶν νεότητα, δείσας μὴ συμφρονήσαντες <sup>20</sup>  
 ἐπαναστῶσιν αὐτῷ φθάσαι διαχειρισάμενος ἅπαντας  
 1334 ἐβούλετο πρὶν αἰσθέσθαι τινα· καὶ παραλαβὼν τοὺς  
 φίλους ἐσκόπει μετ' αὐτῶν δι' οἴου τρόπου θᾶστά τε  
 καὶ τάχιστα λαθόντες ἀναιρεθήσονται. τοῦτο καταμα-  
 θόντες οἱ παῖδες, εἶτε μηνυθὲν ὑπὸ τῶν συνειδόντων <sup>25</sup>  
 τινός, εἶτε αὐτοὶ κατὰ τὸν ἐκτῶν εἰκότων λογισμὸν ὑπο-  
 τοπήσαντες, φεύγουσιν εἰς τὰ ὄρη τὸν γεωργικὸν ἀρ-  
 πᾶσαντες σίδηρον. ἦκον δὲ αὐτοῖς ἐπίκουροι κατὰ τάχος  
 οἱ ἰνδιατρίβοντες ἐν Καπύῃ Κυμαίων φηγάδες, ὧν  
 ἦσαν ἐπιφανέστατοί τε καὶ πλείστους Καμπανῶν <sup>30</sup>  
 ἔχοντες ξένους οἱ Ἴππομέδοντος παῖδες τοῦ κατὰ τὸν  
 Τυρρηρικὸν ἱππαρχήσαντος πόλεμον, αὐτοὶ τε ὠπλι-

σμένοι κάκεινοις κομίζοντες ὄπλα Καμπανῶν τε μισθοφόρον καὶ φίλων χεῖρα συγκροτήσαντες οὐκ ὀλίγην. ἐπεὶ δὲ καθ' ἑν ἅπαντες ἐγένοντο, τοὺς ἀγροὺς τῶν ἐχθρῶν καταθέοντες ἐφόδοις ληστρικοαῖς ἐλελήα-  
 5 τουν, καὶ τοὺς δούλους ἀφίστασαν ἀπὸ τῶν δεσπο-  
 τῶν, καὶ τοὺς ἐκ τῶν δεσμοτηρίων λύοντες καθώ-  
 πλιζον, καὶ ὅσα μὴ δύναται φέρειν τε καὶ ἄγειν  
 χορήματα καὶ βοσκήματα, τὰ μὲν ἐνεπίμπρασαν, τὰ  
 δὲ κατέσφαττον. ἀπορομένη δὲ τῷ τυράννῳ τίνα 1335  
 10 χρῆ τρόπον αὐτοῖς πολεμεῖν διὰ τὸ μήτ' ἐκ τοῦ φα-  
 νεροῦ τὰς ἐπιχειρήσεις αὐτοὺς ποιῆσθαι μήτε ἐν τοῖς  
 αὐτοῖς χρονίζειν τόποις, ἀλλὰ νυκτὶ μὲν εἰς ὄρθρον,  
 ἡμέρα δ' εἰς νύκτα συμμετρεῖσθαι τὰς ἐφόδους, καὶ  
 15 πολλάκις ἀποστείλαντι τοὺς στρατιώτας ἐπὶ τὴν βοή-  
 θειαν τῆς χώρας διὰ κενῆς, παραγίνεται τις ἐξ αὐτῶν  
 ἠμισμένος τὸ σῶμα μάστιξιν ἀποσταλαῖς ὑπὸ τῶν  
 φυγάδων ὡς αὐτόμολος, ὃς ἄδειαν αἰτησάμενος ὑπέ-  
 σχετο τῷ τυράννῳ παραλαβῶν τὴν ἀποσταλῆσομένην  
 20 σὺν αὐτῷ δύναμιν ἄξειν ἐπὶ τὸν τόπον, ἐν ᾧ τὴν  
 ἐπιούσαν ἐμελλον ἀυλίξεσθαι νύκτα οἱ φυγάδες. ᾧ  
 πιστεῦσαι παραχθεὶς ὁ τυράννος αἰτοῦντι οὐθέν καὶ  
 τὸ ἑαυτοῦ σῶμα ὄμηρον παρεχομένῳ, πέμπει τοὺς  
 πιστοτάτους τῶν ἠγεμόνων ἄγοντας ἵππεις τε πολ-  
 25 λούς καὶ τὴν μισθοφόρον δύναμιν, οἷς ἐνετείλατο  
 μάλιστα μὲν ἅπαντας τοὺς φυγάδας, εἰ δὲ μὴ γε  
 ὡς πλείστοις ἐξ αὐτῶν δῆσαντας πρὸς αὐτὸν ἄγειν.  
 ὁ μὲν οὖν κατασκευαστὸς αὐτόμολος κατὰ τε ἀτριβεῖς 1336  
 ὁδοὺς καὶ διὰ δρυμῶν ἐρήμων ἤγε τὴν στρατιάν τα-  
 λαιπωροῦσαν δι' ὅλης νυκτὸς ἐπὶ τὰ πλείστον ἀπέ-  
 30 χοντα τῆς πόλεως μέρη.

XI. Οἱ δὲ ἀποστάται τε καὶ φυγάδες ἐν τῷ περὶ  
 τὸν Ἄσρον ὄρει πλησίον ὄντι τῆς πόλεως λοχῶντες,

ὡς ἑμαθον ἐξεληλυθυῖαν ἐκ τῆς πόλεως τὴν τοῦ τυ-  
 ράννου στρατιάν συνθήμασι μνηυθεῖσαν ὑπὸ τῶν  
 σκοπῶν, πέμπουσιν ἐξ αὐτῶν περὶ ἐξήκοντα μάλιστα  
 τοὺς εὐτολμοτάτους διφθέρας ἔχοντας καὶ φακέλλους  
 φρυγάνων κομίζοντας. οὗτοι περὶ λύχνων ἀφ᾽ ἄλλοι 5  
 κατ' ἄλλας πύλας ὡς χερνήται παραιοπεσόντες ἔλα-  
 θον· ὡς δ' ἔνδον ἐγένοντο τοῦ τείχους ἐξεκκύσαντες  
 ἐκ τῶν φακέλλων ἅ κατέκρυπτον ξίφη, καὶ συνελ-  
 θόντες εἰς τὸν αὐτὸν ἅπαντες τόπον, ἔπειτ' ἐκείθεν  
 ὁρμήσαντες ἀθροοὶ πρὸς τὰς ἐπὶ τὸν Ἄσρον φερού- 10  
 1337 σας πύλας, τοὺς τε φύλακας αὐτῶν ἀποκτείνουσι  
 κοιμωμένους καὶ τοὺς σφετέρους ἅπαντας ἤδη τῷ  
 τείχει πλησίον ὄντας ἀναπεπταμέναις ταῖς πύλαις  
 ὑποδέχονται, καὶ τοῦτο πράξαντες ἔλαθον. ἔτυχε γὰρ  
 ἐκείνη τῇ νυκτὶ ἐορτὴ τις οὐσα δημοτελής, καὶ δι' 15  
 αὐτὴν ἅπας ὁ κατὰ πόλιν ὄχλος ἐν πότοις ὦν καὶ  
 ταῖς ἄλλαις εὐπαθείαις. τοῦτο παρέσχεν αὐτοῖς κατὰ  
 πολλὴν εὐπέτειαν ἀπάσας διελθεῖν τὰς ἐπὶ τὴν τυ-  
 ραννικὴν οἰκίαν φερούσας ὁδοὺς· καὶ οὐδὲ παρὰ ταῖς  
 20 θύραις πολλὴν τινα καὶ ἐρηγοροῦσαν εὖρον φυλακὴν,  
 ἀλλὰ κἀνταῦθα τοὺς μὲν ἤδη καθεύδοντας, τοὺς δὲ  
 μεθύοντας ἀποσφάξαντες δίχα πόνου καὶ κατὰ πλη-  
 θος εἰς τὴν οἰκίαν ἀσάμενοι, τοὺς μὲν ἄλλους σύμ-  
 παντας οὔτε τῶν σωμάτων ἔτι καρτεροὺς ὄντας οὔτε  
 τῶν φρενῶν διὰ τὸν οἶνον προβάτων δίκην κατέσφα- 25  
 ξαν· τὸν δ' Ἀριστόδημον καὶ τοὺς παῖδας αὐτοῦ καὶ  
 τὴν ἄλλην συγγένειαν συλλαβόντες, ἄχοι πολλῆς  
 νυκτὸς αἰκιζόμενοί τε καὶ στρεβλοῦντες καὶ πᾶσιν ὡς  
 εἶπειν λυμαινόμενοι κακοῖς ἀπέκτειναν. ἀνελόντες  
 30 δι' τὴν τυραννικὴν οἰκίαν πρόοριζον, ὡς μήτε παιδία  
 μήτε γυναῖκας μήτε συγγένειαν μηθενὸς αὐτῶν κα-  
 ταλιπεῖν, καὶ δι' ὅλης νυκτὸς ἅπαντας ἐξεφρευνησά-

μενοι τοὺς συνεργοὺς τῆς τυραννίδος, ἡμέρας γενομένης προῆλθον εἰς τὴν ἀγοράν. ἔπειτα συγκαλέσαντες τὸν δῆμον εἰς ἐκκλησίαν ἀποτίθενται τὰ ὄπλα καὶ τὴν πατριὸν καθίστανται πολιτείαν.

5 XII. Ἐπὶ τοῦτον δὴ τὸν Ἀριστόδημον ἔτος ὁμοῦτι τεσσαρεσκαίδέκατον ἤδη τυραννοῦντα Κύμης οἱ σὺν Ταρκυνίῳ φυγάδες καθιστάμενοι τὴν κατὰ τῆς πατρίδος ἐβούλοντο συντελέσασθαι δίκην. οἱ δὲ πρέσβεις τῶν Ῥωμαίων τέως μὲν ἀντέλεγον, ὡς οὔτε  
10 ἐπὶ τοῦτον ἦκοντες τὸν ἀγῶνα οὔτ' ἐξουσίαν ἔχοντες ἦν οὐκ ἐπέτρεψεν αὐτοῖς ἡ βουλή περὶ τῆς πόλεως ἀπολογήσασθαι δίκην. ὡς δ' οὐθὲν ἐπέβαινον, ἀλλ' ἐγκεκλικότα τὸν τύραννον ἑώρων ἐπὶ θάτερα μέρη διὰ τὰς σπουδὰς καὶ τὰς παρακλήσεις τῶν φυγάδων,  
15 αἰτησάμενοι χρόνον εἰς ἀπολογίαν, καὶ διεγγνήσαντες τὰ σώματα χρημάτων, ἐν τῷ διὰ μέσου τῆς δίκης οὐθενὸς ἔτι φυλάττοντος αὐτοὺς ἀποδράντες ἄχοντο. θεράποντας δὲ αὐτῶν καὶ τὰ ὑποζύγια καὶ τὰ ἐπὶ τῇ σιτανίᾳ κομισθέντα χρήματα ὁ τύραννος κατέσχε.  
20 ταῦταις μὲν οὖν ταῖς πρεσβείαις τοιαῦτα παθοῦσαις ἀπράκτοις ἀναστρέφαι συνέβη· ἐκ δὲ τῶν ἐν Τυρρηνίᾳ πόλεων οἱ πεμφθέντες κέρχρους τε καὶ ζέας συνωνησάμενοι ταῖς ποταμηγοῖς σκάφαις κατεκόμισαν εἰς τὴν πόλιν. αὕτη βραχύν τινα χρόνον ἡ ἀγορὰ  
25 Ῥωμαίους διέθρεψεν· ἔπειτα ἐξαναλωθεῖσα εἰς τὰς αὐτὰς ἀπορίας κατέστησεν αὐτούς. ἦν δὲ οὐθὲν εἶδος ἀναγκαίας τροφῆς ὃ οὐκ ἐπέιραζον ἔτι, συνέβαινε τε οὐκ ὀλίγοις αὐτῶν, τὰ μὲν διὰ τὴν σπάνιν, τὰ δὲ διὰ τὴν ἀτοπίαν τῆς οὐκ εἰσδυίας ἐδωδῆς, τοῖς μὲν  
30 ἀρρώστως διακεισθαι τὰ σώματα, τοῖς δὲ παρημελημένως διὰ πενίαν καὶ παντάπασιν ἀδυνατώως· ὡς δὲ τοῦτ' ἔγνωσαν οἱ νεωστὶ κευρατημένοι τῷ πολέμῳ

340 Οὐολοῦσκοι, πρεσβειῶν ἀπορρήτοις διαποστολαῖς ἐνήγον ἀλλήλους εἰς τὸν κατ' αὐτῶν πόλεμον, ὡς ἀδυνατῶν ἐσομένων εἰ τις αὐτοῖς ἐπίθουτο κεκακωμένοι πολέμῳ τε καὶ λιμῷ ἀντέχειν. θεῶν δὲ τις εὐνοια, οἷς φροντὶς ἦν μὴ περιθεῖν ὑπὸ τοῖς ἐχθροῖς Ῥω- 5  
μαίους γενομένους, ἐκφανεστάτα καὶ τότε τὴν ἑαυτῆς δύναμιν ἀπεδείξατο. τοσοῦτος γάρ τις ἄφνω εἰς τὰς πόλεις τῶν Οὐολούσκων φθόρος λοιμικὸς ἐνέσκηψεν, ὅσος ἐν οὐδενὶ ἄλλῳ τόπῳ μνημονεύεται γενόμενος οὔθ' Ἑλλάδος οὔτε βαρβάρου γῆς, πᾶσαν ἡλικίαν καὶ 10  
τύχην καὶ φύσιν ἐρωμένων τε καὶ ἀσθενῶν σωματῶν ὁμοίως διεργαζόμενος. ἐδήλωσε δὲ τὴν ὑπερβολὴν τῆς συμφορᾶς πόλις ἐπιφανῆς τῶν Οὐολούσκων, Οὐέλιτραι ὄνομα αὐτῇ, μεγάλη τε καὶ πολυάνθρωπος  
15 οὔσα τέως, ἧς ὁ λοιμὸς μίαν ὑπελείπετο μοῖραν ἐκ τῶν δέκα, τὰς δὲ ἄλλας ὑπολαβῶν ἀπήνεγκε. τελεωτῶντες δ' οὖν ὅσοι περιῆσαν ἐκ τῆς συμφορᾶς πρεσβευσάμενοι Ῥωμαίοις ἔφρασαν τὴν ἐρημίαν καὶ παρέδοσαν τὴν πόλιν. ἔτυχον δὲ καὶ πρότερον ἐποίκους ἐκ τῆς Ῥώμης εἰληφότες, ἀφ' ἧς αἰτίας καὶ τὸ 20  
δεύτερον τοὺς κληρούχους παρ' αὐτῶν ἦτον.

XIII. Ταῦτα τοῖς Ῥωμαίοις μαθοῦσι τῆς μὲν συμφορᾶς οἶκτος εἰσῆει, καὶ οὐ δεῖν ᾤοντο τοῖς ἐχθροῖς ἐπὶ τοιαύταις τύχαις μνησικακεῖν, ὡς ἱκανὰς διδωκόσι τοῖς θεοῖς ὑπὲρ σφῶν δίκας ἀνθ' ὧν ἔμελ- 25  
λον δράσειν· Οὐέλιτρας δὲ παραλαμβάνειν ἐδόκει κληρούχων οὐκ ὀλίγων ἀποστολῇ πολλὰ τὰ συμφέροντα ἐκ τοῦ πράγματος ἐπιλογίζομένοις. τό τε γὰρ χωρίου ἱκανὸν εἶναι ἐφαίνετο φυλακῇ ἀξιοχρέω καταληφθὲν οἷς ἂν νεωτερίζειν ἢ παρακινεῖν τι βουλο- 30  
1113 μένοις ἢ μέγα κώλυμα καὶ ἐμπόδιον εἶναι· ἢ τε ἀπορία τῆς τροφῆς ἢ κατέχουσα τὴν πόλιν οὐ παρ'

ὀλίγον μετριοτέρω γενήσεσθαι ὑπαπατεύετο, εἰ μετασταίη τις ἐξ αὐτῆς ἀπὸ τοῦ πλήθους μοῖρα ἀξιόλογος. μάλιστα δὲ ἡ στάσις ἀναρριπιζομένη πρὶν ἢ πεπαῦσθαι καλῶς ἔτι τὴν προτέραν ἐνήγειν αὐτοὺς ψηφίζεσθαι τὸν ἀπόστολον. πάλιν γὰρ ὡσπερ καὶ πρότερον ὁ δῆμος ἠρεθίζετο καὶ δι' ὀργῆς εἶχε τοὺς πατρικίους, πολλοὶ τε καὶ χαλεποὶ κατ' αὐτῶν ἐγίνοντο λόγοι, τῶν μὲν ὀλιγωρίαν ἐγκαλούντων καὶ ῥαθυμίαν, ὅτι οὐκ ἐκ πολλοῦ προείδοντο τὴν ἐσομένην τοῦ σίτου σπάνιν καὶ προεμηχανήσαντο τὰ πρὸς τὴν συμφορὰν ἀλεξήματα· τῶν δ' ἕξ ἐπιβουλῆς ὑπ' αὐτῶν γερονέται τὴν σιτοδείαν ἀποφαινόντων δι' ὀργὴν τε καὶ ἐπιθυμίαν τοῦ κακῶσαι τὸ δημοτικὸν ἀναμνήσει τῆς ἀποστάσεως. διὰ ταύτας μὲν δὴ τὰς αἰτίας ἢ τῶν κληρούχων ἀποστολὴ ταχεῖα ἐγίνετο τριῶν ἀποδειχθέντων ἀνδρῶν ὑπὸ τῆς βουλῆς ἡγεμόνων. τῷ δὲ μὲν κατ' ἀρχὰς μὲν ἦν ἀσμένω τοὺς κληρούχους διαλαγχάνειν, ὡς λιμοῦ τε ἀπαλλαχθῆσο-<sup>1343</sup> μένω καὶ χώραν οἰκήσουσι εὐδαίμονα· ἔπειτα ἐνθυμουμένω τὸν λοιμὸν, ὃς ἐν τῇ μελλούσῃ αὐτὸν ὑποδέχεσθαι πολὺς γενόμενος τοὺς τε οἰκίτορας διεφθάρκει καὶ δέος παρεῖχε μὴ καὶ τοὺς ἐποίκους τὸ αὐτὸ ἐργάσθαι, μεθίστατο κατὰ μικρὸν εἰς τὰναντία ἢ γνώμη, ὥστε οὐ πολλοὶ τινες ἐφάνησαν οἱ μετέχειν βουλόμενοι τῆς ἀποικίας, ἀλλὰ πολὺ ἐλάττους ὢν ἢ βουλή ἐψηφίσατο, καὶ οὗτοι δὲ ἤδη σφῶν αὐτῶν κατεργνάκεσαν ὡς κακῶς βεβουλευμένων καὶ ὑπανεδύοντο τὴν ἐξοδον. κατελήφθη μέντοι τοῦτο τὸ μέρος καὶ τὸ ἄλλο τὸ μὴ ἐκουσίως συναράμενον τῆς ἐξόδου, ψηφισαμένης τῆς βουλῆς ἕξ ἀπάντων γενέσθαι Ῥωμαίων κλήρω τὴν ἐξοδον, κατὰ δὲ τῶν λαχόντων εἰ μὴ ἐξίοιεν χαλεπὰς καὶ ἀπαραιτήτους θεμενῆς ζημίας.

οὗτός τε δὴ ὁ στόλος εἰς Οὐελίτρας εὐπρεπεῖ ἀνάγκη καταληφθεὶς ἀπεστάλη, καὶ ἕτερος αὐθις οὐ πολλαῖς ἡμέραις ὕστερον εἰς Νῶρβαν πόλιν, ἣ ἔστι τοῦ Λατίων ἔθνους οὐκ ἀφανῆς.

XIII. Ἐγένετο δὲ οὐδὲν τῶν ἐκ λογισμοῦ τοῖς πατρικίοις, κατὰ γοῦν τὴν ἐλπίδα τοῦ λαφύσειν τὴν στάσιν, ἀλλ' οἱ περιλειφθέντες ἔτι χεῖρους ταῖς ὀργαῖς ἦσαν καὶ πολλῇ τῇ καταβολῇ τῶν βουλευτῶν ἐχρῶντο κατὰ τε συστροφᾶς καὶ ἐταιρίας, ὀλίγοι μὲν συνιόντες τὸ πρῶτον, ἔπειτα ἀθρόοι συντουωτέρας ἤδη γενομένης τῆς ἀπορίας, καὶ συνδραμόντες εἰς τὴν ἀγορὰν τοὺς δημάρχους ἐβῶν. συναχθείσης δὲ ὑπ' αὐτῶν ἐκκλησίας, παρελθὼν Σπόριος Σκίνιος, ὃς ἦν τοῦ ἀρχείου τότε ἡγεμῶν, αὐτός τε πολὺς ἔρρει κατὰ τῆς βουλῆς αὖξων ὡς μάλιστα ἐνῆν τὸν κατ' αὐτῆς φθόνου, καὶ τοὺς ἄλλους ἠξίου λέγειν ἂ φρονούσιν εἰς τὸ κοινόν, μάλιστα δὲ τὸν Σικίνιον καὶ τὸν Βροῦτου ἀγορανόμους τότε ὄντας ἀνακαλῶν ἐκάτερον ἐξ ὀνόματος, οἳ καὶ τῆς πρώτης ἀποστάσεως τῷ δὲ μὲν ἦσαν, καὶ τὴν δημαρχικὴν ἐξουσίαν εἰση-<sup>20</sup> γησάμενοι πρῶτοι αὐτῆς ἔτυχον. παρελθόντες δὲ οὗτοι τοὺς κακοηθεστάτους τῶν λόγων ἐκ πολλοῦ παρεσκευασμένοι διεξήεσαν, ἂ τοῖς πολλοῖς ἀκούειν ἦν βουλομένοις, ὡς ἐκ προνοίας τε καὶ ἐπιβουλῆς ὑπὸ τῶν πλουσίων γένοιτο ἢ περὶ τὸν σῖτον ἀπορία, <sup>25</sup> ἐπειδὴ τὴν ἐλευθερίαν ἀκόντων ἐκείνων ὁ δῆμος ἐκ τῆς ἀποστάσεως εὔρετο. ἰσομοιεῖν τε οὐδὲ κατὰ μικρὸν ἀπέφαινον τῆς συμφορᾶς τοῖς πένησι τοὺς εὐπόρους· ἐκείνοις μὲν γὰρ εἶναι καὶ τροφὰς ἐν ἀφανεί ἀποκειμένους καὶ χρήματα, οἷς ἀνούμενοι τὰς <sup>30</sup> ἐπιπλάτους ἀγορὰς ἐν πολλῇ ὑπεροψίᾳ ἦσαν τοῦ κακοῦ, τοῖς δὲ δημόταις ἀμφοτέρωτα ταῦτα ἀπόρως ἔχειν.

τὴν τε ἀποστολὴν τῶν κληρῶν, ἣν ἐποιήσαντο εἰς νοσερὰ χωρία, ἐκβολὴν ἀποφαίνοντες εἰς προφανῆ καὶ μακροῦ χείρουα ὄλεθρον, αὔξοντες ὡς μάλιστα δυνατοὶ ἦσαν τῷ λόγῳ τὰ δεινὰ, καὶ τί πέρας ἔσται τῶν κακῶν ἀξιούντες μαθεῖν, ὑπομιμνήσκοντές τε τῶν παλαιῶν αὐτοῦς αἰκισμῶν, οἷς ὑπὸ τῶν πλου-<sup>1346</sup> σίων ἐτυχον αἰκισθέντες, καὶ τὰλλα τὰ ὅμοια τούτοις κατὰ πολλὴν ἀδειαν διεξιόντες. τελευταῖον δὲ ὁ Βροῦτος εἰς ἀπειλήν τινα τοιάνδε κατέκλεισε τὸν λό-  
 10 γον, ὡς εἰ βουλευθεῖεν αὐτῷ πεῖθεσθαι διὰ ταχέων προσαναγκάσαν τοὺς ἐκκαύσαντας τὸ δεινὸν κατα-  
 σβέσαι. ἡ μὲν δὴ ἐκκλησία διελύετο.

XV. Οἱ δὲ ὑπάτοι τῇ κατόπιν ἡμέρᾳ συνεκάλουν τὴν βουλὴν περίφοβοι ὄντες ἐπὶ τοῖς καινοτομουμέ-  
 15 νοις, καὶ τὴν τοῦ Βρούτου δημοκοπίαν εἰς μέγα τι κακὸν ἀποσκήψειν οἰόμενοι. πολλοὶ μὲν δὴ καὶ παντοδαποὶ ὑπὸ τε αὐτῶν ἐκείνων ἐρρήθησαν ἐν τῷ συνεδρίῳ λόγοι καὶ ὑπὸ τῶν ἄλλων πρεσβυτέρων, τῶν μὲν οἰομένων δεῖν θεραπεύειν τὸν δῆμον ἀπάσῃ  
 20 προσηγορίᾳ λόγων καὶ ὑποσχέσει ἔργων, καὶ τοὺς ἡγεμόνας αὐτοῦ μετριωτέρους παρασκευάζειν, τιθέν-  
 τας εἰς μέσον τὰ πράγματα καὶ μετὰ σφῶν ὑπὲρ τοῦ κοινῆ συμφέροντος παρακαλοῦντας σκοπεῖν. τῶν δὲ μηδὲν ἐνδιδόναι καὶ μαλακίζεσθαι συμβουλευόντων  
 25 πρὸς [τὸν δῆμον] ὄχλον αὐθάδη καὶ ἀμαθῆ, θρασεῖαν<sup>1347</sup> τε καὶ ἀνύποιστον δημοκόπων ἀνθρώπων μανίαν, ἀλλ' ἀπολογεῖσθαι μὲν ὡς οὐδὲν εἶη τῶν γενομένων παρὰ τῶν πατρικίων αἴτιον, καὶ ὑπισχνεῖσθαι πρόνοιαν ἕξειν τοῦ καιοῦ τὴν δυνατήν, τοῖς δὲ ταράττουσι τὸν  
 30 δῆμον ἐπιτιμᾶν καὶ προαγορεύειν, ὡς εἰ μὴ παύσονται τὴν στάσιν ἀναρριπίζοντες ἀξίας τίσουσι δίκας. ταύτης ἡγεῖτο τῆς γνώμης Ἀππιος, καὶ ἦν ἡ νικῶσα

αὕτη πολλῆς ἐμπεσοῦσης πάνυ τοῖς συνέδροις φιλο-  
 νεικίας· ὥστε καὶ τὸν δῆμον ὑπὸ τῆς βοῆς αὐτῶν ἔξακουμένης ἐπὶ πολὺ ταραχθέντα συνδραμεῖν ἐπὶ τὸ βουλευτήριον, καὶ πᾶσαν ὀρθὴν ἐπὶ τῇ  
 προσδοκίᾳ γενέσθαι τὴν πόλιν. μετὰ δὲ τοῦτο  
 5 οἱ μὲν ὑπάτοι προελθόντες συνεκάλουν τὸν δῆ-  
 μον εἰς ἐκκλησίαν· ἦν δὲ οὐ πολὺ τῆς ἡμέρας ἔτι τὸ λειπόμενον· καὶ παρελθόντες ἐπειρῶντο τὰ δόξαντα σφίσι ἐν τῇ βουλῇ λέγειν. ἐνίσταντο δὲ αὐτοῖς οἱ δῆμαρχοι, καὶ οὐκ ἦν ἐν μέρει οὐδ'  
 1348 ἐν κόσμῳ γινόμενος παρ' ἀμφοῖν ὁ λόγος. ἐβόων γὰρ ἅμα καὶ ἐξέκλειον ἀλλήλους, ὥστε μὴ ῥάδιον εἶναι τοῖς παροῦσι τὰς διανοίας αὐτῶν ὅτι βούλου-  
 ται συνιδεῖν.

XVI. Ἐδικαίουν δὲ οἱ μὲν ὑπάτοι τὴν κρείττονα<sup>15</sup> ἔχοντες ἐξουσίαν ἀπάντων ἄρχειν τῶν ἐν τῇ πόλει, οἱ δὲ δῆμαρχοὶ τὴν ἐκκλησίαν αὐτῶν εἶναι χωρίου ὥσπερ ἐκείνων τὴν βουλήν, καὶ ὅποσα ἐπὶ τοῖς δη-  
 μόταις ἦν κρῖναί τε καὶ ψηφίζεσθαι, τούτων αὐτοὶ πᾶν ἔχειν τὸ κράτος. συνηγωνίζετο δὲ τοῖς μὲν ἡ  
 20 πληθὺς ἐπιβοῶσα καὶ ὁμοσε χωρεῖν εἰ δέοι τοῖς κω-  
 λίουσι παρεσκευασμένη, τοῖς δὲ ὑπάτοις οἱ πατρικιοὶ συστρέψαντες αὐτούς. ἐγίνετο δὲ πολὺς ἀγὼν περὶ τοῦ μὴ εἶξαι ἑκατέροις, ὡς ἐν μιᾷ τῇ τότε ἦττη πα-  
 ραχωρουμένης τῆς εἰς τὸν λοιπὸν χρόνον ἑκατέρων  
 25 δικαιοσύνης. ἡλίος τε περὶ καταφορὰν ἦν ἤδη, καὶ συνέτρεχεν ἐκ τῶν οἰκιῶν τὸ ἄλλο πλῆθος εἰς τὴν ἀγορὰν, καὶ ἔμελλον εἰ νυξ ἐπιλαμβάνοι τὴν ἔριν εἰς  
 1349 πληγὰς τε καὶ λίθων χωρήσειν βολὰς. ἵνα δὴ μὴ τοῦτο γένοιτο, προελθὼν ὁ Βροῦτος τοὺς ὑπάτους  
 30 ἤλειον δοῦναι λόγον αὐτῷ, παύσειν ὑπισχνόμενος τὴν στάσιν. κἀκεῖνοι δόξαντες σφίσι παρακεχωρηθῆναι,

ὅτι τῶν δημάρχων παρόντων οὐ παρ' ἐκείνων ὁ δημαγωγὸς ἠτήσατο τὴν χάριν, ἐπιτρέπουσιν αὐτῷ λέγειν. σιωπῆς δὲ γενομένης, ἄλλο μὲν οὐδὲν ὁ Βροῦτος εἶπεν, ἠρώτησε δὲ τοὺς ὑπάτους τοιαύδε 5 τινὰ ἐρώτησιν· Ἄρα γε, ἔφη, μέμνησθ', ὅτι διαλυμένοις ἡμῖν τὴν στάσιν τοῦτο συνεχωρήθη τὸ δίκαιον ὑφ' ὑμῶν, ὅταν οἱ δῆμαρχοὶ συναγάγωσι τὸν δῆμον ὑπὲρ ὄτουδήτινος, μὴ παρῆναι τῇ συνόδῳ τοὺς πατρικίους μὴδ' ἐνοχλεῖν; Μεμνήμεθα, ἔφησεν ὁ Γεράμιος. καὶ ὁ Βροῦτος ὑποφέρει· Τί οὖν μαθόντες 10 ἐμποδῶν ἴστασθε ἡμῖν καὶ οὐκ ἔατε τοὺς δημάρχους ἃ βούλονται λέγειν; ἀποκρίνεται πρὸς ταῦτα ὁ Γεράμιος· Ὅτι οὐκ αὐτοὶ συνεκάλεσαν τὸν δῆμον εἰς τὴν ἐκκλησίαν, ἀλλ' ἡμεῖς οἱ ὑπάτοι. εἰ μὲν οὖν ὑπὸ 15 τούτων ἢ σύνοδος ἐγένετο, οὐθὲν ἂν ἠξιούμεν οὔτε κωλύειν οὔτε πολυπραγμανεῖν· ἐπειδὴ δὲ ἡμεῖς συναγάγομεν τὴν ἐκκλησίαν, οὐχὶ τούτους ἀγορεύειν 1350 κωλύομεν, ἀλλ' ὑπὸ τούτων αὐτοὶ κωλύεσθαι οὐ δικαιοῦμεν. καὶ ὁ Βροῦτος ὑποτυχῶν· Νικῶμεν, ἔφησεν, ὦ δημόται, καὶ παρακεχώρηται ἡμῖν ὑπὸ τῶν 20 διαφόρων ὅσα ἠξιούμεν. νῦν μὲν οὖν ἄπιτε καὶ παύσασθε φιλονεικοῦντες· αὔριον δὲ ὑμῖν ὑπισχνούμαι φανερόν ποιήσειν ὅσῃν ἔχετε ἰσχύν. καὶ ὑμεῖς γε, ὦ δῆμαρχοι, παραχωρήσατε αὐτοῖς τῆς ἀγορᾶς ἐν τῷ 25 παρόντι· οὐ γὰρ εἰς τέλος παραχωρήσετε· μαθόντες δὲ ὅσον ἔχει κράτος ὑμῶν ἢ ἀρχή· γνώσεσθε γὰρ οὐκ εἰς μακρὰν· ἐγὼ τοῦθ' ὑμῖν ὑποδέχομαι ποιήσειν φανερόν· μετριωτέραν αὐτῶν ἀποδώσετε τὴν ὑπερηφάνίαν. εἰ δὲ φευκίξω ὑμᾶς εὐρεθῶ, χρῆσασθε 30 ὅτι βούλεσθέ μοι.

XVII. Οὐθενὸς δὲ πρὸς ταῦτα ἀντιλέξαντος, ἀπήεσαν ἐκ τῆς ἐκκλησίας οὐ τὰς ὁμοίας ὑπολήψεις

ἔχοντες ἑκάτεροι· ἀλλ' οἱ μὲν ἄποροι δοκοῦντές τι 1351 περιττὸν ἐξευρημέναι τὸν Βροῦτον καὶ οὐκ εἰκὴ ὑποσχέσθαι πράγμα τηλικούτου· οἱ δὲ πατρικίῳ περιφρονοῦντες τὴν κουφότητα τοῦ ἀνθρώπου, καὶ τῶν ὑποσχέσεων τὴν τόλμαν ἕως λόγου χωρήσειν οἴμενοι· 5 μηθὲν γὰρ ὑπὸ τῆς βουλῆς συγκεχωρηθῆναι τοῖς δημάρχοις ἔξω τοῦ βοηθεῖν τοῖς ἀδικουμένοις τῶν δημοτικῶν. οὐ μὴν ἅπασί γε εἰσῆει καὶ μάλιστα τοῖς πρεσβυτέροις ὀλιγοῖα τοῦ πράγματος, ἀλλὰ προσέχειν, μὴ τι ἀνήκεστον ἢ τοῦ ἀνδρὸς ἐξεργάσῃται 10 μανία. τῇ δ' ἐξῆς νυκτὶ κοινωσάμενος τοῖς δημάρχοις ὁ Βροῦτος τὴν ἑαυτοῦ γνώμην, καὶ παρασκευασάμενος χεῖρα οὐκ ὀλίγην δημοτῶν, κατέβαινε μετ' αὐτῶν εἰς τὴν ἀγορὰν· καὶ πρὶν ἡμέραν λαμπρὰν 15 γενέσθαι καταλαβόμενοι τὸ Ἡραϊστεῖον, ἐνθα ἦν ἔθος αὐτοῖς ἐκκλησιάζειν, ἐκάλουν μὲν εἰς ἐκκλησίαν τὸν δῆμον. πληρωθείσης δὲ τῆς ἀγορᾶς· ὄχλος γὰρ ὅσος οὐπάποτ' εἰώθει συνῆλθε· παρελθὼν Σκίνιος ὁ δῆμαρχος πολὺν μὲν ἐποίησατο κατὰ τῶν πατρικίων 20 λόγον, ἅπαντα ὑπομιμνήσκων ὅσα κατὰ τῶν δημοτικῶν αὐτοῖς ἐπράχθη· ἔπειτα ὑπὲρ τῆς παρελθούσης ἡμέρας ἐδίδασκεν, ὡς κειωλυμένος ὑπ' αὐτῶν εἰη 25 λόγου τυχεῖν καὶ τὴν ἐξουσίαν τῆς ἀρχῆς ἀφρημένους. Τίνος γὰρ ἂν ἔτι γενοίμεθα, ἔφη, κύριοι τῶν ἄλλων, εἰ μὴδὲ τοῦ λέγειν ἐσόμεθα; πῶς δ' ἂν τινι ὑμῶν ἀδικουμένῳ πρὸς αὐτῶν βοηθεῖν δυναίμεθα, 30 αὐτῶν ἐξουσίαν τοῦ συναγαγεῖν ὑμᾶς ἀφαιρεθείμεν; ἀρχουσι γὰρ δήπου παντὸς ἔργου λόγοι, καὶ οὐκ ἄδηλον ὅτι οἷς εἰπεῖν ἃ φρονοῦσιν οὐκ ἔξεστιν, οὐδὲ πρᾶξαι ἂν ἐξείη ἃ βούλονται. ἢ κομίζεσθε οὖν, ἔφη, τὴν ἐξουσίαν ἣν δεδώκατε ἡμῖν, εἰ μὴ μέλλετε βεβαιοῦν αὐτῇ τὸ ἀσφαλές, ἢ νόμῳ γραφέντι κωλύσατε

τοὺς ἐμποδῶν ἡμῖν τὸ λοιπὸν ἐσομένους. τοιαῦτα  
 διαλεχθεῖς, ἐπικελεύσαντος αὐτῷ τοῦ δήμου μεγάλη  
 βοῆ τὸν νόμον εἰσφέρειν, ἔχων αὐτὸν ἤδη γεγραμ-  
 μένον ἀνεγίνωσκε, καὶ ψῆφον ἀναδίδωσι τῷ πλήθει  
 5 περὶ αὐτοῦ παραχρῆμα ἐπενεγκεῖν. οὐ γὰρ ἐδόκει τὸ  
 πρᾶγμα δεῖσθαι ἀναβολῆς οὐδὲ μελλησμοῦ, μὴ τι  
 ἄλλο κῶλυμα γένηται πρὸς τῶν ὑπάτων. ἦν δὲ  
 τοιόσδε ὁ νόμος· Δημάρχου γνώμην ἀγορεύοντος ἐν  
 δήμῳ μηδεὶς λεγέτω μηδὲν ἐναντίον, μηδὲ μεσολα-  
 10 βείτω τὸν λόγον. ἐὰν δέ τις παρὰ ταῦτα ποιήσῃ, δι-  
 δότω τοῖς δημάρχοις ἐγγυητὰς αἰτηθεὶς εἰς ἔκτισιν  
 ἧς ἂν ἐπιθῶσιν αὐτῷ ζημίας. ὁ δὲ μὴ διδούς ἐγ-  
 γυητὴν θανάτῳ ζημιούσθω, καὶ τὰ χρήματα αὐτοῦ  
 ἱερὰ ἔστω. τῶν δ' ἀμφισβητούντων πρὸς ταύτας τὰς  
 15 ζημίας αἱ κρίσεις ἔστωσαν ἐπὶ τοῦ δήμου. τοῦτου  
 τὸν νόμον ἐπιψηφίσαντες οἱ δημάρχοι διέλυσαν τὴν  
 ἐκκλησίαν· καὶ ὁ δῆμος ἀπήει πολλῆς γεροντῶς μεστὸς  
 εὐθυμίας, τῷ δὲ Βρούτῳ μεγάλην χάριν εἰδώς, ἐκεί-  
 νου δοκῶν εἶναι τὸ ἐνθῦμημα τοῦ νόμου.

20 XVIII. Μετὰ τοῦτο πολλὰ καὶ περὶ πολλῶν  
 ἐγίνοντο τοῖς δημάρχοις πρὸς τοὺς ὑπάτους ἀντιλο-  
 γίαι, καὶ οὔτε ὁ δῆμος ὁπόσα ἢ βουλὴ ψηφίσαιτο  
 κύρια ἤγειτο, οὐδ' ὧν ὁ δῆμος γνώμῃ τῆ βουλῆ φί-  
 λιον τι ἦν· ἀντιπαρατεταγμένοι δὲ καὶ δι' ὑποψίας  
 25 ἔχοντες ἀλλήλους διετέλουν. οὐ μὴν τό γε μῖσος αὐ-  
 τῶν εἰς ἔργον τι ἀνήκεστον ἐχώρησεν, οἷα ἐν ταῖς  
 τοιαύταις φιλεῖ γίνεσθαι ταραχαῖς. οὔτε γὰρ οἱ πέ-  
 νητες ἐπὶ τὰς οἰκίας ὄρμησαν τῶν πλουσίων, ἐνθα  
 ὑπελάμβανόν τινος εὐρήσειν ἀποκειμένης τροφᾶς,  
 30 ἢ τὴν ἐν τῷ φανερωῷ ἀγορᾶν ἀρπάζειν ἐπεβάλλοντο,  
 ἀλλ' ὑπομένοντες ἀνεῖσθαι πολλοῦ διαφόρου μικρά,  
 καὶ ὁπότε ἐξαπορηθεῖεν ἀργυρίου τὰς ἐκ γῆς ῥίζας

τε καὶ βοτάνας σιτούμενοι ἀνείχοντο· οὔτε οἱ πλού-  
 σιοι βιασάμενοι τοὺς ἀσθενεστέρους τῇ τε οἰκείᾳ δυ-  
 νάμει καὶ τῇ παρὰ τῶν πελατῶν πολλῇ οὔσῃ κατα-  
 σχεῖν αὐτοὶ τὴν πόλιν ἠξίωσαν, τοὺς μὲν ἐξέλασαντες  
 5 ἐξ αὐτῆς, τοὺς δὲ ἀποκτείναντες, ἀλλὰ διέμενον  
 ὥσπερ οἱ σωφρονέστατα πολιτευόμενοι πρὸς τοὺς  
 υἱοὺς πατέρες εὐνοοῦση καὶ κηδομένη τῇ ὀργῇ πρὸς  
 τὰς ἀμαρτὰδας αὐτῶν χρώμενοι. τοιαύτης-δὲ κατα-  
 στάσεως οὔσης περὶ τὴν Ῥώμην αἱ πλησιόχωροι  
 πόλεις ἐκάλουν τοὺς βουλομένους οἰκεῖν παρὰ σφίσι  
 10 Ῥωμαίων πολιτείας τε μεταδόσει καὶ ἄλλων φιλαν-  
 θρώπων ἐλπίσιν ὑπαγόμεναι, αἱ μὲν ἀπὸ τοῦ βελ-  
 τίστου δι' εὐνοϊάν τε καὶ ἔλεον τῆς συμφορᾶς, αἱ δὲ  
 πλείους διὰ φθόνου τῆς πάλαι ποτὲ εὐτυχίας. καὶ  
 ἦσαν οἱ ἀπαναστάντες πανοικεσία καὶ μεταθέμενοι  
 15 τὰς οἰκήσεις ἐτέρωσε πολλοὶ πάνν· ὧν οἱ μὲν ἀνέ-  
 στησαν αὐθις, ἐπειδὴ κατέστη τὰ πράγματα τῆς πό-  
 λεως, οἱ δὲ καὶ διέμειναν.

XVIII. Ταῦτα δὲ ὀρῶσι τοῖς ὑπάτοις ἐδόκει τῆς  
 βουλῆς ἐπιτροπούσης στρατοπέδου ποιεῖσθαι κατα- 20  
 γραφὴν καὶ ἐξάγειν ἕξω τὴν δύναμιν. εἰλήφεσαν δὲ  
 ἀφορμὴν τῷ ἐργασίῳ πρέπουσαν, ἐπιδρομαῖς τε  
 καὶ λεηλασίαις κακουμένης τῆς χώρας ὑπὸ τῶν πο-  
 25 λεμίων θαμινά, τὰ τε ἄλλα ὅσα ἐκ τοῦ πράγματος  
 χρηστὰ ἦν ἐπιλογιζόμενοι, ὑπερορίου στρατιᾶς ἐκ-  
 πιμφθείσης ὡς εὐπορωτέρα μὲν ἔξουσι τῇ ἀγορᾷ  
 χρῆσθαι οἱ ὑπολειφθέντες ἐλάττους γενόμενοι, ἐν  
 ἀσθονατέροις δὲ διάξουσι τοῖς ἐπιτηδεύουσιν οἱ τὰ  
 ὄπλα ἔχοντες ἐκ τῶν πολεμίων ἐπισιτιζόμενοι, λω-  
 30 φησαὶ δὲ ἢ στάσις ὅσον ἂν ἡ στρατεία κατέχη χρό-  
 νου· μάλιστα δὲ ἐφαίνετο ἔργῳ βεβαιώσκειν αὐτῶν  
 τὰς διαλλαγὰς συστρατεούντων ἀλλήλοις πατρικίων

καὶ δημοτῶν ἢ γενησομένη παρὰ τοὺς κινδύνους  
κακῶν τε καὶ ἀγαθῶν ἰσομοιρία. ἀλλ' οὐκ ἦν τὸ  
πλήθος ὑπήκοον αὐτοῖς, οὐδ' ὡσπερ πρότερον ἐκού-  
σιον ὑπήντα πρὸς τὴν καταγραφὴν· ἀνάγκη δὲ  
5 προσφέρειν τοῖς μὴ βουλομένοις οὐκ ἐδικαίουν τὴν  
ἐκ τῶν νόμων οἱ ὑπάτοι· ἀλλ' ἐκ τῶν πατρικίων  
ἐθέλονται τινες κατεγράφησαν ἅμα τοῖς πελάταις, καὶ  
αὐτοῖς ἐξιούσιν ὀλίγον τι ἀπὸ τοῦ δήμου μέρος συνε-  
στράτευεν. ἡγεμῶν δὲ τῶν ἐξεληθόντων ἦν Γάιος  
10 Μάρκος ὁ τὴν Κοριοιλάνων πόλιν ἔλων καὶ τῇ 130  
πρὸς Ἀντιάτας ἀριστεύσας μάχῃ, καὶ οἱ πλείστοι  
τῶν συναραμμένων τὰ ὄπλα δημοτῶν τοῦτον ἐξιόντα  
ὀρῶντες ἐπερῶσθησαν, οἱ μὲν δι' εὐνοίαν, οἱ δὲ  
τοῦ κατορθώσειν ἐλπίδι· περιβόητος γὰρ ἦν ἤδη ὁ  
15 ἀνὴρ, καὶ δέος αὐτοῦ μέγα παρὰ τοῖς πολεμίοις ἐγε-  
γόνει. αὕτη προελθοῦσα ἢ στρατιὰ μέχρι πόλεως  
Ἀντίου δίχα πόνου σίτου πολλοῦ καταληφθέντος ἐν  
τοῖς ἀγροῖς καὶ ἀνδραπόδων καὶ βοσκημάτων συχνῶν  
ἐγκρατῆς ἐγένετο, καὶ οὐ μετὰ πολὺ παρῆν εὐ-  
20 πορωτέρα γεροννία τοῖς κατὰ τὸν βίον, ὥστε τοῖς  
ὑπομείνασι πολλὴν κατήφειαν καὶ κατάμειψιν τῶν  
δημαγωγῶν ἐμπεσεῖν, δι' οὓς ἀποστερέσθαι ἐδό-  
κουν τῆς ὁμοίας εὐτυχίας. ὁ μὲν δὲ Γεράνιος καὶ  
Μηνύκιος οἱ τοῦτον τὸν ἐνιαυτὸν ὑπατεύοντες ἐν  
25 μεγάλοις καὶ παντοδαποῖς χειμῶσι γενόμενοι καὶ πολ-  
λάκις ἀνατρέψαι κινδυνεύσαντες τὴν πόλιν, οὐδὲν  
δεινὸν εἰργάσαντο, ἀλλὰ διέσωσαν τὰ κοινὰ φρο-  
νιότερον μᾶλλον ἢ εὐτυχέστερον τοῖς συμβαίνουσι  
χρησάμενοι.

30 XX. Οἱ δὲ μετ' αὐτοὺς ἀποδειχθέντες ὑπάτοι  
Μάρκος Μηνύκιος Ἀγρουρίνος καὶ Ἀῦλος Σεμπρό-  
μιος Ἀτρατίνος δευτέρου καταστάυτες ἐπὶ τὴν ἀρχήν,

ἄνδρες οὐδ' ὄπλων οὔτε λόγων ἄπειροι, προνοία μὲν  
ἐχρήσαντο πολλὴ σίτου τε καὶ τῆς ἄλλης ἀγορᾶς  
ἐμπλήσαι τὴν πόλιν, ὡς ἐν τῇ κατ' αὐτὴν εὐετηρία  
τῆς ὁμοιοῦσας τοῦ πλήθους κειμένης, οὐ μὴν ἐξεγένετό  
γε αὐτοῖς ἀμφοτέρων ἅμα τούτων τυχεῖν, ἀλλὰ συν- 5  
εισῆλθεν ἅμα τῷ κόρῳ τῶν ἀγαθῶν ἢ τῶν χρησο-  
μένων αὐτοῖς ὕβρις. καὶ τότε δὴ μέγιστος κατέλαβε  
τὴν Ῥώμην κίνδυνος ἐξ ἀρχῆς, ὅτε ἤκιστα ἐδόκει.  
οἱ τε γὰρ ἐπὶ τὴν σιτανίαν ἀποσταλέντες ὑπ' αὐτῶν  
πρόσβεις ἐκ τῶν παραθαλαττίων τε καὶ μεσογείων 10  
ἐμπορίων σίτον ὠνησάμενοι κατήγαγον δημοσία, οἱ  
τε διαμείβεσθαι τὰς ἀγορὰς εἰωθότες ἐκ παντὸς τό-  
105 που συνῆλθον, παρ' ὧν ἡ πόλις ὠνησαμένη τὸν  
φόρτον ἐκ τῶν κοινῶν χρημάτων εἶχεν ἐν φυλακῇ.  
ἦλθον δὲ καὶ οἱ πρότερον ἀποσταλέντες πρόσβεις εἰς 15  
Σικελίαν Γεράνιος καὶ Οὐαλέριος πολλὰς ἄγοντες  
ὀλκάδας, ἐν αἷς ἐκομίζοντο πυρῶν πέντε μυριάδες  
μεδίμων Σικελικῶν, ὧν τὸ μὲν ἡμισυ μέρος ὠνητὸν  
ἦν βραχείας πάνυ τιμῆς, τὸ δὲ λοιπὸν ὁ τύραννος  
ἀπεστάλκει προῖκα δούς καὶ τέλεσι παρακομίσας τοῖς 20  
ιδίοις. ὡς δ' ἀπηγγέλθη τοῖς ἐν τῇ πόλει ὁ κατά-  
πλους τῶν σιτηγῶν ὀλκάδων τῶν ἀπὸ Σικελίας,  
πολλὴ ζήτησις ἐνέπιπτε τοῖς πατρικίοις ὑπὲρ τῆς  
διαθέσεως αὐτοῦ. οἱ μὲν γὰρ ἐπιεικέστατοι αὐτῶν  
καὶ φιλοδημότατοι πρὸς τὰς κατεχούσας τὸ κοινὸν 25  
ἀνάγκας ἀποβλέποντες, τὴν τε παρὰ τοῦ τυράννου  
δωρεὰν παρήνον ἅπασι διανεῖμαι τοῖς δημοτικοῖς,  
καὶ τὸν ὠνηθέντα ἐκ τῶν δημοσίων χρημάτων σίτον  
ὀλίγης αὐτοῖς ἀπεμπολῆσαι τιμῆς, διδάσκοντες ὡς  
30 ἐν τούτων ἂν γένοιτο μάλιστα τῶν χαρίτων ἐπιει-  
κίστεραι πρὸς τοὺς εὐπόρους αἱ τῶν πενήτων ὀργαί·  
1000 οἱ δὲ ἀνθαδέστεροι καὶ ὀλιγαρχικώτεροι πάσῃ προ-



θυμία τε καὶ μηχανῇ κακοῦν ᾤοντο δεῖν τοὺς δημοτικούς, καὶ συνεβούλευον τιμίας ἵς ἐνὶ μάλιστα ποιεῖν αὐτοῖς τὰς ἀγοράς, ἵνα σωφρονέστεροι διὰ τὴν ἀνάγκην γένοιτο καὶ πρὸς τὰ λοιπὰ τῆς πολιτείας δίκαια νομιμώτεροι.

XXI. Τούτων ἦν τῶν ὀλιγαρχικῶν καὶ ὁ Μάρκιος ἐκεῖνος ὁ Κοριολάνος ἐπικληθεὶς, οὐχ ὥσπερ οἱ λοιποὶ κρύφα καὶ δι' εὐλαβείας τὴν ἑαυτοῦ γνώμην ἀποφαινόμενος, ἀλλ' ἀντικρὺ καὶ θρασέως, ὥστε πολλοὺς ἀκούσαι καὶ τῶν δημοτικῶν. εἶχε γάρ τινες ἔξω τῶν κοινῶν ἐγκλημάτων καὶ ἰδίας προφάσεις νεωστὶ γενομένας, ἔξ ὧν εἰκότως ἐδόκει μισεῖν τοὺς δημοτικούς. ὑπατείαν γὰρ αὐτῷ μετιόντι ταῖς ἔγγιστα γενομέναις ἀρχαιρεσίαις καὶ τοὺς πατρικίους ἔχοντι συναγωνιζομένους, ὁ δῆμος ἐναντιωθείς οὐκ εἶασε δοῦναι τὴν ἀρχὴν, τὴν τε λαμπρότητα τοῦ ἀνδρὸς καὶ τὴν τόλμαν δι' εὐλαβείας ἔχων, μὴ τι διὰ ταῦτα νεωτερίσῃ περὶ τὴν τῶν δημάρχων κατάλυσιν, καὶ μάλιστα δεδιώς, ὅτι συνελάμβανεν αὐτῷ πάσῃ προθυμίᾳ τὸ τῶν πατρικίων πλῆθος ὡς οὐδενὶ τῶν πρότερον. ταύτης τε οὖν τῆς ὕβρεως ὀργῇ ἐπαρθεὶς ὁ ἀνὴρ καὶ τὴν μεταβολὴν τοῦ πολιτεύματος εἰς τὸν ἔξ ἀρχῆς κόσμον ἀποκαταστήσαι προθυμούμενος, αὐτὸς τε ἀναφανδόν, ὥσπερ καὶ πρότερον ἔφην, ἔπραττε τὴν τοῦ δήμου κατάλυσιν, καὶ τοὺς ἄλλους ἐνήγρευ. ἦν δὲ περὶ αὐτὸν ἑταιρία μεγάλη νέων εὐγενῶν, οἷς ἦν τὰ μέγιστα τιμήματα βίαν καὶ πελάται συχνοὶ συνεστηκότες ἐπὶ ταῖς ἐκ τῶν πολέμων ὠφελείαις· οἷς ἐπαιρούμενος ἐφρονάττετο καὶ λαμπρὸς ἦν καὶ προῆλθεν ἐπὶ μήκιστον ἐπιφανείας. οὐ μὴν εὐτυχοῦς γε διὰ ταῦτα καταστροφῆς ἔτυχε· συναχθείσης γὰρ ὑπὲρ τούτων βουλῆς,

καὶ τῶν πρεσβυτέρων, ὡς ἔθος ἦν αὐτοῖς, πρώτων ἀποφραμένων τὰς ἑαυτῶν διανοίας, ἐν οἷς οὐ πολλοὶ τινες ἦσαν οἱ τὰς κατὰ τοῦ δήμου γνώμας ἀντικρὺς ἀγορεύσαντες, ἐπειδὴ καθῆκεν εἰς τοὺς νεωτέρους ὁ λόγος, αἰτησάμενος ἐξουσίαν παρὰ τῶν ὑπᾶτων εἰπεῖν ὅσα βούλεται, καὶ τυχὼν ἐπισημασίας τε μεγάλης καὶ προσοχῆς, λόγον διεξῆλθε κατὰ τοῦ δήμου τοιούδε.

XXII. Ὅτι μὲν οὐχ ὑπ' ἀνάγκης τε καὶ ἀπορίας βιασθεὶς ὁ δῆμος ἐποίησατο τὴν ἀπόστασιν, ὧ πατέρες, ἀλλὰ πονηρῶ ἐλπίδι ἐπαρθεὶς, ὡς καταλύσω τὴν ἀριστοκρατίαν ὑμῶν καὶ πάντων αὐτὸς ἐσόμενος τῶν κοινῶν κύριος, σχεδὸν οἶμαι πάντας ὑμᾶς ἠσθήσθαι τὰ περὶ τὰς διαλλαγὰς αὐτοῦ πλεονεκτήματα ὀρῶντας· ὧ γε οὐκ ἀπέχρησε διαφθεῖραντι τὴν περὶ τὰ συμβόλαια πίστιν καὶ τοὺς ἐπὶ ταύτῃ κειμένους ἀνελόντι νόμους μηθὲν ἄλλο πολυπραγμουεῖν, καινὴν δὲ καταστησάμενος ἀρχὴν ἐπὶ τῷ καθελεῖν τὴν τῶν ὑπᾶτων, ἱερὰν καὶ ἄσυλον ἐποίησεν αὐτὴν νόμῳ, καὶ νῦν τυραννικὴν ἐξουσίαν περιβαλόμενος, ὧ βουλή, τῷ νεωστὶ κυρωθέντι νόμῳ λέληθεν ὑμᾶς. ὅταν γὰρ ἐπ' ἐξουσίας πολλῆς οἱ προεστηκότες αὐτοῦ πρόφασιν εὐπρεπῆ προβαλλόμενοι τὸ δὴ τοῖς ἀδικουμένοις τῶν δημοτῶν βοηθεῖν, διὰ τῆς ἐξουσίας ταύτης ἄρῳσι καὶ φέρωσιν ὅσα ἂν αὐτοῖς δοκῇ, καὶ μηθεὶς ὁ κωλύσω τὰς παρανομίας αὐτῶν ἢ, μήτε ἰδιώτης μήτε ἀρχων δεδοικῶς τὸν νόμον, ὃς ἀφαιρεῖται καὶ τὸν λόγον ἡμῶν ἅμα τοῖς ἔργοις θάνατον ἐπιτιθεὶς ζημίαν τοῖς ἐλευθέροις τὴν φωνὴν ἀφιεῖσι, τί προσήκειν ὄνομα θέσθαι τῇ δυναστείᾳ ταύτῃ τοὺς οὖν ἔχοντας ἔτερον, ἢ τοῦθ' ὅπερ ἐστὶν ἀληθὲς καὶ πάντες ἂν ὁμολογήσαιτε, τυραννίδα; εἰ δ' οὐχ ὑφ' ἐνὸς ἀνδρὸς, ἀλλ'

ὑφ' ὅλου τυραννούμεθα δήμου, τί τοῦτο διαφέρει; τὸ γὰρ ἔργον ἐξ ἀμφοῖν τὸ αὐτό. κράτιστον μὲν οὖν ἦν μὴδὲ τὸ σπέρμα τῆς ἐξουσίας ταύτης εἶσαι καταβαλλόμενον, ἀλλὰ πάντα ὑπομείναι πρότερον, ὡς Ἄππιος 5 ὁ βέλτιστος ἐκ πολλοῦ τὰ δεινὰ προορώμενος ἤξιον· εἰ δὲ μὴ, νῦν γε ὁμοθυμαδὸν ἅπαντας ἐξορύξαντας αὐτὴν πρόρριζον ἐκ τῆς πόλεως ἐκβαλεῖν ἕως ἄσθε- 1301 νῆς ἐστὶ καὶ προσπολεμηθῆναι ἡράδῃα. καὶ τοῦτ' οὐ πρώτοις ἡμῖν, ὦ βουλή, οὐδὲ μόνοις ἐξεγένετο πα- 10 θεῖν, πολλοῖς δὲ καὶ πολλαῖς ἤδη τοῖς εἰς ἀβουλήτους ἀνάγκας καταστάσι γνώμης ἀμαρτοῦσι τῆς ἀρίστης περὶ τὰ μέγιστα, ἐπειδὴ τὰς ἀρχὰς οὐκ ἐκώλυσαν τοῦ κακοῦ, τὰς ἀυξήσεις πειραῶσαι καθαιρεῖν· καὶ ἡ μετάνοια τῶν ὀψὲ ἀρχομένων σω- 15 φρονεῖν ἤτταν οὐσα τῆς προνοίας, καθ' ἕτερον αὐτὸν τρόπον οὐ χείρων οὐσα ἀναφαίνεται τῇ κωλύσει τοῦ τέλους ἀφανίζουσα τὸ ἐν τῇ ἀρχῇ ἀγνοηθῆναι.

XXIII. Εἰ δὲ τισιν ὑμῶν δεινὰ μὲν τὰ τοῦ δή- 20 μου ἔργα εἶναι δοκεῖ, καὶ κεκαλύσθαι αὐτὸν οἴονται δεῖν τὰ λοιπὰ ἐξαμαρτάνοντα, θεός δὲ εἰσέρχεται, μὴ δόξωσι λύειν τὰς ὁμολογίας πρότεροι καὶ παραβαίνειν τοὺς ὄρκους, γνώτωσαν ὅτι οὐκ ἄρχοντες 1305 ἀλλ' ἀμυνόμενοι, οὐδ' ἀναιροῦντες τὰς ὁμολογίας ἀλλὰ τοὺς ἀνηρηκότας τιμωρούμενοι αὐτὸ δρωσιν, ἀναίτιοί τε πρὸς θεοὺς ἔσονται καὶ ἐπὶ τῷ σφετέρῳ συμφέροντι τὰ δίκαια πράξουσιν. μέγα δ' ὑμῖν γενέσθω τεκμήριον, ὅτι τοῦ λύειν τὰς ὁμολογίας καὶ παρα- σπονδεῖν οὐχ ὑμεῖς, ἀλλὰ τὸ δημοτικὸν ἄρχει μέρος 30 οὐκ ἀξιῶν ἐμμένειν ἐφ' οἷς εὔρετο τὴν κάθοδον· οὐ γὰρ ἐπὶ τῷ κακῶς δράσαι τὴν βουλήν, ἀλλ' ἐπὶ τῷ μὴ ὑπ' ἐκείνης κακοῦσθαι τὴν τῶν δημάρχων ἐξου-

σίαν ἤτήσατο. χρῆται δὲ αὐτῇ οὐκέτι εἰς ἃ δεῖ οὐδ' ἐφ' οἷς εὔρετο, ἀλλ' ἐπὶ διαφθορᾷ καὶ συγχύσει τῆς πατρίου πολιτείας. μέμνησθε γὰρ δήπου τὴν νεωστὶ γενομένην ἐκκλησίαν καὶ τοὺς ὑπὸ τῶν δημαγωγῶν 5 φηθέντας ἐν αὐτῇ λόγους ὅσῃν ἐπεδείξαντο αὐθά- 5 δειάν τε καὶ ἀκοσμίαν, καὶ νῦν ἐφ' οἷου εἰσὶν αὐχῆ- 5 ματος οἱ μὴδὲν ὑγιᾶς φρονοῦντες, ἐπειδὴ ἐγνωσαν ὡς ἐν τῇ ψήφῳ ἐστὶν ἅπαν τὸ τῆς πόλεως κράτος, 10 ἧς αὐτοὶ κρατήσουσι πλείους ἡμῶν ὄντες. τί οὖν καταλείπεται ποιεῖν ἡμῖν ἀρξάντων ἐκείνων παρασπον- 10 δεῖν καὶ παρανομεῖν, εἰ μὴ τὸ ἀμύνεσθαι τοὺς ἄρξαντας, καὶ ἃ τέως ἀδίκως ἔχουσιν ἀφελέσθαι σὺν δίκῃ, καὶ εἰς τὸ λοιπὸν παῦσαι πλειόνων ἐφιέ- 15 μένους· χάριν εἰδότας τοῖς θεοῖς, ὅτι οὐκ εἴσασαν αὐτοὺς τὰ πρώτα πλεονεκτήσαντας εἰς τὰ λοιπὰ σω- 15 φρονεῖν, ἀλλὰ ταύτην ἐνέβαλον αὐτοῖς τὴν ἀναισχυν- 15 τίαν τε καὶ πολυπραγμοσύνην, ὑφ' ἧς ὑμεῖς ἀναγκασθέντες τὰ τ' ἀπολωλότα πειραῶσθε ἀναλαβεῖν, καὶ τὰ λοιπὰ δι' ἧς προσῆκε φυλακῆς λαβεῖν.

XXIII. Καιρὸς δὲ ὁ παρῶν οἷος οὐχ ἕτερος, 20 εἴπερ γε ἄρχεσθαι μέλλετε σωφρονεῖν, ἐν ᾧ κεκά- 20 κωται αὐτῶν τὸ πλεῖστον μέρος ὑπὸ τοῦ λιμοῦ, καὶ τὸ λοιπὸν οὐκ ἂν ἐτι δύναιτο πολὺν ἀντισχεῖν χρό- 25 νον ὑπ' ἀρχηματίας, εἰ σπανίους τε καὶ τιμίας ἔχοι 25 τὰς ἀγορὰς· ἀναγκασθήσονται δὲ οἱ μὲν κάκιστοι 25 καὶ οὐδέποτε τῇ ἀριστοκρατίᾳ χαίροντες ἐκλιπεῖν τὴν πόλιν, οἱ δ' ἐπιεικέστεροι πολιτεύεσθαι κοσμίως μὴδὲν ἐτι ἐνοχλοῦντες ὑμῖν. τὰς τ' οὖν ἀγορὰς διὰ 30 φυλακῆς ἔχετε, καὶ τῆς τιμῆς τῶν ἄντων μὴθὲν ἀνίτε, ἀλλ' ὅσον πλείστου ποτὲ ἦν τὰ ἄνια, τοσοῦ- 30 του καὶ νῦν αὐτὰ πωλεῖν ψηφίσασθε δικαίας ἀφορμὰς ἔχοντες καὶ προφάσεις εὐλόγους, τὴν τε ἀχάριστον

τοῦ δήμου καταβοήν, ὡς ὑφ' ἡμῶν κατασκευασθεί-  
σης τῆς σιτοδείας, ἢ διὰ τὴν ἀπόστασιν τὴν ἐκείνων  
ἐγένετο καὶ τὴν καταφθορὰν ἣν ἐποιήσαντο τῆς γῆς,  
ἄγοντες αὐτὴν καὶ φέροντες ὥσπερ πολεμίαν, καὶ  
5 τὰς ἐξαιρεθείσας ἐκ τοῦ δημοσίου δαπάνας εἰς τοὺς  
ἀποσταλέντας ἐπὶ τὴν σιτανίαν ἄνδρας, καὶ ἄλλα  
πολλά, ἃ ἠδίκησθε ὑπ' αὐτῶν· ἵνα καὶ γινώμεν ἥδη  
τί ποτ' ἐστὶν ἐκεῖνο τὸ δεινόν, ὃ διαθήσουσιν ἡμᾶς,  
ἂν μὴ ποιῶμεν ἅπαντα τῷ δήμῳ τὰ καθ' ἡδονάς,  
10 ὡς οἱ δημαγωγοὶ αὐτῶν δεδιττόμενοι ἔλεγον. εἰ δὲ 1368  
ἀφήσετε καὶ τοῦτον ἐκ τῶν χειρῶν τὸν καιρὸν, πολ-  
λάκις εὐξέσθε τοιούτου τυχεῖν ἑτέρου· καὶ εἰ γνοίη  
τοῦτο ὁ δῆμος, ὅτι βουλευθέντες καταλύειν αὐτοῦ τὴν  
ἰσχὺν ἀπετρέπεσθε, πολὺ μᾶλλον ὑμῖν βαρὺς ἐγκεί-  
15 σεται, πολέμιον μὲν τὸ βουλόμενον ὑμῶν ἡγούμενος,  
δειλὸν δὲ τὸ μὴ δυνάμενον.

XXV. Τοιαῦτ' εἰπόντος τοῦ Μαρκίου, διέστησαν  
αἱ γινώμαι τῶν συνέδρων, καὶ θόρυβος ἐν αὐτοῖς  
ἐγένετο πολὺς. οἱ μὲν γὰρ ἐξ ἀρχῆς ἐναντίοι τοῖς  
20 δημοτικοῖς καὶ τὰς διαλλαγὰς παρὰ γινώμην ὑπομει-  
ναντες, ἐν οἷς ἢ τε νεότης ὀλίγου δεῖν πᾶσα ἦν καὶ  
τῶν πρεσβυτέρων οἱ πλουσιώτατοί τε καὶ φιλοτιμό-  
τατοι, βαρέως φέροντες οἱ μὲν ἐπὶ ταῖς περὶ τὰ συμ-  
βόλαια βλάβαις, οἱ δ' ἐπὶ τῇ περὶ τὰς τιμὰς ἐλατ-  
25 τώσει, ἐπήνουν τὸν ἄνδρα ὡς γενναῖον καὶ φιλό-  
πολιν καὶ τὰ κράτιστα τῷ κοινῷ λέγοντα· οἱ δὲ δη-  
μοτικὰς ἔχοντες τὰς προαιρέσεις τῶν τρόπων καὶ τὸν 1369  
πλοῦτον οὐ πέρα τοῦ δέοντος ἐκτετιμηκότες, τῆς  
τε εἰρήνης οὐδὲν ἀναγκαιότερον ὑπολαμβάνοντες,  
30 ἤχθοντο τοῖς λεγομένοις ὑπ' αὐτοῦ καὶ τὴν γινώμην  
οὐ προσέεντο· ἤξιουν τε μὴ τοῖς βιαίοις, ἀλλὰ τοῖς  
εὐγνώμοσι περιεῖναι τῶν ταπεινοτέρων, μηδ' ἀπρε-

πὲς ἀλλ' ἀναγκαῖον ἡγεῖσθαι τὸ ἐπιεικές, ἄλλως τε  
καὶ πρὸς τοὺς συμπολιτευομένους ἐπ' εὐνοίᾳ γινό-  
μενον· μαρίαν τε ἀπέφαινον αὐτοῦ τὴν συμβουλήν,  
οὐ παρρησίαν οὐδὲ ἐλευθερίαν. βραχὺ μὲν οὖν  
τοῦτο τὸ μέρος καὶ ἀσθενὲς ὃν περιεωθεῖτο ὑπὸ τοῦ 5  
βιαιοτέρου. ταῦτα δὲ ὀρῶντες οἱ δήμαρχοι· παρῆ-  
σαν γὰρ τῷ συνεδρίῳ παρακληθέντες ὑπὸ τῶν ὑπά-  
των· ἐβόων τε καὶ ἤσπαιρον καὶ τὸν Μάρκιον λυ-  
μεῶνα καὶ ὄλεθρον τῆς πόλεως ἀπεκάλουν ποιηροῦς  
διεξιόντα κατὰ τοῦ δήμου λόγους, καὶ εἰ μὴ κωλύ- 10  
σειαν αὐτὸν οἱ πατριῆκοι πόλεμον ἐμφύλιον εἰς τὴν  
πόλιν εἰσάγοντα θανάτῳ ζημιώσαντες ἢ φυγῇ, αὐτοὶ  
1170 ποιήσειν τοῦτ' ἔλεγον. θορύβου δ' ἔτι πλείονος ἐπὶ  
τοῖς λόγοις τῶν δημάρχων γενομένου, καὶ μάλιστα  
ἐκ τῶν νεωτέρων τὰς ἀπειλὰς δυσανασχετούντων, 15  
ἐπαρθεῖς τούτοις ὁ Μάρκιος ἀνθαδέστερον ἤδη καθ-  
ῆπτετο τῶν δημάρχων καὶ θρασύτερον· Εἰ μὴ παύ-  
σεσθε μέντοι, λέγων, ταράττοντες τὴν πόλιν ὑμεῖς  
καὶ ἐκδημαγωγῶντες τοὺς ἀπόρους, οὐκέτι λόγῳ  
διοίσομαι πρὸς ὑμᾶς, ἀλλ' ἔργῳ. 20

XXVI. Ἠγρωμένης δὲ τῆς βουλῆς, ὡς ἔμαθον  
οἱ δήμαρχοι πλείους ὄντας τοὺς βουλομένους ἀφε-  
λέσθαι τὴν δοθεῖσαν ἐξουσίαν τῷ δήμῳ τῶν ἐμμέ-  
νειν ταῖς ὁμολογίαις ἀξιούντων, ἐξέδραμον ἐκ τοῦ  
βουλευτηρίου κεκραγότες καὶ θεοὺς τοὺς ὀρκίους 25  
ἐπικαλούμενοι. καὶ μετὰ τοῦτο συναγαρόντες εἰς  
ἐκκλησίαν τὸν δῆμον, ἐδήλωσαν αὐτῷ τοὺς ἐν τῇ  
βουλῇ ῥηθέντας λόγους ὑπὸ τοῦ Μαρκίου, καὶ τὸν  
ἄνδρα εἰς ἀπολογίαν ἐκάλουν. ὡς δ' οὐ προσεῖχεν  
αὐτοῖς, ἀλλὰ καὶ τοὺς ὑπηρέτας ὑφ' ὧν ἐκαλεῖτο 30  
προπηλακίζων τοῖς λόγοις ἀνεῖρξεν, ἀνανακτήσαντες  
1171 ἔτι μᾶλλον οἱ δήμαρχοι παραλαβόντες τοὺς τε ἀγο-

ρανόμους καὶ τῶν ἄλλων πολιτῶν συχνοὺς ὥρμησαν ἐπ' αὐτόν· ὁ δ' ἔτυχεν ἔτι διατρίβων πρὸ τοῦ βουλευτηρίου τῶν τε πατρικίων πολλοὺς ἐπαγόμενος καὶ τὴν ἄλλην ἑταιρίαν [τὴν] περὶ αὐτὸν ἔχων. ὡς δὲ 5 συνείδον αὐτὸν οἱ δήμαρχοι, προσέταξαν τοῖς ἀγορανόμοις ἐπιλαβέσθαι τοῦ σώματος καὶ εἰ μὴ ἐκὼν βούλεται ἀκολουθεῖν βία ἄρειν'· εἶχον δὲ τότε τὴν ἀγορανομικὴν ἐξουσίαν Τίτος Ἰούνιος Βροῦτος καὶ Γάιος Οὐισέλλιος Ρούγας. οἱ μὲν δὴ προσήεσαν ὡς 10 ἐπιληψόμενοι τοῦ ἀνδρός, οἱ δὲ πατρικιοὶ δεινὸν ἠγησάμενοι τοῦτορον ὑπὸ τῶν δημάρχων πρὸ δίκης ἄγεσθαι τινα σφῶν βία, προὔστησαν τοῦ Μαρκίου καὶ τύπτουντες τοὺς ὁμοσε χωροῦντας ἀπήλασαν. διαβοηθέντος δὲ τοῦ πάθους ἀνὰ τὴν πόλιν ὄλην, ἐξε- 15 πῆδων ἅπαντες ἐκ τῶν οἰκιῶν· οἱ μὲν ἐν τοῖς ἀξιωμασιν ὄντες καὶ χορημάτων ἔχοντες εὖ τὸν Μάρκιον ὑπερασπιοῦντες ἅμα τοῖς πατρικίοις καὶ τὴν ἀρχαίαν ἀνακτησόμενοι πολιτείαν, οἱ δὲ ταπεινοὶ ταῖς 1372 τύχαις καὶ βίου σπανίζοντες ἀμύνειν παρεσκευασμένοι τοῖς δημάρχοις καὶ ποιεῖν ὅ τι ἂν ἐκεῖνοι κελεύσωσιν· ἢ τε αἰδώς, ὑφ' ἧς κρατούμενοι τέως οὐδὲν ἐτόλμων εἰς ἀλλήλους παρανομεῖν, τότε ἀνήρητο ὑπ' αὐτῶν. οὐ μὴν ἔδρασαν γε οὐδὲν ἀνήκεστον τὴν ἡμέραν ἐκείνην, ἀλλ' εἰς τὴν ἐπιούσαν ἀνεβή- 20 λοντο, γνώμη τε καὶ παρακλήσει τῶν ὑπάτων εἴξαντες.

XXVII. Τῇ δ' ἐξῆς ἡμέρα πρῶτοι καταβάντες εἰς τὴν ἀγορὰν οἱ δήμαρχοι συνεκάλουν τὸν δῆμον εἰς ἐκκλησίαν, καὶ παριόντες ἐκ διαδοχῆς πολλὰ μὲν 30 τῶν πατρικίων κατηγοροῦν ὡς ἐψευσμένων τὰς συνθήκας καὶ παραβεβηκότων τοὺς ὄρκους, οὓς ἐποιήσαντο πρὸς τὸν δῆμον ὑπὲρ ἀμνηστίας τῶν πάλαι,

πίστεις παραφέροντες τοῦ μὴ βεβαίως αὐτοὺς διηλλάχθαι πρὸς τὸ δημοτικὸν τὴν τε τοῦ σίτου σπάνιν, ἣν αὐτοὶ κατεσκευάσαν, καὶ τὰς ἀποστολάς τῶν κληρούχων ἀμφοτέρων καὶ τὰ ἄλλα ὅσα ἐμηχανήσαντο 5 μειώσεως τοῦ πλήθους ἔνεκα. πολλὰ δὲ τοῦ Μαρκίου 1373 καδήπτοντο τοὺς φηθέντας ὑπ' αὐτοῦ λόγους ἐν τῇ βουλῇ διεξιόντες, καὶ ὅτι καλούμενος εἰς ἀπολογία ὑπὸ τοῦ δήμου οὐ μόνον οὐκ ἠξίωσεν ἔλθειν, ἀλλὰ καὶ τοὺς ἀφικόμενους ἐπ' αὐτὸν ἀγορανόμους τύπτων ἀπήλασεν. ἐκάλουν δὲ μάρτυρας τῶν ἐν τῇ βουλῇ 10 γενομένων τοὺς ἐντιμοτάτους τῶν ἐκεῖ, τῆς δὲ περὶ τοὺς ἀγορανόμους ὕβρεως ἅπαντας τοὺς τότε παρόντας κατὰ τὴν ἀγορὰν δημοτικούς. ταῦτα δ' εἰπόντες ἐδίδοσαν εἰ βουλομένοις εἴη τοῖς πατρικίοις ἀπολογία, κατέχοντες ἐπὶ τῆς ἐκκλησίας τὸν 15 δῆμον, ἕως ἢ βουλή διαλυθῆ. ἔτυχον γὰρ ὑπὲρ αὐτῶν τούτων συνεδρεύοντες οἱ πατρικιοὶ διαποροῦντες, εἴτε ἀπολογητέον αὐτοῖς εἴη πρὸς τὸν δῆμον ὑπὲρ ὧν διεβλήθησαν, εἴτε μενετέον ἐφ' ἡσυχίας. ἐπεὶ δ' αἱ πλείους γνώμαι τὰ φιλανθρωπότερα τῶν αὐθα- 20 δεστέρων προείλοντο, διαλύσαντες οἱ ὑπατοὶ τὸν σύλλογον προῆλθον εἰς τὴν ἀγορὰν, τὰς τε κοινὰς ἀπολυσόμενοι διαβολὰς καὶ περὶ τοῦ Μαρκίου τὸν δῆμον ἀξιῶσυντες μηθὲν βουλευῆσαι ἀνήκεστον. καὶ παρελθὼν ὁ πρεσβύτερος αὐτῶν Μηνύκιος ἔλεξε 25 τοιαῦδε.

1374 XXVIII. Ἡ μὲν ὑπὲρ τῆς σιτοδείας ἀπολογία πᾶν βραχεῖά ἐστιν, ὃ δημόται, καὶ οὐκ ἄλλους τινας παρεξόμεθα ὧν ἂν λέγωμεν ἢ ὑμᾶς μάρτυρας. τὴν τε γὰρ ἀφορίαν τῶν σιτικῶν καρπῶν ἐπίστασθε 30 δῆπου καὶ αὐτοὶ διὰ τὸν ἐκλειφθέντα σπόρον γενομένην· τὴν τε ἄλλην καταφθορὰν τῆς χώρας οὐ παρ'

ἐτέρων ὑμᾶς δεῖ μαθεῖν, ἀφ' ἧς αἰτίας συνέβη, καὶ ὡς τελευτῶσα ἢ πλείστη τε καὶ ἀρίστη γῆ πάντων ἐσπάνικε καρπῶν τε καὶ ἀνδραπόδων καὶ βοσκημάτων, τὰ μὲν ὑπὸ τῶν πολεμίων διαρπαζομένη, τὰ δὲ ὑμῖν μὴ ἐπιχορηγοῦσα τοσοῦτοις οὔσι καὶ μηδεμίαν ἄλλην ἀποτροφήν ἔχουσιν. ὥστε οὐκ ἐξ ὧν οἱ δημαγωγοὶ διαβάλλουσιν, ἀλλ' ἐξ ὧν αὐτοὶ ἴστε, τὸν λιμὸν ἠγοῦμενοι γερονένοι παύσασθε προσάπτουτες ἐπιβουλὴν ἡμετέραν τῷ πάθει, καὶ δι' ὄργης ἔχοντες ἡμᾶς οὐδὲν ἀδικούντας. αἱ δ' ἀποστολαὶ τῶν κληροῦχων ἐκ τοῦ ἀναγκαίου ἐγένοντο, κοινῇ δόξαν ὑμῖν ἅπασι διὰ φυλακῆς ἔχειν χωρία εἰς πόλεμον ἐπιτηδεῖα, καὶ μεγάλα ὤνησαν ἐν καιρῷ σφόδρα ἀναγκαίῳ γενομένου τοὺς τε ἐξιόντας καὶ τοὺς ὑπολειπομένους ὑμῶν. οἱ μὲν γὰρ ἀφθονωτέρων εὐποροῦσιν ἐκεῖ τῶν ἐπιτηδεύων· οἱ δ' ἐνθάδε ὑπομείναντες ἤττον σπανίζουσι τῆς ἀγορᾶς· ἢ τε ἰσομοῖρα τῆς τύχης, ἢ μετέσχομεν ὑμῖν τοῖς δημοτικοῖς οἱ πατρίκοι κλήρω ποιησάμενοι τὸν ἔξοδον, οὐ ψέγεται.

20 **XXVIII.** Τί οὖν παθόντες οἱ δημαγωγοὶ περὶ τούτων ἡμῖν ἐγκαλοῦσιν, ὧν κοινὰς ἔσχομεν τὰς γνώμας καὶ τὰς τύχας, εἴτε δεινῶν ὄντων ὡς οὗτοί φασιν, εἴτε ἀφελίμων ὥσπερ ἡμεῖς οἴομεθα; ἂ μὲν γὰρ ἐπὶ τῇ νεωστὶ βουλῇ γενομένη διαβεβλήμεθα ὑπ' αὐτῶν, ὡς οὐκ ἀξιούντες μετριάσαι περὶ τὰς τιμὰς τῆς ἀγορᾶς, ὡς ἐπιβουλεύοντες ἀφελέσθαι τὴν ἐξουσίαν τῶν δημάρχων, ὡς μνησικακοῦντες ὑμῖν τῆς ἀποστάσεως καὶ παντὶ τρόπῳ προθυμούμενοι κακῶσαι τὸ δημοτικόν, καὶ πάντα τὰ τοιαῦτα ἐγκλήματα ἔργοις ἀπολυσόμεθα οὐκ εἰς μακρὰν, οὔτε κακὸν οὐδὲν ὑμᾶς ἐργασόμενοι, τὴν τε ἐξουσίαν τῶν δημάρχων ἐφ' οἷς τότε συνεχωρήσαμεν ὑμῖν ἔχειν καὶ νῦν βεβαιού-

τες, τοῦ δὲ σίτου τὴν διάπρασιν ὡς ἂν ὑμῖν ἅπασιν δόξη ποιησόμενοι. περιμείναντες οὖν, εἴαν τι μὴ γένηται τούτων, τότε κατηγορεῖτε ἡμῶν. εἰ δὲ βουληθεῖτε ἀκριβῶς ἐξετάσαι τὰ διάφορα, δικαιότερον ἂν ἡμεῖς οἱ πατρίκοι τοῦ δήμου κατηγοροίμεν, ἢ τὴν βουλὴν ὑμεῖς ἔχοιτε δι' αἰτίας. ἀδικεῖτε γὰρ ἡμᾶς, ὡς δημόται, καὶ μηθὲν ἀχθεσθῆτε ἀκούοντες, οἳ γὰρ οὐκ ἀναμείναντες τῆς γνώμης ἡμῶν μαθεῖν τὸ τέλος κατηγορεῖν ἤδη αὐτῆς ἀξιοῦτε. καίτοι τίς οὐκ οἶδεν, ὅτι παντὶ τῷ βουλομένῳ ὄψιστον ἔργον ἂν γένοιτο συγγεῖαι καὶ ἀνελεῖν ὁμόνοιαν ἐκ πόλεως, τοιαῦτα ἐγκαλοῦντι, ὧν ἢ πίστις μέλλουσα καὶ ἐν ἀδήλῳ ἔτι οὔσα οὐ φυλακὴ ἐστὶ τοῦ μὴ παθεῖν τι κακόν, ἀλλὰ πρόφρασις τοῦ ἀδικεῖν; καὶ οὐ τοῖς προεστηκόσιν ὑμῶν μόνον ὧν διαβάλλουσι τὴν βουλὴν καὶ συκοφαντοῦσιν ἐπιτιμᾶν ἄξιον, ἀλλὰ καὶ ὑμῖν οὐχ ἤττον ὧν πιστεύετε αὐτοῖς καὶ πρὶν πειραθῆναι ἀνακατεῖτε. ἐχρῆν γὰρ ὑμᾶς, εἰ τὰ μέλλοντα ἐφοβεῖσθε ἀδικήματα, καὶ τὰς ἐπ' αὐτοῖς ὄργας μελλούσας ἔχειν. νῦν δὲ φαίνεσθε ταχύτερα μᾶλλον ἢ φρονημώτερα ἐργαζέμενοι, καὶ τὸ ἀσφαλέστερον ἐν τῷ κακουροτέρῳ τιθέναι.

**XXX.** Περὶ μὲν δὴ τῶν κοινῶν ἀδικημάτων, ἐφ' οἷς τὴν βουλὴν οἱ δημαρχοὶ διέβαλον, ἀποχορῆν οἶομαι τοσαῦτα εἰρησθαι. ἐπεὶ δὲ καὶ καθ' ἕνα ἕκαστον ἡμῶν, περὶ ὧν ἂν εἴπωμεν ἐν τῇ βουλῇ, συκοφαντοῦσι, καὶ διστάναι τὴν πόλιν αἰτιῶνται, καὶ νῦν Γάιον Μάρκιον ἄνδρα φιλόπολιν ἐλευθέρα φωνῇ χρησάμενον ὑπὲρ τῶν κοινῶν ἀποκτεῖναι ζητοῦσιν ἢ φρυγάδα ποιῆσαι τῆς πατρίδος, βούλομαι καὶ περὶ τούτου τὰ δίκαια εἰπεῖν πρὸς ὑμᾶς· καὶ σκοπεῖτε, εἰ μετρίους καὶ ἀληθεῖς ἐρῶ τοὺς λόγους. ὑμεῖς, ὡς δη-

μόται, διαλλαττόμενοι πρὸς τὴν βουλὴν ἀποχορῆν ὑμῖν  
 ᾤεσθε τῶν δανείων ἀφείσθαι, καὶ βοηθείας ἕνεκα  
 τῶν κατισχυομένων πενήτων ἀρχοντας ἐξ αὐτῶν  
 ἠτήσασθε ἀποδεικνύειν, καὶ ταῦτα ἀμφοτέρω πολ-  
 5 λὴν εἰδότες ἡμῖν χάριν ἐλάβετε· καταλύσαι δὲ τὴν  
 ἀρχὴν τῶν ὑπάτων, ἢ τὴν βουλὴν ἄκυρον ποιῆσαι  
 τῆς ὑπὲρ τῶν κοινῶν προστασίας καὶ τὴν τάξιν ἀνα-  
 τρέψαι τῆς πατρῴου πολιτείας οὔτε ἠτήσασθε οὔτε  
 μέλλετε. τί οὖν μαθόντες ἐπιχειρεῖτε πάντα συγχεῖν  
 10 ταῦτα νυνί; καὶ τίμιν δικαίῳ πιστεύοντες τὰς τιμὰς  
 ἡμῶν ζητεῖτε ἀφαιρῆσθαι; εἰ γὰρ ἐν τοῖς μετέχουσι  
 τῆς βουλῆς φοβερὸν ποιήσετε τὸ μὴ μετὰ παρρησίας  
 ἢ φρονοῦσι λέγειν, τί ἂν εἴποιεν οἱ προεστηκότες  
 ὑμῶν ἐπιεικῆς; ἢ ποῖῳ χρησάμενοι νόμῳ θανάτῳ ζη- 1370  
 15 μιοῦν ἢ φυγῇ τῶν πατρικίων τιμὰς ἀξιόσουσιν; οὔτε  
 γὰρ οἱ παλαιοὶ νόμοι ταύτην διδόασιν ὑμῖν τὴν ἐξου-  
 σίαν, οὔτε αἱ νεωστὶ γενόμεναι πρὸς τὴν βουλὴν  
 ὁμολογίαι. τὸ δ' ἐκβαίνειν τοὺς νομίμους ὄρκους καὶ  
 τὴν βίαν κρείττονα ποιεῖν τῆς δίκης οὐκέτι δημο-  
 20 τικόν ἐστιν, ἀλλ' εἰ τἀληθῆ βούλεσθε ἀκούειν τυραν-  
 νικόν. ἐγὼ δὲ παραινέσαιμ' ἂν ὑμῖν, ὧν μὲν εὔρεσθε  
 παρὰ τῆς βουλῆς φιλανθρωπῶν μηδενὸς ἀφίστασθαι·  
 ὧν δὲ οὐκ ἠξιώσατε διαλυόμενοι τὴν ἐχθρὰν τότε τυ-  
 χεῖν μηδὲ νῦν ἀντιποιεῖσθαι.  
 25 XXXI. Ἴνα δὲ μᾶλλον ὑμῖν γένηται φανερόν,  
 ὅτι οὐθὲν οὔτε μέτριον οὔτε δίκαιον ἀξιοῦσιν οἱ δημο-  
 αγωγοί, ἀλλὰ παρανόμων τε καὶ ἀδυνάτων ἐφίεν-  
 ται μετενεγκόντες τὸ πρᾶγμα ἐφ' ἑαυτούς, οὕτω σκο-  
 πεῖτε, καὶ ὑπολάβετε τοὺς μετέχοντας τοῦ συνεδρίου  
 30 τοῖς ἐν ὑμῖν πολιτευομένοις ἐγκαλεῖν, ὅτι πονηροὺς  
 κατὰ τῆς βουλῆς διατίθενται λόγους ἐν ὑμῖν, καὶ  
 καταλύουσι τὴν πάτριον ἀριστοκρατίαν, καὶ διαστα- 1380

σιάζουσι τὴν πόλιν, ἅπαντα ταῦτα λέγοντας ἀληθῆ·  
 ποιούσιν γὰρ ταῦτα· καὶ τὸ πάντων χαλεπώτατον, ὅτι  
 δυναστείαν περιβάλλονται μείζονα τῆς συγκεχωρη-  
 μένης αὐτοῖς ἄκριτον ἀποκτείνου ἐπιχειροῦντες ὃν  
 ἂν ἐθέλωσιν ἐξ ἡμῶν, καὶ ὅτι δεῖ τοὺς ταῦτα ποιοῦν- 5  
 τας τεθνᾶναι νηποῖν. πῶς ἂν ὑμεῖς ἐνέγκοιτε τὴν  
 ἀνθάδειαν τοῦ συνεδρίου; καὶ τί ἂν εἴποιτε; ἄρ' οὐκ  
 ἀγανακτήσατε καὶ δεινὰ φαίητε πάσχειν, εἰ τὴν  
 παρρησίαν ἀφαιρήσεται τις ὑμᾶς καὶ τὴν ἐλευθερίαν,  
 τὸν ὑπὲρ τῶν ἐσχάτων κίνδυνον ἐπιθεῖς τοῖς ἔλευ- 10  
 θέρων φωνῆν ὑπὲρ τοῦ δήμου φθεγγαμένοις; οὐκ  
 ἔνεστ' ἄλλως εἰπεῖν. ἐπειθ' ἂ παθεῖν οὐκ ἂν ὑπο-  
 μείναιτε αὐτοί, ταῦθ' ἐτέρους πάσχοντας ἀνέχεσθαι  
 δικαιότε; πολιτικά γε, ὧ δημοῖται, καὶ μέτρια ὑμῶν  
 15 τὰ βουλευμάτα. τοιαῦτα ἀξιοῦντες, οὐκ αὐτοὶ βε-  
 βαιοῦτε τὰς καθ' ἑαυτῶν διαβολὰς ἀληθεῖς εἶναι,  
 καὶ τοὺς συμβουλευοντας τὴν παράνομον ὑμῶν δυ-  
 ναστείαν μὴ περιορᾶν ἀξιομένην, τὰ δίκαια καὶ συμ-  
 1881 φέροντα τῷ κοινῷ φρονοῦντας ἀποδείκνυτε; ἐμοὶ  
 μὲν γὰρ δοκεῖ. ἀλλ' εἰ γε τἀναντία βούλεσθε ὧν 20  
 διαβέβλησθε ποιεῖν, ἐμοὶ συμβούλῳ χρησάμενοι με-  
 τριάσατε καὶ τοὺς λόγους ἐφ' οἷς ἄχθεσθε πο-  
 λιτικῶς καὶ μὴ δυσοργήτως ἐνέγκετε. περιέσται  
 γὰρ ὑμῖν μὲν εἰ τοῦτο ποιήσετε ἀγαθοῖς εἶναι  
 δοκεῖν, τοῖς δὲ ἀπεχθῶς διακειμένοις πρὸς ὑμᾶς με- 52  
 τανοεῖν.

XXXII. Δίκαια μὲν δὴ ταῦτα προεχόμενοι  
 πρὸς ὑμᾶς μεγάλα, ὧς γε οὖν οἴομεθα, πείθομεν  
 ὑμᾶς μηδὲν ἔξαμαρτάνειν· χρηστὰ δὲ καὶ φιλάν-  
 θρωπα ἔργα, οἷς χρησόμεθα οὐκ ὄνειδίσαι βουλόμενοι 30  
 ὑμᾶς ἀλλ' ἐπιεικεστέρους ποιῆσαι, χωρὶς τῶν πα-  
 λαιῶν τὰ νεωστὶ γενόμενα περὶ τὴν κἀθοδὸν ὑμῶν,

ὧν ἡμεῖς μὲν ἐπιλελῆσθαι βουλόμεθα, ὑμεῖς δὲ δίκαιοι ἔστε μεμνησθαι. ἀναγκαζόμεθα δὲ αὐτὰ παραφέρειν νυνί, χορήζοντες ἀντὶ πολλῶν καὶ μεγάλων, ὧν ὑμῖν δεομένοις ἐχαρισάμεθα, ταύτην παρ' ὑμῶν ἀντιλαβεῖν τὴν χάριν, μήτε ἀποκτεῖναι μήτε ἐκβαλεῖν τῆς πόλεως ἄνδρα φιλόπολιν καὶ τὰ πολέμια πάντων κράτιστον. ζημιωσόμεθα γὰρ οὐ μικρά, εὖ ἴστε, ὧς δημόται, τοιαύτης ἀποστερήσαντες ἀρετῆς τὴν πόλιν. μάλιστα μὲν οὖν δι' αὐτὸν ἐκείνου ὑφεῖναι τῆς ὀργῆς δίκαιοι ἔστε, μνησθέντες ὅσους ὑμῶν ἔσωσεν ἐν τοῖς πολέμοις, καὶ μὴ λόγων μνησικακεῖν φαύλων, ἀλλ' ἔργων μεμνησθαι καλῶν. ὁ μὲν γὰρ λόγος ὑμᾶς τοῦ ἀνδρὸς οὐδὲν ἐβλαψεν, αἱ δὲ πράξεις αὐτοῦ μεγάλα ὠφέλησαν. εἰ δὲ πρὸς τοῦτον ἀδιαλλάκτως ἔχετε, ἡμῖν γέ τοι καὶ τῇ βουλῇ χαρίσασθε αὐτὸν δεομένοις, καὶ διαλλάγητε ἤδη ποτὲ βεβαίως τὴν τε πόλιν ὥσπερ ἐξ ἀρχῆς εἶχε μίαν εἶναι ποιήσατε. εἰ δὲ πείθουσιν ἡμῖν οὐ συγχωρήσετε, εὖ ἴστε, ὅτι οὐδ' ἡμεῖς βιαζόμενοι ὑμῖν εἴξομεν, ἀλλ' εἴτε φιλότιτος ἀδόλου καὶ χαρίταν ἔτι μειζόνων ἤδε ἢ πείρα τοῦ δήμου πᾶσιν αἰτία ἔσται, ἢ πόλεμον ἐμφυλίου αὐθις ἄρξει καὶ κακῶν ἀνηκέστων.

XXXIII. Τοιαῦτα τοῦ Μηνυκίου διεξελθόντος, ὄρωντες οἱ δῆμαρχοι τῇ τε μετριότητι τῶν λόγων καὶ τῇ φιλανθρωπία τῶν ὑποσχέσεων ὑπαγόμενον τὸ πλῆθος, ἤχθοντο καὶ χαλεπῶς ἔφερον, μάλιστα δὲ Γάιος Σικίννιος Βελλούτος, ὁ πείσας τοὺς πένητας ἀποστῆναι τῶν πατρικίων καὶ στρατηγὸς ἀποδειχθεὶς ὑπ' αὐτῶν ἕως ἦσαν ἐν τοῖς ὄπλοις, ἐχθιστος ἀνὴρ ἀριστοκρατία καὶ διὰ τοῦτο προηγημένος ὑπὸ τῶν πολλῶν εἰς ἐπιφάνειαν τὴν τε δημαρχικὴν ἐξουσίαν δεύ-

τερον ἤδη παρεληφώς, ἀπάντων ἥμιστα τῶν δημαγωγῶν ἑαυτῷ συμφέρειν ὁμοιοῦσαι οἰόμενος τὴν πόλιν καὶ τὸν ἀρχαῖον ἀναλαβεῖν κόσμον. οὐ γὰρ ὅσον τὰς τιμὰς καὶ τὰς δυνάμεις ἔξειν ἔτι τὰς αὐτὰς ὑπελάμβανεν ἀριστοκρατίας πολιτευομένης, γεγυῶς τε κακῶς καὶ τεθραμμένος ἀδύξως καὶ λαμπρὸν οὐθὲν ἀποδειξάμενος οὔτε κατὰ πολέμους οὔτε ἐν εἰρήνῃ, ἀλλὰ καὶ περὶ τῶν ἐσχάτων κινδυνεύσειν, ὧς ἐστιακῶς τὴν πόλιν καὶ πολλῶν αὐτῇ κακῶν γεγυῶς αἴτιος. ἐνθυμηθεὶς δὴ ὅσα χορὴ λέγειν τε καὶ πράττειν καὶ μετὰ τῶν συναρχόντων βουλευσάμενος, ἐπειδὴ κἀκείνους ἔσχεν ὁμογνώμονας, ἀνέστη καὶ μικρὰ περὶ τῆς κατεχούσης τὸν δήμον ἀτυχίας ἀποδυσάμενος, τοὺς τε ὑπάτους ἐπήνεσεν, ὅτι λόγον ἤξιώσαν ὑποσχέειν τοῖς δημόταις οὐχ ὑπεριδόντες αὐτῶν τῆς ταπεινότητος, καὶ τοῖς πατρικίοις εἰδέναι χάριν ἔφησεν, εἰ τις αὐτοῖς ἤδη ποτὲ φροντὶς εἰσέρχεται τῆς σωτηρίας τῶν πενήτων· καὶ ἔτι μᾶλλον ἔφη μετὰ πάντων ἐμαρτυρήσειν, ἐὰν ὅμοια παράσχωται τοῖς λόγοις τὰ ἔργα.

XXXIII. Εἰπὼν δὲ ταῦτα καὶ δόξας μέτριος ὀργὴν εἶναι καὶ διαλλακτικὸς ἐπιστρέφει πρὸς τὸν Μάρκιον παρεστηκότα τοῖς ὑπάτοις καὶ λέγει· Σὺ δὲ τί οὐκ ἀπολογῇ πρὸς τοὺς σαυτοῦ πολίτας, ὧς γενναῖε, περὶ ὧν εἶπας ἐν τῇ βουλῇ; μᾶλλον δὲ τί οὐκ ἀντιβολεῖς καὶ παραιτῇ τὰς ὀργὰς αὐτῶν, ἵνα μετριώτεράν ἐπιθῶσί σοι ζημίαν; ἀρνείσθαι μὲν γὰρ οὐκ ἂν ἀξιώσαιμι σε τοσούτων ἀνδρῶν εἰδόντων, οὐδ' εἰς ἀναισχύντους καταφεύγειν ἀπολογίας, Μάρκιον ὄντα καὶ φρόνημα μείζον ἢ κατ' ἰδιώτην ἔχοντα· εἰ μὴ ἄρα τοῖς ὑπάτοις καὶ τοῖς πατρικίοις καλῶς ἔχει πείθειν ὑπὲρ σοῦ τὸν δῆμον, σοὶ δὲ οὐκ ἄρα καλῶς

ἔξει τὸ αὐτὸ τοῦτο περὶ σεαυτοῦ ποιήσαντι. Ταῦτα  
 δ' ἔλεγεν οὐκ ἀγνοῶν, ὅτι μεγαλόφρων ἀνὴρ οὐχ  
 ὑπομενεῖ κατήγορος ἑαυτοῦ γενόμενος ὡς ἡμαρτηκῶς  
 ἄφεσιν αἰτεῖσθαι τῆς τιμωρίας, οὐδ' εἰς ὀλοφυρμούς  
 5 καὶ δεήσεις καταφεύξεται παρὰ τὸν ἑαυτοῦ τρόπον,  
 ἀλλ' ἦτοι καὶ τὸ παράπαν ἀπαξιώσει τὴν ἀπολογία, ἢ  
 τὴν ἔμφυτον ἀνθάδειαν φυλάττων οὐθὲν ὑποθα-  
 πεύσει τὸν δῆμον μετριάσας περὶ τοὺς λόγους· ὅπερ  
 καὶ συνέβη. γενομένης γὰρ ἡσυχίας καὶ πολλῆς ἐμ-  
 10 πεσοῦσης ὀλγῶν δεῖν πᾶσι τοῖς δημοτικοῖς προθυ-  
 μίας ἀπολύειν αὐτόν, εἰ τὸν παρόντα θεραπεύσεις  
 καιρόν, τοιαύτην ἀνθάδειαν ἐπεδείξατο λόγων, καὶ  
 τοσοῦτον αὐτῶν κατεφρόνησεν, ὥστε παρελθὼν ἔξαρ- 1384  
 νος μὲν ὑπὲρ οὐθενὸς ἦν τῶν πρὸς τὴν βουλήν εἰρη-  
 15 μένων κατὰ τοῦ πλήθους, οὐδ' ὡς μεταγινώσκων ἐπ'  
 αὐτοῖς εἰς οἴκτους καὶ παραιτήσεις ἐτρέπετο· ἀρχὴν  
 δὲ οὐδὲ δικασταῖς αὐτοῖς ἤξιον χρῆσθαι περὶ οὐθενὸς  
 πράγματος, ὡς οὐδεμίαν ἔχουσιν ἐξουσίαν νόμιμον·  
 εἰ δὲ βουλήσεται τις ἐπὶ τῶν ὑπάτων αὐτοῦ κατηγο-  
 20 ρεῖν εἴτ' ἔργων εὐθύνας ἀπαιτῶν εἴτε λόγων, ἐνθα  
 νόμος ἔστιν ἔτοιμος εἶναι δίκην ὑπέχειν. παρεληλυ-  
 θέναι δὲ πρὸς τοὺς δημότας ἔλεγεν, ἐπειδὴ καλοῦσιν  
 αὐτοί, τὰ μὲν ἐπιτιμήσων ταῖς παρανομίαις αὐτῶν  
 καὶ πλεονεξίαις, αἷς ἐχρήσαντο περὶ τε τὴν ἀπόστα-  
 25 σιν καὶ μετὰ τὴν κάθοδον· τὰ δὲ συμβουλευέσων  
 ἐπισχεῖν ἤδη ποτὲ καὶ συστεῖλαι τὰς ἀδίκους ἐπιθυ-  
 μίας. καὶ μετὰ τοῦτ' ἐπιστροφῶς πᾶν καὶ θρασέως  
 ἀπάντων αὐτῶν καθήπτετο καὶ μάλιστα τῶν δημάρ-  
 30 χων. προσῆν δ' αὐτοῦ τοῖς λόγοις οὐχ ὡς πολίτου 1384  
 δῆμον ἀναδιδάσκοντος εὐλόγιστος αἰδῶς, οὐδ' ὡς  
 ἰδιώτου πολλοῖς ἀπεχθόμενου σώφρων εὐλάβεια πρὸς  
 τὰς τοῦ κρατοῦντος ὀργάς, ἀλλ' ὡς ἐχθροῦ προσηλα-

κίζοντος ἀδεῶς τοὺς ὑπὸ χεῖρα ἄκρατός τις χολή  
 καὶ βαρεία τοῦ κακῶς πάσχοντος ὑπεροψία.

XXXV. Τοιγάρτοι λέγοντός τε αὐτοῦ μεταξὺ  
 πολὺς θόρυβος ἐγένετο τῆδε καὶ τῆδε θαμινὰ μεθελ-  
 κομένον, ὡς ἐν διαφόροις πλήθεσι καὶ οὐ τὰ αὐτὰ 5  
 βουλομένοις, τῶν μὲν ἠδομένων ἐπὶ τοῖς λόγοις αὐ-  
 τοῦ, τῶν δὲ πάλιν ἀχθομένων. καὶ ἐπειδὴ ἐπαύσατο  
 λέγων, ἔτι πλείων ἀνέστη βοή καὶ θόρυβος. οἱ μὲν  
 γὰρ πατριῶκοι κράτιστον ἀνδρῶν λέγοντες ἐπήνουν  
 αὐτὸν ἐπὶ τῇ παρρησίᾳ, καὶ μόνον ἀπέφαινον ἐξ 10  
 ἀπάντων σφῶν ἐλεύθερον, ὅς οὔτε πολεμίων ἔδεισεν  
 ἐπιόντων ὄχλον, οὔτε πολιτῶν ἀνθάδεις καὶ παρανό-  
 1188 μους ἐκολάκευσεν ὀργάς· οἱ δὲ δημοτικοὶ δυσανα-  
 σχετοῦντες ἐπὶ τοῖς ὄνειδισμοῖς βαρὺν καὶ πικρὸν  
 καὶ πολεμίων ἀπάντων ἐχθιστον αὐτὸν ἀπενάλου. 15  
 προθυμίαν δὲ πολλὴν εἶχον τινες ἤδη, οἷς πολὺ προσ-  
 ῆν τὸ εὐχερῆς, ἐν χειρῶν αὐτὸν διαφθεῖραι νόμῳ.  
 συνήρουν δ' αὐτοῖς εἰς τοῦτο καὶ συνελάμβανον οἱ  
 δήμαρχοι, καὶ μάλιστα Σικίννιος ἐνεδίδου τοῖς βου-  
 λήμασι τὰς ἡνίας. τελευτῶν γοῦν, ἐπειδὴ πολλὴν 20  
 αὐτοῦ καταδρομὴν ἐποίησατο καὶ τοὺς θυμούς ἐξέ-  
 καυσε τῶν δημοτῶν πολὺς ἐμπνεύσας τῇ κατηγορίᾳ,  
 τέλος ἐξήνεγκεν, ὅτι θάνατον αὐτοῦ καταψηφίζεται  
 τὸ ἀρχεῖον τῆς εἰς τοὺς ἀγορανόμους ὕβρεως ἔνεκεν,  
 οὓς τῇ προτέρα τῶν ἡμερῶν ἄγειν αὐτὸν κελυσθέν- 25  
 τας ὑφ' αὐτῶν τύπτων ἀπήλασεν· οὐ γὰρ ἑτέρων  
 τινῶν εἶναι τὸν προσηλακισμὸν τὸν εἰς τοὺς ὑπερέ-  
 τας σφῶν γενόμενον ἢ τῶν κελυσάντων. καὶ ταῦτ'  
 αἰσῶν ἐπέταξεν ἄγειν αὐτὸν ἐπὶ τὸν ὑπερκείμενον  
 1190 τῆς ἀγορᾶς λόφον· ἔστι δὲ τὸ χωρίον κρημνὸς ἐξαί- 30  
 σιος, ὃθεν αὐτοῖς ἔθος ἦν βάλλειν τοὺς ἐπιθανατίους.  
 οἱ μὲν οὖν ἀγορανόμοι προσήεσαν ὡς ἐπιληψόμενοι



τοῦ σώματος, οἱ δὲ πατρίκιοι μέγα ἐμβόησαντες ὄρ-  
μησαν ἐπ' αὐτοὺς ἀθροοί· ἐπειδ' ὁ δῆμος ἐπὶ τοὺς  
πατρίκίους· καὶ ἦν πολλή μὲν ἔργων ἀκομίαι, πολλή  
δὲ λόγων ὕβρις παρ' ἀμφοῖν, ὠθισμοί τε καὶ χειρῶν  
5 ἐπιβολαί. κατελήφθη δὲ καὶ σωφρονεῖν ἠναγκάσθη  
τὰ παρακινουῦντα ὑπὸ τῶν ὑπάτων βιασαμένων εἰς  
μέσους καὶ τοῖς ῥαβδούχοις ἀναστέλλειν κελυεσάντων  
τοὺς ὄχλους· τὸσαύτη ἄρα τῆς ἀρχῆς αἰδῶς ἦν τοῖς  
τότε ἀνθρώποις, καὶ οὕτω τίμιον τὸ τῆς βασιλικῆς  
10 ἔξουσίας σχῆμα. ἐφ' οἷς ὁ Σικίννιος ἀδημονῶν καὶ  
διαταραττόμενος, εὐλαβείας τε μεστὸς ἂν μὴ προσ-  
αναγκάσῃ τοὺς διαφόρους τοῖς βιαίοις τὰ βίαια  
λύσαι, ἀποστῆναι τε οὐκ ἀξίων τοῦ ἐργειρήματος,  
ἐπειδὴ ἄπαξ ἐπεβάλετο, καὶ μένειν ἐφ' οἷς ἔκρινεν  
15 οὐ δυνατὸς ἂν, πολὺς ἐν τῷ σκοπεῖν ὅτι πρα-  
κτέον ἦν.

XXXVI. Κατιδῶν δ' αὐτὸν ἀμηχανοῦντα Λεύ-<sup>1390</sup>  
κίος Ἰούμιος Βροῦτος, ἐκείνος ὁ δημαγωγὸς ὁ τεχνη-  
σάμενος ἐφ' οἷς ἔσονται δικαίους αἱ διαλλαγαί, δεινὸς  
20 ἀνὴρ τὰ τε ἄλλα καὶ πόρους εὗρεν ἐν ἀπόροις, προσ-  
έρχεται μόνος μόνῃ καὶ ὑποτίθεται μὴ φιλονεικεῖν  
ἐργειρήματι θερμῷ καὶ παρανόμῳ συναγωνιζόμενον,  
ὄραυντα τοὺς τε πατρίκίους ἅπαντας ἠρεθισμένους καὶ  
ἐτοιμοὺς ὄντας, εἰ κληθεῖεν ὑπὸ τῶν ὑπάτων, ἐπὶ τὰ  
25 ὄπλα χωρεῖν, τοῦ δὲ δήμου τὸ καρτερώτατον μέρος ἐν-  
δοιάζον καὶ οὐκ ἀγαπητῶς δεχόμενον ἀνδρὸς ἐπιφα-  
νεστάτου τῶν ἐν τῇ πόλει παραδόσιν ἐπὶ θανάτῳ καὶ  
ταῦτα ἀκρίτον. συνεβούλευε δὲ αὐτῷ τότε μὲν εἶξαι,  
καὶ μὴ χωρεῖν ὁμῶς τοῖς ὑπάτοις, μὴ τι μείζον κα-  
30 κὸν ἐργάσθαι, προθεῖναι δὲ τῷ ἀνδρὶ δίκην ὀρίσαντα  
χρόνον ὅσον δὴ τινα, καὶ ψῆφον ἀναδοῦναι τοῖς πο-  
λίταις ὑπὲρ αὐτοῦ κατὰ φυλάς· ὅτι δ' ἂν αἱ πλείους <sup>1391</sup>

ψῆφοι καθαιρῶσι, τοῦτο ποιεῖν· τυραννικὸν μὲν γὰρ  
εἶναι καὶ βίαιον, ὃ νῦν ἐπειράτο διαπράττεσθαι, τὸν  
αὐτὸν ὑπάρχειν καὶ κατήγορον καὶ δικαστὴν καὶ τοῦ  
μέτρου τῆς τιμωρίας κύριον· πολιτικὸν δὲ τὸ κατὰ νό-  
μους ἀπολογίας τυχόντα τὸν ὑπαίτιον ὅτι ἂν τοῖς πλεί- 5  
οσι δικασταῖς δόξῃ τοῦτο παθεῖν. πείθεται τούτοις ὁ  
Σικίννιος μηδὲν ὄρων βούλευμα κρεῖττον, καὶ παρ-  
ελθῶν ἔφη· Τὴν μὲν σπουδὴν ὄρατε τῶν πατρίκιων  
τὴν εἰς τὰ φονικά καὶ βίαια ἔργα, ἃ δημόται, ὡς  
ἐνὸς ἀνδρὸς ἀνθάδους ὄλην ἀδικοῦντος τὴν πόλιν 10  
ἦττον τίθεται τὸ πλήθος τὸ ὑμέτερον. οὐ μὴν ὁμοίους  
γε αὐτοῖς γίνεσθαι χρὴ καὶ ἐπὶ κεφαλῇν ὠθεῖσθαι,  
οὔτε ἄρχοντας πολέμου οὔτε ἀμυνομένους· ἀλλ'  
ἐπειδὴ πρόφασιν εὐπρεπῆ προβάλλονται τινες τὸν  
νόμον, ὃ βοηθοῦντες ἀφαιροῦνται τῆς κολάσεως, ὅς 15  
οὐκ εἴ τῶν πολιτῶν οὐθέννα ἀποκτεῖναι ἄκριτον, συρ-  
<sup>1392</sup>χωρήσωμεν αὐτοῖς τὸ δίκαιον τοῦτο, καίπερ οὐδὲ  
νόμιμα πάσχοντες οὐδὲ δίκαια ὑπ' αὐτῶν· καὶ δεῖ-  
ξομεν, ὅτι τοῖς εὐγνώμοσι μᾶλλον ἢ τοῖς βιαίοις  
περιεῖναι τῶν ἀδικούντων ἡμᾶς πολιτῶν βουλόμεθα. 20  
ὑμεῖς μὲν οὖν ἅπιτε καὶ τὸν μέλλοντα καιρὸν ἐκδέ-  
χεσθε οὐ πολὺν ἐσόμενον· ἡμεῖς δὲ παρασκευασά-  
μενοι τὰ κατεπεύγοντα προθήσομεν χρόνον τῷ ἀνδρὶ  
εἰς ἀπολογίαν, καὶ τὴν δίκην ἐφ' ὑμῶν συντελέσομεν.  
ὅταν δὲ γένησθε τῆς ψῆφου κατὰ τὸν νόμον κύριοι, 25  
τιμήσατε αὐτῷ ἢς ἂν ἀξιὸν εὗρητε ζημίας. καὶ περὶ  
μὲν τούτου τὸσαῦτα. τῆς δὲ τοῦ σίτου διαπράσεως  
τε καὶ διαθέσεως, ἵν' ἐκ τοῦ δικαιοτάτου γένηται, εἰ  
μὴ τις ἔσται τούτοις καὶ τῇ βουλῇ φροντίς, αὐτοὶ  
ἐπιμελησόμεθα. ταῦτα εἰπὼν διέλυσε τὴν ἐκκλη- 30  
σίαν.

XXXVII. Μετὰ τοῦτο οἱ μὲν ὑπατοὶ συναγαγόντες

τὴν βουλὴν ἐσκόπουν ἐφ' ἡσυχίας, τίς ἂν γένοιτο  
 τῆς παρούσης ταραχῆς λύσις. καὶ ἔδοξεν αὐτοῖς πρῶ-<sup>1398</sup>  
 του μὲν ἀποθεραπεύσαι τοὺς δημότας, εὐώνους πάνυ  
 καὶ λυσιτελεῖς ποιήσαντας αὐτοῖς τὰς ἀγορὰς· ἔπειτα  
 5 πείθειν τοὺς προεστηκότας αὐτῶν χάριτι τῆς βουλῆς  
 πείσασθαι καὶ μὴ παράγειν τὸν Μάρκιον. εἰ δὲ μὴ  
 πείθοιεν εἰς μακροτάτους ἀναβάλλεσθαι χρόνους,  
 ἕως ἂν μαρανθῶσιν αἱ τῶν πολλῶν ὀργαί. ταῦτα  
 ψηφισάμενοι τὸ μὲν ὑπὲρ τῆς ἀγορᾶς δόγμα εἰς τὸν  
 10 δῆμον ἐξήνεγκαν καὶ πάντων ἐπαινεσάντων ἐκύρω-  
 σαν. ἦν δὲ τοιούδε· Τὰς τιμὰς εἶναι τῶν ἀνίων τῶν  
 πρὸς τὸν καθ' ἡμέραν βίον ἀναγκαίων, αἰτινες ἐγέ-  
 νοντο ἐλάχισται πρὸ τῆς ἐμφυλίου στάσεως. παρὰ δὲ  
 τῶν δημάρχων πολλὰ λιπαρήσαντες, τὴν μὲν ὀλο-  
 15 σχερῆ πάρεσιν οὐχ εὖροντο, τὴν δὲ εἰς χρόνον  
 ὅσον ἤξιουν ἀναβολὴν ἔλαβον· αὐτοὶ τε προσεμη-  
 χανήσαντο διατριβὴν ἑτέραν ἀφορμῇ τοιαύδε χρησά-  
 μενοι. τοὺς ἐκ Σικελίας ἀποσταλέντας ὑπὸ τοῦ τυ-  
 ράννου πρέσβεις καὶ παρακομίσαντας τῷ δήμῳ τὴν  
 20 τοῦ σίτου δωρεὰν ἀποπλέοντας οἴκαδε Ἀντιάται πει-<sup>1394</sup>  
 ρατήριον στείλλαντες κατήγαγον ἀποσαλεύοντας οὐ  
 πρόσω τῶν λιμένων, καὶ τὰ τε χρήματα αὐτῶν ὡς πο-  
 λεμίων δι' ὠφελείας ἔθεντο, καὶ τὰ σώματα κατα-  
 κλείσαντες εἶχον ἐν φυλακῇ. ταῦτα μαθόντες οἱ ὑπα-  
 25 τοι ἐξοδὸν ἐψηφίσαντο ἐπὶ τοὺς Ἀντιάτας, ἐπειδὴ  
 πρεσβευομένοις αὐτοῖς οὐδὲν ἤξιουν τῶν δικαίων  
 ποιεῖν· καὶ ποιησάμενοι τῶν ἐν ἀκμῇ κατάλογον  
 ἐξήεσαν ἀμφοτέροι, ψήφισμα κηρώσαντες ὑπὲρ ἀνα-  
 βολῆς τῶν τε ἰδίων καὶ τῶν δημοσίων δικῶν, ὅσον  
 30 ἂν χρόνον ᾧσιν ἐν τοῖς ὅπλοις. ἐγένετο δ' οὗτος οὐχ  
 ὅσον ὑπέλαβον, ἀλλὰ πολλῶ ἐλάττων. οἱ γὰρ Ἀν-  
 τιάται μαθόντες ἐξεστρατευμένους πανδημεὶ Ρω-

μαίους οὐδὲ τὸν ἐλάχιστον ἀντέσχον χρόνον, δεόμενοι  
 δὲ καὶ λιπαροῦντες τὰ τε σώματα τῶν ἀλόντων Σι-  
 1000 κελιωτῶν ἀπέδωσαν καὶ τὰ χρήματα, ὥστε ἡραγκά-  
 σθησαν οἱ Ῥωμαῖοι εἰς τὴν πόλιν ἀναστρέψαι.

XXXVIII. Διαλυθείσης δὲ τῆς στρατιᾶς, ὁ μὲν 5  
 Σικίννιος ὁ δῆμαρχος συναγαγὼν τὸ πλῆθος εἰς ἐκ-  
 κλησίαν προεῖπεν ἡμέραν, ἐν ἧ συντελεῖν ἔμελλε  
 τὴν περὶ τοῦ Μαρκίου κρίσιν· καὶ παρεκάλει τοὺς  
 τε κατὰ πόλιν ὑπάρχοντας ἀθρόους ἦμειν ἐπὶ τὴν διά-  
 γνωσιν τῆς δίκης, καὶ τοὺς ἐπὶ τῶν ἀγορῶν διατρι-  
 10 βοντας ἀφεμένους τῶν ἔργων εἰς τὴν αὐτὴν ἡμέραν  
 ἀπαντᾶν, ὡς ὑπὲρ ἐλευθερίας καὶ σωτηρίας ὅλης τῆς  
 πόλεως τὴν ψῆφον ἀναληψομένους· παρήγγελλε δὲ  
 καὶ τῷ Μαρκίῳ παρεῖναι πρὸς τὴν ἀπολογίαν ὡς  
 οὐδενὸς ἀτυχήσουσι τῶν περὶ τὰς κρίσεις νομίμων. 15  
 τοῖς δὲ ὑπάτοις ἐδόκει βουλευσαμένοις μετὰ τοῦ  
 συνεδρίου μὴ περιορᾶν τὸν δῆμον ἐξουσίας τηλικαύ-  
 της κύριον γενόμενον. εὖρητο δ' αὐτοῖς τῆς καλύ-  
 σεως ἀφορμὴ δικαία καὶ νόμιμος, ἧ χρώμενοι πάντα  
 διαλύσειν ᾗοντο τὰ τῶν ἀντιδίκων βουλευμάτα. καὶ 20  
 μετὰ τοῦτο παρεκάλεσαν εἰς λόγους ἔλθειν τοὺς  
 1000 προεστηκότας τοῦ δήμου, συνόντων αὐτοῖς τῶν ἐπι-  
 τηδείων. καὶ ἔλεξε Μηνύκιος τοιάδε· Ἡμῖν, ὦ δῆμ-  
 αρχοι, δοκεῖ χρῆναι τὴν στάσιν ἐξελαύνειν ἐκ τῆς  
 πόλεως ἀπάσῃ δυνάμει, καὶ μὴ φιλονεικεῖν ἐναντία 25  
 τῷ δήμῳ περὶ μηθενὸς χρήματος· μάλιστα δ' ὅταν  
 ὀρώμεν ὑμᾶς ἀπὸ τῶν βιαίων ἐπὶ τὰ δίκαια καὶ τοὺς  
 λόγους ἤκοντας. ταύτης μέντοιγε τῆς γνώμης ἐπαι-  
 νοῦντες ὑμᾶς, τὴν βουλὴν οἰόμεθα δεῖν ἄρξαι προ-  
 βούλευμα ποιησαμένην, ὥσπερ ἐστὶν ἡμῖν πάτριον. 30  
 δύνασθε δὲ ἂν καὶ αὐτοὶ τοῦτο μαρτυρεῖν, ὅτι ἐξ οὗ  
 τήνδε τὴν πόλιν ἐκτίσαν ἡμῶν οἱ πρόγονοι τοῦτο τὸ

γέρας ἔχουσα ἢ βουλὴ διατετέλεκε, καὶ οὐθὲν πά-  
ποτε ὁ δῆμος ὁ τι μὴ προβουλευσειεν ἢ βουλὴ οὐτ'  
ἐπέκρινεν οὐτ' ἐπεψήφισεν, οὐχ ὅτι νῦν, ἀλλ' οὐδ'  
ἐπὶ τῶν βασιλέων [τὰ δ'], ἀλλ' ὅσα τῶ συνεδρίῳ  
5 δόξειε, ταῦτα οἱ βασιλεῖς εἰς τὸν δῆμον ἐκφέρουτες  
ἐπέκρουον. μὴ δὴ τοῦτο ἀφαιρείσθε τὸ δίκαιον ἡμῶν,  
μηδὲ ἀρχαῖον καλὸν ἔθος ἀφανίζετε· διδάξαντες δὲ  
τὸ συνέδριον ὅτι δικαίου δεῖσθε καὶ μετρίου πράγ-  
ματος, ὃ ἂν ἐκείνῳ δοκῇ, τοῦτου τὸν δῆμον ἀποδεί-  
10 ξατε κύριον.

XXXVIII. Ταῦτα τῶν ὑπάτων λεγόντων, ὁ μὲν  
Σικίννιος οὐκ ἠμείβετο τῶν λόγων οὐδὲ ἤξιόν τὴν  
βουλὴν οὐθενὸς ποιεῖν κυρίαν· οἱ δὲ τὴν αὐτὴν ἔχον-  
τες ἔξουσίαν ἐκείνῳ Λευκίου γνώμῃ χρησάμενοι συν-  
15 εχώρουν γενέσθαι τὸ προβούλευμα, δικαίαν τιὰ  
καὶ αὐτοὶ ποιησάμενοι πρόκλησιν, ἣν οὐχ οἶόν τε μὴ  
δέξασθαι τοῖς ὑπάτοις. ἤξιον γὰρ τοὺς βουλευτὰς  
λόγον ἀποδόντας αὐτοῖς τε τοῖς ὑπὲρ τοῦ δήμου  
πράττουσι, καὶ τοῖς συναγορεύειν ἢ τάναντία λέγειν  
20 βουλομένοις, ἐπειδὴν ἀκούσωσιν ἀπάντων τῶν βου-  
λομένων ὅ τι ἂν αὐτοῖς φανῇ δίκαιόν τε καὶ τῶ κοι-  
νῶ συμφέρον ἀποφῆνασθαι, φέρειν δὴ τὴν γνώμην  
ἅπαντας ὥσπερ ἐν δικαστηρίῳ τὸν νόμιμον ὄρκον  
ὁμόσαντας· ὅ τι δ' ἂν αἱ πλείους γνώμῃ καθαιρῶσι,  
25 τοῦτ' εἶναι κύριον. συγχωρησάντων δὲ τῶν ὑπάτων  
ὥσπερ ἤξιον οἱ δημάρχοι τὸ προβούλευμα γενέσθαι,  
τότε μὲν διελύθησαν· τῇ δὲ κατόπιν ἡμέρᾳ παρῆν  
μὲν εἰς τὸ συνέδριον ἢ βουλὴ· οἱ δὲ ὑπατοὶ δηλώ-  
σαντες αὐτῇ τὰ συγκείμενα τοὺς δημάρχους ἐκάλουν,  
30 καὶ περὶ ὧν ἦκουσιν ἐκέλευον λέγειν. παρελθὼν δὲ  
ὁ Λεύκιος ὁ συγχωρήσας τὸ προβούλευμα γενέσθαι  
τοιούτοις ἐχρήσατο λόγοις.

XXXX. Οὐ λανθάνει μὲν ἡμᾶς, ὦ βουλὴ, τὸ  
συμβησόμενον, ὅτι δι' αἰτίας ἐσόμεθα παρὰ τῶ δῆμῳ  
τῆς εἰς ὑμᾶς ἀφίξεως ἕνεκα, καὶ κατήγορον ἔξομεν τοῦ  
προβουλευματος ἄνδρα τὴν αὐτὴν ἔξουσίαν ἔχοντα  
ἡμῖν, ὃς οὐκ ᾤετο δεῖν ἄ δίδωσιν ἡμῖν ὁ νόμος 5  
ταῦτα παρ' ὑμῶν αἰτεῖν, οὐδ' ἐν εὐεργεσίας μέρει  
τὸ δίκαιον λαμβάνειν. κίνδυνον δὲ οὐ τὸν ἐλάχιστον  
ἀναρρήσιμον εἰς δίκην ὑπαχθέντες, ἀλλ' ὡς αὐτό-  
μολοι καὶ προδῶται καταγνωσθέντες τὰ ἔσχατα πει-  
10 σόμεθα. ἀλλὰ καίπερ ἐπιστάμενοι ταῦτα, ὅμως ὑπε-  
μείναμεν εἰς ὑμᾶς ἐλθεῖν τῶ τε δικαίῳ πεποιθότες  
καὶ τοῖς ὄρκοις ἐπιτρέψαντες, οἷς ὁμόσαντες οἴσετε  
τὰς γνώμας. φαῦλοι μὲν οὖν ἡμεῖς γε ὡς περὶ τηλι-  
κούτων καὶ τοσοῦτων λέγειν, καὶ πολὺ τοῦ προσή-  
κοντος ἐνδεέστεροι· τὰ δὲ πράγματα οὐ φαῦλα ὑπὲρ  
15 ὧν λέξομεν. τούτοις οὖν προσέχετε τὸν νοῦν, καὶ  
ἴαν ὑμῖν δόξῃ δίκαιά τε καὶ συμφέροντα τῶ κοινῶ,  
προσθήσω δ' ὅτι καὶ ἀναγκαῖα, συγχωρήσατε ἡμῖν  
αὐτῶν τυχεῖν ἐκόντες.

XXXI. Ἐρῶ δὲ περὶ τοῦ δικαίου πρώτον· ὑμεῖς 20  
δὴ, ὦ βουλὴ, ὅτε τοὺς βασιλεῖς ἀπηλάσατε συμμάχους  
ἔχοντες ἡμᾶς, καὶ τὴν πολιτείαν ἐν ἣ νῦν ἔσμεν κατ-  
εστήσατε, ἣν οὐ ψέγομεν, μειονεκτοῦντας ἐν ταῖς  
100 δίκαις τοὺς δημοτικούς ὁρῶντες ὅποτε συμβαίη τι διά-  
φορον αὐτοῖς πρὸς τοὺς πατρικίους· πολλὰ δ' ἦν 25  
ταῦτα· νόμον ἐκνρώσατε Ποπλίου Οὐαλερίου θατέ-  
ρον τῶν ὑπάτων γνώμῃ χρησάμενοι, ἐξεῖναι τοῖς κατ-  
ισχυμένοις ὑπὸ τῶν πατρικίων δημόταις προκαλεῖ-  
σθαι τὰς κρίσεις ἐπὶ τὸν δῆμον· καὶ παρ' οὐδὲν οὔ-  
τως ἔτερον ὡς τὸν νόμον τόνδε τὴν τε πόλιν ἐν ὁμο-  
30 νοίᾳ διεφυλάξατε καὶ τοὺς βασιλεῖς ἐπιόντας ἀπεώ-  
σασθε. τοῦτον δὴ προφερόμενοι τὸν νόμον, ὑπὲρ ὧν

ἅπαντες ἀδικεῖσθαι τε καὶ κατισχύεσθαι λέγομεν  
 ὑπὸ Γαίου Μαρκίου τουδί, καλοῦμεν αὐτὸν ἐπὶ τὸν  
 δῆμον καὶ τὰ δίκαια παραγγέλλομεν ἐκεῖ λέγειν. καὶ  
 προβουλευματος ἐνταῦθα οὐκ ἔδει. περὶ ὧν γὰρ οὐκ  
 5 εἰσὶ νόμοι, περὶ τούτων ὑμεῖς τοῦ προβουλευέσθαι  
 κύριοι καὶ ὁ δῆμος ἐπιψηφίσει· νόμου δὲ ὄντος ἀκι-  
 νήτου, καὶν μηδὲν ὑμεῖς προβουλευήσθε, τούτῳ δήπου  
 χρηστέον. οὐ γὰρ δὴ τοῦτο γ' ἂν εἴποι τις, ὅτι τῶν  
 μὲν ἰδιωτῶν ὄντων οἷς τὸ μειονεκτεῖν συμβαίνει περὶ 140  
 10 τὰς κρίσεις κυρία ἐῖναι δεῖ τὴν ἐπὶ τὸν δῆμον πρό-  
 κλησιν, ἡμῖν δὲ τοῖς δημάρχοις ἄκρον. νόμου μὲν δὴ  
 συγχωρήματι τῷδε ἰσχυρίζομενοι, καὶ διὰ τοῦτο πα-  
 ρακινδυνεύσαντες ὑφ' ὑμῖν γενέσθαι δικασταῖς ἤκο-  
 μεν. ἀγράφῳ δὲ καὶ ἀνομοθετήτῳ φύσεως δικαίῳ  
 15 τὸδε ἀξιοῦμεν, ὃ βουλή, μήτε πλεῖον ἔχειν ὑμῶν τὸν  
 δῆμον μήτε μείον, ἐν γοῦν τῷ δικαίῳ, [οἱ] πολλοὺς καὶ  
 μεγάλους συνδιευεργκόντες ὑμῖν πολέμους, καὶ περὶ  
 τὴν ἀπαλλαγὴν τῶν πολέμων πλείστην ἐπιδειξάμενοι  
 προθυμία, καὶ τοῦ μηδεὶ τὸ κελευόμενον ποιεῖν  
 20 τὴν πόλιν, ἀλλ' αὐτὴν ἑτέροις ἐπιτάττειν τὰ δίκαια,  
 οὐκ ἐλαχίστην μοῖραν παρασχόμενοι. οὕτω δ' ἂν ἡμῖν  
 τὸ μὴ μείον ἔχειν τῶν δικαίων ἀποδοίητε, ὃ πατέρες,  
 εἰ τοὺς ἐπιχειροῦντας εἰς τὰ σώματα ἡμῶν καὶ τὴν  
 ἐλευθερίαν παρανομεῖν καλύοιτε, τὸν ἐκ τῆς δίκης  
 25 ἐφιστάντες αὐτοῖς φόβον. ἀρχῆς μὲν δὴ καὶ προε- 140  
 δρίας καὶ τιμὰς τοῖς ἀρετῇ καὶ τύχῃ προὔχουσιν  
 ἡμῶν οἴομεθα δεῖν ἀπονέμειν· τὸ δὲ μηδὲν ἀδικεῖ-  
 σθαι καὶ τὸ δίκας ὧν ἂν τις πάθῃ προσηκούσας  
 λαμβάνειν ἴσα καὶ κοινὰ τοῖς ἅμα πολιτευομένοις  
 30 εἶναι δικαιοῦμεν. ὥσπερ οὖν τῶν λαμπρῶν καὶ  
 μεγάλων ἀφιστάμεθ' ὑμῖν, οὕτως τῶν ἴσων καὶ  
 κοινῶν οὐ μεθιέμεθα. ἱκανὰ ταῦτα εἰρήσθω περὶ

τοῦ δικαίου, πολλῶν ἐνότων καὶ ἄλλων λέγε-  
 σθαι.

XXXXII. Ὡς δὲ καὶ συνοίσει τῷ κοινῷ ταῦτα  
 ὡς ὁ δῆμος ἀξιοὶ γινόμενα, μικρὰ διεξιόντων ἀνέ-  
 χεσθε. φέρε γὰρ, εἰ τις ὑμᾶς ἔροιτο, τί μέγιστον οἴεσθε 5  
 εἶναι τῶν καταλαμβανόντων κακῶν τὰς πόλεις, καὶ  
 τοῦ ταχίστου τῶν ὀλέθρων αἰτίου, ἃ' οὐχὶ τὴν δι-  
 χοστασίαν εἴποιτ' ἂν; ἐμοὶ γοῦν δοκεῖ. τίς δ' ὑμῶν οὐ-  
 τως ἠλίθιός ἐστιν ἢ σκαιός ἢ πέρα τοῦ μετρίου μι-  
 σῶν τὴν ἰσηγορίαν, ὅς οὐκ οἶδεν, ὅτι δοθείσης ἐξου- 10  
 1403 σίας τῷ δήμῳ κρίνειν ἄς ἐξεστὶν αὐτῷ δίκας κατὰ  
 τὸν νόμον ἐν ὁμοιοῖα πολιτευσόμεθα; εἰ δὲ τάναντία  
 γνοιήτε καὶ ἀφέλοισθε ἡμῶν τὴν ἐλευθερίαν· ἐλευ-  
 θερίαν γὰρ ἀφαιρήσεσθε δίκην καὶ νόμον ἀφαιρού- 15  
 μενοι· στασιάζειν ἡμᾶς αὐθις ἀναγκάσετε καὶ πολε-  
 μείν ὑμῖν; ἐξ ἧς γὰρ ἂν ἐξελαθῆ πόλεως δίκη καὶ  
 νόμος, εἰς ταύτην στάσις εἰσπορεύεσθαι φιλεῖ καὶ  
 πόλεμος. καὶ ὅσοι μὲν οὐκ ἦλθον εἰς πείραν ἐμφυ-  
 λίων συμφορῶν, οὐδὲν θαυμαστόν, εἰ δι' ἀπειρίαν  
 τῶν κακῶν μήτε ἄχθονται τοῖς γεγενομένοις δεινοῖς, μήτε 20  
 καλύουσιν ἐκ πολλοῦ τὰ μέλλοντα. ὅσοι δ' ὥσπερ  
 ὑμεῖς εἰς τοὺς ἐσχάτους κινδύνους καταστάντες ἀγα-  
 πητῶς ἀπηλλάγησαν, ἦν ὁ καιρὸς ἀπήτει ποιησάμενοι  
 τῶν κακῶν λύσιν, τίς εὐπρεπῆς ἢ μετρία πρόφασις  
 ἀπολείπεται τούτοις, εἴαν ἔτι ταῖς αὐταῖς συμφέρον- 25  
 ται τύχαις; τίς δ' οὐκ ἂν ὑμῶν καταγνοίῃ πολλὴν  
 ἄνοιαν καὶ μαρίαν ἐνθυμούμενος, ὅτι μικροῦ μὲν ἐμ-  
 1404 προσθεν ὑπὲρ τοῦ μὴ στασιάζειν τοὺς δημότας πολλὰ  
 παρὰ γνώμην ὑπεμείνατε, ὧν ἔνια οὔτε κάλλιστα ἦν  
 ἴσως οὔτε λυσιτελέστατα· νῦν δ' οὐτ' εἰς χρήματα 30  
 βλάπτεσθαι μέλλοντες οὐτ' εἰς εὐδοξίαν οὐτ' εἰς ἄλλο  
 τῶν κοινῶν οὐδ' ὀτιοῦν, ἵνα χαρίζησθε τοῖς μισο-  
 4\*

δημοιότοις, τὸ δημοτικὸν αὐθις ἐκπολεμώσετε; οὐκ, ἔάν γε σωφρονῆτε. ἡδέως δ' ἂν ὑμᾶς ἐροίμην, τίνα γνώμην λαβόντες τότε τὴν κάθοδον ἡμῖν συνεχωρήσατε ἐφ' οἷς ἤξιοῦμεν, πότρεα λογιζομῶ προϊδόμενοι 5 τὸ κράτιστον, ἢ τῇ ἀνάγκῃ εἰξαντες; εἶπερ γὰρ ταῦτα ὑπελαμβάνετε ὠφελιμώτατα εἶναι τῇ πόλει, τί οὐ μένετε καὶ νῦν ἐν αὐτοῖς; εἰ δὲ ἀναγκαῖα καὶ οὐκ ἐνδεχόμενα ἄλλως γενέσθαι [εἴτε κατὰ λογισμὸν γέγονε ταῦτα ὀρθὸν καὶ τὸ συμφέρον σκοποῦντα τῆς 10 πόλεως] τί χαλεπαίνετε γενομένοις; τὴν ἀρχὴν γὰρ ἴσως ἔδει μὴ συγχωρησάει δύναμις ἢν ὑμῖν, συγχωρησάσθαι δὲ μηκέτι τοῖς πεπραγμένοις ἐγκαλεῖν.

XXXIII. Ἐμοὶ μὲν γὰρ δοκεῖτε, ᾧ βουλῇ, περὶ 1405 μὲν τὰς διαλύσεις γνώμῃ τῇ βελτίστη κεχορηγηθῆναι... οἷς 15 ἀνάγκῃ εἴκειν... τοῦ βέβαια τηρεῖν τὰ συγκείμενα. θεοὺς γὰρ ἡμῖν ἐγγυητὰς ἐδώκατε τῶν ὁμολογιῶν, πολλὰ καὶ δεινὰ ἐπαρασάμενοι τοῖς παραβᾶσι τὰς συνθήκας αὐτοῖς τε καὶ ἐγγύοις εἰς τὸν αἰεὶ χρόνον. ἀλλ' ὅτι μὲν δὴ τὰ τε δίκαια ἀξιοῦμεν καὶ τὰ συμ- 20 φέροντα, καὶ πολλὴ ἀνάγκη ποιεῖν ὑμᾶς ταῦτ' ἐστὶ μεμνημένους τῶν ὄρκων, ὡς πρὸς εἰδότης ἅπαντας οὐκ οἶδ' ὅ τι δεῖ πλείω λέγοντα ἐνοχλεῖν. ὡς δὲ οὐ μικρὰ τὰ διαφέροντα ἡμῖν ἐστὶ τόνδε μὴ ἐκλιπεῖν τὸν ἀγῶνα μήτε βία εἰξαντας μήτε ἀπάτῃ παραχθέν- 25 τας, ἀλλὰ κατὰ πολλὴν ἀνάγκην εἰς αὐτὸν ἀφίγμεθα, 1400 δεινὰ καὶ πέρα δεινῶν πεπονθότες ὑπὸ τοῦδε τοῦ ἀνδρός, μάθετε, ᾧ πατέρες, μᾶλλον δὲ ἀναμνήσθητε· οὐδὲν γὰρ ὅ τι οὐ πρὸς εἰδότης ὑμᾶς ἅπαντας ἐρῶ· καὶ ἅμα γνώμῃ χρησασθε οἰκεία πρὸς 30 τὰ λεγόμενα ἐνθυμηθέντες, εἰ τῶν δημοτῶν ἡμῶν ἐπεχειρήσῃ τις ἐν τῷ πλήθει τοιαῦτα λέγειν ἢ πράττειν καθ' ὑμῶν, οἷα Μάρμιος ἐτόλμησεν ἐνθάδε

εἰπεῖν, ποῖόν ποτ' ἂν ὑμῖν παρέστη πρὸς αὐτὸν πάθος.

XXXIII. Τὰς γὰρ ὑπὲρ τῆς ὁμοιότητος τῇ βου- 5 λῇ ἀκινήτους ὁμολογίας καὶ μόνον οὐκ ἀδαμαντινοῖς δεσμοῖς ἡσφαλισμένας, ἄς οὔτε ὑμῖν τοῖς ὁμομοκό- 5 σιν οὔτε τοῖς ἐξ ὑμῶν ἐσομένοις καταλύειν θέμις ἔως ἂν ἡ πόλις ἦδε οἰκῆται, πρῶτος ἐπεχειρήσει λύειν ἐξ ὑμῶν οὐτοσί Μάρμιος οὐπω τέταρτον ἔτος ἐξ οὗ γε- 10 ρνημένας, οὐ σιγῇ πράττων τὴν κατάλυσιν, οὐδ' εἰς ἀφανές που καταθῆς χωρίον, ἀλλ' ἀναφανδὸν ἐν 10 τῷδε τῷ τόπῳ πάντων παρόντων ὑμῶν γνώμην ἀπο- 1107 φηνάμενος, ὡς χρὴ τὴν δημορχικὸν ἐξουσίαν μηκέτι συγχωρεῖν ἡμῖν, ἀλλ' ἀνελεῖν, ἢ πρώτη καὶ μόνη τῆς ἐλευθερίας φυλακῇ πιστεύσαντες ἐποιησάμεθα 15 τὰς διαλύσεις. καὶ οὐκ ἐνταῦθα ἔστη τῆς ἀλαζουείας, 15 ἀλλ' ὕβριν τὴν ἐλευθερίαν τῶν πενήτων καὶ τυραννίδα τὴν ἰσηγορίαν ὀνομάζων, ἀφελέσθαι παρήνει ταύτην ὑμῖν. ὃ δὲ πάντων ἀνοσιώτατον ἦν τῶν τότε 20 ὑπὸ τούτου ἀξιωθέντων, ἀναμνήσθητε, ᾧ πατέρες, ὅτε ἀπέφαινε καλὸν εἶναι καιρὸν ἀπομνημονεῦσαι 20 πρὸς τὸ δημοτικὸν ἀπάσας τὰς ἐπὶ τοῖς προτέροις ἐγκλήμασιν ὀργάς, καὶ παρήνει νῦν, ἐν ᾧ τετρούχωταί 25 τε ὑπ' ἀχρηματίας καὶ πολὺν ἤδη χρόνον τῆς ἀναγκαίου σπανίζεται τροφῆς, [ᾧστε] ἅπαν αὐτὸ ἐπι- 25 τρῖψαι, διακατασχόντας ἐπὶ τῆς αὐτῆς ἀπορίας τῶν ἐπιτηδείων τὴν ἀγοράν. οὐ γὰρ ἀνθέξειν ἡμᾶς ἐπὶ πολὺν χρόνον ὀλίγα σιτία πολλοῦ ἀνομιμένους ἀργυρίου πένητας ἀνθρώπους, ἀλλὰ τοὺς μὲν οἰχήσεσθαι 1108 τὴν πόλιν ἐκλείποντας, ὅσοι δ' ἂν ὑπομείνωσι τῷ 30 κακοδαιμονεστάτῳ διαφθαρήσεσθαι τῶν μόρων, λιμῶ. οὕτως δὲ ἄρα παρεφρόνει καὶ θεοβλαβῆς ἦν ταῦτα πείθων ὑμᾶς, ᾧστε οὐδ' ἐκεῖνο ἠδυνήθη κα-

ταμαθεῖν, χωρὶς τῶν ἄλλων ὧν προσετίβητο τὰς τῆς  
 βουλῆς σπουδὰς λύειν ἄξιων, ὅτι πένητες ἄνθρωποι  
 τῆς ἀναγκαίου τροφῆς ἀποκλειόμενοι τοσοῦτοι πλῆθος  
 ὄντες ὁμοίως χωρεῖν ἀναγκασθήσονται τοῖς  
 5 αἰτίοις τῆς συμφορᾶς οὐδὲν ἔτι φίλιον ἠγρούμενοι.  
 ὥστ' εἰ μανέντες ὑμεῖς ἐπεκυρώσατε τὰς γνώμας  
 αὐτοῦ, μῆθ' ἂν γενέσθαι τὸ διὰ μέσου, ἀλλ' ἦτοι  
 τὸ δημοτικὸν ἀπολωλέναι πλῆθος ἅπαν, ἢ οὐδὲ τὸ  
 τῶν πατρικίων περιλειφθῆαι γένος. οὐ γὰρ ἂν οὐ-  
 10 τως ἀνδραποδωδῶς παρέσχομεν ἑαυτούς, οἱ μὲν  
 ἐκπεσεῖν, οἱ δ' ἀποθανεῖν, ἀλλὰ θεοὺς μάρτυρας ὧν  
 ἐπάσχομεν καὶ δαίμονας ἐπικαλεσάμενοι, πολλῶν ἂν 1409  
 ἐξεπληρώσαμεν, εὖ ἴστε, τὰς ἀγορὰς καὶ τοὺς στενω-  
 πούς νεκρῶν, καὶ μέγαν αἵματος κρατήρα πολιτικοῦ  
 15 στήσαντες οὕτως ἂν ἐδεξάμεθα τὴν ὀφειλομένην μοι-  
 ραν. τοιούτων ἡμῖν δυσσεβημάτων εἰσηγητής, ὦ πα-  
 τέρες, ἐγένετο, καὶ τοιαῦτα δημηγορεῖν ᾤετο δεῖν.

XXXXV. Καὶ οὐχὶ λέγειν μὲν ὁ Μάρκιος ἐξ  
 ὧν διαστήσει τὴν πόλιν ἐπεχείρησε, πράττειν δὲ  
 20 οὐχ οἷα ἔλεγεν ἐπεβάλετο, ἀλλὰ καὶ στίφος ἀνθρώπων  
 εἰς ἅπασαν ὑπηρεσίαν ἐτοίμων παρ' ἑαυτῷ ἔχων,  
 καλούμενος ἐπὶ τὴν ἀρχὴν ἡμῶν οὐκ ἀπαντᾶ, καὶ  
 τοῖς ὑπηρεταῖς τοῖς ἡμετέροις, ὁπότε κελευσθέντες  
 ἄγειν αὐτὸν ἐπιβάλοιντο, πληγὰς ἐντρίβεται, καὶ  
 25 οὐδὲ τῶν ἡμετέρων σώμάτων τὸ χεῖρε τελευτῶν  
 ἀπέχεται. ὥστε περίεστιν ἡμῖν, τὸ γ' ἐπὶ τοῦτου εἶ-  
 ναι μέρος, ὄνομα εὐπρεπὲς ἀσύλου ἀρχῆς ἐπὶ χλευα- 1410  
 σμῶ κείμενον ἔχειν, ἔργον δὲ τῶν ἀποδοδομένων τῇ  
 ἀρχῇ μὴδ' ὅτιοῦν πράττειν. πῶς δ' ἂν ἐτέροις ἀδι-  
 30 κείσθαι λέγουσι βοηθήσαιμεν, οἷς γε μὴδ' αὐτοῖς  
 ὑπάρχει τὸ ἀσφαλές; ταύτας μέντοι τὰς ὕβρεις οἱ  
 πένητες ὑβρίζομενοι πρὸς ἑνὸς ἀνδρὸς οὕτω τυραν-

νοῦντος, ἀλλ' ἔτι μέλλοντος, καὶ τὰ μὲν ἤδη πεπον-  
 θότες, ὦ βουλή, δεινά, τὰ δ' εἰ μὴ τὸ πλεῖον ὑμῶν  
 μέρος ἐμποδῶν ἐγένετο παρὰ σχεδὸν ἐλθόντες πα-  
 θεῖν, ἄρ' οὐκ εἰκότως ἀγανακτοῦμεν καὶ βοηθείας  
 τινὸς οἰόμεθα δεῖν οὐκ ἄνευ τῆς ὑμετέρας συναγα- 5  
 νακτῆσεως τυχεῖν, ἐπὶ δίκην αὐτὸν ἴσῃν καὶ νόμιμον,  
 ὦ βουλή, προκαλούμενοι, περὶ ἣν ἅπαντα ἡ πλῆθὺς  
 μερισθεῖσα κατὰ φυλὰς λόγου δοθέντος τοῖς δεομέ-  
 νοις ἔνορκον ἐποίσει τὴν ψῆφον; ἴθι ἐκεῖ, ὦ Μάρ-  
 10 κιε, καὶ ταῦτα, ἃ μέλλεις λέγειν ἐνθάδε, πρὸς ἅπαν- 10  
 τας τοὺς πολίτας ἀθρόους ἀπολογοῦ, εἴτε ὡς ἀπὸ τοῦ  
 βελτίστου τὰ κράτιστα συνεβούλευες τούτοις [εἴτε]  
 καὶ συνήνεγκεν ἂν τῇ πόλει ταῦτα γενόμενα, εἴτε  
 ὡς οὐκ ἔστι δίκαιον λόγων εὐθύνας ὑπέχειν τοὺς  
 ἀποφαινομένους ἐνθάδε τὰς γνώμας, εἴτε ὡς οὐκ ἐκ 15  
 προνοίας οὐδὲ ἐπιβουλῆς, ἀλλ' ὀργῇ ἐπιτρέψας τὰ  
 μισθὰ ταῦτα παραινεῖν προήχθης, εἴθ' ὅτιδῆποτε  
 ἄλλο ἀπολόγημα ἔχεις. καταβίβασον ἀπὸ τῶν ὑπερη-  
 φάνων καὶ τυραννικῶν ἀνχημάτων ἐκείνων σεαυτὸν  
 ἐπὶ τὸ δημοτικώτερον, ὦ πονηρέ, καὶ ποιήσον ἤδη 20  
 ποτὲ τοῖς ἄλλοις ἀνθρώποις ὅμοιον. ἡμαρτηκός  
 λάβε καὶ παραιτουμένου σχῆμα ταπεινόν. ἐλεεινόν,  
 οἷον ἀπαιτούσιν αἱ συμφοραί. μὴ βιαζόμενος τοὺς  
 κακῶς πεπονθότας ἀλλὰ ὑπερχόμενος ἀξίου σώζεσθαι.  
 1111 γενέσθω σοι παράδειγμα τῆς ἐπιεικειᾶς, ἢ χρώμενος 25  
 ἂν εἴης πρὸς τοὺς ἅμα πολιτευομένους ἀνεπίληπτος,  
 τὰ τῶν ἀγαθῶν τούτων ἔργα, οἱ τοσοῦτοι μὲν ὄντες  
 τὸ πλῆθος ὅσους αὐτὸς ὄρας, τοσαύτας δὲ ἀρετὰς ἀπο-  
 δεδειγμένοι καὶ πολεμικὰς καὶ πολιτικὰς, ἃς οὐδ' ἐν  
 πολλῶ πάνυ χρόνῳ διελθεῖν ἴσδιον, οὐδὲν ὁμῶν 30  
 οὐδ' ὑπερήφανον ἐξήνεγκαν τέλος καθ' ἡμῶν τῶν  
 φανύλων καὶ ταπεινῶν οἱ σεμνοὶ καὶ μεγάλοι, ἀλλὰ

καὶ λόγων ἤρξαν συμβατηρίων αὐτοὶ πρότεροι προ-  
τείνοντες διαλλαγάς, ὅτε διείλεν ἡμᾶς ἀπ' ἀλλήλων ἡ  
τύχη, καὶ τὰς συμβάσεις οὐχ ὡς ἑαυτοῖς ὑπελάμβανον  
ἄριστα ἔξειν, ἀλλ' ὡς ἡμεῖς ἠξιοῦμεν συνεχώρησαν γε-  
5 νέσθαι, καὶ τὰ τελευταῖα ταυτὶ τὰ περὶ τὴν σιτοδοσίαν  
ἐναγῆτος τοῦ χρόνου προσκρούματα, ἐφ' οἷς δι' αἰτίας  
εἴχομεν αὐτούς, περὶ πολλοῦ ἐποίησαντο ἀπολύσασθαι.

XXXXVI. Ἐὼ τάλλα, ἀλλ' ὑπὲρ αὐτοῦ σοῦ καὶ  
τῆς σῆς θεοβλαβείας τίνας οὐκ ἐποίησαντο δεήσεις  
10 ἀπάντων κοινῇ τε καὶ καθ' ἕναστος τῶν δημοτικῶν,  
παραιτούμενοί σε τῆς τιμωρίας; ἔπειτα τοῖς μὲν 1418  
ὑπάτοις καὶ τῇ βουλῇ τσαυτήν πόνον ἐπιτροπευούσῃ  
καλῶς εἶχεν, ὡς Μάρκιε, δικαστὴν τὸν δῆμον ὑπὲρ  
ᾧ ἐνεκαλοῦντο ὑπομένειν, σοὶ δὲ ἄρα οὐχὶ καλῶς  
15 ἔχει; καὶ δεῖσθαι μὲν τῶν δημοτῶν ὑπὲρ ἀφέσεως  
τῆς σῆς οὐτοί γε πάντες οὐδὲν αἰσχρὸν εἶναι νομί-  
ζουσι, σὺ δὲ δι' αἰσχύνῃς λαμβάνεις τὸ αὐτὸ τοῦτο;  
καὶ οὐκ ἀπόχρη σοὶ ταῦτα, ὡς γενναῖε, ἀλλ' ὥσπερ τι  
καλὸν ἐξεργασμένος ὑψαυχευῶν καὶ μεγαληγορῶν  
20 περιέρχῃ καὶ μηδὲν ὑφείναι τοῦ φρονήματος ἔπομα-  
χόμενος· ἐὼ γάρ, ὅτι καὶ λοιδορούμενος τῷ δῆμῳ  
καὶ προσεγκαλῶν καὶ ἀπειλῶν. ἔπειτα οὐ νεμεσᾶτε  
αὐτῷ τῆς ὑπερηφανίας, ὡς πατέρες, εἰ τηλικούτων  
αὐτὸν ἀξιοὶ μόνος, ἡλικῶν οὐδ' ἅπαντες ὑμεῖς ἑαυ-  
25 τούς; ὃν ἐχορῆν, εἰ καὶ πάντες ὑμεῖς ἀνεδέχεσθε τὸν  
ὑπὲρ αὐτοῦ πόλεμον ψηφίσασθαι, τὸ μὲν εὖνον καὶ  
πρόθυμον ὑμῶν ἀγαπᾶν, μὴ δέχεσθαι δὲ χάριν ἰδίαν  
ἐπὶ κοινῇ βλάβῃ, ἀλλ' ὑπομένειν ἀπολογούμενον καὶ 1414  
δίκην ὑπέχοντα εἰ δεῖο καὶ πάντα πάσχοντα. ταῦτα  
30 γὰρ ἦν ἔργα ἀγαθοῦ πολίτου καὶ τὸ καλὸν ἔργοις  
ἀσχοῦντος οὐ λόγοις. ἃ δὲ νῦν οὗτος βιάζεται τίνας  
ἐστὶ σημεῖα βίου; ποίων μηνύματα προαιρέσεων,

ὄρκους παραβαίνειν, δεξιὰς παρασπονδεῖν, ὁμολογίας  
ἀναιρεῖν, δῆμῳ πολεμεῖν, εἰς ἀρχόντων σώματα ὑβρί-  
ζειν, καὶ μηδ' ἐφ' ἐνὶ τούτων τὸ σῶμα ὑπεύθυνον  
ποιεῖν, ἀλλ' ἄκριτον ἀναπολόγητον μηδενὸς δεηθέντα  
μηθέντα φοβηθέντα μηθενὶ τῶν τοσούτων πολιτῶν 5  
ἴσον γενόμενον ἀδεῶς περινοστεῖν; ἄρ' οὐ τυραννι-  
κοῦ τρόπου σημεῖα ταυτ' ἐστίν; ἔμοιγε δοκεῖ. καὶ  
τοῦτον ὅμως εἰσὶ τινες οἱ παραψύχοντες καὶ παρα-  
1415 κροτοῦντες ἐξ ὑμῶν αὐτῶν, οἷς ἐντέτηκε τὸ πρὸς τοὺς  
δημοτικούς μῖσος ἀδιάλλακτον, καὶ οὐ δύνανται συν- 10  
ιδεῖν, ὅτι οὐθὲν μᾶλλον κατὰ τοῦ ταπεινοτέρου μέ-  
ρους τῶν ἐν τῇ πόλει φύεται τοῦτ' ἐκ τὸ κακὸν καὶ  
κατὰ τοῦ σεμνοτέρου· ἀλλ' οἴονται τοῦ διαφόρου φύ-  
σει καταδουλωθέντος καὶ τὸ καθ' ἑαυτοὺς ἔξειν  
ἀσφαλῶς. οὐχ οὕτως ἔχει τὰληθές, ὡς γνώμης ἀμαρ- 15  
τάνοντες τῆς ἀρίστης· διδάσκαλον δὲ τὴν πείραν ἦν  
ὁ Μάρκιος παρέχεται καὶ τὸν χρόνον λαβόντες,  
ὀθνεῖοις τε ἅμα καὶ οἰκείοις σωφρονισθέντες παρα-  
δείγμασι γινώητ' ἂν, ὅτι μοσχευομένη κατὰ τοῦ δή-  
μου τυραννὶς καθ' ὅλης τῆς πόλεως μοσχεύεται, καὶ 20  
νῦν μὲν ἀφ' ἡμῶν ἄρχεται, κρατήσασα δὲ οὐδ' ὑμῶν  
φείσεται.

XXXXVII. Τοιαῦτα διεξιόντος τοῦ Δεκίου, καὶ  
τῶν ἄλλων δημάρχων ἃ παραλιπεῖν αὐτοῖς ἐκείνος  
ἰδοκεῖ συναγορευσάντων, ἐπειδὴ γνώμας ἔδει τοὺς 25  
συνέδρους ἀποφαίνεσθαι, πρῶτοι μὲν οἱ πρεσβύτα-  
τοι τῶν ὑπατικῶν καλούμενοι κατὰ τὸν εἰωθότα  
1416 κόσμον ὑπὸ τῶν ὑπάτων ἀνίσταντο· ἔπειτα οἱ τού-  
των ὑποδέεστεροι κατ' ἄμφω ταῦτα· τελευταῖοι δὲ  
οἱ νεώτατοι λόγον μὲν οὐθέντα λέγοντες· ἔτι γὰρ ἦν 30  
δι' αἰσχύνῃς τότε Ῥωμαίοις τοῦτο, καὶ νέος οὐδεὶς  
ἤξιον ἑαυτὸν σοφώτερον εἶναι πρεσβύτου· ἐπικυ-

ροῦντες δὲ τὰς κειμένας ὑπὸ τῶν ὑπατικῶν γνώμας. ἅπασιν δὲ προσετέτατο παριουσι καθάπερ ἐν δικαστηρίῳ μεθ' ὄρκου τὴν ψῆφον ἐπιφέρειν. Ἄππιος μὲν οὖν Κλαύδιος, ὑπὲρ οὗ καὶ πρότερον ἔφη, ὅτι μισοδημότητος ἦν τῶν πατρικίων καὶ οὐδέποτε ταῖς πρὸς τὸ δημοτικὸν ἠρέσκετο διαλλαγαῖς, οὐκ εἶα γενέσθαι τὸ προβούλευμα τοιούτοις λόγοις χρωμένος.

XXXXVIII. Ἐβουλόμην ἂν ἔρωγε καὶ τοῖς θεοῖς ἠυξάμην πολλάκις, ἐμαντὸν μὲν ἁμαρτεῖν γνώμης ἣν εἶχον ὑπὲρ τῶν πρὸς τὸν δῆμον διαλύσεων, ὡς οὔτε καλὴν καὶ δικαίαν οὔτε συμφέρουσαν ὑμῖν ὑπελάμβανον ἔσεσθαι τὴν τῶν φυγάδων κάθοδον· καὶ διὰ παντός, <sup>1417</sup> ὅσακις [ἂν] περὶ τούτου προετέθη σκοπεῖν, πρῶτός τε τῶν ἄλλων καὶ τελευτῶν μόνος, ἐπειδὴ οἱ λοιποὶ ἀπέστησαν, ἠγναντιούμην ὑμᾶς δ', ὡ βουλή, τοὺς ἐπὶ τὰ κρείττω τὴν ἐλπίδα λαμβάνοντας καὶ πάντα τῷ δήμῳ δίκαιά τε καὶ ἄδικα προθύμως χαριζομένους ἄμεινον ἐμοῦ δόξαι φρονεῖν. ἐπειδὴ δ' οὐχ ὡς ἐβουλόμην τε καὶ τοῖς θεοῖς ἠυχόμην τὰ πράγματα ὑμῖν κερῶρηκεν, ἀλλ' ὡς φόμην, καὶ περιστήκασιν αἱ χάριτες ὑμῖν εἰς φθόνοὺς καὶ μίση, τὸ μὲν ἐπιτιμᾶν τοῖς ἡμαρτημένοις ὑμῖν καὶ λυπεῖν ὑμᾶς διὰ κενῆς, ὃ ῥᾶστόν ἐστι καὶ πᾶσιν ὡς τὰ πολλὰ ποιεῖν σύνηθες, οὐκ ἐν καιρῷ <sup>25</sup> νυνὶ γενησόμενον ὄρω ἑάσω· ἐξ ὧν δὲ τὰ τε παρελθόντα ἐπανορθωσόμεθα, ὅσα μὴ παντάπασιν ἀνιάτως ἔχει, καὶ περὶ τῶν παρόντων ἄμεινον φρονήσομεν, ταῦτα πειράσομαι λέγειν. καίτοι με οὐ λέληθεν, ὅτι <sup>1418</sup> μαίνεσθαι καὶ θανατᾶν δόξω τισὶν ὑμῶν γνώμην περὶ τούτων ἐλευθέραν ἀποφαινόμενος, ἐνθυμουμένοις ἡλίκοις ἔχει κινδύνους ὁ μετὰ παρορησίας λόγος, καὶ τὰς Μαρκίου συμφορὰς, ὅς οὐ δι' ἕτερόν τι νυνὶ

τὸν ὑπὲρ τῆς ψυχῆς ἀγῶνα τρέχει, λογιζομένοις. ἀλλ' οὐκ οἴομαι δεῖν τῆς ἰδίας ἀσφαλείας πλείω ποιείσθαι πρόνοιαν ἢ τῆς κοινῆς ὠφελείας. δέδοται γὰρ ἤδη τοῖς ὑπὲρ ὑμῶν κινδύνοις τὸ σῶμα τοῦμόν, ὡ βουλή, καὶ καθωσώσεται τοῖς ὑπὲρ τῆς πόλεως ἀγῶσιν, ὥστε <sup>5</sup> ὅτι ἂν τῷ δαίμονι δοκῇ, μετὰ πάντων τε καὶ σὺν ὀλίγοις, εἰ δὲ ἀνάγκη καὶ μόνος εὐγενῶς πείσομαι· ἔως δ' ἂν ἔχω τὴν ψυχὴν οὐδεὶς με ἀφῆξει φόβος μὴ οὐχ ἂ φρονῶ λέγειν.

XXXXVIII. Πρῶτον μὲν οὖν τοῦθ' ὑμᾶς ἤδη <sup>10</sup> ποτὲ ἀξίῳ βεβαίως μαθεῖν, ὅτι δυσμενῆ καὶ πολέμιον ἔχετε τῇ καθεστῶσῃ πολιτείᾳ τὸν δημοτικὸν ὄχλον, καὶ πάνθ' ὅσα μαλακισθέντες αὐτῷ συνεχωρήσατε μάτην τε ὑμῖν ἀνήλωται καὶ καταφρονήσεως αἴτια γέγονεν, ὡς διὰ τὴν ἀνάγκην συγχωρηθέντα ὑφ' <sup>15</sup> ὑμῶν, ἀλλ' οὐκ ἀπ' εὐνοίας οὐδὲ κατὰ κρίσιν. σκοπεῖτε γὰρ οὕτως. ὅτε ἀπέστη λαβῶν τὰ ὄπλα ὁ δῆμος ἀφ' ὑμῶν καὶ πολέμιος ὑμῖν ἐτόλμησεν ἐκ τοῦ φαιεροῦ γενέσθαι, ἀδικηθεῖς μὲν οὐδέν, τὸ μὴ δύνασθαι δὲ τὰ χρεῖα τοῖς συμβεβληκόσι διαλυῖν σκη- <sup>20</sup> πτόμενος, καὶ εἰ ψηφίσαισθε ὑμεῖς χρεῶν τε ἀποκοπᾶς καὶ ἄδειαν ὧν ἡμαρτε κατὰ τὴν ἀπόστασιν οὐθενὸς ἔτι δεήσεσθαι ἔφη, ἔγνωσαν οἱ πλείους <sup>1419</sup> ὑμῶν, οὐ γὰρ δὴ πάντες, παρακρουσθέντες ὑπὸ τῶν συμβούλων ὡς μὴ ποτε ὄφελον ἀκυρῶσαι τοὺς ἐπὶ <sup>25</sup> τῇ πίστει τεθέντας νόμους καὶ μηθενὸς τῶν τότε γεννημένων ἀδικημάτων μνησικακεῖν. οὐκ ἠγάπησε ταύτης τυχῶν τῆς χάριτος, ἣς μόνης μεμνημένος ἔφη πεποιῆσθαι τὴν ἀπόστασιν, ἀλλ' εὐθύς ἕτεραν ἔτι ταύτης ἦτι μείζω καὶ παρανομοτέραν δωρεάν, ἐξου- <sup>30</sup> σίαν αὐτῷ δοθῆναι δημάρχους ἐξ αὐτοῦ καθ' ἕκαστον ἵτος ἀποδεικνύναι, πρόφασιν μὲν ποιούμενος τὴν



ἡμετέραν ἰσχύν, ἵνα δὴ τοῖς ἀδικουμένοις καὶ κατι-  
 σχυομένοις τῶν πενήτων ἐπικουρία τις ὑπάρχη καὶ  
 καταφυγή· ὡς δὲ τάληθες εἶχεν, ἐπιβουλευῶν τῷ  
 κόσμῳ τῆς πολιτείας καὶ εἰς δημοκρατίαν περιστῆσαι 11  
 5 τὰ πράγματα βουλόμενος. καὶ τοῦτ' ἐπεισαν ἡμᾶς  
 οἱ σύμβουλοι τὸ ἀρχεῖον εἶσαι παρελθεῖν εἰς τὴν  
 πόλιν ἐπὶ τῷ κοινῷ παραγινόμενον κακῷ, καὶ μά-  
 λιστα ἐπὶ τῷ κατὰ τῆς βουλῆς φθόνῳ, πολλὰ εἴπερ  
 ἄρα μέμνησθε κενραγός τε ἐμοῦ καὶ μαρτυρουμένου  
 10 θεοῦς τε καὶ ἀνθρώπων, ὅτι πόλεμον ἐμφύλιον  
 ἄπανστον εἰς τὴν πόλιν εἰσάξετε, καὶ πάνθ' ὅσα ὑμῖν  
 ἐμβέβηκε προλέγοντος.

L. Τί οὖν ἐποίησεν ὁ χρηστός ἡμῖν δῆμος,  
 ἐπειδὴ καὶ ταύτην αὐτῷ συνεχωρήσατε τὴν ἀρχήν;  
 15 οὐκ ἐταμειύσατο τὴν τοσαύτην χάριν οὐδ' ἔλαβεν  
 αἰσχυνομένως αὐτὴν καὶ σωφρόνως, ἀλλ' ὡς δεδοί-  
 κότε τὴν ἰσχύν αὐτοῦ καὶ κατεπτηχόσιν ἡμῖν· ἐπειτα 14  
 ἱερὰν καὶ ἄσυλον ἔφη δεῖν ἀποδειχθῆναι τὴν ἀρ-  
 χὴν ὅρκους ἐμπεδωθεῖσαν, κρείττω τιμὴν αἰτούμενος  
 20 ἢς δεδώκατε ὑμεῖς τοῖς ὑπάτοις. ὑπεμείνατε καὶ  
 τοῦτο, καὶ σιάντες ἐπὶ τῶν τομίων κατ' ἐξωλείας  
 ἑαυτῶν τε καὶ τῶν ἀπογόνων ἀμόσατε. τί οὖν  
 ἐποίησε καὶ τούτου τυχών; ἀντὶ τοῦ χάριτας ὑμῖν  
 εἰδέναι καὶ σώζειν τὸν πατριὸν κόσμον τῆς πολιτείας,  
 25 ἀρξάμενος ἀπὸ τούτων τῶν πλεονεξιῶν καὶ ταύταις  
 ταῖς παρανομίαις ἀφορμαῖς τῶν ὕστερον χρησάμενος  
 νόμους τε ἀπροβουλεύτους εἰσφέρει, καὶ τούτους  
 ἐπιψηφίζει δίχα τῆς ὑμετέρας γνώμης, καὶ οἷς ἂν  
 ὑμεῖς ἐκφέρητε δόγμασιν οὐ προσέχει τὸν νοῦν, καὶ  
 30 τῶν ὑπάτων ὡς οὐκ ὀρθῶς τὴν πόλιν ἐπιτροπεύον-  
 των κατηγορεῖ, καὶ τοῖς ἐκβαίνουσι παρὰ τὰς ὑμε- 142  
 τέρας συνθήκας· πολλὰ δ' ἐστὶν ἃν οὐ δύναται

στοχάσασθαι λογισμὸς ἀνθρώπινος· οὐ τὴν τύχην  
 ὥσπερ ἐχρῆν, ἀλλὰ τὴν ὑμετέραν ἐπιγράφει διάνοιαν,  
 ἐπιβουλεύεσθαι τε ὑφ' ὑμῶν σηηπτόμενος καὶ δε-  
 διέναι, μὴ τὴν ἐλευθερίαν ἀφέλησθε ἢ τῆς πατρίδος  
 ἐκβάλητε, αὐτὸς ἐφ' ὑμῖν ταῦτα μηχανώμενος διατε- 5  
 λεῖ, καὶ τὸ μὴ παθεῖν ὃ δεδοικέναι φησί, οὐκ ἄλλω  
 τινὶ φυλαττόμενος δῆλός ἐστιν, ἢ τῷ δράσαι φθά-  
 σας. ἐδήλωσε δὲ τοῦτο πολλάκις μὲν καὶ πρότερον  
 καὶ ἐπὶ πολλῶν ἃν ἐξείργομαι μεμνησθαι κατὰ τὸ  
 παρόν· μάλιστα δὲ Μάρκιον τουτουὶ τὸν φιλόπολιν 10  
 ἄνδρα, οὔτε προγόνων ἀφανῶν ὄντα οὔτ' αὐτὸν  
 ἀρετῇ λειπόμενον οὐθενὸς ἡμῶν, αἰτιασάμενος ἐπι-  
 βουλεύειν αὐτῷ καὶ πονηρὰς ἐνθάδε γνώμας λέγειν,  
 11 ἀκριτον ἐπεχείρησεν ἀποκτεῖναι. καὶ εἰ μὴ δεινὸν  
 ἠγγεσάμενοι τὸ πρᾶγμα οἱ τε ὑπάτοι καὶ ὑμῶν οἱ τὰ 15  
 κρείττω φρονοῦντες συνεστράφητε, καὶ τὴν παρανο-  
 μίαν ἐπέσχετε αὐτῶν, ἐν μιᾷ τῇ τότε ἡμέρᾳ πάντα  
 ἂν ἀφηρέθητε, ὅσα [οἱ] πατέρες τε ὑμῖν σὺν πολλοῖς  
 κτησάμενοι πόνοις κατέλιπον, καὶ αὐτοὶ ὑμεῖς οὐκ  
 ἐλάττους ἀγῶνας ἐκείνων ὑποστάντες ἔχετε, τὸ 20  
 ἀξίωμα τὴν ἡγεμονίαν τὴν ἐλευθερίαν· οἱ δὲ γεν-  
 ναιότεροι καὶ οὐκ ἀγαπήσαντες αὐτὸ τὸ ζῆν, εἰ μὴ  
 μετὰ τούτων ἐμέλλετε τῶν ἀγαθῶν βιώσεσθαι, τὰς  
 ψυχὰς ἂν πρότερον ἢ ταῦτα ἀφηρέθητε, οἱ μὲν εὐ-  
 θυῖς οἱ δ' οὐκ εἰς μακρὰν. τί γὰρ ἂν τὸ καλῦσον 25  
 ἦν, οὕτως αἰσχυρῶς καὶ κακῶς Μαρκίου τουτουὶ ἀναρ-  
 πασθέντος ὥσπερ ἐν ἐρημίᾳ, καὶ μετὰ τούτου ἀπο-  
 λωλέναι διασπασθέντα ὑπὸ τῶν ἐχθρῶν, καὶ πάντας  
 ὅσοι πάποτε ἠναντιώθησαν καὶ τὸ λοιπὸν ἐμελλον  
 ἐναντιώσεσθαι ταῖς παρανόμοις ἐπιθυμίαις τοῦ δή- 30  
 μου; οὐ γὰρ ἂν ἠρκέσθη τοὺς δύο μόνους ἡμᾶς ἐκ-  
 ποδῶν ποιησάμενος, οὐδὲ μέχρι δεῦρ' ἐλθῶν ἀπέστη

τῆς παρανομίας, εἰ δεῖ τὰ μέλλοντα τεμαίρεσθαι 14  
τοῖς γερονόσιν, ἀλλ' ἀφ' ἡμῶν ἀρξάμενος ἅπαν τὸ  
ἀντίπαλον καὶ μὴ εἶκον ὥσπερ χειμάρρους πολὺς  
ἐμπροσθὺν παρέσυρεν ἂν καὶ κατήνεγκεν, οὐτ' εὐγε-  
5 νείας φειδόμενος οὐτ' ἀρετῆς οὐθ' ἡλικίας.

LI. Ταύτας ὑμῖν ὁ δῆμος, ὃ βουλὴ, τὰς καλὰς  
ἀμοιβὰς ἀνθ' ὧν ἔπαθε πολλῶν ὄντων καὶ μεγάλων  
τὰς μὲν ἀπέδωκεν ἤδη, τὰς δ' ἀποδώσειν ἐμελλεν,  
εἰ μὴ τὸ κωλύσον παρ' ὑμᾶς ἐγένετο. ἄγε δὴ νῦν  
10 κἀκεῖνα ἐνθυμήθητε πάλιν, ἃ μετὰ τοῦτο τὸ γενναῖον  
καὶ σώφρον ὑμῶν ἔργον ἔδρασαν, ἵνα γνῶτε ὄντινα  
χρῆ τρόπον αὐτῷ προσφέρεσθαι. ἐκεῖνος τοίνυν ὡς  
ἔμαθεν ὑμᾶς οὐκέτι φέροντας αὐτοῦ τὴν ὕβριν, ἀλλ'  
ὄμ' ἄγε χωρεῖν παρεσκευασμένους, ἔπηξε καὶ μικρὸν  
15 ἀναλαβὼν ἑαυτὸν ὥσπερ ἐκ μέθης καὶ ματίας ἀπὸ  
μὲν τοῦ βιάζεσθαι κατέβη, ἐπὶ τὸ δικάζεσθαι δ' ἐτίρα-  
πετο· καὶ προειπὼν ἡμέραν ῥητήν, εἰς αὐτὴν ἐκάλει 1420  
τὸν ἄνδρα ὡς δίκην ὑφέξοντα, ἧς αὐτὸς ἐμελλεν  
ἔσεσθαι κατήγορός τε καὶ μάρτυς καὶ δικαστὴς καὶ  
20 τοῦ μερέθους τῆς τιμωρίας κύριος. ἐπειδὴ δὲ καὶ  
πρὸς τοῦτο ἐνέστητε νομίσαντες οὐκ ἐπὶ δίκην ἀλλ'  
ἐπὶ τιμωρίαν καλεῖσθαι τὸν ἄνδρα, ὁρῶν ὡς οὐδενὸς  
αὐτοκράτωρ ἐστὶ πράγματος, ἀλλ' ὅσ' ἂν ὑμεῖς προ-  
βουλεύσητε, ταῦτα ἐπιψηφίσει κύριος, τῆς τε ἀνθα-  
25 δείας, ἧς πολὺς ἔπνει τότε, ὑφείται νυνί, καὶ δεη-  
σόμενος ὑμῶν ἡκεῖ συγχωρῆσαι καὶ ταύτην αὐτῷ  
τὴν χάριν. ἐνθυμούμενοι δὴ ταῦτα αἰσθεσθε ἤδη  
ποτὲ καὶ μάθετε, ὅτι πάνθ' ὅσα μὲν εὐηθέστερα  
βουλευσάμενοι μᾶλλον ἢ φρονιμώτερα ἐχαρίσασθε  
30 αὐτῷ συμφορὰς ὑμῖν ἐνήνοχε καὶ βλάβας· ὅσα δὲ  
μετὰ τοῦ γενναίου στάντες τοῖς παρανόμοις αὐτοῦ  
καὶ βιαίοις ἠναντιώθητε, ταῦθ' ὑμῖν εἰς δέον ἐκβέ-

βηκε. τί οὖν ὑμῖν ἐπισταμένοις ταῦτα παραινῶ  
πράττειν, καὶ τίνα γνώμην ὑπὲρ τῶν παρόντων  
1427 ἀποφαίνομαι; ὅσα μὲν ἐχαρίσασθε καὶ συγχωρή-  
σατε τῷ δήμῳ τὴν ἐχθρὰν διαλλαττόμενοι ὁπωσδή-  
ποτε φυλάττειν κύρια, καὶ μὴ λύειν τῶν τότε συγ- 5  
χωρηθέντων μηθέν, οὐχ ὡς καλῶν καὶ τῆς πόλεως  
ἀξίων ὄντων· πόθεν γάρ; ἀλλ' ὡς ἀναγκάσιον καὶ  
μηκέτι δεχομένων διόρθωσιν· ὅσα δ' ἂν ἔξω τούτου  
βιαζόμενος καὶ παρανομῶν ἀκόντων ὑμῶν ἐπιχειρῆ  
λαμβάνειν μήτε συγχωρεῖν αὐτῷ μήτε ἐπιτρέπειν, 10  
ἀλλ' ἀντιπράττεσθαι λόγοις τε καὶ ἔργοις καὶ ὁμοῦ  
πάντας καὶ ἕνα ἕκαστον ἰδίᾳ. οὐ γάρ, ἂν ἅπαξ ἀμάρτη  
τις εἴτε ἀπατηθεῖς εἴτε ἀναγκασθεῖς, καὶ τὰ λοιπὰ  
ὅμοια δεῖ πράττειν, ἀλλ' ἐκείνου μεμνημένους τᾶλλα  
ὅπως μὴ τοιαῦτα γενήσεται σκοπεῖν. ταῦτα μὲν οὖν 15  
ἐστίν, ἃ κοινῇ πάντας ὑμᾶς οἴομαι δεῖν ἐγνωκότας  
εἶναι, καὶ παρεσκευασθαι πρὸς τὰς ἀδίκους τοῦ δή-  
μου πλεονεξίας παραινῶ.

1428 LII. Ὡς δὲ καὶ τοῦτο περὶ οὗ νυνὶ πρόκειται  
σκοπεῖν ὁμοίον ἐστὶ τοῖς ἄλλοις ἐγχειρήμασιν αὐτοῦ 20  
τοῖς ἀδίκους καὶ παρανόμοις, καὶ οὐχ οἷον ὁ δήμαρ-  
χος ἐξαπατῶν ὑμᾶς ἐπειράτο ἀποφαίνειν δίκαιον καὶ  
μέτριον, μάθετε οἱ μὴπω σαφῶς εἰδότες. ὁ μὲν οὖν  
νόμος ὁ περὶ τῶν δικαστηρίων τῶν δημοτικῶν, ὃ  
Δέκιος ἐκρατύνατο μάλιστα, οὐ καθ' ὑμῶν ἐγράφη 25  
τῶν πατρικίων, ἀλλ' ὑπὲρ ἀσφαλείας τῶν κατισχυο-  
μένων δημοτικῶν, ὡς αὐτὸς τε δηλοῖ γραφὰς ἔχων  
οὐκ ἀμφιβόλους, καὶ ὑμεῖς τοῦτο ἅπαντες ἀεὶ λέγετε  
καλῶς ἐπιστάμενοι. μέγα δὲ τούτου σημείον ἐστίν,  
ὃ καὶ παντὸς ἀμφισβητουμένου δικαίου κριτήριον 30  
εἶναι δοκεῖ κράτιστον, ὁ χρόνος ἐννεακαιδεκέτης ἤδη  
γεγονὼς ἐξ οὗ ὁ νόμος οὗτος ἐτέθη· ἐν ᾧ παντὶ

Δέκιος οὐκ ἂν ἔχοι δεῖξαι δίκην οὐδεμίαν, οὔτε δημοσίαν κατ' οὐδενὸς τῶν πατρικίων ἐν τῷ νόμῳ δεδικασμένην, οὔτ' ἰδίαν· εἰ δὲ φήσει, δεῖξάτω καὶ μηθὲν ἔτι δεόμεθα λόγον. αἱ δὲ ὁμολογίαι καθ' ἃς 5  
 διελύσασθε πρὸς τοὺς δημότας αἱ νεωστὶ γενόμεναι·  
 10 χρῆ γὰρ καὶ περὶ τούτων ὑμᾶς μαθεῖν, ἐπειδὴ πονηρὸς ἐξηγητὴς ὁ δήμαρχος αὐτῶν ἐγένετο· δύο 1429  
 ταῦτα συγχωρήματα περιέχουσιν· ἀφείσθαι τοὺς δημοτικούς τῶν χρεῶν, καὶ τὴν ἀρχὴν τήνδε ἀποδεικνυσθαι καθ' ἕκαστον ἐνιαυτὸν ἐπικουρίας ἕνεκα  
 τῶν κατισχυομένων καὶ κωλύσεως, ἄλλο δὲ παρὰ ταῦτα οὐδέν. μέγιστον δὲ ὑμῖν γενέσθω τεκμήριον, ὅτι οὔτε ὁ νόμος οὔτε αἱ συνθήκαι κατ' ἀνδρὸς πατρικίου δικάζειν τῷ δήμῳ δεδώκασιν ἐξουσίαν, ὃ  
 15 ποιεῖ νῦν αὐτὸς ὁ δῆμος. αἰτεῖται γὰρ αὐτὸ παρ' ὑμῶν τήμερον, ὡς πρότερόν γε οὐκ ἔχων· οὐδεὶς δ' ἂν ἀξιώσειέ τι παρ' ἄλλων λαμβάνειν, ὧν ἔστι νόμος κύριος. δίκαιον δὲ φύσεως ἀνομοθέτητον, ὃ βουλή, πῶς ἂν εἴη τοῦτο· καὶ γὰρ τοῦτο Δέκιος ὑμᾶς ᾤετο  
 20 δεῖν σκοπεῖν· τοῖς μὲν δημόταις ἃς τ' ἂν φύρωσι δίκας ὑπὸ τῶν πατρικίων καὶ ἃς ἂν ἐκείνους διώκωσι τὸν δῆμον δικάζειν· τοῖς δὲ πατρικίοις μήθ' ὅταν ὑπάγῃσι  
 25 ἄλλὰ τούτοις μὲν ἀμφοτέρω ἐξεῖναι πλεονεκτεῖν, ἡμῖν δὲ οὐδετέρου τῶν δικαίων μετέχειν; εἰ δέ τι Μάρκιος ἀδικεῖ τὸν δῆμον, [ἢ] καὶ ἄλλος τῶν πατρικίων ὅστισοῦν καὶ δίκαιός ἐστιν ἀποθανεῖν ἢ τῆς πόλεως ἐκπεσεῖν, μὴ παρ' αὐτοῖς ἀλλ' ἐνθάδε κριθεὶς διδότω  
 30 δίκας, ὥσπερ ἔστι νόμιμον. εἰ μὴ ἄρα, ὃ Δέκιε, ὁ μὲν δῆμος ἴσος ἔσται δικαστῆς καὶ οὐθὲν ἂν χάρισαιτο αὐτῷ περὶ ἀνδρὸς ἐχθροῦ τὴν ψῆφον ἐπιφέρων·

οὔτε δὲ εἰ γένοιτο τῆς ψῆφου κύριοι τὸν ἀδικοῦντα περὶ πλείονος ποιήσονται τῆς ἀδικουμένης ὑπ' αὐτοῦ πόλεως, μέλλοντες ἄρᾶν καὶ ἐπιουρκίαν καὶ μῖσος μὲν παρ' ἀνθρώπων, χόλον δὲ παρὰ θεῶν ἐκ τῆς δίκης ἀποπίεσθαι καὶ μετὰ πονηρῶν ἐλπίδων ζῆν. οὐκ 5  
 1431 ἄξιον ταῦτα περὶ τῆς βουλῆς, ὃ δημόται, ὑποτοπεῖν, ἢ τιμᾶς καὶ ἀρχὰς καὶ τὰ κράτιστα τῶν ἐν τῇ πόλει παραχωρεῖν ὁμολογεῖτε δι' ἀρετήν, καὶ πολλὰς χάριτας εἶδέναι φρατὲ τῆς προθυμίας ἣν ἀπεδείξατο περὶ τὴν καθόδον ὑμῶν. μάχεται ταῦτα ἀλλήλοις· καὶ 10  
 οὐκ ἔχει λόγον οὓς ἐπαινεῖτε τούτους φοβεῖσθαι, καὶ ἅμα τοῖς αὐτοῖς περὶ μὲν τῶν μειζόνων ἐπιτρέπειν, περὶ δὲ τῶν ἄλλων ἀπιστεῖν. τί δ' οὐχὶ μᾶ χρώμενοι γνώμη ἢ πάντα πιστεύετε αὐτοῖς ἢ περὶ πάντων ἀπιστεῖτε; ἀλλὰ προβουλεύσαι μὲν αὐτοὺς τὰ δίκαια 15  
 ἱκανοὺς εἶναι νομίζετε, δικάσαι δὲ περὶ αὐτῶν τούτων ὧν προβουλεύουσιν οὐχ ἱκανοὺς. πολλὰ καὶ ἄλλα περὶ τῶν δικαίων εἶχον, ὃ βουλή, λέγειν, ἀλλὰ καὶ ταῦτα ἱκανά.

LIII. Ἐπειδὴ δὲ καὶ περὶ τοῦ συμφέροντος ἐπει- 20  
 25 ρᾶτο λέγειν Δέκιος, ὡς ἀγαθὸν μὲν ὁμόνοια, δεινὸν δὲ στάσις, καὶ θεραπεύοντες μὲν τὸν δῆμον ἐν ὁμονοίᾳ πολιτευσόμεθα, κωλύσαντες δὲ οὓς βούλονται τῶν πατρικίων ἀνδρηλατεῖν ἢ μισοφρονεῖν εἰς πόλεμον ἐμφύλιον καταστησόμεθα, πολλὰ λέγειν ἔχων 25  
 1432 ὀλίγοις πᾶν χρῆσομαι. πρῶτον μὲν οὖν θαυμάσαι ἔχω Δέκιον τῆς εἰρωνείας· οὐ γὰρ ἠλιθιότητός γε· εἰ κρεῖττον οἶεται τὰ συμφέροντα τῷ κοινῷ φρονεῖν ἑαυτοῦ, ὃς ἄρτι παρελήλυθεν εἰς πολιτικὰς πράξεις, ἡμῶν τῶν καταγεγραφοτέρων ἐν αὐταῖς καὶ μεγάλην 30  
 ἐκ μικρᾶς πεποιηκότων τὴν πόλιν. ἔπειτα εἰ πείσειν ὑπέλαβεν ὑμᾶς, ὡς χρῆ παραδοῦναι τινα ἔκδοτον

ἐπὶ τιμωρίᾳ τοῖς ἐχθροῖς, καὶ ταῦτα πολίτην ὑμέτε-  
ρον, καὶ οὐχὶ τῶν ἀφανῶν τινα πολιτῶν ἢ φαύλων,  
ἀλλ' ὃν αὐτοὶ καὶ τὰ πολέμια λαμπρότατον ἠγρεῖσθε  
εἶναι καὶ τὸν βίον σωφρονέστατον τὰ τε πολιτικὰ  
5 πράττειν οὐθενὸς χεῖρονα. καὶ ταῦτα ἐτόλμησεν εἰ-  
πεῖν εἰδὼς ὑμᾶς πλείστην αἰδῶ ποιουμένους ἱκετῶν,  
καὶ μὴδὲ πολεμίων τοὺς καταφεύγοντας ἐνθάδε ταύ-  
της ἀποκλείοντας τῆς φιλανθρωπίας. εἰ δὲ τάναντία  
ἡμᾶς ἐγίνγνωσκες ἐπιτηδεύοντας, ὦ Δέμειε, ἀνόσια  
10 μὲν φρονοῦντας περὶ θεοῦς, ἄδικα δὲ πράττοντας  
πρὸς ἀνθρώπους, τί ἂν ἡμῖν τούτου συνεβούλευες  
ἔργον ὑπομῆναι δεινότερον, ἀφ' οὗ πρόρρηλοι καὶ  
πανώλεις, μισηθέντες θεοῖς τε καὶ ἀνθρώποις, δια- 1433  
φθαρησόμεθα; οὐ δεόμεθά σου συμβούλου, Δέμειε,  
15 οὔτε περὶ πολιτῶν ἐκδόσεως οὔτε περὶ ἄλλου χρη-  
ματός ἂν ἡμῖν πρακτέον οὐδενός· οὐδὲ ὀθνεῖα φρο-  
νήσει νέων ἀνδρῶν τὰ οἰκεία συμφέροντα κρῖνειν  
οἴομεθα δεῖν οἱ μέχρι τῆσδε τῆς ἡλικίας διὰ πολλῆς  
πεύρας κακῶν τε καὶ ἀγαθῶν ἐληλυθότες. πολέμου  
20 δὲ ἀπειλᾶς, αἷς χρώμενοι φοβεῖτε ἡμᾶς, οὐ νῦν  
πρῶτον ἐπαγομένης ὑφ' ὑμῶν, ἀλλὰ πολλάκις ἤδη  
καὶ ὑπὸ πολλῶν ἐπανασεισθείσας τῇ συνήθει προ-  
τητι παραδόντες ἀκαταπλήκτως οἴσομεν. καὶ εἰ δὴ 1434  
περὶ θεῶν τὰ ὅμοια οἷς λέγετε, ἀμυνοῦμεθα θεοῦς  
25 τε συναγωνιστὰς ἔχοντες οἱ νεμεσῶσι τοῖς ἄρχουσι  
πολέμου ἀδίκου, καὶ ἀνθρώπων ἔξοντες χεῖρα οὐκ  
ὀλίγην σύμμαχον. Λατῖνοι τε γὰρ ἅπαντες οἷς  
νεωστὶ τὴν ἰσοπολιτείαν δεδώκαμεν σὺν ἡμῖν στή-  
σονται, ὡς περὶ πατρίδος ἤδη τῆς πόλεως τῆσδε  
30 ἀγωνιζόμενοι, αἳ τε ἐνθένδε ἀποικισθεῖσαι πόλεις  
πολλὰ καὶ ἀγαθαὶ περὶ παντὸς ποιούμεναι σώζεσθαι  
τὴν μητρόπολιν ἀμυνοῦσιν αὐτῇ. εἰ δὲ εἰς ἀνάγκην

ἡμᾶς κατακλείσετε τῆς πανταχόθεν ἐπικουρίας πε-  
ριέχεσθαι, ὑπομενοῦμεν, ὦ Δέμειε, καὶ θεράποντας  
εἰς ἐλευθερίαν προκαλούμενοι καὶ πολεμίους εἰς φι-  
λίαν καὶ πάντας ἀνθρώπους εἰς κοινωνίαν τῶν ἐκ  
τῆς νίκης ἐλπίδων ὁμοσε χωρεῖν ὑμῖν. μηθενὸς δὲ 5  
τούτων δεήσειεν, ὦ Ζεῦ καὶ θεοὶ πάντες οἱ πόλιν  
1435 τῶν Ῥωμαίων κατέχοντες, ἀλλ' εἴη μέχρι λόγων τὰ  
φοβερά ταῦτα ἐλθεῖν, ἔργον δὲ μηθὲν ἔξ αὐτῶν γέ-  
νοιτο ἄχαρι.

LIII. Ταῦτα μὲν Ἀππιος εἶπεν. Μάνιος δὲ 10  
Ουαλέριος ὁ δημοτικώτατος τῶν ἐκ τοῦ συνεδρίου  
καὶ περὶ τὰς διαλλαγὰς πλείστην ἀποδειξάμενος προ-  
θυμίαν φανερῶς καὶ τότε τῷ δήμῳ συνελάμβανε,  
καὶ λόγον διεξῆλθε μετὰ πολλῆς συγκείμενον φρου-  
τίδος, ἐπιτιμῶν μὲν τοῖς οὐκ ἐῶσι μίαν εἶναι τὴν 15  
πόλιν, ἀλλὰ διαιροῦσι τὸ δημοτικὸν ἀπὸ τῶν πατρι-  
κίων καὶ διὰ μικρὰς προφάσεις πολέμους ἀναξωπυ-  
ροῦσιν ἐμφυλίους· ἐπαινῶν δὲ τοὺς ἐν τῷ συμφέρον  
καὶ κοινῷ ἡγουμένους καὶ πάντ' ἐλάττω τῆς ὁμο-  
νοίας τιθεμένους, διδάσκων ὡς εἰ γένοιτο τῆς δίκης 20  
ὁ δῆμος ὥσπερ ἄξιοι κύριοι, καὶ ταύτην παρὰ τοῦ  
1436 συνεδρίου τὴν χάριν ἐκόντος λάβοι, τάχα μὲν οὐδ'  
ἐπέξεισιν ἄχρι τέλους, ἀλλ' ἀρκεσθεῖς αὐτῷ τῷ κε-  
κρατημένῳ τοῦ σώματος ἐπιεικέστερον μᾶλλον ἢ  
χαλεπώτερον αὐτῷ χρήσεται. εἰ δὲ ἄρα ἐκ παντὸς 25  
ολομένῳ τρόπου τῶν δημάρχων τέλος ἐπιθεῖναι νό-  
μιμον τῇ δίκῃ τῆς ψήφου γενήσεται κύριος, ἀπολύ-  
σαι τὸν ἄνδρα τῆς αἰτίας, αἰδούμενος μὲν αὐτὸ τὸ  
κινδυνεῦον σῶμα, οὐ πολλὰ καὶ καλὰ ἔργα ἔχει με-  
μνησθαι, ἀνταποδιδούς δὲ ταύτην τὴν χάριν τῇ πα- 30  
ρασχούσῃ τὴν ἐξουσίαν αὐτῷ βουλή καὶ πρὸς μηδὲν  
ἐναντιωθείη τῶν μετρίων. παρῆναι μέντοι τῇ δίκῃ  
5\*

συννεβούλευε καὶ συναπολογεῖσθαι τῷ ἀνδρὶ, καὶ τὸν  
 δῆμον ἀξιούν μηθεὺν γινῶναι περὶ αὐτοῦ χαλεπόν, τοὺς  
 τε ὑπάτους καὶ τοὺς ἐκ τοῦ συνεδρίου πάντας καὶ  
 τοὺς ἄλλους πατρικίους κατὰ πλήθος ἀφικομένους·  
 5 συνοίσειν γὰρ οὐ μικρὰν τῷ κινδυνεύοντι καὶ τού- 1437  
 τος εἰς σωτηρίαν ῥοπήν· καὶ μὴ μόνον αὐτοὺς οὐ-  
 τως ἔχειν ταῖς γνώμαις, ἀλλὰ καὶ πελάτας ἕκαστον  
 τοὺς αὐτοῦ παρακαλεῖν καὶ φίλους συνάγειν, καὶ εἴ-  
 τινας οἰκείως ἔχειν σφίσι τῶν δημοτικῶν δι' εὐεργε-  
 10 σίας ὑπολαμβάνουσι, καὶ τούτους νυνὶ τὴν πρότερον  
 ὀφειλομένην χάριν ἐπὶ τῆς ψηφοφορίας ἀπαιτεῖν. τό-  
 τε φιλόπολι καὶ μισοπόνηρον [χρηστὸν] οὐκ ὀλίγον  
 ἀπέφηνεν ἐκ τοῦ δήμου μέρος ἐσόμενον, καὶ ἔτι  
 πλείον τούτου, ὃ πρὸς τὰς τύχας πάσχει τι τὰς ἀν-  
 15 θρωπίνης καὶ ἐλεεῖν οἶδε τοὺς ἐν τοῖς ἀξιώμασιν,  
 ὅταν εἰς ταπεινὰ πέσωσιν αὐτῶν αἱ τύχαι. ὁ δὲ  
 πλείων λόγος ἐγίνετο αὐτῷ πρὸς τὸν Μάρκιον παρά-  
 κλησιν ἔχων νουθητήσῃ μειμιγμένην καὶ δέησιν ἀνάγκη.  
 ἤξιόν γὰρ αὐτὸν ἐπεὶ διστάσαι τὸν δῆμον ἀπὸ  
 20 τῆς βουλῆς αἰτίαν ἔχει, καὶ τυραννικὸς εἶναι δια-  
 βάλλεται διὰ τὴν αὐθάδειαν τοῦ τρόπου, δέος τε  
 παρέστηκεν ἅπασιν μὴ δι' αὐτὸν ἀρχὴ γένηται στά- 1438  
 σεως καὶ κακῶν ἀνηκέστων ἃ φέρουσιν ἐμφύλιοι  
 πόλεμοι, μὴ ποιεῖν ἀληθεῖς καὶ κυρίας τὰς κατ' αὐ-  
 25 τοῦ διαβολᾶς μένοντα ἐν τῷ φθονομένῳ τοῦ βίου,  
 ἀλλὰ σχῆμα ταπεινὸν μεταλαβεῖν καὶ τοῖς ἀδικεῖσθαι  
 λέγουσι τὴν ἐξουσίαν τοῦ σώματος παρασχεῖν, καὶ  
 μὴ φεύγειν ἄδικον ἐγκλημα λόγῳ μετὰ δίκης ἀπο-  
 λυόμενον. ταῦτα γὰρ αὐτῷ πρὸς τε σωτηρίαν ἀσφα-  
 30 λέστατα εἶναι, καὶ πρὸς εὐδοξίαν ἧς ὀρέγεται λαμ-  
 πρότατα, καὶ τοῖς προυπηρογμένοις ἔργοις ἀκόλουθα.  
 εἰ δὲ αὐθαδέστερος ἔσται μᾶλλον ἢ μετριώτερος, καὶ

τὴν βουλὴν ἀξιώσει πάντα κίνδυνον δι' ἑαυτὸν ὑπο-  
 μένειν, κακὴν μὲν ἦταν, αἰσχρὰν δὲ νίκην τοῖς πει-  
 σθεῖσι προσάψει αὐτὸν ἀπέφαινε· ἦν τε ἐνταῦθα  
 πολὺς ὀλοφρομένος καὶ τῶν καταλαμβανόντων κα-  
 κῶν τὰς πόλεις ἐν ταῖς διχαστασίαις τὰ μέγιστα καὶ 5  
 φανερώτατα ἐπιλεγόμενος.

1439 LV. Διεξιῶν δὲ ταῦτα μετὰ πολλῶν δακρύων  
 οὐ προσποιητῶν καὶ πεπλασμένων, ἀλλ' ἀληθινῶν,  
 ἀνὴρ ἡλικίας τε καὶ ἀρετῆς ἀξιώσει προύχων, ὡς  
 ἔμαθε κινούμενον ἐπὶ τοῖς λεγομένοις τὸ συνεδρίου, 10  
 ἐκ τοῦ τεθαρορηκότος ἤδη τὸ λοιπὸν ἐξέφαινε τῶν  
 λόγων· εἰ δέ τινες ὑμῶν, ὧ βουλευταί, λέγων, τα-  
 ράττονται δοκοῦντες ἔθος εἰσάγειν πονηρὸν εἰς τὴν  
 πόλιν, ἐὰν τῷ δήμῳ συγχωρήσῃτε ψῆφον ἐπιφέρειν  
 κατὰ τῶν πατρικίων, καὶ ἐπ' οὐδενὶ ἀγαθῷ νομί- 15  
 ζουσι τὴν τῶν δημάρχων ἐξουσίαν πολλὴν ἰσχὺν λα-  
 βούσαν γενήσεσθαι, μαθέτωσαν ἀμαρτάνουτες τῆς δό-  
 ξης καὶ τἀναντία ἢ τὰ προσήκοντα ὑπειληφότες. εἰ γάρ  
 τι καὶ ἄλλο σωτηρίας αἰτιον ἔσται τῇ πόλει τῆδε καὶ  
 τοῦ μηδέποτε τὴν ἐλευθερίαν μήτε τὴν ἰσχὺν ἀφαιρε- 20  
 1440 θῆναι, ὁμοιοῦσαν δὲ αἰεὶ καὶ μιᾷ γνώμῃ περὶ πάν-  
 των χρωμένην διατελεῖν, ὁ δῆμος αἰτιώτατος ἔσται  
 συμπαρηληφθεὶς ἐπὶ τὰ πράγματα· καὶ τὸ μὴ μίαν  
 εἶναι τὴν διοικοῦσαν τὰ κοινὰ πολιτείαν ἄκρατον  
 μήτε ὀλιγαρχίαν μήτε δημοκρατίαν, ἀλλὰ τὴν μικτὴν 25  
 ἐξ ἁπασῶν τούτων κατὰστασιν, τοῦτο ὑπὲρ πάντα  
 ἡμᾶς ὠφελήσει. ῥᾶστα γὰρ εἰς ὕβρεις ἀποσκήπτει  
 καὶ παρανομίας τούτων ἕκαστον τῶν πολιτευμάτων  
 αὐτὸ καθ' ἑαυτὸ γινόμενον· ὅταν δ' ἀνακερασθῇ  
 πάντα μετρίως τὸ παρακινῶν μέρος αἰεὶ καὶ ἐκβαλ- 30  
 νον ἐκ τοῦ συνηθούς κόσμου ὑπὸ τοῦ σωφρονοῦντος  
 καὶ μένοντος ἐν τοῖς ἰδίῳις ἤθεσι κατεῖργεται. μον-

αρχία μὲν ὤμῃ καὶ αὐθάδης γενηθεῖσα καὶ τυραννικὰ διώκειν ἀρξάμενη ζηλώματα, ὑπ' ἀνδρῶν ὀλίγων καὶ ἀγαθῶν καταλύεται. ὀλιγαρχία δ' ἐκ τῶν ἀρίστων ἀνδρῶν συνεστηκυῖα, ἣ χρησθε καὶ ὑμεῖς  
 5 νυνί, ὅταν πλούτῳ καὶ ἐταιρίαις ἐπαρθεῖσα δικαιοσύνης καὶ τῆς ἄλλης ἀρετῆς μηθένα ποιῆται λόγον 1441 ὑπὸ δήμου φρονίμου καταλύεται. δῆμος δὲ σωφρο-  
 νῶν καὶ κατὰ νόμους πολιτευόμενος, ὅταν ἀκοσμεῖν ἀρξῆται καὶ παρανομεῖν ὑπὸ τοῦ κρατίστου ἀνδρὸς  
 10 βία καταληφθεὶς δικαιοῦται. ὑμῖν δὲ, ὦ βουλή, μοναρχίαν μὲν ἐξουσίας ἵνα μὴ τυραννὶς γένηται τὰ δυνατὰ εὖρηται βοηθήματα. δύο τε γὰρ ἀνθ' ἐνὸς ἀποδείξαντες τῆς πόλεως κυρίους, καὶ τούτοις οὐκ ἀόριστον χρόνον ἐπιτρέψαντες ἔχειν τὴν ἀρχήν, ἀλλ'  
 15 ἐνιαύσιον, οὐδὲν ἦττον ἀποδείκνυτε φύλακας αὐτῶν τριακοσίους ἀνδρας ἐκ τῶν πατρικίων τοὺς κρατίστους τε καὶ πρεσβυτάτους, ἐξ ὧν ἦδε ἡ βουλή συνέστηκεν· ὑμῶν δὲ αὐτῶν, ἵνα μένητε ἐν τῷ προσήκοντι κόσμῳ, φυλακὴν οὐδεμίαν ἄχρι τοῦδε φαί-  
 20 νεσθε πεποιημένοι. καὶ περὶ μὲν ὑμῶν οὕτω εἰδῆσα, μὴ διαφθαρήτε τὰς διανοίας ὑπὸ τε μεγέθους καὶ πλήθους ἀγαθῶν, οἳ τυραννίδος τε πολυχρονίου ἡλευθερώκατε τὴν πόλιν ἐναγχος, καὶ οὕτω σχολὴν ἐσχίκατε ὑβρίξειν καὶ τραφᾶν διὰ τοὺς συνεχεῖς  
 25 καὶ μακροὺς πολέμους· περὶ δὲ τῶν μεθ' ὑμᾶς ἔσο- 1442 μένων ἐνθυμούμενος ὅσας ὁ μακρὸς αἰὼν φέρει μεταβολὰς δέδοικα, μὴ τι παρακινήσαντες οἱ δυνατοὶ ἐκ τοῦ συνεδρίου λάθωσιν εἰς μοναρχίαν τὸ πολίτευμα περιστήσαντες τυραννικῆν.  
 30 LVI. Ἐὰν οὖν κοινωνήσητε καὶ τῷ δήμῳ τῶν πολιτευμάτων, οὐδὲν ὑμῖν ἐνθύνδε φύσεται κακόν, ἀλλ' ὁ πλεόν ἔχειν τῶν ἄλλων ἀξίων καὶ τῆς βου-

λῆς προσεταιριζόμενος τὸν βουλούμενον συννοσεῖν καὶ συναδικεῖν· πάντα γὰρ τὰ εἰκότα χρηρὴ περὶ πόλεως βουλευομένους προνοεῖν· κληθεὶς ὑπὸ τῶν δημο-  
 5 ἀρχων εἰς τὸ πλήθος ὁ μέγας ἐκείνος καὶ σεμνὸς ἀποδώσει τῷ δήμῳ τῷ φαύλῳ καὶ ταπεινῷ λόγον ὧν πράττει τε καὶ διανοεῖται, καὶ ἂν ἀδικῶν φαίνεται δίκης ἢς ἂν ἄξιος ἢ τεύξεται. αὐτὸν δὲ δὴ τὸν δή-  
 10 μον, ἵνα μὴ τραφᾶ τηλικαύτης ἐξουσίας γενόμενος κύριος, μὴδ' ὑπὸ τῶν κακίστων ἐκδημαγωγούμενος τοῖς κρατίστοις πολεμῆ· καὶ γὰρ ἐν ὄχλῳ φιλεῖ γί-  
 1443 νεσθαι τυραννίς· φυλάξει τε καὶ οὐδὲν ἑάσει παρανομεῖν ὁ διαφέρων φρονήσει ἀνὴρ δικαίωτ' ὑφ' ὑμῶν αἰρεθεὶς, ὃς αὐτοκράτορι καὶ ἀνυπευθύνῳ  
 15 χρ' ἔμενος ἐξουσία τό τε νοσοῦν ἐξελεῖ τῆς πόλεως μέρος, καὶ τὸ μήπω διεφθαρμένον οὐκ ἑάσει κακω-  
 θῆναι, ἔθῃ τε καὶ νόμιμα καὶ ζηλώματα βίων τὰ κράτιστα μεταρροσάμενος ἀρχάς τε ἀποδείξας ἄς  
 20 ἂν ἡγήται σαφονέστατα τ' ἂν κοινῶν ἐπιτροπεύσει· καὶ ταῦτα ἐντὸς ἑξ μηνῶν διοικησάμενος ἰδιώτης αὐθις ἔσται τὸ τιμᾶσθαι μόνον ἐκ τούτων λαβῶν, 20  
 ἄλλο δ' οὐθέν. ταῦτ' οὖν ἐνθυμηθέντες, καὶ τὸ σχῆμα τῆς πολιτείας τοῦθ' ἡγησάμενοι κράτιστον εἶναι, μηθενὸς ἀπελαύνετε τὸν δῆμον, ἀλλ' ὥσπερ ἀρχάς ἀποδεικνύει τὰς καθ' ἕναστον ἐνιαυτὸν ἡγη-  
 25 σομένας τῆς πόλεως, καὶ νόμους τοὺς μὲν ἐπικυροῦν 25  
 1444 τοὺς δ' ἀναιρεῖν, καὶ περὶ πολέμου καὶ εἰρήνης δια-  
 γινώσκειν, ἃ μέγιστα καὶ κυριώτατά ἐστι τῶν ἐν τῇ πόλει διαπραττομένων, μεταδεδώκατε αὐτῷ καὶ οὐθενὸς τούτων αὐτοκράτορα πεποιήκατε τὴν βου-  
 30 λήν· οὕτως καὶ τῶν δικαστηρίων μεταδίδοτε, καὶ 30  
 μάλιστα ὑπέρο ὧν ἂν τις αἰτίαν ἔχη τὴν πόλιν ἀδικεῖν στάσειν εἰσάγων ἢ τυραννίδα κατασκευαζόμενος

ἢ περὶ προδοσίας τοῖς πολεμίοις διαλεγόμενος ἢ τοιού-  
τόν τι ἄλλο κακὸν ἐπιχειρῶν πράττειν. ὅσα γὰρ ἂν  
φοβερώτερον κατασκευάσητε τὸ παραβαίνειν τοὺς  
νόμους καὶ τὰ ἔθνη κινεῖν τοῖς ὑβρισταῖς καὶ πλεο-  
νόμοις, πολλοὺς ὀφθαλμοὺς καὶ φύλακας αὐτῶν  
ἀποδείξαντες, τοσοῦτον κρεῖττον ὑμῖν ἔξει τὰ κοινά.

LVII. Ταῦτα καὶ τὰ παραπλήσια τούτοις εἰπὼν  
ἐπαύσατο. τῶν δὲ βουλευτῶν οἱ μετ' αὐτὸν ἀνιστά-  
μενοι πλὴν ὀλίγων οἱ λοιποὶ ταύτην προσέθεντο τῇ  
10 γνώμῃ. καὶ ἐπειδὴ τὸ προβούλευμα ἔδει γράφεσθαι,  
λόγον αἰτησάμενος ὁ Μάρκιος εἶπεν· Οἷός μὲν, ὦ  
βουλή, πρὸς τὰ κοινὰ ἔργα γέγονα, καὶ ὡς διὰ τὴν  
πρὸς ὑμᾶς εὐνοίαν εἰς τοῦτον τὸν κίνδυνον ἐλήλυθα,<sup>1445</sup>  
καὶ ὅτι παρὰ γνώμην ἀπήντητά μοι τὰ παρ' ὑμῶν,  
15 ἅπαντες ἴστε καὶ ἔτι μᾶλλον εἰσεσθε, ὅταν τὰ κατ'  
ἔμέ σῆξέ τέλος. ἐπεὶ δὲ ἡ Οὐαλερίου γνώμη νικᾷ,  
συνενέγκοι μὲν ταῦτα ὑμῖν, καὶ γενοίμην ἐγὼ κακὸς  
εἰκαστῆς τῶν ἐσομένων. ἵνα δὲ καὶ ὑμεῖς οἱ τὸ προ-  
βούλευμα γράφοντες εἰδῆτε ἐφ' οἷς παραδιδόναι με  
20 τῷ δήμῳ μέλλετε, κἀγὼ μὴ ἀγνοῶ περὶ τίνος ἀγα-  
νιοῦμαι, κελεύσατε δὴ τοὺς δημάρχους εἰπεῖν ἐναν-  
τίον ὑμῶν, τί τὸ ἀδίκημά ἐστιν ἐφ' ᾧ μέλλουσί μου  
κατηγορεῖν, καὶ ποταπὸν ὄνομα ἐπιγράψουσι τῇ  
δίκῃ.

25 LVIII. Ὁ μὲν δὴ ταῦτα ἔλεγε δοκῶν ἐπὶ τοῖς  
λόγοις οἷς εἶπεν ἐν τῇ βουλῇ τὴν δίκην ὑφέξειν, καὶ  
βουλόμενος ὁμολογήσαι τοὺς δημάρχους, ὅτι ταύτης  
ἕνεκα τῆς αἰτίας μέλλουσιν αὐτοῦ κατηγορεῖν. οἱ δὲ  
δήμαρχοι βουλευσάμενοι κατὰ σφᾶς τυραννίδι ἐπι-  
30 βουλεύειν αὐτὸν ἠτιάσαντο, καὶ πρὸς ταύτην ἐκέ-<sup>1446</sup>  
λευον ἤκειν τὴν αἰτίαν ἀπολογησόμενον, οὐ βουλό-  
μενοι τὸ ἔγκλημα εἰς μίαν αἰτίαν κατακλεῖσαι καὶ

ταύτην οὔτε ἰσχυρὰν οὔτε τῇ βουλῇ κεχαρισμένην,  
ἀλλ' ἑαυτοῖς τε πράττοντες ἐξουσίαν ὅσα βούλονται  
ἐγκαλεῖν, καὶ βοήθειαν ἀφαιρήσεσθαι τοῦ Μαρκίου  
τὴν ἐκ τῶν συνέδρων οἴομενοι. καὶ ὁ Μάρκιος εἶπεν·  
Ἄλλ' ἦτοι, εἰ ἐπὶ ταύτῃ γε κριθῆσομαι τῇ διαβολῇ,<sup>5</sup>  
δίδωμι ἑμαυτὸν ἐπίδικον τοῖς δημόταις, καὶ μηδὲν  
ἔστω τὸ κωλύον γράφεσθαι τὸ προβούλευμα. ἐγένετο  
δὲ καὶ τοῖς πλείστοις τῶν συνέδρων ἀσμένους ἐπὶ  
τούτῳ γενέσθαι τῷ ἔγκληματι τὴν δίκην κατ' ἀμ-  
φότερα, καὶ ὅτι οὐκ ἔσται τὸ λέγειν ἄφρονεῖ τις ἐν<sup>10</sup>  
τοῖς συνέδροις ὑπαίτιον, καὶ ὅτι θαδίας ἀπολύσεται  
τὴν διαβολὴν ὁ ἀνὴρ βίον ἐξηλακῶς σώφρονα καὶ  
ἀνεπίληπτον. γράφεται τὸ προβούλευμα μετὰ ταῦτα  
ὑπὲρ τῆς δίκης, καὶ χρόνος εἰς παρασκευὴν τῆς ἀπο-  
15 λογίας ὀρίζεται τῷ ἀνδρὶ μέχρι τῆς τρίτης ἀγορᾶς·  
1447 αἱ δὲ ἀγοραὶ Ῥωμαίοις ἐγίνοντο ὡς καὶ μέχρι τῶν  
καθ' ἡμᾶς χρόνων δι' ἡμέρας ἐνάτης. ἐν δὲ ταύταις  
συνιόντες ἐκ τῶν ἀγορῶν εἰς τὴν πόλιν οἱ δημοτικοὶ  
τάς τε ἀμείψεις ἐποιοῦντο τῶν ἀντίων, καὶ τάς δίκας  
παρ' ἀλλήλων ἐλάμβανον, τὰ τε κοινὰ ὅσων ἦσαν<sup>20</sup>  
κύριοι κατὰ τοὺς νόμους καὶ ὅσα ἢ βουλή ἐπιτρέψειεν  
αὐτοῖς ψῆφον ἀναλαμβάνοντες ἐπεκύρουν· τὰς δὲ  
μεταξὺ τῶν ἀγορῶν ἐπτά ἡμέρας αὐτουργοὶ τε ὄντες  
οἱ πολλοὶ καὶ πένητες ἐν τοῖς ἀγροῖς διέτριβον.  
ἐπειδὴ δὲ τὸ προβούλευμα ἔλαβον οἱ δήμαρχοι, προελ-<sup>25</sup>  
θόντες εἰς τὴν ἀγορὰν συνεκάλεσαν εἰς ἐκκλησίαν  
τὸν δῆμον, καὶ πολλὰ ἐγκώμια τῆς βουλῆς διελθόν-  
τες καὶ τὰ δόγματα αὐτῆς ἀναγνόντες προεἶπον  
ἡμέραν ἐν ἣ τὴν δίκην ἔμελλον ἐπιτελεῖν, εἰς ἣν  
ἅπαντας ἤξιουν ἤκειν τοὺς πολίτας ὡς ὑπὲρ τῶν με-<sup>30</sup>  
ρίστων διαγνωσομένων.

1448 LVIII. Ὡς δὲ διεβοήθη ταῦτα, πολλὴ σπουδὴ

καὶ παράταξις ἐγένετο τῶν τε δημοτικῶν καὶ τῶν πατρικίων· τῶν μὲν ὡς τιμωρησομένων τὸν ἀνταδέσταν, τῶν δὲ ἵνα μὴ γένοιτο ὑποχείριος τοῖς ἐχθροῖς ὡς ὑπὲρ τῆς ἀριστοκρατίας ἀγωνιζόμενος. 5 ἐδόκει δὲ πᾶσα κινδυνεύεσθαι ἢ τοῦ βίου καὶ τῆς ἐλευθερίας δικαίωσις ἐν τῷ τότε ἀγῶνι ἀμφοτέροις. ἐπιστάσης δὲ τῆς τρίτης ἀγορᾶς, ὃ μὲν ἐκ τῶν ἀγρῶν ὄχλος ὅσος οὐπω πρότερον συνηλυθῶς εἰς τὴν πόλιν ἔωθεν ἔτι κατεῖχε τὴν ἀγορᾶν· οἱ δὲ δῆμαρχοι 10 συνεκάλουν τὸ πλῆθος ἐπὶ τὴν φυλῆτιν ἐκκλησίαν, χωρία τῆς ἀγορᾶς περισχοινοῦσαντες, ἐν οἷς ἔμελλον αἱ φυλαὶ στήσεσθαι καθ' αὐτάς. καὶ τότε πρῶτον ἐγένετο Ῥωμαίοις ἐκκλησία καθ' ἀνδρὸς ψηφοφόρος ἢ φυλετικὴ, πολλὰ διεναντιουμένων τῶν πατρι- 15 κίων, ἵνα μὴ τοῦτο γένηται, καὶ τὴν λοχίτιν ἀξιούτων συνάγειν ἐκκλησίαν, ὥσπερ αὐτοῖς πατριον ἦν. ἐν γὰρ τοῖς πρότερον χρόνοις, ὅτε μέλλοι ψῆφον 1449 ἐπιφέρειν ὁ δῆμος ὑπὲρ ὀνουδήτινος ἢ ἐπιτρέψειν ἢ βουλή, ἐκάλουν μὲν οἱ ὑπάτοι τὴν λοχίτιν ἐκκλησίαν, ἰερά πρότερον ἐπιτελέσαντες ἂ νόμος αὐτοῖς ἐστὶ, καὶ μέχρι τοῦ καθ' ἡμᾶς χρόνου τινὰ ἐξ αὐτῶν ἔτι γίνεσθαι. 20 συνῆει δὲ τὸ πλῆθος εἰς τὸ πρὸ τῆς πόλεως Ἄρειον πεδίον ὑπὸ τε λοχαγοῖς καὶ σημείοις τεταγμένον ὥσπερ ἐν πολέμῳ, ἐπέφερον δὲ τὴν ψῆφον οὐχ ἅπαντες ἅμα ἀναλαβόντες, ἀλλὰ κατὰ τοὺς 25 ἰδίους ἕκαστοι λόχους, ὁπότε κληθεῖεν ὑπὸ τῶν ὑπᾶτων. οὐτῶν δὲ τῶν συμπάντων τριῶν καὶ ἐνενήκοντα καὶ ἑκατὸν λόχων, καὶ τούτων εἰς ἕξ διηρημένων συμμορίας, πρώτη μὲν ἐκαλεῖτο συμμορία καὶ τὴν 30 ψῆφον ἐπέφερον ἢ τῶν ἐχόντων τὸ μέγιστον τίμημα τῆς οὐσίας καὶ τὴν πρώτην λαμβανόντων τάξιν ἐν πολέμοις· ἐν οἷς ἦσαν ἵππεων μὲν ὀκτωκαίδεκα λό-

χοι, πεζῶν δὲ ὀγδοήκοντα. δευτέρα δὲ ἐψηφοφόροι συμμορία τῶν ὑποδεστέρων τοῖς βίοις καὶ τὴν 1450 ὑποβεβηκυῖαν τάξιν ἐν ταῖς μάχαις [μαχομένων] καὶ ὀπλισμὸν οὐ τὸν αὐτὸν ἐχόντων τοῖς πρωτοστάταις ἀλλ' ἐλάττονα· τοῦτο δὲ τὸ πλῆθος εἰς εἴκοσι λόχους 5 συυτεταγμένον ἦν, προσέκειντο δὲ αὐτοῖς δύο λόχοι τεκτόνων καὶ χαλκοτύπων καὶ ὅσοι ἄλλοι πολεμικῶν ἔργων ἦσαν χειροτέχνηται. οἱ δ' ἐν τῇ τρίτῃ συμμορία καλούμενοι, λόχους μὲν ἐξεπλήρουν εἴκοσι, τίμημα δ' εἶχον ἕλαττον τῶν δευτέρων, καὶ τάξιν τὴν ἐπ' ἐκεῖ- 10 νοις [ἐλάττονα,] καὶ ὅπλα οὐκ ἴσα τοῖς πρὸ αὐτῶν ἔφερον. οἱ δὲ μετὰ τούτους καλούμενοι, τίμημά τε οὐσίας ἕλαττον εἶχον καὶ τάξιν ἐν πολέμῳ τὴν ἀσφαλεστέραν ἐλάμβανον καὶ ὀπλισμὸν εὐσταλέστερον εἶχον· διήρητο δὲ εἰς εἴκοσι καὶ οὗτοι λόχους· συν- 15 ετάττοντο δὲ καὶ τούτοις δύο λόχοι βυκανιστῶν καὶ σαλπιστῶν. πέμπτη δ' ἐκαλεῖτο συμμορία τῶν ὀλίγων πάνυ τετιμημένων ἀργυρίου, ὅπλα δὲ ἦν αὐτῶν 1451 σαυνία καὶ σφενδόνη· οὗτοι τάξιν οὐκ εἶχον ἐν φάλαγγι, ἀλλὰ ψιλοὶ καὶ κούφοι συυεστρατεύοντο τοῖς 20 ὀπλίταις εἰς τριάκοντα λόχους διηρημένοι. οἱ δ' ἀπορώτατοι τῶν πολιτῶν οὐκ ἐλάττους τῶν ἄλλων ἀπάντων οὐτε ἔσχατοι τὴν ψῆφον ἀνελάμβανον, ἕνα μόνον ἔχοντες λόχον· οὗτοι στρατειῶν τε ἦσαν ἐλεύθεροι τῶν ἐκ καταλόγον καὶ εἰσφορῶν τῶν κατὰ τι- 25 μῆματα γινομένων ἀτελεῖς καὶ δι' ἄμφω ταῦτα ἐν ταῖς ψηφοφορίαις ἀτιμώτατοι. εἰ μὲν οὖν ἐπὶ τῶν πρώτων λόχων, οὓς οἱ τε ἵππεῖς ἐξεπλήρουν καὶ τῶν πεζῶν οἱ τὴν πρώτην τάξιν ἐν τοῖς πολέμοις λαμβάνοντες, τὸ αὐτὸ φρονήσαιεν ἑπτὰ καὶ ἐνενήκοντα 30 1452 λόχοι, τέλος εἶχεν ἢ ψηφοφορία, καὶ οὐκέτι τοῖς λοιποῖς ἕξ καὶ ἐνενήκοντα λόγοις ἀνεδίδοτο ἢ ψῆφος·



εἰ δὲ μὴ τοῦτο γένοιτο, ἢ δευτέρα συμμορία τῶν δύο  
καὶ εἴκοσι λόχων ἐκαλεῖτο, καὶ ἢ τρίτη· καὶ τοῦτο  
συνέβαινε ἕως οὗ τὸ αὐτὸ φρονήσωσιν ἐπὶ καὶ  
ἐνενήκοντα λόχοι. καὶ τὰ μὲν πολλὰ τῶν ἀγωνισμά-  
5 των ἐπὶ τῶν πρώτων κλήσεων τέλος ἐλάμβανεν,  
ὥστε μηδὲν ἔτι δεῖν τῶν ἐσχάτων. σπανίως δὲ που  
πρῶγμα οὕτως ἐνδοιαζόμενον ἐνέπιπτεν, ὥστε μέχρι  
τῆς ἐσχάτης ψῆφου τῆς τῶν ἀπορωπιάτων προελ-  
θεῖν· καὶ ἦν ὥσπερ τέρας τοῦτο σχισθέντων  
10 δίχα τῶν προτέρων δύο καὶ ἐνενήκοντα καὶ ἑκα-  
τὸν λόχων, τὴν τελευταίαν ψῆφον ἐπενεχθεῖσαν  
ἐκείναις αἰτίαις γενέσθαι τῆς ἐπὶ θάτερα ῥοπῆς. οἱ  
μὲν οὖν συναγωνιζόμενοι Μαρκίῳ ταύτην ἤξιουν κα-  
λεῖν τὴν ἀπὸ τῶν τιμημάτων ἐκκλησίαν, ὑπολαμβάν-  
15 νοντες τάχα μὲν ἐπὶ τῆς πρώτης κλήσεως ὑπὸ τῶν  
ὀκτώ καὶ ἐνενήκοντα λόχων ἀπολυθήσεσθαι τὸν  
ἄνδρα· εἰ δὲ μὴ γε ὑπὸ τῆς δευτέρας ἢ τρίτης. οἱ 140  
δὲ δήμαρχοι τὰντα ὑφωρώμενοι καὶ αὐτοί, τὴν φυλε-  
τικὴν ἐκκλησίαν ᾤοντο συναγεῖν δεῖν καὶ τοῦ ἀγῶ-  
20 νος ἐκείνην ποιῆσαι κυρίαν· ἵνα μήτε οἱ πένητες  
τῶν πλουσίων μειουεντώσι, μήτε οἱ ψιλοὶ τῶν ὀπλι-  
τῶν ἀτιμότεραν χώραν ἔχωσι, μήτε ἀπερομιμένον εἰς  
τὰς ἐσχάτας κλήσεις τὸ δημοτικὸν πλῆθος ἀποκλείη-  
ται τῶν ἴσων [ψήφων], ἰσόψηφοι δὲ καὶ ὁμότιμοι  
25 πάντες ἀλλήλοις γενόμενοι μιᾷ κλήσει τὴν ψῆφον  
ἐπενέγκωσι κατὰ φυλὰς. καὶ ἐδόκουν δικαιότερα  
οὗτοι τῶν ἑτέρων ἀξιοῦν, δημοτικὸν οἰόμενοι δεῖν,  
ἀλλ' οὐκ ὀλιγαρχικὸν εἶναι τὸ τοῦ δήμου δικαστή-  
ριον, καὶ τὴν περὶ τῶν ἀδικούντων τὸ κοινὸν δια-  
30 γνωσιν ἀπάντων εἶναι κοινήν.

LX. Συγχωρηθέντος δὲ αὐτοῖς καὶ τούτου μόρις  
ὑπὸ τῶν πατρικίων, ἐπειδὴ τὴν δίκην ἐχρῆν λέ-

γεσθαι, πρῶτος ἀνέβη Μηνύμιος ἄτερος τῶν ὑπά-  
των καὶ ἔλεξεν, οὗς ἐπέστειλεν αὐτῷ λόγους ἢ βου-  
λή· πρῶτον μὲν ἀπάσας τὰς εὐεργεσίας ὑπομιμνή-  
145 σκων ὅσας ἦν εἰληφῶς ὁ δῆμος παρὰ τῶν πατρικίων·  
ἵππειτα ἀξιώων ἀντὶ πολλῶν καὶ καλῶν ἔργων μίαν ἀπο- 5  
δοθῆναι παρὰ τοῦ δήμου δεομένοις σφίσι ἀναγκαίαν  
χάριν ἐπὶ τῷ κοινῷ τῆς πόλεως ἀγαθῷ. πρὸς δὲ τούτοις  
ἐπαινῶν μὲν ὁμόνοιαν καὶ εἰρήνην, καὶ ὄσης εὐδαι-  
μονίας ἐκάτερον τούτων αἰτιῶν ἔστι ταῖς πόλεσιν  
ἐπιλεγόμενος, κατηγορῶν δὲ διχοστασίας καὶ πολέ- 10  
μων ἐμφυλίων, ἐξ ὧν πόλεις αὐτάνδρους ἀπέφαινε  
ἀνηρησθαι καὶ ἔθνη ὅλα διολωλέναι· παρακαλῶν δὲ  
μὴ τὰ χεῖρω αἰρεῖσθαι πρὸ τῶν κρειττόνων ὀργῇ  
ἐπιτρέψαντας, ἀλλὰ ἐκ λογισμοῦ σώφρονος τὰ μέλ-  
15 λοντα ὀρεῖν, μηδὲ τοῖς καλίστοις τῶν πολιτῶν χρῆ-  
σθαι συμβούλοις περὶ τῶν μεγίστων βουλευομένους,  
ἀλλὰ τοῖς κρατίστοις σφίσι εἶναι δοκοῦσιν, ὑφ' ὧν  
ἤδεσαν ἐν εἰρήνῃ τε καὶ κατὰ πολέμους πολλὰ ὠφε-  
λημένην τὴν πατρίδα, οἷς οὐκ ἂν δικαιώσωσιν ὡς  
20 μεταβλημένοις τὴν φύσιν ἀπιστεῖν. ἐν δὲ κεφά-  
145 λαιον ἦν ἀπάντων τῶν λόγων, μηδεμίαν αὐτοῦς  
ἐπενεγκεῖν κατὰ τοῦ Μαρκίου ψῆφον, ἀλλὰ μάλιστα  
μὲν δι' αὐτὸν ἀφεῖναι τῆς δίκης τὸν ἄνδρα, ἀναμι-  
μνησκομένους οἷος εἰς τὰ κοινὰ ἐγένετο καὶ ὅσους  
κατώρθωσεν ὑπὲρ τῆς κοινῆς ἐλευθερίας τε καὶ ἡγε- 25  
μονίας πολέμους, καὶ ὡς οὔτε ὅσια οὔτε δίκαια οὔτε  
προσῆκοντα σφίσι ποιήσουσι, λόγων μὲν αὐτῷ μνη-  
σικακοῦντες φάυλων, ἔργων δὲ ἀχαριστοῦντες καλῶν.  
εἶναι δὲ καὶ τὸν καιρὸν τῆς ἀφέσεως καλόν, ὅτε γε  
αὐτὸς ἦκει παρέχων τὸ σῶμα τοῖς διαφόροις καὶ 30  
στίξεων ὅ τι ἂν ἐκείνοι περὶ αὐτοῦ διαγνώσιν. εἰ  
δὲ οὐχ οἷοί τε εἰσι διαλύσασθαι πρὸς ἐκείνον, ἀλλὰ

χαλεπῶς καὶ ἀπαραιτήτως ἔχουσιν, ἐνθυμηθέντας ὅτι ἡ βουλὴ δεησομένη περὶ αὐτοῦ πάρευσιν, ἄνδρες οἱ κράτιστοι τῆς πόλεως τριακόσιοι, παθεῖν τι καὶ ἐπιπλασθῆναι τὰς γνώμας, καὶ μὴ δι' ἐνὸς ἐχθροῦ 5 τιμωρίαν τοσοῦταν δέησιν ἀπάσασθαι φίλων, ἀλλὰ πολλῶν καὶ ἀγαθῶν ἀνδρῶν χάριτι δίκην ἀνδρὸς ἐνὸς ὑπεριδεῖν. Ταῦτα καὶ παραπλήσια τούτοις εἰπὼν 140 τελευταίου ἐκέλευον ἐπέθηκε τὸν λόγον, ὅτι ψῆφου μὲν ἐπενεχθείσης ἐὰν ἀπολύσωσι τὸν ἄνδρα, διὰ τὸ μηδὲν 10 ἀδικεῖσθαι τὸν δῆμον ὑπ' αὐτοῦ δόξουσιν ἀφαικέναι· ἐὰν δὲ καλύσωσιν ἐπιτελεσθῆναι τὴν δίκην τοῖς δεομένοις ὑπὲρ αὐτοῦ φανήσονται κεχαρισμένοι.

LXI. Πausαμένου δὲ τοῦ Μηνυκίου, παρελθὼν ὁ δήμαρχος Σικίννιος, οὔτε αὐτὸς ἔφη προδώσειν 15 τὴν ἐλευθερίαν τῶν δημοτῶν οὔτε τοῖς προδιδούσιν ἐπιτρέψειν ἑκῶν· ἀλλ' εἰ τῷ ὄντι παρέχουσιν οἱ πατρίοιοι τὸν ἄνδρα ἐπὶ δίκην τοῖς δημοτικοῖς, ἀναδώσειν περὶ αὐτοῦ ψῆφον, ἄλλο δὲ ποιήσειν παρὰ ταῦτα οὐδέν. μετὰ ταῦτα παρελθὼν ὁ Μηνύκιος εἶπεν· 20 Ἐπειδὴ πάντως, ὦ δήμαρχοι, ψῆφον ἐπενεχθῆναι περὶ τοῦ ἀνδρὸς προθυμείσθε, μηδὲν ἔξω τοῦ ἐγκλήματος κατηγορεῖτε· ἀλλ' ἐπειδὴ τυραννίδι αὐτὸν ἐπιχειρεῖν εἰσηγγείλατε, τοῦτο διδάσκετε καὶ περὶ 1457 τούτου τὰς πίστεις φέρετε. λόγων δέ, ὧν αὐτὸν αἰτιῶσθε κατὰ τοῦ δήμου πρὸς τὴν βουλήν εἰπεῖν, μήτε 25 μέμνησθε μήτε κατηγορεῖτε. ἀφείσθαι γὰρ αὐτὸν ἐψηφίσατο ταύτης τῆς αἰτίας τὸ συνέδριον, καὶ ἐπὶ ῥητοῖς ἦκειν εἰς τὸν δῆμον ἐδικαίωσε. καὶ μετὰ τοῦτο ἀνέγνω τὸ προβούλευμα. ὁ μὲν δὴ ταῦτ' εἰπὼν τε 30 καὶ ἐπιμαρτυράμενος κατέβη. τῶν δὲ δημάρχων πρῶτος μὲν διέθετο τὴν κατηγορίαν Σικίννιος ἐκ πολλῆς ἐπιμελείας καὶ παρασκευῆς, πάνθ' ὅσα πρῶτ-

των ἢ λέγων ὁ ἀνὴρ κατὰ τοῦ δήμου διετέλεσεν εἰς κατασκευὴν τυραννίδος ἀναφέρων· ἔπειτα μετ' ἐκεῖνον οἱ δυνατώτατοι τῶν δημάρχων εἶπεῖν.

LXII. Ὡς δὲ παρέλαβεν ὁ Μάρκιος τὸν λόγον, ἀρχάμενος ἄνωθεν ἀπὸ τῆς πρώτης ἡλικίας, διήλθεν 5 ὅσας ἐστρατευμένους ἦν ὑπὲρ τῆς πόλεως στρατείας, καὶ ὅσους εἰληφῶς ἐπινικίους παρὰ τῶν στρατηγῶν στεφάνους, πολεμίων τε τοὺς ληφθέντας ἀλχμαλώ- 1468 τούς ὑπ' αὐτοῦ καὶ πολιτῶν τοὺς διασωθέντας ἐν τοῖς ἀγῶσι· καὶ παρ' ἑκάστου τῶν λεγομένων τά τε 10 ἀριστεῖα ἐπεδείκνυτο καὶ τοὺς στρατηγούς μάρτυρας παρείχετο καὶ τῶν πολιτῶν τοὺς διασωθέντας ἐξ ὀνόματος ἐκάλει. οἱ δὲ παρήεσαν ὀλοφυρόμενοι καὶ δεόμενοι τῶν πολιτῶν, μὴ τὸν αἴτιον σφίσι τῆς 15 σωτηρίας ὡς πολέμιον ἀπολέσαι, μίαν τε ἀντὶ πολλῶν ψυχῆν αἰτοῦμενοι καὶ παραδιδόντες ἑαυτοὺς ἀντ' ἐκεῖνον χρῆσθαι ὅ τι βούλονται. ἦσαν δὲ οἱ πλείους αὐτῶν ἐκ τοῦ δημοτικοῦ γένους καὶ πολλὰ τῷ κοινῷ χρήσιμοι· ὧν τὰς τε ὄψεις καὶ τὰς δεήσεις 20 δι' αἰσχύνης ὁ δῆμος λαμβάνων εἰς οἴκτους καὶ δάκρυα ἐτρέπετο. ὡς δὲ καὶ τὴν ἐσθῆτα ὁ Μάρκιος περιρρηξάμενος ἐπεδείξατο τὰ στέγνα τραυμάτων μεστὰ καὶ πᾶν [τὸ] ἄλλο μέρος τοῦ σώματος ἀνά- 25 πλεων τῶν πληγῶν, καὶ ἐπύθετο, εἰ τῶν αὐτῶν ἀνθρώπων ἔργα εἶναι νομίζουσι σώζειν μὲν ἐκ τῶν πολέμων τοὺς πολίτας, ἀπολλύναι δὲ τοὺς σωθέντας 30 ἐν εἰρήνῃ· καὶ εἰ τυραννίδα κατασκευαζόμενος τις τὸ δημοτικὸν ἐλαύνει μέρος ἐκ πόλεως, ὑφ' οὗ μάλιστα αὔξεται τε καὶ τρέφεται τυραννίς· ἔτι δ' αὐτοῦ λέγοντος, ὅσον μὲν ἦν τοῦ δημοτικοῦ μέρος 30 ἐπιαικίς καὶ φιλόχρηστος ἀπολύειν ἐβόα τὸν ἄνδρα, καὶ δι' αἰσχύνης ἐλάμβανεν, εἰ καὶ δίκην ὑπείχε

[τὴν] ἀρχὴν περὶ τοιαύτης αἰτίας ἀνὴρ τοσαυτάκις  
 ὑπεριδῶν τῆς ἑαυτοῦ ψυχῆς ἕνεκα τῆς ἀπάντων φυ-  
 λακῆς. ὅσοι δ' ἦσαν φύσει βάσκανοι καὶ μισόχρηστοι  
 καὶ πρὸς πᾶσαν εὐκίνητοι στάσειν, ἤχθοντο μὲν ἀπο-  
 5 λύειν τὸν ἄνδρα μέλλοντας, οὐκ εἶχον δ' ὅ τι ἂν ἄλλο  
 ποιῶσι διὰ τὸ μηδεμίαν εὐρίσκειν ἀφορμὴν τυραννί-  
 δος [ἧ] ἐπιθέσεως φαινομένην, ὑπὲρ ἧς τὰς ψήφους  
 ἀνειλήφρασαν.

LXIII. Τοῦτο καταμαθὼν ὁ Δέκιος ἐκεῖνος, ὁ 1460  
 10 καὶ τοὺς ἐν τῇ βουλῇ ποιησάμενος λόγους καὶ τὸ  
 προβούλευμα περὶ τῆς δίκης γραφῆναι παρασκευά-  
 σας, ἀνέστη, καὶ σιωπὴν γενέσθαι κελεύσας ἔλεξεν·  
 Ἐπειδὴ, ὦ δημόται, τῶν ἐν τῇ βουλῇ λεχθέντων ὑπὸ  
 Μαρκίου λόγων, καὶ τῶν διὰ τούτους ἀκολουθησάν-  
 15 των ἔργων βιαίων τε καὶ ὑπερηφάνων ἀπολύουσιν  
 αὐτὸν οἱ πατριῖοι, καὶ οὐχ' ἡμῖν ἐπιτρέπουσι κατη-  
 γορεῖν, ἀκούσατε οἷον ὑμῖν ἔργον ἕτερον ἕξω τῶν  
 λόγων ὁ γενναῖος οὗτος ἀνὴρ τυγχάνει διαπεπραγ-  
 μένος, ὡς αὐθαδὲς καὶ τυραννικόν, καὶ οἷον ὑμῶν  
 20 κατέλυσε νόμον αὐτὸς ἰδιώτης ὢν μάθεται. ἴστε  
 δήπου πάντες, ὅτι τὰ ἐκ τῶν πολέμων λάφυρα ὄσων  
 ἂν ἡμῖν ὑπάρχη τυχεῖν δι' ἀρετὴν δημόσια εἶναι  
 κελεύει ὁ νόμος, καὶ τούτων οὐχ ὅπως τις ἰδιώτης  
 γίνεται κύριος, ἀλλ' οὐδ' αὐτὸς ὁ τῆς δυνάμεως ἡγε-  
 25 μάν· ὁ δὲ ταμίης αὐτὰ παραλαβὼν ἀπεμπολεῖ καὶ εἰς  
 τὸ δημόσιον ἀναφέρει τὰ χρήματα; καὶ τοῦτον τὸν 1461  
 νόμον ἕξ οὗ τήνδε οἰκοῦμεν τὴν πόλιν οὐχ ὅπως κατ-  
 ἔλυσέ τις, ἀλλ' οὐδ' ἠτιάσατο μὴ οὐχὶ καλῶς ἔχειν·  
 ἀλλ' οὗτος μόνος Μάρκιος ὑπεριδῶν αὐτοῦ κειμένου  
 30 καὶ κυρίου ὄντος, πρῶτος καὶ μόνος ἠξίωσε σφετερί-  
 σασθαι τὰ κοινὰ ἡμῶν, ὦ δημόται, λάφυρα, πέρυσσι  
 καὶ οὐ πάλαι. ποιησαμένων γὰρ ὑμῶν καταδρομῆν

τῆς Ἀντιατῶν γῆς, καὶ πολλὰ μὲν σώματα, πολλὰ δὲ  
 βοσκήματα, πολλὴν δὲ σίτου, πολλὰ δὲ ἄλλα χρήματα  
 περιβαλομένων, οὔτε τῶ ταμία ταῦτ' ἀπέδειξεν οὔτ'  
 αὐτὸς ἀποδόμενος εἰς τὸ δημόσιον ἀνήνεγκε τὸ ἀργύ-  
 ριον, ἀλλὰ διένειμε καὶ κατεχαρίσατο τοῖς ἑαυτοῦ 5  
 φίλοις ἅπασαν τὴν λείαν· τοῦτο δὴ τυραννίδος τε-  
 κμήριον εἶναι φημι τὸ ἔργον· πῶς γὰρ οὐ; ὅς τοὺς  
 ἑαυτοῦ κόλακας τε καὶ σωματοφύλακας καὶ τῆς μελ-  
 λούσης τυραννίδος συνεργούς ἐκ τῶν δημοσίων εὐρη-  
 1462 γέτει χρημάτων· καὶ νόμον κατάλυσιν εἶναι φανερὰν 10  
 ταύτην λέγω. θνεῖν δὴ θάτερον ἀποφηνάτω παρελ-  
 θῶν Μάρκιος, ἢ ὡς οὐ διένειμε τὰ λάφυρα τοῖς ἑαυ-  
 τοῦ φίλοις, ἢ ἔλαβεν ἐκ τῆς πολεμίας, ἢ ὡς ταῦτα  
 ποιῶν οὐ καταλύει τοὺς νόμους· ὢν οὐδέτερον ἕξει  
 πρὸς ὑμᾶς εἰπεῖν. αὐτοὶ γὰρ ἀμφοτέρω ἴστε, καὶ τὸν 15  
 νόμον καὶ τὸ ἔργον, καὶ οὐκ ἔνεσθ' ὑμῖν ἀποψηφι-  
 σαμένοις αὐτοῦ τὰ δίκαια καὶ τὰ εὖορκα δοκεῖν  
 ἔγνωκέναι. ἔσθας δὴ τοὺς στεφάνους καὶ τὰ ἀριστεῖα  
 καὶ τὰ τραύματα καὶ τὴν ἄλλην τερατείαν πρὸς  
 ταῦτα λέγε, ὦ Μάρκιε· παραδίδωμι γὰρ ἤδη σοὶ 20  
 τὸν λόγον.

LXIII. Τοῦτο τὸ κατηγορήμα πολλὴν ἐποίησε  
 τὴν ἐπὶ θάτερα μεταβολήν. οἱ μὲν γὰρ ἐπιεικέστε-  
 ροὶ τε καὶ σπουδάζοντες ὑπὲρ ἀφέσεως τοῦ ἀνδρός  
 μαλακώτεροι τούτων ἀκούσαντες ἐγένοντο· τὸ δὲ κα- 25  
 κόητες ἄπαν, ὃ τοῦ δήμου πλείστον μέρος ἦν, ἐκ  
 παντὸς ἀπολέσαι τὸν ἄνδρα δήπου προθυμούμενον,  
 1463 ἐτι μᾶλλον εἰς ταῦτα ἐπερρώσθη μεγάλης ἀφορμῆς  
 καὶ φανερῶς λαβόμενον. ἦν γὰρ ἀληθῆς ἡ τῶν λαφύ-  
 ρων διάδοσις, οὐ μὴν ἐκ προαιρέσεώς γε πονηρῶς 30  
 καὶ ἐπὶ κατασκευῇ τυραννίδος, ὡς ὁ Δέκιος ἠτιάτο,  
 γενομένη, ἀλλ' ἀπὸ παντὸς τοῦ βελτίστου καὶ ἐπαν-

ορθώσεως ἕνεκα τῶν κατεχόντων τὰ κοινὰ κακῶν. στασιάζοντος γὰρ ἔτι καὶ διεστηκότος ἀπὸ τῶν πατρικίων τοῦ πλήθους τότε καταφρονήσαντες οἱ πολέμιοι καταδρομὰς τῆς χώρας ἐποιοῦντο καὶ λεηλασίας συνεχεῖς· καὶ ὁπότε δόξειε τῇ βουλῇ τὴν κωλύσουσαν ταῦτα δύναμιν ἐξελεθεῖν, οὐδεὶς ἐξήει τῶν δημοτῶν, ἀλλ' ἐπέχαιρόν τε καὶ περιεώρων τὰ γινόμενα· ἢ δὲ τῶν πατρικίων χεῖρ οὐκ ἦν καθ' ἑαυτὴν ἀξιόμαχος. τοῦτο καταμαθὼν ὁ Μάρκιος ὑπέσχετο τοῖς ὑπάτοις, ἐὰν ἐπιτρέψωσιν αὐτῷ τὴν ἡγεμονίαν, στρατιῶν ἐξάγειν ἐκούσιον ἐπὶ τοὺς πολεμίους καὶ δίκην λήψεσθαι παρ' αὐτῶν ἐν τάχει. λαβὼν δὲ τὴν ἐξουσίαν συνεκάλει τοὺς τε πελάτας καὶ τοὺς φίλους καὶ τῶν ἄλλων πολιτῶν οἷς ἦν βουλομένοις ἀπολαῦσαι τι τῆς τοῦ στρατηγοῦ τύχης κατὰ τὰ πολέμια καὶ ἀρετῆς. ὡς δὲ αὐτῷ χεῖρ ἀξιόμαχος ἔδοκε συνελληθέναι, προῆγεν ἐπὶ τοὺς πολεμίους οὐθέν πω προεδότας. ἐμβαλὼν δ' εἰς χώραν πολλῶν ἀγαθῶν μεστήν, γενόμενος ἀφθόουοις λείας κύριος ἐφῆκε τοῖς στρατιώταις ἅπαντα τὰ ληφθέντα διανεμάσθαι, ἢ οἱ μὲν συναράμενοι τοῦ ἔργου τὸν τῶν πόνων καρπὸν κομισάμενοι προθύμως ἐπὶ τὰς ἄλλας στρατείας ἀπαντῶσιν· οἱ δὲ ἀποκνήσαντες ἐνθυμηθέντες ὅσων ἀγαθῶν αὐτοῖς ἐξὸν μεταλαβεῖν διὰ τὸ στασιάζου ἀπεκωλύθησαν εἰς τὰς λοιπὰς ἐξόδους γένωνται φρονιμώτεροι. διάνοια μὲν τοῦ ἀνδρὸς ἦδε ἐγένετο περὶ τὸ ἔργον· χόλω δὲ ὑπούλω καὶ φθόνῳ δυσμενῶν αὐτῇ καθ' αὐτὴν ἢ πράξις ἐξεταζομένη δημομαγωγία τις ἐφαίνετο εἶναι καὶ δεκασμὸς τυραννικός. ὥστε βοῆς καὶ θορύβου πᾶσα ἦν ἀνάπλευς ἢ ἀγορά, καὶ οὔτε ὁ Μάρκιος πρὸς ταῦτα εἶχεν ὅ τι ἀπολογῆσαιτο, οὔτε ὁ ὑπάτος οὔτε ἄλλος οὐδεὶς, οἷα

δὴ παραδόξου καὶ ἀπροσδοκήτου φανείσης ἐπὶ σφίσι τῆς αἰτίας. ἐπειδὴ δὲ οὐδεὶς οὐκέτι ἀπελογεῖτο, ἀνέδωκαν οἱ δήμαρχοι τὴν ψῆφον ταῖς φυλαῖς τίμημα ἐπιγράψαντες τῇ δίκῃ φυγὴν αἰδίου, κατὰ δέος οἶμαι τοῦ μὴ ἂν ἀλῶναι τὸν ἄνδρα θανάτου αὐτῷ τιμησάνταν. ὡς δ' ἐπεψήφισαν ἅπαντες, διαριθμουμένων τῶν ψήφων οὐ μέγα τὸ διάλλαγμα ἐφάνη. μᾶς γὰρ καὶ εἰκοσι τότε φυλῶν οὐσῶν αἷς ἢ ψήφος ἀνεδόθη, τὰς ἀπολυούσας φυλὰς ἔσχεν ὁ Μάρκιος ἕνεκα· ὥστε εἰ δύο προσῆλθον αὐτῷ φυλαί, διὰ τὴν ἰσοψηφίαν ἀπελύετ' ἂν ὥσπερ ὁ νόμος ἤξιου.

LXV. Αὕτη πρώτη κατ' ἀνδρὸς πατρικίου πρόκλησις εἰς τὸν δῆμον ἐγένετο ἐπὶ δίκῃ. καὶ ἀπ' ἐκείνου τοῦ χρόνου τοῖς ὕστερον λαμβάνουσι τὴν τοῦ δήμου προστάσιαν ἔθος κατέστη καλεῖν οὓς δόξειε τῶν πολιτῶν δίκην ὑφέξοντας ἐπὶ τοῦ δήμου· καὶ ἐνθένδε ἀρχαίως ὁ δῆμος ἦρθη μέγας, ἢ δὲ ἀριστοκρατία πολλὰ τοῦ ἀρχαίου ἀξιώματος ἀπέβαλε, βουλῆς τε μετέχειν ἐπιτρέπουσα τοῖς δημοτικοῖς, καὶ ἀρχὰς μετιέναι συγχωροῦσα, ἱερῶν τε προστάσις λαμβάνειν οὐ κωλύουσα, καὶ ὅσα ἄλλα τιμιώτατα ἦν καὶ ἴδια τῶν πατρικίων μόνων ἅπασιν κοινωσαμένη, τὰ μὲν ὑπ' ἀνάγκης τε καὶ ἄκουσα, τὰ δ' ἐκ προνοίας τε καὶ σοφίας, ὑπὲρ ὧν κατὰ τὸν οἰκεῖον καιρὸν ἐρῶ. τοῦτο μέντοι τὸ ἔθος, λέγω δὲ τὸ καλεῖσθαι τοὺς ἐν τῇ πόλει δυναστεύοντας ἐπὶ δίκῃν, ἧς ὁ δῆμος ἐγένετο κύριος, πολλὰς ἂν παράσχοι λόγων ἀφορμὰς τοῖς ἐπαινεῖν αὐτὸ βουλομένοις ἢ ψέγειν. πολλοὶ μὲν γὰρ ἦδη καλοὶ καὶ ἀγαθοὶ ἄνδρες οὐκ ἄξια τῆς ἀρετῆς ἔπαθον, αἰσχροῦς καὶ καθὼς τὰς ψυχὰς ὑπὸ τῶν δημάρχων ἀφαιρεθέντες·

πολλοὶ δὲ αὐθάδεις καὶ τυραννικοὶ τοῖς τρόποις λό-  
 γον ἀναγκασθέντες ὑποσχέιν τοῦ βίου καὶ τῶν ἐπι-  
 τηδευμάτων δίκας τὰς προσηκούσας ἔδοσαν. ὁπότε  
 μὲν οὖν ἀπὸ τοῦ κρατίστου γένοιτο αἱ διαγνώσεις,  
 5 καὶ καθαιρεθεῖν τὰ τῶν μεγάλων ἀρχήματα σὺν δι-  
 κῇ, μέγα τι καὶ θαυμαστὸν ἐφαίνεται εἶναι χοῆμα,  
 καὶ ὑπὸ πάντων ἐπηρεῖτο· ὁπότε δὲ ἀρετῇ φθονη-  
 1460 θείσα ἀνδρὸς τὰ κοινὰ εὖ διοικοῦντος ἀδίκως ἀναι-  
 ρεθεῖν, δεινὸν τι τοῖς ἄλλοις κατεφαίνεται, καὶ οἱ τοῦ  
 10 ἔθνους ἄρξαντες κατηγοροῦντο. πολλὰκις τε βουλευ-  
 σάμενοι οἱ Ῥωμαῖοι, πότῃρα χρὴ καταλύσαι αὐτὸ ἢ  
 φυλάττειν οἷον παρὰ τῶν προγόνων παρέλαβον, οὐ-  
 θὲν ἐπέθηκον τῇ βουλῇ πέρας. εἰ δὲ δεῖ καὶ αὐτὸν  
 [ἐμὲ] ἀποφῆνασθαι περὶ τηλικούτων πραγμάτων  
 15 γνώμην, ἐμοὶ δοκεῖ τὸ μὲν ἔθος αὐτὸ καθ' ἑαυτὸ  
 ἐξεταζόμενον χρήσιμον εἶναι καὶ πόλει τῇ Ῥωμαίων  
 ἀναγκαιότατον, κρείττον δὲ καὶ χεῖρον γίνεσθαι παρὰ  
 τοὺς τῶν δημάρχων τρόπους. ὅταν μὲν γὰρ τύχῃσι  
 20 τῆς ἐξουσίας ταύτης ἄνδρες δίκαιοι καὶ σώφρονες  
 καὶ τὰ κοινὰ ἀναγκαιότερα τῶν ἰδίων τιθέμενοι, ὁ  
 μὲν ἀδικῶν τὰ κοινὰ τιμωρίαν δούς ἢν προσῆκε  
 πολὺ δέος τοῖς ὅμοια παρεσκευασμένοις δρᾶν ἐνειρ-  
 γάσαστο· ὁ δὲ ἀγαθὸς καὶ ἀπὸ τοῦ κρατίστου πρὸς τὰ  
 κοινὰ παριῶν οὔτε δίκην ἀσχήμονα ὑπέσχευ οὔτ' εἰς  
 25 αἰτίας ἀλλοτριῶν τῶν ἐπιτηδευμάτων κατέστη. ὅταν  
 δὲ πονηροὶ καὶ ἀκόλαστοι καὶ φιλοκερδεῖς ἄνθρωποι  
 1470 τηλικαύτης ἐξουσίας τύχῃσι, τὰναντία τούτων γί-  
 νεται. ὥστε οὐ τὸ ἔθος ἐπανορθοῦσθαι προσῆκεν ὡς  
 ἡμαρτημένον, ἀλλὰ σκοπεῖν ὅπως ἄνδρες καλοὶ καὶ  
 30 ἀγαθοὶ τοῦ δήμου γενήσονται προστάται καὶ μὴ τοῖς  
 τυχοῦσι τὰ μέγιστα εἰκῆ ἐπιτραπήσεται.

LXVI. Ἡ μὲν δὴ πρώτη Ῥωμαίοις ἐμπεσοῦσα

μετὰ τὴν ἐκβολὴν τῶν βασιλέων στάσις ἔσχε τοιανύ-  
 τας αἰτίας καὶ εἰς τοῦτο κατέσκηψε τὸ τέλος· ἐμήκυνα  
 δὲ τὸν ὑπὲρ αὐτῶν λόγον τοῦ μὴ τινα θαυμάσαι,  
 πῶς ὑπέμειναν οἱ πατρίοι τηλικαύτης ἐξουσίας  
 ποιῆσαι τὸν δῆμον κύριον, οὔτε σφαγῆς τῶν ἀρίστων 5  
 ἀνδρῶν γενομένης οὔτε φυγῆς, οἷον ἐν ἄλλαις πολ-  
 λαῖς ἐγένετο πόλεσι. ποθεῖ γὰρ ἕκαστος ἐπὶ τοῖς  
 παραδόξοις ἀκούσμασι τὴν αἰτίαν μαθεῖν καὶ τὸ  
 πιστὸν ἐν ταύτῃ τίθεται μόνῃ. ἐλογιζόμεν οὖν ὅτι  
 μοι πολλοῦ καὶ τοῦ παντὸς δεήσει πιστὸς εἶναι ὁ 10  
 λόγος, εἰ τοσοῦτον ἔφη μόνον, ὅτι παρήκον οἱ πα-  
 1471 τριῖοι τοῖς δημοτικοῖς τὴν ἑαυτῶν δυναστείαν, καὶ  
 ἔξον αὐτοῖς ἐν ἀριστοκρατίᾳ πολιτεύεσθαι τὸν δῆμον  
 ἐποίησαν τῶν μερίστων κύριον, δι' ἧς δὲ συνεχω-  
 ρήθη ταῦτ' αἰτίας παρέλιπον· διὰ τοῦτο ἐπεξήλθον 15  
 ἀπάσας. καὶ ἐπειδὴ οὐχ ὅπλοισ ἀλλήλους βιασάμενοι  
 καὶ προσαναγκάσαντες, ἀλλὰ λόγοις πείσαντες μεθήρ-  
 μοσαν, παντὸς μάλιστα ἀναγκαῖον ἡγησάμην εἶναι  
 τοὺς λόγους αὐτῶν διεξελεθεῖν, οἷς τότε οἱ δυναστεύ-  
 σαντες ἐν ἑκατέροις ἐχρήσαντο. θαυμάσαιμι δ' ἂν 20  
 εἰ τινες τὰς ἐν τοῖς πολέμοις πράξεις ἀκριβῶς οἴονται  
 δεῖν ἀναγράφειν, καὶ περὶ μίαν ἔστιν ὅτε μάχην  
 πολλοὺς ἀναλίσκουσι λόγους, τόπων τε φύσεις καὶ  
 ὅπλισμῶν ιδιότητας καὶ τάξεων τρόπους καὶ στρατη-  
 γῶν παρακλήσεις καὶ τὰ ἄλλα διεξιόντες ὅσα τῆς νίκης 25  
 αἰτία τοῖς ἑτέροις ἐγένετο· πολιτικὰς δὲ κινήσεις καὶ  
 στάσεις ἀναγράφοντες οὐκ οἴονται δεῖν ἀπαγγέλλειν  
 1472 τοὺς λόγους, δι' ὧν αἱ παράδοχοι καὶ θαυμασταὶ  
 πράξεις ἐπετελέσθησαν. εἰ γὰρ τι καὶ ἄλλο τῆς Ῥω-  
 μαίων πόλεως μέγα ἐγκώμιόν ἐστι καὶ ζηλοῦσθαι ὑπὸ 30  
 πάντων ἀνθρώπων ἄξιον, κακεῖνο ἐγένετο κατ' ἐμὴν  
 δόξαν τὸ ἔργον, μᾶλλον δὲ ὑπὲρ ἅπαντα πολλὰ καὶ

θανμαστὰ ὄντα λαμπρότατον, τὸ μῆτε τοὺς δημοτικούς καταφρονήσαντας τῶν πατρικίων ἐπιχειρῆσαι αὐτοῖς, καὶ πολὺν ἐργασασμένους τῶν κρατίστων νόνον ἅπαντα τὰ κείνων παραλαβεῖν, μῆτε τοὺς ἐν τοῖς 5 ἀξιώμασιν ἢ διὰ σφῶν αὐτῶν ἢ ξενικαῖς ἐπικουρίαις χρησαμένους διαφθεῖραι τὸ δημοτικὸν ἅπαν καὶ τὸ λοιπὸν οἰκεῖν ἀδεῶς τὴν πόλιν· ἀλλ' ὥσπερ ἀδελφούς ἀδελφοῖς ἢ παῖδας γονεῦσιν ἐν οἰκίᾳ σῶφρονι περὶ τῶν ἴσων καὶ δικαίων διαλεγόμενους πειθοῖ 10 καὶ λόγῳ διαλύεσθαι τὰ νείκη, ἀνήκεστον δὲ ἢ ἀνόσιον ἔργον μὴθὲν ὑπομεῖναι δοῦσαι κατ' ἀλλήλων· οἶα Κερκυραῖοι τε κατὰ τὴν στάσιν εἰργάσαντο καὶ Ἀργεῖοι καὶ Μιλήσιοι καὶ Σικελία πᾶσα καὶ συχναὶ ἄλλαι πόλεις. ἐγὼ μὲν οὖν διὰ ταῦτα προειλόμην 15 ἀκριβεστέρην μᾶλλον ἢ βραχυτέραν ποιήσασθαι τὴν διήγησιν· κρινέτω δ' ἕκαστος ὡς βούλεται. 1473

LXVII. Τότε δ' οὖν τῆς δίκης τοῦτο λαβούσης τὸ τέλος, ὁ μὲν δῆμος ἀπελύετο προσειληφώς ἀνόητον 20 αἴχημα καὶ καθηρημέναι τὴν ἀριστοκρατίαν οἰόμενος· οἱ δὲ πατρικοὶ κατηρεῖς τε καὶ ταπεινοὶ καὶ δι' αἰτίας ἔχοντες τὸν Οὐαλέριον, ὑφ' οὗ πεισθέντες ἐπέτρεψαν τῷ δήμῳ τὴν δίκην· ἦν τε οἰμωγὴ καὶ δάκρυα τῶν οἰκτιρόντων τε καὶ προπεμπόντων τὸν Μάρκιον. αὐτὸς δὲ ὁ Μάρκιος οὔτε ἀνακλαυσάμενος 25 ὤφθη τὰς αὐτοῦ τύχας οὔτε ἀποιμώξας οὔτε ἄλλο εἰπὼν ἢ θράσας ἀνάξιον τῆς ἑαυτοῦ μεγαλοφροσύνης οὐδ' ὀτιοῦν· ἐτι δὲ μᾶλλον ἐδήλωσε τὴν γενναιότητα καὶ καρτερίαν τῆς γνώμης, ἐπειδὴ οἰκαδὲ ἀφικόμενος γυναικὰ τε εἶδε καὶ μητέρα καταρρηγνυμένης τοὺς 30 πέπλους καὶ τὰ στέφρα τυπτούσας καὶ οἶα εἰκός ἐστιν ἐπὶ τοιαύταις συμφοραῖς λέγειν τὰς ἀποξεννυμένας ἀπὸ τῶν ἀναγκαιοτάτων σφίσι θανάτοις ἢ

φυγαῖς ἀναβοῶσας. οὐθὲν γὰρ πρὸς τὰ δάκρυα καὶ τοὺς θρήνους τῶν γυναικῶν ἔπαθεν, ἀσπασάμενος δὲ αὐτὰς μόνον, καὶ παρακαλέσας γενναίως φέρειν τὰς συμφοράς, τοὺς τε παῖδας αὐταῖς παρακαταθέμενος· ὁ γὰρ πρεσβύτερος τῶν παίδων ἦν δέκα γεγονώς ἔτη, 5 ὁ δὲ νεώτερος ἔτι ὑπαγκάλιος· ἄλλο δὲ οὐθὲν οὔτε φιλοφρονησάμενος οὔτε διοικησάμενος οἷς εἰς τὴν φυγὴν χρήσεσθαι ἔμελλεν, ἐξῆει κατὰ σπουδὴν ἐπὶ τὰς πύλας, οὐθενὶ δηλώσας ὅπου τὴν ἀπαλλαγὴν ποιήσοιτο. 10

LXVIII. Ὀλίγαις δ' ὕστερον ἡμέραις καθῆκε μὲν ὁ τῶν ἀρχαιρεσιῶν καιρὸς, ὑπάτοι δὲ ἀπεδείχθησαν ὑπὸ τοῦ δήμου Κόιντος Σουλπίκιος Καμερῖνος καὶ Σέργιος Λάγκιος Φλαύιος τὸ δευτέρον. 1475 15 ταραχαὶ δὲ τινες ἐνέπιπτον ἐκ δειμάτων δαιμονίων τῇ πόλει συχναί· ὄψεις τε γὰρ οὐκ εἰωθυῖαι ἐφαίνοντο πολλοῖς, καὶ φωναὶ ἠκούοντο οὐθενὸς ὄντος τοῦ φθεγγόμενου, γοναὶ τε ἀνθρώπων καὶ βοσκημάτων πολὺ ἐκ τοῦ κατὰ φύσιν ἐμβεβηκυῖαι εἰς τὸ 20 ἀπιστόν τε καὶ τερατώδες ἐφέροντο, χρησμοὶ τε ἤδοντο ἐν πολλοῖς χωρίοις, καὶ θειασμοῖς κάτοχοι γυναικες οἰκτρὰς ἐμαντεύοντο καὶ δεινὰς τῇ πόλει τύχας. ἤψατο δὲ τις καὶ νόσος τοῦ πλήθους λοιμικὴ καὶ πολλὴν ἐποίησε βοσκημάτων φθοράν· ἀνθρώπων μὲντοι θάνατος οὐ πολὺς ἐγένετο, ἀλλ' ἄχρι νόσων 25 τὸ δεινὸν ἐχώρησεν· τοῖς μὲν δὲ ταῦτα ἐδόκει κατὰ θεοῦ γενέσθαι γνώμην νεμεσῶντος, ὅτι τὸν ἀριστον τῶν πολιτῶν ἐξήλασαν τῆς πατρίδος, τοῖς δὲ οὐθὲν 1476 τῶν γινομένων θεοῦ ἔργον, ἀλλὰ τυχηρὰ καὶ ταῦτα καὶ τᾶλλα πάντα ἀνθρώπεια εἶναι πάθη. ἔπειτα ἦκέ τις ἐπὶ τὸ συνέδριον τῆς βουλῆς ἄρρωστος ἐπὶ κλιβιδίου κομιζόμενος, Τίτος Λατίνιος ὄνομα, πρεσβύ-

τερός τε ἀνὴρ καὶ οὐσίας ἱκανῆς κύριος, αὐτουργός  
 δὲ καὶ τὸν πλείω χρόνον τοῦ βίου ζῶν ἐν ἀγροῶ.  
 οὗτος εἰς τὴν βουλὴν ἐνεχθεὶς ἔφη δόξαι καθ'  
 ὕπνου ἐπιστάντα τὸν Καπιτώλιον Δία λέγειν αὐτῷ·  
 5 Ἴθι, Λατίνε, καὶ λέγε τοῖς πολίταις, ὅτι μοι τῆ  
 νεωστὶ πομπῇ τὸν ἠγούμενον ὀρχηστὴν οὐ καλὸν  
 ἔδωκαν, ἵνα ἀναθῶνται τὰς ἐορτὰς καὶ ἐξ ἀρχῆς  
 ἑτέρας ἐπιτελέσωσιν· οὐ γὰρ δέδεγμαί ταύτας. αὐτὸς  
 δ' ἐκ τῶν ὕπνων ἔφη ἀναστὰς παρ' οὐδὲν ἠγγέσθαι  
 10 τὸ ὄναρ, ἀλλ' ἐν τι τῶν πολλῶν καὶ ἀπατηλῶν ὑπο-  
 λαβεῖν. ἔπειτα αὐτῷ πάλιν κατὰ τοὺς ὕπνους ἐπι-  
 φανέν τὸ αὐτὸ εἶδωλον τοῦ θεοῦ χαλεπαίνειν τε καὶ  
 ἀγανακτεῖν, ὅτι οὐκ ἀπήγγειλε πρὸς τὴν βουλὴν τὰ  
 1477 κελευσθέντα, καὶ ἀπειλεῖν εἰ μὴ τοῦτο δράσει διὰ  
 15 ταχέων, ὅτι σὺν μεγάλῳ μαθήσεται κακῷ μὴ ὀλιγα-  
 ρεῖν τῶν δαιμονίων. ἰδὼν δὲ καὶ τὸ δεύτερον ὄναρ,  
 τὴν αὐτὴν ἔφη ποιήσασθαι περὶ αὐτοῦ δόξαν, καὶ  
 ἅμα δι' αἰσχύνης [ἔχειν] τὸ πρᾶγμα λαβεῖν, ἀνὴρ αὐ-  
 20 τουργός καὶ γέρον ὄνειρατα πρὸς τὴν βουλὴν ἐκφέ-  
 ρων ὀττειάς καὶ δειμάτων μεστά, μὴ καὶ γέλωτα  
 ὄφλη. ὀλίγαις δ' ὕστερον ἡμέραις τὸν υἱὸν αὐτοῦ  
 νέον καὶ καλὸν οὔτε ὑπὸ νόσων οὔτε ὑπ' ἄλλης τινὸς  
 αἰτίας φανερῶς συναρπασθέντα αἰφνιδίως ἀποθα-  
 25 νεῖν· καὶ αὐτὸς τὴν τοῦ θεοῦ ὄψιν φανείσαν ἐν τοῖς  
 ὕπνοις δηλοῦν, ὅτι τῆς ὑπεροφίας καὶ τῆς καταφρο-  
 νήσεως τῶν αὐτοῦ λόγων τὴν μὲν ἤδη δέδωκε δίκην  
 τὸν υἱὸν ἀφαιρεθεὶς, τὰς δὲ ὀλίγων ὕστερον δώσει. 1478  
 ταῦτα δὲ ἀκούσας, ἔφη καθ' ἠδονὴν δέξασθαι τὸν  
 λόγον, εἰ μέλλοι θάνατος αὐτῷ ἐλεύσεσθαι παρη-  
 30 μεληκότι τοῦ βίου· τὸν δὲ θεὸν οὐ ταύτην αὐτῷ  
 προσθεῖναι τὴν τιμωρίαν, ἀλλ' εἰς ἅπαντα τὰ μέλη  
 τοῦ σώματος ἀφορήτους καὶ δεινὰς ἐμβαλεῖν ἀλγη-

δόνας, ὥστε μηδὲν ἄρθρον ἄνευ κατατάσεως τῆς  
 ἰσχύατος δύνασθαι κινεῖν. τότε δὴ τοῖς φίλοις κοινο-  
 σάμενος τὰ συμβεβηκότα καὶ κελευσθεὶς ὑπ' ἐκείνων  
 ἦκειν ἐπὶ τὴν βουλὴν. διεξιῶν δὲ ταῦτα κατὰ μικρὸν  
 ἰδόμενος τῶν ἀλγηδόνων ἀπαλλάττεσθαι· καὶ ἐπειδὴ 5  
 πάντα διεξῆλθεν ἀναστὰς ἐκ τοῦ κλινιδίου καὶ τὸν  
 θεὸν ἀναβοήσας, ἀπήει τοῖς ἑαυτοῦ ποσὶ διὰ τῆς πό-  
 λεως οἴκαδε ὕγιης.

LXVIII. Ἡ δὲ βουλή δέους ἀνάπλεως ἐγένετο,  
 καὶ ἀγανῆς ἦν ἕκαστος οὐκ ἔχων συμβαλεῖν, ὅτι τὸ 10  
 δηλούμενον ἦν ὑπὸ τοῦ θεοῦ, καὶ τίς ποτε ὁ [πρὸ]  
 1479 τῆς πομπῆς ὀρχηστῆς ἠγούμενος οὐ καλὸς αὐτῷ  
 ἐφάνη. ἔπειτα λέγει τις ἐξ αὐτῶν ἀναμνησθεὶς τὸ  
 γενόμενον, καὶ πάντες ἐμαρτύρησαν. ἦν δὲ τοιούδε·  
 15 ἀνὴρ Ῥωμαῖος οὐκ ἀφανῆς θεράποντα ἰδίων ἐπὶ τι-  
 μωρία θανάτου παραδούς τοῖς ὁμοδούλοις ἄγειν, ἵνα  
 δὴ περιφανῆς ἢ τιμωρία τοῦ ἀνθρώπου γένηται, δι'  
 ἀγορᾶς αὐτὸν ἐκέλευσε μαστιγούμενον ἔλκειν καὶ εἰ  
 τις ἄλλος ἦν τῆς πόλεως τόπος ἐπιφανῆς ἠγούμενον  
 τῆς πομπῆς, ἦν ἔστειλε τῷ θεῷ κατ' ἐκείνον τὸν 20  
 καιρὸν ἢ πόλις. οἱ δὲ ἄγοντες τὸν θεράποντα ἐπὶ  
 τὴν τιμωρίαν τὰς χεῖρας ἀποτεινάντες ἀμφοτέρας  
 καὶ ξύλω προσδήσαντες παρὰ τὰ στέρα τε καὶ τοὺς  
 1480 ὤμους καὶ μέχρι τῶν καρπῶν διήκοντι παρηκολού-  
 θουν ξαίνοντες μάλιστα γυμνὸν ὄντα. ὁ δ' ἐν τοιαῦδε 25  
 ἀνάγκῃ κρατούμενος ἐβόα τε φωνὰς δυσφήμους, ἃς  
 ἢ ἀλγηδῶν ἐβούλετο, καὶ κινήσεις διὰ τὴν αἰκίαν  
 ἀσχήμονας ἐκνεῖτο. τοῦτον δὴ πάντες ἐνόμισαν  
 εἶναι τὸν ὑπὸ τοῦ θεοῦ μνηνόμενον ὀρχηστὴν οὐ  
 30 καλόν.

LXX. Ἐπεὶ δὲ κατὰ τοῦτο γέγονα τῆς ἱστορίας  
 τὸ μέρος, οὐκ οἶομαι δεῖν τὰ περὶ τὴν ἐορτὴν ἐπιτε-

λούμενα ὑπ' αὐτῶν παρελθεῖν, οὐχ ἵνα μοι χαρι-  
 στέρα γένηται προσθήκας λαβοῦσα θεατρικῆς καὶ  
 λόγους ἀνθηροτέρους ἢ διήγησις, ἀλλ' ἵνα τῶν ἀναγ-  
 καίων τι πιστώσῃται πραγμάτων, ὅτι τὰ συνοικί-  
 5 σαυτα ἔθνη τὴν Ῥωμαίων πόλιν Ἑλληνικὰ ἦν ἐκ  
 τῶν ἐπιφανεστάτων ἀποικισθέντα τόπων, ἀλλ' οὐχ  
 ὥσπερ ἔνιοι νομίζουσι βάρβαρα καὶ ἀνέστια ὑπεσχό-  
 μην γὰρ ἐπὶ τῷ τέλει τῆς πρώτης γραφῆς, ἦν περὶ  
 τοῦ γένους αὐτῶν συνταξάμενος ἐξέδωκα, μυθολογίας 1481  
 10 βεβαιώσῃ τεκμηρίοις τὴν πρόθεσιν, ἔθνη καὶ νόμιμα  
 καὶ ἐπιτηδεύματα παλαιὰ παρεχόμενος αὐτῶν, ἃ  
 μέχρι τοῦ κατ' ἐμὲ φυλάττουσι χρόνου οἷα παρὰ τῶν  
 προγόνων ἐδέξαντο· οὐχ ἠγούμενος ἀποχρῆν τοῖς  
 ἀναγράφουσι τὰς ἀρχαίας καὶ τοπικὰς ἱστορίας, ὡς  
 15 παρὰ τῶν ἐπιχωρίων αὐτὰς παρέλαβον ἀξιοπίστως  
 διελθεῖν, ἀλλὰ καὶ μαρτυριῶν οἰόμενος αὐταῖς δεῖν  
 πολλῶν καὶ δυσαντιλέκτων, εἰ μέλλουσι πιστὰ φρα-  
 νήσεσθαι. ἐν αἷς πρώτοι καὶ κυριώτατα πάντων εἶναι  
 πείθομαι τὰ γινόμενα καθ' ἑκάστην πόλιν περὶ θεῶν  
 20 καὶ δαιμόνων πατρίους σεβασμούς. ταῦτα γὰρ ἐπὶ  
 μῆκιστον χρόνον διὰ φυλακῆς ἔχει Ἑλλάς τε καὶ βάρ-  
 βαρος χώρα, καὶ οὐθὲν ἀξιοῖ καινοτομεῖν εἰς αὐτὰ  
 ὑπὸ δείματος κρατουμένη μνημάτων δαιμονίων. μά-  
 λιστα δὲ τοῦτο πεπόνθασιν οἱ βάρβαροι διὰ πολλὰς  
 25 αἰτίας, ἃς οὐ καιρὸς ἐν τῷ παρόντι λέγειν, καὶ χρό-  
 νος οὐδεὶς μέχρι τοῦ παρόντος ἀπομαθεῖν ἢ παρανο-  
 μῆσαι τι περὶ τοὺς ὀργασμούς τῶν θεῶν ἐπεισεν 1482  
 οὔτ' Αἰγυπτίους οὔτε Αἴβνας οὔτε Κελτοὺς οὔτε  
 Σκύθας οὔτ' Ἰνδοὺς οὔτε ἄλλο βάρβαρον ἔθνος οὐ-  
 30 δὲν ἀπλῶς· εἰ μὴ τινες ὑφ' ἑτέρων ἐξουσία ποτὲ  
 γενόμενοι τὰ τῶν κρατησάντων ἠναγκάσθησαν ἐπι-  
 τηδεύματα μεταλαβεῖν. τῇ δὲ Ῥωμαίων πόλει τοιαύ-

της οὐδέποτε πειραθῆναι συνέβη τύχης, ἀλλ' αὐτὴ  
 τὰ δίκαια τάττει διὰ παντὸς ἑτέροις. εἰ δὴ βάρβαρον  
 αὐτῶν τὸ γένος ἦν, τοσούτου ἂν ἐδέησαν αὐτοὶ τὰ  
 πατρῷα ἱερά καὶ τοὺς ἐπιχωρίους ἐθισμοὺς ἀπομα-  
 θεῖν, δι' οὓς εἰς τοσαύτην προήλθον εὐδαιμονίαν, 5  
 ὥστε καὶ τοῖς ἄλλοις ἅπασιν ὧν ἤρχον ἐν καλῷ  
 κατέστησαν τοὺς θεοὺς τοῖς σφετέροις τιμῶν νομί-  
 μοις· καὶ οὐθὲν ἂν ἐκάλυπεν ἅπαν ἐκβεβαρβα-  
 ρῶσθαι τὸ Ἑλληνικὸν ὑπὸ Ῥωμαίων ἐβδόμην ἤδη  
 κρατούμενον ὑπ' αὐτῶν γενεάν, εἴπερ ἦσαν βάρ- 10  
 βαροι.

1483 LXXI. Ἄτερος μὲν οὖν ἀποχρῆν ἂν ὑπέλαβε  
 καὶ αὐτὰ τὰ νῦν πραττόμενα ἐν τῇ πόλει μνηύμα-  
 τα οὐ μικρὰ τῶν παλαιῶν ἐπιτηδευμάτων ὑπολαβεῖν  
 15 ἐγὼ δ', ἵνα μὴ τις ἀσθενῆ τὴν πίστιν εἶναι ταύτην  
 ὑπολάβῃ [εἴτε] κατ' ἐκείνην τὴν ἀπίθανον ὑπόλη-  
 ψιν, ὅτι παντὸς τοῦ Ἑλληνικοῦ κρατήσαντες ἀσμένως  
 ἂν τὰ κρείττω μετέμαθον ἔθνη τῶν ἐπιχωρίων ὑπερι-  
 δόντες, ἐξ ἐκείνου ποιήσομαι τοῦ χρόνου τὴν τέ-  
 κμαρσιν, ὅτ' οὐπω τὴν τῆς Ἑλλάδος εἶχον ἡγεμονίαν 20  
 οὐδὲ ἄλλην διαπόντιον οὐδεμίαν ἀρχὴν, Κόιντω  
 Φαβίῳ βεβαιωτῇ χρώμενος καὶ οὐδεμιᾶς ἔτι δεό-  
 μενος πίστεως ἑτέρας· παλαιότατος γὰρ ἀνὴρ τῶν  
 τὰ Ῥωμαϊκὰ συνταξαμένων, καὶ πίστιν οὐκ ἐξ ὧν  
 ἤκουσε μόνον ἀλλὰ καὶ ἐξ ὧν αὐτὸς ἔγνω παρεχό- 25  
 μενος.

Ταύτην δὴ τὴν ἑορτὴν ἐψηφίσατο μὲν ἡ βουλὴ  
 τῶν Ῥωμαίων ἄγειν, ὡς καὶ πρότερον ἔφην, κατὰ  
 τὰς γενομένας εὐχὰς ὑπὸ τοῦ δικτάτορος Αὔλου Πο-  
 1484 στομίου, ὅτ' ἐμελλεν ἀγωνίζεσθαι πρὸς τὰς ἀποστά- 30  
 σας Λατίνων πόλεις κατάγειν ἐπιχειρούσας Ταρκύ-  
 νιον ἐπὶ τὴν ἀρχὴν· ἀναλοῦσθαι δ' ἔταξε καθ'



ἕκαστον ἐνιαυτὸν εἰς τε τὰς θυσίας καὶ τοὺς ἀγῶνας ἀργυρίου πεντακοσίας μνᾶς· καὶ μέχρι τοῦ Φοινικικοῦ πολέμου τοῦτ' ἔδαπάνων εἰς τὴν ἑορτήν. ἐν δὲ ταῖς ἱεραῖς ἡμέραις ταύταις πολλὰ μὲν καὶ ἄλλα ἐγένετο νόμοις Ἑλληνικοῖς κατὰ τε πανηγυρισμοὺς καὶ ξένων ὑποδοχὰς καὶ ἐκεχειρίας, ἃ πολὺ ἂν ἔργον εἶη λέγειν. τὰ δὲ περὶ πομπῆν τε καὶ θυσίαν καὶ τὰ κατὰ τοὺς ἀγῶνας· ἀπόρη γὰρ ἐκ τούτων καὶ τὰ μὴ λεχθέντα ἐξετάζειν· τοιάδε.

10 LXXII. Πρὶν ἄρξασθαι τῶν ἀγῶνων πομπὴν ἔστελλον τοῖς θεοῖς οἱ τὴν μεγίστην ἔχοντες ἑξουσίαν, ἀπὸ τοῦ Καπιτωλίου τε καὶ δι' ἀγορᾶς ἄγοντες ἐπὶ τὸν μέγαν ἱππόδρομον. ἡγούντο δὲ τῆς πομπῆς πρῶτον μὲν οἱ παῖδες αὐτῶν οἱ πρόσηβοί τε καὶ τοῦ

15 πομπεύειν ἔχοντες ἡλικίαν, ἱππεῖς μὲν ὧν οἱ πατέρες τιμῆματα ἱππέων εἶχον, πεζοὶ δὲ οἱ μέλλοντες ἐν τοῖς πεζοῖς στρατεύεσθαι· οἱ μὲν κατ' Ἰλας τε καὶ κατὰ λόχους, οἱ δὲ κατὰ συμμορίας τε καὶ τάξεις, 1480 ὡς εἰς διδασκαλεῖον πορευόμενοι· ἵνα φανερὰ γίνοιτο

20 τοῖς ξένοις ἢ μέλλουσα ἀνδροῦσθαι τῆς πόλεως ἀμὴ πλήθός τε καὶ κάλλος οἷα τις ἦν. τούτοις ἡκολούθουν ἠνίοχοι τέθριππά τε καὶ συνωρίδας καὶ ἵππους ἀξέυκτους ἐλαύνοντες· μεθ' οὓς οἱ τῶν ἀθλημάτων ἀγωνισταὶ τῶν τε κούφων καὶ τῶν βαρέων, τὸ μὲν ἄλλο

25 σῶμα γυμνοί, τὸ δὲ περὶ τὴν αἰδῶ καλυπτόμενοι. τοῦτο καὶ εἰς ἐμὲ τὸ ἔθος ἐν Ῥώμῃ διέμενεν, ὡς ἐξ ἀρχῆς ἐγένετο παρ' Ἑλλήσιν· ἐν δὲ τῇ Ἑλλάδι καταλέλυται Λακεδαιμονίων αὐτὸ καταλυσάντων. ὁ δὲ πρῶτος ἐπιχειρήσας ἀποδυθῆναι τὸ σῶμα, καὶ γυμνὸς

30 Ὀλυμπιάσι δραμῶν ἐπὶ τῆς πεντεκαίδεκάτης ὀλυμπιάδος Ἀκανθος ὁ Λακεδαιμόνιος ἦν. τὰ δὲ πρὸ τούτων δι' αἰσχύνῃς εἶχον ἅπαντες Ἑλληνες ὅλα

1480 γυμνὰ φαίνεῖν ἐν ταῖς ἀγωνίαις τὰ σώματα, ὡς Ὀμηρος τεκμηριοῖ μαρτύρων ἀξιοπιστότατος τε καὶ ἀρχαιοτατος ὧν, ζωννυμένους τοὺς ἥρωας ποιῶν. τὴν γοῦν Αἴαντος καὶ Ὀδυσσεῶς πάλην ἐπὶ τῇ Πατρόκλου ταφῇ γενομένην ἀφηγοῦμενός φησι·

5 Τὸ δὲ ζωσαμένω βήτην ἐς μέσσον ἀγῶνα· καὶ ἔτι σαφέστερον ἐν Ὀδυσσεΐα τοῦτο ποιεῖ φανερόν ἐπὶ τῆς Ἴρου καὶ Ὀδυσσεῶς πυγμῆς ἐν τοῖσδε τοῖς ἔπεσιν·

Ὡς ἔφαθ'· οἱ δ' ἄρα πάντες ἐπήνεον· αὐτὰρ 10 Ὀδυσσεὺς

Ζώσατο μὲν ῥάκεσιν περὶ μῆδεα, φαῖνε δὲ μηρῶς

Καλούς τε μεγάλους τε. φάνεν δὲ οἱ εὐρέες ὦμοι 15

Στήθεά τε στιβαροί τε βραχίονες.

τὸν δὲ πτωχὸν οὐκέτι βουλόμενον μάχεσθαι, ἀλλ' ἀποδειλιῶντα εἰσάγων τάδε εἶρηκεν·

Ὡς ἄρ' ἔφαν· Ἴρω δὲ κακῶς ὠρίνετο θυμός·

Ἀλλὰ καὶ ὡς μνηστῆρες ἄγον ζώσαντες ἀνάγκη. 20 τοῦτο δὴ τὸ ἔθος ἀρχαῖον ἐν τοῖς Ἑλλήσιν ὄν διαφυλάττοντες μέχρι τοῦδε Ῥωμαῖοι δῆλοί εἰσιν οὐ προσμαθόντες παρ' ἡμῶν ὕστερον, ἀλλ' οὐδὲ μεταθήμενοι σὺν χρόνῳ καθάπερ ἡμεῖς. ἡκολούθουν δὲ τοῖς ἀγωνισταῖς ὄρχηστῶν χοροὶ πολλοὶ τριχῆ νενε- 25 μημένοι, πρῶτοι μὲν ἀνδρῶν, δεῦτεροι δὲ ἀργυρίων, τελευταῖοι δὲ παίδων, οἷς παρηκολούθουν ἀύληται τε ἀρχαίκοις ἐμφυσῶντες ἀλλίσκοις βραχέσιν, ὡς καὶ εἰς τὸδε χρόνον γίνεται, καὶ καθαρισταὶ λύρας ἑπτα- 30 χόρδους ἑλεφαντίνας καὶ τὰ καλούμενα βάρβιτα κηρίκοντες. ὧν παρὰ μὲν Ἑλλήσιν ἐκλέλοιπεν ἢ χρησῆς ἐπ' ἐμοῦ πάτριος οὕσα· παρὰ δὲ Ῥωμαίοις ἐν

ἀπάσαις φυλάττεται ταῖς ἀρχαίαις θνηπολίαις. σκευαὶ  
 δὲ τῶν ὄρχηστῶν ἦσαν χιτῶνες φοινίκεοι ξωστήρσι  
 χαλκίοις ἐσφιγμένοι, καὶ ξίφη παρηστημένα, καὶ  
 λόγχαι βραχύτεραι τῶν μετρίων· τοῖς δὲ ἀνδράσι  
 5 καὶ κράνη χάλκεα λόφοις ἐπισήμοις κεκοσμημένα  
 καὶ πτεροῖς. ἤγειτο δὲ καθ' ἕκαστον χορὸν εἰς  
 ἀνὴρ, ὃς ἐνεδίδου τοῖς ἄλλοις τὰ τῆς ὄρχήσεως σχή-  
 ματα πρότερος, εἰδοφορῶν τὰς πολεμικὰς καὶ συν-  
 τόνους κινήσεις ἐν τοῖς προειλευσματικοῖς ὡς τὰ  
 10 πολλὰ θυθμοῖς. Ἑλληνικὸν δὲ ἄρα καὶ τοῦτο ἦν ἐν  
 τοῖς πᾶσι παλαιὸν ἐπιτήδευμα, ἐνόπιος ὄρχησις ἢ  
 καλουμένη πυροίχη, εἴτε Ἀθηναῖς πρώτης ἐπὶ Τι-  
 τάνῳ ἀφανισμῷ χορεύειν καὶ ὀρχεῖσθαι σὺν τοῖς  
 ὄπλοις τάπινικια ὑπὸ χαρᾶς ἀρξαμένης, εἴτε παλαι-  
 15 τερον ἔτι Κουρήτων αὐτὴν καταστησάμενων, ὅτε τὸν  
 Δία τιθνησόμενοι θέλγειν ἐβούλοντο κτύπῳ τε  
 ὄπλων καὶ κινήσει μελῶν ἐνρhythμῷ καθάπερ ὁ μὴ-  
 1489 θος ἔχει. δηλοῖ δὲ καὶ τούτου τὴν ἀρχαιότητα ὡς  
 ἐπιχωρίου τοῖς Ἑλλήσιν Ὅμηρος πολλαχῆ μὲν καὶ  
 20 ἄλλη, μάλιστα δ' ἐν ἀσπίδος κατασκευῇ, ἣν Ἀχιλλεὺς  
 δωρήσασθαι φησὶν Ἡφαιστον. ὑποθέμενος γὰρ ἐν  
 αὐτῇ δύο πόλεις τὴν μὲν εἰρήνην κοσμουμένην, τὴν  
 δὲ πολέμῳ κακοπαθοῦσαν, ἐν ἣ τὴν ἀμείνω καθί-  
 στησι τύχην ἐορτὰς ποιῶν καὶ γάμους καὶ θαλίαις  
 25 ὡσπερ εἰκὸς καὶ ταῦτα λέγει·

Κοῦροι δ' ὄρχηστήρες ἐδίμεον· ἐν δ' ἄρα  
 τοῖσιν

Ἀλλοὶ φόρμιγγές τε βοὴν ἔχον· αἱ δὲ γυναικες

Ἰστάμεναι θαύμαζον ἐπὶ προθύροισιν ἐκάστη.

30 καὶ αὐτὶς ἕτερον ἐν αὐτῇ λέγων διακεκοσμησθαι  
 Κρητικὸν ἠιδέων τε καὶ παρθένων χορὸν ὡδὲ  
 εἶρηκεν·

Ἐν δὲ χορὸν ποίικιλλε περικλυτὸς ἀμφιγυήεις,  
 1490 Τῷ Ἴκελον οἶόν ποτ' ἐνὶ Κνωσσῷ εὐρείῃ  
 Δαίδαλος ἤσκησεν καλλιπλοκάμῳ Ἀριάδνῃ.  
 Ἐνθα μὲν ἠίδεοι καὶ παρθένοι ἀλφεισίβοια  
 Ὁρχεῦντ' ἀλλήλων ἐπὶ καρπῷ χεῖρας ἔχουσαι. 5  
 κόσμον τε αὐτοῦ ἀφηγούμενος, ἵνα δῆλον ἦμῖν  
 ποιήσειεν, ὅτι ἢ τῶν ἀρρένων κινήσεις ἐνόπιος ἦν,  
 ταῦτα δὲ λέγει·

Καὶ ὅ' αἱ μὲν καλὰς στεφάνους ἔχον, οἱ δὲ μα-  
 χαίρας 10

Εἶχον χρυσείας ἐξ ἀργυρέων τελαμώνων.  
 ἠγεμόνας τε τῆς ὄρχήσεως αὐτῶν τοὺς ἐνδιδόντας  
 τοῖς ἄλλοις καὶ προκαταρχομένους εἰσάγων, τοιαῦτα  
 γράφει·

Πολλὸς δ' ἰμερόεντα χορὸν περιῖσταθ' ὅμιλος 15  
 Τερόμενοι· δοιῶ δὲ κυβιστητῆρος κατ' αὐτοῦς  
 Μολπῆς ἐξάρχοντες ἐδίμενον κατὰ μέσους.

οὐ μόνον δ' ἐκ τῆς ἐναγωνίου τε καὶ κατεσπουδα-  
 σμένης ὄρχήσεως τῶν χορῶν, ἢ παρὰ τὰς θνηπολίας  
 τε καὶ πομπὰς ἐχρῶντο Ῥωμαῖοι, τὸ συγγενὲς ἂν τις 20  
 1491 αὐτῶν τὸ πρὸς τοὺς Ἑλληνας ἴδοι, ἀλλὰ καὶ ἐκ τῆς  
 κερτόμου καὶ τωθαστικῆς. μετὰ γὰρ τοὺς ἐνοπλίους  
 χοροὺς οἱ τῶν σατυριστῶν ἐπόμπουχοροί, τὴν  
 Ἑλληνικὴν εἰδοφοροῦντες σίκιρινν. σκευαὶ δ' αὐτοῖς  
 ἦσαν, τοῖς μὲν εἰς Σιληνοὺς εἰκασθεῖσι μαλλωτοὶ 25  
 χιτῶνες, οὓς ἐνιοὶ χορταίους καλοῦσι, καὶ περιβό-  
 λαια ἐκ παντὸς ἄνθους· τοῖς δὲ εἰς Σατύρους περι-  
 βώματα καὶ δοραὶ τράγων καὶ ὀρθότριχες ἐπὶ ταῖς  
 κεφαλαῖς φόβαι καὶ ὅσα τούτοις ὅμοια. οὗτοι κατ-  
 ἰσκαπτὸν τε καὶ κατεμιμῶντο τὰς σπουδαίας κινή- 30  
 σεις ἐπὶ τὰ γελιοτέτερα μεταφέροντες. δηλοῦσι δὲ καὶ  
 αἱ τῶν θριάμβων εἰσοδοὶ παλαιᾶν καὶ ἐπιχώριον

οὔσαν Ῥωμαίοις τὴν κέρτομον καὶ σατυρικὴν παι-  
διάν. ἐφείτῃ γὰρ τοῖς κατάγονσι τὰς νίκας λαμβί-  
ξεν τε καὶ κατασκώπτειν τοὺς ἐπιφανεστάτους ἄν- 1400  
δρας αὐτοῖς στρατηλάταις, ὡς Ἀθηῆνσι τοῖς πομ-  
5 πενταῖς τοῖς ἐπὶ τῶν ἀμαξῶν πρότερον ἅμα [τοῖς]  
σκώμμασι παροχοιμένοις, νῦν δὲ ποιήματα ἄδουσιν  
αὐτοσχέδια. εἶδον δὲ καὶ ἐν ἀνδρῶν ἐπισήμων τα-  
φαῖς ἅμα ταῖς ἄλλαις πομπαῖς προηγουμένους τῆς  
κλήνης τοὺς σατυριστῶν χοροὺς κινουμένους τὴν σί-  
10 κινυῖν ὄρχησιν, μάλιστα δ' ἐν τοῖς τῶν εὐδαιμόνων  
κῆδεσιν. ὅτι δὲ οὔτε Λιγύων οὔτε Ὀμβρικῶν οὔτε  
ἄλλων τινῶν βαρβάρων τῶν ἐν Ἰταλίᾳ κατοικούντων  
εὔρεμα ἢ σατυρικὴ παιδιὰ καὶ ὄρχησις ἦν, ἀλλὰ  
Ἑλλήνων, δέδοικα μὴ καὶ ὀκλήρως εἶναι τισὶ δόξω 1400  
15 λόγοις πλείοσι πιστούσθαι ὁμολογούμενον πρᾶγμα  
βουλούμενος.

Μετὰ δὲ τοὺς χοροὺς τούτους καθαρισταὶ τε  
ἄνθρωποι καὶ ἀνλήται πολλοὶ παρεξήεσαν· καὶ μετ'  
αὐτοὺς οἳ τε τὰ θυμιατήρια κομίζοντες, ἐφ' ὧν ἀρώ-  
20 μάτα καὶ λιβανωτὸς παρ' ὄλην ὁδὸν ἐθυμιάτο, καὶ  
οἳ τὰ πομπεῖα παραφέροντες ἀργυρίου καὶ χρυσοῦ  
πεποιημένα τὰ τε ἱερά καὶ τὰ δημόσια. τελευταῖα  
δὲ πάντων αἱ τῶν θεῶν εἰκόνες ἐπόμπενον ἅμοις  
ὑπ' ἀνδρῶν φερόμεναι, μορφάς τε ὁμοίας παρέχου-  
25 σαι ταῖς παρ' Ἑλλήσι πλαττομέναις καὶ σκευὰς καὶ  
σύμβολα καὶ δωρεάς, ὧν εὐρεταὶ καὶ δοτήρες ἀνθρώ-  
ποις ἕκαστοι παραδίδονται, οὐ μόνον Διὸς καὶ Ἥρας  
καὶ Ἀθηνᾶς καὶ Ποσειδῶνος καὶ τῶν ἄλλων, οὐδ'  
Ἑλληνες ἐν τοῖς δώδεκα θεοῖς καταριθμοῦσιν, ἀλλὰ  
30 καὶ τῶν προγενεστέρων, ἐξ ὧν οἱ δώδεκα θεοὶ μυ- 1494  
θολογοῦνται γενέσθαι, Κρόνου καὶ Ῥέας καὶ Θέμιδος  
καὶ Διουῦ καὶ Μοιρῶν καὶ Μνημοσύνης καὶ τῶν

ἄλλων ἀπάντων, ὅσων ἐστὶν ἱερά καὶ τεμένη παρ'  
Ἑλλήσι· καὶ τῶν ὕστερον ἀφ' οὗ τὴν ἀρχὴν Ζεὺς  
παρέλαβε μυθολογούμενων γενέσθαι, Περσεφόνης  
Ἑλλειθυίας Νυμφῶν Μουσῶν Ὠρῶν Χαρίτων Διο-  
νύσου, καὶ ὅσων ἡμιθέων γενομένων αἱ ψυχὰι τὰ 5  
θυνητὰ ἀπολιποῦσαι σώματα εἰς οὐρανὸν ἀνελθεῖν  
λέγονται, καὶ τιμὰς λαχεῖν ὁμοίας θεοῖς, Ἡρακλέους  
Ἀσκληπιοῦ Διοσκούρων Ἑλένης Πανὸς ἄλλων μυ-  
θίων. καίτοι εἰ βάρβαροι ἦσαν οἳ τὴν Ῥώμην οἰκί-  
σαντες καὶ τὴν ἐορτὴν ταύτην καταστησάμενοι, τί 10  
προσῆμεν αὐτοῖς τοὺς μὲν Ἑλληνικοὺς ἅπαντας σέ-  
βειν θεοὺς τε καὶ δαίμονας, τῶν δὲ πατρίων ὑπερο-  
ρᾶν; ἢ δειξάτω τις ἡμῖν ἕξω τοῦ Ἑλληνικοῦ φύλον  
ἕτερον, ᾧ πάτριά ἐστι ταῦτα τὰ ἱερά, καὶ τότε δια-  
βαλλέτω ταύτην τὴν ἀπόδειξιν ὡς οὐχ ὕγιη. συντε- 15  
λεσθείσης δὲ τῆς πομπῆς ἐβουθύτουν εὐθύς οἳ τε  
ὑπατοὶ καὶ τῶν ἱερέων οἳς ὄσιοι, καὶ ὁ τῶν θυηπο-  
λιῶν τρόπος ὁ αὐτὸς ἦν τῷ παρ' ἡμῖν. χερνιψάμενοι τε  
γὰρ αὐτοὶ καὶ τὰ ἱερά καθαροῦ περιεργνίσαντες ὕδατι,  
καὶ Δημητρίους καρπούς ἐπιρράναντες αὐτῶν ταῖς 20  
κεφαλαῖς, ἔπειτα κατευξάμενοι, θύειν τότε τοῖς ὑπη-  
ρέταις αὐτὰ ἐκέλευον. τῶν δὲ οἳ μὲν ἐστῶτος ἔτι τοῦ  
θύματος σκυτάλη τοὺς κροτάφους ἔπαιον, οἳ δὲ πί-  
πτουτος ὑπετίθεσαν τὰς σφαγίδας, καὶ μετὰ τοῦτο  
δαίραντές τε καὶ μελίσαντες ἀπαρχὰς ἐλάμβανον ἐξ 25  
ἑκάστου σπλάγγνου καὶ παντὸς ἄλλου μέλους, ὡς  
ἀλφίτοις ζέας ἀναθεύσαντες προσέφερον τοῖς θύου-  
σιν ἐπὶ κανῶν· οἳ δ' ἐπὶ τοὺς βωμοὺς ἐπιτιθέντες  
ὑφήπτον καὶ προσέσπενδον οἶνον κατὰ τῶν ἀγνιζο-  
μίνων. ἕκαστον δ' ὅτι κατὰ νόμους ἐγίνετο τοὺς 30  
ἀμφὶ θυσίαν ὑφ' Ἑλλήνων κατασταθέντας, ἐκ τῆς  
1490 Ὀμήρου ποιήσεως γινῶναι ῥάδιον. καὶ γὰρ χερνιπτο-

μένους εἰσάγει τοὺς ἥρωας καὶ οὐλαῖς χρωμένους  
ἐν οἷς φησι·

Χερνίψαντο δ' ἔπειτα καὶ οὐλοχύτας ἀνέλοντο.  
τριχοτομοῦντάς τε ἀπὸ τῆς κεφαλῆς τὰς τρίχας καὶ  
5 τιθέντας ἐπὶ τὸ πῦρ ὡςδε γράφω·

Ἄλλ' ὃ γ' ἀπαρχόμενος κεφαλῆς τρίχας ἐν πυρὶ  
βάλλε.

σκυτάλαις τε παίοντας τὰ μέτωπα τῶν ἱερείων καὶ  
τὰ πεσόντα θύοντας, ὡς ἐπὶ τῆς Εὐμαίου ποιεῖ  
10 θυσίας·

Κόψε δ' ἀπαρχόμενος σχίζη δρυός, ἣν λίπε  
κείων.

Τὸν δ' ἔλιπε ψυχῇ· τοὶ δ' ἔσφαξαν τε καὶ εὔσαν.  
ἀπαρχάς τε ἀπὸ τῶν σπλάγγνων καὶ ἀπὸ τῶν ἄλλων  
15 λαμβάνοντας μελῶν, καὶ ταύτας ἀλφίτοις δεύοντας  
καὶ καθαρίζοντας ἐπὶ τῶν βωμῶν, ὡς ἐπὶ τῆς αὐτῆς  
ποιεῖ θυσίας·

ὁ δ' ὠμοθετεῖτο συβώτης, 14

Πάντοθεν ἀρχόμενος μελέων ἐς πύονα δημόν·

20 Καὶ τὰ μὲν πυρὶ βάλλε παλύντας ἀλφίτου  
ἀκτῆ.

Ταῦτα δὲ Ῥωμαῖοις ἔτι καὶ εἰς ἐμὲ πράττοντας  
ἐπὶ ταῖς θυσίαις ἰδὼν ἐπίσταμαι· καὶ μὲν πίστει  
τῆδε ἀρκούμενος, οὐ βαρβάρους ἐπέισθην εἶναι τοὺς  
25 οἰκιστάς τῆς Ῥώμης, ἀλλ' ἐκ πολλῶν τόπων συνελ-  
λυθότας Ἕλληνας. ὀλίγα μὲν γὰρ ἐπιτηδεύματα  
περὶ θυσίας τε καὶ ἑορτῶν ὁμοίως Ἕλλησι βαρβάρους  
καὶ πλάνητας ἐπιτελεῖν ἐνδέχεται· ἅπαντα δὲ ταῦτα  
πράττειν ἀπίθανον.

30 LXXIII. Λοιπὸν δὲ ἔτι μοι καὶ περὶ τῶν ἀγώ-  
νων οὓς μετὰ τὴν πομπὴν ἐπετέλουν ὀλίγα διελθεῖν.  
πρῶτος ὁ τῶν τεθρίππων τε καὶ συνωρίδων καὶ τῶν

ἀξεύκτων ἵππων ἐγίνετο δρόμος, ὡς παρ' Ἕλλησι τὸ  
ἀρχαῖον Ὀλυμπιάσι τε καὶ μέχρι τοῦ παρόντος. ἐν  
1408 δὲ ταῖς ἵππικαῖς ἀμίλλαις ἐπιτηδεύματα δύο τῶν  
πάνυ παλαιῶν ὡς ἐξ ἀρχῆς ἐνομοθετήθη φυλαττό-  
μενα ὑπὸ Ῥωμαίων μέχρι τῶν κατ' ἐμὲ διάκειται 5  
χρόνων, τό τε περὶ τὰ τρίπωλα τῶν ἀρμάτων, ὃ παρ'  
Ἕλλησι μὲν ἐκλέλοιπεν, ἀρχαῖον δὲ ἐπιτηδεύμα καὶ  
ἡρωικόν, ᾧ ποιεῖ τοὺς Ἕλληνας Ὅμηρος ἐν ταῖς μά-  
χαις χρωμένους· δυοὶ γὰρ ἵπποις ἐξευγμένοις, ὃν  
τρόπον ζεύγνυται συνωρίς, τρίτος παρείπετο σειραῖος 10  
ἵππος ἑνὶ ἑρῆρῳ συνεχόμενος, ὃν ἀπὸ τοῦ παρηγορησθῆναι  
τε καὶ μὴ συνεξεύχθαι παρήγορον ἐκάλουν οἱ παλαιοί·  
1409 ἕτερον δὲ παρ' ὀλίγαις ἔτι φυλαττόμενον πόλεσιν  
Ἕλληνίσιν ἐν ἱεροουργίαις τισὶν ἀρχαῖκαῖς, ὃ τῶν παρ-  
εμβεβηκότων τοῖς ἄρμασι δρόμος. ὅταν γὰρ τέλος 15  
αἱ τῶν ἵππέων ἀμίλλαι λάβωνται, ἀποπηδῶντες ἀπὸ  
τῶν ἀρμάτων οἱ παροχόμενοι τοῖς ἡνιόχοις, οὓς οἱ  
ποιηταὶ μὲν παραβάτας, Ἀθηναῖοι δὲ καλοῦσιν ἀπο-  
βάτας, τὸν σταδιαῖον ἀμιλλῶνται δρόμον αὐτοὶ πρὸς 20  
ἀλλήλους. τελεσθέντων δὲ τῶν ἵππικῶν δρόμων, οἱ 20  
τοῖς ἑαυτῶν σώμασιν ἀγωνιζόμενοι τότε εἰσῆσαν  
1400 δρομεῖς τε καὶ πύκται καὶ παλαισταί. τρία γὰρ  
ἀθλήματα παρὰ τοῖς ἀρχαίοις Ἕλλησι ταῦτ' ἦν, ὡς  
Ὅμηρος ἐπὶ τῇ Πατρόκλου δηλοῖ ταφῇ. ἐν δὲ τοῖς  
διὰ μέσου τῶν ἀθλημάτων χρόνοις Ἕλληνικώτατον 25  
καὶ κράτιστον ἀπάντων ἐθνῶν ἀπεδείκνυντο, στεφα-  
νώσεις καὶ ἀναρρήσεις ποιούμενοι τιμῶν αἷς ἐτίμων  
τοὺς ἑαυτῶν εὐεργέτας, ὡς Ἀθήνησιν ἐν ταῖς Διονυ-  
σιακαῖς ἐγίνετο θυσίαις, καὶ σκύλων ὄσων ἐκ πο-  
λλῶν λάβοιεν ἐπιδείξεις τοῖς εἰς θεῶν συνελλυθό- 30  
σιν. ἀλλὰ γὰρ ὑπὲρ μὲν τούτων οὔτε μηθένα ποιή-  
σασθαι λόγον ἀπαιτούσης τῆς ὑποθέσεως καλῶς εἶχεν,

οὔτε μηκύνειν πέρα τοῦ δέοντος ἤροοτε. καιρὸς δὲ ἐπὶ τὴν ἀπολειπομένην διήγησιν ἐπανάγειν. ὡς γὰρ δὴ τὰ περὶ τὸν ἀπαχθέντα ἐπὶ τιμωρίαν ὑπὸ τοῦ δεσπότου καὶ προηγησάμενον τῆς πομπῆς ἔμαθεν ἢ βουλή παρὰ τοῦ τὸ πραχθέν ἀνανεωσαμένου, τοῦτον ὑπολαβοῦσα ὑπὸ τοῦ θεοῦ λέγεσθαι τὸν οὐ κалὸν ἀπάρχοντα τῶν ὀρχηστῶν, ὥσπερ ἔφη, ἀναζητήσασα τὸν τῷ θεράποντι λωβησάμενον καὶ ζημίαν ἐπιβαλοῦσα, ἣς ἄξιός ἦν, ἑτέραν ἐψηφίσατο τῷ θεῷ πομπὴν ἐπιτελεσθῆναι καὶ ἀγῶνας ἐξ ἀρχῆς ἑτέρους ἀπὸ διπλασίων χρημάτων, ἢ πρότερον ἐγένοντο. καὶ τὰ μὲν ἐπὶ τούτων συντελεσθέντα τῶν ὑπάτων τοιάδε ἦν.

## ΔΙΟΝΥΣΙΟΥ

ΑΔΙΚΑΡΝΑΣΕΩΣ

ΡΩΜΑΙΚΗΣ ΑΡΧΑΙΟΛΟΓΙΑΣ

ΛΟΓΟΣ ΟΓΔΩΟΣ.

Οἱ δὲ μετὰ τούτους ἀποδειχθέντες ὕπατοι κατὰ τὴν ἑβδομηκοστὴν καὶ τρίτην ὀλυμπιάδα, καθ' ἣν ἐνία στάδιον Ἀστύλος Κροτωνιάτης ἄρχοντας Ἀθήνησιν Ἀρχίσου, Γάιος Ἰούλιος Ἰούλος καὶ Πόπλιος Πινάριος Ροῦφος, ἄνδρες ἡμιστά πολεμικοὶ καὶ διὰ τοῦτο μάλιστα τῆς ἀρχῆς ταύτης παρὰ τοῦ δήμου τυχόντες, εἰς πολλοὺς καὶ μεγάλους ἠναγκάσθησαν κινδύνους καταστῆναι πολέμου καταρραγέντος ἐπὶ τῆς ἐκείνων ἀρχῆς, δι' ἧν ἡ πόλις ὀλίγου ἐδέησεν ἐκ βάρθρων ἀναιρεθῆναι. ὁ γὰρ Μάρκιος ἐκεῖνος ὁ Κοριολάνος, ὁ τὴν ἐπὶ τῇ τυραννίδι αἰτίαν ἔχων καὶ φηγῆ αἰδίῳ ἐλαθεῖς, ἀγανακτῶν τ' ἐπὶ τῇ συμφορᾷ καὶ τιμωρίαν παρὰ τῶν ἐχθρῶν βουλόμενος λαβεῖν, δι' οὗ δ' ἂν αὕτη γένοιτο τρόπου καὶ δι' οἷας δυνάμειος ἀνασκοπῶν, μίαν εὔρισκε Ῥωμαίοις τότε ἀντίπαλον ἰσχὺν τὴν Οὐολούσκων, εἰ κοινῇ χρησάμενοι γνώμη καὶ τυχόντες ἠγεμόνος ἔμφρονος ἐυστήσονται πρὸς αὐτοὺς τὸν πόλεμον. ἐλογίζετο οὖν, ὡς εἰ πείσειε τοὺς Οὐολούσκους δεξασθᾶί τε αὐτὸν καὶ τὴν ἡγεμονίαν ἐπιτρέψαι τοῦ πολέμου, ὁαδίως αὐτῷ διαπε-

πράξεται τὸ ἔργον· ἐτάραττε δ' αὐτὸν ἢ συνειδήσεις, ὅτι πλειστάκις κατὰ τὰς μάχας δεινὰ δεδρακώς ἦν αὐτοὺς καὶ πόλεις συμμαχίδας ἀφηρημένος. οὐ μὴν ἀπέστη γε τῆς πειρας διὰ τὸ τοῦ κινδύνου μέγε-  
 5 θος, ἀλλ' εἰς αὐτὰ τὰ δεινὰ χωρεῖν ἐβουλεύσατο καὶ 1504  
 πάσχειν ὑπ' αὐτῶν ὅτιοῦν. φυλάξας δὲ νύκτα καὶ ταύτην σκοταίαν ἤκεν εἰς Ἄντιον τὴν ἐπιφανεστάτην τῶν ἐν Οὐολούσκοις πόλεων, ἠνίκα περὶ δεῖπνον ἦσαν οἱ κατὰ τὴν πόλιν, καὶ παρελθὼν εἰς οἰκίαν  
 10 ἀνδρὸς δυνατοῦ, δι' εὐγένειάν τε καὶ πλοῦτου καὶ τὰς ἐν τοῖς πολέμοις πράξεις μέγα ἐφ' ἑαυτῷ φρονοῦντος καὶ τὸ ἔθνος ὅλου ἄγοντος ὡς τὰ πολλὰ, ᾧ Τύλλος Ἄττιος ὄνομα ἦν, ἰκέτης τοῦ ἀν-  
 15 δρὸς γίνεται καθεξόμενος ἐπὶ τῆς ἐστίας. διηγησά-  
 μενος δὲ αὐτῷ τὰς κατασχούσας αὐτὸν ἀνάγκας, δι' ἃς ὑπέμεινε ἐπὶ τοὺς ἐχθροὺς καταφυγεῖν, μέτρια ἠξίου φρονῆσαι καὶ ἀνθρώπινα περὶ ἀνδρὸς ἰκέτου 1505  
 καὶ μηκέτι πολέμιον ἠγεῖσθαι τὸν ὑποχείριον, μηδ' εἰς τοὺς ἀτυχοῦντας καὶ τεταπεινωμένους ἀνποδείκνυσθαι  
 20 τὴν ἰσχὺν ἐνθυμούμενον, ὡς οὐ μένουσιν ἐπὶ τοῖς αὐ-  
 τοῖς πράγμασιν αἱ τῶν ἀνθρώπων τύχαι. Δύναιο δ' ἄν, ἔφη, τοῦτο ἐξ αὐτοῦ μάλιστα μαθεῖν ἐμοῦ, ὃς ἐν τῇ μεγίστῃ πόλει κράτιστός ποτε εἶναι τῶν ἄλλων δο-  
 25 κῶν, νῦν ἔρημος καὶ ἄπολις καὶ ταπεινὸς ἔρριμμαί-  
 τοῦτο πεισόμενος ὅ τι ἂν ἐχθρῶ ὄντι τοι δοκῇ. ὑπι-  
 σχνοῦμαι δέ σοι τσαῦτα ἀγαθὰ ποιήσειν Οὐολού-  
 σκους φίλος τῷ ἔθνει γενόμενος, ὅσα κακὰ εἰργασά-  
 μην ἐχθρὸς ὦν. εἰ δέ τι ἄλλο γινώσκεις περὶ ἐμοῦ,  
 30 μοι τὸν τάχιστον, αὐτοχειρία τε καὶ ἐπὶ τῆς ἐστίας  
 τῆς ἑαυτοῦ καθιερεύσας τὸν ἰκέτην.

II. Ἐτι δὲ αὐτοῦ ταῦτα λέγοντος ἐμβαλὼν τὴν 1506

δεξιὰν ὁ Τύλλος καὶ ἀπὸ τῆς ἐστίας ἀναστήσας θαρ-  
 ρεῖν τε αὐτὸν ἐκέλευσεν, ὡς μηδὲν ἀνάξιον τῆς ἰδίας  
 ἀρετῆς πεισόμενον καὶ πολλὰς αὐτῷ χάριτας εἰδέναι  
 τῆς πρὸς ἑαυτὸν ἀφίξεως ἔφη, τιμὴν τινα οὐ μικρὰν  
 εἶναι καὶ ταύτην ἀποφαινόμενος· Οὐολούσκους τε 5  
 αὐτῷ πάντας ὑπισχνεῖτο ποιήσειν φίλους ἀρξάμενος  
 ἀπὸ τῆς ἑαυτοῦ πατρίδος· καὶ οὐδεμίαν ἐψεύσατο  
 τῶν ὑποσχέσεων. χρόνου δέ τινος οὐ πολλοῦ διελ-  
 θόντος βουλευομένοις τοῖς ἀνδράσι κατὰ σφᾶς, Μαρ-  
 κίῳ τε καὶ Τύλλῳ, κινεῖν ἐδόκει τὸν πόλεμον. ὁ μὲν 10  
 οὖν Τύλλος ἀντίκα μάλα ἐβούλετο πᾶσαν τὴν Οὐο-  
 λούσκων δύναμιν παραλαβὼν ἐπὶ τὴν Ῥώμην χωρεῖν,  
 ἕως ἐστασιάξέ τε καὶ ἠγεμόνας ἀπειροπολέμους εἶχεν·  
 ὁ δὲ Μάρκιος αἰτίαν πρῶτον ᾤετο δεῖν εὐσεβῆ καὶ  
 15 δικαίαν ἐνστήσασθαι τοῦ πολέμου, διδάσκων, ὡς 15  
 ἀπάσαις μὲν πράξεσι θεοὶ συλλαμβάνουσι, μάλιστα  
 δὲ ταῖς κατὰ πολέμους, ὅσῳ μείζους τέ εἰσι τῶν ἄλ-  
 λων καὶ εἰς ἀδήλους φιλοῦσι κατασκήπτειν τύχας.  
 1507 ἐτύγχανον δὲ τότε Ῥωμαίοις καὶ Οὐολούσκοις ἐκεχει-  
 ρίαί τοῦ πολέμου καὶ ἀνοχαὶ πρὸς ἀλλήλους οὔσαι 20  
 σπονδαὶ τε διετεῖς ὀλίγῳ πρότερον χρόνῳ γενόμεναι.  
 Ἐὰν μὲν οὖν ἀπερισκέπτως, ἔφη, καὶ διὰ τάχους τὸν  
 πόλεμον ἐπιφέρῃς, τοῦ λελυθῆαι τὰς σπονδας αἰτίος  
 ἔσῃ καὶ τὸ δαιμόνιον οὐχ ἔξεις εὐμενές· ἐὰν δὲ πε-  
 25 ριμείνης, ἕως ἐκεῖνοι τοῦτο ποιήσωσιν, ἀμύνεσθαι 25  
 δόξεις καὶ λελυμένας ταῖς σπονδαῖς βοηθεῖν. ὅπως  
 δ' ἂν τοῦτο γένοιτο, καὶ ὅπως ἂν ἐκεῖνοι μὲν ἄρξειαν  
 παρασπονδεῖν, ἡμεῖς δὲ δόξαιμεν ὅσιον καὶ δίκαιον  
 ἐπιφέρειν τὸν πόλεμον, ἐγὼ σὺν πολλῇ φροντίδι  
 ἀνείρηκα. δεῖ δὲ ὑφ' ἡμῶν αὐτοὺς ἐξαπατηθέντας 30  
 30 ἄρξαι τῆς παρανομίας. ὁ δὲ τρόπος τῆς ἐξαπάτης,  
 ὃν ἐγὼ τέως μὲν ἀπόρητον ἐφύλαττον ἀναμένων

τὸν οἰκείον αὐτοῦ καιρὸν, νῦν δὲ σοῦ σπουδάζοντος  
 ἔργου ἔχουσαι θάττον ἐκφέρειν εἰς μέσον ἀναγκάζο-  
 μαι, τοιόσδε ἐστίν· θυσίας ἐπιτελεῖν Ῥωμαῖοι μέ-  
 λουσι καὶ ἀγῶνας ἀγειν ἀπὸ πολλῶν χρημάτων σφό-  
 5 δρα λαμπρούς, ἀφίξονται τε κατὰ θεῖαν ἐπὶ τούτους  
 πολλοὶ τῶν ξένων. τοῦτον ἀναμείνας τὸν χρόνον  
 ἴθι καὶ σὺ καὶ Οὐολούσκων ὅσους δύνασαι πλείστους 1500  
 παρασκευάσον ἐλθεῖν ἐπὶ τὴν θεῖαν· ὅταν δ' ἐν τῇ  
 πόλει γένη, τῶν ἀναγκαιοτάτων τινά σοι φίλων κέ-  
 10 λευσον ἐλθεῖν ὡς τοὺς ὑπάτους καὶ δι' ἀπορρήτων  
 εἰπεῖν, ὅτι μέλλουσιν ἐπιτίθεσθαι τῇ πόλει Οὐολοῦ-  
 σκοὶ νύκτωρ, καὶ ἐπὶ τοῦτο ἤκουσι τὸ ἔργον ἀθροοί.  
 εὗ γὰρ ἴσθι, ὡς εἰ τοῦτο ἀκούσειαν οὐδὲν ἐτι ἐν-  
 δοιάσαντες ἐκβαλοῦσιν ὑμᾶς ἐκ τῆς πόλεως, καὶ παρ-  
 15 ἔξουσιν ἀφορμὴν δικαίας ὀργῆς.

III. Ὡς δὲ ἤκουσε ταῦτα ὁ Τύλλος, ὑπερηγάσθη  
 τε καὶ τὸν παρόντα καιρὸν τῆς στρατείας ἀναβαλό-  
 μενος περὶ τὴν ἀρασκευὴν ἐρίνετο τοῦ πολέμου.  
 ἐπεὶ δὲ καθῆκεν ὁ τῆς ἐορτῆς καιρὸς, Ἰουλίῳ τε καὶ  
 20 Πιναρῖῳ τὴν ὑπατείαν ἤδη παρεληφόντων, ἡ κρα-  
 τίστη τῶν Οὐολούσκων νεότης ἐξ ἀπάσης πόλεως ὡς  
 ὁ Τύλλος ἤξιον παρῆν ἐπὶ τὴν τῶν ἀγῶνων θεῖαν·  
 καὶ κατεσκήνον οἱ πλείους ἐν ἱεροῖς τε καὶ δημοσίοις  
 τόποις οὐκ ἔχοντες καταγωγὰς ἐν οἰκίαις τε καὶ  
 25 παρὰ ξένοις, καὶ ὁπότε διὰ τῶν στενωπῶν πορεύοντο 1509  
 κατὰ συστροφὰς καὶ ἐταιρίας ἀθροοὶ διεξήεσαν, ὥστε  
 καὶ λόγον ἤδη γίνεσθαι περὶ αὐτῶν ἀνα τὴν πόλιν  
 καὶ ὑποψίας ἀτόπους. ἐν δὲ τούτῳ προσέρχεται τοῖς  
 ὑπάτοις ὁ κατασκευασθεὶς ὑπὸ τοῦ Τύλλου μηνυτής,  
 30 ὡς ὁ Μάρκιος ὑπέθετο, καὶ ὡς δὴ ἀπόρητον πράξιν  
 κατὰ τῶν αὐτοῦ φίλων ἐχθροῖς μέλλων ἐκφέρειν ὄρ-  
 κοὺς καταλαμβάνεται τοὺς ὑπάτους ὑπὲρ ἀσφαλείας

τε [αὐτὸς] τῆς αὐτοῦ καὶ τοῦ μηδένα Οὐολούσκων  
 μαθεῖν, ὅστις ἦν ὁ τὴν μήνυσιν κατ' αὐτῶν πεποιη-  
 μένος. καὶ μετὰ τοῦτο ἐπιφέρει τὴν περὶ τῆς ἐπι-  
 θέσεως τῆς κατεψευσμένης μήνυσιν. ἐδόκει τοῖς ἀν-  
 5 δράσιν ἀληθῆς εἶναι ὁ λόγος, καὶ αὐτίκα ἡ βουλή 5  
 κατ' ἄνδρα ὑπὸ τῶν ὑπάτων κληθεῖσα συνήκτω, καὶ  
 παραχθεὶς ὁ μηνυτὴς τοὺς αὐτοὺς εἶπε καὶ πρὸς ἐκεί-  
 νην τὰ πιστὰ λαβὼν λόγους. τοῖς δὲ καὶ πάλα μὲν  
 εἶναι τὸ πρᾶγμα ἐδόκει μεστὸν ὑποψίας, τόσαυτην  
 νεότητα ἐξ ἑνὸς ἔθνους διαφόρου σφίσειν ἐπὶ τὴν 10  
 θεῖαν ἐλθεῖν, προσελθούσης δὲ μηνύσεως, ἧς τὴν  
 1610 ἀπάτην ἠγνόουν, ἰσχνὴν βεβαίαν ἡ δόξα ἔλαβεν,  
 ἐδόκει τε πᾶσιν ἀπαλλάττειν τοὺς ἄνδρας ἐκ τῆς πό-  
 λεως πρὶν ἥλιον δῦναι, τοῖς δὲ μὴ πεισθεῖσιν ἐπικη-  
 15 ρύξαι θάνατον, ἐπιμεληθῆναι δὲ τῆς ἀπαλλαγῆς αὐ-  
 τῶν, ἵνα χωρὶς ὕβρεως καὶ μετ' ἀσφαλείας γένοιτο,  
 τοὺς ὑπάτους.

III. Ταῦτα τῆς βουλῆς ψηφισαμένης, οἱ μὲν ἐκή-  
 ρυττον διὰ τῶν στενωπῶν διεξιόντες ἀπιέναι Οὐο-  
 λούσκους ἐκ τῆς πόλεως αὐτίκα μάλα κατὰ μίαν 20  
 ἄπαντας ἐξιόντας πύλιν τὴν καλουμένην Καπιῖνην,  
 ἕτεροι δὲ παρέπεμπον τοὺς ἀπαλλαττομένους ἅμα  
 τοῖς ὑπάτοις· ἐνθα μάλιστα ὄφθη ὅσον αὐτῶν τὸ  
 πλῆθος ἦν καὶ ὡς ἀκμαῖον ἄπαν ὑφ' ἓνα καιρὸν  
 καὶ κατὰ μίαν ἐξιόντων πύλιν. πρῶτος δὲ αὐτῶν 25  
 ὁ Τύλλος ἐξῆει διὰ ταχέων, καὶ καταλαβὼν οὐ πρόσω  
 τῆς πόλεως τόπον ἐπιτήδειον, ἐν τούτῳ τοὺς ὑστε-  
 ροῦντας ἀνελάμβανεν. ἐπειδὴ δὲ πάντες συνήχθη-  
 1611 σαν, ἐκκλησίαν ποιησάμενος πολλῇ καταβοῇ τῆς  
 Ῥωμαίων πόλεως ἐχρήσατο, δεινὴν καὶ ἀπόρητον 30  
 ἀποφαίνων τὴν ὕβριν, ἣν ὑβρισμένοι πρὸς αὐτῶν  
 ἦσαν Οὐολοῦσκοὶ μόνοι τῶν ἄλλων ξένων ἐξελαθέν-

τες ἐκ τῆς πόλεως· καὶ λέγειν ἤξιόν ταῦτα πρὸς τὴν  
 ἑαυτοῦ πόλιν ἕκαστον, καὶ πράττειν, ὅπως παύσων-  
 ται τῆς ὕβρεως Ῥωμαῖοι δίκας παρασχόντες τῆς πα-  
 ρανομίας. ταῦτα εἰπὼν καὶ παραθήξας ἀνθρώπους  
 5 ἀναγκαιόοντας ἐπὶ τῷ πάθει διέλυσε τὴν ἐκκλησίαν.  
 ὡς δὲ ἀπαλλαγέντες εἰς τὰς ἑαυτῶν ἕκαστοι πατρι-  
 δας ἐδήλωσαν τοῖς ἄλλοις τὸν προπηλακισμόν ἐπὶ  
 μείζον ἐξαίρουτες τὰ γενόμενα, ἠγανάκτει τε πᾶσα  
 πόλις καὶ κατέχειν τὴν ὀργὴν οὐκ ἠδύνατο· δια-  
 10 πρεσβευομένη δὲ ἄλλη πρὸς ἄλλην εἰς μίαν ἀγορὰν  
 ἅπαντας ἤξιόν Οὐολούσκους συνιέναι, ἵνα κοινῇ χρη-  
 σαιτο γνώμη περὶ τοῦ πολέμου. ἐγίνετο δὲ ταῦτα  
 τοῦ Τύλλου μάλιστα ἐνάγοντος, καὶ συνήεσαν ἐξ  
 ἀπάσης πόλεως οἱ τε ἐν τοῖς τέλεσι καὶ πολὺς ἄλλος  
 15 ὄχλος εἰς τὴν Ἐχετραίων πόλιν· αὕτη γὰρ ἐδόκει  
 καλλίστη κείσθαι ἐν συνόδῳ ταῖς ἄλλαις ἢ πόλις.  
 ῥηθέντων δὲ πολλῶν λόγων, οὓς εἶπον οἱ δυνα-  
 στεύοντες ἐν ἐκάστῃ πόλει, ψῆφος ἀνεδόθη τοῖς παρ-  
 οῦσι, καὶ ἦν ἡ νικῶσα γνώμη κινεῖν τὸν πόλεμον,  
 20 ὡς Ῥωμαίων ἀρξάντων τῆς περὶ τὰς σπονδὰς παρ-  
 νομίας.

V. Ὑπὲρ δὲ τοῦ τίνα χρὴ πολεμεῖν αὐτοῖς τρό-  
 πον προθέντων σκοπεῖν τῶν ἐν τοῖς τέλεσι, παρελ-  
 θὼν ὁ Τύλλος συνεβούλευσεν αὐτοῖς καλεῖν τὸν  
 25 Μάρκιον, καὶ παρ' ἐκείνου πυνθάνεσθαι, πῶς ἂν ἡ  
 Ῥωμαίων καταλυθεῖ δύναμις· κράτιστα γὰρ ἀπάν-  
 των ἀνθρώπων εἰδέναι, πῆ τε κάμνει τὰ τῆς πόλεως  
 πράγματα καὶ πῆ μάλιστα ἔρρωται. ἐδόκει ταῦτα,  
 καὶ αὐτίκα πάντες ἐβόων καλεῖν τὸν ἄνδρα. καὶ ὁ  
 30 Μάρκιος ἤς ἐβούλετο ἀφορμῆς λαβόμενος ἀνέστη  
 κατηφῆς καὶ δεδακρυμένος, καὶ μικρὸν ἐπισχῶν χρό-  
 νον τοιοῦτους διέθετο λόγους· Εἰ μὲν ἠγροῦμην

ὑμᾶς ἅπαντας ὅμοια γνώσκειν περὶ τῆς ἐμῆς συμ-  
 φορᾶς, οὐκ ἂν ὑπελάμβανον ἀναγκαῖον εἶναι περὶ  
 1513 αὐτῆς ἀπολογεῖσθαι· ἐνθυμούμενος δέ, ὡς ἐν πολ-  
 λοῖς καὶ διαφόροις ἤθεσιν εἰκός, εἶναί τινας, οἷς  
 παραστήσεται δόξα οὔτε ἀληθῆς οὔτε προσήκουσα ἢ  
 περὶ ἐμοῦ, ὡς οὐκ ἂν ἄτερο αἰτίας ἀληθοῦς καὶ δι-  
 καίας ἐξήλασέ με ὁ δῆμος ἐκ τῆς πατρίδος, παντὸς  
 μάλιστα οἶομαι δεῖν πρῶτον ὑπὲρ τῆς ἐμῆς φυγῆς  
 ἐν κοινῷ πρὸς ἅπαντας ὑμᾶς ἀπολογήσασθαι. ἀλλ'  
 ἀνάσχεσθέ μου, πρὸς θεῶν, καὶ οἱ κράτιστα ἐγνωκό- 10  
 τες, ἃ πέπονθα ὑπὸ τῶν ἐχθρῶν καὶ ὡς οὐ προσήκόν  
 μοι ταύτης πεπειράσθαι τῆς τύχης διεξιόντος, καὶ μὴ  
 ὁποῖός τις εἰμὶ ὁ τὴν γνώμην ἀποδειξάμενος ἐξετά-  
 σαι. ἔσται δὲ βραχὺς ὁ περὶ αὐτῶν, κἂν πρόσωθεν 15  
 ἄρξωμαι, λόγος. Ῥωμαῖοις τὸ μὲν ἐξ ἀρχῆς πολίτευμα  
 ἦν μικτὸν ἐκ τε βασιλείας καὶ ἀριστοκρατίας· ἔπειτα  
 ὁ τελευταῖος βασιλεὺς Ταρκύνιος τυραννίδα τὴν ἀρ-  
 χὴν ἤξιόν ποιεῖν. συστάντες οὖν ἐπ' αὐτὸν οἱ τῆς  
 1514 ἀριστοκρατίας ἠγεμόνες, ἐκείνον μὲν ἐξέβαλον ἐκ τῆς 20  
 πόλεως, αὐτοὶ δὲ τὰ κοινὰ κατέσχον ἀρίστην καὶ  
 σωφρονεστάτην ὡς ἅπαντες ὁμολογοῦσι καταστησά-  
 μενοι πολιτείαν. χρόνοις δὲ οὐ πολλοῖς τῶν νῦν  
 πρότερον, ἀλλὰ τρίτον ἢ τέταρτον τοῦτο ἔτος, οἱ πε-  
 νέστατοί τε καὶ ἀργότατοί τῶν πολιτῶν πονηροῖς 25  
 χρησάμενοι προστάταις ἄλλα τε πολλὰ ἐξύβρισαν,  
 καὶ τελευτῶντες καταλύειν τὴν ἀριστοκρατίαν ἐπε-  
 χείρουν. ἐφ' οἷς ἅπαντες μὲν οἱ τῆς βουλῆς προεστη-  
 κότες ἤχθοντο, καὶ ὅπως παύσονται τῆς ὕβρεως οἱ  
 κινουῦντες τὴν πολιτείαν σκοπεῖν ἤξιόν. ὑπὲρ ἅπαν- 30  
 τας δὲ τοὺς ἀριστοκρατικούς, ἐκ μὲν τῶν πρεσβυτέρων  
 Ἄππιος ἀνὴρ πολλῶν ἄξιος ἕνεκα ἐπαινεῖσθαι, ἐκ



δὲ τῶν νεωτέρων ἐγὼ καὶ λόγους ἐποιούμεθα διὰ παντὸς ἐπὶ τῆς βουλῆς ἐλευθέρους, οὐ δῆμῳ πολεμοῦντες, ἀλλὰ πονηροκρατίαν ὑφορώμενοι, οὐδὲ καταδουλώσασθαι τινα βουλόμενοι Ῥωμαίων, ἀλλὰ τὸ μὲν ἐλευθέρου ἅπασιν ἀξιοῦντες [ἔχειν], τὴν δὲ 1510 προστασίαν τῶν κοινῶν ἀποδεδόσθαι τοῖς κρείττοσι.

VI. Ταῦτα ὁρῶντες οἱ πονηρότατοι τοῦ πλήθους ἐκεῖνοι προστάται, πρώτους ἐγνώσαν ἡμᾶς τοὺς φανερώτατα ἐναντιούμενους σφίσι ἐκποδῶν ποιήσασθαι, οὐχ ἅμα ἀμφοτέροις ἐπιχειρήσαντες, ἵνα μὴ ἐπίφθονόν τε καὶ βαρὺ τὸ πρᾶγμα γένηται, ἀλλ' ἀπ' ἐμοῦ τοῦ νεωτέρου τε καὶ εὐμεταχειριστοτέρου ἀρχάμενοι. τὸ μὲν οὖν πρῶτον ἀκριτόν με ἐπεχείρησαν ἀπολέσαι, ἔπειτα ἐκδοτον παρὰ τῆς βουλῆς ἠξίου ἐπὶ θανάτῳ λαβεῖν· ἀποτυχόντες δὲ ἀμφοτέρων προῦκαλέσαντο ἐπὶ δίκην, ἣν αὐτοὶ δικάσειν ἐμελλον, τυραννίδος ἐπιβαλόντες αἰτίαν. καὶ οὐδὲ τοῦτ' ἔμαθον, ὅτι δῆμῳ τύραννος οὐδεὶς πολεμεῖ μετὰ τῶν ἀρίστων συστάς, ἀλλὰ τὰναντία μετὰ τοῦ δήμου τὸ κράτιστον ἐκ τῆς πόλεως ἀναιρεῖ μέρος· δικαστήριον τε οὐχ ὄπερ ἦν πάτριον ἀπέδωκάν μοι τὴν λοχίτιν κα- 1516 λέσαντες ἐκκλησίαν, ἀλλ' ὃ πάντες ὁμολογοῦσι πονηρότατον εἶναι δικαστήριον καὶ ἐπ' ἐμοῦ πρῶτον καὶ μόνου γενόμενον, ἐν ᾧ πλέον ἔχειν ἐμελλον οἱ θῆτες καὶ ἀνέστιοι καὶ τοῖς ἀλλοτρίοις ἐπιβουλεύοντες βίους τῶν ἀγαθῶν καὶ δικαίων καὶ τὰ κοινὰ σώζεσθαι βουλομένων. τοσοῦτο δὲ ἄρα μοι περιῆν τοῦ μηδὲν ἀδικεῖν, ὥστ' ἐν ὄχλῳ κρινόμενος, οὐ τὸ πλέον μισό- 30 χρηστον ἦν καὶ διὰ τοῦτ' ἐχθρὸν ἐμοί, δυσὶ μόνου ἑάλων ψήφοις, ἀποτιθεμένων τὴν ἐξουσίαν τῶν δημοάρχων, εἰ μὴ καταδικασθεῖην ἐγὼ, καὶ τὰ ἔσχατα

πείσεσθαι πρὸς ἐμοῦ λεγόντων καὶ πάσῃ σπουδῇ καὶ προθυμίᾳ παρὰ τὸν ἀγῶνα κατ' ἐμοῦ χρησαμένων. τοιαῦτα δὲ πεπονθῶς ἐγὼ πρὸς τῶν ἐμαντοῦ πολιτῶν ἀβίωτον ἠγησάμην τὸν λοιπὸν ἔσεσθαι μοι βίον, εἰ μὴ λάβοιμι παρ' αὐτῶν δίκας· καὶ διὰ τοῦτ' ἐξόν 5 μοι ζῆν ἀπραγμόνως, εἴτ' ἐν ταῖς Λατίνων πόλεσιν ἠβουλόμην κατὰ τὸ συγγενές, εἴτ' ἐν ταῖς νεοκτίστοις ἃς οἱ πατέρες ἡμῶν ἀπώκισαν, οὐκ ἠβουλήθην, ἐφ' 1017 ἡμᾶς δὲ κατέφυγον, οὓς ἠπιστάμην πλειστά τε ὑπὸ Ῥωμαίων ἠδικημένους καὶ μάλιστα αὐτοῖς ἀπεχθομέ- 10 νους, ἵνα κοινῇ μεθ' ἡμῶν τιμωρησαίμην αὐτούς, ὅση μοι δύναμις, λόγοις τε ἔνθα δεῖ λόγων καὶ ἔργοις ὅταν ἔργων δέῃ. χάριν τε ὑμῖν μεγάλην οἶδα τῆς τε ὑποδοχῆς μου, καὶ ἔτι μᾶλλον τῆς τιμῆς, ἢ με τιμᾶτε οὐθὲν οὔτε μνησικακήσαντες οὔτε ὑπολο- 15 ρισάμενοι ὧν ὑπ' ἐμοῦ πρότερόν γε ἐπάθετε κατὰ τοὺς πολέμους.

VII. Φέρε δὴ, τίς ἂν εἴην ἀνὴρ, εἰ δόξης καὶ τιμῶν, ὧν προσῆκέ μοι παρὰ τοῖς ἐμαντοῦ πολίταις τυγχάνειν, παρὰ τῶν εὐπαθόντων ἀποστρεφθεῖς, 20 πρὸς δὲ τούτοις πατρίδος τε καὶ οἴκου καὶ φίλων καὶ θεῶν πατρῶων καὶ τάφων προγονικῶν καὶ παντὸς ἄλλου ἀπελαθεῖς ἀγαθοῦ, παρ' ὑμῖν δὲ ἅπαντα ταῦτα εὐρῶν, οἷς ἐκείνων χάριν ἐπολέμουν, εἰ μὴ γε- 25 νοίμην χαλεπὸς μὲν οἷς ἀντὶ πολιτῶν ἐχθροῖς κέχρημαι, χρηστός δὲ οἷς ἀντὶ πολεμίων φίλοις; ἀλλ' 1018 ἔγωγε οὐδ' ἐν ἀνδρὸς μοίρα θεῖην ἂν, ὅστις μῆτε τὸ πολεμοῦν δι' ὀργῆς ἔχει μῆτε τὸ σώζον ἑαυτὸν δι' εὐνοίας. πατρίδα τε ἠγοῦμαι οὐ τὴν ἀπαρνησαμένην με πόλιν, ἀλλ' ἣς ἀλλότριος ὧν πολίτης γέγονα· γῆν 30 τε οὐκ ἐν ἧ ἠδίκημαι φίλην, ἀλλ' ἐν ἧ τὸ ἀσφαλές ἔχω. καὶ ἂν θεὸς τε συλλαμβάνῃ καὶ τὰ ὑμέτερα ὡς

εἰκὸς πρόθυμα ἦ, μεγάλην καὶ ταχεῖαν ἐλπίζω γενήσεσθαι μεταβολήν. εὖ γὰρ ἴστε, ὅτι πολλῶν ἤδη πολέμων πειραθέντες Ῥωμαῖοι, οὐδένας μᾶλλον ἔδεισαν ὑμῶν, οὐδ' ἐστὶν ἐφ' ᾧ μᾶλλον σπουδάζοντες διατελοῦσιν, ἢ ὅπως τὸ ὑμέτερον ἔθνος ἀσθενὲς ἀποδείξουσι. καὶ διὰ τοῦτο τὰς μὲν πολέμῳ λαβόντες ὑμῶν ἔχουσι πόλεις, τὰς δὲ φιλίας ἐλπίδι παρακρουσάμενοι, ἵνα μὴ καθ' ἕν ἅπαντες γενόμενοι κοινὸν ἐξενέγκητε κατ' αὐτῶν πόλεμον. ἐὰν οὖν τάναντία ὑμεῖς ἀντιφιλοτιμούμενοι διατελήτε, καὶ μίαν ἅπαντες ἔχητε τοῦ πολέμου γνώμην, ὃ ποιεῖτε νυνὶ, ὅρα δῖος αὐτῶν τὸ κράτος παύσεται.

VIII. Ὅν δὲ τρόπον ἀγωνιεῖσθε καὶ πῶς χρῆσεσθε τοῖς πράγμασιν, ἐπειδὴ γνώμην ἀξιοῦτέ με ἀποφῆρασθαι, εἴτ' ἐμπειρίαν μοι μαρτυροῦντες εἴτ' εὐνοίαν εἴτε καὶ ἀμφοτέρω, φράσω καὶ οὐκ ἀποκρύψομαι. πρῶτον μὲν οὖν ὑμῖν παραινῶ σκοπεῖν, ὅπως εὐσεβῆ καὶ δικαίαν πορίσησθε τοῦ πολέμου πρόφασιν. εὐσεβῆς δὲ καὶ δικαία τοῦ πολέμου πρόφασις ἣτις ἂν γένοιτο καὶ ἅμα συμφέρουσα ὑμῖν ἀκούσατέ μου. Ῥωμαῖοις ἢ μὲν ἐξ ἀρχῆς ὑπάρξασα γῆ βραχεῖά ἐστι καὶ λυπρά, ἢ δ' ἐπίκτητος, ἣν τοὺς περιοίκους ἀφελόμενοι ἔχουσι, πολλή καὶ ἀγαθή· καὶ εἰ τῶν ἡδικημένων ἕκαστοι τὴν ἑαυτῶν ἀξιοῦσιν ἀπολαβεῖν, οὐδὲν οὕτως μικρὸν οὐδ' ἀσθενὲς οὐδὲ ἀπορον, ὡς τὸ Ῥωμαίων ἄστν γενήσεται. τούτου δὲ οἶομαι δεῖν ὑμᾶς ἄρξαι. πέμπετε οὖν πρέσβεις ὡς αὐτούς, ἀπαιτοῦντες ἃς κατέχουσιν ὑμῶν πόλεις καὶ ὅσα τείχη ἐν τῇ ὑμετέρῃ γῆ ἐνετειχίσαντο ἀξιοῦντες ἐκλιπεῖν, καὶ εἴ τι ἄλλο βία σφετερισάμενοι τῶν ὑμετέρων ἔχουσι πεῖθοντες ἀποδιδόναι. πολέμου δὲ μήπω ἄρχετε πρὶν ἢ λαβεῖν τὰς παρ' αὐτῶν ἀποκρίσεις. ἐὰν γὰρ

ταῦτα ποιήσητε, δεῖν ἂν βούλεσθε ὑπάρξει θάτερον ὑμῖν ἢ τὰ ἑαυτῶν ἀπολήψεσθε ἄνευ κινδύνων καὶ δαπάνης, ἢ καλὴν καὶ δικαίαν πρόφασιν εὐληφότες ἔσεσθε τοῦ πολέμου. τὸ γὰρ μὴ τῶν ἀλλοτρίων ἐπιθυμεῖν, ἀλλὰ τὰ ἑαυτῶν ἀπαιτεῖν καὶ μὴ τυγχάνου- τας τούτου πολεμεῖν, ἅπαντες ἀνομολογήσουσιν εἶναι καλόν. φέρε δὴ, τί ποιήσειν οἴεσθε Ῥωμαίους ταῦτα ὑμῶν προελομένων; πότερον ἀποδώσειν τὰ χωρία ὑμῖν; καὶ τί καλύσει πάντων αὐτοὺς ἀποστῆναι τῶν ἀλλοτρίων; ἤξουσι γὰρ Αἰκανοὶ τε καὶ Ἀλβανοὶ καὶ 10 Τυρρηνοὶ καὶ πολλοὶ ἄλλοι τὴν ἑαυτῶν ἕκαστοι γῆν ἀποληψόμενοι. ἢ καθέξειν τὰ χωρία καὶ μηθὲν τῶν 1521 δικαίων ποιήσειν; ὅπερ ἐγὼ νομίζω. οὐκοῦν ἀδικεῖσθαι πρότεροι λέγοντες ὑπ' αὐτῶν κατὰ τὸ ἀναγκαῖον ἐπὶ τὰ ὄπλα χωρήσετε, καὶ συμμάχους ἔξετε 15 ὅσοι τὰ ἑαυτῶν ἀφαιρεθέντες ἀπεγνωσασιν ἄλλως ἂν ἔτι αὐτὰ ἢ πολεμοῦντες οὐκ ἀπολήψεσθαι. κράτιστος δὲ ὁ καιρὸς καὶ οἶος οὐχ ἕτερος ἐπιθέσθαι Ῥωμαίοις, ὃν ἢ τύχῃ τοῖς ἀδικουμένοις οὐδ' ἂν ἐλπισθέντα παρεσκεύασεν, ἐν ᾧ στασιάζουσι καὶ ὑπο- 20 πτεύουσιν ἀλλήλους καὶ ἡγεμόνας ἔχουσιν ἀείρους πολέμου. ἃ μὲν οὖν ὑποτίθεσθαι ἔδει λόγοις καὶ παραινεῖν φίλοις, μετὰ πάσης εὐνοίας καὶ πίστεως εἰρημένα ὑπ' ἐμοῦ ταῦτ' ἐστίν. ἃ δὲ παρ' αὐτὰ τὰ ἔργα ἐκάστοτε προορᾶσθαι τε καὶ μηχανᾶσθαι δεή- 25 σει, τοῖς ἡγεμόσι τῆς δυνάμεως ἐπιτρέψατε διανοεῖσθαι. 1522 πρόθυμον γὰρ καὶ τοῦμὸν ἔσται, ἐν ᾧ ἂν με τάττητε τόφῳ, καὶ πειράσομαι μηθενὸς εἶναι χείρων μήτε στρατιώτου μήτε λοχαγοῦ μήτε ἡγεμόνος· ἀλλὰ καταχρησθῆ μοι λαβόντες, ὅπου ἂν μέλλω τι ὑμᾶς 30 ὠφελῆσειν, καὶ εὖ ἴστε ὅτι, εἰ πολέμων ὑμῖν μεγάλα

βλάπτειν δυνατός ἦν, καὶ σὺν ὑμῖν ἀγωνιζόμενος  
μεγάλα δυνήσομαι ὠφελεῖν.

VIII. Τοιαῦτα μὲν ὁ Μάρκιος εἶπεν. οἱ δὲ Οὐ-  
λουῖσκοι λέγοντός τε τοῦ ἀνδρὸς ἔτι δῆλοι ἦσαν ἀγά-  
5 μνοι τοὺς λόγους, καὶ ἐπειδὴ ἐπαύσατο μεγάλη βοῇ  
πάντες ἐπεσημήναντο, ὡς τὰ κράτιστα ὑποτιθεμένῳ  
λόγον τε οὐθενὶ προθέεντες ἐπικυροῦσι τὴν γνώμην.  
γραφήντος δὲ τοῦ δόγματος, εὐθύς ἐξ ἐκάστης πό-  
λεως τοὺς ἐπιφανεστάτους ἀνδρας ἐλόμενοι προ-  
10 σβευτάς εἰς τὴν Ῥώμην ἀπέστειλαν· τῷ δὲ Μαρκίῳ  
ψηφίζονται βουλῆς τε μετουσίαν ἐν ἀπάσῃ πόλει, καὶ  
ἀρχὰς ἐξεῖναι πανταχόσε μετιέναι, καὶ τῶν ἄλλων  
ὅποσα τιμιώτατα ἦν παρ' αὐτοῖς μετέχειν. καὶ πρὶν 1523  
ἢ τὰς Ῥωμαίων ἀποκοίσεις ἀναμεῖναι, πάντες ἔργου  
15 εἶχοντο παρασκευαζόμενοι τὰ πολέμια· ὅσοι τε ἦσαν  
αὐτῶν ἄθνημοι τέως κακωθέντες ἐν ταῖς προτέραις  
μάχαις, τότε πάντες ἐρρώσθησαν ὡς τὴν Ῥωμαίων  
καθαιρήσουντες ἰσχύν. οἱ δ' εἰς τὴν Ῥώμην ἀποστα-  
λέντες ὑπ' αὐτῶν πρέσβεις, καταστάντες ἐπὶ τὴν  
20 βουλὴν ἔλεγον· Ὅτι Οὐολούσκοις περὶ πολλοῦ ἔστι  
καταλύσασθαι τὰ πρὸς Ῥωμαίους ἐγκλήματα, καὶ τὸν  
λοιπὸν χρόνον εἶναι φίλοις καὶ συμμάχοις ἄνευ δόλου  
καὶ ἀπάτης. ἔσεσθαι δὲ τὸ πιστὸν αὐτοῖς τῆς φιλίας  
βέβαιον ἀπέφαινον, εἰ κομίσαιντο γῆν τε τὴν ἑαυτῶν  
25 καὶ πόλεις ἄς ὑπὸ Ῥωμαίων ἀφηρέθησαν· ἄλλως δὲ  
οὔτε εἰρήνην οὔτε φιλότητα βεβαίαν ὑπάρξειν αὐ-  
τοῖς· τὸ γὰρ ἀδικούμενον αἰεὶ πολέμιον εἶναι τῷ  
πλημμελοῦντι φύσει. ἤξιον τε μὴ καταστήσασθαι  
σφᾶς εἰς ἀνάγκην πολέμου τῶν δικαίων ἀποτυγχά-  
30 νοντας.

X. Ὡς δὲ ταῦτ' εἶπον οἱ πρέσβεις, ἐβουλεύοντο  
κατὰ σφᾶς οἱ σύνοδοι μεταστησάμενοι τοὺς ἀνδρας,

1604 καὶ ἐπειδὴ ἔκριναν ἄς χρὴ ἀποκοίσεις ποιήσασθαι,  
καλέσαντες αὐτοὺς πάλιν ἐπὶ τὸν σύλλογον ταύτην  
ἔδοσαν τὴν ἀπόφασιν. Οὐ λανθάνετε ἡμᾶς, ὦ Οὐ-  
λουῖσκοι, φιλίας μὲν οὐδὲν δεόμενοι, πρόφασιν δ'  
εὐπρεπῆ λαβεῖν βουλόμενοι τοῦ πολέμου. ἃ γὰρ 5  
ἤμετε παρ' ἡμῶν ἀπαιτοῦντες, καλῶς ἐπίστασθε οὐ-  
δέποτε ληψόμενοι· χρήζετε γὰρ ἀδίκων τε καὶ ἀδυ-  
νάτων. εἰ μὲν οὖν δόντες ἡμῖν τὰ χωρία, ἔπειτα  
μεταδόξαν ὑμῖν νῦν ἀπαιτεῖτε, ἀδικεῖσθε μὴ κομιζό-  
10 μενοι· εἰ δὲ πολέμῳ ἀφαιρεθέντες οὐκέτι αὐτῶν  
ὄντες κύριοι, ἀδικεῖτε τῶν ἀλλοτριῶν ἐφιέμενοι.  
ἡμεῖς δὲ κρατίστας ἠγρούμεθα κτήσεις, ἄς ἂν πολέμῳ  
κρατήσαντες λάβωμεν, οὔτε πρῶτοι καταστησάμενοι  
νόμον τόνδε, οὔτε αὐτὸν ἀνθρώπων ἠγρούμενοι εἶναι  
15 μᾶλλον ἢ οὐχὶ θεῶν· ἅπαντάς τε καὶ Ἑλλήνας καὶ  
βαρβάρους εἰδότες αὐτῷ χρωμένους οὐκ ἂν ἐνδοίη-  
μεν ὑμῖν μαλακὸν οὐδὲν, οὐδ' ἂν ἀποσταλήμεν ἔτι  
τῶν δορυκλήτων. πολλὴ γὰρ ἂν εἴη κακότης, εἴ τις  
ἂ μετ' ἀρετῆς καὶ ἀνδρείας ἐκλήσεται, ταῦτα ὑπὸ  
1625 μαυρίας τε καὶ δειλίας ἀφαιρεθείη. πολεμεῖν τε οὔτε μὴ  
βουλομένους ὑμᾶς ἀναγκάζομεν, οὔτε προθυμουμένους  
παραιτούμεθα, ἂν δὲ ἄρξησθε ἀμυνούμεθα. ταῦτα  
Οὐολούσκοις ἀπαγγέλλετε, καὶ λέγετε, ὅτι λήφονται μὲν  
πρότεροι τὰ ὄπλα ἐκεῖνοι, θήσομεν δὲ ἡμεῖς ὕστεροι.

XI. Ταῦτας οἱ πρέσβεις τὰς ἀποκοίσεις λαβόν- 25  
τες ἀπήγγειλαν τῷ πλήθει τῶν Οὐολούσκων. συνα-  
χθείσης οὖν αὐτῆς ἐκκλησίας, μετὰ τοῦτο κυροῦται  
δόγμα κοινὸν τοῦ ἔθνους προειπεῖν Ῥωμαίοις τὸν  
πόλεμον. ἔπειτα αἰροῦνται στρατηγούς αὐτοκράτορας  
τοῦ πολέμου Τύλλον τε καὶ Μάρκιον, δυνάμεις τε 30  
ψηφίζονται καταγράφειν καὶ χρήματα εἰσφέρειν καὶ  
τάλλα παρασκευάσασθαι ὅσων ὑπελάμβανον δεήσειν

τῶ πολέμῳ μελλούσης δὲ διαλύεσθαι τῆς ἐκκλησίας ἀναστάς ὁ Μάρκιος ἔφη· Ἄ μὲν ἐψήφισται τὸ κοινὸν 15 ὑμῶν ἔχει καλῶς καὶ γινέσθω κατὰ τὸν οἰκεῖον ἕκαστα καιρὸν· ἐν ὅσῳ δὲ τὰ στρατεύματα μέλλετε 5 καταγράφειν, καὶ τὰλλα εὐτρεπίξειν ἔξουτᾶ τινας ὥσπερ εἰκὸς ἀσχολίας καὶ διατριβίας, ἐγὼ καὶ Τύλλος ἔργου ἔχόμεθα. ὅσοις οὖν ὑμῶν βουλομένοις ἐστὶ προνομεῦσαι τὴν τῶν πολεμίων, καὶ πολλὴν ἀποτε- μέσθαι λείαν, ἴτε σὺν ἡμῖν. ὑποδέχομαι δὲ ὑμῖν εἰάν 10 θεὸς συλλάβῃ, πολλὰς καὶ καλὰς δώσειν ὠφελείας. ἔτι γὰρ ἀπαράσκευοί εἰσι Ῥωμαῖοι δύνανται οὐπω συνεστηκυῖαν ὁρῶντες ὑμετέραν, ὥστε ἀδεῶς ἡμῖν ὑπάρξει πᾶσαν ὅσῃν ἂν βουλώμεθα τῆς ἐκείνων χώρας καταδραμεῖν.

15 XII. Ἀποδεξαμένων δὲ καὶ ταύτην τὴν γνώμην τῶν Οὐολούσκων, ἐξήσαν οἱ στρατηγοὶ διὰ ταχέων, πρὶν ἐκπυστα γενέσθαι Ῥωμαίοις τὰ βουλευόμενα, πολλὴν ἐπαρόμενοι στρατιὰν ἐκούσιον· ἧς μέρος μὲν ὁ Τύλλος ἔχων εἰς τὴν Λατίνων χώραν ἐνέβαλεν, 1527 20 ἵνα περισπάσειε τῶν πολεμίων τὴν ἐκεῖθεν ἐπικουρίαν· τὸ δὲ λοιπὸν ὁ Μάρκιος ἄγων ἐπὶ τὴν Ῥωμαίων ἤλασεν. οἷα δὲ ἀπροσδοκῆτον κακοῦ τοῖς κατὰ τὴν χώραν διατρίβουσιν ἐπιπεσόντος, πολλὰ μὲν ἐάλω σώματα Ῥωμαίων ἐλεύθερα, πολλὰ δὲ ἀνδρά- 25 ποδα, βοῶν τε καὶ ὑποζυγίων καὶ τῶν ἄλλων βοσκημάτων χρῆμα οὐκ ὀλίγον· σιτός τε ὅσος ἐγκατελήφθη καὶ σίδηρος καὶ ὅσοις ἄλλοις χώρα γεωργεῖται, τὰ μὲν ἠρπάζθη, τὰ δὲ διεφθάρη. τελευτῶντες γὰρ καὶ πῦρ εἰς τὰς αὐλὰς φέροντες ἐνέβαλλον 30 Οὐολούσκοι, ὥστε πολλοῦ χρόνου μὴδ' ἀναλαβεῖν αὐτὰς δύνασθαι τοὺς ἀποβαλόντας. μάλιστα δὲ τοῦτ' ἔπασχον αἱ τῶν δημοτῶν κτήσεις, αἱ δὲ τῶν πατρι-

κίων ἔμειναν ἀσινεῖς· εἰ δὲ τινες ἐβλάβησαν, εἰς ἀνδράποδα καὶ βοσκήματα ἔδοξαν βλαβῆναι. τοῦτο γὰρ ὑπὸ τοῦ Μαρκίου παρηγγέλλετο τοῖς Οὐολούσκοις, 1528 ἵνα δι' ὑποψίας ἔτι μᾶλλον οἱ πατρίοι γένωνται τοῖς δημοτικοῖς, καὶ μὴ ἐξαιρεθείη τὸ στασιάζον ἐκ 5 τῆς πόλεως, ὅπερ καὶ συνέβη. ὡς γὰρ ἠγγέλθη τοῖς Ῥωμαίοις ἢ καταδρομὴ τῆς χώρας, καὶ ἔγνωσαν οὐκ ἔξ ἴσον γεγονυῖαν ἅπασιν τὴν συμφορὰν, κατεβόων μὲν τῶν πλουσίων οἱ πένητες ὡς ἐναγόντων σφίσι τὸν Μάρκιον, ἀπελογοῦντο δὲ οἱ πατρίοι καὶ κα- 10 κουργίαν τινὰ τοῦ στρατηγοῦ ταύτην ἀπέφαινον. βοηθεῖν δὲ τοῖς ἀπολλυμένοις ἢ σώσειν τὰ περιόντα δι' ὑποψίαν τε ἀλλήλων καὶ δέος προδοσίας οὐδεὶς ἠξίου· ὥστε κατὰ πολλὴν ἄδειαν ὁ Μάρκιος ἀπήγε τὴν στρατιάν, καὶ κατέστησεν ἅπαντας ἐπὶ τὰ οἰκεία 15 παθόντας μὲν οὐδὲν δεινόν, δράσαντας δὲ ὅσα ἠξίου, καὶ πολλῶν εὐπορήσαντας χρημάτων. ἦκε δὲ καὶ ὁ Τύλλος ὀλίγον ὕστερον ἐκ τῆς Λατίνων χώρας πολ- λὰς ἐπαρόμενος ὠφελείας· οὐδὲ γὰρ ἐκεῖνοι δύνανται 20 ἔσχον ὁμόσε χωρεῖν τοῖς πολεμίοις μαχησόμενοι ἀπαράσκευοί τε ὄντες καὶ παρ' ἐλπίδα τοῦ δεινοῦ σφίσι ἐπιπεσόντος. ἐκ δὲ τούτου πᾶσα πόλις ἐπῆρτο 1529 ταῖς ἐλπίσι, καὶ θᾶττον ἢ ὡς ἂν τις ὑπέλαβεν ἢ τε καταγραφὴ τῶν στρατιωτῶν ἐγίνετο, καὶ τὰλλα ὑπε- 25 ρετείτο ὅσων τοῖς στρατηγοῖς ἔδει.

XIII. Ἐπειδὴ δὲ συνῆκτο ἤδη πᾶσα ἡ δύναμις, ἐβουλευέτο μετὰ τοῦ συνάρχοντος ὁ Μάρκιος, ὅπως χρηστέον τοῖς λοιποῖς πράγμασιν. ἔφη δ' οὖν λέγων· Ἐμοὶ δοκεῖ, ὦ Τύλλε, κράτιστον εἶναι νείμασθαι τὰς δυνάμεις ἡμᾶς διχῆ· ἔπειτα τὸν μὲν ἕτερον 30 ἡμῶν ἄγοντα τοὺς ἀκμαϊοτάτους καὶ προθυμοτάτους ὁμόσε χωρεῖν τοῖς πολεμίοις μαχησόμενον, καὶ εἰ 8\*

μὲν ὑπομενοῦσιν εἰς χεῖρας ἡμῶν ἵεναι μᾶλλον κρῖναι  
 τὸν ἀγῶνα μάχῃ, εἰ δ' ἀποκνήσουσιν ὡς ἐγὼ πεί-  
 θομαι στρατιᾷ νεοσυλλέκτῳ καὶ ἡγεμόσιν ἀπείροις  
 πολέμου τὸν ὑπὲρ τῶν ὄλων κίνδυνον ἐπιτρέπειν,  
 5 τὴν τε χώραν αὐτῶν ἐπιόντα πορθεῖν καὶ τοὺς συμ-  
 μάχους περισπᾶν καὶ τὰς ἀποικίας ἀνααιρεῖν καὶ πᾶν 1530  
 ἄλλο κακὸν ὃ τι δύναται ποιεῖν. τὸν δὲ ἕτερον ἐν-  
 θάδε ὑπομένοντα φυλακὴν ποιησθαι τῆς τε χώρας  
 καὶ τῶν πόλεων, μὴ λάθωσιν ἀφυλάκτοις ἐπιπεσόν-  
 10 τες αὐτοῖς οἱ πολέμιοι, καὶ πρῶγμα αἰσχιστον πάθω-  
 μεν, ἐν ᾧ τῶν ἀπόντων ἐφιέμεθα τὰ παρόντα ἀφαι-  
 ρεθέντες. ἀλλὰ χρὴ τὸν ἐνθάδε ὑπομένοντα ἤδη  
 τεῖχη τε ἀνορθοῦν ὅσα πέπτωκε καὶ τάφρους ἀνακα-  
 θάρσειν καὶ φρούρια ὀχυροῦν, ἵνα τοῖς γεωργοῦσι  
 15 τὴν χώραν ὑπάρχωσι καταφυγαί, στρατιάν τε ἄλλην  
 προσκαταγράφειν καὶ τροφὰς τοῖς ἔξω οὔσιν ἐπιχο-  
 ρηγεῖν καὶ ὄπλα χαλκεύειν καὶ εἰ τι ἄλλο ἀναγκαῖον  
 ἔσται πρῶγμα ὀξέως ὑπηρετεῖν. δίδωμι δὲ σοι τὴν  
 αἴρεσιν, εἴτε τῆς ὑπερορίου στρατιᾶς εἴτε τῆς ἐνθάδε  
 20 ὑπομενούσης ἐθέλεις στρατηγεῖν. ταῦτα λέγοντος  
 αὐτοῦ σφόδρα ἠγάσθη τὴν γνώμην ὁ Τύλλος, καὶ  
 τὸ δραστήριον τοῦ ἀνδρὸς εἰδὼς καὶ ἐπιτυχεῖς ἐπέ-  
 τρεψεν ἐκείνῳ τῆς ἔξω στρατιᾶς ἄρχειν.

XIII. Καὶ ὁ Μάρκιος οὐθέν ἐτι διαμελλήσας 1531  
 25 ἡμεῖν ἄγων τὴν δύναμιν ἐπὶ Κιρκαίαν πόλιν, ἐν ἣ  
 κληροῦχοι Ῥωμαίων ἦσαν ἅμα τοῖς ἐπιχωρίοις πολι-  
 τευόμενοι, καὶ παραλαμβάνει τὴν πόλιν ἐξ ἐφόδου.  
 ὡς γὰρ ἔγνωσαν οἱ Κιρκάιοι κρατουμένην σφῶν τὴν  
 χώραν καὶ προσάγουσαν τῷ τείχει τὴν στρατιάν,  
 30 ἀνοιξαντες τὰς πύλας ἐξήσαν ὁμῶς τοῖς πολεμίοις  
 ἄνοπλοι παραλαβεῖν τὴν πόλιν ἀξιοῦντες ὅπερ αὐ-  
 τοῖς αἴτιον τοῦ μηδὲν παθεῖν ἀνήκεστον ἐγένετο.

οὔτε γὰρ αὐτῶν ἀπέκτεινεν ὁ στρατηγὸς οὐδένα,  
 οὔτε ἐξήλασεν ἐκ τῆς πόλεως· ἐσθῆτα δὲ τοῖς στρα-  
 τιώταις καὶ τροφὰς εἰς μῆνα λιανὰς καὶ ἀργυρίον τι  
 μέτριον λαβὼν ἀπῆγε τὴν δύναμιν, ὀλίγην μοῖραν  
 ἐν τῇ πόλει καταλιπὼν τῆς τε ἀσφαλείας τῶν ἐνοι- 5  
 κούντων ἕνεκα, μὴ τι ὑπὸ Ῥωμαίων πάθωσι κακόν,  
 καὶ τοῦ μηδὲν ὕστερον νεωτερίσαι. εἰς δὲ τὴν Ῥώμην  
 ὡς ἠγγέλθη τὰ γενόμενα πολὺ πλείων ταραχὴ καὶ  
 θόρυβος ἦν, τῶν μὲν πατρικίων τὸν δῆμον ἐχόντων  
 δι' αἰτίας, ὅτι πολεμιστὴν ἄνδρα καὶ δραστήριον καὶ 10  
 φρονήματος εὐγενοῦς μεστὸν ψευδεῖ περιβαλόντες αἰ-  
 τία τῆς πόλεως ἀπήλασαν καὶ παρεσκεύασαν ἡγεμόνα  
 Οὐλολούσχοις γενέσθαι· τῶν δὲ προσεστηκότων τοῦ δή-  
 1532 μου κατηγορίας τοῦ συνεδρίου ποιουμένων, καὶ τὸ  
 πρῶγμα ὅλον ἐξ ἐπιβουλῆς ὑπ' ἐκείνων κατεσκευά- 15  
 σθαι λεγόντων, τὸν τε πόλεμον οὐ κοινὸν ἅπασιν,  
 ἀλλὰ σφίσι μόνοις ἐπάγεσθαι σκηπτομένων· καὶ ἦν  
 τὸ κακοηθέστατον τοῦ δήμου μέρος ἅμα τοῦτοις.  
 στρατιᾶς δὲ καταγράφειν ἢ καλεῖν τοὺς συμμάχους  
 ἢ κατασκευάσασθαι τὰ κατεπείγοντα διὰ τὰ πρὸς 20  
 ἀλλήλους ἔχθη καὶ τὰς ἐν ταῖς ἐκκλησίαις κατηγορίας  
 οὐδ' εἰς νοῦν ἐλάμβανον.

XV. Τοῦτο καταμαθόντες οἱ πρεσβύτατοι [τῶν]  
 Ῥωμαίων, συστραφέντες ἐπειθον ἰδίᾳ τε καὶ ἐν κοι- 25  
 νῷ τοὺς στασιωδεστάτους τῶν δημοτικῶν πανάσασθαι 25  
 τῶν εἰς τοὺς πατρικίους ὑποψιῶν τε καὶ κατηγοριῶν·  
 διδάσκοντες ὡς εἰ δι' ἐνὸς ἀνδρὸς ἐπιφανοῦς φυχὴν  
 τοσοῦτος κίνδυνος κατέσχε τὴν πόλιν, τί χρὴ προσ-  
 δοκᾶν, ἐὰν ἀναγκασθῶσιν οἱ πολλοὶ τῶν πατρικίων  
 προπηλαμισθέντες ὑπὸ τοῦ δήμου τὸ αὐτὸ φρονῆσαι· 30  
 καὶ κατέσχον οὗτοι τὴν ἀκοσμίαν τοῦ πλήθους. παν-  
 σαμένον δὲ τοῦ πολλοῦ θορύβου συνελθοῦσα ἡ βουλή,

τοῖς μὲν ἀπὸ τοῦ κοινοῦ τῶν Λατίνων παροῦσι προ- 1534  
 σβευταῖς ἐπὶ συμμαχίας αἰτησὶν ἀπεκρίνατο, μὴ θά-  
 διον εἶναι σφίσι βοήθειαν ἀποστέλλειν κατὰ τὸ  
 παρόν· αὐτοῖς δὲ ἐκείνοις ἐπιτρέπειν τὴν ἑαυτῶν  
 5 στρατιάν καταγράφειν καὶ ἡγεμόνας τῆς δυνάμεως  
 ἰδίους, ἀποδείξαι ἕως ἄν αὐτοὶ ἐκπέμψωσι δύ-  
 ναμιν. ἐν γὰρ ταῖς συνθήκαις, αἷς ἐποιήσαντο πρὸς  
 αὐτοὺς περὶ φιλίας, ἀπόρρητον ἦν τούτων ἐκάτερον.  
 τοῖς δὲ ὑπάτοις ἐφήκαν στρατόν τε συναγαγεῖν ἐκ  
 10 καταλόγου καὶ τὴν πόλιν διὰ φυλακῆς ἔχειν καὶ τοὺς  
 συμάχους παρακαλεῖν, εἰς ὑπαιθρον δὲ μήπω τὰς  
 δυνάμεις ἐξάγειν, ἕως ἄν ἅπαντα εὐτρεπῆ γένηται.  
 καὶ ὁ δῆμος ταῦτα ἐπεκύρωσεν. ἦν δὲ βραχὺς ὁ λει-  
 πόμενος τῆς ἀρχῆς τοῖς ὑπάτοις χρόνος, ὥστε οὐ-  
 15 δὲν ἐφθασαν τῶν ἐψηφισμένων ἐπὶ τέλος ἀγαγεῖν,  
 ἀλλὰ παρέδωσαν ἡμιτελῆ πάντα τοῖς μεθ' ἑαυτοῦς  
 ὑπάτοις.

XVI. Οἱ δὲ παρὰ τούτων τὴν ἀρχὴν παραλα-  
 βόντες, Σπόριος Ναύτιος καὶ Σέξτος Φούριος, στρα- 1534  
 20 τιάν τε ὄσσην ἐδύναντο πλείστην ἐκ τοῦ πολιτικοῦ  
 κατεστήσαντο καταλόγου, καὶ φρονιτωρίας καὶ σκο-  
 ποὺς ἐν τοῖς ἐπικαιροτάτοις χωρίοις ἔταξαν, ἵνα  
 μηδὲν ἀγνοήσωσι τῶν ἐπὶ τῆς χώρας πραττομένων·  
 χρήματά τε καὶ σῖτον καὶ ὄπλα ἐν ὀλίγῳ χρόνῳ  
 25 πολλὰ ἠτοιμάσαντο. τὰ μὲν οὖν οἰκεῖα παρεσκεύα-  
 στο αὐτοῖς ὡς ἐνήν ἄριστα, καὶ οὐδὲν αὐτῶν ἔτι  
 δεῖν ἐδόκει· τὰ δὲ συμμαχικά οὐκ ἅπαντα ὑπήκουε  
 προθύμως ἐκούσῖά τε οὐκ ἦν, οἷα συνάρασθαι τοῦ  
 πολέμου, ὥστε οὐδὲ προσαναγκάζειν αὐτὰ ἤξιον  
 30 φοβούμενοι προδοσίαν. ἤδη δὲ τινα καὶ ἀφίστατο  
 αὐτῶν ἐκ τοῦ φανεροῦ καὶ τοῖς Οὐλοῦσχοις συν-  
 ελάμβανε. πρῶτοι δὲ ἦσαν Αἰκανοὶ τῆς ἀποστάσεως,

ἅμα τῷ συστήναι τὸν πόλεμον εὐθύς ἐλθόντες ὡς  
 τοὺς Οὐλοῦσχοις καὶ συμμαχίαν μεθ' ὄρκων συν-  
 1535 θέμενοι, στρατιάν τε ἀπέστειλαν οὔτοι τῷ Μαρκίῳ  
 πλείστην τε καὶ προθυμοτάτην. ἀρξαμένων δὲ τού-  
 των πολλοὶ καὶ τῶν ἄλλων συμάχων κρούφα συν- 5  
 ελάμβανον τοῖς Οὐλοῦσχοις, οὐκ ἀπὸ ψηφισμάτων  
 οὐδ' ἀπὸ κοινοῦ δόγματος ἀποστέλλοντες αὐτοῖς τὰς  
 συμμαχίας, εἰ δέ τις ἦν βουλομένοις μετέχειν τῆς  
 στρατείας τῶν σφετέρων, οὐχ ὅπως ἀποτρέποντες,  
 ἀλλὰ καὶ παρορμῶντες. ἐγγόνει τ' οὐ πολλῷ χρόνῳ 10  
 τοσαύτη δύναμις περὶ τοὺς Οὐλοῦσχοις, ὄσσην οὐ  
 πώποτε ἔσχον ὅτε μάλιστα ἠκμαζον ταῖς πόλεσιν, ἦν  
 ἐπαγόμενος ὁ Μάρκιος ἐνέβαλεν αὐθις εἰς τὴν Ῥω-  
 μαίων γῆν, καὶ ἐγκαθεζόμενος ἡμέρας συχρὰς ἐδήου  
 τῆς γῆς ὄσσην ἐν τῇ πρότερον εἰσβολῇ παρέλιπε. 15  
 σωμαίων μὲν οὖν ἐλευθέρων οὐκέτι πολλῶν ἐγκρα-  
 τῆς ἐγένετο κατὰ ταύτην τὴν στρατείαν· οἱ γὰρ ἄν-  
 θρωποι τὰ πλείστου ἄξια συσκευασάμενοι παλαιότερον  
 ἔτι κατεπεφεύγεσαν, οἱ μὲν εἰς τὴν πόλιν, οἱ δ' εἰς  
 1536 τὰ πλησίον φρούρια, ἅτινα ἦν ἐχυρώτατα· τὰ δὲ 20  
 βοσκήματα αὐτῶν ὅσα οὐχ οἰοί τε ἦσαν ἀπελάσαι  
 καὶ τοὺς νέμοντας θεράποντας λαμβάνει, τὸν τε σῖ-  
 τον ἐπὶ ταῖς ἄλωσιν ἔτι κείμενον καὶ τοὺς ἄλλους  
 καρπούς, τοὺς μὲν ἐν χερσίν ὄντας, τοὺς δὲ καὶ  
 συγκομισμένους ἀναιρεῖται. προνομήσας δὲ καὶ 25  
 διαπορθήσας ἅπαντα, οὐθενὸς ὁμόσε χωρῆσαι τολ-  
 μήσαντος ἀπῆγεν ἐπ' οἴκου τὴν στρατιάν βαρεῖαν  
 οὖσαν ἤδη τῷ πλήθει τῶν ὠφελειῶν καὶ σχολῇ πο-  
 ρευομένην.

XVII. Οἱ δὲ Οὐλοῦσχοι τὸ μέγεθος τῆς κο- 30  
 μιζομένης λείας ὀρώντες, καὶ περὶ τῆς Ῥωμαίων  
 ἀτολμίας ἀκούοντες, οἱ δὴ τέως τὴν ἀλλοτριαν λεη-

λατοῦντες ἀδεῶς τότε τὴν αὐτῶν γῆν ἠνείχοντο δη-  
 ουμένην ὀρῶντες, ἀρχημάτων τε μεγάλου ἐνεπίμ-  
 πλαστο καὶ ἐν ἐλπίδι ἦσαν ἡγεμονίας, ὡς δὴ θάδιον  
 καὶ ἐν ἐτοιμῶ σφίσι δὴ καταλύσαι τὴν τῶν ἀντι-  
 5 πάλων ἰσχύν, θυσίας τε χαριστηρίους τοῖς θεοῖς  
 ἐποιούντο, καὶ σκύλων ἀναθέσει τοὺς νεῶς καὶ τὰς  
 ἀγορὰς ἐκόσμου, καὶ ἦσαν ἅπαντες ἐν ἑορταῖς καὶ 1537  
 εὐπαθείαις, τὸν τε Μάρκιον ἀγάμενοι καὶ ὑμνοῦν-  
 τες διετέλου, ὡς εἶη τὰ τε πολέμια δεινότητος ἀν-  
 10 θρώπων καὶ στρατηγὸς οἷος οὔτε Ῥωμαῖος οὔτε  
 ἄλλος [στρατηγὸς] Ἑλλήνων ἢ βαρβάρων οὐδεὶς. μά-  
 λιστα δὲ τῆς τύχης αὐτὸν ἐμακάριζον, ἅπαντα ὅσοις  
 ἐπιχειρήσειε κατὰ γνώμην αὐτῶ προχωροῦντα ὀρῶντες  
 δίχα πόνου· ὥστε οὐδεὶς ἦν τῶν ἐχόντων τὴν στρα-  
 15 τεύσιμον ἡλικίαν, ὃς ἀπολείπεσθαι τοῦ ἀνδρὸς ἡξίου,  
 ἀλλὰ πάντες ὄρμητο μετέχειν τῶν πράξεων καὶ συν-  
 ἦσαν ὡς αὐτὸν ἐξ ἀπάσης πόλεως. ὁ δὲ στρατηγός,  
 ἐπειδὴ τὴν προθυμίαν τῶν Οὐολούσκων ἐπέρωσε,  
 καὶ τὸ τῶν πολεμίων ἀνδρείον εἰς ταπεινὴν καὶ  
 20 ἀνανδρον κατέκλεισεν ἀμυχανίαν, ἐπὶ τὰς συμμαχί-  
 δας αὐτῶν πόλεις ὅσαι τὸ πιστὸν διεφύλαττον ἤγε  
 τὴν δύναμιν· καὶ αὐτίκα ἐτοιμασάμενος ὅσα εἰς πο-  
 λιορκίαν χρήσιμα ἦν ἐπὶ Τολερίνους ἐλαύνει τοῦ  
 Λατίνων ὄντας ἔθλους. οἱ δὲ Τολερῖνοι πρὸ πολλοῦ  
 25 παρασκευασάμενοι τὰ εἰς τὸν πόλεμον καὶ τὰ ἐκ τῆς  
 χάρας εἰς τὴν πόλιν συγκομιχότες ἐδέχοντο αὐτὸν 1538  
 ἐπιόντα, καὶ χρόνον μὲν τινα ἀντεῖχον ἀπὸ τῶν τει-  
 χῶν μαχόμενοι καὶ πολλοὺς τῶν πολεμίων κατέτρο-  
 σαν· ἔπειτα ὑπὸ τῶν σφενδονητῶν ἀναστελλόμενοι  
 30 καὶ μέχρι δειλῆς ὀψίας ταλαιπωροῦντες πολλὰ μέρη  
 τοῦ τείχους ἐξέλιπον. τοῦτο καταμαθὼν ὁ Μάρκιος τοῖς  
 μὲν ἄλλοις στρατιώταις παρήγγειλε κλίμακας προσ-

φέρειν κατὰ τὰ γυμνούμενα μέρη τοῦ περιβόλου,  
 αὐτὸς δὲ τοὺς κρατίστους τῆς στρατιᾶς ἀναλαβὼν  
 ἐπὶ τὰς πύλας ἵεται βαλλόμενος ἀπὸ τῶν πύργων,  
 καὶ διαρρηξάς τοὺς μοχλοὺς παρέσχεται πρῶτος εἰς 5  
 τὴν πόλιν. ἦν δὲ ὑφεστηκὸς ταῖς πύλαις πολὺ καὶ  
 καρτερόν στιφος τῶν πολεμίων, οἱ δέχοντα τε αὐτὸν  
 ἐρωμένως καὶ μέχρι πολλοῦ διεκαρτέρου ἀγωνιζό-  
 μενοι· πολλῶν δὲ ἀναιρεθέντων τρέπονται οἱ λοιποὶ  
 καὶ σκεδασθέντες ἔφευγον ἀνὰ τοὺς στενωπούς. ὁ  
 δ' ἠκολούθει κτείνων τοὺς καταλαμβανομένους, ὅσοι 10  
 1539 μὴ τὰ ὄπλα ὄψαντες εἰς ἱεσίας ἐτράποντο· ἐν δὲ  
 τούτῳ καὶ οἱ διὰ τῶν κλιμάκων ἀναβαίνοντες ἐκρά-  
 τουν τοῦ τείχους. τοῦτον δὲ τὸν τρόπον ἀλούσης τῆς  
 πόλεως ἐξελόμενος ὁ Μάρκιος ἐκ τῶν λαφύρων ὅσα  
 θεοῖς τε ἀναθήματα καὶ κόσμος ταῖς Οὐολούσκων 15  
 πόλεσιν ἐμελλε γενέσθαι, τὰ λοιπὰ τοῖς στρατιώταις  
 ἐφῆκε διαρπάσαι. ἦν δὲ πολλὰ μὲν αὐτόθι σώματα,  
 πολλὰ δὲ χρήματα, πολὺς δὲ σίτος· ὥστε μὴ θάδιον  
 εἶναι μιᾶ πάντα ἐκκομίσαι τοὺς κρατήσαντας ἡμέρα,  
 ἀλλ' ἐκ διαδοχῆς ἄγοντες καὶ φέροντες τὰ μὲν αὐτοί, 20  
 τὰ δὲ ἐπὶ τῶν ὑποζυγίων, πολὺν ἠναγκάσθησαν δια-  
 τρίψαι χρόνον.

XVIII. Ὁ δὲ στρατηγός, ἐπειδὴ τὰ σώματα καὶ  
 τὰ χρήματα πάντα ἐξεκεκόμιστο, τὴν πόλιν ἔρημον  
 καταλιπὼν ἀπήγε τὴν δύναμιν ἐπὶ Βῶλαν Λατίνων 25  
 ἐτέραν πόλιν. ἔτυχον δὲ καὶ οἱ Βῶλανοὶ προεγνωκό-  
 1540 τες αὐτοῦ τὴν ἐφοδὸν καὶ παρεσκευασμένοι πάντα  
 τὰ πρὸς τὸν ἀγῶνα ἐπιτήδεια. ὁ μὲν οὖν Μάρκιος  
 ὡς ἐξ ἐφόδου τὴν πόλιν αἰρήσαν κατα πολλὰ μέρη  
 τοῦ τείχους ἐποιεῖτο τὰς προσβολάς· οἱ δὲ Βῶλανοὶ 30  
 περιμείναντες καιρὸν ἐπιτήδειον ἀνοίγουσι τὰς πύ-  
 λας, καὶ φερόμενοι κατὰ πλήθος ἐν τάξει τε καὶ

κόσμῳ συρράττουσι τοῖς κατὰ μέτωπον, καὶ πολλοὺς αὐτῶν ἀποκτείναντες, ἔτι δὲ πλείους [τούτων] κατατραυματίσαντες, τοὺς τε λοιποὺς αἰσχυρῶς ἀναγκάσαντες φυγεῖν, ἀνέστρεψαν εἰς τὴν πόλιν. ὡς δ' ἔγνω τὴν τροπὴν τῶν Οὐολούσκων ὁ Μάρκιος· οὐ γὰρ ἔτυχε παρῶν ἐν ᾧ χωρίῳ τὸ πάθος ἐγένετο· παρῆν σὺν ὀλίγοις κατὰ σπουδῆν, καὶ τοὺς ἐκ τῆς τροπῆς σκεδασθέντας ἀναλαβὼν συνίστα τε καὶ παρεθάρρυνε, καὶ ἐπειδὴ κατέστησεν εἰς τάξεις, ὑποδείξας ἃ δεῖ πράττειν, ἐκέλευσε προσβάλλειν τῇ πόλει κατὰ τὰς αὐτὰς πύλας. χρησαμένων δὲ πάλιν τῶν Βωλανῶν τῇ αὐτῇ πείρᾳ καὶ κατὰ πλήθος ἐκδραμόντων, οὐ δέχονται αὐτοὺς οἱ Οὐολούσκοι, ἀλλ' ἐγκλίναντες ἔφρουγον κατὰ τοῦ πρᾶνουῦς, ὡς ὁ στρατηγὸς αὐτοῖς ὑπέδειτο· καὶ οἱ Βωλανοὶ τὴν ἀπάτην οὐκ εἰδότες ἐδίωκον ἄχρι πολλοῦ. ἐπεὶ δὲ πρόσω τῆς πόλεως ἐγένοντο, ἔχων τοὺς ἐπιλέκτους τῶν νέων ὁ Μάρκιος ὁμώσε τοῖς Βωλανοῖς ἐχώρει· καὶ γίνεται πολὺς αὐτῶν ἐνταῦθα φόνος, τῶν μὲν ἀμυνομένων, τῶν δὲ φευγόντων. ὁ δὲ ἀκολουθῶν τοῖς ἐπὶ τὴν πόλιν ὄθουμένοις φθάνει πρὶν ἐπιρραχθῆναι τὰς πύλας εἰσβιασάμενος εἰς τὸ τεῖχος. ὡς δ' ὁ στρατηγὸς ἅπαξ ἐγκρατῆς τῶν πυλῶν ἐγένετο, ἠκολούθει καὶ τὸ ἄλλο τῶν Οὐολούσκων πλήθος, οἱ δὲ Βωλανοὶ τὸ τεῖχος ἐκλιπόντες ἔφρουγον ἐπὶ τὰς οἰκίας. γενόμενος δὲ καὶ ταύτης κύριος τῆς πόλεως, ἐπέτρεψε τοῖς στρατιώταις τὰ τε σώματα ἐξανδραποδίσασθαι καὶ τὰ χορήματα διαρπάσαι· καὶ τὸν αὐτὸν τρόπον ὥσπερ καὶ πρότερον ἅπασαν ἐκκομίσας τὴν λείαν σὺν χρόνῳ τε καὶ κατὰ πολλὴν ἐξουσίαν, μετὰ τοῦτο τὴν πόλιν ἐνέπρησεν.

XVIII. Ἐντεῦθεν δὲ τὴν δύναμιν ἀναλαβὼν

ἦγεν ἐπὶ τοὺς καλουμένους Λαβικανούς. ἦν δὲ καὶ αὐτὴ τότε Λατίνων ἢ πόλις, Ἀλβανῶν ὥσπερ αἱ ἄλλαι ἄποικοι. καταπλήξασθαι δὲ βουλόμενος τοὺς ἔνδον ἔκαιεν αὐτῶν τὴν χώραν εὐθύς ἐπιῶν, ὅθεν μάλιστα ἐμελλον ὄψεσθαι τὴν φλόγα. οἱ δὲ Λαβικανοὶ τεῖχος εὖ κατεσκευασμένον ἔχοντες, οὔτε καταπλάγησαν αὐτοῦ τὴν ἐφοδὸν οὔτε μαλακὸν ἐνέδοσαν οὐδέν, ἀλλ' ἀντείχον ἀπομαχόμενοι γενναίως, καὶ πολλάκις ἐπιβαίνοντας τοῦ τείχους τοὺς πολεμίους ἀπήραξαν. οὐ μὴν εἰς τέλος γε ἀντέσχον ὀλίγοι πρὸς πολλοὺς ἀγωνιζόμενοι καὶ χρόνον οὐδὲ τὸν ἐλάχιστον ἀναπαυόμενοι. πολλὰ γὰρ προσβολαὶ καὶ καθ' ὅλην τὴν πόλιν ἐγίνοντο ὑπὸ τῶν Οὐολούσκων ἐκ διαδοχῆς, ὑποχωρούντων μὲν αἰεὶ τῶν κεκηνηκότων, ἑτέρων δὲ προσιόντων νεαρῶν· πρὸς οὓς ἀγωνιζόμενοι δι' ὅλης ἡμέρας, καὶ οὐδὲ τὸν τῆς νυκτὸς ἀναπαυσάμενοι χρόνον, ἐκλιπεῖν ἠναγκάσθησαν τὸ τεῖχος ὑπὸ κόπον. παραλαβὼν δὲ καὶ ταύτην ὁ Μάρκιος τὴν πόλιν ἐξηνδραποδίσατο, καὶ τοῖς στρατιώταις ἐφῆκε μερίσασθαι τὰς ὠφελείας. ἀναστήσας δὲ τὴν δύναμιν ἐκείθεν ἐπὶ τὴν Πεδανῶν πόλιν· ἦν δὲ καὶ αὐτὴ τοῦ Λατίνων γένους· συντεταγμένην τὴν στρατιάν ἔχων ἀφικνεῖται, καὶ αὐτὴν ἅμα τῷ πλησιάσαι τοῖς τείχεσιν αἰρεῖ κατὰ κράτος. καὶ τὰ αὐτὰ διαθείς ὅσα τὰς πρότερον ἀλούσας, ἔωθεν εὐθύς ἀναστήσας τὴν δύναμιν ἦγεν ἐπὶ Κορβιῶνα. ὄντι δὲ αὐτῷ πλησίον τοῦ τείχους τὰς πύλας ἀνοίξαντες οἱ ἔνδον ἀπαντῶσιν ἀντιπροτείνοντες ἰκετηρίας καὶ παραδιδόντες ἀμαχητὶ τὸ τεῖχος. οὓς ἐπαινέσας ὡς τὰ κράτιστα περὶ σφῶν βεβουλευμένους, ἐκέλευσεν ὧν ἕδει τῆ στρατιᾶ φέροντας ἦκειν ἀργυρίον τε καὶ σίτον, καὶ λαβῶν ὅσα προσέταξεν ἀπήγε τὴν δύναμιν ἐπὶ τὴν



Κοπιολανῶν πόλιν. παραδόντων δὲ κἀκείνην τῶν  
 ἔνδον ἀμαχητί, καὶ [ὡς] μετὰ πολλῆς προθυμίας ἀγο-  
 ράς τε παρασχόντων τῇ δυνάμει καὶ χρήματα καὶ  
 ὅσα ἄλλα ἐπετέτακτο αὐτοῖς, ἀπῆγε τὴν στρατιὰν ὡς  
 5 διὰ φιλίας γῆς. πάννυ γὰρ δὴ καὶ τοῦτο ἐσπούδαζεν,  
 ὡς μηδὲν οἱ παραδιδόντες αὐτοὶ τὰς πόλεις πάθοιεν  
 ὧν φιλεῖ δρᾶν ὁ πόλεμος, ἀλλὰ καὶ γῆν ἀδῆπτου  
 ἀπολαμβάνοιεν καὶ βοσκήματα καὶ ἀνδράποδα ὅσα  
 κατέλιπον ἐπὶ τῶν κτήσεων κομίζοντο, ἀυλίξεσθαι  
 10 τε οὐκ εἶα τὴν δύναμιν ἐν ταῖς πόλεσιν, ἵνα μὴ τι  
 γένηται δι' ἀρπαγῆς πρὸς αὐτῶν ἢ κλοπῆς κακόν,  
 ἀλλὰ παρὰ τοῖς τείχεσι κατεστρατοπέδευεν.

XX. Ἀπὸ δὲ ταύτης ἀναστήσας τῆς πόλεως  
 ἤλαυνε τὸν στρατὸν ἐπὶ Βοίλλας, ἐπιφανῆ [τε] τότε  
 15 οὖσαν καὶ ἐκ ὀλίγαις πάννυ ταῖς ἡγουμέναις τοῦ  
 Λατίνων γένους πόλεσιν ἐξεταζομένην. οὐ προσδεξα-  
 μένων δ' αὐτὸν τῶν ἔνδον, ἀλλὰ τῷ τε ἐρύματι πι-  
 στευνόντων ἐχυρῶ γε σφόδρα ὄντι καὶ τῷ πλήθει τῶν  
 20 ἀγωνίζεσθαι προθύμως καὶ τοῖς πρώτοις ἐπιβᾶσι  
 τοῦ τείχους μεγάλας δωρεὰς ὑποσχόμενος ἔργου  
 εἶχετο· καὶ γίνεται μάχη περὶ τῆ πόλει ταύτη καρ-  
 τερά. οὐ γὰρ μόνον ἀπὸ τοῦ τείχους ἡμύνοντο τοὺς  
 προσιόντας οἱ Βοιλλανοί, ἀλλὰ καὶ τὰς πύλας ἀνοίξαν- 1546  
 25 τες ἐξέειπον ἀθρόοι, καὶ κατὰ τοῦ προνοῦς ἐώθουν  
 βία τοὺς ὑφισταμένους· φόνοσ τε πλεῖστος αὐτόθι  
 τῶν Οὐλολούσκων ἐγένετο καὶ χρόνος τῆς τειχομαχίας  
 [πολύς], τοῦ τε κρατήσῃν τῆς πόλεως ἄπορος ἄπασιν  
 ἢ ἐλπίς. ἀλλὰ τῶν ἀπολλυμένων ἀδηλον ἐποίει τὴν  
 30 ἀπουσίαν ὁ στρατηγὸς ἀντικαθιστὰς ἑτέροισ· τῶν δὲ  
 καμνόντων παρεθάρρυνε τὴν ἀθυμίαν, ἐπὶ τὸ πο-  
 νοῦν μέρος τῆς στρατιᾶς αὐτοὺς ὠθούμενος. ἦν τε

οὐχ ὁ λόγος αὐτοῦ μόνου ἐπαγωγὸς ἐπὶ τὸ εὐψυχον,  
 ἀλλὰ καὶ τὰ ἔργα. πάντα γὰρ ὑφίστατο κίνδυνον  
 καὶ οὐδεμιᾶς πείρας ἀπελείφθη, ἕως εἰλω τὸ τεῖχος.  
 κρατήσας δὲ καὶ ταύτης σὺν χρόνῳ τῆς πόλεως, καὶ  
 τῶν ἀλόντων τοὺς μὲν ἐν χειρῶν νόμῳ διαφθείρας, 5  
 τοὺς δ' αἰχμαλώτους λαβῶν, ἀπῆγε τὴν δύναμιν  
 ἐπιφανεστάτην νίκην ἐξενεγκάμενος καὶ λάφυρα κάλ-  
 λιστα καὶ πλεῖστα ἄγων, χρήμασι τε παμπόλλοις, ὧν  
 1547 ἐγκρατῆς ἐγένετο· ἦν δ' αὐτόθι ὅσα ἐν οὐδενὶ τῶν  
 ἀλόντων χωρίων· πλουτίσας τὴν στρατιάν. 10

XXI. Μετὰ τοῦτο χώρα τε ὄσῃν διαπορευόιτο  
 ὑποχείριος ἦν καὶ πόλις οὐδεμία ἠναντιοῦτο ἕξω  
 Λαουινίου, ἦν πρώτην τε πόλιν οἱ σὺν Αἰνεῖα κατ-  
 ἄραντες εἰς Ἰταλίαν Τρῶες ἐκτίσαν, καὶ ἀφ' ἧς τὸ  
 Ῥωμαίων ἦν γένος, ὡς καὶ πρότερόν μοι δεδήλωται. 15  
 οἱ δ' ἐν ταύτῃ κατοικοῦντες πάντα πρότερον ᾤοντο  
 δεῖν ὑπομένειν, ἢ τὸ πρὸς τοὺς ἀπογόνους σφῶν Ῥω-  
 μαίους πιστὸν ἐγκαταλιπεῖν. ἐγένοντο μὲν οὖν καὶ  
 τειχομαχίαι τινὲς αὐτόθι καρτεραὶ καὶ πρὸ τῶν ἐρυ-  
 μάτων ὀξεῖαι μάχαι· οὐ μὲν εἰλω γὰρ τὸ τεῖχος ἀπὸ 20  
 κράτους τῆ πρώτῃ ἐφόδῳ, ἀλλ' ἐδόκει χρόνου δεῖν τῆ  
 πολιορκία καὶ τριβῆς. ἀποστὰς οὖν τῆς τειχομαχίας  
 ὁ Μάρκιος, περιετάφρυνε κύκλῳ τὴν πόλιν καὶ ἀπε-  
 σταύρου, τὰς ὁδοὺς φυλάττων, ἵνα μήτε ἀγορὰ μήτε  
 1548 ἐπικουρία τις αὐτοῖς ἐξωθεν προσγένοιτο. Ῥωμαῖοι 25  
 δὲ τῶν τε κεκρατημένων ἤδη πόλεων τὸν ὄλεθρον  
 ἀκούοντες, καὶ τῶν προσθεμένων τῷ Μαρκίῳ τὴν  
 ἀνάγκην, ταῖς τε πρᾶξαις ἐνοχλούμενοι ταῖς ἀφι-  
 κνουμέναις ὡς αὐτοὺς ὄσημέραι παρὰ τῶν μενουσῶν  
 ἐν τῇ φιλίᾳ καὶ δεομένων βοθηθείας, τοῦ τε Λαουινίου 30  
 τὸν περιτειχισμὸν ὀργωδοῦντες ἐν χειρῶν ὄντα, καὶ  
 εἰ τότε τὸ φρούριον ἀλώσεται τὸν πόλεμον ἐπὶ σφᾶς

ἤξειν εὐθύς οἰόμενοι, μίαν ὑπέλαβον ἔσεσθαι πάντων τῶν κακῶν λύσιν, εἰ ψηφίσαιντο τῷ Μαρκίῳ τὴν ἀπόδοσιν. καὶ ὁ τε δῆμος ἅπας ἐβόα τοῦτο, καὶ οἱ δῆμαρχοι νόμον εἰσφέρειν ὑπὲρ ἀκυρώσεως τῆς καταδίκης ἐβούλοντο· ἀλλ' οἱ πατριῖοι ἠναντιώθησαν αὐτοῖς οὐκ ἀξιούντες τῶν δεδικασμένων λύειν οὐθέν. μὴ γενομένου δὲ προβουλεύματος ὑπὸ τῆς βουλῆς, οὐδὲ τοῖς δημάρχοις ἐτι προθεῖναι γνώμην εἰς τὸν δῆμον ἐδόκει. ὁ καὶ θαυμάζειν ἄξιον, ἀφ' ἧς δῆποτε αἰτίας ἢ βουλῆ σπουδάζουσα τὸν ἐμπροσθεν χρόνον ὑπὲρ τοῦ Μαρκίου, τότε βουλομένη τῷ δήμῳ κατάγειν αὐτὸν ἠναντιώθη· πότερα πείρα αὐτοῦ ποιουμένη τῆς γνώμης καὶ τῷ μὴ συγχωρεῖν [ἐκάστῳ] ἐτοιμῶς ἐπὶ τὸ μάλλον σπουδάζειν αὐτὸν παρορμῶσα, ἢ τὰς ἰδίας καθ' ἑαυτῆς ἀπολύσασθαι βουλομένη διαβολὰς ὑπὲρ τοῦ μηθενὸς ὧν ἐπραττεν ὁ ἀνὴρ μήτε αἰτία μήτε συνεργὸς εἶναι. χαλεπὸν γὰρ ἦν ἀπόρητον γενόμενον αὐτῆς τὸ βούλευμα συμβαλεῖν.

XXII. Ἀκούσας δὲ ταῦτα παρ' αὐτομόλων τινῶν ὁ Μάρκιος, ὡς εἶχεν ὀργῆς εὐθύς ἀναστήσας τὴν δύναμιν ἤγεεν ἐπὶ τὴν Ῥώμην, φυλακὴν τοῦ Λαουνίου τὴν ἀρκοῦσαν καταλιπὼν· καὶ ἀντίκα τῆς πόλεως σταδίους τετταράκοντα ἀποσχὼν κατεστρατοπέδευσε περὶ τὰς καλουμένας Κλυιλίας τάφρους. μαθοῦσι δὲ τὴν παρουσίαν αὐτοῦ τοῖς κατὰ τὴν πόλιν τοσοῦτος ἐνέπεσε θόρυβος, ὡς ἀντίκα τοῖς τελεῖσιν τοῦ πολέμου προσάξοντος, ὥσθ' οἱ μὲν ἐπὶ τὰ τεῖχη τὰ ὄπλα λαβόντες ἔθεον ἄνευ παραγγέλματος, οἱ δ' ἐπὶ τὰς πύλας κατὰ πλήθος ἐφέροντο χωρὶς ἡγεμόνος, οἱ δὲ τοὺς δούλους καθοπίσαντες ἐπὶ τοῖς τέγεσι τῶν οἰκιῶν ἴστασαν, οἱ δὲ τὴν τε ἄκραν καὶ τὸ Καπιτώλιον καὶ τοὺς ἄλλους ἐρυμνοὺς τόπους

τῆς πόλεως καταλαμβάνοντο, γυναῖκες τε λελυμέναι τὰς κόμας ἐπὶ τὰ τεμένη καὶ τοὺς νεῶς ἔθεον ὀλοφυρόμεναι τε καὶ δεόμεναι τῶν θεῶν ἀποστρέψαι τῆς πόλεως τὸν ἐπιόντα φόβον. ὡς δὲ ἦ τε νύξ παρήλθε καὶ τῆς ἐπιούσης ἡμέρας τὸ πλεῖστον, καὶ οὐδὲν ὧν ἐδεδοίκεσαν ἐγίνετο, ἀλλ' ἔμενεν ὁ Μάρκιος ἐφ' ἡσυχίας, συνέδραμον ἅπαντες εἰς τὴν ἀγορὰν οἱ δημοτικοὶ καὶ τοὺς πατριῖους ἐκάλουν εἰς τὸ βουλευτήριον, καὶ εἰ μὴ προβουλεύσουσι τῷ ἀνδρὶ τὴν ἀπόδοσιν, αὐτοὶ βουλεύσεσθαι περὶ σφῶν αὐτῶν ἔφασαν ὡς προδεδομένοι. τότε δὴ συνελθόντες εἰς τὴν βουλὴν οἱ πατριῖοι ψηφίζονται πρεσβευτὰς πρὸς τὸν Μάρκιον ἀποστεῖλαι πέντε ἀνδρας ἐκ τῶν πρεσβυτάτων, οὓς μάλιστα ἐκεῖνος ἠσπάζετο, περὶ διαλύσεώς τε καὶ φιλίας διαλεξομένους. ἦσαν δὲ οἱ προχειρισθέντες ἀπ' αὐτῶν ἀνδρες οἷδε, Μάρκιος Μηνύκιος καὶ Πόστουμος Κομίνιος καὶ Σπόριος Λάρκιος καὶ Πόπλιος Πινάριος καὶ Κόιντος Σολπίκιος, ἅπαντες ὑπατικοί. ὡς δὲ ἀφίκοντο ἐπὶ τὸ στρατόπεδον, καὶ ἔγνω τὴν παρουσίαν αὐτῶν ὁ Μάρκιος, καθεζόμενος ἅμα τοῖς ἐπιφανεστάτοις Οὐλοούσκων τε καὶ τῶν ἄλλων συμμάχων, ἔνθα πλεῖστοι ἐμελλον ἀκούσεσθαι τῶν λεγομένων, ἐκέλευσε καλεῖν τοὺς ἀνδρας. εἰσελθόντων δὲ αὐτῶν ἤρξατο τοῦ λόγου Μηνύκιος, ὁ πλεῖστα κατὰ τὸν τῆς ὑπατείας χρόνον σπουδάσας ὑπὲρ αὐτοῦ, καὶ μάλιστα τοῖς δημοτικοῖς ἐναντιωθεὶς, καὶ ἔλεξε τοιαῦτα.

XXIII. Ὅτι μὲν οὐ δίκαια πέπονθας ὑπὸ τοῦ δήμου, ὦ Μάρκιε, μετ' αἰτίας αἰσχροῦς ἐξελαθεὶς ἐκ τῆς πατρίδος, ἅπαντες ἴσμεν· καὶ οὐδὲν οἰόμεθά σε ποιεῖν θαυμαστόν, εἰ χαλεπαίνεις καὶ ἀγανακτεῖς ἐπὶ ταῖς τύχαις. κοινὸς γὰρ δὴ τῆς ἀπάντων φύσεως

οὗτος ὁ νόμος, ἐχθρὸν εἶναι τῷ δράσαντι τὸ πεπον-  
 θὸς κακῶς. ὅτι δ' οὐ μετὰ λογισμοῦ σώφρονος ἐξετά-  
 ζεις οὓς ἀμύνεσθαι τε καὶ τιμωρεῖσθαι σοι προσήκει,  
 οὐδὲ μετριάξεις περὶ τὴν ἀνάπραξιν τῆς δίκης, ἀλλ'  
 5 ἐν τῷ αὐτῷ τίθεσαι τὰ τε ἀναίτια τοῖς αἰτίοις καὶ  
 τὰ φίλια τοῖς πολεμίοις, νόμους τε κινεῖς φύσεως  
 ἀκινήτους καὶ τὰ πρὸς τοὺς θεοὺς συνταράττεις ὅσια,  
 καὶ οὐδὲ σεαυτὸν ἐξ ὧν τε καὶ ὅστις ἔφυς ἔτι μέμνη-  
 σαι, τοῦτο τεθναυμάκαμεν. ἤκομέν τε ἀποσταλέντες  
 10 ὑπὸ τοῦ κοινοῦ πρέσβεις οἱ προὔχοντες ἡλικία τῶν  
 πατρικίων καὶ περὶ σε προθυμώτατοι μειγμένην  
 φέροντες δικαιολογίαν παραιτήσῃ, καὶ ἐφ' οἷς ἀξιοῦ-  
 μέν σε διαλύσασθαι τὴν ἐχθρὰν πρὸς τὸν δῆμον 1553  
 ἀπαγγελοῦντες· πρὸς δὲ τούτοις, ἃ νομίζομεν εἶναι  
 15 κάλλιστα καὶ συμφορώτατά σοι, ταῦτα παραινέ-  
 σοντες.

XXIII. Ἀρχέτω δὲ ὁ περὶ τῶν δικαίων λόγος.  
 συνέστη τὸ δημοτικὸν ἐπὶ σοι παροξυνθὲν ὑπὸ τῶν  
 δημάρχων, καὶ ἤκου ὡς ἀποκτενοῦντές σε ἄκριτον  
 20 οἷς φοβερὸς ἦσθα. τοῦτο τὸ ἔργον ἐκαλύψαμεν  
 ἡμεῖς οἱ ἐκ τοῦ συνεδρίου, καὶ παρέσχομέν σοι μη-  
 θὲν ὃ μὴ δίκαιον ἦν τότε παθεῖν. μετὰ τοῦτο  
 προὔκαλοῦντό σε οἱ καλυπθέντες ἀνελεῖν ἐπὶ δίκην,  
 αἰτιασάμενοι πονηροὺς κατ' αὐτῶν εἰπεῖν ἐν τῇ  
 25 βουλῇ λόγους. ἐνέστημεν καὶ πρὸς τοῦτο, ὡς οἶσθα,  
 καὶ οὐκ ἐπετρέψαμεν οὔτε γνώμης οὔτε λόγων ὑπο-  
 σχεῖν σε δίκης. ἀποτυχόντες καὶ τούτου τελευτῶντες  
 ἤκου ἐφ' ἡμᾶς αἰτιώμενοί σε τυραννίδι ἐπιχειρεῖν.  
 ταύτην αὐτὸς ὑπέμεινας ἀπολογήσασθαι τὴν αἰτίαν,  
 30 ἐπειδὴ πάμπολυ ἀπαίχες αὐτῆς, καὶ παρέσχες τοῖς  
 δημοτικοῖς περὶ σεαυτοῦ τὴν ψῆφον ἀναλαβεῖν. ἢ  
 βουλή δὲ καὶ τότε παρῆν, καὶ πολλὰς ἐποιεῖτο δεή- 1554

σεις περὶ σοῦ. τίνος οὖν ἡμεῖς οἱ πατριῖοι τῶν  
 συμβεβηκότων σοι κακῶν γεγόναμεν αἴτιοι, καὶ διὰ  
 τί πολεμεῖς ἡμῖν τοσαύτην εὐνοίαν ἀποδειξαμένοις  
 περὶ σε κατὰ τὸν τότε ἀγῶνα; ἀλλὰ μὴν οὐδὲ τὸ  
 δημοτικὸν ἅπαν ἐξελαθῆναί σε βουλόμενον εὐρέθη· 5  
 δυσὶ γοῦν ψήφοις ἐάλως μόναις, ὥστε οὐδὲ τούτοις  
 ἂν εἴης σὺν δίκῃ πολέμιος, οἱ σε ὡς οὐδὲν ἀδικοῦντα  
 ἀπέλυσαν. τίθημι δέ, εἰ βούλει, πᾶσι μὲν τοῖς δη-  
 μόταις δόξαν, ὅλη δὲ τῇ βουλῇ φανεῖν ταύτην χρη-  
 σασθῆναι σε τῇ συμφορᾷ, καὶ δίκαιον εἶναι σου τὸ 10  
 πρὸς ἅπαντας ἡμᾶς μῖσος· ἀλλ' αἱ γυναῖκες σε, ὦ  
 Μάρκιε, τί δεινὸν εἰργάσαντο ἀνθ' ὅτου πολεμεῖς  
 αὐταῖς; ποῖαν ἐπενέγκασαι περὶ φυγῆς ψῆφον ἢ  
 τίνας εἰποῦσαι κατὰ σοῦ πονηροὺς λόγους; τί δὲ οἱ  
 παῖδες ἡμῶν δράσαντες ἢ διανοηθέντες ἀδικεῖν περὶ 15  
 σοῦ κινδυνεύουσιν ὑπὲρ αἰχμαλωσίας καὶ τῶν ἄλλων,  
 ἃ παθεῖν αὐτοὺς εἰκὸς ἂν ἢ πόλις ἀλῶ; οὐ τὰ  
 1555 δίκαια διαίτης, ὦ Μάρκιε, καὶ εἰ τοῦτον οἶε δεῖν  
 τὸν τρόπον τὰ ὑπαίτια καὶ ἐχθρὰ μισεῖν, ὥστε μηδὲ  
 τῶν ἀναίτιων φείδεσθαι καὶ φίλων, οὐκ ἄρα τὰ 20  
 προσήκοντα ἀνδρὶ ἀγαθῷ φρονεῖς. ἵνα δὲ πάντα ταῦτα  
 ἀφῶ, τί ἂν ἔχοις εἰπεῖν, ὦ πρὸς Διός, εἰ τις ἔροιτό  
 σε, τοὺς δὲ δὴ τάφους τῶν προγόνων τί παθῶν  
 ὑπ' αὐτῶν ἀνασκάπτεις καὶ τιμᾶς ἄς κομίζονται  
 παρὰ ἀνθρώπων ἀφαιρῆ; θεῶν δὲ βωμοὺς καὶ τε- 25  
 μένη καὶ νεῶς τίνος ἀδικήματος ὀργῇ συλᾶς καὶ κα-  
 τακαίεις καὶ ἀνατρέπεις καὶ σεβασμῶν οὐκ ἔως τυγ-  
 χάνειν τῶν νομίμων; τί πρὸς ταῦτα φαίης ἂν; ἐγὼ  
 μὲν γὰρ οὐδὲν ὀρῶ. ταῦτά σοι περὶ τε ἡμῶν αὐτῶν,  
 ὦ Μάρκιε, τῶν ἐκ τοῦ συνεδρίου καὶ περὶ τῶν 30  
 ἄλλων πολιτῶν, οὓς ἀπολέσαι προθυμῆ κακῶν οὐδὲν  
 ὑπ' αὐτῶν πεπονθῶς, τάφων τε καὶ ἱερῶν καὶ

πόλεως τῆς γειναμένης τε καὶ θρησαμένης τὰ δίκαια εἰρήσθω.

XXV. Ἀλλὰ, φέρε, εἰ δὲ δὴ πάντας μὲν ἀνθρώ-  
 5 πους καὶ τοὺς μηδὲν ἀδικοῦντάς σε γυναιξίν ὁμοῦ 1550  
 καὶ τέκνοις δίκας σοι δοῦναι προσῆκε, πάντας δὲ  
 θεοὺς τε καὶ ἥρωας καὶ δαίμονας πόλιν τε καὶ χώ-  
 ραν ἀπολαῦσαι τῆς τῶν δημάρχων ἀνοίας, καὶ μηδὲν  
 ἐξαίρετον μηδ' ἀτιμώρητον ἀφείσθαι μέρος ὑπὸ σοῦ,  
 10 οὐχ ἱκανῶς ἤδη παρὰ πάντων εἰσπέπραξαι δίκας, το-  
 σοῦτον μὲν φόνον ἐργασάμενος ἀνθρώπων, τοσαύτην  
 δὲ χώραν πυρὶ καὶ σιδήρῳ λωβησάμενος, τοσαύτας δὲ  
 πόλεις ἐκ βάρθρων ἀναστήσας, ἐορτὰς δὲ καὶ θυσίας  
 καὶ σεβασμούς θεῶν καὶ δαιμόνων [ὡς] ἐν πολλοῖς  
 15 τόποις ἀνεόρτους ἀναγκάσας γενέσθαι καὶ ἀδύτους  
 καὶ τιμῶν νομίμων ἀμοίρους; ἐγὼ μὲν [οὖν] οὐκ  
 ἤξιουν ἄνδρα, ὅτῳ φροντίς ὀποσηοῦν ἀρετῆς ἐστίν,  
 οὔτε συναναιρεῖν τοῖς ἐχθροῖς τὰ φίλια οὔτε χαλεπὸν  
 20 ὄργην εἶναι καὶ ἀπαράιτητον εἰς τοὺς ἐξαμαρτάνον- 1557  
 τὰς τι περὶ αὐτόν, ἄλλως τε καὶ δίκας παρ' αὐτῶν  
 εἰληφότα πολλὰς καὶ μεγάλας. ἃ μὲν οὖν ἀπολογεῖ-  
 σθαι τε περὶ ἡμῶν αὐτῶν εἶχομεν καὶ παραιτεῖσθαι  
 σε περὶ τῶν δημοτικῶν, ταῦτ' ἐστίν· ἃ δ' ὑποτίθε-  
 σθαι σοι δι' εὐνοίαν οἱ τιμωτάτοι φίλων ἦκοντες  
 25 ταυτί· ἐν ᾧ τὸ δύνασθαι σοι μάλιστα ὑπάρχει καὶ  
 τὸ θεῖον ἐτι συλλαμβάνει μετριάζει καὶ ταμιεύεσθαι  
 τὴν τύχην ἐνθυμηθέντα, ὅτι μεταβολὰς ἔχει πάντα  
 τὰ πράγματα καὶ οὐδὲν ἐπὶ τῶν αὐτῶν φιλεῖ δια-  
 μένειν, νεμεσᾶται τε πάντα ὑπὸ θεῶν τὰ ὑπερέ-  
 30 χοντα, ὅταν εἰς ἄκρον ἐπιφανείας ἀφίκηται, καὶ τρέ-  
 πεται πάλιν εἰς τὸ μηδέν. μάλιστα δὲ τοῦτο πάσχει  
 τὰ σκληρὰ καὶ μέγανχα φρονήματα καὶ τοὺς ὄρους

ἐκβαίνοντα τῆς ἀνθρωπίνης φύσεως. ὑπάρχει δὲ σοι  
 νῦν ἀπάντων κράτιστα καταλύσασθαι τὸν πόλεμον·  
 1658 ἢ τε γὰρ βουλὴ πᾶσα ὄρηται τὴν καθόδον ψηφί-  
 σασθαί σοι, καὶ ὁ δῆμος ἔτοιμός ἐστι νόμῳ κνω-  
 θέντι λῦσαι τὴν αἰφυργίαν. τί οὖν ἐτι κωλύει σε 5  
 τὰς ἠδίστας καὶ τιμωτάτας ὄψεις τῶν ἀναγκαιοτάτων  
 σωματίων ἀπολαβεῖν καὶ κεκομίσθαι τὴν περιμάχη-  
 τον πατρίδα ἄρχειν τε ὥσπερ σοι προσῆκεν ἀρχόν-  
 των καὶ ἡγεῖσθαι ἡγεμόνων παισὶ τε καὶ ἐγγόνοις  
 μέριστον αὐχνηῖα καταλιπεῖν; τούτων μέντοι τῶν 10  
 ὑποσχέσεων ἡμεῖς ἐγγυηταὶ πασῶν ἐσμεν ὡς αὐτί-  
 κα μάλα γενησομένων. νῦν μὲν γὰρ οὐχὶ καλῶς εἶχε  
 ψηφίσασθαι σοι τὴν βουλήν ἢ τὸν δῆμον οὐθὲν ἐπιει-  
 κὲς ἢ μέτριον, ἕως ἀντιπαρεστρατοπέδευκας ἡμῖν  
 καὶ τὰ πολεμίων ἔργα δρᾶς· εἰ δὲ ἀποσταίης τῶν 15  
 ὅπλων, ἤξει σοι τὸ περὶ τῆς καθόδου ψήφισμα φε-  
 ρόμενον ὑφ' ἡμῶν οὐκ εἰς μακρὰν.

XXVI. Ἀγαθὰ μὲν δὴ ταῦτα ὑπάρξει σοι δια-  
 λαττομένῳ· μένοντι δὲ ἐπὶ τῆς ὄργῆς καὶ μὴ δια-  
 λυομένῳ τὸ μῖσος πρὸς ἡμᾶς πολλὰ καὶ χαλεπά, ἐξ 20  
 1659 ὧν ἐγὼ δύο τὰ μέγιστα νυνὶ καὶ φανερώτατα ἐρῶ.  
 πρῶτον μὲν ὅτι δυσκόλου γενέσθαι, μᾶλλον δὲ ἀδυ-  
 νάτου πράγματος πονηρὸν ἔρωτα ἔχεις, πόλεως τῆς  
 Ῥωμαίων καθελεῖν τὴν ἰσχύν, καὶ ταῦτα τοῖς Οὐό-  
 λούσκων ὄπλοις· ἐπειθ' ὅτι σοι κατορθώσαντί τε 25  
 καὶ μὴ τυχόντι πάντων ἀνθρώπων ὑπάρξει δυστυχε-  
 στάτῳ νομίζεσθαι. ἐξ ὧν δὲ ταῦτα παρίσταται μοι  
 περὶ σοῦ φρονεῖν, ἄκουσον, ὦ Μάρκιε, μηδὲν πρὸς  
 τὴν ἐλευθερίαν μου τῶν λόγων τραχυνόμενος. σκό-  
 30 πει δὲ πρῶτον ὑπέρο τοῦ ἀδυνάτου. Ῥωμαίοις, ὡς  
 εἰ τὸ στασιάζον ἐξαιρεθείη· γενήσεται δὲ τοῦτο κατὰ  
 9\*

πολλήν ἀνάγκην νυνὶ διὰ τούδε τὸν πόλεμον, πάντα γὰρ ὑπὸ δέους κοινοῦ συνίστασθαι φιλεῖ τὰ διάφορα· οὐχ ὅτι Οὐολούσκοι κρατήσουσιν, ἀλλ' οὐδὲ ἄλλο 1500 τῶν κατὰ τὴν Ἰταλίαν ἐθνῶν οὐθέν· πολλή δὲ ἡ

5 Λατίνων καὶ τῶν ἄλλων συμμάχων τε καὶ ἀποίκων τῆς πόλεως ἰσχύς, ἣν ὀλίγου πᾶσαν ἐπίκουρον ἤξειν προσδέχου· στρατηγοὶ τε οἶος σὺ καὶ πρεσβύτεροι καὶ νέοι τοσοῦτοι τὸ πλῆθος, ὅσοίπερ ἀπάσαις οὐκ εἰσὶ ταῖς ἄλλαις πόλεσι. μεγίστη δὲ πασῶν βοήθεια,

10 καὶ τὰς ἐν τοῖς δεινοῖς ἐλπίδας οὐδέποθ' ἡμῶν ψευσαμένη, συμπάσης τε ἀμείνων ἀνθρωπίνης ἰσχύος, ἢ παρὰ τῶν θεῶν εὐνοια, δι' οὓς οὐ μόνον ἐλευθέρων εἰς τόδε χρόνου τὴν πόλιν τήνδε οἰκοῦμεν ὀρθόην ἤδη τὴν νῦν γενεάν, ἀλλὰ καὶ εὐδαίμονα καὶ πολλῶν

15 ἐθνῶν ἄρχουσιν. μὴ δὲ Πεδανοῖς ἡμᾶς εἰκάσης μηδὲ Τολερῖνοις μηδὲ τοῖς ἄλλοις μικροπολίταις, ὧν κατέσχες τὰ πολίχνια· καὶ γὰρ ἦντιν ἂν τίς σου στρατηγός, καὶ ἀπ' ἐλάττους ἢ τοσαύτης στρατιᾶς ὀλιγανθρωπίαν καὶ φραυλότητα ἐρυμάτων ἐβιάσατο· ἀλλ' 1561

20 ἐνθυμοῦ τὸ μέγεθος τῆς πόλεως καὶ τὴν λαμπρότητα τῶν ἐν τοῖς πολέμοις πράξεων καὶ τὴν ἐκ τοῦ θεοῦ παροῦσαν αὐτῇ τύχην, δι' ἣν ἐκ μικρᾶς τοσαύτη γέγονε. καὶ τὴν σεαυτοῦ δύναμιν, ἣν ἐπάγων ἔργω τοσῶδε ἐπιχειρεῖς, μὴ νόμιζε ἡλλάχθαι, ἀλλὰ μέμνησο

25 ἀκριβῶς ὅτι Οὐολούσκοι τε καὶ Αἰκανῶν στρατιᾶν ἐπάγη, οὓς ἡμεῖς οἶδε οἱ νῦν ὄντες ἐν πολλαῖς ἐνικῶμεν μάχαις, ὅσάκις ἡμῖν ἐτόλμησαν εἰς πόλεμον καταστήναι· ὥστε σὺν τοῖς χείροσιν ἀγωνίζεσθαι μέλλων ἴσθι πρὸς τοὺς κρείττους, καὶ σὺν τοῖς ἠττωμένοις

30 διὰ παντὸς πρὸς τοὺς νικῶντας ἀεὶ. εἰ δὲ δὴ τάναντία τούτων ἦν, ἐκεῖνό γε τοι θαυμάζειν ἄξιον, πῶς λέληθέ σε πολεμικῶν ὄντα πραγμάτων ἔμπειρον, ὅτι

τὸ παρὰ τὰ δεινὰ εὔτολμον οὐκ ἐξ ἴσου παραγίνεσθαι φιλεῖ τοῖς τε ὑπὲρ οἰκειῶν ἀγαθῶν ἀγωνιζομένοις καὶ τοῖς ἐπὶ τάλλοτριά πορευομένοις· οἱ μὲν γε οὐδὲν εἰ μὴ κατορθώσωσι βλάπτονται, τοῖς δ' οὐδὲν 1502 εἰ μὴ πταίσωσι καταλείπεται· καὶ τοῦ σφάλλεσθαι τὰς 5 μεγάλας δυνάμεις ὑπὸ τῶν ἐλαττόνων καὶ τὰς κρείττους ὑπὸ τῶν φραυλοτέρων τοῦτ' ἐν τοῖς μάλιστα αἴτιον ἦν. δεινὴ γὰρ ἡ ἀνάγκη, καὶ ὁ περὶ τῶν ἐσχάτων κίνδυνος ἱκανὸς θάρσος ἐνθεῖναι τιμὴν καὶ μὴ προὔπαρχον φύσει. εἶχον ἔτι πλείω λέγειν ὑπὲρ τοῦ 10 ἀδυνάτου, ἀλλὰ καὶ ταῦθ' ἱκανά.

XXVII. Εἷς ἔτι μοι καταλείπεται λόγος, ὃν εἰ μὴ μετ' ὀργῆς ἀλλ' ἐκ λογισμοῦ κρινεῖς, ὀρθῶς τε εἰρησθαι δόξει, καὶ παραστήσεται σοι μεταμέλεια τῶν 15 πραττομένων. τίς δ' ἔστιν οὗτος ὁ λόγος; οὐδενὶ 15 θνητῷ φύντι θεοὶ τῶν μελλόντων ἔσσεσθαι βεβαίαν ἐπιστήμην ἔδωκαν ἔχειν, οὐδ' ἂν εὖροις ἐκ τοῦ παντὸς αἰῶνος ὅτ' πάντα κατὰ νοῦν ἐχώρησε τὰ πράγματα μηδὲν ἐναντιωθείσης τῆς τύχης. καὶ διὰ τοῦτο οἱ φρονήσει προὔχοντες ἑτέρων, ἣν ὁ μακρὸς βίος 20 καὶ τὰ πολλὰ παθήματα φέρει, πρὶν ἐγχειρεῖν ὅτ' 1503 δῆποτε ἔργω τὸ τέλος αὐτοῦ πρώτον οἶονται δεῖν σκοπεῖν, οὐ θάτερον μόνον ὃ βούλονται γενέσθαι σφίσι, ἀλλὰ καὶ τὸ παρὰ γνώμην ἐκβησόμενον· μάλιστα δὲ οἱ τῶν πολέμων ἠγεμόνες, ὅσ' μαιζόνων τε 25 γίνονται πραγμάτων κύριοι, καὶ τὰς αἰτίας τῶν κατορθωμάτων ἢ σφαλμάτων ἅπαντες ἐπὶ τούτους ἀναφίρουσιν. ἔπειτα ἂν μὲν εὖρωσι μηδεμίαν ἐνοῦσαν ἢ μικρὰς καὶ ὀλίγας ἐν τῷ μὴ κατορθῶσαι βλάβας, ἀπύονται τῶν ἔργων· εἰ μὴ πολλὰς καὶ μεγάλας, 30 ἀφίστανται. τοῦτο δὲ καὶ σὺ ποίησον, καὶ σκόπει πρὸ τῶν ἔργων, εἰ μὴ σφαλῆς κατὰ τὸν πόλεμον καὶ

μὴ πάντα ὑπάρξει, τί συμβήσεται σοι παθεῖν. δι'  
 αἰτίας μὲν ἔση παρὰ τοῖς ὑποδεξαμένοις σεαυτὸν, ὡς  
 μελίσσιν ἐπιχειρήσας πράγμασιν καὶ ἀδυνάτοις· στρα-  
 5 τίας δὲ ἡμετέρας πάλιν ἐκείσε ἀρικομένης καὶ φθει-  
 ρούσης τὴν ἐκείνων γῆν· οὐ γὰρ ἀνεξόμεθα μὴ ἀν-  
 τιτιμωρούμενοι τοὺς ἄρξαντας ἡμᾶς κακῶς ποιεῖν·  
 10 δυνεῖν οὐκ ἂν ἀμάροις θατέρου, ἢ πρὸς αὐτῶν ἐκεῖ-  
 νων οἷς αἴτιος ἔση συμφορῶν μεγάλων αἰσχυρῶς ἀναι-  
 ρεθῆναι, ἢ πρὸς ἡμῶν οὓς ἀποκτενῶν τε καὶ δουλω-  
 σόμενος ἦλθες. τάχα δ' ἂν ἐκεῖνοι, πρὶν ἐν τῷ πα-  
 θεῖν τι κακὸν γενέσθαι, διαλύσεις ποιεῖσθαι πρὸς  
 ἡμᾶς ἐπιχειροῦντες ἐκδοτον ἀξιόσπειαν ἐπὶ τιμωρίᾳ  
 σε παραδιδόναι· ὁ πολλοὶ βάρβαροί τε καὶ Ἕλληνες  
 15 εἰς τοιαύτας καταστάντες τύχης ἠναγκάσθησαν ὑπο-  
 μεῖναι. ἀρὰ γε μικρὰ καὶ οὐκ ἄξια λόγον ταῦτ' εἶναι  
 σοι δοκεῖ καὶ δέον αὐτῶν ὑπεριδεῖν, ἢ κακῶν συμ-  
 πάντων ἔσχατα παθεῖν;

XXVIII. Φέρε· ἐὰν δὲ δὴ κατορθώσης, τί τὸ  
 θαυμαστὸν ἔσται σοι καὶ περιμάχητον ἀγαθόν, ἢ  
 20 τίνας ἐξοίσῃ δόξας; καὶ γὰρ τοῦτο ἐξέτασον. πρῶτον  
 μὲν τῶν φιλτάτων τε καὶ ἀναγκαιοτάτων ὑπάρξει σοι  
 στερέσθαι σωμαίων, μητρὸς ἀθλίας, ἢ γενέσεως καὶ  
 τροφῆς καὶ τῶν ἄλλων ὧν ἔσχευ ἐπὶ σοι πόνων οὐ  
 καλὰς ἀμοιβὰς ἀποδίδως· ἔπειτα γαμετῆς σώφρονος,  
 25 ἢ διὰ τὸν σὸν πόθον ἐν ἐρημίᾳ καὶ χηρείᾳ κάθηται  
 πᾶσαν ἡμέραν καὶ νύκτα τὰς σὰς φυχὰς ὀδυρομένη·  
 πρὸς δὲ τούτοις τέκνων δυνεῖν, οὓς ἐχρήν ἀγαθῶν  
 προγόνου ὄντας ἀπογόνους καρποῦσθαι τὰς ἐκείνων  
 τιμὰς εὐδοξοῦντας ἐν εὐτυχούσῃ τῇ πατρίδι. ὧν  
 30 ἀπάντων οἰκτρὰς καὶ ἀτυχεῖς ἀναγκασθήσῃ θεωρεῖν  
 καταστροφὰς, εἰ τολμήσεις προσάγειν τοῖς τείχεσι  
 τὸν πόλεμον· οὐ γὰρ δὴ φείδονται τῶν σῶν οὐθεὸς

οἱ περὶ τῶν σφετέρων κινδυνεύοντες καὶ εἰς τὰ ὅμοια  
 κακῶς ὑπὸ σοῦ πάσχοντες, ἀλλ' εἰς αἰκισμούς αὐτῶν  
 δεινούς καὶ ὕβρεις ἀνηλεεῖς καὶ πᾶσαν ἄλλην ἰδέαν  
 προπηλακισμοῦ χωρήσουσιν ὑπὸ τῶν συμφορῶν βια-  
 ζόμενοι· καὶ τούτων οὐκ οἱ δοῶντες, ἀλλ' ὁ τὴν 5  
 ἀνάγκην αὐτοῖς ἐπιτιθεῖς αἴτιος ἔση σὺ· ἠδονὰς μὲν  
 δὴ τοιαύτας καρπώσῃ κατὰ γνώμην χωρήσαντός  
 σοι τοῦδε τοῦ ἔργου, ἔπαινον δὲ [δὴ] καὶ ζήλον καὶ  
 1566 τιμὰς, ὧν ὀρέγεσθαι χρὴ τοὺς ἀγαθούς ἄνδρας,  
 σκόπει ποίας [καὶ] τίνας· μητροκτόνος κεκλήσῃ καὶ 10  
 παιδοφόρος καὶ γυναικὸς ἀλιτήριος καὶ πατρίδος  
 ἀλάστωρ, καὶ οὔτε θυσιῶν οὔτε σπονδῶν οὔθ' ἔστιας  
 ὅποι ποτ' ἂν ἀφίκη κοινωνεῖν ἐθελήσει σοι τῶν εὐ-  
 σεβῶν καὶ δικαίων οὐθεῖς, αὐτοῖς τε οὐκ ἔση τίμιος,  
 οἷς εὐνοίαν ἐνδεικνύμενος ταῦτα δοῦς, ἀλλὰ καρπω- 15  
 σάμενοί τινα ἕκαστος τούτων ἐκ τῶν σῶν ἀσεβημά-  
 των ὠφέλειαν μισήσουσι τὴν ἀνθάδειαν τοῦ τρόπου.  
 ἔῶ γὰρ λέγειν, ὅτι χωρὶς τοῦ μίσους, ὁ παρὰ τῶν  
 ἐπιεικιστάτων ἔξεις, καὶ φθόνος ἀπαντήσεται πολὺς  
 ἐκ τῶν ἴσων καὶ φόβος ἐκ τῶν ἡσσόνων καὶ δι' 20  
 ἄμφω ταῦτα ἐπιβουλαὶ καὶ ἄλλα πολλὰ καὶ χαλεπὰ,  
 ὅσα εἰκὸς συμπεσεῖν ἀνδρὶ ἐρήμῳ φίλων καὶ ἐν ξένη  
 ὄντι γῆ. τὰς γὰρ δὴ παρὰ θεῶν τε καὶ δαιμόνων  
 ἐπιπεμπομένης τοῖς ἀνόσια καὶ δεινὰ διαπραξαμένοις  
 ἐρινύας ἔῶ, ὅφ' ὧν αἰκίζόμενοι ψυχὰς τε καὶ σώματα 25  
 κακούς μὲν διαντλοῦσι βίους, οἰκτρὰς δὲ ὑπομένουσι  
 1567 τελευτάς. ταῦτα ἐνθυμηθεῖς, ὦ Μάρκιε, μετάνησθαι  
 καὶ παῦσαι μνησικακῶν τῇ σεαυτοῦ πατρίδι· τύχην  
 τε πάντων αἰτίαν ἠγησάμενος ὧν πέπονθας πρὸς  
 ἡμῶν ἢ δέδρακας ἡμᾶς κακῶν, ἄπιθι χαιρῶν ἐπὶ τὰ 30  
 αἰεῖα, καὶ κόμισαι μητρὸς τε περιβολὰς προσηνεστά-  
 τας καὶ γυναικὸς φιλοφροσύνας ἠδίστας καὶ τέκνων

ἀσπασμούς γλυκνυτάτους, καὶ σεαυτὸν ἀπόδος ὀφεί-  
λημα κάλλιστον τῇ γεννησαμένη σε καὶ τηλικούτου  
ἀνδρα παιδευσαμένη πατρίδι.

XXVIII. Τοιαῦτα διεξελθόντος τοῦ Μηνυκίου  
5 μικρὸν ἐπισχῶν ὁ Μάρκιος εἶπε· Σοὶ μὲν, ὦ Μηνύ-  
κιε, καὶ ὑμῖν [τοῖς ἄλλοις] τοῖς ἅμα τούτῳ πεμφθεῖσιν  
ὑπὸ τῆς βουλῆς φίλος εἰμὶ καὶ πρόθυμος εἴ τι δύ-  
ναμαι ποιεῖν ἀγαθόν, ὅτι μοι καὶ πρότερον, ὅτε πο-  
λίτης ὑμέτερος ἦν καὶ τὰ κοινὰ ἔπραττον, ἐν πολλοῖς  
10 καὶ ἀναγκαίοις ἐγένεσθε καιροῖς χρήσιμοι, καὶ μετὰ  
τὴν φυγὴν οὐκ ἀπεστράφητέ με καταφρονήσει τῆς  
τότε τύχης, ὡς οὔτε φίλους εὖ ποιεῖν δυνάμενον ἔτι 1568  
οὔτ' ἐχθροὺς κακῶς, ἀλλὰ χρηστοὶ καὶ βέβαιοι δι-  
μείνατε φίλοι μητρός τε τῆς ἐμῆς κηδόμενοι καὶ  
15 γυναικὸς καὶ τέκνων, καὶ τὰς συμφορὰς αὐτοῖς κου-  
φοτέρας ποιοῦντες ταῖς ἰδίαις ἐπιμελείαις. τοῖς δὲ  
ἄλλοις Ῥωμαίοις ἀπέχθομαι τε ὡς δύνάμαι μάλιστα  
καὶ πολεμῶ καὶ οὐδέποτε μισῶν αὐτοὺς παύσομαι·  
οἱ μὲ ἀντὶ πολλῶν καὶ καλῶν ἔργων, ἐφ' οἷς τιμᾶσθαι  
20 προσῆκεν, ὡς τὰ μέγιστα ἐξημαρτηκότα περὶ τὸ κοι-  
νὸν αἰσχρῶς ἐξήλασαν ἐκ τῆς πατρίδος, οὔτε μητέρα  
αἰδεσθέντες τὴν ἐμὴν οὔτε παιδία ἐλεήσαντες οὔτ'  
ἄλλο πάθος ἡμερον οὐδὲν ἐπὶ ταῖς ἐμαῖς λαβόντες  
τύχαις. μαθόντες δὲ τοῦτο, εἰ μὲν αὐτοὶ δεῖσθαι του  
25 παρ' ἡμῶν, λέγετε μηθὲν ὀκνοῦντες, ὡς οὐθενὸς  
ἀτυχήσοντες τῶν δυνατῶν· περὶ δὲ φιλίας καὶ διαλ-  
λαγῶν, ἃς ἀξιοῦτέ με ποιήσασθαι πρὸς τὸν δῆμον  
ἐπὶ ταῖς ἐλπίσι τῆς καθόδου, παύσασθε διαλεγόμενοι.  
πάνν γὰρ ἀραπητῶς δεξαίμην ἂν εἰς τοιαύτην κατελ- 1569  
30 θεῖν πόλιν, ἐν ἣ τὰ μὲν τῆς ἀρετῆς ἄθλα ἢ κακία  
φέρεται, τὰς δὲ τῶν κακούργων τιμωρίας οἱ μηδὲν  
ημαρτηκότες ὑπομένουσιν. ἐπεὶ, φέρε, πρὸς θεῶν

εἶπατέ μοι, τίνος ἀδικήματος αἰτία ταύτης ἐγὼ πε-  
πείραμαι τῆς τύχης, ἢ ποῖον ἐπιτηδεύσας ἔργον  
ἀνάξιον τῶν ἑμαυτοῦ προγόνων; πρώτην ἐστρατευ-  
σάμην ἔξοδον κοιμῶν νέος ἦν, ὅτε πρὸς τοὺς βασι-  
λεῖς βία κατιόντας ἠγωνιζόμεθα. ἐκ ταύτης τῆς 5  
μάχης ἀριστείοις ἀνεδοῦμην ὑπὸ τοῦ στρατηγοῦ στε-  
φάνοις πολίτην ὑπερασπίσας καὶ πολέμιον ἀποκτεί-  
νας. ἔπειθ' ὅσας ἄλλας ἱππικὰς καὶ πεζικὰς ἠγωνι-  
σάμην μάχας, ἐπιφανῆς ἐν ἀπάσαις ἐγενόμην καὶ  
τὰριστεῖα ἐξ ἀπάσων ἔλαβον· καὶ οὔτε πόλις ἐκ τει- 10  
1670 χομαχίας ἐάλω τις, ἧς οὐκ ἐγὼ πρῶτος ἐπέβην ἢ σὺν  
ὀλίγοις, οὔτε φυγὴ πολεμίων ἐκ παρατάξεως ἐγένετο,  
ἧς οὐκ ἐμὲ αἰτιώτατον γενέσθαι πάντες οἱ παρόντες  
ὁμολογοῦν, οὔτε ἄλλο τῶν λαμπρῶν ἢ γενναίων ἐν  
πολέμοις ἔργων οὐδὲν ἄνευ τῆς ἐμῆς εἴτε εὐτολμίας 15  
εἴτε εὐτυχίας ἐπράχθη.

XXX. Καὶ ταυτὶ μὲν ἴσως ἂν ἔχοι τις καὶ ἕτερος  
ὑπὲρ αὐτοῦ γενναῖος ἀνὴρ, εἰ καὶ μὴ τοσαῦτα, λέ-  
γειν· ἀλλὰ πόλιν ὅλην τίς δύναται ἂν καυχῆσασθαι  
στρατηγὸς ἢ λοχαγὸς ἐλάν, ὥσπερ ἐγὼ τὴν Κοριο- 20  
λανῶν; καὶ τῆς αὐτῆς ἡμέρας ὁ αὐτὸς ἀνὴρ στρα-  
τιὰν πολεμίων τρεψάμενος, ὥσπερ ἐγὼ τὴν Ἀντιατῶν  
ἐπίκουρον τοῖς πολιορκουμένοις ἀφικομένην; ἐὼ γὰρ  
λέγειν, ὅτι τοιαύτας ἀρετὰς ἀποδειξάμενος, ἐξόν μοι  
λαβεῖν ἐκ τῶν λαφύρων πολὺν μὲν χρυσόν, πολὺν δὲ 25  
ἄργυρον ἀνδράποδά τε καὶ ὑποζύγια καὶ βοσκήματα  
1671 καὶ γῆν πολλὴν καὶ ἀγαθὴν, οὐκ ἠξίωσα, ἀλλ' ἀνε-  
πίφθουον ὡς μάλιστα βουληθεῖς ἑμαυτὸν παρασχεῖν,  
πολεμιστὴν ἵππου ἕνα μόνον ἐκ τῶν λαφύρων ἔλα-  
βον καὶ τὸν ἑμαυτοῦ ξένον ἐκ τῶν αἰχμαλώτων, τὸν 30  
δὲ ἄλλον πλοῦτον εἰς τὸ κοινὸν ἔθηκα φέρων. πό-  
τερον οὖν τιμωρίας ἄξιός ἦν ἐπὶ τούτοις ὑπέχειν, ἢ

τιμὰς λαμβάνειν, καὶ πότερον ὑπὸ τοῖς κακίοις  
γενέσθαι τῶν πολιτῶν, ἢ τὰ δίκαια τάττειν αὐτὸς  
τοῖς ἥτιοσιν; ἀλλ' οὐ διὰ ταῦτά με ἀπήλασεν ὁ δη-  
μος, ἀλλ' ὅτι περὶ τὸν ἄλλον βίον ἀκόλαστος καὶ  
5 πολυτελής καὶ παράνομος ἦν; καὶ τίς ἂν ἔχοι δεῖξαι  
τινα διὰ τὰς ἐμὰς παρανόμους ἠδονὰς ἢ τὴν πατρίδα  
φεύγοντα ἢ τὴν ἐλευθερίαν ἀπολωλεκότα ἢ χρημά-  
των στερόμενον ἢ ἄλλη τινὶ συμφορᾷ χρησάμενον;  
ἀλλ' οὐδὲ τῶν ἐχθρῶν με οὐδεὶς πάποτε ἠτιάσατο  
10 οὐδὲ διέβαλεν ἐπ' οὐδενὶ τούτων, ἀλλ' ὑπὸ πάντων  
ἐμαρτυρεῖτό μοι καὶ ὁ καθ' ἡμέραν ἀνεπίληπτος  
εἶναι βίος. ἀλλ' ἢ προαίρεσις, ἢ Δία, φαίη τις ἂν,  
ἢ τῶν πολιτευμάτων σου μισηθεῖσα ταύτην ἐξεργά-  
σατό σοι τὴν συμφορὰν. ἐξὸν γὰρ ἐλέσθαι τὴν κρείττω  
15 μερίδα τὴν χειρόνα εἴλου, καὶ διετέλεις ἅπαντα καὶ 1572  
λέγων καὶ πράττων, ἐξ ὧν καταλυθήσεται μὲν ἡ πά-  
τριος ἀριστοκρατία, κύριος δ' ἔσται τῶν κοινῶν ὄχλος  
ἀμαθὴς καὶ πονηρός. ἀλλ' ἔργωγε τὰναντία ἐπραττου,  
ὦ Μηνύκιε, καὶ ὅπως ἢ βουλή τῶν κοινῶν διὰ παν-  
20 τὸς ἐπιμελήσεται καὶ ὁ πάτριος διαμενεὶ κόσμος τῆς  
πολιτείας προϋνοούμην. ἀντὶ τούτων μέντοι τῶν κα-  
λῶν ἐπιτηδευμάτων, ἃ τοῖς προγόνοις ἡμῶν ζηλωτὰ  
εἶναι ἐδόκει, τὰς εὐτυχεῖς ταύτας καὶ μακαρίας κε-  
κόμισμαι παρὰ τῆς πατρίδος ἀμοιβάς, οὐχ ὑπὸ τοῦ  
25 δήμου μόνου ἐξελαθεῖς, ὦ Μηνύκιε, ἀλλὰ πολὺ πρό-  
τερον ὑπὸ τῆς βουλῆς, ἢ κατ' ἀρχὰς ἐπαίρουσά με  
κεναῖς ἐλπίσιν, ἠνίκα τοῖς δημάρχοις τυραννίδα πε-  
ριβαλλομένοις ἠναντιούμην, ὡς αὐτὴ παρέξουσα τὸ  
ἀσφαλές, ἐπειδὴ κίνδυνόν τινα ἐκ τῶν δημοτικῶν  
30 ὑπέειδετο, ἀπέστη καὶ παρέδωκέ με τοῖς ἐχθροῖς. σὺ  
μέντοι τότε αὐτὸς ὑπατος ἦσθα, ὦ Μηνύκιε, ὅτε τὸ  
προβούλευμα τὸ περὶ τῆς δίκης ἐγένετο, καὶ ἠνίκα

Οὐαλέριος ὁ παραδιδόναί με τῷ δήμῳ παραινῶν  
1573 σφόδρα ἐπὶ τοῖς λόγοις εὐδοκίμει, καὶ γὰρ δεδιώς μὴ  
ψήφου δοθείσης ὑπὸ τῶν συνέδρων ἀλωῶ, συνέγγνων  
καὶ παρέξιεν ἑμαντὸν ὑπεσχόμεν ἐκόντα ἐπὶ τὴν  
5 δίκην.

XXXI. Ἴθι δὴ μοι, Μηνύκιε, ἀπόκριναι πότερα  
καὶ τῇ βουλῇ τῆς τιμωρίας ἄξιος ἐφάνην εἶναι, ὅτι  
τὰ κράτιστα ἐπολιτευόμην τε καὶ ἐπραττον, ἢ τῷ  
δήμῳ μόνῳ; εἰ μὲν γὰρ ἅπανσι ταῦτα ἐδόκει τότε καὶ  
πάντες με ἀπήλασατε, φανερὸν ὅτι πάντες οἱ ταῦτα 10  
βουληθέντες ἀρετὴν μισεῖτε, καὶ τόπος οὐδεὶς ἐστίν  
ἐν τῇ πόλει δεχόμενος καλοκαγαθίαν· εἰ δὲ βιασθεῖσα  
ἢ βουλή συνεχώρησε τῷ δήμῳ καὶ τὸ ἔργον αὐτῆς  
ἀνάγκης ἦν, οὐ γνώμης, ὁμολογεῖτε δήπου πονηροκρα-  
15 τεῖσθαι καὶ μηδενὸς εἶναι τὴν βουλὴν ὧν ἂν προέλη-  
ται κυρία. ἔπειτα εἰς τοιαύτην ἄξιούτέ με κατελθεῖν  
πόλιν, ἐν ἣ τὸ κρεῖττον μέρος ὑπὸ τοῦ χειρόνος ἄρ-  
χεται; πολλὴν ἄρα κατεργώκατε μου μανίαν. φέρε,  
1574 καὶ δὴ πέπεισμαι καὶ διαλυσάμενος τὸν πόλεμον  
ὡσπερ ἄξιούτε κατελήλυθα, τίς ἢ μετὰ ταῦτα ἔσται 20  
μου διάνοια, καὶ τίνα βίον ζήσομαι; πότερα τὰσφα-  
λὲς καὶ ἀκίνδυνον αἰρούμενος ἀρχάς τε καὶ τιμὰς  
καὶ τὰλλα ἀγαθὰ ὧν ἄξιον ἑμαντὸν ἠροῦμαι μετιῶν  
θεραπεύειν ὑπομένω τὸν ἔχοντα τὴν τούτων ἐξουσίαν  
ὄχλου; πονηρός ἄρα ἐξ ἀγαθοῦ γενήσομαι, καὶ οὐδὲν 25  
ἔσται μοι τῆς προτέρας ἀρετῆς ὄφελος. ἀλλ' ἐν τοῖς  
αὐτοῖς ἠθεσι μέναν καὶ τὴν αὐτὴν προαίρεσιν τῆς πο-  
λιτείας φυλάτταν ἐναντιώσομαι τοῖς μὴ ταῦτά προαι-  
ρουμένοις; εἴτα οὐ πρόδηλον, ὅτι πολεμήσει μοι  
πάλιν ὁ δήμος καὶ δίαις ἐτέρας πάλιν ἀξιώσει λαμ- 30  
βάνειν, τοῦτ' αὐτὸ πρῶτον ἐγκλημα ποιούμενος, ὅτι  
τῆς καθόδου δι' ἐκείνου τυχῶν οὐ τὰ πρὸς ἠδονὴν



αὐτῷ πολιτεύομαι; οὐκ ἔνεστ' ἄλλως εἰπεῖν. ἔπειτ' ἀναφανήσεται τις ἕτερος Ἰουλίῳ παραπλήσιος ἢ Δελφῶν θρασυὺς δημαγωγός, ὃς αἰτιάσεται με διστάναι 1575 τοὺς πολίτας ἀπ' ἀλλήλων ἢ κατὰ τοῦ δήμου πράττειν ἐπιβουλήν ἢ προδιδόναι τοῖς πολεμίοις τὴν πόλιν ἢ τυραννίδι, ὥσπερ καὶ Δέκιος ἠτιάσατο, ἐπιχειρεῖν ἢ ἄλλο ἀδικεῖν ὅτιδήποτε ἂν αὐτῷ φανῇ· οὐ γὰρ ἀπορήσει τὸ μισοῦν αἰτίας. ἤξει τε πρὸς τοῖς ἄλλοις ἐγκλήμασι καὶ ταυτί φερόμενα οὐκ εἰς 5 μακρὰν, ὅσα ἐν τῷ πολέμῳ πέπρακται μοι τούτῳ, ὅτι χώραν ὑμῶν τέτμηκα καὶ λείαν ἀπελήλακα καὶ πόλεις ἀφῆρημαι καὶ τοὺς ὑπὲρ τούτων ἀμυνομένους τοὺς μὲν πεφόνευκα, τοὺς δὲ τοῖς πολεμίοις παραδεδωκα. ταῦτ' ἂν οἱ κατήγοροι λέγωσι, τί φήσω 10 πρὸς αὐτοὺς ἀπολογούμενος, ἢ τίτι βοήθεια χροῖσμαι;

XXXII. Ἄρ' οὐ φανερόν, ὅτι καλλιλογεῖτε καὶ εἰρωνεύεσθε, ὦ Μηνύκιε, ὄνομα καλὸν ἔργῳ περιθέντες ἀνοσίῳ; οὐ γὰρ δὴ κάθοδόν μοι δίδοτε, ἀλλὰ 20 σφάγιόν με τῷ δήμῳ κατάρχετε, τάχα μὲν καὶ βεβουλενυμένοι τοῦτο πράττειν· οὐδὲν γὰρ ἔτι μοι χρηστὸν 1576 ὑπὲρ ὑμῶν ἐπέρχεται φρονεῖν· εἰ δὲ βούλεσθε, τίθῃμι γὰρ, οὐδὲν ὦν πείσομαι προορώμενοι· τί οὖν ἔσται μοι τῆς ὑμετέρας ἀγνοίας ἢ μωρίας ὄφελος, 25 καλύειν μὲν οὐδὲν οὐδ' ἂν οἶοι ἦτε δυνησομένων, χαρίζεσθαι δὲ καὶ τοῦτο τῷ δήμῳ σὺν τοῖς ἄλλοις ἀναγκαζομένων; ἀλλὰ γὰρ ὅτι μὲν οὐ συνοίσει μοι πρὸς ἀσφάλειαν ἡδε, ἦν ὑμεῖς μὲν κάθοδον καλεῖτε, ἐγὼ δὲ ταχέϊαν ὁδὸν ἐπὶ τὸν ὄλεθρον, οὐ πολλῶν οἴομαι δεῖν ἔτι λόγων· ὅτι δ' οὐδὲ πρὸς εὐδοξίαν 30 ἢ τιμῇν ἢ πρὸς εὐσέβειαν, ἐπειδὴ καὶ σὺ τούτων, ὦ Μηνύκιε, πρόνοιαν ἔχειν με ἡξίους, εὖ ποιῶν, ἀλλ'

αἰσχιστά μοι καὶ ἀνοσιώταταπραχθήσεται πεισθέντι ὑμῖν, ἄκουσον ἐν τῷ μέρει. ἐγὼ πολέμιος ἐγενόμην 1577 τούτοις [Οὐολούσχοις] καὶ πολλὰ ἠδίκησα αὐτοὺς ἐν τῷ πολέμῳ, τῇ πατρίδι πράττων ἡγεμονίαν καὶ 5 μὲν ὑπὸ τῶν εὖ πεπονθῶτων, μισεῖσθαι δὲ ὑπὸ τῶν ἠδίκημένων; εἰ γοῦν τι τῶν εἰκότων ἐγένετο. ἀνέστρεψεν ἀμφοτέρω ταῦτα ἢ τύχῃ, καὶ εἰς τὰναντία μετέθηκε τὰς ἀξιώσεις. ὑμεῖς μὲν γὰρ, ὑπὲρ ὧν τοῦτοις ἐχθρὸς ἦν, ἀφείλεσθέ με πάντα τὰμα καὶ 10 τὸ μηδὲν ποιήσαντες ἐροίψατε· οὗτοι δὲ οἱ τὰ δεινὰ ὑπ' ἐμοῦ παθόντες, τὸν ἀπορον καὶ ἀνέστιον καὶ ταπεινὸν καὶ ἀπολίον ὑπεδέξαντό με ταῖς ἑαυτῶν πόλεσι. καὶ οὐκ ἀπέχρη αὐτοῖς τοῦτο ποιήσασι μόνον οὕτω λαμπρὸν καὶ μεγαλόψυχον ἔργον, ἀλλὰ καὶ πο- 15 λιτείαν ἔδοσαν μοι ἐν ἀπάσαις ταῖς ἑαυτῶν πόλεσι καὶ ἀρχὰς καὶ τιμὰς, αἱ μέγιστα παρ' αὐτοῖς εἰσιν. ἐῷ τὰλλα· ἀλλὰ νυνὶ στρατηγὸν ἀποδεδείχασι με αὐτοκράτορα τῆς ὑπερορίου στρατιᾶς, καὶ πάντα τὰ 20 κοινὰ ἐπ' ἐμοὶ πεποιήκασι μόνω. φέρε δὴ, τίνα λαβῶν καρδίαν προδοίην ἂν ἔτι τούτους, ὑφ' ὧν τη- 1578 λικαύταις κεκόσμημαι τιμαῖς, οὐδὲν οὔτε μείζον οὔτε ἔλαττον ἀδικηθεῖς; εἰ μὴ ἄρα αἱ χάριτες αὐτῶν ἀδικούσι με, ὥσπερ ὑμᾶς αἱ ἐμαί· καλήν γε δόξαν οἴσει μοι παρὰ πᾶσιν ἀνθρώποις γνωσθεῖσα ἢ πα- 25 λιμπροδοσία. τίς δ' [οὐκ] ἂν ἐπαινέσειέ με ἀκούσας, ὅτι τοὺς μὲν φίλους ὑφ' ὧν εὖ πάσχειν μοι προσῆκε πολεμίους εὐρώων, τοὺς δ' ἐχθροὺς ὑφ' ὧν ἐχρήν με ἀπολαλέναι φίλους, ἀντὶ τοῦ μισεῖν μὲν τὰ μισοῦντα, φιλεῖν δὲ τὰ φιλοῦντα, τὴν ἐναντίαν γνώ- 30 μην ἔσχον;

XXXIII. Ἴθι δὴ, σκόπει καὶ τὰ παρὰ θεῶν, Μη-

νύκτι, οἷά μοι νῦν τε ἀπήντηται, καὶ ἂν ἄρα πει-  
 σθῆις ὑμῖν προδοῦ τὴν τούτων πίστιν οἷα τὸν λοιπὸν  
 ὑπάρξει μοι βίον. νῦν μὲν γε πάσης πράξεως ἧς ἂν  
 ἄψωμαι καθ' ὑμῶν συλλαμβάνουσί μοι, καὶ οὐδεμιᾶς  
 5 πείρας ἀποτυγχάνω. καὶ τοῦτο πηλίκον οἴεσθε εἶναι 1579  
 τεκμήριον εὐσεβείας τῆς ἐμῆς; εἰ γὰρ αὖ κατὰ τῆς  
 πατρίδος οὐχ ὅσιον ἐγὼ πόλεμον ἐνεστησάμην,  
 ἅπαντα ἐχοῖν ἐναντία μοι γίνεσθαι τὰ παρὰ θεῶν·  
 ὁπότε δ' οὐρίῳ πνεύσῃ κέχρημαι τῇ περὶ τοὺς πο-  
 10 λέμους τύχη, καὶ ὁπόσοις ἂν ἐπιβάλωμαι πράγμασι  
 κατ' ὄρθον ἅπαντά μοι χωρεῖ, δῆλον ὅτι εὐσεβῆς  
 εἰμι ἀνὴρ καὶ πράξεις προήρημαι καλὰς. τί οὖν, ἂν  
 μεταβάλωμαι καὶ τὰ μὲν ὑμέτερα αὖξιν, τὰ δὲ τού-  
 των ταπεινὰ ποιῶν ζητῶ, γενήσεται μοι; ἄρ' οὐχὶ  
 15 τὰναντία, καὶ πονηρὰν νέμεσιν ἔξω παρὰ τοῦ δαιμο-  
 νίου τοῖς ἠδικημένοις τιμωρὸν, καὶ ὥσπερ ἐκ ταπει-  
 νοῦ μέγας διὰ τοὺς θεοὺς ἐγενόμην, οὕτως αὖθις ἐκ  
 μεγάλου ταπεινὸς γενήσομαι, καὶ τὰμὰ παθήματα  
 παιδεύματα γενήσεται τοῖς ἄλλοις; ἐμοὶ μὲν ταῦτα  
 20 παρίσταται περὶ τοῦ δαιμονίου φρονεῖν, καὶ πείθο-  
 μαί γε τὰς ἐρινύας ἐκείνας τὰς φοβερὰς καὶ ἀπαραί-  
 τήτους τοῖς ἀνόσιόν τι διαπραξαμένοις, ὧν καὶ σὺ  
 ἐμνήσθης, ὦ Μηνύκτι, τότε μοι παρακολουθήσειν 1580  
 ψυχὴν τε καὶ σῶμα αἰκίζομένας, ὅταν ἐγκαταλίπω  
 25 καὶ προδοῦ τοὺς σώσαντάς με ἀπολωλότα ὑφ' ὑμῶν  
 καὶ μετὰ τοῦ σώσαι πολλὰς καὶ καλὰς προσθέντας  
 εὐεργεσίας, οἷς ἐγγυητὰς ἔδωκα θεοὺς, ὡς ἐπ' οὐδεὶν  
 κακῶ τὴν ἄφιξιν ποιησάμενος καὶ φυλάξων τὴν εἰς  
 τόδε χρόνον καθαρὰν καὶ ἀμίαντον συνοῦσάν μοι  
 30 πίστιν.

XXXIII. Ὅταν δὲ φίλους ἔτι καλῆς, ὦ Μηνύκτι,  
 τοὺς ἐξελάσαντάς με καὶ πατρίδα τὴν ἀπαρηνησαμέ-

νην, φύσεώς τε νόμους ἀνακαλῆ καὶ περὶ τῶν ὀσίων  
 διαλέγη, φαίνη μοι τὰ κοινότατα καὶ ὑπὸ μηδεὶνος  
 ἀγνοούμενα μόνος ἀγνοεῖν· ὅτι τὸ φίλιον ἢ πολέμιον  
 οὔτε ὄψεως ὀρίζει χαρακτῆρ οὔτε ὀνόματος θέσις,  
 ἀλλὰ ταῖς χρεῖαις καὶ τοῖς ἔργοις δηλοῦται τούτων 5  
 ἐκάτερον, φιλοῦμέν τε πάντες τὰ ὠφελούντα καὶ  
 1681 μισοῦμεν τὰ βλάπτουτα, οὐκ ἀνθρώπων τινῶν ἡμῖν  
 τόνδε θεμένου τὸν νόμον, οὐδὲ ἀνελούντων ποτὲ  
 αὐτὸν ἂν τὰναντία αὐτοῖς δοκῆ, ἀλλ' ὑπὸ τῆς κοινῆς  
 φύσεως ἐξ' ἅπαντος τοῦ χρόνου πᾶσι τοῖς αἰσθήσεως 10  
 μετεilhφόσι κείμενον καὶ εἰς αἰεὶ διαμενούντα παρα-  
 λαβόντες· καὶ διὰ τοῦτο φίλους τε ἀπαρνούμεθα,  
 ὅταν ἀδικήσωσι, καὶ ἐχθροὺς φίλους ποιούμεθα, ὅταν  
 τις ἡμῖν παρ' αὐτῶν ὑπάρξῃ χάρις, πόλιν τε τὴν  
 γειναμένην ἡμᾶς, ὅταν μὲν ὠφελῆ στέργομεν, ὅταν 15  
 δὲ βλάβη καταλείπομεν, οὐ διὰ τὸν τόπον ἀγαπῶν-  
 τες αὐτήν, ἀλλὰ διὰ τὸ συμφέρον. καὶ οὐχὶ τοῖς μὲν ἰδι-  
 1682 ὠταις οὕτως ἐπέρχεται καθ' ἕνα φρονεῖν, οὐχὶ δὲ καὶ  
 πόλεσιν ὅλαις καὶ ἔθνεσιν, ὥστε ὁ ταύτη τῇ γνώμῃ χρω-  
 μένος οὐδὲν ἔξω τῶν θείων ἀξιοῖ νομίμων, οὐδὲ παρὰ 20  
 τὴν κοινὴν ἀπάντων ἀνθρώπων ποιεῖ δικαίωσιν. ἐγὼ  
 μὲν δὴ ταῦτα πράττοντα ἐμᾶντὸν τὰ τε δίκαια ἠγού-  
 μαι πράττειν καὶ τὰ συμφέροντα καὶ τὰ καλὰ καὶ  
 ἅμα ταῦτα καὶ [τὰ] πρὸς τοὺς θεοὺς ὀσιώτατα· καὶ  
 οὐδέομαι δικαστὰς ὑπὲρ αὐτῶν λαβεῖν τοὺς εἰκασμῶ 25  
 καὶ δόξῃ τεκμαιρομένους τὴν ἀλήθειαν ἀνθρώπων,  
 ἐπειδὴ θεοὶς ἀρέσκοντα πράττω. οὐ γὰρ ἀδυνάτοις  
 ἐπιχειρεῖν ὑπολαμβάνω πράγμασι θεοὺς ἔχων αὐτῶν  
 ἠγεμόνας, εἴγε δεῖ τεκμαίρεσθαι τοῖς γεγονούσιν ἤδη  
 τὰ μέλλοντα. 30

XXXV. Περὶ δὲ τῆς μετριότητος, ἐφ' ἣν παρα-  
 καλεῖτέ με, καὶ τοῦ μὴ πρόοριζον ἀνελεῖν τὸ Ῥω-

μαίων γένος μηδ' ἐκ βάρθρων ὄλην ἀναστῆσαι τὴν πόλιν, εἶχον μὲν, ὦ Μηνύκιε, λέγειν, ὅτι οὐκ ἐγὼ τούτου κύριος οὐδὲ πρὸς ἐμὲ περὶ τούτων ἐστὶ λόγος, ἀλλ' ἐγὼ στρατηγός εἰμι τῆς δυνάμεως, πολέμου δὲ καὶ εἰρήνης οὗτοι κύριοι· ὥστε παρὰ τούτων αἰτεῖσθε 5 εἴτε ἀροχὰς εἴτε διαλλαγὰς, ἀλλὰ μὴ παρ' ἐμοῦ. οὐ μὴν ταύτην γε δίδωμι τὴν ἀπόκρισιν, ἀλλὰ καὶ θεοὺς σέβων τοὺς πατρώους καὶ τάφους αἰδούμενος προγόνων καὶ γῆν ἐξ ἧς ἔφην γυναικᾶς τε καὶ πατρῶν καὶ ἀνδρῶν ἤξει σφάλματα, καὶ οὐκ ἦμιστα τῶν ἄλλων καὶ δι' ὑμᾶς, ὦ Μηνύκιε, τοὺς προχειρισθέντας ὑπὸ τῆς πόλεως, τάδε ἀποκρίνομαι· ἐὰν ἀποδιδῶσι Ῥωμαῖοι Οὐλοοσκόις χώραν τε ὅσην αὐτοὺς 10 ἀφήρηται καὶ πόλεις ὅσας κατέχουσιν ἀνακαλεσάμενοι τοὺς ἐποίκους, φιλίαν τε ποιήσονται πρὸς αὐτοὺς εἰς τὸν αἰὲ χρόνον καὶ ἰσοπολιτείας μεταδιδῶσιν ὥσπερ Λατίνοις ὄρκους καὶ ἀράς κατὰ τῶν παραβαινόντων τὰ συγκείμενα ποιησάμενοι, διαλύσομαι 20 πρὸς αὐτοὺς τὸν πόλεμον, πρότερον δὲ μὴ. ταῦτα ἀπαγγέλλετε αὐτοῖς, καὶ τὸν αὐτὸν τρόπον ὄνπερ πρὸς ἐμὲ καὶ πρὸς ἐκείνους περὶ τοῦ δικαίου πάνυ ἐπιστροφῶς ταῦτα διαλέγεσθε· καλὸν τοι τὰς ἰδίας ἕκαστον ἔχοντα κτήσεις ἐν εἰρήνῃ ζῆν, καὶ πολλοῦ 25 ἄξιον τὸ μηθένα δεδοικέναι μὴτ' ἐχθρὸν μῆτε καιρὸν· αἰσχρὸν δὲ τῶν ἀλλοτρίων περιεχομένους οὐκ ἀναγκαῖον πόλεμον ὑπομένειν, ἐν ᾧ [δὴ] καὶ περὶ τῶν ἰδίων ἀπάντων κινδυνεύουσιν ἀγαθῶν· τὰ τε 30 ἄθλα ἐπιδείκνυτε αὐτοῖς οὐκ ἴσα κατορθοῦσί τε καὶ μὴ τυχοῦσι γινόμενα γῆς ἀλλοτριᾶς γλιχομένοις, εἰ δὲ βούλεσθε, προστίθετε καὶ τὰς πόλεις τῶν ἡδικημένων προσλαβεῖν βουλομένοις, ἐὰν μὴ κρατῶσι,

καὶ τὴν ἑαυτῶν γῆν τε καὶ πόλιν ἀφαιρεθῆναι, καὶ ἐτι πρὸς τούτῳ γυναικᾶς ἐπιθεῖν αἰσχίστα πασχούσας καὶ παιδας εἰς ὕβριν ἀρομένους καὶ γουεῖς δούλους ἀντ' ἐλευθέρων ἐπὶ γῆρας ὁδοῦ γινομένους. 5 καὶ ἅμα διδάσκετε τὴν βουλήν, ὅτι τούτων τῶν κακῶν οὐκ ἂν ἔχοιεν αἰτιάσασθαι Μάρκιον, ἀλλὰ τὴν ἑαυτῶν ἀφροσύνην. παρὸν γὰρ αὐτοῖς τὰ δίκαια ποιεῖν καὶ μηδενὶ δεινῶ περιπεσεῖν, τὸν ὑπὲρ τῶν ἐσχάτων κίνδυνον ἀναιρήσονται μέχρι παντός φιλοχωροῦντες ἐν τοῖς ἀλλοτρίοις. ἔχετε τὰς ἀποκρίσεις· 10 τούτων οὐθέν ἂν εὐροισθε παρ' ἐμοῦ πλέον· ἀλλ' ἄπιτε καὶ σκοπεῖτε ὅ τι πρακτέον ὑμῖν· ἕως δὲ βουλευθήσθε, δίδωμι χρόνον ὑμῖν ἡμερῶν τριάκοντα. ἐν δὲ τῷ μεταξὺ χρόνῳ σὴν τε χάριν, ὦ Μηνύκιε, καὶ τῶν ἄλλων ὑμῶν ἕνεκα τὴν στρατιὰν ἐκ τῆς 15 χώρας ἀπάξω· μεγάλα γὰρ ἂν βλάπτοισθε μενούσης αὐτῆς ἐνθάδε. τῇ δὲ τριακοστῇ προσδέχεσθέ με ἡμέρᾳ τὰς ἀποκρίσεις ληψόμενον.

XXXVI. Ταῦτ' εἰπὼν ἀνέστη καὶ διέλυσε τὸν σύλλογον. τῇ δ' ἐπιούσῃ νυκτὶ περὶ τὴν τελευταίαν 20 φυλακὴν ἀναστήσας τὴν στρατιὰν ἤγειν ἐπὶ τὰς λοιπὰς τῶν Λατίνων πόλεις, εἴτε κατ' ἀλήθειαν πεπυσμένος, ὅτι μέλλοι τις ἐκεῖθεν ἐπικουρίᾳ Ῥωμαίοις ἀφικέσθαι, ὡς τότε δημηγορῶν ἐφησεν· εἴτε αὐτὸς 25 πλασάμενος τὸν λόγον, [ἦ] ἵνα μὴ δόξειε χαριζόμενος τοῖς ἐχθροῖς καταλελοιπέναί τὸν πόλεμον. ἐπιβαλὼν δὲ τῇ καλουμένῃ Λογγόλῃ, καὶ δίχα πόνου γενόμενος αὐτῆς ἐγκρατῆς, καὶ τὸν αὐτὸν τρόπον ὄνπερ τὰς ἑτέρας ἔξανδραποδισάμενός τε καὶ διαρπάσας, ἐπὶ τὴν Σατρικανῶν ἤλαυνε πόλιν. ἔλῶν δὲ καὶ ταύτην 30 ὀλίγον ἀντισχύοντων τῶν ἐν αὐτῇ χρόνον, καὶ τὰς ἐξ [αὐτῶν] ἀμφοτέρων τῶν πόλεων ἀφελείας μέρει τῆς

στρατιᾶς κελύσας ἀπάγειν εἰς Ἐχέτραν, τὴν λοιπὴν ἀναλαβὼν δύναμιν ἤγευ ἐπὶ πόλιν ἄλλην τὴν καλουμένην Κετίαν. γενόμενος δὲ καὶ ταύτης ἐγκρατὴς καὶ διαρπάσας εἰς τὴν Πολυσκανῶν χώραν ἐνέβαλεν. 1588

5 οὐ δυνηθέντων δὲ ἀντισχεῖν τῶν Πολυσκανῶν, κατὰ κράτος ἐλὼν καὶ τούτους ἐπὶ τὰς ἐξῆς ἐχώρει. Λαβιναίας μὲν οὖν καὶ Μογιλλανούς ἐκ τειχομαχίας αἰρεῖ, † χωριελανούς δὲ καθ' ὁμολογίας παραλαμβάνει. γενόμενος δ' ἐν ἡμέραις τριάκοντα πόλεων ἐπὶ 10 κύριος ἦκεν ἐπὶ τὴν Ῥώμην ἄγων πολὺ πλείω στρατιᾶν τῆς προτέρας, καὶ σταδίους ἀποσχῶν τῆς πόλεως ὀλίγω πλείους τῶν τριάκοντα παρὰ τὴν ἐπὶ Τυσκλανούς φέρουσαν ὁδὸν κατεστρατοπέδευσεν. ἐν ᾧ δὲ τὰς Λατίνων ἐξήρει τε καὶ προσήγετο πόλεις, 15 Ῥωμαίους πρὸς τὰς ἐπιταγὰς αὐτοῦ πολλὰ βουλευσαμένοις ἔδοξε μὴδὲν ἀνάξιον ποιεῖν τῆς πόλεως, ἀλλ' 1589 εἴαν μὲν ἀπέλθωσιν αὐτῶν ἐκ τῆς χώρας Οὐλολύσκοι καὶ τῆς τῶν συμμάχων τε καὶ ὑπηκόων γῆς, καὶ καταλυσάμενοι τὸν πόλεμον πρέσβεις ἀποστείλωσι τοὺς 20 διαλεξομένους περὶ φιλίας, προβουλευσαί τὸ συνέθριον ἐφ' οἷς ἔσονται δικαίους φίλοι, καὶ τὰ βουλευθέντα εἰς τὸν δῆμον ἐξενεγκεῖν· ἕως δ' ἂν ἐν τῇ 25 χώρᾳ μένουντες αὐτῶν καὶ τῶν συμμάχων ἔργα πράττωσι πολεμίων, μὴδὲν αὐτοῖς ψηφίζεσθαι φιλάνθρωπον. πολὺς γὰρ δὴ Ῥωμαίους ἀεὶ λόγος τοῦ μὴδὲν 30 δρᾶσαι ποτε ἐξ ἐπιτάγματος μὴδὲ φόβῳ πολεμίων εἰξαντας, σπείσαμένοις δὲ τοῖς διαφοροῖς καὶ παρασχοῦσιν ἑαυτοὺς ὑπηκόους χαρίζεσθαι τε καὶ ἐπιτρέπειν ὅτου δέοιτο τῶν μετρίων. καὶ τοῦτο τὸ φρόνημα ἐν [τοῖς] πολλοῖς καὶ μεγάλοις κινδύνοις φυλάττουσα ἢ πόλις κατὰ τε τοὺς ὀθνηλούς καὶ τοὺς ἐμφυλίους πολέμους μέχρι τοῦ καθ' ἡμᾶς χρόνου διατετέλεκε.

1590

XXXVII. Ταῦτα ψηφισαμένης τῆς βουλῆς, καὶ πρεσβευτὰς ἐτέρους ἐλομένης δέκα ἄνδρας ἐκ τῶν ὑπατικῶν τοὺς ἀξιόσοντας τὸν ἄνδρα μὴδὲν ἐκφέρειν ἐπίταγμα βαρὺ μὴδ' ἀνάξιον τῆς πόλεως, ἀλλὰ καταλύσαντα τὴν ἐχθρὰν καὶ ἀναστήσαντα τὴν δύ- 5 ναμιν ἐκ τῆς χώρας πειθοῖ καὶ διὰ λόγων συμβατηρίων ταῦτα πειράσθαι πράττειν, εἰ βούλεται βεβαίους τε καὶ εἰς αἰὶ διαμενούσας ποιῆσαι τὰς ὁμολογίας τῶν πόλεων, ὡς τῶν γε ὑπ' ἀνάγκης τινὸς ἢ καιροῦ συγχωρομένων καὶ ἰδιώταις καὶ πόλεσιν ἅμα 10 τῷ μεταπεσεῖν τοὺς καιροὺς ἢ τὰς ἀνάγκας εὐθύς διαλυομένων· οἱ μὲν ἀποδειχθέντες ὑπ' αὐτῆς πρέσβεις, ἅμα τῷ πυθέσθαι τὴν παρουσίαν τοῦ Μάρκιου πορευθέντες ὡς αὐτὸν πολλὰ ἐπαγωγὰ διελέγοντο, 15 φυλάττοντες καὶ ἐν τοῖς λόγοις τὸ ἀξίωμα τῆς πόλεως. ὁ δὲ Μάρκιος ἄλλο μὲν οὐδὲν αὐτοῖς ἀπεκρίνατο, συνεβούλευε δὲ κρεῖττόν τι βουλευσαμένου 20 ἦκεν τριῶν ἐντὸς ἡμερῶν· ταύτας γὰρ αὐτοῖς ἔσεσθαι μόνας ἀνοχὰς τοῦ πολέμου. βουλομένων δέ τι πρὸς ταῦτα λέγειν τῶν ἀνδρῶν οὐκ ἐπέτρεψεν, ἀλλ' 20 ἀπιέναι τὴν ταχίστην ἐκέλευσεν ἐκ τοῦ χάρακος, ἀπειλήσας ὡς εἰ μὴ ποιήσουσιν ὡς κατασκόποις χρησεται· κἀκεῖνοι σιωπῇ ἀπιόντες εὐθύς ᾤχοντο. μαθόντες δὲ οἱ βουλευταὶ παρὰ τῶν πρέσβεων τὰς ἀ- 25 θάδεις ἀποκρίσεις τε καὶ ἀπειλὰς τοῦ Μάρκιου, στρατιᾶν μὲν ὑπαίθριον ἐξάγειν οὐδὲ τότε ἐψηφίσαντο, εἴτε τὸ ἀπειροπόλεμον τῶν σφετέρων στρατιωτῶν· 30 εἴτε τὴν ἀτολμίαν τῶν ὑπάτων· ἥμιστα γὰρ ἐν αὐτοῖς τὸ δραστήριον ἦν· σφαλερὰν ἠγῆσάμενοι 30 τηλικούτου ἀναιρεῖσθαι ἀγῶνα, εἴτε ἄρα καὶ τοῦ δαιμονίου σφίσιν ἐναντιομένου πρὸς τὴν ἐξοδον 10\*

δι' οἰωνῶν ἢ χρησμῶν Σιβυλλείων ἢ τινος ὀττίας 1592  
πατρίου, ὧν οὐκ ἤξιουν οἱ τότε ἄνθρωποι καθάπερ  
οἱ νῦν ὑπερορᾶν φυλάττειν δὲ τὴν πόλιν ἐπιμε-  
λεστέρα φυλακῆ καὶ ἀπὸ τῶν ἐρυμάτων τοὺς ἐπιόν-  
5 τας ἀμύνεσθαι διεγνώσαν.

XXXVIII. Ταῦτα δὲ πράττοντες καὶ παρασκευα-  
ζόμενοι τῆς τε ἐλπίδος οὐπὼ ἀφιστάμενοι, ὡς δυ-  
νατὸν ὑπάρχον ἔτι μεταπεισθῆναι τὸν Μάρκιον, εἰ  
μείζου καὶ τιμιωτέρα προσβεία δεηθεῖεν αὐτοῦ, ψη-  
10 φίζονται τοὺς τε ἱεροφάντας καὶ τοὺς οἰωνοσκόπους  
καὶ τοὺς ἄλλους ἅπαντας, ὅσοι τιμὴν τινα ἱερᾶν ἢ  
λειτουργίαν περὶ τὰ θεῖα δημοτελῆ λαβόντες εἶχον·  
εἰσὶ δὲ παρ' αὐτοῖς ἱερεῖς καὶ θεραπευταὶ θεῶν  
πάνυ πολλοὶ καὶ αὐτοὶ οὗτοι διαφανέστατοι τῶν ἄλ-  
15 λων κατὰ τε οἴκους πατέρων καὶ ἀρετῆς οἰκείας  
ἀξίωσιν· ἔχοντας ἅμ' αὐτοῖς τῶν ὀργιαζομένων τε 1593  
καὶ θεραπευομένων θεῶν τὰ σύμβολα καὶ τὰς ἱερὰς  
ἀμπεχομένους ἐσθῆτας, ἀθρόους ἐπὶ τὸν χάρακα τῶν  
πολεμίων πορεύεσθαι τοὺς αὐτοὺς φέροντας τοῖς  
20 προτέροις λόγους. ὡς δὲ ἀφίκοντο οἱ ἄνδρες καὶ  
ἐλεξαν ὅσα ἢ βουλὴ αὐτοῖς ἐπέστελλεν, οὐδὲ τούτοις  
ἔδωκεν ὁ Μάρκιος ἀπόκρισιν ὑπὲρ ὧν ἤξιουν, ἀλλ'  
ἢ τὰ κελεύόμενα ποιεῖν συνεβούλευεν ἀπιόντας, εἰ  
θέλουσιν εἰρήνην ἄγειν, ἢ προσδέχεσθαι τὸν πόλε-  
25 μον ἤξοντα πρὸς τὴν πόλιν, καὶ τὸ λοιπὸν ἀπεῖπε  
μὴ διαλέγεσθαι πρὸς αὐτόν. ὡς δὲ καὶ ταύτης ἀπέ-  
τυχον τῆς πείρας οἱ Ῥωμαῖοι, πᾶσαν ἐλπίδα διαλλα-  
γῆς ἀπογνόντες, ὡς πολιορκησόμενοι παρασκευάζοντο  
τοὺς μὲν ἀκμαιοτάτους ἐπὶ τῇ τάφρῳ καὶ παρὰ ταῖς  
30 πύλαις τάξαντες, τοὺς δὲ ἀφειμένους ἤδη στρατείας  
οἷς ἔτι τὰ σώματα ἱκανὰ ἦν κακοπαθεῖν ἐπὶ τοῖς 1594  
τείχεσιν.

XXXVIII. Αἱ δὲ γυναῖκες αὐτῶν, ὡς ἐγγὺς ὄν-  
τος ἤδη τοῦ δεινοῦ, καταλείπουσαι τῆς οἴκοι μονῆς  
τὸ εὐπρεπές, ἔθρον ἐπὶ τὰ τεμένη τῶν θεῶν ὀλοφυ-  
ρόμεναι τε καὶ προκυλιόμεναι τῶν ξοάνων· καὶ ἦν  
ἅπας μὲν ἱερὸς τόπος οἰωγῆς τε καὶ ἱκετείας γυ- 5  
ναικῶν ἀνάπλεως, μάλιστα δὲ τὸ τοῦ Καπετωλίου  
Διὸς ἱερόν. ἐνθα δὴ τις αὐτῶν γένει τε καὶ ἀξιώ-  
ματι προὔχουσα καὶ ἡλικίας ἐν τῷ κρατίστῳ τότε  
οὔσα καὶ φρονῆσαι τὰ δέοντα ἱκανωτάτη, Οὐαλερία  
μὲν ὄνομα, Ποπλικόλα δὲ τοῦ συνελευθερώσαντος 10  
ἀπὸ τῶν βασιλέων τὴν πόλιν ἀδελφῆ, θεῖρ τιμὴ πα-  
ραστήματι κινηθεῖσα ἐπὶ τῆς ἀνωτάτω κρηπίδος ἔστη  
τοῦ νεώ, καὶ προσκαλεσαμένη τὰς ἄλλας γυναῖκας,  
πρῶτον μὲν παρεμυθήσατο καὶ παρεθάρρυνεν ἀξιοῦσα  
μὴ καταπεπληχθαι τὸ δεινόν· ἔπειτα ὑπέσχετο μίαν 15  
1595 εἶναι σωτηρίας ἐλπίδα τῇ πόλει, ταύτην δὲ ἐν αὐταῖς  
εἶναι μόναις καταλειπομένην, ἐὰν ἐθελήσωσι πράττειν,  
ἃ δεῖ. καὶ τις εἶπεν ἐξ αὐτῶν· Καὶ τί πράττουσαι  
ἂν ἡμεῖς αἱ γυναῖκες διασῶσαι δυνηθείημεν τὴν πα-  
20 τρίδα τῶν ἀνδρῶν ἀπειρηκότων; τίς ἢ τοσαύτη περὶ  
ἡμᾶς τὰς ἀσθενεῖς καὶ ταλαιπώρους ἐστὶν ἰσχὺς;  
Οὐχ ὄπλων, ἔφησεν ἡ Οὐαλερία, καὶ χειρῶν δεομένη  
τούτων μὲν γὰρ ἀπολέλυκεν ἡμᾶς ἡ φύσις· ἀλλ'  
ἐννοίας καὶ λόγον. βοῆς δὲ μετὰ τοῦτο γενομένης,  
καὶ δεομένων ἀπασῶν φανερὰν ποιεῖν, ἥτις ἐστὶν ἡ 25  
ἐπικουρία, λέγει πρὸς αὐτάς· Ταύτην ἔχουσαι τὴν  
πινυράν τε καὶ ἄκοσμον ἐσθῆτα καὶ τὰς ἄλλας παρα-  
λαβοῦσαι γυναῖκας καὶ τὰ τέκνα ἐπαρόμεναι βαδί-  
ζωμεν ἐπὶ τὴν Οὐετουρίας τῆς Μαρκίου μητρὸς οἰ-  
κίαν· καὶ πρὸ τῶν γονάτων αὐτῆς τὰ τέκνα θεῖσαι, 30  
δεῶμεθα μετὰ δακρύων ἡμᾶς τε οἰκτεῖρασαν τὰς μη-  
θενὸς κακοῦ αἰτίας καὶ τὴν ἐν ἐσχάτοις κινδύνοις

οὐσαν πατρίδα προελθεῖν ἐπὶ τὸν χάρακα τῶν πο-  
 λεμίων, ἄγουσαν τοὺς τε νέωνους καὶ τὴν μητέρα  
 αὐτῶν καὶ ἡμᾶς ἀπάσας· ἀπολουθῶμεν γὰρ αὐτῇ τὰ  
 παῖδια ἐπαγόμενα· ἔπειτα ἰκέτιν γενομένην τοῦ  
 5 τέκνου, ἀξιοῦν καὶ δεῖσθαι μηδὲν ἀνήκεστον κατὰ 1596  
 τῆς πατρίδος ἐξεργάσασθαι. ὀλοφυρομένης γὰρ αὐ-  
 τῆς καὶ ἀντιβολούσης οἰκτός τις εἰσελεύσεται τὸν  
 ἄνδρα καὶ λογισμὸς ἡμερος· οὐχ οὕτω στερορὰν καὶ  
 ἄτροπον ἔχει καρδίαν, ὥστε ἀνασχέσθαι μητέρα πρὸς  
 10 τοῖς ἑαυτοῦ γόνασι κυλιομένην.

XXXX. Ὡς δ' ἐπήνεσαν αἱ παροῦσαι τὸν λόγον,  
 εὐξαμένη τοῖς θεοῖς πειθῶ καὶ χάριν αὐτῶν περι-  
 θεῖναι τῇ δεήσει προῆλθεν ἐκ τοῦ τεμένου, αἱ δ'  
 ἠκολούθουν. καὶ μετὰ τοῦτο παραλαβοῦσαι τὰς ἄλ-  
 15 λας γυναῖκας ἐπορεύοντο ἐπὶ τὴν οἰκίαν τῆς Μαρ-  
 κίου μητρὸς ἀθρόαι. ἰδοῦσα δ' αὐτὰς προσιούσας ἡ  
 τοῦ Μαρκίου γυνὴ Οὐολουμνία πλησίον καθημένη  
 τῆς ἐκτραῖς ἐθαύμασέ τε καὶ εἶπε· Τίνος δεόμεναι,  
 γυναῖκες, ἐληλύθατε κατὰ πλήθος εἰς οἰκίαν δύσ-  
 20 τηρου καὶ ταπεινῆν; καὶ ἡ Οὐαλερία ἔλεξεν· Ἐν  
 ἐσχάτοις οὔσαι κινδύνοις καὶ αὐταὶ καὶ τὰ νήπια  
 ταῦτα καταπεφύγαμεν ἰκέτιδες ἐπὶ σέ, ὦ Οὐετου-  
 ρία, τὴν μόνην καὶ μίαν βοήθειαν, ἀξιοῦσαι σε πρῶ- 1597  
 τον μὲν οἰκτεῖραι τὴν κοινὴν πατρίδα, ἣν οὐθενὶ  
 25 πώποτε γενομένην ὑποχείριον μὴ περιόδης ἀφαιρε-  
 θεῖσαν ὑπὸ Οὐολούσκου τὴν ἐλευθερίαν, εἰ δὴ καὶ  
 φείσονται αὐτῆς κρατήσαντες, ἀλλ' οὐ πρόρριζον  
 ἐπιχειρήσουσιν ἀνελεῖν· ἔπειτα ὑπὲρ ἡμῶν αὐτῶν  
 ἀντιβολοῦσαι καὶ τῶν δυστήνων παιδίων τούτων,  
 30 ἵνα μὴ πέσωμεν εἰς ἐχθρῶν ὕβριν οὐθενὸς οὔσαι  
 τῶν συμβεβηκότων ἡμῖν κακῶν αἰτία. εἰ τις ἐστὶν  
 ἐν σοὶ ψυχῆς ἡμέρου καὶ φιλανθρωποῦ καταλειπο-

μένη μερίς, ἐλέησον, ὦ Οὐετουρία, γυνὴ γυναῖκας  
 κοινωνησάσας ἱερῶν ποτε καὶ ὀσίων, καὶ παραλα-  
 βοῦσα μετὰ σεαυτῆς Οὐολουμνίαν τε τὴν ἀγαθὴν  
 γυναῖκα καὶ τοὺς παῖδας αὐτῆς καὶ τὰς ἰκέτιδας  
 ἡμᾶς φερούσας τὰ νήπια [καὶ] ταυτὶ ἴδι, ὦ γενναία, 5  
 ἴθι πρὸς τὸν υἱὸν καὶ πείθε καὶ λιπάροι καὶ μὴ ἀνῆς  
 δεομένη, μίαν ἀπὸ πολλῶν χάριν αἰτοῦσα παρ' αὐ-  
 τοῦ σπείσασθαι πρὸς τοὺς ἑαυτοῦ πολίτας καὶ κατ-  
 ελθεῖν εἰς τὴν δεομένην ἀπολαβεῖν αὐτὸν πατρίδα·  
 10 πείσεις γὰρ, εὖ ἴσθι, καὶ οὐ περιόψεται σε ἐρριμμέ-  
 1598 νην παρὰ τοῖς ἑαυτοῦ ποσίν ἀνῆρ εὐσεβῆς. καταγα-  
 ροῦσα δὲ τὸν υἱὸν εἰς τὴν πόλιν, αὐτῇ τε ἀθάνατον  
 ἔξεις κλέος ὥσπερ εἰκὸς ἐκ τηλικούτου κινδύνου καὶ  
 φόβου ἔρυσσάμενη τὴν πατρίδα, καὶ ἡμῖν τιμῆς τινας  
 αἰτία παρὰ τοῖς ἀνδράσιν ἔση, ὅτι τὸν οὐ δυναθέντα 15  
 ὑπ' ἐκείνων διασκεδασθῆναι πόλεμον αὐταὶ διελύ-  
 σαμεν· ἐκείνων τε ἀληθῶς ἔργονοι τῶν γυναικῶν  
 φανησόμεθα, αἱ τὸν συστάντα Ῥωμύλφ πρὸς Σαβί-  
 νους πόλεμον αὐταὶ πρσεβευσάμεναι διέλυσαν καὶ  
 συναγαροῦσαι τοὺς τε ἡγεμόνας καὶ τὰ ἔθνη μεγά- 20  
 λην ἐκ μικρᾶς ἐποίησαν τὴν πόλιν. καλὸς ὁ κίνδυνος,  
 ὦ Οὐετουρία, τὸν υἱὸν κομίσασθαι, ἐλευθερῶσαι τὴν  
 πατρίδα, σῶσαι τὰς ἑαυτῆς πολίτιδας, κλέος ἀρετῆς  
 ἀθάνατον ἐγγόνιοις τοῖς ἔσομένοισι καταλιπεῖν. δὸς  
 ἡμῖν ἐκοῦσα καὶ μετὰ προθυμίας τὴν χάριν καὶ 25  
 σπεῦσον, ὦ Οὐετουρία· βουλὴν γὰρ ἢ χρόνον ὁ  
 κίνδυνος ὄξυς ὢν οὐκ ἐπιδέχεται.

1600 XXXXI. Ἡ μὲν δὴ ταῦτα εἰποῦσα καὶ πολλὰ  
 προεμένη δάκρυα ἐσίγησεν· ὀδυρομένων δὲ καὶ τῶν  
 ἄλλων γυναικῶν καὶ πολλὰς δεήσεις ποιουμένων, 30  
 μικρὸν ἐπισχοῦσα ἡ Οὐετουρία καὶ δακρύσασα εἶπεν·  
 Εἰς ἀσθενῆ καὶ λεπτὴν ἐλπίδα καταπεφύγατε, ὦ

Οὐαλερία, τὴν ἐξ ἡμῶν τῶν ἀθλίων γυναικῶν βοή-  
 θειαν, αἷς ἢ μὲν εὐνοια ἢ πρὸς τὴν πατρίδα πάρεστι  
 καὶ τὸ θέλειν σώζεσθαι τοὺς πολλὰς οἰοί ποτέ εἰσιν,  
 ἢ δὲ ἰσχὺς καὶ τὸ δύνασθαι ποιεῖν ἃ θέλομεν ἄπε-  
 5 στιν. ἀπέστραπται γὰρ ἡμᾶς, ὦ Οὐαλερία, Μάρκιος,  
 ἐξ οὗ τὴν πικρὰν ἐκείνην ὁ δῆμος αὐτοῦ κατέγνω  
 δίκην, καὶ μεμίσσηκε τὴν οἰκίαν ὅλην ἅμα τῇ πατρίδι·  
 τοῦτο δ' ὑμῖν οὐ παρ' ἄλλου τινὸς ἀλλὰ παρ' αὐ-  
 τοῦ Μαρκίου μαθοῦσαι λέγειν ἔχομεν. ὅτε γὰρ ἀλοὺς  
 10 τὴν δίκην ἤλθεν εἰς τὴν οἰκίαν προπεμπόμενος ὑπο  
 τῶν ἐταίρων, καταλαβὼν ἡμᾶς καθημένας ἐν πεν-  
 θίμοις τρύχεσι, ταπεινάς, κρατούσας ἐν τοῖς γόνασι 1600  
 τὰ τέκνα αὐτοῦ στενοῦσας τε οἷα εἰκός καὶ ἀνα-  
 κλαιομένας τὴν καθέξουσας ἡμᾶς τύχην στερομένας  
 15 ἐκείνου, σπᾶς μικρὸν ἄπωθεν ἡμῶν ἀδακρυς ὥσπερ  
 λίθος καὶ ἀτενής· Οἴχεται, φησί, ὑμῖν Μάρκιος, ὦ  
 μήτηρ ἅμα καὶ σύ, ὦ Οὐολουμνία, κρατίστη γυναι-  
 κῶν, ἐξελαθεῖς ὑπὸ τῶν πολιτῶν, ὅτι γενναῖος ἦν καὶ  
 φιλόπολις καὶ πολλοὺς ὑπέμεινε ὑπὲρ τῆς πατρίδος  
 20 ἀγῶνας. ἀλλ' ὡς πρέπει γυναιξὶν ἀγαθαῖς, οὕτω  
 φέρετε τὰς συμφορὰς μηδὲν ἀσχημον ποιούσαι μηδὲ  
 ἀγεννῆς, καὶ τὰ παῖδια ταῦτα παραμύθια τῆς ἐμῆς  
 ἐρημίας ἔχουσαι τρέφετε ἀξίως ὑμῶν τε καὶ τοῦ  
 γένους· οἷς θεοὶ δοῖεν εἰς ἀνδρας ἐλθοῦσι τύχην  
 25 μὲν κρείττονα τοῦ πατρός, ἀρετὴν δὲ μὴ χείρονα· 1601  
 καὶ χαίρετε. ἀπέροχομαι γὰρ ἤδη καταλιπὼν τὴν οὐ-  
 κέτι χωροῦσαν ἀνδρας ἀγαθοὺς πόλιν. καὶ ὑμεῖς, ὦ  
 θεοὶ κτήσιοι καὶ ἐστία πατρώα καὶ δαίμονες οἱ κατ-  
 ἔχοντες τοῦτον τὸν τόπον, χαίρετε. ὡς δὲ ταῦτ'  
 30 εἶπεν, ἡμεῖς μὲν αἱ δυστυχεῖς ἄς τὸ πάθος ἀπῆται  
 φωνὰς ἀναβοῶσαι καὶ παῖονσαι τὰ στήθη περιεχύ-  
 θημεν αὐτῷ τοὺς ἐσχάτους ἀσπασμοὺς κοιμούμεναι·

τῶν δὲ παιδίων τούτων ἐγὼ μὲν τὸν πρεσβύτερον  
 ἦρον, ἢ δὲ μήτηρ τὸν νεώτερον εἶχεν ἐπὶ τῆς ἀγκά-  
 λης· ὁ δ' ἀποστραφεὶς καὶ παρωσάμενος ἡμᾶς εἶπεν·  
 Οὔτε σὸς υἱὸς ἐτι, μήτηρ, ἐστὶ τὸν ἀπὸ τοῦδε χρό-  
 νου Μάρκιος, ἀλλ' ἀφήρηται σε τὸν γηροβοσκὸν ἢ 5  
 1602 πατρίς· οὔτε σὸς ἀνὴρ ἀπὸ ταύτης, ὦ Οὐολουμνία,  
 τῆς ἡμέρας, ἀλλ' εὐτυχοῖς ἕτερον ἄνδρα λαβοῦσα  
 εὐδαιμονέστερον ἐμοῦ· οὐδ' ὑμῶν, ὦ τέκνα φίλτατα,  
 πατήρ, ἀλλ' ὄρφανοὶ καὶ ἔρημοι παρὰ ταύταις ἕως  
 εἰς ἀνδρας ἔλθητε τραφήσεσθε. ταῦτα εἰπὼν, ἄλλο 10  
 δ' οὐθὲν οὔτε διοικησάμενος οὔτ' ἐπιστείλας οὐδ'  
 ὅποι πορεύεται φράσας, ἀπῆλθεν ἐκ τῆς οἰκίας μόνος,  
 ὦ γυναῖκες, ἄδουλος, ἄπορος, οὐδὲ τὴν ἐφήμερον ὁ  
 δύστηνος ἐκ τῶν ἑαυτοῦ χρημάτων τροφὴν ἐπαγόμε-  
 νος. καὶ τέταρτον ἐνιαυτὸν ἤδη τοῦτον, ἐξ οὗ 15  
 φεύγει τὴν πατρίδα, πάντας ἡμᾶς ἀλλοτρίους ἑαυτοῦ  
 νεομίκεν, οὐ γράφων οὐθέν, οὐκ ἐπιστέλλαν, οὐ τὰ  
 περὶ ἡμᾶς εἰδέναι βουλόμενος. πρὸς δὲ τοιαύτην  
 ψυχὴν οὕτω σκληρὰν καὶ ἄτροπον, ὦ Οὐαλερία, τίνα  
 ἰσχὺν ἔξουσιν αἱ παρ' ἡμῶν δεήσεις, αἷς οὔτε ἀσπα- 20  
 σμῶν μετέδωκεν οὔτε φιλημάτων οὔτε ἄλλης φιλο-  
 φροσύνης οὐδεμιᾶς τὴν τελευταίαν πορευόμενος ἐκ  
 τῆς οἰκίας ὁδόν;

XXXXII. Ἄλλ' εἰ καὶ τοῦτου δεῖσθε ὑμεῖς, ὦ  
 γυναῖκες, καὶ πάντως θέλετε ἀσχημονούσας ἡμᾶς 25  
 ἰδεῖν, ὑπολάβετε παρεῖναι πρὸς αὐτὸν κάμῃ καὶ Οὐο-  
 1603 λουμνίαν ἀγούσας τὰ παῖδια· τίνας ἐρῶ πρῶτον ἢ  
 μήτηρ ἐγὼ πρὸς αὐτὸν λόγους, καὶ τίνα δέησιν ποιή-  
 σομαι τοῦ υἱοῦ; λέγετε καὶ διδάσκετέ με. φείσασθαι  
 παρακαλῶ τῶν ἑαυτοῦ πολιτῶν, ὑφ' ὧν ἐκ τῆς πατρί- 30  
 δος ἐξελήλαται καὶ ταῦτα μηδὲν ἀδικῶν; οἰκτίριμονα  
 δὲ καὶ συμπαθῆ πρὸς τοὺς δημοτικὸς γενέσθαι, παρ'

ἄν οὐτ' ἔλεου μετέσχευ οὔτε συμπαθείας; ἐγκατα-  
 λιπεῖν δὲ ἄρα καὶ προδοῦναι τοὺς ὑποδεξαμένους  
 αὐτοῦ τὴν φυγὴν, οἱ πολλὰ καὶ θεινὰ πεπονθότες  
 ὑπ' αὐτοῦ πρότερον, οὐ πολεμίων μῖστος, ἀλλὰ φίλων  
 5 καὶ συγγενῶν εὐνοίαν εἰς αὐτὸν ἀπεδείξαντο; τίνα  
 ψυχὴν λαβοῦσα ἀξιώσω τὸν υἱὸν τὰ μὲν ἀπολέσαντα  
 φιλεῖν, τὰ δὲ σώσαντα ἀδικεῖν; οὐκ εἰσὶν οὔτοι  
 μητρὸς ὑγιαίνουσης λόγοι πρὸς υἱόν, οὐδὲ γυναι-  
 κὸς ἂν δεῖ λογιζομένης πρὸς ἄνδρα· μηδ' ὑμεῖς βιά-  
 10 ξεσθε, γυναῖκες, ἂ μῆτε πρὸς ἀνθρώπους δίκαιά ἐστι  
 μῆτε πρὸς θεοὺς ὅσια, ταῦτα ἡμᾶς αἰτεῖσθαι παρ'  
 αὐτοῦ, ἀλλ' ἄφετε τὰς ἐλευθέρους ὡς πεπτόκαμεν ὑπὸ 1604  
 τῆς τύχης κείσθαι ταπεινὰς μηδὲν ἐτι πλέον ἀσχη-  
 μονούσας.

15 XXXIII. Πανσαμένης δ' αὐτῆς τοσοῦτος ὄδυρ-  
 μὸς ἐκ τῶν παρουσῶν γυναικῶν ἐγένετο, καὶ τηλι-  
 καύτη κατέσχε τὸν οἶκον οἰμωγῇ, ὥστε ἐπὶ πολὺ μέ-  
 ρος ἐξακουσθῆναι τῆς πόλεως τὴν βοήν καὶ μεστοὺς  
 γενέσθαι τοὺς ἐγγύς τῆς οἰκίας στενωποὺς ὄχλου.  
 20 ἔπειτα ἢ τε Οὐαλερία πάλιν ἑτέρας ἐξέτεινε μακρὰς  
 καὶ συμπαθεῖς δεήσεις, αἱ τε ἄλλαι γυναῖκες αἱ κατὰ  
 φιλίαν ἢ συγγένειαν ἐκατέρω τῶν γυναικῶν προσ-  
 ἤκουσαι, καὶ παρεμένον λιπαροῦσαι τε καὶ γονάτων  
 ἀπτόμεναι, ὥστε οὐκ ἔχουσα ὅ τι πάθη πρὸς τοὺς  
 25 ὄδυρμους αὐτῶν καὶ τὰς πολλὰς δεήσεις, εἶξεν ἢ  
 Οὐενουρία, καὶ τελέσειν τὴν πρεσβείαν ὑπὲρ τῆς  
 πατρίδος ὑπέσχετο, τὴν τε γυναῖκα τοῦ Μαρκίου  
 παραλαβοῦσα καὶ τὰ τέκνα καὶ τῶν ἄλλων πολιτί-  
 δων τὰς βουλομένας. αἱ μὲν δὴ περιχαρεῖς γενόμε-  
 30 ναι καὶ τοὺς θεοὺς ἐπικαλεσάμεναι συλλαβέσθαι 1605  
 σφίσι τῆς ἐλπίδος, ἀπήσαν ἐκ τῆς οἰκίας καὶ προσ-  
 ἤγγειλαν τὰ γενόμενα τοῖς ὑπάτοις· οἱ δὲ τὴν προ-

θυμίαν αὐτῶν ἐπαινέσαντες συνεκάλουν τὴν βουλήν,  
 καὶ περὶ τῆς ἐξόδου τῶν γυναικῶν εἰ συγχωρητέον  
 αὐταῖς γνωμηδὸν ἐπυνθάνοντο. πολλοὶ μὲν οὖν ἐλέ-  
 χθησαν καὶ παρὰ πολλῶν λόγοι, καὶ μέχρι τῆς ἑσπέρας  
 διετέλεσαν ἀποροῦντες ὅ τι χρὴ ποιεῖν. οἱ μὲν γὰρ 5  
 οὐ μικρὸν ἀπέφαινον εἶναι τῇ πόλει κινδύνευμα γυ-  
 ναϊκῆς ἅμα τέκνοις εἰς πολεμίων στρατόπεδον πο-  
 ρευομένας εἶσαι· εἰ γὰρ αὐτοῖς ὑπεριδοῦσι τῶν νε-  
 νομισμένων ὀσίων περὶ τε πρεσβείας καὶ ἱκεσίας  
 δόξειε μηκέτι προέσθαι τὰς γυναῖκας, ἀμαχητὶ σφῶν 10  
 ἀλώσεσθαι τὴν πόλιν· ἤξουν τε αὐτὰς μόνον εἶσαι  
 1606 τὰς προσηκούσας τῷ Μαρκίῳ γυναικῆς ἅμα τοῖς  
 τέκνοις αὐτοῦ πορευομένας. ἕτεροι δὲ οὐδὲ ταύταις  
 ᾤοντο δεῖν ἐπιτρέπειν τὴν ἔξοδον, ἐπιμελῶς δὲ καὶ  
 ταύτας παρήνουν φυλάττειν, ὅμηρα νομίσαντας ἔχειν 15  
 παρὰ τῶν πολεμίων ἐχέγγυα τοῦ μηδὲν τὴν πόλιν  
 ἀνήκαστον ὑπ' αὐτῶν παθεῖν. οἱ δὲ πάσαις συνεβού-  
 λευον συγχωρηθῆσαι ταῖς βουλομέναις γυναῖξι τὴν ἔξο-  
 δον, ἵνα σὺν μείζονι ἀξιώματι αἱ τῷ Μαρκίῳ προσ-  
 ἤκουσαι ποιήσονται τὴν ὑπὲρ τῆς πατρίδος δεήσειν. 20  
 τοῦ δὲ μηθὲν αὐταῖς συμβήσεσθαι θεινὸν ἐγγυητὰς  
 ἀπέφαινον ἔσομένους θεοὺς μὲν πρῶτον, οἷς καθο-  
 σιωθεῖσαι τὰς ἱκεσίας ποιήσονται· ἔπειτα τὸν ἄνδρα  
 αὐτὸν πρὸς ὃν ἐμελλον πορευέσθαι πάσης ἀδίκου τε  
 καὶ ἀνοσίου πράξεως καθαρὸν καὶ ἀμείαντον ἐσχηκότα 25  
 τὸν βίον. ἐνίκα δὲ ὅμως ἢ συγχωροῦσα γνώμη ταῖς  
 γυναῖξι τὴν ἔξοδον μέγιστον ἀμφοῖν ἐγκώμιον ἔχουσα,  
 τῆς μὲν βουλῆς τοῦ φρονίμου, ὅτι κράτιστα τὰ γενη-  
 1607 σόμενα προσείδετο οὐδὲν ὑπὸ τοῦ κινδύνου τηλικού-  
 दा ὄντος ἐπιταραχθεῖσα· τοῦ δὲ Μαρκίου τῆς εὐσε- 30  
 βείας, ὅτι πολέμιος ὢν ἐπιστεύετο μηδὲν ἀσεβήσειν  
 εἰς τὸ ἀσθενέστατον τῆς πόλεως μέρος, κύριος αὐτοῦ



καταστάς. ὡς δὲ τὸ προβούλευμα ἐγράφη, προελθόν-  
τες οἱ ὑπατοὶ εἰς τὴν ἀγορὰν καὶ συναγαγόντες ἐκ-  
κλησίαν σκότους ὄντος ἤδη τὰ δόξαντα τῷ συνεδρίῳ  
διεσάφησαν, καὶ προεῖπον ἦκειν ἅπαντας ἕωθεν  
5 ἐπὶ τὰς πύλας προπέμφοντας ἐξιούσας τὰς γυναι-  
κας· αὐτοὶ δὲ τῶν κατεπειγόντων ἔλεγον ἐπιμε-  
λησεσθαι.

XXXXIII. Ὅτε δὲ ἤδη περὶ τὸν ὄρθρον ἦν, αἱ  
μὲν γυναῖκες ἄγουσαι τὰ παιδιά μετὰ λαμπάδων  
10 ἦγον ἐπὶ τὴν οἰκίαν, καὶ παραλαβοῦσαι τὴν Οὐτετου-  
ρίαν προῆγον ἐπὶ τὰς πύλας· οἱ δὲ ὑπατοὶ ζεύγη τε  
ὀρικήα καὶ ἀμάξας καὶ τᾶλλα φορέα ὡς πλεῖστα πα-  
ρασκευασάμενοι καθεζομένας αὐτάς προῦπεμπον  
ἄχρι πολλοῦ. παρηκολούθουν δ' αὐταῖς οἱ τε ἐκ τοῦ  
15 συνεδρίου καὶ τῶν ἄλλων πολιτῶν συχνοὶ σὺν εὐχαῖς 1608  
καὶ ἐπαίνοις καὶ δεήσεσι τὴν ἔξοδον ἐπιφανεστέραν  
αὐταῖς ποιοῦντες. ὡς δ' εὐσύνοπτοι πόρρωθεν ἔτι  
προσιοῦσαι τοῖς ἐκ τοῦ χάρακος αἱ γυναῖκες ἐγένοντο,  
πέμπει τῶν ἱππέων τινὰς ὁ Μάρκιος κελεύσας μα-  
20 θεῖν, τίς ἐστὶν ὁ προσιῶν ὄχλος ἐκ τῆς πόλεως, καὶ  
ἐπὶ τί παραγένοιτο. μαθὼν δὲ παρ' αὐτῶν, ὅτι Ῥω-  
μαίων αἱ γυναῖκες ἦκουσιν ἐπαγόμεναι παιδιά, προη-  
γεῖται δ' αὐτῶν ἢ τε μήτηρ καὶ ἢ γυνὴ αὐτοῦ καὶ τὰ  
τέκνα, πρῶτον μὲν ἐθαύμασε τῆς τόλμης τὰς γυναῖκας,  
25 εἰ γνώμην ἔσχον εἰς χάρακα πολεμίων ἄτερ ἀνδρῶν  
φυλακῆς ἐλθεῖν ἄγουσαι τὰ τέκνα, οὔτε αἰδοῦς ἔτι  
τῆς ἀρμοττοῦσης γυναιξὶν ἐλευθέραις καὶ σώφροσι  
προνοοῦμεναι τὸ μὴ ἐν ἀνδράσιν ἀσυνήθεσιν ὀρᾶσθαι,  
οὔτε κινδύνων λαβοῦσαι δέος, οὓς ἀναρριπτεῖν ἔμελ-  
30 λον, εἰ τὰ συμφέροντα πρὸ τῶν δικαίων ἐλομένοις  
σφίσι δόξειε κέρδος αὐτάς ποιήσασθαι καὶ ὠφέλειαν. 1609  
ἐπεὶ δὲ ἀγχοῦ ἦσαν, ὑπαντᾶν τῇ μητρὶ προελθῶν ἐκ

τοῦ χάρακος ἐγνώ σὺν ὀλίγοις, τοὺς τε πελέκεις οὓς  
προηγείσθαι τῶν στρατηγῶν ἔθος ἦν ἀποθέσθαι κε-  
λεύσας τοῖς ὑπηρέταις, καὶ τὰς ῥάβδους ὅταν ἐγγὺς  
τῆς μητρὸς γένηται καταστεῖλαι. ταῦτα δὲ Ῥωμαίοις  
ἔστι ποιεῖν ἔθος, ὅταν ὑπαντῶσι ταῖς μελίσσι ἀρχαῖς 5  
οἱ τὰς ἐλάττους ἀρχὰς ἔχοντες, ὡς καὶ μέχρι τοῦ  
καθ' ἡμᾶς χρόνου γίνεταί· ἦν δὲ τότε συνήθειαν  
φυλάττων ὁ Μάρκιος, ὡς ἐξουσία μείζονι μέλλων εἰς  
ταῦτό ἦξειν, πάντα ἀπέθετο τὰ τῆς ἰδίας παράσημα  
ἀρχῆς. τοσαύτη περὶ αὐτὸν ἦν αἰδῶς καὶ πρόνοια 10  
τῆς πρὸς τὸ γένος εὐσεβείας.

XXXXV. Ἐπεὶ δὲ σύνεγγυς ἀλλήλων ἐγένοντο,  
πρῶτη μὲν αὐτῷ δεξιωσομένη προσῆλθεν ἢ μήτηρ  
πένθιμά τε ἡμφιεσμένη τρύχη καὶ τὰς ὀράσεις ἐκτε-  
τηκνία ὑπὸ τῶν δακρύων, ἔλεεινή σφόδρα. ἦν ὁ 15  
Μάρκιος ἰδὼν ἄτεγκτος τέως καὶ στερρός, οἷος ἄπασι  
1010 τοῖς ἀνιαιοῦς ἀντέχειν, οὐδὲν ἔτι τῶν λελογισμένων  
φυλάττειν ἱκανὸς ἦν, ἀλλ' ὄχετο φερόμενος ὑπὸ τῶν  
παθῶν ἐπὶ τὸ ἀνθρώπινον, καὶ περιβαλὼν αὐτὴν  
ἠσπάζετο καὶ ταῖς ἠδίσταις φωναῖς ἀνεκάλει καὶ 20  
μέχρι πολλοῦ κλαίων τε καὶ περιέπων κατεῖχεν ἐκλε-  
λυμένην καὶ δέουσαν ἐπὶ τὴν γῆν. ὡς δὲ τῶν ἀσπα-  
σμῶν τῆς μητρὸς ἄλις εἶχε, τὴν γυναῖκα προσελθοῦ-  
σαν δεξιωσάμενος ἅμα τοῖς τέκνοις εἶπεν· Ἀγαθῆς  
γυναικὸς ἔργον ἐποίησας, ᾧ Οὐόλουμνία, μείναςα 25  
παρὰ τῇ μητρὶ μου, καὶ οὐκ ἐγκαταλιποῦσα τὴν ἐρη-  
μίαν αὐτῆς ἔμοιγε πασῶν ἠδίστην κεχάρισαι δωρεάν.  
μετὰ ταῦτα τῶν παιδίων ἐκάτερον προσαγόμενος καὶ  
τοὺς προσήκοντας ἀσπασμοὺς ἀποδοῦς, ἐπέστρεψεν  
αὐτῆς πρὸς τὴν μητέρα καὶ λέγειν ἐκέλευσε τίνος 30  
διομένη πάρεστιν. ἢ δὲ πάντων ἀκουόντων ἔφησεν  
ἰοῖν, οὐθενὸς γὰρ ἀνοσίου δεήσεσθαι, παρεκάλει.

τε αὐτόν, ἐν ᾧ καθεζόμενος εἰσάθει χωρὶς δικάζειν τοῖς ὄχλοις, ἐν τούτῳ καθίσει. καὶ ὁ Μάρκιος ἄσ- 101  
 5 μενος τὸ ἡγεῖν ἐδέξατο, ὡς δὴ περιουσία τε πολλῆ τῶν δικαίων πρὸς τὴν ἔντευξιν αὐτῆς χρησόμενος, καὶ ἐν καλῷ ποιούμενος τοῖς ὄχλοις τὴν ἀπόκρισιν. ἐλθὼν δὲ ἐπὶ τὸ στρατηγικὸν βῆμα, πρῶτον μὲν ἐκέλευσε τοῖς ὑπηρέταις καθελεῖν ἀπ' αὐτοῦ τὸν δίφρον καὶ θεῖναι χαμαί, μητρὸς ὑψηλότερον οὐκ οἰόμενος δεῖν τόπον ἔχειν, οὐδ' ἐξουσία χρῆσθαι κατ' ἐκείνης 10 οὐδεμιᾶ· ἔπειτα παρακαθιστάμενος τοὺς ἐπιφανεστάτους τῶν τε ἡγεμόνων καὶ λοχαγῶν, καὶ τῶν ἄλλων εἰσάσας παρεῖναι τὸν βουλούμενον, ἐκέλευσε τὴν μητέρα λέγειν.

XXXXVI. Καὶ ἡ Οὐετονορία παραστησαμένη τὴν 15 τε γυναῖκα τοῦ Μαρκίου καὶ τὰ τέκνα καὶ τὰς ἐπιφανεστάτας τῶν ἐν Ῥώμῃ γυναικῶν, πρῶτον μὲν 161 ἐκλαίειν εἰς τὴν γῆν ὄρωσα μέχρι πολλοῦ, καὶ πολλὴν ἐκίνησεν ἐκ τῶν παρόντων ἔλεον. ἔπειτα ἀναλαβοῦσα αὐτὴν ἔλεξεν· Αἱ γυναῖκες, ᾧ τέκνον Μάρκιε, τὰς 20 ὕβρεις ἐνθυμούμεναι καὶ τὰς ἄλλας συμφορὰς τὰς συμβησομένας αὐταῖς, ἐὰν ἡ πόλις ἡμῶν ὑπὸ τοῖς πολεμίοις γένηται, πᾶσαν ἄλλην ἀπογνοῦσαι βοηθεῖαν, ἐπειδὴ τοῖς ἀνδράσι αὐτῶν ἀξιούσι διαλύσασθαι τὸν πόλεμον ἀνθάδεις καὶ σκληρὰς ἔδωκας 25 ἀποκρίσεις, ἄγουσαι τὰ τέκνα καὶ τοῖς πενθίμοις τούτοις ἡμφιεσμένοι τρῦχεσι κατέφυγον ἐπ' ἐμὲ τὴν σὴν μητέρα καὶ Οὐολομυίαν τὴν σὴν γυναῖκα δεόμεναι, μὴ περιδεῖν αὐτὰς τὰ μέγιστα τῶν ἐν ἀνθρώποις κακῶν ὑπὸ σοῦ παθούσας· οὐδὲν μὲν οὔτε 30 μεῖζον οὔτ' ἔλαττον εἰς ἡμᾶς ἔξαμαρτοῦσαι, πολλὴν δὲ καὶ ὅτ' εὐτυχοῦμεν ἔτι εὐνοίαν παρασχόμεναι, καὶ ὅτε ἐπταίσασμεν συμπάθειαν. ἔχομεν γὰρ αὐταῖς

μαρτυρεῖν, ἐξ οὗ σὺ ἀπήρας ἐκ τῆς πατρίδος, ἡμεῖς δ' ἔρημοι καὶ τὸ μηθεὺν ἔτι οὔσαι κατελειπό- 1013 μεθα, συνεχῶς τε παραγινόμεναις [πρὸς ἡμᾶς, καὶ παραμυθουμέναις] ταῖς συμφοραῖς ἡμῶν καὶ συναλγούσαις. τούτων δὲ λαμβάνουσαι μνήμην ἐγὼ τε καὶ 5 ἡ σὴ γυνὴ ἢ συνοικουροῦσα μετ' ἐμοῦ τὰς ἱκεσίας αὐτῶν οὐκ ἀπεστράφημεν, ἀλλ' ὑπεμείναμεν ὡς ἡξίουν ἡμᾶς ἐλθεῖν ἐπὶ σὲ καὶ τὰς ὑπὲρ τῆς πατρίδος ποιήσασθαι δεήσεις.

XXXXVII. Ἐτι δ' αὐτῆς λεγούσης ὑπολαβὼν 10 ὁ Μάρκιος εἶπεν· Ἀδυνατῶν δεομένη, μήτε, ἐλήλυθας ἀξιοῦσα προδοῦναί με τοῖς ἐκβαλοῦσι τοὺς ὑποδεξαμένους, καὶ τοῖς ἅπαντά με ἀφελομένοις τὰ ἑμαυτοῦ τοὺς χαρισάμενους τὰ μέγιστα τῶν 15 ἐν ἀνθρώποις ἀγαθῶν· οἷς ἐγὼ τὴν ἀρχὴν τήνδε 15 παραλαμβάνων θεοῦς τε καὶ δαίμονας ἐγγυητὰς ἔδωκα, μήτε προδώσειν τὸ κοινὸν αὐτῶν μήτε προκαταλύσειν τὸν πόλεμον, ἐὰν μὴ Οὐολούσχοις ἅπασι δοκῇ. θεοῦς τε δὴ σεβόμενος οὗς 20 1014 ὤμοσα καὶ ἀνθρώπους αἰδούμενος οἷς τὰς πίστεις 20 ἔδωκα πολεμήσω Ῥωμαίοις ἄχρι τέλους. ἐὰν δὲ ἀποδιδῶσι τὴν χώραν Οὐολούσχοις, ἣν κατέχουσιν αὐτῶν βία, καὶ φίλους αὐτοὺς ποιήσονται πάντων αὐτοῖς μεταδιδόντες τῶν ἴσων ὥσπερ Λατίνοις, διαλύσομαι τὸν πρὸς αὐτοὺς πόλεμον· ἄλλως δὲ οὔ. ὑμεῖς 25 μὲν οὖν, ᾧ γυναῖκες, ἅπιτε καὶ λέγετε τοῖς ἀνδράσι ταῦτα καὶ πείθετε αὐτοὺς μὴ φιλοχωρεῖν τοῖς ἀλλοτρίοις ἀδίκως, ἀλλ' ἀραπᾶν ἐὰν τὰ ἑαυτῶν ἔχειν τις αὐτοὺς εἴῃ, μηδ' ὅτι πολέμῳ λαβόντες ἔχουσι τὰ Οὐολούσκων, περιμένειν ἕως πολέμῳ πάλιν αὐτὰ 30 ὑπὸ τούτων ἀφαιρεθῶσιν. οὐ γὰρ ἀποχρήσει τοῖς κρατοῦσι τὰ ἑαυτῶν μόνον ἀπολαβεῖν, ἀλλὰ καὶ τὰ

τῶν κρατηθέντων ἴδια ἀξιόσουσιν ἔχειν. εἰν δὲ περιεχόμενοι τῶν μηθὲν αὐτοῖς προσηκόντων πᾶν ὅτι οὐκ ἴσθαι ὑπομένωσι φυλάττοντες τὸ αὐθαδές, 1610 ἐκείνους αἰτιᾶσθε τῶν καταληφθέντων κακῶν, οὐ Μάρκιον οὐδὲ Οὐολούσκους οὐδὲ ἄλλων ἀνθρώπων οὐδένα. σοῦ δέ, ὦ μήτερ, ἐν μέρει πάλιν υἱὸς ὢν ἐγὼ δέομαι μὴ παρακαλεῖν εἰς ἀνοσίους πράξεις καὶ ἀδίκους, μηδὲ μετὰ τῶν ἐχθίστων ἐμοὶ τε καὶ σεαυτῇ τεταγμένην πολεμίους ἡγεῖσθαι τοὺς ἀναγκαιοτάτους· 11 ἀλλὰ παρ' ἐμοὶ γενομένην ὥσπερ ἐστὶ δίκαιον πατρὶδα τε νέμειν ἢν ἐγὼ νέμω καὶ οἶκον ὃν ἐγὼ κέκτημαι, τιμᾶς τε καρποῦσθαι τὰς ἐμὰς, καὶ δόξης ἀπολαύειν τῆς ἐμῆς, τοὺς αὐτοὺς ἡγουμένην φίλους τε [καὶ συγγενεῖς] καὶ πολεμίους οὕσπερ ἐγὼ ἀποθέσθαι τε ἤδη τὸ πένθος, ὃ διὰ τὰς ἐμὰς ὑπέμεινας, ὦ ταλαίπωρε, φυγᾶς, καὶ παύσασθαι τιμωρομένην με τῷ σχήματι τούτῳ. ἐμοὶ γὰρ τὰ μὲν ἄλλα, ὦ μήτερ, ἀγαθὰ κρείττονα ἐλπιδῶν καὶ μείζονα εὐχῆς 1616 παρὰ θεῶν τε καὶ ἀνθρώπων ἀπήνηται· ἢ δὲ περὶ σοῦ φροντίς, ἢ τὰς γηροβοσκούς οὐκ ἀπέδωκα χάριτας, ἐντετηκνῖα τοῖς σπλάγχνοις πικρὸν ἐποίει καὶ ἀνόνητον ἀπάντων τῶν ἀγαθῶν τὸν βίον. εἰ δὲ σὺν ἐμοὶ τάξεις σεαυτὴν καὶ τῶν ἐμῶν κοινωνεῖν ἐθέλησεις ἀπάντων, οὐθενὸς ἔτι μοι δεήσει τῶν ἀνθρωπί- 25 νων ἀγαθῶν.

XXXXVIII. Πανσαμένον δ' αὐτοῦ, μικρὸν ἢ Οὐετουρία ἐπισχούσα χρόνον, ἕως ὃ τῶν περιεστηκότων ἐπαινος ἐπαύσατο πολὺς τε καὶ μέχρι πολλοῦ γενόμενος, λέγει πρὸς αὐτόν· Ἄλλ' ἐργάγε σε, ὦ 30 Μάρκιε τέκνον, οὔτε προδότην Οὐολούσκων γενέσθαι ἀξιῶ, οἳ σε φεύγοντα ὑποδεξάμενοι τοῖς τε ἄλλοις ἐτίμησαν καὶ τὴν ἑαυτῶν ἡγεμονίαν ἐπίστευσαν,

οὔτε παρὰ τὰς ὁμολογίας καὶ τοὺς ὄρκους, οὓς ἔδω-  
κας αὐτοῖς ὅτε τὰς δυνάμεις παρελάμβανες, ἄνευ  
κοινῆς γνώμης ἴδια καταλύσασθαι τὴν ἔχθραν βού-  
λουμαι· μηδ' ὑπολάβης τὴν σεαυτοῦ μητέρα τοσαύτης  
1617 ἀναπεπλησθαι θεοβλαβείας, ὥστε τὸν ἀγαπητὸν καὶ 5  
μόνον υἱὸν εἰς αἰσχροῦ καὶ ἀνοσίους πράξεις παρα-  
καλεῖν. ἀλλὰ μετὰ κοινῆς γνώμης ἀποστήναί σε ἀξιῶ  
τοῦ πολέμου, πείσαντα τοὺς Οὐολούσκους μετριάσαι  
περὶ τὰς διαλλαγὰς καὶ ποιήσασθαι τὴν εἰρήνην  
ἀμφοτέροις τοῖς ἔθνεσι καλὴν καὶ πρόπουσαν. τοῦτο 10  
δὲ γένοιτ' ἂν, εἰ νῦν μὲν ἀναστήσας τὴν στρατιάν  
ἀπαράγοις ἐνιαυσίους ποιησάμενος ἀνοχᾶς, ἐν δὲ  
τῷ μεταξὺ χρόνῳ πρόσβεις ἀποστέλλων τε καὶ δεχό-  
μενος ἀληθῆ φίλιαν πρᾶττοις καὶ διαλλαγὰς βεβαίως.  
καὶ εὖ ἴσθι· Ῥωμαῖοι μὲν ὅσα μήτε τὸ ἀδύνατον 15  
μήτε ἄλλη τις ἀδοξία προσοῦσα κηλύσει· πάντα  
ὑπομενοῦσι πρᾶττειν λόγῳ καὶ παρακλήσει· πειθόμενοι,  
ἀναγκαζόμενοι δὲ ὥσπερ σὸς πῦρ ἀξιότις σὺ θᾶν  
ἂν πώποτε χαρίσαιοτο ἡμῖν οὔτε μείζον οὔτε ἑλάττω,  
ὡς ἐξ ἑλλάνων τε πολλῶν πέφασί σοι κατέμαθεν, καὶ 20  
τὰ τελευταῖα ἐξ ὧν ἡμεῖς οὐκ ἐχθροὶς σὺν ἐχθροῖσιν ἀποστᾶσιν  
ἀπὸ τῶν ἑλλάνων· Οὐολούσκου δὲ πολὺ τὸ αὐθαδές  
1618 ἔχουσιν, ὡς συμβαίνει τοῖς ἀσφάλλοις εὐτυχῆσιν· εἰν  
δὲ διδάσκεις αὐτούς, ὅτι πᾶσαι μὲν εἰρήνην βραχὺς  
ἐστὶ πολέμου κρείττονα συμβασίς· δὲ φίλων κατὰ τὸν 25  
ἐκόντων ἡμιόθεν τῶν ἡπ' ἀνάγκης συγκα-  
0201 ρηθῆντων βεβαιότερα, καὶ ὅτι ὁ ἡρόδοτος ἐσεβίτην  
θρασύει· ὅταν μὲν εὖ πρᾶττειν ἰδοῖται, ταμίσις θάει  
τὰς ἀνοχὰς· ὅταν δὲ εἰς παρὲν καὶ ἀνοχῆς ἔλθῃσι  
μηθὲν ὑπομένωσι ἀγρυπνῶν καὶ τῶν ἄλλων ὅσα εἰς ἡμᾶς  
30 ὀφθαλμῶν καὶ ἔτι ἀπέειπεν ἐπαρρηχῶς παρεδύματα σφίηται  
λόγοις· οὗς ἡμεῖς τὸ γὰρ πολιτικῶν πρᾶττοῦτες καλίστην

σπουδάζετε, εὐ ἴσθ' ὅτι τοῦ τε ἀντήματος ἐφ' οὗ νῦν  
 εἰσιν ἐκόντες ὑποβήσονται καὶ ποιήσουσιν ἐξουσίαν σοι  
 τοῦ πράττειν ὅ τι ἂν αὐτοῖς ὑπολαμβάνῃς συνοίσειν.  
 ἐὰν δὲ ἀντιπράττωσί σοι καὶ τοὺς λόγους μὴ προσδέ-  
 5 χωνται ταῖς διὰ σέ καὶ διὰ τὴν ἡγεμονίαν τὴν σὴν  
 γενομέναις περὶ αὐτοὺς τύχαις ὡς αἰεὶ διαμενούσαις  
 ἐπαιρούμενοι, τῆς στρατηγίας αὐτοῖς ἀφίστασο φανε-  
 ρῶς, καὶ μήτε προδότης γίνου τῶν πεπιστευκότων 1619  
 μήτε πολέμιος τῶν ἀναγκαιοτάτων· ἀσεβὲς γὰρ  
 10 ἐκάτερον. ταῦτα ἡ καὶ δεομένη σου γενέσθαι μοι  
 παρὰ σοῦ, Μάρκιε τέκνον, οὔτε ἀδύνατα, ὡς σύ  
 φης, πάσης τε ἀδίκου καὶ ἀνοσίου συνειδήσεως κα-  
 θαρά.

XXXXVIII. Φέρε, ἀλλὰ δόξαν αἰσχρὰν οἴσεσθαι  
 15 δέδοικας, ἐὰν ἂ παρακαλῶ σε πράττης, ὡς ἀχάριστος  
 εἰς τοὺς εὐεργέτας ἐξελεγχθῆσόμενος, οἷ σε πολέμιον  
 ὄντα ὑποδεξάμενοι πάντων μετέδωκαν ὧν τοῖς φύ-  
 σει πολίταις μέτεστιν ἀγαθῶν· ταῦτα γὰρ ἐστίν, ἃ  
 μεγάλα ποιεῖς τοῖς λόγοις αἰεὶ. οὐκ ἀποδέδωκας οὖν  
 20 αὐτοῖς πολλὰς καὶ καλὰς ἀμοιβάς, καὶ νενίκηκας  
 ἀπέειπες δὴ τιμὴν μεγέθει καὶ πλήθει χαρίτων τὰς ἐξ  
 ἐκείνων εὐεργεσίας; οὐκ ἀγαπητὸν ἡγουμένους καὶ  
 πάντων μέγιστον ἀγαθῶν, ἐὰν ἐλευθέρως οἰκῶσι τὰς  
 πατρίδας, οὐ μόνον ἑαυτῶν κυρίους εἶναι βεβαίως  
 25 παρεσκευάκας, ἀλλὰ πεποίηκας ἤδη σκοπεῖν, πότερα  
 καταλῦσαι τὴν Ῥωμαίων ἀρχὴν αὐτοῖς ἄμεινον, ἢ  
 μετέχειν αὐτῆς ἐξ ἴσου κοινὴν καταστησαμένους πο- 1620  
 λιτεῖαν. εἴω γὰρ λέγειν ὅσοις κεκόσμηκας ἐκ τοῦ πο-  
 λέμου λαφύροις τὰς πόλεις αὐτῶν, καὶ πηλίκους κε-  
 30 χάρισαι τοῖς συστρατευσαμένοις πλούτους. τοὺς δὲ  
 τοσοῦτους διὰ σε γενομένους καὶ ἐπὶ τηλικαύτης βε-  
 βηκότας εὐτυχίας οὐ δοκεῖς ἀγαπήσειν οἷς ἔχουσιν

ἀγαθοῖς, ἀλλ' ὀργμείσθαι σοὶ καὶ ἀγανακτήσειν, ἐὰν  
 μὴ καὶ τὸ τῆς πατρίδος αἷμα ταῖς χερσὶν αὐτῶν ἐπι-  
 σπείσῃς; ἐγὼ μὲν οὐκ οἶομαι. εἰς ἔτι μοι καταλείπεται  
 λόγος ἰσχυρὸς μὲν, ἐὰν λογισμῶ κρήνης αὐτόν, ἀσθε-  
 νῆς δέ, ἐὰν μετ' ὀργῆς, ὁ περὶ τῆς οὐ δικαίως μι- 5  
 σουμένης ὑπὸ σοῦ πατρίδος. οὔτε γὰρ ὑγιαίνουσα  
 καὶ τῷ πατρίῳ κόσμῳ πολιτευομένη τὴν οὐ δικαίαν  
 κατὰ σοῦ κρίσιν ἐξήνεγκεν, ἀλλὰ νοσοῦσα καὶ ἐν  
 πολλῷ κλύδωνι σαλευομένη, οὔτε ἅπασα τὴν αὐτὴν 10  
 γνώμην τότε ἔσχευ, ἀλλὰ τὸ κἀκίον ἐν αὐτῇ μέρος  
 1621 πονηροῖς προστάταις χρησάμενον. εἰ δὲ δὴ μὴ τοῖς  
 κακίστοις μόνον, ἀλλὰ καὶ τοῖς ἄλλοις ἅπασιν ἐδόκει  
 ταῦτα, καὶ ὡς οὐ τὰ κράτιστα πολιτευόμενος ἀπηλά-  
 θης ὑπ' αὐτῶν, οὐδ' οὔτω σοὶ προσῆκε μνησικακεῖν  
 πρὸς τὴν σεαυτοῦ πατρίδα. πολλοῖς γὰρ δὴ καὶ ἄλ- 15  
 λοῖς τῶν ἀπὸ τοῦ βελτίστου πολιτευομένων τὰ πα-  
 ραπλήσια συνέβη παθεῖν· καὶ σπάνιοι δὴ τινὲς εἰσιν,  
 οἷς οὐκ ἀντέπνευσε πρὸς τὴν δοκοῦσαν ἀρετὴν φθό-  
 νος ἐκ τῶν συμπολιτευομένων ἀδίκως. ἀλλ' ἀνθρω-  
 πίνως, ὃ Μάρκιε, φέρουσι καὶ μετρίως ἅπαντες οἱ 20  
 γυναιχοὶ τὰς συμφοράς, καὶ πόλεις μεταλαμβάνουσιν,  
 ἐν αἷς οἰκήσαντες οὐδὲν λυπήσουσι τὰς πατρίδας·  
 ὥσπερ καὶ Ταρκύνιος ἐποίησεν ὁ Κολλατίνος ἐπικα-  
 λούμενος· [ἱκανὸν ἐν παράδειγμα καὶ οἰκτεῖον·] ὃς  
 25 συνελευθερώσας ἀπὸ τῶν τυράννων τοὺς πολίτας,  
 ἔπειτα διαβληθεὶς πρὸς αὐτοὺς ὡς συμπράττων  
 1622 πάλιν τοῖς τυράννοις τὴν κἀθοδον, καὶ διὰ τοῦτο  
 ἔβλαθῆς αὐτὸς ἐκ τῆς πατρίδος, οὐκ ἐμνησικακεῖ  
 πρὸς τοὺς ἐκβαλόντας αὐτόν, οὐδ' ἐπεστράτευε τῇ  
 πόλει τοὺς τυράννους ἐπαγόμενος, οὐδ' ἐποίησε τε- 30  
 κμήρια τῶν διαβολῶν τὰ ἔργα, ἀλλ' εἰς τὴν μη-  
 τροπόλιν ἡμῶν Λαουῖνιον ἀπελθὼν ἐκεῖ πάντα  
 11\*

τῶν λοιπῶν ἐβίω χρόνον εὖνους ὡν τῇ πατρίδι καὶ  
 φίλος ὡς τῶν υἱῶν εἶπεν αὐτῷ 20  
 αὐτῷ ἔστω δ' οὐκ ὀμίως, καὶ δεδόσθω τοῖς τὰ δεινὰ  
 πάθοσιν μὴ διακρίνειν καίτε φίλιον εἴη τὸ κακῶς  
 25 δεδρακὸς εἴτε ἀλλότριον, ἀλλ' ἴσην πρὸς ἅπαντας  
 ὀργὴν ἔχειν ὡς πάντα οὐκ ἴσωνας εἰσπέπραξαι παρὰ  
 τῶν ὑβριστῶν σε θύμας γῆν τε αὐτῶν τὴν ἀρίστην  
 πέποικώς, μαλόβοτον καὶ πόλεις διαπεπορθηκώς συμ-  
 10 μαχίδας, ὡς πολλοὺς πόνοισι κτησάμενοι κατέσχον, καὶ  
 τούτων ἤδη τούτων ἕτος εἰς πολλὴν τῶν ἀναγκαίων  
 κατακειμένως ἀπορίων, ἀλλὰ καὶ μέχρι ἀνδραποδι-  
 σμοῦ τῆς πόλεως ἠντιῶν καὶ κατεσκαφῆς τὴν ἀργιὰν 1623  
 νοῦσαν καὶ μετασπέρην ὀργὴν προάγεις, καὶ οὐδὲ  
 τοὺς πεμψέντας ὑπὸ τῆς βουλῆς πρόσβεις φέροντάς  
 15 σοὶ τῶν τε ἐγγλεμήτων ἀφείων καὶ κάθοδον ἐπὶ τὰ  
 οἴκια φίλους, καὶ ἀγαθὸς ἀνδρας ἐλθόντας ἐνετρό-  
 πης, οὐδὲ τοὺς ἑσθίους, οὓς τὸ τελευτάτου ἐπεμψεν ἡ  
 πόλις, ἵερά στεμνῶν θεῶν ἔχοντας καὶ προτείνοντας  
 20 ἄλλα καὶ τούτους ἀπήλασας, ἀνθάδεις καὶ δεσποτι-  
 κῶς ὡς κερκατημένους ἀποκρίσεις, δούς, ἐγὼ μὲν  
 οὐκ ἔχω πᾶς ἐπαινέσω τὰ πάντα τὰ σκληρὰ καὶ ὑπέροχνα  
 καὶ τὴν θυγῆ φῦσιν ἐμβεβηότα δικαιώματα, ὄρωσα  
 κατὰ φύσιν εὐθιμένους ἅπασιν ἀνθρώποις καὶ παραι-  
 25 τήσεις, τῶν ἴσων ἐξισορροποῦσι περὶ ἀλλήλους, ἐκτεθρίας  
 καὶ λυγῆς καὶ τὸ καταφυγεῖν ἐπὶ τοὺς ἠδίκημένους  
 πρὸ δίκου ἰταπεινῶς, θεῶν ἡμῶν τῶν τε τῶσδε κα-  
 ταστησάμενων ὑφ' ὧν μαρτυρεῖται πᾶσι ὀργὴ καὶ  
 30 ἀρετὴ τοῦ μιστοῦ τῶν ἐχθρῶν ἔλασεν, τῶν δὲ αὐθαδεῖα  
 κρησαμένους, καὶ λυγῆς ἰστων ὑβριστῶν, ἅπαντας  
 γεμισσάμενους ὑπὸ θεῶν καὶ εἰς σφάφθας καταστρέ-  
 φοντάς, οὐκ εὐτοχεῖς, αὐτοὶ γὰρ δὴ πρῶτον οὐ ταῦτα

καταστησάμενοι καὶ παράδοτες, ἡμῶν θεοὶ συγγνώ-  
 μονες τοῖς ἀνθρώποις εἶσιν, ἀμαρτήμασι καὶ εἰς  
 διάλλακτοι, καὶ πολλοὶ ἤδη μεγάλα εἰς αὐτοὺς ἔκα-  
 μαρτόντες εὐχαῖς καὶ θυσίαις, τὸν χρόνον ἐξιλῆσαντο  
 εἰ μὴ σύ, ὦ Μάρκιε, ἀξιοῖς τὰς μινύτων θεῶν ὀργῆς 25  
 θυητᾶς εἶναι, τὰς δὲ τῶν ἀνθρώπων ἀδικαίους  
 δίκαια μὲν οὐκ ποιήσεις καὶ σεαυτῷ πρόποντα καὶ  
 1625 τῇ πατρίδι αὐτῇ, ἀφείς τὰ ἐγγλεμήτα μετανοούση  
 γε καὶ διαλλαττομένη καὶ ὅσα πρότερον ἀφείλετο σοὶ  
 νῦν ἀποδιδούση. στύππ δακ σφλεθὺ δακ 10  
 LI. Εἰ δὲ ἄρα πρὸς ἐκείνην ἀδιάλλακτῶς ἔχεις,  
 ἐμοὶ ταύτην δός, ὦ τέκνον, κατὴν τιμὴν καὶ χεῖρην,  
 παρ' ἧς οὐ τὰ ἐλαχίστου ἀξία ἔχεις, οὐδ' ὧν ἀντι-  
 ποιήσαιτ' ἂν τις καὶ ἕτερος, ἀλλὰ τὰ μέγιστα καὶ  
 τιμιάτατα καὶ οἷς ἅπαντα τὰ λοιπὰ κέκτησαι, τὸ 15  
 σῶμα καὶ τὴν ψυχὴν. δανείσματα γὰρ ἔχεις ταῦτα  
 ἐμὰ, καὶ οὐκ ἀφαιρήσεται με ταῦτα οὐθὲς οὔτε τό-  
 πος οὔτε καιρὸς, οὐδέ γε αἱ Οὐολούσκων οὐδέ τῶν  
 ἄλλων ἀνθρώπων εὐεργεσίαι συμπάντων καὶ χάριτες  
 τοσοῦτον ἰσχύουσιν οὐδ' ἂν οὐράνομηκίς γένωνται, 20  
 ὥστε τὰ τῆς φύσεως ἐξαλείφαι καὶ παρελθεῖν δίκαια  
 ἀλλ' ἐμὸς ἅπαντα τὸν χρόνον ἔση, καὶ πρῶτη πάντων  
 τὰς τοῦ βίου χάριτας ὀφειλήσεις ἐμοί, καὶ τῶν ἄν-  
 1630 δέωμαι δίχα προφάσεως ὑπουργήσεις. τοῦτο γὰρ ὁ  
 τῆς φύσεως νόμος ὄρισεν ἅπασιν τοῖς αἰσθησέως καὶ 25  
 λόγον μετεληφόσι τὸ δίκαιον, ὃ πιστεύουσα, Μάρ-  
 κιε τέκνον, καὶ γὰρ δέωμαι σοὶ μὴ ἐπάγειν πόλεμον τῇ  
 πατρίδι, καὶ ἐμποδῶν ἴσταμαι σοὶ βιαζομένη. ἢ πρό-  
 τέραν οὐκ ἐμὲ τὴν ἐναντιομένην σοὶ κητέρα σῆς  
 ἰονύσι προθυσάμενος αὐτοχειρία, τότε τοῦ κατὰ τῆς 30  
 πατρίδος ἅπτου πολέμου, ἢ τὸ μητροκτόντος ἄγρος  
 αἰδούμενος εἶξον τῇ σεαυτοῦ μητρὶ καὶ δός, ὦ τέκνον,

τὴν χάριν ἐκάν. νόμον μὲν οὖν τόνδε, ὃν οὐθεὶς  
 πώποτε ἀνελεῖ χρόνος, τιμωρὸν καὶ σύμμαχον ἔχουσα  
 οὐκ ἀξιῶ, Μάρκιε, μόνῃ τιμῶν ἄς οὗτός μοι δίδωσιν  
 ἄμοιρος ἐν σοῦ γενέσθαι· ἔργων δὲ χρηστῶν ὑπο-  
 5 μνήσεις, ἵν' ἀφῶ τὸν νόμον, σκόπει πάλιν ὡς πολλὰς  
 καὶ μεγάλας· ἦτις ὄρφανὸν ὑπὸ τοῦ πατρὸς κατα-  
 λειφθέντα σε παραλαβοῦσα νήπιον διέμεινα ἐπὶ σοὶ 1627  
 χήρα καὶ τοὺς ἐπὶ τῆς παιδοτροφίας ἀνήντησα πό-  
 νους, οὐ μήτηρ μόνον ἀλλὰ καὶ πατὴρ καὶ τροφὸς  
 10 καὶ ἀδελφὴ καὶ πάντα τὰ φίλτατά σοι γενομένη.  
 ἐπειδὴ δὲ εἰς ἄνδρας ἦλθες, ἐξόν μοι τότε ἀπὴλ-  
 λάχθαι τῶν φροντίδων ἐτέρῳ γηραμμένη καὶ ἕτερα  
 τέκνα ἐπιθρέψαι καὶ πολλὰς γηροβοσκούς ἐλπίδας  
 ἐμαυτῇ καταλιπεῖν, οὐκ ἠβουλήθην, ἀλλ' ἔμεινα ἐπὶ  
 15 τῆς αὐτῆς ἐστίας καὶ τὸν αὐτὸν ἔστρεξα βίον, ἐν σοὶ  
 μόνῳ πάσας τιθεῖσα τὰς ἐμαυτῆς ἡδονάς τε καὶ ὠφε-  
 λείας· ὧν ἐψευσάς με τὰ μὲν ἄκων, τὰ δὲ ἐκάν, καὶ  
 πασῶν ἀτυχεστάτην ἐποίησας μητέρων. ποῖον γὰρ  
 χρόνον, ἀφ' οὗ σε εἰς ἄνδρας ἤγαγον, ἄνευ λύπης ἢ  
 20 φόβου διετέλεσα, ἢ πότε ἑλαρὰν ἔσχον ἐπὶ σοὶ τὴν  
 ψυχὴν, πολέμους ἐπὶ πολέμοις στέλλοντα ὀρώσά σε  
 καὶ μάχας ἐπὶ μάχαις ἀναιρούμενον καὶ τραύματα  
 ἐπὶ τραύμασι λαμβάνοντα;

LII. Ἄλλ' ἐξ ὧν ἐπολιτεύου καὶ τὰ κοινὰ ἐπρα-  
 25 τες ἡδονὴν τινα ἐκαρπώσαμην ἢ μήτηρ ἐγὼ διὰ σέ; 1628  
 τότε μὲν οὖν τὰ μάλιστα ἠτύχουν στάσεως πολιτι-  
 κῆς μέσον ὀρώσά σε κείμενον. ἐν οἷς γὰρ ἀνθεῖν  
 ἐδόκει πολιτεύμασι καὶ πολλὸς ἐπνεῖς ἐναντιούμενος  
 ὑπὲρ τῆς ἀριστοκρατίας τοῖς δημοτικοῖς, ταῦτ' ἐμοὶ  
 30 φόβου μεστὰ ἦν ἐνθυμουμένη τὸν ἀνθρώπινον βίον  
 ὡς ἐπὶ μικρᾶς αἰωρεῖται ῥοπῆς, καὶ ἐκ πολλῶν  
 ἀκουσμάτων τε καὶ παθημάτων μαθούσῃ, ὅτι τοῖς

ἐπισήμοις ἀνδράσι θεῖα τις ἐναντιοῦται νέμεσις ἢ  
 φθόνος τις ἀνθρώπινος πολεμῆ· καὶ ἦν ἄρα μάντις  
 ἀληθῆς ὡς μήποτε ὄφελον τῶν ἐκβησομένων. κατη-  
 γωνίσαστό γε οὖν σε πολλὸς ἐπιρράξας ὁ πολιτικὸς  
 φθόνος καὶ ἀνήγαγεν ἐκ τῆς πατρίδος· ὁ δὲ μετὰ 5  
 ταῦτά μου βίος, εἰ δὴ καὶ βίον αὐτὸν δεῖ καλεῖν,  
 ἀφ' οὗ με καταλιπὼν ἔρημον ἐπὶ τοῖς παιδίοις τού-  
 τοις ἀπῆλθες, ἐν τούτῳ δεδαπάνηται τῷ ῥύπῳ καὶ  
 ἐν τοῖς πενθίμοις τρύχεσι τούτοις. ἀνθ' ὧν ἀπάντων  
 1629 ταύτην ἀπαιτῶ σε χάριν, μηδέποτε σοὶ βαρεῖα γενο- 10  
 μένη μηδ' εἰς τὸν λοιπὸν ἐσομένη χρόνον ἕως ἂν ζῶ,  
 διαλλαγῆναι πρὸς τοὺς σεαυτοῦ πολίτας ἤδη ποτὲ  
 καὶ παύσασθαι τὸν ἀμείλικτον χόλον φυλάσσοντα  
 κατὰ τῆς πατρίδος· κοινὸν ἀγαθὸν ἀμφοτέροις ἡμῖν  
 ἀξιούσα λαβεῖν καὶ οὐκ ἐμαυτῆς ἴδιον μόνης. σοὶ τε 15  
 γὰρ, ἐὰν πεισθῆς καὶ μηθὲν ἀνήκεστον ἐξεργάσῃ,  
 καθαρὰν καὶ ἀμίαντον ἔχειν συμβήσεται τὴν ψυχὴν  
 ἀπὸ παντὸς χόλου καὶ ταραγματος δαιμονίου· ἐμοὶ  
 τε ἢ παρὰ τῶν πολιτῶν τε καὶ πολιτίδων τιμὴ ζώσῃ  
 τε παρακολουθοῦσα βίον εὐδαίμονα ποιήσει, καὶ 20  
 μετὰ τὴν τελευτὴν ἀποδιδομένη καθάπερ εἰκὸς εὐ-  
 κλειαν ἀθάνατον οἴσει. καὶ εἰ τις ἄρα τὰς ἀνθρωπι-  
 νας ψυχὰς ἀπολυθείσας τοῦ σώματος ὑποδέξεται  
 τόπος, οὐχ ὁ καταχθόνιος καὶ ἀφεγγῆς ὑποδέξεται  
 τὴν ἐμήν, ἐν ᾧ φασι τοὺς κανοδαίμονας οἰκεῖν, οὐδὲ 25  
 τὸ λεγόμενον τῆς Ἀθήνης πεδίον, ἀλλ' ὁ μετέωρος καὶ  
 καθαρὸς αἰθήρ, ἐν ᾧ τοὺς ἐκ θεῶν φύντας οἰκεῖν  
 λόγος εὐδαίμονα καὶ μακάριον ἔχοντας βίον· οἷς  
 1630 διαγγέλλουσα τὸ σὸν εὐσεβὲς καὶ τὰς σὰς χάριτας,  
 αἷς αὐτὴν ἐκόσμησας, αἰεὶ τινὰς αἰτήσεται σοὶ παρὰ 30  
 θεῶν ἀμοιβὰς καλὰς.

LIII. Ἐὰν δὲ προπηλακίσης τὴν σεαυτοῦ μητέρα

καὶ ἄτιμον ἀπολύσης, ὅ τι μὲν αὐτῷ σοι συμβήσεται  
διὰ ταῦτα παθεῖν οὐκ ἔχω λέγειν· μαντεύομαι δὲ  
οὐδὲν εὐτυχές. ὅτι δὲ εἴαν καὶ τᾶλλα πάντα εὐδαι-  
μονῆς, ἔστω γάρ, ἢ δι' ἐμὲ καὶ τὰς ἐμὰς συμφορὰς  
5 παρακολουθήσουσά σοι καὶ οὐδέποτε ἀνήσουσα τὴν  
ψυχὴν ὀδύνη πάντων ἀγαθῶν σοι ἀνόνητον ποιήσει  
τὸν βίον, εὖ οἶδα. οὐ γὰρ ἀνέξεται Οὐτεουρία τὴν  
δεινὴν καὶ ἀνήκεστον ὕβριν ἐν τοσοῦτοις μάρτυσιν  
ὑβρισθεῖσα τὸν ἐλάχιστον βιωῖναι χρόνον· ἀλλ' ἐν  
10 τοῖς ἀπάντων ὑμῶν φίλων τε καὶ ἐχθρῶν ὁμμασιν  
ἐμαυτὴν διακρήσομαι, βαρεῖαν ἀρὰν καὶ δεινὰς ἐρι-  
νύας ἀντ' ἐμαυτῆς καταλιπούσά σοι τιμωρούς. ἂν  
μὴ δεήσειεν, ὧ θεοὶ τῆς Ῥωμαίων φύλακες ἡγεμο-  
νίας, ἀλλ' εὐσεβεῖς καὶ καλοὺς δολίητε Μαρκίῳ λο-  
15 γισμούς· καὶ ὥσπερ ἄρτι προσιούσῃ μοι τοὺς τε πε- 1631  
λέκεις ἀπέθετο καὶ τὰς ῥάβδους ἔκλινε καὶ τὸν δί-  
φρον ἀπὸ τοῦ βήματος ἔθηκε χαμαὶ καὶ πάντα τᾶλλα,  
οἷς κοσμεῖσθαι τὰς αὐτοκράτορας ἀρχὰς νόμος, τὰ  
μὲν ἐμείωσε, τὰ δ' ἐκποδῶν εἰς τέλος ἐποίησε, δη-  
20 λον ἅπασι βουλόμενος ποιῆσαι, ὅτι τῶν μὲν ἄλλων  
ἄρχειν αὐτῷ προσήκειν, ὑπὸ δὲ τῆς μητρὸς ἄρχεσθαι·  
οὕτω καὶ νῦν τιμίαν καὶ περίβλεπτόν με ποιήσεις,  
καὶ χαρισάμενος τὴν κοινὴν πατρίδα ἀντὶ κακοδαι-  
μονεστάτης εὐδαιμονεστάτην ἀποδείξειέ με πασῶν  
25 γυναικῶν. εἰ δὲ ὀσιόν ἐστι καὶ θεμιτὸν υἱοῦ γόνασι  
μητέρα προσκυλίεσθαι, καὶ τοῦτο καὶ πᾶν ἄλλο ταπει-  
νὸν σχῆμα καὶ λειτούργημα ὑπομενω̄ σωτηρίας ἕνεκα  
τῆς πατρίδος.

LIII. Ταῦτ' εἰπούσα ἔρριψεν ἑαυτὴν χαμαί,  
30 καὶ περιπλέξασα ταῖς χερσὶν ἀμφοτέραις τοὺς πόδας  
τοῦ Μαρκίου κατεφίλησε. πεσοῦσης δ' αὐτῆς αἰ-  
μὲν γυναικες ἀνεβόησαν ἅμα πᾶσαι κωκυτὸν ὀξύν

1632 καὶ μακρόν, οἱ δ' ἐν τῷ συνεδρίῳ παρόντες Οὐο-  
λούσκων οὐκ ἠνέσχοντο τὴν ἀήθειαν τῆς ὄψεως,  
ἀλλ' ἀπεστράφησαν. αὐτὸς δὲ ὁ Μάρμιος ἀναλόμε-  
νος ἐκ τοῦ δίφρου καὶ περιπεσῶν τῇ μητρὶ ἀνίστη-  
σιν αὐτὴν ἀπὸ τῆς γῆς ὀλίγον ἐμπνεύσαν, καὶ πε- 5  
ριβαλὼν καὶ πολλὰ ἐκχέας δάκρυα εἶπε· Νικᾶς, ὦ  
μητέρ, οὐκ εὐτυχῆ νίκην οὔτε σεαυτῇ οὔτ' ἐμοί· τὴν  
μὲν γὰρ πατρίδα σέσωκας, ἐμὲ δὲ τὸν εὐσεβῆ καὶ  
φιλόστοργον υἱὸν ἀπολώλεικας. ταῦτα εἰπὼν ἐπὶ τὴν  
σκηρὴν ἀπήει, κελεύσας ἀκολουθεῖν τὴν τε μητέρα 10  
καὶ τὴν γυναικα καὶ τὰ παιδία, ἔνθα τὸν λοιπὸν  
τῆς ἡμέρας χρόνου σκοπούμενος σὺν αὐταῖς ὅ τι χρῆ  
πράττειν διετέλεσεν. ἦν δὲ τὰ δόξαντα αὐτοῖς τοιαῦτα·  
περὶ μὲν τῆς καθόδου μήτε τὴν βουλὴν τέλος μηθὲν  
ἐκφέρειν εἰς τὸν δῆμον μήτ' ἐκεῖνον ἐπιψηφίζειν, 15  
1633 πρὶν ἂν τοῖς Οὐολούσκοις εὐτροπή γένηται τὰ περὶ  
στρατιᾶν ἀναστήσαντα ὡς διὰ φιλίας γῆς ἀπάγειν·  
ὑποσχόντα δὲ τῆς ἀρχῆς λόγον καὶ τὰς εὐεργεσίας  
ἀποδειξάμενον ἀξιοῦν τοὺς ἐπιτρέψαντας αὐτῷ τὴν 20  
στρατιάν, μάλιστα μὲν φιλία δέχεσθαι τοὺς πολε-  
μίους καὶ συνθήκας ποιήσασθαι δικαίας, αὐτῷ τὴν  
ἰσότητά καὶ τὸ μὴ σφαλῆναι περὶ τὰς ὁμολογίας ἐπι-  
τρέψαντας. εἰ δ' ἐπὶ τοῖς κατωρθωμένοις σφίσι  
ἀνθαδειὰς ἀναπιμπλάμενοι μὴ δέχονται τὰς διαλ- 25  
λαγὰς, ἀφίστασθαι τῆς ἀρχῆς αὐτοῖς. ἢ γὰρ οὐχ  
ὑπομενεῖν αὐτοὺς ἄλλον τινὰ αἰρεῖσθαι στρατηγὸν  
δι' ἀπορίαν ἀγαθοῦ ἡγεμόνος, ἢ παρακινδυνεύσαν-  
τας ὀφροδῆτινι παραδοῦναι τὰς δυνάμεις σὺν μεγάλῃ  
διδραχθήσεσθαι βλάβῃ τὴν τοῦ συμφέροντος αἴρεσιν. 30  
τὰ μὲν δὴ βουλευθέντα αὐτοῖς καὶ δόξαντα δίκαιά  
τε καὶ ὅσια εἶναι, φήμης τε ἀγαθῆς ἐφ' ἣ μάλιστα

ὁ ἀνὴρ ἐσπούδαζε παρὰ πᾶσι τευχόμενα, τοιαύδε ἦν. ἐτάραττε δέ τις αὐτοὺς ὑποψία δέος ἔχουσα, μὴ ποτε ἀλόγιστος ὄχλος ἐν ἐλπίδι τοῦ καταπεπολεμηκέναι τὸ ἀντίπαλον ἤδη ὦν δι' ὀργῆς ἀκράτου λάβῃ τὴν 1634  
 5 ἀποτυχίαν, κᾶπειτα ὡς προδότην αὐτὸν οὐδὲ λόγου μεταδοὺς αὐτοχειρίᾳ φθάσῃ διολέσας. ἐδόκει οὖν αὐτοῖς καὶ τοῦτο καὶ εἴ τι ἄλλο δεινότερον εἶη, κινδύνευμα σὺν ἀρετῇ σώζουσι τὴν πίστιν ὑπομέ-  
 10 νοι ἀλλήλους ἐξήρσαν ἐκ τῆς σκηνῆς· ἐπειθ' αἱ μὲν γυναικες εἰς τὴν πόλιν ἀπήρσαν, ὁ δὲ Μάρκιος ἐν ἐκκλησίᾳ τὰς αἰτίας ἀποδοὺς τοῖς παροῦσι, δι' ἃς ξιμελλε λύειν τὸν πόλεμον, καὶ πολλὰ τῶν στρατιω-  
 15 τῶν δεηθεὶς συγγνωῖναι τε αὐτῶ καὶ ἐπειδὰν οἰκαδε ἀφίκωνται μεμνημένους ὦν ἔπαθον εὐ τοῦ μηθὲν ὑπὸ τῶν ἄλλων ἀνήκεστον παθεῖν συναγανιστὰς γενέσθαι, καὶ ἄλλα πολλὰ καὶ ἐπαγωγὰ διαλεχθεὶς παρασκευάζεσθαι ἐκέλευσεν ὡς τῇ ἐπιούσῃ νυκτὶ ἀναστρατοπεδεύοντας.  
 20 LV. Ῥωμαῖοι δὲ ὡς ἔμαθον, ὅτι λέλυται σφῶν ὁ κίνδυνος· ἔφθασε γὰρ τῶν γυναικῶν τὴν παροῦσαν προλαβοῦσα ἡ φήμη· σὺν πολλῇ χαρᾷ καταλι- 1635  
 πόντες τὴν πόλιν ἔθρον ἔξω καὶ ὑπήντων ταῖς γυναιξίν ἀσπασμῶδες καὶ παιᾶνας καὶ πάνθ' ὅσα ἐκ 25  
 μεγάλων κινδύνων εἰς ἀδόκητον εὐτυχίαν ἀνθρώποι καταστάντες πράττουσί τε καὶ λέγουσιν ὑπὸ χαρᾶς, τὰ μὲν ἀθρόοι, τὰ δὲ καθ' ἕνα ἕκαστον ἀποδεικνύ-  
 30 μενοι. ἐκείνην μὲν οὖν τὴν νύκτα ἐν θαλαίαις τε καὶ εὐπαθειαῖς διετέλεσαν· τῇ δ' ἔξῃς ἡμέρᾳ συνα-  
 χθεῖσα ὑπὸ τῶν ὑπάτων ἡ βουλὴ περὶ μὲν τοῦ Μαρ-  
 κίου γνώμην ἀπεδείξαντο, εἰς ἐτέρους ἀναβάλλεσθαι καιροὺς ἐπιτηδειότερους τὰς δοθησομένας αὐτῶ τι-

μὰς· ταῖς δὲ γυναιξίν ἐπαινόν τε ἀποδεδοῦσθαι τῆς προθυμίας πάλιν δημοσίᾳ γραφῇ μνήμην οἴσουσα ἐκ τῶν ἐπιγινωμένων αἰώνιον, καὶ γέρας ὃ τι ἂν αὐ-  
 1636 ταῖς λαβοῦσαις ἡδιστόν τε καὶ τιμιώτατον ἔσεσθαι μέλλῃ· καὶ ὁ δῆμος ἐπεκύρωσε ταῦτα. ταῖς δὲ γυ- 5  
 ναιξὶ βουλευσαμέναις εἰσηλθεῖν ἐπιφθόνου μὲν δω-  
 ρεᾶς μηδεμιᾶς δεῖσθαι, ἀξιούν δὲ ἐπιτρέψαι σφίσι τὴν βουλήν [ἐπι] Τύχης γυναικῶν ἰδρῦσασθαι ἱερὸν ἐν ᾧ τὰς περὶ τῆς πόλεως ἐποιήσαντο λιτὰς χωρίῳ, θυσίας τε καθ' ἕκαστον ἔτος αὐτῇ συνιούσας ἐπιτε- 10  
 λεῖν ἐν ἧ τὸν πόλεμον ἔλυσαν ἡμέρᾳ. ἡ μὲντοι βουλή καὶ ὁ δῆμος ἀπὸ τῶν κοινῶν ἐψηφίσαντο χρημάτων  
 1637 τέμενός τε ὠνηθὲν καθιερωθῆναι τῇ θεῷ, καὶ ἐν αὐτῷ νεῶν καὶ βωμῶν ὡς ἂν οἱ ἱερομνήμονες ἐξη-  
 1638 γῶνται συντελεσθῆναι, θυσίας τε προσάγεσθαι δη- 15  
 μοτελεῖς καταρχομένης τῶν ἱερῶν γυναικός, ἣν ἂν ἀποδείξωσιν αὐταὶ λειτουργὸν τῶν ἱερῶν. ταῦτα τῆς βουλῆς ψηφισαμένης, ἱέρεια μὲν ὑπὸ τῶν γυναικῶν ἀπεδείχθη τότε πρῶτον ἢ τὴν γνώμην αὐταῖς εἰση-  
 γησαμένη περὶ τῆς πρεσβείας Οὐαλερίας καὶ τὴν μη- 20  
 τέρα τοῦ Μαρκίου πείσασα συλλαβέσθαι σφίσι τῆς ἐξόδου. θυσίαν δὲ πρῶτην αἱ γυναῖκες ἔθυσαν ὑπὲρ τοῦ δήμου καταρχομένης τῶν ἱερῶν τῆς Οὐαλερίας ἐπὶ τοῦ κατασκευασθέντος ἐν τῷ τεμένει βωμοῦ, πρὶν ἢ τὸν νεῶν καὶ τὸ ξόανον ἀνασταθῆναι, μηνὶ Δε- 25  
 κμβρίῳ τοῦ κατόπιον ἐνιαυτοῦ, τῇ νεῆς σελήνῃ, ἣν Ἕλληνες μὲν νομμηρίαν, Ῥωμαῖοι δὲ καλάνδας κα-  
 1639 λουσίαν· αὕτη γὰρ ἦν ἡ λύσασα τὸν πόλεμον ἡμέρα. ἐνιαυτῷ δ' ὕστερον δευτέρῳ μετὰ τὴν πρῶτην θυ-  
 σίαν ὁ κατασκευασθεὶς ἐκ τῶν δημοσίων χρημάτων 30  
 νεὼς συνετελέσθη τε καὶ καθιερώθη, Κοιντιλλίου μη-  
 νὸς ἑβδόμῃ μάλιστα κατὰ σελήνην· αὕτη δὲ κατὰ



Ῥωμαίους ἐστὶν ἢ προηγουμένη τῶν Κοινητῶν νωνῶν ἡμέρα. ὁ δὲ καθιερώσας αὐτὸν ἦν Πρόκλος Οὐεργίνιος ἄτερος τῶν ὑπάτων.

LVI. Εἴη δ' ἂν ἀρμόττον ἱστορίας σχήματι καὶ 5 ἐπανορθώσεως ἕνεκα τῶν οἰομένων μὴτ' ἐπὶ ταῖς τιμαῖς ταῖς παρ' ἀνθρώπων χαίρειν τοὺς θεοὺς μὴτ' ἐπὶ ταῖς ἀνοσίοις καὶ ἀδίκαις πράξεσιν ἀγανακτεῖν, τὸ δηλῶσαι τὴν γενομένην ἐπιφάνειαν τῆς θεοῦ κατ' ἐκεῖνον τὸν χρόνον οὐχ ἅπαξ, ἀλλὰ [καὶ] δὶς, ὡς αἱ 10 τῶν ἱεροφαντῶν περιέχουσι γραφαί, ἵνα τοῖς μὲν εὐλαβεστέροις περὶ τὸ συνέχειν ἄς παρὰ τῶν προ- 1640 γόνων δόξας ὑπὲρ τοῦ δαιμονίου παρελάβον ἀμεταμέλητος ἢ τοιαύτη προαίρεσις καὶ βεβαία διαμένῃ τοῖς δὲ ὑπερορῶσι τῶν πατριῶν ἐδισμῶν καὶ μη- 15 θενὸς ποιούσι τὸ δαιμόνιον τῶν ἀνθρωπίνων λογισμῶν κύριον, μάλιστα μὲν ἀναθέσθαι ταύτην τὴν δόξαν, εἰ δ' ἀνιάτως ἔχουσιν ἔτι μᾶλλον αὐτοῖς ἀπέχθεσθαι καὶ κακοδαιμονεστέροις εἶναι. ἱστορεῖται τοίνυν ὅτι τῆς βουλῆς ψηφισαμένης ἐκ τοῦ δη- 20 μοσίου πάσας ἐπιχορηγηθῆναι τὰς εἰς τὸν νεῶν τε καὶ τὸ ξόανον δαπάνας, ἕτερον δὲ ἄγαλμα κατασκευασαμένῳ τῶν γυναικῶν ἀφ' ὧν αὐταὶ συνήνεγκαν χρημάτων, ἀνατεθέντων τε αὐτῶν ἀμφοτέρων ἅμα ἐν τῇ πρώτῃ τῆς ἀνερωσέως ἡμέρᾳ, θάτερον τῶν 25 ἀφιδρυμάτων, ὃ κατασκευάσαν αἱ γυναῖκες, ἐφθέρξατο πολλῶν παρουσῶν γλώττῃ Λατίνῃ φωνῇ εὐσύνετον τε καὶ γεγωνόν· ἧς ἐστὶ φωνῆς ἐξεσημνεύμενος ὁ νοῦς εἰς τὴν Ἑλλάδα διάλεκτον τοιοῦσδε· Ὅσιφ πόλεως νόμφ γυναῖκες γαμεταὶ δεδώκατέ με. 1641 30 οἷα δὲ φιλεῖ γίνεσθαι περὶ τὰς παραδόξους φωνὰς τε καὶ ὄψεις, πολλῇ ταῖς παρούσαις ἐνέπιπτεν ἀπιστία, μὴ ποτε οὐ τὸ ξόανον εἴη τὸ φθεγγόμενον, ἀνθρω-

πίνῃ δὲ τις φωνή· μάλιστα δ' ὅσαι πρὸς ἄλλω τινὶ τὸν νοῦν ἔχουσαι τηρῆκαυτα ἔτυχον, οὐκ ἰδοῦσαι τὸ φθεγγόμενον ὃ τι ποτε ἦν ταύτην εἶχον τὴν πρὸς τὰς ἰδοῦσας ἀπιστίαν. ἔπειτ' αὐθις πληθύνοντος τοῦ νεῶ καὶ σιωπῆς πλείστης κατὰ δαίμονα γενομένης, 5 ἐν μείζονι φωνῇ τὸ αὐτὸ ξόανον ἐφθέρξατο τὴν αὐτὴν λέξιν, ὥστε μηδὲν ἔτι εἶναι τὸ ἀμφίλογον. ἢ μὲν οὖν βουλή ὡς ταῦτ' ἔμαθεν ἐψηφίσατο θυσίας ἄλλας καὶ σεβασμούς οὓς ἂν οἱ τῶν ἱερῶν ἐξηγηταὶ 1012 παραδῶσι καθ' ἕναστος ἔτος ἐπιτελεῖν. αἱ δὲ γυναῖ- 10 κες ἐν ἔθει κατεστήσαντο τῇ τῆς ἱερείας χρησάμεναι γνώμῃ, τῷ ξόανῳ τούτῳ μὴτε στεφάνους ἐπιτιθέναι μὴτε χειρᾶς προσφέρειν γυναῖκας ὅσαι δευτέρων ἐπειράθησαν γάμων, τὴν δὲ τιμὴν καὶ θεραπείαν αὐτοῦ πᾶσαν ἀποδεδόσθαι ταῖς νεογάμοις. ἀλλὰ περὶ 15 μὲν τούτων οὔτε παρελθεῖν τὴν ἐπιχώριον ἱστορίαν καλῶς εἶχεν, οὔτε πλείονα περὶ αὐτῆς ποιῆσθαι λόγον. ἐπάνειμι δ' ὅθεν εἰς τοῦτον ἐξέβην τὸν λόγον.

LVII. Μετὰ τὴν ἐκ τοῦ χάρακος ἀπαλλαγὴν τῶν 20 γυναικῶν ὁ Μάρκιος περὶ τὸν ὄρθρον ἀναστήσας τὴν στρατιὰν ἀπήγευ ὡς διὰ φιλίας, καὶ ἐπειδὴ ἐν τῇ Οὐολούσκων ἐγένετο, πάντα ὅσα ἐκ τῶν λαφύρων ἔλαβε δαρησάμενος τοῖς στρατιώταις, ἑαυτῷ δ' οὐδ' 1013 ὀτιοῦν ὑπολειπόμενος, ἀπέλυσεν ἐπὶ τὰ οἰκεία. ἢ 25 μὲν οὖν κοινωνήσασα τῶν ἀγώνων αὐτῷ στρατιὰ πλούτῳ βαρεῖα ἀφικομένη τὴν τε ἀνάπαυλαν οὐκ ἀηδῶς ἰδέξατο τοῦ πολέμου καὶ δι' εὐνοίας εἶχε τὸν ἄνδρα, συγγνώμης τε ἄξιον ἠγείτο, εἰ μὴ τέλος ἐπέ- 30 θηκε τῷ πολέμῳ μητρὸς οἰκτους καὶ λιτὰς ἐντραπίς. 30 ἢ δ' ἐν ταῖς πόλεσιν ὑπομείνας νεότης, φθονοῦσα μὲν τοῖς ἐπὶ στρατοπέδου γενομένοις, τῶν πολλῶν

ώφελειῶν, διημαρτηκνῖα δὲ ὧν ἤλπισεν, εἰ καθαι-  
 ρεθείη τὸ Ῥωμαίων φρόνημα τῆς πόλεως ἀλούσης,  
 ἐτραχύνετο πρὸς τὸν ἡγεμόνα καὶ πικρὰ σφόδρα ἦν·  
 καὶ τελευτῶσα, ἐπειδὴ τοῦ μύσους ἡγεμόνας ἔλαβε  
 5 τοὺς πλείστον ἐν τῷ ἔθνει δυναμένους, ἐξηργιώθη  
 τε καὶ ἔργον ἔδρασεν ἀνόσιον. ἦν δὲ Τύλλος Ἄττιος  
 ὁ τὰς ὁργὰς αὐτῶν παραθήξας, ἔχων περὶ αὐτὸν  
 ἑταιρίαν ἐξ ἀπάσης πόλεως οὐκ ὀλίγην. τούτῳ δὲ  
 ἄρα ἐδέδοκτο παλαιότερον ἔτι τὸν φθόνου οὐ δυνα-  
 10 μένῳ κατέχειν, εἰ μὲν εὖ πράξας ὁ Μάρκιος καὶ τὴν 1644  
 Ῥωμαίων πόλιν διαφθείρας εἰς Οὐολούσιους ἔλθοι,  
 κρύφα καὶ σὺν δόλῳ αὐτὸν ἀνελεῖν· εἰ δὲ διαμαρ-  
 τῶν τῆς πείρας ἀτελῆς τοῦ ἔργου ἀναστρέψειεν, ὡς  
 προδοτὴν παραδόντα τῇ περὶ αὐτὸν ἑταιρίᾳ ἀποκτεῖ-  
 15 ναι· ὅπερ ἐποίει τότε, καὶ συναγαγὼν χεῖρα οὐκ  
 ὀλίγην κατηγόρει τοῦ ἀνδρὸς ψευδῆ τεκμαιρόμενος·  
 ἀληθέσι καὶ οὐ γενησόμενα εἰκάζων γενησομένοις·  
 ἐκέλευε τε ἀποθήμενον αὐτὸν τὴν ἀρχὴν λόγον ὑπέ-  
 20 χεῖν τῆς στρατηγίας. ἦν δὲ τῆς ὑπομενούσης στρα-  
 τίας ἐν ταῖς πόλεσιν ἡγεμῶν, ὡς καὶ πρότερον εἶ- 1645  
 ρηταί μοι, κύριος τοῦ τε συναγαγεῖν ἐκκλησίαν καὶ  
 τοῦ καλεῖν ὃν βούλοιτο ἐπὶ δίκην.

LVIII. Ὁ δὲ Μάρκιος ἀντιλέγει μὲν πρὸς οὐ-  
 δέτερον τούτων ἐδικαίου, περὶ δὲ τῆς τάξεως αὐτῶν  
 25 διεφέρετο λόγον ἀξιῶν ἀποδοῦναι πρότερον τῶν  
 πεπραγμένων αὐτῷ κατὰ τὸν πόλεμον, ἔπειτα, ἐὰν  
 ἅπασι δόξῃ Οὐολούσιους, ἀποθήσεσθαι τὴν ἀρχὴν.  
 τούτων δὲ οὐ μίαν ᾤετο πόλιν δεῖν, ἐν ἣ τὸ πλεῖον  
 ὑπὸ τοῦ Τύλλου διέφθαρτο μέρος, γενέσθαι κυρίαν,  
 30 ἀλλὰ τὸ ἔθνος ἅπαν εἰς τὴν ἔννομον ἀγορὰν συνα-  
 χθῆν, εἰς ἣν ἔθος ἦν αὐτοῖς ὅτε περὶ τῶν μεγίστων  
 βουλευέσθαι μέλλοιεν ἐξ ἀπάσης πόλεως προβούλους

ἀποστέλλειν. ὁ δὲ Τύλλος ἀντέλεγε πρὸς ταῦτα κα-  
 λῶς εἰδῶς, ὅτι δεινὸς εἶπεῖν ἀνὴρ πολλῶν καὶ καλῶν  
 ἔργων λόγον ἀποδιδούς ἐν ἡγεμονικῷ ἀξιώματι μένῳ  
 πείσει τὸ πλήθος, καὶ τοσοῦτου δεήσει τιμωρίαν  
 5 προδοτῶν ὑποσχεῖν, ὥστε καὶ λαμπρότερος ἔτι καὶ 5  
 1046 τιμιώτερος ὑπ' αὐτῶν ἔσται, τὸν τε πόλεμον ὅπως ἀν-  
 βούληται καταλύσασθαι συγχωρησάντων ἀπάντων  
 γενήσεται κύριος. καὶ ἦν μέχρι πολλοῦ λόγων τε καὶ  
 ἀψιμαχιῶν τῶν ἐπ' ἀλλήλοις γινομένων καθ' ἑκάστην  
 ἡμέραν ἐν ταῖς ἐκκλησίαις καὶ κατὰ τὴν ἀγορὰν πολὺς 10  
 ἀγῶν· ἔργῳ γὰρ οὐχ οἷόν τε ἦν οὐδέτερόν βιάσασθαι  
 τὸν ἕτερον τῆς ἰσοτίμου ἀρχῆς ἀξιώσει κρατυνόμενον.  
 ὡς δὲ οὐδὲν τῆς φιλονεικίας ἐγίνετο πέρασ, ἡμέραν  
 προειπὼν ὁ Τύλλος, ἐν ἣ τὸν Μάρκιον ἐκέλευσεν  
 ἦκειν τὴν ἀρχὴν ἀποθησόμενον καὶ δίκην ὑφέξοντα 15  
 τῆς προδοσίας, θρασυτάτους τε ἀνδρας εὐεργεσιῶν  
 ἐλπίσειν ἐπάρας ἀρχηγούς ἀνοσίῳ ἔργῳ γενέσθαι,  
 παρῆν εἰς τὴν ἀποδειχθεῖσαν ἀγορὰν· καὶ προσελθὼν  
 ἐπὶ τὸ βῆμα πολλῇ κατηγορίᾳ ἐχρήσατο τοῦ Μαρ-  
 κίου, καὶ εἰ μὴ βούλοιτο ἀποθέσθαι τὴν ἀρχὴν 20  
 ἐκῶν, τῷ δήμῳ παρεκελεύετο παύειν αὐτὸν ἀπάσῃ  
 δυνάμει.

1047 LVIII. Ἀναβάντος δὲ τοῦ ἀνδρὸς ἐπὶ τὴν ἀπο-  
 λογίαν, βοή τε πολλὴ καλύουσα τοὺς λόγους ἐκ τῆς  
 ἑταιρίας τῆς περὶ τὸν Τύλλον ἐγίνετο· καὶ μετὰ 25  
 ταῦτα Παῖε καὶ Βάλλε φωνοῦντες περιίστανται ἀν-  
 τὸν οἱ θρασύτατοι καὶ συναράττοντες τοῖς λίθοις  
 ἀποκτιννύουσιν. ἐρριμμένου δὲ αὐτοῦ χαμαὶ κατὰ  
 τὴν ἀγορὰν, οἳ τε παραγενομένοι τῷ πάθει καὶ οἱ  
 μετὰ ταῦτα ἤδη νεκροῦ ὄντος ἀφικόμενοι τὸν τε 30  
 ἀνδρα τῆς τύχης ᾠθύροντο ὡς οὐ καλὰς εἰληφότα  
 παρὰ σφῶν ἀμοιβὰς, ἐπιλεγόμενοι πάντα ὅσα τὸ

κοινὸν ὠφέλησε, καὶ τοὺς δρᾶσαντας τὸν φόνον ἐπό-  
 θουν λαβεῖν ὡς ἀνόμου ἔργου καὶ ἀσυμφόρου ταῖς  
 πόλεσιν ἄρξαντας, ἄνευ δίκης ἐν χειρῶν νόμῳ τινα  
 ἀποκτεῖναι καὶ ταῦτα ἠγεμόνα. μάλιστα δὲ ἠγανά-  
 5 κτουσι οἱ ταῖς στρατείαις αὐτοῦ παραγενόμενοι, καὶ  
 ἐπειδὴ ζῶντι αὐτῷ οὐχ ἱκανοὶ ἐγένοντο κωλυταὶ τῆς  
 συμφορᾶς, τὰς μετὰ τὸν θάνατον ὀφειλομένης ἐγνωσαν  
 ἀποδιδόναι χάριτας, συμφέροντες εἰς τὴν ἀγορὰν 1648  
 ὅσων ἔδει τοῖς ἀγαθοῖς ἀνδράσιν εἰς τὴν ἀναγκαίαν  
 10 τιμὴν. ἐπειδὴ δὲ πάντα εὐτρέπιστο, θέντες ἐπὶ  
 στρωμνῆς ἐκπροπεστάτω ἡσκημένης κόσμῳ τὴν αὐ-  
 τοκρατορικὴν ἔχοντα ἐσθῆτα, καὶ πρὸ τῆς κλίνης  
 αὐτοῦ φέρεσθαι κελεύσαντες λάφυρά τε καὶ σκύλα  
 καὶ στεφάνους καὶ μνήμας ἃν εἴλε πόλεων, ἦσαντο  
 15 τὴν κλίνην οἱ λαμπρότατοι τῶν νέων ἐν τοῖς κατὰ  
 πολέμους ἔργοις· καὶ κομίσαντες εἰς τὸ προάστειον  
 ὃ μάλιστα ἦν ἐπιφανές, ἔθεσαν ἐπὶ τὴν παρεσκευα-  
 σμένην πυράν, συμπροπεμπούσης τὸ σῶμα τῆς πό-  
 λεως ὅλης μετ' οἰωγῆς τε καὶ δακρύων. ἔπειτα  
 20 κατασφάξαντές τ' αὐτῷ πολλὰ βοσκήματα καὶ τῶν  
 ἄλλων ἀπαρξάμενοι πάντων ὅσων ἀνθρώποι βασι-  
 λεῦσιν ἢ στρατιᾶς ἠγεμόσιν ἐπὶ πυραῖς ἀπάρχοντες,  
 παρέμειναν οἱ μάλιστα τοὶ ἀνδρῶν ἀσπαζόμενοι· μέχρι 1649  
 τοῦ μαρμαρῆναι τὴν φλόγα· καὶ πάλιν ἀναμαρμαρῆντες  
 25 τὰ λεύκωτα ἐθαψάν· ἐν τῷ αὐτῷ χρόνῳ ἡρώματα  
 ὑψηλὰ διαπολοχρητῶν ἐθροισθέντι μνημῆα ἐπίσημον  
 ἐόρασαν οἱ ἐπισημοὶ ἀπὸ τῆς ἀγορᾶς· ἡ δὲ καταστροφὴ 1649  
 εὐτυχὴς ἦν· καὶ τὰς πόλεις ἀριστοῦ τῶν κατὰ τὴν πό-  
 30 λιν καὶ πρὸς ὑπάσας τὰς κήδοις ὅσαι ἀρχοῦσαι  
 νῆσαν ἐργασίας, τὰ τὸ δίκαιον οὐκ ἀπὸ νόμου μᾶλλον  
 ἀνάγκης· δικαιοκρατῶν φέρος ἀκούσιος ἐποδιδόντες, ἀλλὰ

ἐκὼν τε καὶ πεφυκῶς πρὸς αὐτὰ εὔ, καὶ οὐδ' ἐν  
 ἀρετῆς μοῖρα τὸ μῆθ' ἐν ἀδικεῖν τιθέμενος, οὐ μόνον  
 τε αὐτὸς ἀγνεύειν ἀπὸ πάσης κακίας προθυμούμενος,  
 ἀλλὰ καὶ τοὺς ἄλλους προσαναγκάζειν δικαίων· με-  
 5 γαλόφρων τε καὶ δωρηματικὸς καὶ εἰς ἐπανόρθωσιν  
 ἃν ἐκάστω δέοι τῶν φίλων ὁπότε γνοίῃ προχειρότα-  
 τος, τὰ τε πολιτικὰ πράττειν οὐδενὸς χείρων τῶν  
 ἀριστοκρατικῶν· καὶ εἰ μὴ τὸ στασιάζου τῆς πόλεως  
 ἐμποδῶν αὐτοῦ τοῖς πολιτεύμασιν ἐγένετο, μεγίστην  
 ἂν ἢ Ῥωμαίων πόλις ἐπίδοσιν εἰς ἠγεμονίαν ἐκ τῶν 10  
 ἐκείνου πολιτευμάτων ἔλαβεν. ἀλλ' οὐ γὰρ ἐν δυ-  
 νατῷ ἦν ἅμα πάσας τὰς ἀρετὰς ἐν ἀνθρώπῳ γε-  
 νέσθαι φύσει, οὐδὲ φέρεται τις ἀπὸ θνητῶν καὶ  
 ἐπικλήρων σπερμάτων περὶ πάντα ἀγαθός.  
 1050 LXI. Ἐκείνῳ γε οὖν ταύτας ὁ δαίμων τὰς ἀρε- 15  
 τὰς χαρισάμενος ἑτέρας οὐκ εὐτυχεῖς κῆρας τε καὶ  
 ἄτας προσῆψε. τὸ γὰρ πρᾶν καὶ φαιδρὸν οὐκ ἐνῆν  
 αὐτοῦ τοῖς τρόποις, οὐδὲ τὸ θεραπευτικὸν τῶν πέ-  
 20 λας ἐν τε ἀσπασμοῖς καὶ προσαγορεύσει, οὐδὲ δὴ  
 τὸ εὐδιάλλακτον καὶ μετριοπαθὲς ὁπότε δι' ὀργῆς 20  
 τῶν γένοιτο, οὐδὲ ἢ πάντα τὰ ἀνθρώπινα ἐπικο-  
 σμοῦσα χάρις· ἀλλ' αἰεὶ πικρὸς καὶ χαλεπὸς ἦν. ταῦτά  
 τε δὴ αὐτὸν ἐν πολλοῖς ἐβλάψε, καὶ πάντων μάλιστα  
 ἢ περὶ τὰ δίκαια καὶ τὴν φυλακὴν τῶν νόμων ἄκρα-  
 25 τὸς τε καὶ ἀπαράπειστος καὶ οὐθὲν τῷ ἐπεικεῖ δι-  
 δοῦσα ἀποτομία· εἰσὶν τε ἀληθῆς εἶναι τὸ ὑπὸ τῶν  
 ἀρχαίων λεγόμενον φιλοσόφων, ὅτι μεσότητές εἰσιν  
 ἀλλ' οὐκ ἀκρότητες αἱ τῶν ἡθῶν ἀρεταί, μάλιστα δὲ  
 ἢ δικαιοσύνη. οὐ γὰρ μόνον ἐλλείπουσα τοῦ μετρίου  
 πέφυκεν, ἀλλὰ καὶ ὑπερβάλλουσα, αὐτοῖς τε οὐ λυ- 30  
 1651 σιτελής, ἀλλ' ἔστιν ὅτε αἰτία μεγάλων συμφορῶν,  
 καὶ εἰς θανάτους οἰκτροὺς καὶ λύμας ἀνηκέστους

καταστρέφουσα. Μάρκιον γε οὐδὲν ἦν ἕτερον ἄρα ὃ  
 τῆς πατρίδος ἐξήλασε καὶ τῶν ἄλλων ἀγαθῶν ἀνό-  
 νητον ἐποίησεν, ἢ τὸ ἀκριβὲς καὶ ἄκρον δίκαιον.  
 τοῖς τε γὰρ δημόταις εἰκεῖν τὰ μέτρια δέον καὶ ἐφιέ-  
 5 ναι τι ταῖς ἐπιθυμίαις, καὶ τὰ πρῶτα φέρεσθαι παρ'  
 αὐτοῖς, οὐκ ἠβουλήθη, ἀλλὰ πρὸς ἅπαντα τὰ μὴ δί-  
 καια ἀντιλέγων μῖσος ἤγειρε καὶ ἐξηλάθη πρὸς αὐ-  
 τῶν· τῆς τε Οὐλοούσκων στρατηγίας εὐθύς ἅμα τῷ  
 διαλυῖσαι τὸν πόλεμον ἀπαλλαγῆναι παρόν, καὶ μετε-  
 10 νέγκασθαι τὸν οἴκησιν ἐτέρωσέ ποι, ἕως ἂν ἡ κάθο-  
 δος αὐτῷ δοθῆ ὑπὸ τῆς πατρίδος, καὶ μὴ παρα-  
 σχεῖν αὐτὸν ἐχθρῶν ἐπιβουλαῖς καὶ ὄχλων ἀμαθίας  
 σκοπόν, οὐκ ἠξίωσεν, ἀλλ' ὑπεύθυνον οἰόμενος δεῖν  
 τὸ σῶμα παρασχεῖν τοῖς πεπιστευκόσι τὴν ἀρχήν,  
 15 καὶ λόγον ἀποδοῦς ὧν ἔπραξε κατὰ τὴν ἡγεμονίαν, 1652  
 εἴ τι φαίνοιτο ἀδικῶν τὴν κατὰ νόμους ὑποσχεῖν  
 δίκην, τῆς ἄκρας δικαιοσύνης οὐ καλοῦς ἀπέλαβε  
 μισθούς.

LXII. Εἰ μὲν οὖν ἅμα τοῖς σώμασι διαλυομένοις  
 20 καὶ τὸ τῆς ψυχῆς, ὅτιδήποτ' ἐστὶν ἐκεῖνο, συνδια-  
 λύεται, καὶ οὐδαμῇ οὐθὲν ἔτι ἐστίν, οὐκ οἶδ' ὅπως  
 μακαρίους ὑπολάβω τοὺς μηθὲν μὲν ἀπολαύσαντας  
 τῆς ἀρετῆς ἀγαθόν, δι' αὐτὴν δὲ ταύτην ἀπολομένους.  
 εἰ δὲ ἀφθαρτοὶ μέχρι τοῦ παντός αἱ ψυχαὶ τυγχά-  
 25 νουσιν ἡμῶν οὔσαι καθάπερ οἴονται τινες, ἢ χρόνον  
 τινὰ μετὰ τὴν ἀπαλλαγὴν τῶν σωμάτων ἔτι διαμέ-  
 νουσι, μήριστον μὲν αἱ τῶν ἀγαθῶν ἀνδρῶν, ἐλά-  
 χιστον δὲ αἱ τῶν κακῶν, ἀποχωρῶσα τιμὴ φαίνοιτ'  
 ἂν οἷς ἀρετὴν ἀσκοῦσιν ἠναντιώθη τὰ ἐκ τῆς τύχης  
 30 ἢ παρὰ τῶν ζώντων εὐλογία καὶ μνήμη μέχρι πλείστου 1653  
 παραμείνασα χρόνου· ὃ καὶ τῷ ἀνδρὶ ἐκεῖνῳ συν-  
 ἔβη. οὐ γὰρ μόνον Οὐλοούσκοι τὸν θάνατον ἐπέν-

θησαν αὐτοῦ, καὶ ὡς τῶν ἀρίστων γενόμενον ἐν  
 τιμῇ ἔχουσιν· ἀλλὰ καὶ Ῥωμαῖοι, ἐπειδὴ τὸ πάθος  
 ἐγνωσθή, μεγάλην συμφορὰν ὑπολαβόντες εἶναι τῆς  
 πόλεως, πένθος ἐποίησαντο ἰδίᾳ καὶ δημοσίᾳ· καὶ αἱ  
 γυναῖκες αὐτῶν, ἃ νόμος ἐστὶν αὐταῖς ἐπὶ τοῖς 5  
 ἰδίοις τε καὶ ἀναγκαίοις ποιεῖν κήδεσιν, ἀποθήμεναι  
 χρυσόν τε καὶ πορφύραν καὶ τὸν ἄλλον ἅπαντα  
 κόσμον μέλασιν ἀμφιεσμοῖς χρώμεναι τὸν ἐνιαύσιον  
 ἐπένησαν χρόνον. ἐτῶν δὲ μετὰ τὸ πάθος ὁμοῦ τι  
 πεντακοσίων ἤδη διαγεγονότων εἰς τόνδε τὸν χρόνον, 10  
 οὐ γέγονεν ἐξέτηλος ἢ τοῦ ἀνδρὸς μνήμη, ἀλλ' ἄδεται  
 καὶ ὑμνεῖται πρὸς πάντων ὡς εὐσεβῆς καὶ δίκαιος  
 ἀνὴρ. ὁ μὲν δὴ κατασχῶν Ῥωμαίους κλυδunos ἐκ τῆς  
 Οὐλοούσκων τε καὶ Αἰκανῶν ἐπιστρατείας Μάρκιον  
 λαβούσης ἡγεμόνα, μέγιστος τῶν πρὸ αὐτοῦ γενόμενος 15  
 1654 καὶ μικρὸν ἀποσχῶν τοῦ πᾶσαν τὴν πόλιν ἀνελεῖν  
 ἐκ βάρθρων, τοιούτου τέλους ἔτυχεν.

LXIII. Ἡμέραις δὲ ὀλίγαις ὕστερον ἐξεληθόντες  
 εἰς τὴν ὑπαιθρον Ῥωμαῖοι πολλῇ στρατιᾷ τῶν ὑπά-  
 των ἀγόντων ἀμφοτέρων, καὶ προελθόντες ἄχρι τῶν 20  
 ὄρων τῆς σφετέρας κατεστρατοπέδευσαν ἐπὶ λόφοις  
 δυσίν, ἰδιον ἐκατέρου τῶν ὑπάτων στρατόπεδον ἐπὶ  
 τοῖς ἐρυμνοτάτοις καταστησάμενοι. οὐ μὴν ἔδρασαν  
 γε οὔτε μείζον οὔτε ἔλαττον, ἀλλ' ἀνέστρεψαν ἄπρα-  
 κτοι, καίτοι καλὰς ἀφορμὰς δόντων αὐτοῖς τῶν πολε- 25  
 μίων δρᾶσαι τι γενναῖον. πρότεροι γὰρ ἔτι τούτων  
 Οὐλοούσκοι τε καὶ Αἰκανοὶ στρατὸν ἐπὶ τὴν Ῥωμαίων  
 γῆν ἤγαγον γνώμην ποιησάμενοι μὴ ἀνεῖναι τὸν και-  
 ρόν, ἀλλ' ἕως ἔτι καταπεπλήχθαι τὸ ἀντίπαλον ἐδό-  
 1655 κουν χωρεῖν ἐπ' αὐτό, ὡς καὶ ἐκούσιον διὰ δέος πα- 30  
 ραστησόμενον. στασιάσαντες δὲ περὶ τῆς ἡγεμονίας  
 κατ' ἀλλήλων, τὰ ὄπλα ἤρπασαν καὶ συμπεσόντες ἐμά-

χοντο, οὔτε κατὰ τάξιν οὔτε ἐν παραγγέλιματος, ἀλλὰ  
 φύρδην καὶ ἀναμίξ, ὥστε πολὺν ἐξ ἀμφοῖν γενέσθαι  
 φόνον· καὶ εἰ μὴ δὴς ὁ ἥλιος ἐφθασεν, ἅπασαι ἂν  
 αὐτῶν αἱ δυνάμεις διεφθάρησαν. τῇ δὲ νυκτὶ λυούσῃ  
 5 τὸ νεῖκος ἀκούσιοι εἴξαντες διεκρίθησάν τε ἀπ' ἀλ-  
 λήλων καὶ ἐπὶ τοὺς ἰδίους χάρακας ἀπηλλάγησαν·  
 ἔωθεν δὲ ἀναστήσαντες τὰς δυνάμεις ἀπήεσαν ἐκά-  
 τεροι ἐπὶ τὰ σφέτερα. οἱ δὲ ὑπατοὶ παρά τε αὐτο-  
 μόλων καὶ αἰχμηλώτων οἱ παρ' αὐτὸ τὸ ἔργον ἀπέ-  
 10 δρασαν ἀκούσαντες, οἷα κατέσχε λύσσα καὶ θεοβλά-  
 βεια τὰ πολέμια, οὔτε συνεπέθεντο τῷ κατ' εὐχὴν  
 δοθέντι καιρῷ τριάκοντα σταδίων οὐ πλείον ἀπέχον-  
 τες, οὔτε ἀπιόντας ἐδίωξαν ἐν ᾧ κεκμηῶστας καὶ  
 τραυματίας καὶ ὀλίγους ἐκ πολλῶν καὶ ἀτάκτους χω-  
 15 ρούντας ἀκραιφνεῖς αὐτοὶ καὶ σὺν κόσμῳ ἐπόμενοι  
 ῥαδίως ἂν διέφθειραν πασσυδί. λύσαντες δὲ καὶ  
 αὐτοὶ τοὺς χάρακας ἀπήεσαν εἰς τὴν πόλιν· εἴτε  
 ἀρκοῦμενοι τῷ παρὰ τῆς τύχης δοθέντι ἀγαθῷ, εἴτε  
 οὐ πιστεύοντες ἀνασκήτῳ στρατιᾷ τῇ σφετέρα, εἴτε  
 20 περὶ πολλοῦ ποιούμενοι τὸ μηδὲ ὀλίγους τῶν σφετέ-  
 ρων ἀποβαλεῖν. ἀφικόμενοι δὲ εἰς τὴν πόλιν ἐν  
 αἰσχύνη πολλῇ ἦσαν δειλίας δόξαν ἐπὶ τῷ ἔργῳ φε-  
 ρόμενοι· καὶ οὐδεμίαν ἔξοδον ἔτι ποιησάμενοι παρέ-  
 δοσαν τοῖς μεθ' ἑαυτοὺς ὑπάτοις τὴν ἀρχήν.  
 25 LXIII. Τῷ δ' ἐξῆς ἐνιαυτῷ Γάιος μὲν Ἀκύλλιος  
 καὶ Τίτος Σίκκιος, ἄνδρες ἔμπειροι πολέμων, τὴν  
 ὑπατείαν παρελήφεσαν. ἡ δὲ βουλή προθέντων λό-  
 γον περὶ τοῦ πολέμου τῶν ὑπάτων πρῶτον ἐψη-  
 φίσατο πρεσβείαν πέμψαι πρὸς Ἑρμικας αἰτήσονσαν  
 30 ὥς παρὰ φίλων τε καὶ ἐνσπόνδων δίκας νομίμους·  
 ἡδίκητο γὰρ ἡ πόλις ὑπ' αὐτῶν κατὰ τὴν Οὐλοῦ-  
 σκων τε καὶ Αἰκανῶν ἐπιστρατεῖαν ληστεῖαις τε καὶ

καταδρομαῖς τῆς ὁμορούσης αὐτοῖς γῆς· ἕως δ' ἂν  
 τὰς παρ' ἐκείνων λάβωσιν ἀποκρίσεις, στρατιὰν ὄσῃν  
 δύνανται πλείστην καταγράφειν τοὺς ὑπάτους καὶ  
 τοὺς συμμάχους πρεσβειῶν ἀποστολαῖς παρακαλεῖν  
 σίτον τε καὶ ὄπλα καὶ χρήματα καὶ τάλλα ὅσων ἔδει 5  
 τῷ πολέμῳ διὰ πολυχειρίας παρασκευάσασθαι καὶ ἐν  
 τάξει. ὥς δὲ ἀπήγγειλαν αὐτοῖς ἀναστρέψαντες οἱ  
 πρεσβεῖς ἄς παρὰ τῶν Ἑρμικῶν ἔλαβον ἀποκρίσεις,  
 ὅτι συνθήκας μὲν οὐ φασιν αὐτοῖς εἶναι πρὸς Ῥω-  
 μαίους κοινῇ γενομένης οὐδέποτε, τὰς δὲ πρὸς βα- 10  
 σιλέα Ταρκύνιον ὁμολογίας αἰτιῶνται λελύσθαι τὴν  
 τε ἀρχὴν ἀφαιρεθέντος ἐκείνου καὶ τεθνηκότος ἐπὶ  
 τῆς ξένης· εἰ δὲ τινες ἀρπαγαὶ καὶ καταδρομαὶ τῆς  
 χώρας ἐγένοντο διὰ λησθηγίων οὐκ ἀπὸ κοινῆς γνώ-  
 15 μης γεγονέναι λέγουσιν, ἀλλ' ἰδιωτῶν ἀδικήματα 15  
 1658 μειόντων τὰ ἴδια, καὶ οὐδὲ τοὺς ταῦτα δράσαντας  
 παρέχειν οἰοί τ' εἶσιν ἐπὶ δίκῃν, ἔτερα καὶ αὐτοὶ  
 τοιαῦτα πεπονθέναι λέγοντες καὶ ἀντεγκαλοῦντες,  
 ἄσμενοι τέ εἰσι δέχεσθαι τὸν πόλεμον· ταῦτα ἢ  
 βουλὴ μαθούσα ἐψηφίσατο νείμασθαι τὴν καταγρα- 20  
 φείσαν ἐκ τῶν νεωτέρων στρατιῶν τριχῆ· τούτων δὲ  
 τὴν μὲν μίαν ἄγοντα Γάιον Ἀκύλλιον τὸν ὑπατον  
 ὁμόσε τῇ Ἑρμικῶν στρατιᾷ χωρεῖν· καὶ γὰρ ἐκεῖνοι  
 ἤδη ἦσαν ἐν τοῖς ὄπλοις· τὴν δὲ ἑτέραν Τίτον Σί-  
 25 κκιον ἐπὶ Οὐλοῦσκους ἄγειν, τὸν ἕτερον τῶν ὑπάτων. 25  
 τὴν δὲ λοιπὴν τρίτην μερίδα παραλαβόντα Σπόριον  
 Λάρκιον, ὃς ἦν ἀποδεδειγμένος ὑπὸ τῶν ὑπάτων ἐπαρ-  
 χος τὴν ἔγγιστα τῆς πόλεως χώραν φυλάττειν· τοὺς  
 δὲ ὑπὲρ τὸν στρατιωτικὸν κατάλογον, ὅσοι δυνάμειν  
 εἶχον ἔτι βαστάζειν ὄπλα, ταχθέντας ὑπὸ σημαῖαις 30  
 τὰς τε ἄκρας φρουρεῖν τῆς πόλεως καὶ τὰ τεῖχη, μὴ  
 τις αἰφνίδιος πολεμίων γένηται ἔφοδος ἐξεστρα-

τευμένης τῆς νεότητος ἀθρόας ἠγρεῖσθαι δὲ τῆς 1659  
δυνάμεως ταύτης Αὐλον Σεμπρόνιον Ἀτρατίνον,  
ἄνδρα τῶν ὑπατικῶν. ἐγένετο δὲ ταῦτα οὐ διὰ  
μακροῦ.

5 LXV. Ἀκύλλιος μὲν οὖν ἄτερος τῶν ὑπάτων ἐν  
τῇ Προαιεστηνῶν χώρα τὸν Ἐρνίκων στρατὸν ὑπο-  
10 μένοντα καταλαβὼν ἀντικατεστρατοπέδευσεν ὡς ἐδύ-  
νατο μάλιστα ἀγχοτάτω, σταδίους ἀπὸ τῆς Ρώμης  
ἀποσχῶν ὀλίγω πλείους διακοσίων· τρίτη δὲ ἀφ' ἧς  
15 κατεστρατοπέδευσεν ἡμέρα, προελθόντων ἐκ τοῦ χά-  
ρακος τῶν Ἐρνίκων εἰς τὸ πεδίον ἐν τάξει καὶ τὰ  
σημεῖα ἀράντων τῆς μάχης, ἀντεξῆγε καὶ αὐτὸς τὴν  
δύναμιν ἐν κόσμῳ τε καὶ κατὰ τέλος. ἐπεὶ δὲ ἀγχοῦ  
ἐγένοντο ἀλλήλων ἔθειον ἀλαλάξαντες ὁμοσε, πρῶτον  
20 μὲν οἱ ψιλοὶ σανυρίων τε βολαῖς καὶ τοξεύμασι καὶ  
λίθοις ἀπὸ σφενδόνης μαχόμενοι, καὶ πολλὰ τραύ-  
ματα ἔδοσαν ἀλλήλοις· ἔπειτα ἱππεῖς ἱππεῦσι συρ-  
ράττουσι κατ' ἴλας ἐλαύνοντες καὶ τὸ πεζὸν τῷ πεζῷ  
κατὰ σπείρας μαχόμενον. ἐνθα δὲ καλὸς ἀγὼν ἦν 1660  
25 ἐκθύμως ἀμφοτέρων ἀγωνιζομένων, καὶ μέχρι πολλοῦ  
διέμενον οὐδέτεροι τοῖς ἑτέροις τοῦ χωρίου ἐν ᾧ ἐτά-  
χθησαν εἰκόντες. ἔπειτα ἡ Ῥωμαίων ἡφξατο κάμνειν  
φάλαγγ', οἷα διὰ πολλοῦ τοῦ μεταξὺ χρόνου τότε  
πρῶτον ἠναγκασμένη ὁμιλεῖν πολέμῳ. τοῦτο συν-  
30 δὼν Ἀκύλλιος ἐκέλευσε τοὺς ἀκμηῆτας ἔτι καὶ εἰς  
αὐτὸ τοῦτο φυλαττομένους ὑπὸ τὰ κάμνοντα τῆς  
φάλαγγος ὑπελθεῖν μέρη, τοὺς δὲ τραυματίας καὶ  
τοὺς ἀπειρηκότες ὀπίσω τῆς φάλαγγος ἀπιέναι. οἱ  
δὲ Ἐρνίκες ὡς ἔμαθον κινουμένους αὐτῶν τοὺς λό-  
35 χους φυγῆς τε ἄρχειν τοὺς Ῥωμαίους ὑπέλαβον, καὶ  
παρακελευσάμενοι ἀλλήλοις ἐμβάλλουσι πυκνοῖς τοῖς  
λόχοις εἰς τὰ κινούμενα τῶν πολεμίων μέρη, καὶ οἱ

ἀκραιφνεῖς τῶν Ῥωμαίων ἐπιόντας αὐτοὺς δέχονται  
καὶ ἦν αὐθις ἐξ ὑπαρχῆς ἀμφοτέρων ἐκθύμως ἀγω-  
νιζομένων μάχη καρτερά· καὶ γὰρ οἱ τῶν Ἐρνίκων  
ἐξεπληροῦντο λόγοι τοῖς ἀκμηῆσιν ὑποπεμπομένοις εἰς  
1661 τὰ κάμνοντα ὑπὸ τῶν ἡγεμόνων. ἐπειδὴ δὲ περὶ δεί- 5  
λην ὀψίαν ἦν ἤδη, παρακαλέσας τοὺς ἱππεῖς ὁ ὑπα-  
τος νυκτὶ δὴ ἄνδρας ἀγαθοὺς γενέσθαι, ἐμβάλλει τοῖς  
πολεμίοις κατὰ τὸ δεξιὸν κέρας αὐτὸς ἡγούμενος τῆς  
Ἰλῆς. οἱ δὲ ὀλίγον τινα δεξάμενοι χρόνον αὐτοὺς  
ἐγκλίνουσι, καὶ γίνεται φόνος ἐνταῦθα πολὺς. τὸ μὲν 10  
οὖν δεξιὸν τῶν Ἐρνίκων κέρας ἐπύκει τε ἤδη καὶ  
ἐξέλειπε τὴν τάξιν, τὸ δ' εὐώνυμον ἔτι ἀντειχε καὶ  
περιῆν τοῦ Ῥωμαίων δεξιῶ· μετ' ὀλίγον μέντοι καὶ  
τοῦτο ἐνέδωκεν. ὁ γὰρ Ἀκύλλιος τοὺς ἀρίστους τῶν  
νεῶν ἐπαρόμενος παρεβόηθει κάκει παραθαροῦντων 15  
τε καὶ ἐξ ὀνόματος ἀνακαλῶν τοὺς εἰωθότας ἐν ταῖς  
πρὶν ἀριστεύειν μάχαις, τὰ τε σημεῖα τῶν λόχων,  
ὅσοι μὴ ἐρρωμένως ἐδόκουν ἀμύνεσθαι, παρὰ τῶν  
σημειοφόρων ἀρπάξων εἰς μέσους ἐρρίπτει τοὺς πο-  
λεμίους, ἵνα τὸ δέος αὐτοὺς τῆς ἐννόμου τιμωρίας, 20  
εἰ μὴ ἀνασώσαιντο τὰς σημαίας, ἄνδρας ἀγαθοὺς  
εἶναι ἀναγκάσῃ· τῷ τε κάμνοντι αὐτὸς παρεβόηθει  
1662 μέρει αἰεὶ, ἕως ἐξέωσε τῆς στάσεως καὶ θάτερον κέ-  
ρας. ψιλωθέντων δὲ τῶν ἄκρων οὐδὲ τὰ μέσα παρ- 25  
έμεινε. φυγὴ δὴ τῶν Ἐρνίκων τὸ μετὰ τοῦτο ἐρί-  
νετο ἐπὶ τὸν χάρακα τεταραγμένη τε καὶ ἀκοσμος, καὶ  
οἱ Ῥωμαῖοι αὐτοῖς κτείνοντες ἠκολούθουν. τοσαύτη  
δ' ἄρα προθυμία παρὰ τὸν τότε ἀγῶνα τῇ Ῥωμαίων  
στρατιᾷ ἐπέπεσεν, ὥστε καὶ τοῦ χάρακος τῶν πολε-  
μίων πειραῶσθαί τινας ἐπιβαίνειν ὡς ἐξ ἐφόδου χει- 30  
ρωσομένους· ὧν οὐκ ἀσφαλῆ τὴν προθυμίαν οὐδ'  
ἐν τῷ συμφέροντι γιγνομένην ὄρῶν ὁ ὑπάτος, ση-

μαίνειν κελύσας τὸ ἀνακλητικὸν κατεβίβασε τοὺς ὁμόσε χωροῦντας ἄκοντας ἀπὸ τῶν ἐρυμάτων, δείσας μὴ ἐξ ὑπερδεξιῶν βαλλόμενοι σὺν αἰσχύνῃ τε καὶ μετὰ μεγάλης βλάβης ἀναγκασθῶσιν ὑποχωρεῖν, 5 ἔπειτα καὶ τὴν ἐκ τῆς προτέρας νίκης εὐκλειαν ἀφανίσωσι. τότε μὲν οὖν ἤδη· καὶ γὰρ ἦν περὶ δύσιν ἡλίου· χαίροντές τε καὶ παιανίζοντες οἱ Ῥωμαῖοι κατ-εστρατοπέδευσαν.

LXVI. Τῇ δ' ἐπιούσῃ νυκτὶ φόφος τε ἠκούετο 1663 πολὺς ἐκ τοῦ χάρακος τῶν Ἑρνίκων καὶ βοῆ, καὶ πολλὰ ἐφαίνετο σέλα λαμπάδων. ἀπογνόντες γὰρ ἔτι ἀνθέξειν ἐτέρα μάχῃ καταλιπεῖν τὸν χάρακα ἔγνωσαν αὐτοκέλευστοι· καὶ τὸ ποιῆσαν αὐτῶν τὴν ἀταξίαν καὶ βοήν τοῦτο ἦν. ὡς γὰρ ἕκαστοι δυνάμεως 15 εἶχον καὶ τάχους ἔφευγον ἐπιβοῶντές τε ἀλλήλους καὶ ἐπιβοῶμενοι, τῶν δὲ ὑπολειπομένων διὰ τραύματα ἢ νόσους οἰμωγὰς καὶ λιτανείας ἐν οὐδενὶ λόγῳ τιθέμενοι. τοῦτο ἀγνοοῦντες οἱ Ῥωμαῖοι, πεπυσμέ- 20 νοι δὲ παρὰ τῶν αἰχμαλώτων πρότερον, ὅτι δύναμις Ἑρνίκων ἐτέρα μέλλοι βοηθὸς ἤξειν τοῖς σφετέροις, καὶ τὴν βοήν τε καὶ ταραχὴν ἐπὶ τῇ ἐκείνων ἀφίξει γεγρονῆναι νομίζοντες, τὰ τε ὅπλα ἀνέλαβον καὶ τὸν χάρακα περιστεφανώσαντες, μὴ τις ἔφοδος αὐτοῖς γένοιτο νύκτωρ, τοτὲ μὲν ὅπλων κτύπον 25 ἐποίησαν ἀθρόοι, τοτὲ δὲ ὡσπερ εἰς μάχην ὁρμώμενοι 1664 θάμινά ἐπηλάλαζον. τοῖς δὲ Ἑρνίξι καὶ ταῦτα δέος μέγα παρεῖχε, καὶ ὡς διωκόμενοι πρὸς τῶν πολεμίων σποράδες ἄλλοι κατ' ἄλλας ὁδοὺς ἔθεον. ἡμέρας δὲ γενομένης, ἐπειδὴ ἀπήγγειλαν αὐτοῖς οἱ πεμφθέντες 30 ἐπὶ τὴν κατασκοπὴν ἱππεῖς, ὡς οὔτε δύναμις ἐτέρα παρῆι σύμμαχος τοῖς πολεμίοις, οἳ τε τῇ προτέρᾳ παραταξάμενοι μάχῃ πεφεύρασιν, ἐξαγαγῶν τὴν δύ-

ναμιν ὁ Ἀκύλλιος τὸν τε χάρακα τῶν πολεμίων αἰρεῖ μεστὸν ὄντα ὑποξυρίων τε καὶ ἀγορᾶς καὶ ὄπλων, καὶ τοὺς τραυματίας αὐτῶν οὐκ ἐλάττους ὄντας τῶν πεφευγόντων λαμβάνει, τὴν τε ἵππον ἐκπέμψας ἐπὶ τοὺς ἐσκευασμένους ἀνὰ τὰς ὁδοὺς τε καὶ τὰς ὕλας 5 πολλῶν γίνεται σωμάτων ἐγκρατής· καὶ τὸ λοιπὸν ἤδη τὴν Ἑρνίκων γῆν ἐπήει λεηλατῶν ἀδεῶς, οὐδενὸς ἔτι ὑπομένουτος εἰς χεῖρας ἵεναι. ταῦτα μὲν Ἀκύλλιος ἔδρασεν.

LXVII. Ὁ δ' ἕτερος τῶν ὑπάτων Τίτος Σίγκκιος, 10 οἱ πεμφθεῖς ἐπὶ Οὐλοούσκους, ὅσον ἦν κράτιστον τῆς δυνάμεως μέρος ἀναλαβὼν εἰς τὴν Οὐελιτρανῶν χώραν εἰσέβαλεν. ἐνταῦθα γὰρ ἦν Τύλλος Ἄττιος ὁ τῶν Οὐλοούσκων ἡγεμῶν τὴν ἀκμαιοτάτην συσκευασάμενος στρατιάν, γνώμην ἔχων τὰ συμμαχικὰ Ῥω- 15 μαίων κακῶσαι πρῶτον, ὡσπερ ὁ Μάρκιος ἔδρασεν ὅτ' ἤρχετο τοῦ πολέμου, δόξας ἐν τῷ αὐτῷ φόβῳ Ῥωμαίους ἔτι διαμένειν καὶ μηδεμίαν τοῖς ὑπὲρ αὐ- τῶν κινδυνεύουσι πέμψειν ἐπικουρίαν. ὡς δὲ ὤφθη- σάν τε καὶ εἶδον ἀλλήλας αἱ δυνάμεις, οὐδὲν ἔτι 20 ἀναβαλόμεναι συνήεσαν εἰς τὸ αὐτό. ἦν δὲ ὁ χῶρος ὁ μεταξὺ τῶν στρατοπέδων, ἐν ᾧ τὴν μάχην ἔδει γενέσθαι, λόφος πετρῶδης πολλαχῇ περικατεαγῶς, ἐνθα οὐδετέροις ἢ ἵππος ἐμελλεν ἔσεσθαι χρησίμη. μα- θόντες δὲ τοῦτο οἱ τῶν Ῥωμαίων ἱππεῖς καὶ ἐν αἰσχύνῃ 25 θέμενοι, εἰ παρόντες τῷ ἀγῶνι μηδὲν προσωφελή- 1666 σονσιν, εἰδέοντο τοῦ ὑπάτου προσελθόντες ἀθρόοι, ἰᾶσαι σφᾶς καταβάντας ἀπὸ τῶν ἵππων μάχεσθαι πειθούς, εἰ τοῦτο αὐτῷ δοκεῖ κράτιστον εἶναι. κά- κεινος πολλὰ ἐπαινέσας αὐτοὺς καταβιβάζει τε ἀπὸ 30 τῶν ἵππων, καὶ σὺν ἑαυτῷ τεταγμένους εἶχεν ἐπι- σκόπους τε καὶ ἐπανορθωτὰς τοῦ κάμνοντος ἐσομέ-

νους· καὶ ἐγένοντο τῆς τότε νίκης λαμπρᾶς σφόδρα  
 γενομένης οὗτοι Ῥωμαίοις αἴτιοι. τὸ μὲν γὰρ πεζὸν  
 ἀμφοτέρων πλήθει τε ἀνθρώπων ὡς μάλιστα ἦν  
 καὶ ὄπλισμοῖς ὁμοίτροπον, τάξεώς τε κόσμῳ καὶ  
 5 μάχης ἐμπειρία κατὰ τε ἐπαγωγὰς καὶ ὑποχωρήσεις  
 πληγὰς τε αὐτῶν καὶ φυλακὰς παραπλήσιον. μετέμαθον  
 γὰρ οἱ Οὐλοῦσκοι πάντα τὰ πολέμια, ἐξ οὗ Μάρκιον  
 ἔσχον ἡγεμόνα, καὶ εἰς τὰ Ῥωμαίων προσεχώρησαν  
 ἔθνη. διέμενον οὖν ἐπὶ πλείστον χρόνον τῆς ἡμέρας  
 10 ἀγχωμαλῶς αἰ φάλαγγες ἀγωνιζόμεναι, καὶ ἡ τοῦ  
 χωρίου φύσις ἀνώμαλος οὕσα ἑκατέρωθεν πολλὰ εἰς  
 τὸ πλεονεκτεῖν κατ' ἀλλήλων παρείχετο. οἱ δὲ ἱππεῖς 1667  
 τῶν Ῥωμαίων διχῆ νείμαντες ἑαυτούς, οἱ μὲν κατὰ  
 τὰ πλάγια τῶν πολεμίων ἀπὸ τοῦ δεξιῦ κέρως ἐμ-  
 15 βάλλουσιν, οἱ δὲ περιελθόντες ἀπὸ τοῦ λόφου τοῖς  
 κατόπιν ἐπιρράττουσιν. ἔπειθ' οἱ μὲν εἰσακουτίζον-  
 τες τὰς λόγχας, οἱ δὲ τοὺς ὁμόσε χωροῦντας τοῖς  
 ἱππικοῖς ξίφεσι μακροτέροις οὔσι κατὰ βραχιόνων  
 παίοντες καὶ παρὰ τὰς ἀγκύλας καταφέρουντες, πολ-  
 20 λῶν μὲν τὰς [ἀμυνομένας, ἢ σκεπούσας τὰ σώματα]  
 χεῖρας αὐτοῖς σκεπασμάσι τε καὶ ἀμυντηρίοις ἀπέ-  
 κοπτον, πολλοὺς δὲ γουάτων τε καὶ ἀστραγάλων  
 πληγαῖς βαθείαις ἀπὸ κρατίστης βάσεως ἐρρίπτουν  
 ἡμιθανεῖς. περιειστήκει τε πάντοθεν τοῖς Οὐλοῦ-  
 25 σκοῖς τὸ δεινόν· ἐκ μὲν γὰρ τῶν κατὰ πρόσωπον οἱ  
 πεζοὶ αὐτοῖς ἐνέκειντο, ἐκ δὲ τῶν πλαγίων τε καὶ τῶν  
 κατόπιν οἱ ἱππεῖς, ὥστε ὑπὲρ δύναμιν ἀγαθοὶ γενό-  
 μενοι καὶ πολλὰ ἔργα τόλμης τε καὶ ἐμπειρίας ἀπο- 1668  
 30 δειζάμενοι, μικροῦ δεῖν πάντες οἱ τὸ δεξιὸν κέρως  
 ἔχοντες κατεκόπησαν. οἱ δ' ἐν μέσῃ τε τῇ φάλαγγι  
 τεταγμένοι καὶ ἐπὶ τοῦ ἐτέρου κέρως, ἔπειθ' ἡ δὲ δε-  
 ξιὸν τε παρερρηγμένον εἶδον καὶ τὸν αὐτὸν τρόπον

ἐπιόντας σφίσι τοὺς τῶν Ῥωμαίων ἱππεῖς, ἐξελίξαν-  
 τες τοὺς λόχους βάδην ἀπεχώρουν ἐπὶ τὸν χάρακα,  
 καὶ οἱ τῶν Ῥωμαίων ἱππεῖς ἐν τάξει ἠκολούθουν.  
 ἐπεὶ δὲ πρὸς τῷ ἐρῦματι ἦσαν, ἕτερα γίνεται μάχη  
 6 τῶν ἱππέων ἐπιβαινόντων τοῖς περισταυρώμασι κατὰ  
 πολλὰ μέρη τοῦ χάρακος ὄξεια καὶ παλίντροπος.  
 πονουμένων δὲ τῶν Ῥωμαίων ὁ ὑπατος κελεύσας  
 τοῖς πεζοῖς ὕλην προσενέγκαντας ἀποχωῶσαι τὰς τά-  
 φρους, πρῶτος ἐχώρει κατὰ τὸ ἐπίβατον ἔχων τοὺς  
 10 ἀρίστους τῶν ἱππέων ἐπὶ τὰς ἐχρωατάς τοῦ χά-  
 ρακος πύλας· ἀναστείλας δὲ τοὺς πρὸ αὐτῶν μαχο-  
 μένους καὶ τοὺς καταρράκτας τῶν πυλῶν διακόψας  
 ἐντὸς ἐργόνει τῶν ἐρῦμάτων, καὶ τοὺς ἐπιόντας τῶν  
 σφετέρων πεζῶν ἐδέχετο. Τύλλος δὲ Ἄττιος ἔχων  
 15 τοὺς ἐρρωμενεστάτους καὶ εὐτολμοτάτους Οὐλοῦ-  
 σκων ὁμόσε αὐτῷ χωρεῖ καὶ πολλὰ ἔργα γενναῖα  
 ἀποδειξάμενος· ἦν γὰρ ἀγωνιστῆς μὲν πολέμων 1669  
 σφόδρα ἄλκιμος, στρατηγῆσαι δὲ οὐχ ἱκανός· ὑπὸ  
 κόπου τε καὶ πλήθους τραυμάτων καταπονηθεὶς ἀπο-  
 20 θνήσκει. τῶν δὲ ἄλλων Οὐλοῦσκων, ἔπειθ' ὁ χάραξ  
 ἠλίσκετο, οἱ μὲν ἀγωνιζόμενοι κατεκόπησαν, οἱ δὲ τὰ  
 ὄπλα θύσαντες πρὸς ἱεσίας τῶν κερρατηκῶν ἐτρά-  
 πουτο, ὀλίγοι δὲ τινες ἐπὶ τὰ οἰκεία φεύγοντες ἀπε-  
 σώθησαν. ἀφικομένων δὲ εἰς τὴν Ῥώμην ἀγγέλων  
 25 οὓς ἀπέστειλαν οἱ ὑπατοὶ μεγίστη χαρὰ τὸν δῆμον  
 κατέσχε, καὶ αὐτίκα τοῖς μὲν θεοῖς χαριστηρίους  
 ἐψηφίσαντο θυσίας, τοῖς δὲ ὑπάτοις τὴν τῶν θριάμ-  
 βων τιμὴν προσέθεσαν· οὐ μέντοι τὴν αὐτὴν γε  
 ἀμφοτέροις· ἀλλὰ Σικκίῳ μὲν, ἔπειθ' ἡ φόβου μείζονος  
 30 ἠλευθερωκίαι ἐδόκει τὴν πόλιν τὸν Οὐλοῦσκων  
 ὑβριστὴν καθελὼν στρατὸν καὶ τὸν ἡγεμόνα αὐτῶν  
 ἀποκτείνας τὴν μείζονα πομπὴν ἐψηφίσαντο· καὶ



εἰσήλασεν ὁ ἀνὴρ ἄγων τὰ λάφυρα καὶ τοὺς αἰχμαλώ-  
τους καὶ τὴν συναγωνισαμένην δύναμιν ἄρματι  
παρεμβεβηκῶς χρυσοχαλίνων ἵππων τὴν βασιλικὴν  
ἡμιτεσμένος ἐσθῆτα, ὡς περὶ τοὺς μείζονας θριάμ-  
βους νόμος. Ἀνυλλίω δὲ τὸν ἐλάττονα θρίαμβον 167  
ἀπέδοσαν, ὃν αὐτοὶ καλοῦσιν οὐαστήν· δεδήλωται δὲ  
μοι διὰ τῶν προτέρων, ἣν ἔχει διαφορὰν οὗτος πρὸς  
τὸν μείζονα· καὶ εἰσηλθὲν ὁ ἀνὴρ περὶ τὰ λοιπὰ  
τῆς πομπῆς ἐπαρόμενος. καὶ τὸ ἔτος τοῦτο ἐτε-  
10 λεύτα.

LXVIII. Οἱ δὲ παρὰ τούτων τὴν ὑπατείαν πα-  
ραλαβόντες Πόπλιος Οὐεργίνιος καὶ Σπόριος Κάσ-  
σιος τὸ τρίτον τότε ἀποδειχθεὶς ὑπάτος, τὰς τε πο-  
λιτικὰς καὶ τὰς συμμαχικὰς ἀναλαμβάνοντες δυνάμεις  
15 ἐξῆγον εἰς τὴν ὑπαιθρον, Οὐεργίνιος μὲν ἐπὶ τὰς  
Αἰκανῶν πόλεις, Κάσσιος δὲ ἐπὶ τὰς Ἑρνίκων τε καὶ  
Οὐολούσκων, κλήρω διαλαχόντες τὰς ἐξόδους. Αἰκα- 167  
νοι μὲν οὖν ὀχυρώσαντες τὰς πόλεις καὶ τὰ πλείστου  
ἄξια ἐκ τῶν ἀγρῶν ἀνασκευασάμενοι, τὴν τε γῆν  
20 περιεώρων δηρομένην καὶ τὰς ἀλλὰς ἐμπιπραμένας·  
ᾧστε κατὰ πολλὴν εὐπέτειαν ὁ Οὐεργίνιος ὄσσην ἐδύ-  
νατο πλείστην αὐτῶν γῆν κείρας τε καὶ λωβησάμε-  
νος, ἐπειδὴ οὐδεὶς ὑπὲρ αὐτῆς ἐξῆει μαχόμενος  
ἀπήγε τὴν στρατιάν. Οὐολούσκοι δὲ καὶ Ἑρνικες ἐφ'  
25 οὓς ὁ Κάσσιος ἐστράτευσε γνώμην μὲν ἐποίησαντο  
δηρομένης τῆς χώρας ὑπερορᾶν καὶ συνέφυγον εἰς  
τὰς πόλεις· οὐ μὴν ἔμεινάν γε ἐν τοῖς ἐγνωσμένοις  
χώρας τε ἀγαθῆς κειρομένης, ἣν οὐ θραδῶς ἀνακτῆ-  
σασθαι ἔτι ἤλπισαν, οἰκτῶ ὑπαχθέντες, καὶ τοῖς  
30 ἐφύμασιν οὐ σφόδρα ἐχυροῖς οὖσιν εἰς ἃ καταπεφεύ-  
γασιν ἀπιστοῦντες, ἀλλὰ πρεσβείας ἀπέστειλαν πρὸς  
τὸν ὑπάτον ὑπὲρ καταλύσεως τοῦ πολέμου δεησό-

167 μνοι· Οὐολούσκοι μὲν πρότεροι· καὶ θᾶπτον οὗτοι  
τῆς εἰρήνης ἔτυχον, ἀργυρίον τε δόντες ὅσον αὐτοῖς  
ὁ ὑπάτος ἔταξε καὶ τᾶλλα ὅσων ἔδει τῇ στρατιᾷ  
πάντα ὑπηρετήσαντες· καὶ οὗτοι μὲν ὑπήκοοι Ῥω- 5  
μαίοις ἔσεσθαι ὠμολόγησαν οὐθενὸς ἔτι μεταποιού-  
μενοι τῶν ἴσων. Ἑρνικες δὲ ὕστεροι, ἐπειδὴ μεμο-  
νωμένους ἑαυτοὺς εἶδον, ὑπὲρ εἰρήνης τε καὶ φιλίας  
διελέγοντο πρὸς τὸν ὑπάτον. ὁ δὲ Κάσσιος πολλὴν  
κατηγορίαν πρὸς τοὺς πρέσβεις κατ' αὐτῶν διαθέ-  
μενος, πρῶτον ἔφη δεῖν αὐτοὺς τὰ τῶν κερρατημέ- 10  
νων τε καὶ ὑπηκόων ποιήσαντας, τότε διαλέγεσθαι  
περὶ φιλίας· τῶν δὲ πρεσβευτῶν ποιήσειν τὰ δυ-  
νατὰ καὶ μέτρια λεγόντων, ἐκέλευσεν αὐτοῖς ἀργυρίον  
τε ὁ κατ' ἄνδρα τοῖς στρατιώταις εἰς ὀψωνιασμόν  
15 ἔθος ἦν ἕξ μηνῶν δίδοσθαι καὶ διὰ μηνὸς τροφὰς  
ἀποφέρειν. ἕως δ' ἂν ταῦτα συμπορίσωσι τάξας  
τινὰ χρόνον ἡμερῶν, ἀνοχὰς αὐτοῖς ἐδίδου τοῦ πο-  
167 λέμου. ὑπηρετησάντων δ' αὐτοῖς ἅπαντα τῶν Ἑρνί-  
κων διὰ τάχους καὶ μετὰ προθυμίας, καὶ τοὺς περὶ  
τῆς φιλίας διαλεξομένους ἀποστειλάντων ἀνδρῶν, ἐπαι- 20  
νίσας αὐτοὺς ὁ Κάσσιος ἀνέπεμψεν ἐπὶ τὴν βουλὴν.  
τοῖς δ' ἐκ τοῦ συναδρίου πολλὰ βουλευσαμένοις ἔδοξε  
δέχεσθαι μὲν τοὺς ἄνδρας εἰς φιλίαν, ἐφ' οἷς δὲ  
γενήσονται δικαίους αἱ πρὸς αὐτοὺς συνθήκαι, Κάσ-  
σιον τὸν ὑπάτον γνώμῃ τε καὶ στησαι· ὅ τι δὲ ἂν 25  
ἐκείνω δόξῃ, τοῦτ' εἶναι σφίσι κύριον.

LXVIII. Ταῦτα τῆς βουλῆς ψηφισαμένης, ἀνα-  
στρέψας εἰς τὴν πόλιν ὁ Κάσσιος θρίαμβον κατά-  
γειν ἡλίον δεύτερον, ὡς τὰ μέγιστα τῶν ἐθνῶν κε-  
167 χαιρωμένος, χάριτι μᾶλλον ἀρπάξων τὸ τίμιον ἢ τῷ  
δικαίῳ λαμβάνων, ὃς οὔτε πόλεις κατὰ κράτος ἐλῶν  
ἐκ τειχομαχίας, οὔτ' ἐν ὑπαιθρῶ μάχῃ στρατιὰν πο-

λεμίων τρεψάμενος, αίχμάλωτα καὶ σκῦλα οἷς κο-  
 σμεῖται θρίαμβος ἐμελλε κατάγειν. τοιγάρτοι δόξαν  
 ἀνθαδείας καὶ τοῦ μηδὲν ἐτι τῶν ὁμοίων τοῖς ἄλλοις  
 φρουεῖν τοῦτο τὸ ἔργον αὐτῷ πρῶτον φθόνον ἤνεγκε.  
 5 διαπραξάμενος δὲ τὸν θρίαμβον αὐτῷ δοθῆναι τὰς  
 πρὸς Ἑρρικας ἐξήνεγκεν ὁμολογίας· αὐταὶ δ' ἦσαν  
 ἀντίγραφοι τῶν πρὸς Λατίνους γενομένων. ἐφ' αἷς  
 πάνυ ἤχθοντο οἱ πρεσβύτατοί τε καὶ τιμωτάτοι καὶ  
 δι' ὑποψίας αὐτὸν ἐλάμβανον, οὐκ ἀξιούντες τῆς  
 10 ἰσῆς τιμῆς τοῖς συγγενέσι Λατίνοις τοὺς ἄλλοις  
 Ἑρρικας τυγχάνειν, οὐδὲ τοῖς πολλὰ εὐνοίας ἔργα  
 ἐπιδειξαμένοις τοὺς μηδ' ὀτιοῦν ἀγαθὸν δεδρακότας  
 τῶν αὐτῶν φιλανθρώπων μετέχειν, τῇ τε ὑπεροψία  
 τοῦ ἀνδρὸς ἀχθόμενοι, ὃς ὑπὸ τῆς βουλῆς τιμηθεὶς  
 15 οὐκ ἀντετίμησεν αὐτὴν τοῖς ἴσοις, οὐδὲ μετὰ κοινῆς  
 γνώμης τῶν συνέδρων ἄλλ' ὡς αὐτῷ ἐδόκει γράψας  
 ἐξήνεγκε τὰς ὁμολογίας. ἦν τε ἄρα τὸ ἐν πολλοῖς  
 εὐτυχεῖν σφαλερὸν ἀνθρώπων χρῆμα καὶ ἀσύμφορον·  
 20 ἀνθρώπων καὶ ἐπιθυμιῶν ἀρχηγὸν ἐκβαινουσῶν τὴν  
 ἀνθρωπίνην φύσιν· ὃ καὶ τῷ ἀνδρὶ ἐκείνῳ συνέβη.  
 τρισὶ γὰρ ὑπατεῖαις καὶ δυσὶ θριαμβοῖς μόνος τῶν  
 τότε ἀνθρώπων ὑπὸ τῆς πόλεως τετιμημένος, σεμνό-  
 25 τερον ἑαυτὸν ἤγε καὶ μοναρχικῆς ἐξουσίας ἐλάμβανε  
 πόθον· ἐνθυμούμενος δὲ ὅτι τοῖς βασιλείας ἢ τυραν-  
 νίδος ἐφιεμένοις ῥάσθη τε καὶ ἀσφαλεστάτη πασῶν  
 ἐστὶν ὁδὸς ἢ τὸ πλήθος εὐεργεσίαις τισὶν ὑπαγομένη  
 καὶ ἐκ τῶν χειρῶν τοῦ διδόντος τὰ κοινὰ σιτεῖσθαι  
 ἐθίζουσα, ταύτην ἐτράπετο· καὶ ἀντίκα οὐθενὶ  
 30 προειπῶν· ἦν γὰρ τις χώρα δημοσία πολλῇ παρη-  
 μελημένη τε καὶ ὑπὸ τῶν εὐπορωτάτων κατεχομένη,  
 ταύτην ἔγνω τῷ δήμῳ διανέμειν. καὶ εἰ μὲν ἄχοι

τοῦδε ἐλθῶν ἠρκέσθη, τάχα ἂν αὐτῷ κατὰ νοῦν τὸ  
 ἔργον ἐχώρησε· νῦν δὲ πλείονων ὀρεγόμενος στάσει  
 οὐ μικρὰν ἤγειρεν, ἐξ ἧς οὐκ εὐτυχὲς τὸ τέλος αὐτῷ  
 συνέβη. Λατίνους τε γὰρ ἠξίου τῇ καταγραφῇ τῆς  
 χώρας συμπεριλαμβάνειν καὶ τοὺς νεωστὶ προσλη- 5  
 φθέντας εἰς τὴν πολιτείαν Ἑρρικας.

LXX. Οἰκεία ἑαυτῷ παρασκευάσαι τὰ ἔθνη ταῦτα  
 διανοηθεὶς τῇ μετὰ τὸν θρίαμβον ἡμέρᾳ συνεκάλεσε  
 τὸ πλήθος εἰς ἐκκλησίαν· καὶ παρελθὼν ἐπὶ τὸ βῆμα,  
 ὡς ἔθος ἐστὶ ποιεῖν τοῖς τεθριαμβευκόσι, πρῶτον 10  
 μὲν ἀποδέδωκε τὸν ὑπὲρ τῶν πραγθέντων αὐτῷ λό-  
 γον, οὐ κεφάλαια ἦν ταῦτα· ὅτι τῆς μὲν πρώτης  
 10 ὑπατείας τυχὼν τὸ Σαβίνων ἔθνος ἀντιποιοῦμενον  
 τῆς ἡγεμονίας μάχη νικήσας ὑπήκοον ἠνάγκασε Ῥω-  
 μαίοις γενέσθαι· ἀποδειχθεὶς δὲ τὸ δεύτερον ὑπατος 15  
 τὴν ἐμφύλιον ἔπαυσε τῆς πόλεως στάσει καὶ κατή-  
 γαγε τὸν δῆμον εἰς τὴν πατρίδα, Λατίνους δὲ συγ-  
 γενεῖς μὲν ὄντας τῆς Ῥωμαίων πόλεως, αἰεὶ δὲ τῆς  
 ἡγεμονίας καὶ τῆς δόξης αὐτῇ φθονοῦντας, εἰς φιλό-  
 20 τητα συνήγαγε τῆς ἰσοπολιτείας μεταδούς, ὥστε μη-  
 κέτι ἀντίπαλον, ἀλλὰ πατρίδα τὴν Ῥώμην νομίζειν.  
 τρίτον δὲ καταστάς ἐπὶ τὴν αὐτὴν ἀρχὴν Οὐολού-  
 σικους τε ἠνάγκασε φίλους ἀντιπολεμίων γενέσθαι  
 καὶ τὸ Ἑρρικῶν ἔθνος μέγα τε καὶ ἄλκιμον καὶ πλη- 25  
 σίον σφῶν κείμενον βλέπτειν τε καὶ ὠφελεῖν τὰ μέ-  
 ριστα ἰκανώτατον ἐκούσιον ὑπηγάγετο. ταῦτά τε δὴ  
 καὶ τὰ ὅμοια τούτοις διεξελθὼν ἠξίου τὸν δῆμον  
 ἑαυτῷ προσέχειν τὸν νοῦν, ὡς παρὰ πάντας τοὺς ἄλ-  
 30 λους πρόνοιαν ἔχοντι τοῦ κοινοῦ καὶ εἰς τὸν λοιπὸν  
 ἔχοντι χρόνον. τελευτῶν δὲ τοῦ λόγου τοσαῦτα ἔφη  
 καὶ τηλικαῦτα ἀγαθὰ ποιήσειν τὸν δῆμον, ὥστε  
 πάντα ὑπερβαλέσθαι τοὺς ἐπαινουμένους ἐπὶ τῷ

φιλεῖν καὶ σώζειν τὸ δημοτικόν· καὶ ταῦτα ἔφη ποιή-  
σειν οὐκ εἰς μακράν. διαλύσας δὲ τὴν ἐκκλησίαν  
καὶ χρόνον οὐδὲ ἀκαριαῖον διαλιπὼν τῇ κατοπί-  
νῃ ἡμέρᾳ συνεκάλει τὴν βουλὴν εἰς τὸ συνέδριον ὁρθῆν  
5 καὶ περίφοβον οὐσαν ἐπὶ τοῖς ῥηθείσιν ὑπ' αὐτοῦ  
λόγοις· καὶ πρὶν ἑτέρου τινοῦ ἀρξασθαι λόγου τὴν  
ἀπόρρητον ἐν τῷ δήμῳ φυλαχθεῖσαν γνώμην εἰς μέ-  
σον ἔφερεν, ἀξιῶν τοὺς βουλευτάς, ἐπειδὴ πολλὰ ὁ  
δῆμος τῇ πόλει χρήσιμος γέγονε τὰ μὲν εἰς τὴν ἔλευ-  
10 θερσίαν τὰ δ' εἰς τὸ ἑτέρων ἀρχειν συλλαβόμενος,  
πρόνοιαν αὐτοῦ ποιήσασθαι, τὴν τε χώραν αὐτῷ νεύ-  
μαντας ὅση πολέμῳ κρατηθεῖσα λόγῳ μὲν ἦν δημο-  
σία, ἔργῳ δὲ τῶν ἀναιδεστάτων τε καὶ σὺν οὐδενὶ  
δικαίῳ κατεσχηκότων πατρικίων, καὶ τῆς ὑπὸ Γέ-  
15 λωνος τοῦ Σικελίας τυράννου πεμφθείσης σφίσι δω-  
ρεᾶς σιτικῆς, ἣν προῖκα δέον ἅπαντας διανεῖμασθαι  
τοὺς πολίτας ἀνητήν ἐλάμβανον οἱ πένητες, ἀποδο-  
θῆναι τὰς τιμὰς τοῖς ἀνησυχούμενοις ἐξ ὧν εἶχε τὸ κοι-  
νὸν χρημάτων.

20 LXXI. Εὐθύς μὲν οὖν ἐτι λέγοντος αὐτοῦ θό-  
ρυβος ἦν πολὺς, ἀχθομένων ἀπάντων καὶ οὐχ ὑπο-  
μενόντων τὸν λόγον. ἐπειδὴ δὲ ἐπαύσατο, ὃ τε  
συνύπατος αὐτοῦ Οὐεργίνιος πολλὴν ἐποιήσατο κατη-  
γορίαν ὡς στάσιν εἰσάγοντος, καὶ τῶν ἄλλων βου-  
25 λευτῶν οἱ πρεσβύτατοί τε καὶ τιμιώτατοι, μάλιστα  
δὲ Ἄππιος Κλαύδιος· καὶ μέχρι πολλῆς ὥρας ἠγριω-  
μένοι τε καὶ τὰ ἔσχατα κατ' ἀλλήλων ὀνειδίη λέγον-  
τες οὗτοι διετέλεσαν. ταῖς δὲ κατοπίν ἡμέραις ὁ μὲν  
Κάσσιος ἐκκλησίας συνεχεῖς ποιούμενος ἐξεδημαργώ-  
30 γει τὸ πλῆθος, καὶ τοὺς ὑπὲρ τῆς κληρουχίας λόγους  
εἰσέφερε, καὶ πολὺς ἦν ἐν ταῖς κατηγορίαις τῶν  
ἀντιπραττόντων. ὁ δ' Οὐεργίνιος τὴν βουλὴν ὅση

μέραι συνάγων μετὰ κοινῆς γνώμης τῶν πατρικίων  
ἀντιπαρεσνευάζετο φυλακᾶς τε καὶ κωλύσεις νομί-  
μους. καὶ ἦν στίφος ἑκατέρῳ τῶν παρακολουθούν-  
10 των τε καὶ φυλακῆν τῷ σώματι παρεχόντων πολὺ·  
τὸ μὲν ἄπορον καὶ ἔνθαρον καὶ πάντα τολμᾶν πρό- 5  
χειρον ὑπὸ τῷ Κάσσῳ τεταγμένον, τὸ δ' εὐγενέστα-  
τόν τε καὶ καθαρώτατον ὑπὸ τῷ Οὐεργίνῳ [τιθέ-  
μενον]. τέως μὲν οὖν τὸ χεῖρον ἐν ταῖς ἐκκλησίαις  
ἐπεκράτει μακροῦ θατέρου προέχον, ἔπειτα ἰσόροπον  
ἐγένετο προσνειμάντων ἑαυτοὺς τῶν δημάρχων τῇ 10  
κρείττονι μοίρᾳ· τάχα μὲν καὶ διὰ τὸ μὴ [ἐκείνοις]  
δοκεῖν ἄμεινον εἶναι τῇ πόλει δεκασμοῖς τε ἀργυ-  
ρίου καὶ διανομαῖς τῶν δημοσίων διαφθειρόμενον  
τὸ πλῆθος ἀργὸν καὶ πονηρὸν εἶναι· τάχα δὲ καὶ 15  
διὰ τὸν φθόνον, ὅτι τῆς φιλανθρωπίας ταύτης οὐκ  
αὐτοὶ ἤρξαν οἱ τοῦ δήμου προεστηκότες ἀλλ' ἕτερος·  
οὐθὲν δὲ κωλύει καὶ διὰ τοῦτο τὸ δέος, ὃ πρὸς τὴν  
αὔξησιν τοῦ ἀνδρὸς ἐλάμβανον μείζονα γενομένην  
ἢ τῇ πόλει συνέφερεν. ἀντέλεγον οὖν ἤδη κατὰ  
κράτος ἐν ταῖς ἐκκλησίαις οὗτοι πρὸς τοὺς εἰσφερο- 20  
μένους ὑπὸ τοῦ Κάσσιου νόμους, διδάσκοντες τὸν  
δῆμον, ὡς οὐκ εἴη δίκαιον ἢ διὰ πολλῶν ἐκτήσατο  
1881 πολέμων, ταῦτα μὴ Ῥωμαίους νείμασθαι μόνους,  
ἀλλὰ καὶ Λατίνους αὐτοῖς ἰσομοιρεῖν τοὺς μὴ παρα-  
γενομένους τοῖς πολέμοις, καὶ τοὺς νεωστὶ προσελ- 25  
θόντας πρὸς τὴν φιλίαν Ἑρυνίκας, οἷς ἀγαπητὸν ἦν  
πολέμῳ προσαχθεῖσι τὸ μὴ τὴν ἑαυτῶν ἀφαιρεθῆναι  
χώραν. ὁ δὲ δῆμος ἀκούων τοτὲ μὲν τοῖς τῶν δημ-  
άρχων προσετίθετο λόγοις ἐνθυμούμενος, ὅτι μικρὸν  
τι καὶ οὐκ ἄξιον ἔσται λόγου τὸ ἐκ τῆς δημοσίας γῆς 30  
ἰσόμενον ἐκάστῳ λάχος, εἰ μετὰ Ἑρυνίκων τε καὶ Λα-  
τίνων αὐτὴν νεμήσονται· τοτὲ δὲ ὑπὸ τοῦ Κάσσιου

μετεπίθετο δημαγωγούντος, ὡς προδιδόντων αὐτοὺς τοῖς πατρικίοις τῶν δημάρχων καὶ πρόφασιν ποιουμένων τῆς καλύσεως εὐπρεπῆ τὴν Ἑρμίων τε καὶ Λατίνων ἰσομοίριαν, ἣν αὐτὸς ἔφη νόμῳ περιλαβεῖν 16  
 5 ἰσχύος τῶν πενήτων ἔνεκα καὶ εἰ τις ἀφαιρεῖσθαι ποτε αὐτοὺς ἀξιώσῃ τὰ δοθέντα καλύσεως, κρεῖττον ἡγούμενος εἶναι καὶ ἀσφαλέστερον τοῖς πολλοῖς μικρὰ λαβοῦσιν ὁμοίως ἔχειν, ἢ πολλὰ ἐλπίσασιν ἀπάντων ἀποτυχεῖν.

10 LXXII. Τούτοις δὴ τοῖς λόγοις τοῦ Κασσίου θαμινα μεταπελθόντος ἐν ταῖς ἐκκλησίαις τὸν ὄχλον, παρελθῶν εἰς τῶν δημάρχων, Γάτος Ῥαβολήμος ἀνήρ οὐκ ἄφρων, τὴν τε διχοστασίαν τῶν ὑπάτων ὑπέσχετο παύσειν οὐκ εἰς μακρὰν, καὶ τῷ δήμῳ ποιήσειν φα-  
 15 νερόν ὃ τι χρὴ ποιεῖν. ἐπισημασίας δὲ γενομένης αὐτῷ μεγάλης καὶ μετὰ τοῦτο σιωπῆς. Οὐχὶ ταῦτα, εἶπεν, ὦ Κάσσιε, καὶ σὺ Οὐεργίνιε, τὰ κεφάλαιά ἐστι 168  
 τοῦ νόμου; ἐν μὲν εἰ χρὴ τὴν δημοσίαν γῆν κατ' ἄνδρα διανεμηθῆναι; ἕτερον δὲ εἰ χρὴ καὶ Λατίνους  
 20 καὶ Ἑρμίωνας μέρος αὐτῆς λαβεῖν. ὁμολογησάντων δὲ αὐτῶν. Εἶεν δὴ· σὺ μὲν, εἶπεν, ὦ Κάσσιε, ἀμφοτέρα ταῦτα ἐπιψηφίζεις ἀξιοῖς τὸν δῆμον· σὺ δὲ δὴ πρὸς θεῶν, ὦ Οὐεργίνιε, λέξον ἡμῖν, πότερα θά-  
 25 τερον ἀκυροῖς τῆς Κασσίου γνώμης μέρος τὸ κατὰ τοὺς συμμαχοὺς οὐκ οἰόμενος δεῖν ἰσομοίρους ἡμῖν Ἑρμίωνας τε καὶ Λατίνους ποιεῖν, ἢ καὶ θάτερον ἀκυροῖς ἀξίων οὐδὲ ἡμῖν αὐτοῖς διανεμῆναι τὰ κοινά; ταυτὶ γὰρ ἀπόκριναί μοι μηθὲν ἀποκρυψάμενος. εἰ-  
 30 πόντος δὲ τοῦ Οὐεργινίου. Τῇ Λατίνων τε καὶ Ἑρμίωνων ἀντιλέγειν ἰσομοίριαν, τὸ δὲ κατὰ τοὺς πολίτας εἰ πᾶσι δόξειε διανεμῆσθαι συγχωρεῖν, ἐπιστρέψας ὁ δῆμαρχος εἰς τὸν ὄχλον εἶπεν· Ἐπεὶ τοίνυν τὸ μὲν

ἕτερον τῆς γνώμης μέρος ἀμφοτέροις τοῖς ὑπάτοις συνδοκεῖ, τὸ δ' ἕτερον ἀντιλέγεται πρὸς θάτερον, ἰσότημοι δὲ ἀμφοτέροι, καὶ οὐχ οἷόν τε βιάσασθαι θάτερον τὸν ἕτερον, ὃ μὲν δίδεται παρ' ἀμφοτέρων ἤδη λάβωμεν, ὑπὲρ οὗ δὲ ἀμφισβητοῦσιν ἀναβαλώ- 5  
 μεθα. ἐπισημηνάντος δὲ τοῦ πλήθους ὡς τὰ κρά-  
 τιστα ὑποθεμένῳ καὶ καταλύειν ἐκ τοῦ νόμου τὸ  
 10 ποιῶν διχοστασίαν μέρος ἀξιοῦντος, ἀπορῶν ὃ τι χρὴ πράττειν ὁ Κάσσιος, καὶ οὔτε ἀναθέσθαι τὴν  
 10 γνώμην προαιρούμενος οὔτε μένειν ἐπ' αὐτῆς ἀντι-  
 πραττόντων τῶν δημάρχων δυνάμενος, τότε μὲν διέ-  
 λυσε τὴν ἐκκλησίαν, ταῖς δὲ ἑξῆς ἡμέραις ἀρρωστίαν  
 σκηπτόμενος οὐκέτι κατέβαινε εἰς τὴν ἀγορὰν, ἀλλ'  
 ὑπομένων ἐνδον ἐπραγματεύετο βία καὶ χειροκρασία  
 15 κυρῶσαι τὸν νόμον· καὶ μετεπέμπετο Λατίνων τε 15  
 καὶ Ἑρμίωνων ὅσους ἐδύνατο πλείστους ἐπὶ τὴν ψηφο-  
 φορίαν. οἱ δὲ συνήεσαν ἀθρόοι, καὶ δι' ὀλίγου μεστή-  
 ξένων ἦν ἡ πόλις. ταῦτα μαθὼν ὁ Οὐεργίνιος κη-  
 20 ρύττειν ἐκέλευσε κατὰ τοὺς στενωποὺς ἀπιέναι τοὺς  
 μὴ κατοικοῦντας ἐν τῇ πόλει, χρόνον ὀρίσας οὐ πό-  
 λυν. ὁ δὲ Κάσσιος τάναντία ἐκέλευσε κηρύττειν πα-  
 ραμένειν τοὺς μετέχοντας τῆς ἰσοπολιτείας, ἕως ἂν  
 ἐπικυρωθῇ ὁ νόμος.

LXXIII. Ὡς δ' οὐδὲν ἐγένετο πέρας, δεισαντες οἱ πατρικιοὶ, μὴ ψήφων τε ἀρπαγαὶ καὶ χειρῶν ἐπι- 25  
 βολαὶ γένωνται καὶ ἄλλα ὅσα φιλεῖ βίαια συμβάλειν  
 1025 ἐν ταῖς στασιαζούσαις ἐκκλησίαις εἰσφερομένου τοῦ  
 νόμου, συνήλθον εἰς τὸ συνέδριον ὡς ὑπὲρ ἀπάντων  
 ἀπαξ βουλευσόμενοι. Ἄππιος μὲν οὖν πρῶτος ἐρωτη-  
 30 θεις γνώμην οὐκ εἶα συγχωρεῖν τῷ δήμῳ τὴν δια-  
 νομὴν διδάσκων, ὡς χαλεπὸς ἐστὶ καὶ ἀλυσιτελής  
 σύννομος ὄχλος ἀργὸς ἐθισθεὶς τὰ δημόσια λιχνεύειν,

καὶ οὐδὲν ἑάσει ποτὲ τῶν κοινῶν οὔτε κτημάτων οὔτε  
 χρημάτων ἔτι κοινὸν μένειν· αἰσχύνῃς τε ἄξιον πρᾶγμα  
 εἶναι λέγων, εἰ Κασσίου κατηγοροῦντες ὡς πονηρὰ καὶ  
 ἀσύμφορα πολιτευομένου καὶ τὸν δῆμον διαφθείρου-  
 5 τος, ἔπειτ' αὐτοὶ κοινῇ γνώμῃ ταῦτ' ἐπικυρώσουσιν  
 ὡς δίκαια καὶ συμφέροντα· ἐνθυμεισθαί τε αὐτοὺς  
 ἀξίων, ὡς οὐδ' ἡ χάρις ἢ παρὰ τῶν πενήτων εἰ τὰ  
 κοινὰ διανείμαιτο τοῖς σύγχωρήσασιν καὶ ἐπιψηφισα-  
 μένοις ὑπάρχει, ἀλλ' ἐνὶ τῷ προθέντι τὴν γνώμην  
 10 Κασσίου καὶ δόξαντι ἠναγκαλέσαι τὴν βουλὴν ἄκου-  
 σαν ἐπικυρῶσαι. προσιπῶν δὲ ταῦτα καὶ παραπλήσια  
 τούτοις ἕτερα τελευτῶν τάδε συνεβούλευσεν· ἄνδρας  
 ἐκ τῶν ἐντιμοτάτων βουλευτῶν ἐλέσθαι, οἵτινες ἐπελ- 1680  
 θόντες τὴν δημοσίαν γῆν ἀφοριοῦσι, καὶ εἰ τινα ἐξ  
 15 αὐτῆς κλέπτοντες ἢ βιαζόμενοι τινες ἰδιῶται κατα-  
 νέμουσιν ἢ ἐπεργάζονται διαγνόντες ἀποδώσουσι τῷ  
 δημοσίῳ· τὴν δὲ ὀρισθεῖσαν ὑπ' ἐκείνων γῆν διαι-  
 ρεθεῖσαν εἰς κλήρους ὅσους δὴ τινὰς καὶ στήλαις  
 εὐκόσμοις διαγραφεῖσαν τὴν μὲν ἀπεμποληθῆναι παρ-  
 20 ἡνεὶ καὶ μάλιστα περὶ ἧς ἀμφίλογόν τι πρὸς ἰδιώ-  
 τας ἦν, ὥστε τοῖς ὠνησαμένοις εἶναι πρὸς τοὺς ἀντι-  
 ποιησομένους ὑπὲρ αὐτῶν κρίσεις, τὴν δὲ πενταετῇ  
 μισθοῦν χρόνον· τὸ δὲ προσιὸν ἐκ τῶν μισθώσεων  
 ἀργύριον εἰς τοὺς ὀψωνιασμοὺς τῶν στρατευομένων  
 25 ἀναλοῦσθαι καὶ εἰς τὰς μισθώσεις ὧν οἱ πόλεμοι  
 χορηγιῶν δέονται· Νῦν μὲν γὰρ, ἔφη, ὁ φθόνος τῶν  
 πενήτων ὁ πρὸς τοὺς πλουσίους, ὅσοι σφετερισάμενοι  
 τὰ κοινὰ διακατέχουσι, δίκαιός ἐστι· καὶ οὐδὲν θαν-  
 μαστόν, εἰ τὰ κοινὰ πάντας διανείμασθαι μᾶλλον 1687  
 30 ἀξιοῦσιν, ἢ τοὺς ἀναιδεστάτους τε καὶ ὀλίγους κατέ-  
 χειν. ἐὰν δὲ ἀφισταμένους αὐτῆς ὀρώσι τοὺς νῦν  
 καροπυμένους καὶ τὰ κοινὰ ὄντως κοινὰ γινόμενα,

παύσονται φθονοῦντες ἡμῖν, τὴν τε ἐπιθυμίαν τῆς  
 κατ' ἄνδρα διανομῆς τῶν ἀργῶν ἐπανήσουσι μαθόν-  
 τες, ὅτι λυσιτελεστέρα τῆς μικρᾶς ἐκάστῳ μερίδος,  
 ἢ κοινῇ μετὰ πάντων ἔσται κτήσις. διδάσκομεν γὰρ  
 αὐτούς, ἔλεγεν, ὅσον τὸ διάφορον, καὶ ὡς εἰς μὲν 5  
 ἕκαστος τῶν πενήτων γῆδιον οὐ μέγα λαβὼν καὶ εἰ  
 τύχοι γείτονας ὀχληροὺς ἔχων οὔτε [γὰρ] αὐτὸς ἱκα-  
 νὸς ἔσται τοῦτο γεωργεῖν δι' ἀπορίαν, οὔτε τὸν  
 μισθωσόμενον ὅτι μὴ τὸν γείτονα εὐρήσει· εἰ δὲ με-  
 γάλιοι κλήροι ποικίλας τε καὶ ἀξιολόγους ἔχοντες 10  
 γεωργοὺς ἐργασίας ὑπὸ τοῦ κοινοῦ μισθοῦντο, πολ-  
 λὰς οἴσουσι προσόδους· καὶ ὅτι κρεῖττον αὐτοῖς ἔστιν,  
 ὅταν ἐξίωσιν ἐπὶ τοὺς πολέμους ἐκ τοῦ δημοσίου τα-  
 μείου τὸν ἐπισιτισμὸν τε καὶ ὀψωνιασμὸν λαμβάνειν,  
 1088 ἢ ἐκ τῶν ἰδίων οἰκῶν εἰς τὸ ταμεῖον ἐκάστου τε- 15  
 θλιμμένων ἔστιν ὅτε τῶν βίων καὶ ἔτι μᾶλλον ἐν  
 τῷ συμπορίζειν τὸ ἀργύριον ἐπιβαρησομένων.

LXXIII. Ταύτην εἰσηγησαμένου τὴν γνώμην  
 Ἀππίου καὶ σφόδρα δόξαντος εὐδοκίμειν, δεύτερος  
 ἐρωτηθεὶς Ἀύλος Σεμπρόνιος Ἀτρατίνος ἔλεξεν· 20  
 Ἄππιον μὲν οὐ νῦν ἔχω πρῶτον ἐπαινεῖν, ὡς φρο-  
 νῆσαι τε ἱκανώτατον πρὸ πολλοῦ τὰ μέλλοντα καὶ  
 γνώμας τὰς καλλίστας τε καὶ ὠφελιμωτάτας ἀποδει-  
 κνύμενον βέβαιόν τε καὶ ἀμετακίνητον ἐν τοῖς κρι-  
 25 θαῖσι καὶ οὔτε φόβῳ εἰκόντα οὔτε χάρισιν ὑποκατα-  
 κλινόμενον. ἀεὶ γὰρ ἐπαινῶν αὐτὸν καὶ θαυμάζων  
 διατελῶ τοῦ τε φρονίμου καὶ τῆς γενναιότητος ἦν  
 παρὰ τὰ δεινὰ ἔχει. γνώμην τε οὐχ ἑτέραν ἀλλὰ καὶ  
 αὐτὸς ταύτην ἀποδείκνυμαι, μικρὰ ἔτι προσθεῖς  
 1689 αὐτῇ, ἃ μοι παραλιπεῖν Ἄππιος ἐδόκει. Ἐρρικας μὲν 30  
 γὰρ καὶ Λατίνους, οἷς νεωστὶ δεδώκαμεν τὴν ἴσοπο-  
 λιτείαν, οὐδ' αὐτὸς οἶμαι δεῖν κληρουχεῖν τὰ ἡμέτερα.

οὐ γὰρ ἐξ οὗ προσῆλθον εἰς τὴν φιλίαν ἡμῖν ταύτην  
 τὴν γῆν κτησάμενοι ἔχομεν, ἀλλὰ παλαιότερον ἐτι  
 τοῖς ἑαυτῶν κινδύνοις οὐθένος ἄλλου προσωφελή-  
 σαντος ἀφελόμενοι τοὺς ἐχθρούς. ἀποκρινόμεθα τε  
 5 αὐτοῖς, ὅτι τὰς μὲν πρότερον ὑπαρχούσας ἡμῖν κτή-  
 σεις, ὅσας ἕκαστοι εἴχομεν ὅτε τὴν φιλίαν συνειθέ-  
 μεθα, ἰδίας τε καὶ ἀναφαιρέτους ἕκαστοις δεῖ μένειν,  
 ὅσων δ' ἂν ἀφ' οὗ τὰς συνθήκας ἐποιήσαμεθα κοινῇ  
 στρατεύσαντες ἐκ πολέμου κύριοι γενώμεθα, τούτων  
 10 ὑπάρξει τὸ ἐπιβάλλον ἕκαστοις λάχος. ταῦτα γὰρ  
 οὔτε τοῖς συμμάχοις ὡς ἀδικουμένοις ὀργῆς παρεξει  
 δικαίας προφάσεις, οὔτε τῷ δήμῳ δέος, μὴ δόξη τὰ  
 κερδαλεώτερα πρὸ τῶν εὐπροεπεστέρων αἰρεῖσθαι.  
 τῇ τε αἰρέσει τῶν ἀνδρῶν, οὓς Ἀππίος ἤξειον ὀριστὰς  
 15 γενέσθαι τῆς δημοσίας γῆς, πάνυ εὐδοκῶ. πολλὴν  
 γὰρ ἡμῖν τοῦτο οἶσει παρησίαν πρὸς τοὺς δημοτι-  
 κούς, ἐπεὶ νῦν γε ἄχθονται κατ' ἀμφοτέρω, καὶ ὅτι 1690  
 αὐτοὶ τῶν δημοσίων οὐθέν ἀπολαύουσι κτημάτων,  
 καὶ ὅτι ἐξ ἡμῶν τινες οὐ δικαίως αὐτὰ καρποῦνται.  
 20 εἰάν δὲ δημοσιωθέντα ἴδωσι καὶ τὰς ἀπ' αὐτῶν προσ-  
 ὄδους εἰς τὰ κοινὰ καὶ ἀναγκαῖα δαπανωμένας,  
 οὐδὲν ὑπολήψονται σφίσι διαφέρειν τῆς γῆς ἢ τῶν  
 ἐξ αὐτῆς καρπῶν μετέχειν. ἐγὼ γὰρ λέγειν, ὅτι τῶν  
 ἀπόρων ἐνίοις μᾶλλον εὐφραίνουσιν αἱ ἀλλότρια  
 25 βλάβαι τῶν ἰδίων ἀφελειῶν. οὐ μὴν ἀποχρῆν γε  
 οἶμαι τούτων ἕκατερον ἐν τῷ ψηφίσματι γραφέν,  
 ἀλλὰ καὶ δι' ἄλλης τινὸς οἶμαι δεῖν θεραπείας με-  
 τρίας τὸν δῆμον οἰκειώσασθαι τε καὶ ἀναλαβεῖν  
 ἢν μετὰ μικρὸν ἐρωῶ, τὴν αἰτίαν πρῶτον ὑμῖν ἀπο-  
 30 δειξάμενος, μᾶλλον δὲ τὴν ἀνάγκην, δι' ἣν καὶ τοῦτο  
 πρακτέον ἡμῖν.

LXXV. Ἴστε δήπου τοὺς ἐν τῇ ἐκκλησίᾳ ὄη-

θέντας ὑπὸ τοῦ δημάρχου λόγους, ὅτε ἤρετο τῶν  
 ὑπάτων τὸν ἕτερον τοῦτον Οὐεργίνιον, ἦντινα γνώ-  
 1001 μὴν ἔχει περὶ τῆς κληρουχίας, πότερα τοῖς μὲν πο-  
 λίταις συγχωρεῖ διανέμειν τὰ δημόσια, τοῖς δὲ συμ-  
 μάχοις οὐκ ἔα, ἢ τῶν κοινῶν τῶν ἡμετέρων οὐδ' 5  
 ἡμῖν συγχωρεῖ μέρος λαγχάνειν. καὶ οὗτος ὠμολό-  
 γησε τὸ καθ' ἡμᾶς μέρος οὐ καλύειν τῆς κληρουχίας,  
 εἰάν πᾶσι ταῦτα κράτιστα εἶναι δοκῇ· καὶ ἡ συγχώ-  
 ρησις ἦδε τοὺς τε δημάρχους ἐποίησεν ἡμῖν συνα-  
 γωνιστὰς καὶ τὸν δῆμον ἐπιεικέστερον. τί οὖν μα- 10  
 θόντες ἂ τότε συνεχωρήσαμεν νῦν ἀναθησόμεθα;  
 ἢ τί πλέον ἡμῖν ἔσται τὰ γενναῖα καὶ τὰ καλὰ πολι-  
 τεύματα καὶ ἄξια τῆς ἡγεμονίας πολιτευομένοις, εἰάν  
 μὴ πείθωμεν τοὺς χρησιμοποιέτους; οὐ πείσομεν δέ,  
 καὶ τοῦτο οὐδεὶς ὑμῶν ἀγνοεῖ. χαλεπώτεροι γὰρ ἂν 15  
 1002 τῶν μὴ τυγχανόντων ἀπαντήσειαν οἱ ψευθεύτες  
 τῆς ἐλπίδος καὶ τὰ ὁμολογηθέντα μὴ κομιζόμενοι.  
 οἰκῆσεται δὴ πάλιν φέρων αὐτοὺς ὁ τὰ πρὸς ἡδονὴν  
 πολιτευόμενος, καὶ οὐδὲ τῶν δημάρχων τις ἔτι μεθ'  
 ἡμῶν στήσεται. τί οὖν ὑμῖν πράττειν παραινῶ καὶ 20  
 τί προστίθημι τῇ Ἀππίου γνώμῃ μάθετε, ἀλλὰ μὴ  
 προεξαναστήτε μὴδὲ θορυβήσητε πρὸν ἅπαντα ἀκού-  
 σῆτε ἂ λέγω. τοῖς αἰρεθησομένοις ἐπὶ τὴν ἐξέτασιν  
 τῆς χώρας καὶ περιορισμὸν εἴτε δέκα ἀνδράσιν εἴθ'  
 ὅσοισδ' ἤποτε ἐπιτρέψατε διαγνῶναι, τίνα τε αὐτῆς 25  
 δεῖ καὶ ὀπόσῃν κοινὴν εἶναι πάντων καὶ κατὰ πεν-  
 ταετίαν μισθουμένην αὔξειν τὰς τοῦ ταμιείου προσ-  
 ὄδους· ὀπόσῃν τ' αὖ καὶ ἦντινα τοῖς δημόταις ἡμῶν  
 διαρεθῆναι ἦν δ' ἂν ἐκεῖνοι κληροῦχον ἀποδείξωσι  
 γῆν, ὑμᾶς διαγνόντας εἴτε ἅπασιν εἴτε οἷς δὴ οὐκέτ' 30  
 1003 ἔστι κληρος εἴτε τοῖς ἐλάχιστον ἔχουσι τίμημα εἴθ'  
 ὅπως ἂν βούλησθε καταναεῖμαι· τοὺς δὲ ὀριστὰς

αὐτῆς ἀνδρας καὶ τὸ ὑμέτερον ψήφισμα ὃ περὶ τῆς κληρουχίας ἐξοίσετε καὶ τὰλλα ὅσα δεῖ γενέσθαι, ἐπειδὴ βραχὺς ὁ λειπόμενός ἐστι τῆς ἀρχῆς τοῖς ὑπᾶ- τοις χρόνος, τοὺς εἰσιόντας ὑπάτους ὡς ἂν αὐτοῖς 5 κρᾶτιστα δοκῆ ἔξειν ἐπιτελέσαι. οὔτε γὰρ ὀλίγων τηλικαῦτα πράγματα δεῖται χρόνων, οὔτε ἡ νῦν στασιάζουσα ἀρχὴ φρονιμώτερον ἂν καταμάθοι τὰ συμφέροντα τῆς μετ' αὐτὴν ἀποδειχθησομένης, ἐὰν ἐκεῖνη γε ὥσπερ ἐλπίζομεν ὁμοιοῇ. χρήσιμον δὲ 10 πρᾶγμα ἐν πολλοῖς καὶ ἥμισυ σφαλερόν ἀναβολή, καὶ πολλὰ ὁ χρόνος ἐν ἡμέρᾳ μᾶλλον μετατίθησι· καὶ τὸ μὴ στασιάζον ἐν τοῖς προεστηκόσι τῶν κοινῶν ἀπάντων ἀγαθῶν ἐν ταῖς πόλεσιν αἴτιον. ἐγὼ μὲν δὴ ταύτην ἀποφαίνομαι γνώμην· εἰ δέ τις ἄλλο 15 κρεῖττον εἰσηγεῖται λεγέτω.

LXXVI. Πανσαμένον δὲ αὐτοῦ πολὺς ἔπαινος 1694

ἐκ τῶν παρόντων ἐγένετο, καὶ οὐθεις τῶν μετ' ἐκεῖνον ἐρωτηθέντων ἐτέραν γνώμην ἀποφαίνεται· γράφεται δὴ μετὰ ταῦτα τὸ τῆς βουλῆς δόγμα τοιούδε· ἀνδρας 20 ἐκ τῶν ὑπατικῶν ἀποδειχθῆναι δέκα τοὺς πρεσβυτάτους, οἵτινες ὀρίσαντες τὴν δημοσίαν χώραν ἀποδείξουσιν, ὅσῃν τε δεῖ μισθοῦσθαι καὶ ὅσῃν τῷ δήμῳ διαίρεθῆναι· τοῖς δὲ ἰσοπολίταις τε καὶ συμμάχοις, ἐὰν τινα ὕστερον ἐπικτήσωνται κοινῇ στρατευσάμενοι, 25 τὸ ἐπιβάλλον ἐκάστοις κατὰ τὰς ὁμολογίας ὑπάρχειν μέρος· τὴν δὲ αἴρεσιν τῶν ἀνδρῶν καὶ τὴν διανομὴν τῶν κληρῶν καὶ τὰλλα ὅσα δεῖ γενέσθαι τοὺς εἰσιόντας ἐπιτελέσαι ὑπάτους. τοῦτο τὸ δόγμα εἰς τὸν δῆμον εἰσενεχθὲν τὸν τε Κάσιον ἔπαυσε τῆς 30 δημαγωγίας, καὶ τὴν ἀναρροπιζομένην ἐκ τῶν πενήτων στάσιν οὐκ εἶασε περαιτέρω προελθεῖν.

LXXVII. Τῷ δ' ἐξῆς ἐνιαυτῷ τῆς ἐβδομηκοστῆς

καὶ τετάρτης ὀλυμπιάδος ἐνεστάσης, ἣν ἐνῆκα στά- διον Ἄστυλος Συρακούσιος, Ἀθήνησι δὲ ἄρχων ἦν 1095 Λεώστρατος, Κοῦντου Φαβίου καὶ Σεροῦλου Κορη- λίου τὴν ὑπατείαν παρεληφότεων, ἀνδρες ἐκ τῶν πατρικίων νέοι μὲν ἔτι τὴν ἡλικίαν, ἐπιφανέστατοι 5 δὲ τῶν ἄλλων κατὰ γε ἀξιώσεις προγόνων, καὶ διὰ τὰς ἐταιρίας τε καὶ πλοῦτους μέγα δυνάμενοι, καὶ ὡς νέοι τὰ πολιτικὰ πράττειν οὐδενὸς τῶν ἐν ἀκμῇ χείρους, Καῖσιον Φάβιος, ἀδελφὸς τοῦ τότε ὑπατεύον- 10 τος, καὶ Λεύκιος Οὐαλέριος Ποπλικόλας, ἀδελφὸς τοῦ καταλύσαντος τοὺς βασιλεῖς, τὴν ταμειυτικὴν ἔχοντες ἐξουσίαν κατὰ τὸν αὐτὸν χρόνον, καὶ διὰ τοῦτο ἐκ- κλησίαν συνάγειν ὄντες κύριοι, τὸν ὑπατεύσαντα τῷ 15 πρόσθ' ἐνιαυτῷ Σπόριον Κάσιον καὶ τολμήσαντα τοὺς περὶ τῆς διανομῆς εἰσηγήσασθαι νόμους εἰσῆγ- 15 γειλαν εἰς τὸν δῆμον ἐπὶ τυραννίδος αἰτία· καὶ προειπόντες ἡμέραν ῥητὴν ἐκάλουν αὐτὸν ὡς ἐπὶ τοῦ 1096 δῆμου τὴν δίκην ἀπολογησόμενον. ὄχλου δὲ πλείστου συναχθέντος εἰς τὴν ἀποδειχθεῖσαν ἡμέραν, συγκα- 20 λέσαντες εἰς ἐκκλησίαν τὸ πλῆθος τὰ τε ἐμφανῆ τοῦ ἀνδρὸς ἔργα ὡς ἐπ' οὐδενὶ χρηστῷ γενόμενα διεξ- ἤεσαν· ὅτι Λατίνοις μὲν πρώτον, οἷς ἀπέχρη πολι- 25 τείας κοινῆς ἀξιοθῆναι μέγα εὐτύχημα ἠροῦμένοι εἰ καὶ ταύτης τύχοιεν, οὐ μόνον ἦν ἦτον πολιτείαν ὑπάτος ὢν ἐχαρίσατο, ἀλλ' ἔτι καὶ τῶν ἐκ τοῦ πο- 25 λέμου λαφύρων ἐὰν κοινῇ γένηται στρατεία τὴν τρί- 30 τὴν ἐψηφίσατο δίδοσθαι· ἔπειτα Ἑρνίκας, οὗς πο- λέμῳ χειρωθέντας ἀγαπᾶν ἐχρῆν εἰ μὴ καὶ τῆς αὐτῶν χώρας ἀφαιρέσει τιμὴ ζημιωθεῖεν, φίλους μὲν ἀντὶ ὑπηκόων ἐποίησε, πολίτας δὲ ἀντὶ ὑποτελῶν, 30 γῆς τε καὶ λείας, ἣν ἂν ἐκ παντὸς κτήσωνται, τὴν τρίταν ἔταξε λαμβάνειν τρίτην μερίδα. ὥστε μερι-

ζομένων εἰς τρεῖς κλήρους τῶν λαφύρων τοὺς μὲν ὑπηκόους τε καὶ ἐπήλυδας διμοιρίας λαμβάνειν, τοὺς δ' αὐθιγενεῖς καὶ ἡγεμόνας τρίτην μερίδα. ἐκ δὲ 1697  
 τούτου δυεῖν τῶν ἀποπωτάτων θάτερον ἐπεδείκνυ-  
 5 σαν αὐτοῖς συμβησόμενον, ἐάν τις τις ἐτέρους διὰ  
 πολλὰς καὶ μεγάλας εὐεργεσίας προέλωνται ταῖς αὐ-  
 ταῖς τιμῆσαι δωρεαῖς, αἷς Λατίνους τε ἐτίμησαν καὶ  
 τοὺς μὴδ' ὀτιοῦν ἀγαθὸν ἀποδειξαμένους Ἑρυνίκας.  
 μιᾶς γὰρ καταλειπομένης αὐτοῖς τρίτης μερίδος, ἣ  
 10 οὐχ ἔξιεν ὅτι δώσουσιν ἐκείνοις μέρος ἢ τὰ ὅμοια  
 ψηφισαμένους μὴδὲν ἑαυτοῖς καταλείψειν.

LXXVIII. Πρὸς δὲ τούτοις διεξήσαν, ὅτι δη-  
 μεῦσαι τὰ κοινὰ τῆς πόλεως ἐπιβαλόμενος οὔτε τῆς  
 βουλῆς ψηφισαμένης οὔτε τῶ συνυπάτω δοκοῦν, βία  
 15 κυροῦν ἐμέλλησε τὸν νόμον, ὃς οὐ καθ' ἐν τούτο  
 μόνον ἦν ἀσύμφορός τε καὶ ἀδικός, ὅτι προβουλεύ-  
 σαι θεόν τὸ συνέδριον καὶ εἰ δόξειεν ἐκείνῳ κοινὴν  
 ἀπάντων εἶναι τῶν ἐν τέλει τὴν φιλανθρωπίαν ἐνὸς  
 ἀνδρὸς ἐπολεῖ τὴν χάριν· ἀλλὰ καὶ κατ' ἐκεῖνο τὸ  
 20 πάντων σχετικώτατον, ὅτι λόγῳ μὲν δόσις ἦν τοῖς  
 πολίταις τῆς δημοσίας χώρας, ἔργῳ δὲ ἀφαίρεσις,  
 Ῥωμαίων μὲν τῶν κτησαμένων αὐτὴν μίαν μοῖραν 1698  
 ληφόμενων, Ἑρυνίκων δὲ καὶ Λατίνων οἷς οὐθὲν αὐ-  
 τῆς μετῆν τὰς δύο· καὶ ὡς οὐδὲ τοῖς δημάρχοις  
 25 ἐναντιοθεῖσι καὶ παραλύειν ἐκ τοῦ νόμου θάτερον  
 ἀξιοῦσι μέρος τὸ κατὰ τὴν ἰσομοιρίαν τῶν ἐπήλυδων,  
 ἐπέισθη, ἀλλὰ καὶ δημάρχους καὶ συνυπάτω καὶ  
 βουλῇ καὶ πᾶσι τοῖς ὑπὲρ τοῦ κοινοῦ τὰ κράτιστα  
 βουλευομένοις τάναντία πράττων διετέλεσε. διεξελ-  
 30 θόντες δὲ ταῦτα, καὶ μάρτυρας αὐτῶν ἅπαντας  
 τοὺς πολίτας ποιησάμενοι, μετὰ τοῦτο ἤδη καὶ τὰς  
 ἀπορορήτους τῆς τυραννίδος παρείχοντο πίστει, ὡς

χρήματά τε συνενέγκαιεν αὐτῶ Λατῖνοι καὶ Ἑρυνικές  
 καὶ ὄπλα παρασκευάσαιτο καὶ συμπορεύοιντο ὡς  
 αὐτὸν οἱ θρασύτατοι τῶν ἐν ταῖς πόλεσι νέων ἀπόρ-  
 ρητὰ τε ποιούμενοι βουλευτήρια καὶ πολλὰ πρὸς  
 τούτοις ἔτερα ὑψηροῦντες, καὶ παρείχοντο τοὺς 5  
 τούτων μάρτυρας πολλοὺς μὲν ἀστούς, πολλοὺς δ'  
 ἐκ τῶν ἄλλων συμμαχίδων πόλεων, οὔτε φαύλους  
 10 οὔτε ἀφανεῖς. οἷς ἐπίστευσε ὁ δῆμος, καὶ οὔτε  
 λόγοις ἔτι ὑπαχθεῖς οὐς ὁ ἀνὴρ ἐκ πολλῆς παρα-  
 σκευῆς συγκειμένους διέθετο, οὔτε οἰκτῶ ἐνδοῦς 10  
 τριῶν μὲν αὐτῶ παίδων μεγάλην παρεχόντων εἰς  
 ἔλεον ἐπικουρίαν, πολλῶν δ' ἄλλων συγγενῶν τε  
 καὶ ἐταίρων συνολοφρομένων, οὔτε τῶν κατὰ πο-  
 λέμους ἔργων δι' οὐς ἐπὶ μήκιστον ἦλθε τιμῆς  
 15 φρειδῶ λαβῶν τινα, καταψηφίζεται τὴν δίκην. οὔτως  
 τε ἄρα ἦν πικρὸς πρὸς τὸ τῆς τυραννίδος ὄνομα,  
 ὥστε οὐδ' ἐν τῶ τιμῆματι τῆς δίκης μετρία ὀργῇ  
 ἐχρήσατο πρὸς αὐτόν, ἀλλὰ θανάτου ἐτίμησεν. εἰσῆει  
 γὰρ αὐτὸν δέος, μὴ φυγὰς ἐλαθεῖς ἐκ τῆς πατρίδος  
 ἀνὴρ στρατηγῆσαι πολέμους τῶν τότε δεινότατος, 20  
 ὅμοια δράσαι Μαρκίῳ τὰ τε φίλια διαβάλλον καὶ τὰ  
 ἐχθρὰ συνιστάς, καὶ πόλεμον ἄσπειστον ἐπάγοι τῇ  
 πατρίδι. τοῦτο τὸ τέλος τῆς δίκης λαβούσης, ἀγα-  
 γόντες οἱ ταμίαι τὸν ἄνδρα ἐπὶ τὸν ὑπερκείμενον  
 τῆς ἀγορᾶς κρημνόν, ἀπάντων ὀρώντων ἔροισαν κατὰ 25  
 1700 τῆς πέτρας. αὐτὴ γὰρ ἦν τοῖς τότε Ῥωμαίοις ἐπιχώ-  
 ριος τῶν ἐπὶ θανάτῳ ἀλόντων ἢ κόλασις.

LXXVIII. Ὁ μὲν οὖν πιθανώτερος τῶν παραδε-  
 δομένων ὑπὲρ τοῦ ἀνδρὸς λόγων τοιοῦτόςδε ἐστίν· δεῖ  
 δὲ καὶ τὸν ἥσσον πιθανόν, ἐπειδὴ κακείνος πεπί- 30  
 στευται ὑπὸ πολλῶν καὶ ἐν γραφαῖς ἀξιοχρεοῖς φέ-  
 ρεται, μὴ παρελθεῖν. λέγεται δὲ τισιν, ὡς ἀδήλου



πᾶσιν οὐσης ἔτι τῆς ὑπ' αὐτοῦ συσκευαζομένης τυ-  
 ραννίδος, πρῶτος ὑποπεύσας ὁ πατὴρ τοῦ Κασσίου  
 καὶ διὰ τῆς ἀκριβεστάτης βασιάνου τὸ πρᾶγμα ἐξέτά-  
 σας ἤκειν ἐπὶ τὴν βουλήν· ἔπειτα κελεύσας ἐξελεῖν  
 5 τὸν υἱὸν μηνυτῆς τε καὶ κατήγορος αὐτοῦ ἐγένετο·  
 καταγνούσης δὲ καὶ τῆς βουλῆς, ἀγαγὼν αὐτὸν εἰς  
 τὴν οἰκίαν ἀπέκτεινε. τὸ μὲν οὖν πικρὸν καὶ ἀπαρ-  
 αίτητον τῆς τῶν πατέρων ὀργῆς εἰς τοὺς ἀδικούντας  
 υἱοὺς καὶ μάλιστα ἐν τοῖς τότε Ῥωμαίοις οὐδὲ ταύ-  
 10 τὴν ἀπωθεῖται τὴν ἀπόφασιν· ἐπεὶ καὶ πρότερον  
 Βροῦτος ὁ τοὺς βασιλεῖς ἐκβαλὼν ἀμφοτέρους τοὺς  
 υἱοὺς ἐδικαίωσε κατὰ τὸν τῶν κακούργων νόμον 1701  
 ἀποθανεῖν, καὶ πελέεσι τοὺς ἀνχένας ἀπεκόπησαν,  
 ὅτι συμπράττειν τοῖς βασιλεῦσιν ἐδόκουν τὴν κἀθο-  
 15 δον. καὶ μετὰ ταῦτα Μάλλιος, ὁ ἐν τῷ Γαλατικῷ  
 πολέμῳ στρατηγῶν, τὸν υἱὸν ἀριστεύοντα κατὰ πόλε-  
 μον τῆς μὲν ἀνδρείας ἔνεκα τοῖς ἀριστείοις στεφά-  
 νοις ἐκόσμησεν, ἀπειθείαν δὲ ἐπιμαλῶν, ὅτι οὐκ ἐν  
 20 τῷ ἐτάχθῃ φρουρίῳ ἔμεινεν, ἀλλὰ παρὰ τὴν ἐπιτα-  
 γὴν τοῦ ἡγεμόνος ἐξῆλθεν ἀγωνιούμενος, ὡς λειπο-  
 τάκτην ἀπέκτεινε. καὶ ἄλλοι πολλοὶ πατέρες, οἳ μὲν  
 ἐπὶ μείζονσιν αἰτίας οἳ δ' ἐπ' ἐλάττοσιν, οὔτε φειδῶ  
 τῶν παιδῶν οὔτε ἔλεον ἔσχον. κατὰ μὲν δὴ τοῦτο  
 οὐκ ἀξιῶ, ὥσπερ ἔφην, προβεβλήσθαι τὸν λόγον, ὡς  
 25 ἀπιθανόν· ἐκεῖνα δὲ με ἀνθέλκει τεκμηρίων ὄντα 1702  
 οὔτ' ἐλάχιστα οὔτε ἀπίθανα, καὶ πρὸς τὴν ἐτέραν  
 ἄγει συγκατάθεσιν, ὅτι μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Κασ-  
 σίου ἢ τε οἰκία κατεσκάφη, καὶ μέχρι τοῦδε ἀνεῖται  
 ὁ τόπος αὐτῆς αἰθριος ἕξω τοῦ νεῶ τῆς Γῆς, ὃν  
 30 ὑστέροις ἢ πόλις κατεσκεύασε χρόνοις ἐν μέρει τινὶ  
 αὐτῆς κατὰ τὴν ἐπὶ Καρρίνας φέρουσαν ὁδόν, καὶ  
 τὰ χρήματα αὐτοῦ τὸ κοινὸν ἀνέλαβεν· ἐξ ὧν ἀπαρ-

χὰς ἐν ἄλλοις τε ἱεροῖς ἀνέθηκε, καὶ δὴ καὶ τῇ Δή-  
 μητρι τοὺς χαλκίους ἀνδριάντας ἐπιγραφαῖς δηλοῦν-  
 τας ἀφ' ὧν εἰσι χρημάτων ἀπαρχαί. εἰ δέ γε ὁ πατὴρ  
 1703 μηνυτῆς τε καὶ κατήγορος καὶ κολαστῆς αὐτοῦ ἐγένε-  
 νετο, οὔτ' ἂν ἡ οἰκία αὐτοῦ κατεσκάφη οὔτε ἡ οὐσία 5  
 ἐδημεύθη. Ῥωμαίοις γὰρ οὐθὲν ἰδίον ἐστὶ κτῆμα  
 ζώντων ἔτι τῶν πατέρων, ἀλλὰ καὶ τὰ χρήματα καὶ  
 τὰ σώματα τῶν παιδῶν ὅ τι βούλονται διατιθέναι  
 τοῖς πατράσιν ἀποδέδοται. ὥστε οὐκ ἂν δήπου τὴν  
 τοῦ πατρὸς οὐσίαν τοῦ μνηύσαντος τὴν τυραννίδα 10  
 ἐπὶ τοῖς τοῦ παιδὸς ἀδικήμασιν ἀφαιρεῖσθαι καὶ δη-  
 μεύειν ἢ πόλις ἤξιον. διὰ μὲν δὴ ταῦτα τῷ προτέρῳ  
 συγκατάθεμαι τῶν λόγων μᾶλλον· ἔθηκα δὲ ἀμ-  
 φοτέρους ἵνα ἐξῆ τοῖς ἀναγνωσόμενοις ὁποτέρῳ βου-  
 λονται τῶν λόγων προσέχειν. 15

LXXX. Ἐπιβαλλομένων δὲ τινῶν καὶ τοὺς παι-  
 δας ἀποκτείνειν τοῦ Κασσίου, δεινὸν τὸ ἔθος ἔδοξεν  
 εἶναι τῇ βουλῇ καὶ ἀσύμφορον· καὶ συνελθοῦσα  
 ἐψηφίσατο ἀφείσθαι τὰ μειράκια τῆς τιμωρίας καὶ  
 ἐπὶ πάσῃ ἀδείᾳ ζῆν, μήτε φυγῇ μήτε ἀτιμία μήτε 20  
 ἄλλῃ συμφορᾷ ζημιωθέντα. καὶ ἐξ ἐκεῖνου τὸ ἔθος  
 1704 τοῦτο Ῥωμαίοις ἐπιχώριον γέγονεν ἕως τῆς καθ'  
 ἡμᾶς διατηρούμενον ἡλικίας, ἀφείσθαι τιμωρίας ἀπά-  
 σης τοὺς παῖδας ὧν ἂν οἱ πατέρες ἀδικήσωσιν, ἐάν  
 τε τυράννων ὄντες υἱοὶ τύχῶσιν, ἐάν τε πατροκτό- 25  
 νων, ἐάν τε προδοτῶν, ὃ μέγιστόν ἐστι παρ' ἐκείνοις  
 ἀδίκημα. οἳ τε καταλῦσαι τὸ ἔθος τοῦτο ἐπιβαλό-  
 μενοι κατὰ τοὺς ἡμετέρους χρόνους μετὰ τὴν συντέ-  
 λειαν τοῦ Μαρσικοῦ τε καὶ ἐμφυλίου πολέμου, καὶ  
 τοὺς παῖδας τῶν ἐπικηρουχθέντων ἐπὶ Σύλλα πατέρων 30  
 ἀφελόμενοι τὸ μετιέναι τὰς πατρίους ἀρχὰς καὶ βου-  
 λῆς μετέχειν καθ' ὃν ἐδυνάστευον αὐτοὶ χρόνον,

ἐπίφθονόν τε ἀνθρώποις καὶ νεμεσητόν θεοῖς ἔργον  
 ἔδοξαν ἀποδείξασθαι. τοιγάρτοι δίκη μὲν ἐκείνοις  
 σὺν χρόνῳ τιμωρὸς οὐ μεμπτή παρηκολούθησε, δι'  
 ἦν ἐκ μεγίστου τέως ἀυχμήματος εἰς ταπεινότητα  
 5 πτώμα κατήχθησαν, καὶ οὐδὲ γένος τὸ ἐξ αὐτῶν ὅτι  
 μὴ κατὰ γυναικας ἔτι λείπεται. τὸ δ' ἔθος εἰς τὸν  
 ἐξ ἀρχῆς κόσμον ὁ τούτους καθελὼν ἀνήρ ἀποκα-  
 ἔστησε. παρ' Ἑλληνσι δὲ οὐχ οὕτως ἐνίοις ὁ νόμος 1706  
 ἔχει, ἀλλὰ τοὺς ἐκ τυράννων γενομένους οἱ μὲν συνα-  
 10 ποκτίννυσθαι τοῖς πατράσι δικαιοῦσιν, οἱ δ' αἰφυ-  
 γία κολάζουσιν, ὥσπερ οὐκ ἐνδεχομένης τῆς φύσεως  
 χρηστοὺς παῖδας ἐκ πονηρῶν πατέρων ἢ κακοὺς ἐξ  
 ἀγαθῶν γενέσθαι. ἀλλ' ὑπὲρ μὲν τούτων εἴτε ὁ παρ'  
 Ἑλλήσιν ἀμείνων νόμος εἴτε τὸ Ῥωμαίων ἔθος κρείττον,  
 15 ἀφίημι τῷ βουλευμένῳ σκοπεῖν· ἐπάνειμι δὲ ἐπὶ τὰ ἐξῆς.

LXXXI. Μετὰ γὰρ τὸν τοῦ Κασσίου θάνατον  
 οἱ μὲν ἀξάνοντες τὴν ἀριστοκρατίαν θρασύτεροί τε  
 καὶ ὑπεροπτικώτεροι τῶν δημοτικῶν ἐργόνοισαν· οἱ  
 δ' ἐν ἀφανεί τε δόξῃ φερόμενοι καὶ βίῳ εἰς ταπεινὰ  
 20 συνεστάλησαν, καὶ ὡς ἄριστον ἀπολαλεκότες φύλακα  
 τῆς δημοτικῆς μερίδος πολλὴν ἄνοιαν ἑαυτῶν ἐπὶ τῇ  
 καταδίκη κατηγόρου. τούτου δ' αἴτιον ἦν, ὅτι τὰ  
 δόξαντα τῇ βουλῇ περὶ τῆς κληρουχίας οὐκ ἐπραττον  
 οἱ ὕπατοι, δέον αὐτοὺς ἀνδρας τε ἀποδείξαι δέκα 1706  
 25 τοὺς ὀριούντας τὴν γῆν καὶ γνώμην εἰσηγήσασθαι  
 πόσῃν τε αὐτῆς καὶ τίσι δεήσει νεμηθῆναι. συνή-  
 σάν τε πολλοὶ κατὰ συστροφὰς περὶ τῆς ἀπάτης ἐκά-  
 στοτε διαλεγόμενοι, καὶ ἐν αἰτία τοὺς προτέρους εἶχον  
 δημάρχους, ὡς προδεδικότας τὸ κοινόν· ἐκκλησίαι  
 30 τε συνεχεῖς ὑπὸ τῶν τότε δημάρχων ἐγίνοντο καὶ  
 ἀπαιτήσεις τῆς ὑποσχέσεως. ταῦτα συνιδόντες οἱ  
 ὕπατοι γνώμην ἐποιήσαντο πολέμων προφάσει τὸ

παραινοῦν ἐν τῇ πόλει μέρος καὶ ταραττόμενον κα-  
 ταστειλαί· ἔτυχε γὰρ ἐν τῷ αὐτῷ χρόνῳ ληστηρίοις  
 τε ὑπὸ τῶν πλησιοχώρων πόλεων καὶ καταδρομαῖς  
 τισιν ἢ γῆ βλαπτομένη. τιμωρίας μὲν δὴ τῶν ἀδι-  
 5 κούντων ἕνεκα προὔθεσαν τὰ τοῦ πολέμου σημεῖα,  
 καὶ τὰς δυνάμεις τῆς πόλεως κατέγραφον· οὐ προσ-  
 ιόντων δὲ τῇ καταγραφῇ τῶν ἀπόρων, ἀδύνατοι  
 ὄντες τὴν ἐκ τῶν νόμων ἀνάγκην τοῖς ἀπειθοῦσι  
 προσφέρειν· προειστήμεσαν γὰρ τοῦ πλήθους οἱ δῆμ-  
 10 1707 οίχοι καὶ κωλύσειν ἔμελλον, εἴ τις ἐπιχειρήσειεν  
 ἢ τὰ σώματα τῶν ἐκλειπόντων τὴν στρατείαν ἄγειν  
 ἢ τὰ χρήματα φέρειν· ἀπειλαῖς χρησάμενοι πολλὰς  
 ὡς οὐκ ἐπιτρέποντες τοῖς ἀνασείουσι τὸ πλῆθος, λε-  
 ληθυῖαν ὑποψίαν κατέλιπον ὡς δικάτορα ἀποδείξον-  
 15 τες, ὃς ἔμελλε καταλύσας τὰς ἄλλας ἀρχὰς τὴν  
 τυραννικὴν καὶ ἀνυπεύθυνον μόνος ἔξειν ἐξουσίαν.  
 ὡς δὲ ταύτην ἔλαβον τὴν ὑπόνοιαν οἱ δημοτικοί,  
 δεισαντες μὴ τὸν Ἄππιον ἀποδείξωσι πικρὸν ὄντα  
 καὶ χαλεπὸν, πάντα πρὸ τούτου πάσχειν ὑπέμενον.

LXXXII. Ἐπεὶ δὲ κατεγράφη τὰ στρατεύματα, 20  
 παραλαβόντες οἱ ὕπατοι τὰς δυνάμεις ἐξήγαγον ἐπὶ  
 τοὺς πολεμίους. Κορνήλιος μὲν οὖν εἰς τὴν Οὐιεν-  
 τανῶν χώραν ἐμβαλὼν τὴν ἐγκαταληφθεῖσαν λείαν  
 ἐν αὐτῇ ἀπήλασε, καὶ μετὰ ταῦτα προεβευσαμένων  
 τῶν Οὐιεντανῶν τοὺς τε αἰχμαλώτους αὐτοῖς ἀπέ- 25  
 λυσε χρημάτων, καὶ ἀνοχὰς τοῦ πολέμου συνέθετο  
 1708 ἱπιασίου. Φάβιος δὲ τὴν ἐτέραν δύναμιν ἔχων εἰς  
 τὴν Αἰκανῶν γῆν ἐνέβαλεν· ἔπειτ' ἐκείθεν εἰς τὴν  
 Οὐολούσκων. χρόνον μὲν οὖν τινα οὐ πολὺν ἠνέ-  
 σχοντο οἱ Οὐολούσκοι διαρπαζομένων αὐτοῖς καὶ κει- 30  
 ρομένων τῶν ἀγρῶν· ἔπειτα καταφρονήσαντες τῶν  
 Ῥωμαίων ὡς οὐ πολλῇ δυνάμει παρόντων, ἐξεβοή-

θουν ἐκ τῆς Ἀντιατωῶν χώρας τὰ ὄπλα ἀρπάσαντες  
 ἀθρόοι, ταχύτερα μᾶλλον ἢ ἀσφαλέστερα βουλευσά-  
 μνοι. εἰ μὲν οὖν ἐφθασαν ἐσκεδασμένοι τοῖς Ῥω-  
 μαίοις ἐπιφανέντες ἐν τοῦ ἀπροσδοκῆτου, μεγάλην  
 5 ἂν αὐτῶν εἰργάσαντο τροπήν· νῦν δὲ προαισθόμενος  
 τὴν ἐφοδὸν αὐτῶν ὁ ὕπατος διὰ τῶν ἀποσταλέντων  
 ἐπὶ τὰς κατασκοπὰς, ἀνακλήσει ταχέα τοὺς ἐν ταῖς  
 προνομαῖς ἐσκεδασμένους ἀναλαβί'ν, τάξιν αὐτοῖς  
 ἀπέδωκε τὴν εἰς πόλεμον ἀριότιουσαν. τοῖς δὲ  
 10 Οὐολούσκοις σὺν καταφρονήσει καὶ θάρσει χαροῦ-  
 σιν, ὡς παρὰ δόξαν ἐφάνη συνεστῶσα ἐν κόσμῳ  
 πᾶσα ἢ τῶν πολεμίων δύναμις, δέος ἐμπίπτει πρὸς  
 τὴν ἀδόκητον ὄψιν, καὶ τοῦ μὲν κοινοῦ τῆς ἀσφα-  
 λείας οὐδεμία φροντίς, τῆς δὲ ἰδίας ἐκάστῳ σωτη-  
 15 ρίας πρόνοια. ὑποστρέψαντες δὴ ὡς εἶχον ἕκαστοι  
 τάχους ἐφευγον ἄλλοι κατ' ἄλλας ὁδοὺς· καὶ οἱ μὲν  
 πλείους ἀπεσώθησαν εἰς τὴν πόλιν, ὀλίγον δὲ τι  
 στίφος, ὃ μάλιστα ἦν συντεταγμένον, εἰς ὄρους τινα  
 κορυφὴν ἀναδραμὸν καὶ θέμενον ἐνταῦθα τὰ ὄπλα  
 20 τὴν ἐπιούσαν νύκτα διέμενε· ταῖς δ' ἐξῆς ἡμέραις  
 φρουρὰν περιστήσαντος τοῦ ὑπάτου τῷ λόφῳ καὶ  
 πάσας διακλείσαντος ὄπλοις τὰς ἐξόδους, λιμῶ βια-  
 σθὲν ὑποχείριον γίνεται καὶ παραδίδωσι τὰ ὄπλα.  
 ὁ δὲ ὕπατος τὴν τε λείαν ὄσῃ ἐπέτυχε καὶ τὰ λάφυρα  
 25 καὶ τοὺς αἰχμαλώτους ἀποδόσθαι κελύσας τοῖς τα-  
 μίαις, εἰς τὴν πόλιν ἀπήνεγκε τὸ ἀργύριον. καὶ μετ'  
 οὐ πολὺν χρόνον ἀναστήσας τὴν δύναμιν ἐν τῆς πο-  
 λεμίας, ἀπῆγεν ἐπ' οἴκου τελευτῶντος ἤδη τοῦ ἔτους.  
 ἐπιστάντων δὲ τῶν ἀρχαιρεσιῶν, ἔδοξε τοῖς πατρι-  
 30 κίοις ἠρεθισμένον ὀρᾶσι τὸν δῆμον καὶ μεταμελό-  
 μενον ἐπὶ τῇ Κασσίῳ καταδίκῃ, διὰ φυλακῆς αὐτὸν  
 ἔχειν μὴ τι παρακινήσειε πάλιν εἰς δεκασμῶν ἐλπίδα 1710

καὶ κλήρων διανομῆς ὑπαχθεῖς ὑπ' ἀνδρὸς δημαγω-  
 γῆσαι δυνατοῦ τὸ τῆς ὑπατείας λαβόντος ἀξίωμα.  
 ἐφαίνετο δ' αὐτοῖς ῥᾶστα καλυθῆσεσθαι τούτων τι-  
 νὸς ὀρεγόμενος, εἰ γένοιτο ὕπατος ἀνὴρ ἥμισυ δη-  
 μοτικός. βουλευσάμενοι δὴ τοῦτο κελεύουσι μετιέναι 5  
 τὴν ὑπατείαν τὸν ἕτερον τῶν κατηγορησάντων τοῦ  
 Κασσίου, Καίσωνα Φάβιον ἀδελφὸν ὄντα τοῦ τότε  
 ὑπατεύοντος Κοῦντου, καὶ ἐκ τῶν ἄλλων πατρικίων  
 Λεύκιον Αἰμίλιον ἄνδρα ἀριστοκρατικόν. τούτων δὲ  
 μετιόντων τὴν ἀρχὴν καλύειν μὲν οὐχ οἷοί τ' ἦσαν 10  
 οἱ δημοτικοί, καταλιπόντες δὲ τὰς ἀρχαιρεσίας ᾤχοντο  
 ἐκ τοῦ πεδίου. τὸ γὰρ τῆς λοχίτιδος ἐκκλησίας κύρος  
 ἐν ταῖς ψηφοφορίαις περὶ τοὺς ἐπιφανεστάτους ἦν  
 καὶ τὰ πρῶτα τιμήματα ἔχοντας, καὶ σπάνιόν τι ἦν,  
 ὃ ἐπεκύρουν οἱ διὰ μέσον· ὁ δὲ τελευταῖος λόγος, ἐν 15  
 1711 ᾧ τὸ πλεῖστόν τε καὶ ἀπορωτάτον τοῦ δημοτικοῦ μέ-  
 ρος ἐψηφοφόρει, μιᾶς ὡς καὶ πρότερον εἰρηται μοι  
 τῆς ἐσχάτης ψήφου κύριος ἦν.

LXXXIII. Παραλαμβάνουσι δὴ τὴν ὑπατείαν  
 κατὰ τὸ ἑβδομηκοστὸν τε καὶ διακοσιοστὸν ἔτος ἀπὸ 20  
 τοῦ συνοικισμοῦ τῆς Ῥώμης Λεύκιος Αἰμίλιος Μα-  
 μέρκου υἱὸς καὶ Καίσων Φάβιος Καίσωνος υἱός, ἀρ-  
 χοντος Ἀθήνησι Νικοδήμου. οἷς κατ' εὐχὴν συνέβη  
 μηδὲν ὑπὸ τῆς πολιτικῆς ἐπιταραχθῆναι διχοστασίας,  
 πολέμων τὴν πόλιν περιστάντων ἄλλοεθνῶν. ἐν 25  
 ἅπασιν μὲν οὖν ἔθνεσι καὶ τόποις Ἑλλήνων τε καὶ  
 βαρβάρων φιλοῦσιν αἱ τῶν ἔξωθεν κακῶν ἀνάπαν-  
 λαι ἐμφυλίου τε καὶ ἐνδήμιους ἐγείρειν πολέμους,  
 μάλιστα δὲ τοῦτο πάσχουσιν, ὅσοι πολεμιστὴν καὶ  
 κακόπαθον αἰροῦνται βίου ἐλευθερίας τε καὶ ἡγε- 30  
 μονίας πόθῳ. χαλεπαὶ γὰρ αἱ μαθοῦσαι τοῦ πλείο-  
 νος ἐφλέσθαι φύσεις ἐξειργόμεναι τῶν συνήθων ἐρ-

γαν καρτερεῖν· καὶ διὰ τοῦτο οἱ φρονιμώτατοι τῶν  
 ἡγεμόνων αἰεὶ τινὰς ἐκ τῶν ἄλλοεθνῶν ἀναξωπυροῦ-  
 σιν ἔχθρας, κρείττους ἡγούμενοι τῶν ἐντοπίων πο-  
 λέμων τοὺς ἄλλοδαπούς. τότε δ' οὖν, ὡσπερ ἔφη, 1713  
 5 κατὰ δαίμονα τοῖς ὑπάτοις συνέπεσον αἱ τῶν ὑπη-  
 κόων ἐπαναστάσεις. Οὐλοῦσχοι γὰρ εἶτε τῇ πολι-  
 τικῇ Ῥωμαίων κινήσει πιστεύσαντες ὡς ἐκπεπολεμω-  
 μένου τοῦ δημοτικοῦ πρὸς τοὺς ἐν τέλει· εἶτε τῆς  
 προτέρας ἡττης ἀμαχητὶ γενομένης αἰσχύνη παροξυν-  
 10 θέντες· εἶτε ἐπὶ ταῖς ἑαυτῶν δυνάμεσι πολλαῖς οὐ-  
 σαις μέγα φρονήσαντες· εἶτε διὰ ταῦτα πάντα, πο-  
 λεμῶν Ῥωμαίοις διέγνωσαν, καὶ συναγαγόντες ἐξ  
 ἀπάσης πόλεως τὴν νεότητα, μέρει μὲν τιμὴ τῆς δυ-  
 νάμεως ἐπὶ τὰς Ἑρνίκων τε καὶ Λατίνων πόλεις  
 15 ἐστράτευσαν, τῇ δὲ λοιπῇ, ἣ πλείστη τε ἦν καὶ κρα-  
 τίστη, τοὺς ἐπὶ τὰς πόλεις σφῶν ἤξοντας δέχεσθαι  
 ἤμελλον. ταῦτα μαθούσι Ῥωμαίοις ἔδοξε διχῆ νέμειν  
 τὰς δυνάμεις, καὶ τῇ μὲν ἑτέρᾳ τὴν Ἑρνίκων τε καὶ  
 Λατίνων διὰ φυλακῆς ἔχειν, τῇ δ' ἑτέρᾳ τὴν Οὐλοῦ-  
 20 σκων λεηλατεῖν.

LXXXIII. Διακληρωσαμένων δὲ τῶν ὑπᾶτων 1713  
 τὰς δυνάμεις ὡς ἔστιν αὐτοῖς ἔθος, τὸ μὲν ἐπικου-  
 ρεῖν μέλλον τοῖς συμμάχοις στρατεύμα Καίτων Φά-  
 βιος παρέλαβε· θάτερον δὲ Λεύκιος ἔχων ἐπὶ τὴν  
 25 Ἀντιατῶν ἦγε πόλιν. γενόμενος δὲ πλησίον τῶν  
 ὀρίων, καὶ κατιδὼν τὰς τῶν πολεμίων δυνάμεις,  
 τότε μὲν ἀντικατεστρατοπέδευσεν ἐπὶ λόφον· ταῖς  
 δ' ἐξῆς ἡμέραις ἐξιώντων εἰς τὸ πεδίου τῶν πολε-  
 μίων θαμινὰ καὶ προκαλουμένων εἰς μάχην, ἦνίκα  
 30 τὸν οἰκίον ἔχειν καιρὸν ὑπελάμβανεν ἐξῆγε τὰς δυ-  
 νάμεις· καὶ πρὶν εἰς χεῖρας ἔλθειν παρακλήσει τε  
 πολλῇ καὶ ἐπικελεύσει χρησάμενος, ἐκέλευσε σημαί-

νειν τὸ πολεμικόν· καὶ οἱ στρατιῶται τὸ σύνηδες  
 ἀλαλάξαντες ἀθρόοι κατὰ σπέρας τε καὶ κατὰ λόχους  
 συνέβαλλον. ὡς δὲ τὰς λόγχας καὶ τὰ σαννία καὶ  
 ὄσα εἶχον ἐκηβόλα ἐξανάλωσαν, σπασάμενοι τὰ ξίφη  
 συρράττουσιν ἀλλήλοις ἰση τόλμη τε καὶ ἐπιθυμία 5  
 τοῦ ἀγῶνος ἑκάτεροι χρώμενοι· ἦν τε, ὡς καὶ πρό-  
 τερον ἔφη, παραπλήσιος αὐτοῖς ὁ τοῦ ἀγῶνος τρόπος,  
 1714 καὶ οὔτε ἡ σοφία καὶ ἡ ἐμπειρία Ῥωμαίων περὶ τὰς  
 μάχας, ἣ χρώμενοι τὰ πολλὰ ἐπεκράτουν, οὔτε τὸ  
 καρτερικόν καὶ ταλαίπωρον ἐν τοῖς πόνοις διὰ πολ- 10  
 λῶν ἡσκημένον ἀγῶνων ἐπεκράτει· τὰ γὰρ αὐτὰ καὶ  
 περὶ τοὺς πολεμίους ἦν, ἐξ οὗ Μάρκιον ἡγεμόνα  
 Ῥωμαίων οὐ τὸν ἀφανέστατον στρατηλάτην ἔσχον·  
 ἀλλ' ἀντειχον ἑκάτεροι τῆς χώρας ἐν ἣ τὸ πρῶτον  
 ἐστήσαν οὐχ ὑφιέμενοι. ἔπειτα κατὰ μικρὸν οἱ Οὐλο- 15  
 λῦσχοι ὑπεχώρουν ἐν κόσμῳ τε καὶ τάξει δεχόμενοι  
 τοὺς Ῥωμαίους. στρατήγημα δὲ τοῦτ' ἦν, ἵνα δια-  
 σπάσωσί τε αὐτῶν τὰς τάξεις καὶ ἐξ ὑπεροξίου γέ-  
 νωνται χωρίου.

LXXXV. Οἱ δ' ὑπολαβόντες αὐτοὺς ἄρχειν φυ- 20  
 1715 γῆς ἠκολούθουν βάδην μὲν ἀπιοῦσι καὶ αὐτοὶ συν  
 κόσμῳ ἐπόμενοι, ἐπειδὴ δὲ δρόμῳ χωροῦντας ἐπὶ  
 τὸν χάρακα ἐθεάσαντο, ταχεῖα καὶ αὐτοὶ διώξει καὶ  
 ἀσυντάκτῳ χρώμενοι. οἱ δὲ δὴ τελευταῖοί τε καὶ  
 ὀπισθοφυλακοῦντες λόχοι νεκρούς τε ἐσκύλευον, ὡς 25  
 κεκρατηκότες ἤδη τῶν πολεμίων, καὶ ἐφ' ἀρπαγὴν  
 τῆς χώρας ἐτράποντο. μαθόντες δὲ οἱ Οὐλοῦσχοι  
 ταῦτα, οἱ τε δόξαν παρασχόντες φυγῆς, ἐπειδὴ τοῖς  
 ἐρύμασι τοῦ χάρακος ἐπλησίασαν, ὑποστραφέντες  
 ἐστήσαν, καὶ οἱ καταλειφθέντες ἐν τῷ στρατοπέδῳ 30  
 τὰς πύλας ἀναπετάσαντες ἐξέδραμον ἀθρόοι κατὰ  
 πολλὰ μέρη· γίνεται τε αὐτῶν παλίντροπος ἡ μάχη·  
 14\*

οἱ μὲν γὰρ διώκοντες ἔφενγον, οἱ δὲ φεύγοντες ἐδίω-  
 κουν. ἔνθα πολλοὶ καὶ ἀγαθοὶ Ῥωμαίων θνήσκουσιν  
 οἷα εἰκὸς ὠθούμενοι κατὰ πρानοὺς χωρίου καὶ ὑπὸ  
 πολλῶν ὀλίγοι κυκλωθέντες. ἀδελφὰ δὲ τούτοις  
 5 ἔπασχον, ὅσοι πρὸς σκῦλά τε καὶ ἀρπαγὰς τραπό-  
 μενοι τὸ ἐν κόσμῳ τε καὶ τάξει ἀποχωρεῖν ἀφηρέθη-  
 σαν· καὶ γὰρ οὗτοι καταληφθέντες ὑπὸ τῶν πολε- 1710  
 μίων, οἱ μὲν ἐσφάγησαν, οἱ δ' αἰχμάλωτοι ἐλήφθησαν.  
 ὅσοι δὲ τούτων τε καὶ τῶν ἀπὸ τοῦ ὄρους ἀπαρα-  
 10 χθέντων διεσώθησαν, ὁπὲρ τῆς ὄρας τῶν ἰππέων αὐ-  
 τοῖς ἐπιβοηθήσαντων, ἀπῆλθον ἐπὶ τὸν χάρακα.  
 ἐδόκει τε αὐτοῖς συλλαβέσθαι τοῦ μὴ πασσυδὶ δια-  
 φθαρῆναι χεიმῶν πολὺς ἐξ οὐρανοῦ καταρραγεῖς  
 καὶ σκότος οἶον ἐν ταῖς βαθείαις ὀμίχλαις γίνεται, ὃ  
 15 τοῖς πολεμίοις ὄκνον τῆς ἐπὶ πλέον διώξεως παρέσχεν  
 οὐ δυναμένοις τὰ πόρρω καθορᾶν. τῇ δ' ἐπιούσῃ  
 νυκτὶ ἀναστήσας τὴν στρατιάν ὁ ὑπάτος ἀπήγε σιγῇ καὶ  
 ἐν κόσμῳ, λαθεῖν τοὺς πολεμίους προνοούμενος· καὶ  
 κατεστρατοπέδευσε παρὰ πόλει λεγομένη Λογγόλα  
 20 περὶ δέλλην ὄψιαν, γήλοφον ἱκανὸν ἐρύκειν τοὺς  
 ἐπιόντας ἐκλεξάμενος. ἔνθα ὑπομένων τοὺς τε ὑπὸ  
 τραυμάτων κάμνοντας ἀνεκτάτο θεραπείαις, καὶ τοὺς  
 ἄδημονοῦντας ἐπὶ τῇ παραδόξῳ τοῦ πάθους αἰσχύνῃ  
 παραμυθούμενος ἀνελάμβανε.

25 LXXXVI. Ῥωμαῖοι μὲν οὖν ἐν τούτοις ἦσαν· 1717  
 Οὐολοῦσκοι δὲ, ἐπειδὴ ἡμέρα τε ἐγένετο καὶ ἐγνω-  
 σαν τοὺς πολεμίους ἐκλελοιπότες τὸν χάρακα, προσ-  
 ελθόντες κατεστρατοπέδευσαν. σκυλεύσαντες δὲ τοὺς  
 τῶν πολεμίων νεκροὺς καὶ τοὺς ἡμιθυήτας οἷς σω-  
 30 θήσεσθαι ἐλπὶς ἦν ἀνελόμενοι, ταφάς τε ποιησάμε-  
 νοι τῶν σφετέρων νεκρῶν, εἰς τὴν ἐγγυτάτω πόλιν  
 Ἄντιον ἀνέβησαν· ἔνθα παιανίζοντες ἐπὶ τῇ νίκῃ

καὶ θύοντες ἐν ἅπασιν ἱεροῖς εἰς εὐπαθείας καὶ  
 ἠδονὰς ταῖς ἐξῆς ἡμέραις ἐτράπουτο. εἰ μὲν οὖν ἐπὶ  
 τῆς τότε νίκης διέμειναν καὶ μηδὲν ἐπεχειρήσαντο,  
 καλὸν ἂν αὐτοῖς εἰλήφει τέλος ὁ ἀγών. Ῥωμαῖοι γὰρ  
 οὐκ ἂν ὑπέμειναν ἐτι προελθεῖν ἐκ τοῦ χάρακος ἐπὶ 5  
 πολέμῳ· ἀγαπητὸν δ' ἂν, εἰ ἀπῆλθον ἐκ τῆς πολε-  
 μίας, κρείττονα τοῦ προδήλου θανάτου τὴν ἄδοξον  
 ἠγῆσάμενοι φυγῆν. νῦν δὲ τοῦ πλείονος ὀρεγόμενοι  
 1718 καὶ τὴν ἐκ τῆς προτέρας νίκης δόξαν ἀπέβαλον.  
 ἀκούοντες γὰρ παρὰ τε κατασκόπων καὶ τῶν ἐκ τοῦ 10  
 χάρακος ἀποδιδρασκόντων, ὅτι κομιδῇ τέ εἰσιν οἱ  
 σωθέντες Ῥωμαίων ὀλίγοι καὶ τούτων οἱ πλείους  
 τραυματίαι, πολλὴν αὐτῶν ἐποιήσαντο καταφρόνη-  
 σιν, καὶ ἀντίκα τὰ ὄπλα ἀρπάσαντες ἔθεον ἐπ' αὐ-  
 15 τοὺς. πολὺ δὲ καὶ τὸ ἄνοπλον αὐτοῖς ἐκ τῆς πόλεως 15  
 εἶπετο κατὰ θέαν τοῦ ἀγῶνος καὶ ἅμα ἐφ' ἀρπα-  
 γῆν τε καὶ ὠφέλειαν. ἐπεὶ δὲ προσβαλόντες τῷ λόφῳ  
 τὸν τε χάρακα περιέστησαν καὶ τὰ περισταυρώματα  
 διασπᾶν ἐπεχείρουν, πρῶτοι μὲν οἱ τῶν Ῥωμαίων  
 ἰππεῖς πεζοὶ μαχόμενοι διὰ τὴν τοῦ χωρίου φύσιν 20  
 1719 ἐξέδραμον ἐπ' αὐτούς, ἔπειτα τούτων κατόπιν οἱ  
 καλούμενοι τριάριοι πνυνώσαντες τοὺς λόχους· οὗ-  
 τοι δ' εἰσὶν οἱ πρεσβύτατοι τῶν στρατευομένων, οἷς  
 τὰ στρατόπεδα ἐπιτρέπουσι φυλάττειν, ὅταν ἐξίωσιν  
 εἰς τὴν μάχην, καὶ ἐφ' οὓς τελευταίους, ὅταν ἀθρόα 25  
 γένηται τῶν ἐν ἀκμῇ φθορά, σπανίζοντες ἐτέρας  
 ἐπικουρίας καταφεύγουσι διὰ τὴν ἀνάγκην. οἱ δ'  
 Οὐολοῦσκοι κατ' ἀρχὰς μὲν ἐδέξαντο τὴν ἔφοδον  
 αὐτῶν, καὶ μέχρι πολλοῦ διέμενον ἐκθύμως ἀγανι-  
 30 ζόμενοι· ἔπειτα διὰ τὴν τοῦ χωρίου φύσιν μειουε-  
 κτοῦντες ὑπεχώρουν, καὶ τέλος ὀλίγα μὲν τοὺς πολε-  
 μίους καὶ οὐκ ἄξια λόγου ἐργασάμενοι, πλείω δ' αὐ-

τοὶ παθόντες κακὰ, ὑπεχώρησαν εἰς τὸ πεδίον. ἐνθα  
καταστρατοπεδευσάμενοι ταῖς ἑξῆς ἡμέραις ἐξέτα-  
τον τὴν δύναμιν καὶ προῦκαλοῦντο τοὺς Ῥωμαίους  
εἰς μάχην· οἱ δ' οὐκ ἀντεξήεσαν. ὡς δὲ τοῦτ' εἶ-  
5 δον καταφρονήσαντες αὐτῶν οἱ Οὐολοῦσκοι συνεκά-  
λουν ἐκ τῶν πόλεων δυνάμεις, καὶ παρεσκευάζοντο  
ὡς ἐξελοῦντες πολυχειρία τὸ φρούριον· ὁραδῶς τε ἂν  
ἐξειργάσαντο μέγα ἔργον ὑπάτου τε καὶ Ῥωμαϊκῆς 1720  
δυνάμεως ἢ βία κρατήσαντες ἢ καθ' ὁμολογίας· οὐδὲ  
10 γὰρ τῶν ἐπιτηδείων ἔτι εὐπόροι τὸ χωρίον· ἔφθη δὲ  
πρότερον ἐπικουρία Ῥωμαίους ἐλθοῦσα, ὑφ' ἧς  
ἐκωλύθησαν οἱ Οὐολοῦσκοι τὸ κάλλιστον ἐπιθεῖναι τῷ  
πολέμῳ τέλος. ὁ γὰρ ἕτερος τῶν ὑπάτων Καίτων  
Φάβιος μαθὼν ἐν αἷς ἦν τύχαις ἢ παραταξαμένη  
15 Οὐολοῦσκοις δύναμις, ἐβούλετο μὲν ὡς εἶχε τάχους  
πᾶσαν ἄρῳ τὴν δύναμιν εὐθύς ἐπιέναι τοῖς πο-  
λιορκοῦσι τὸ φρούριον. ὡς δὲ οὐκ ἐγίνετο αὐτῷ  
θυομένῳ τε καὶ οἰανοῖς χρωμένῳ τὰ ἱερά κακὰ, ἀλλ'  
ἠναντιοῦτο πρὸς τὰς ἐξόδους αὐτοῦ τὸ δαιμόνιον,  
20 αὐτὸς μὲν ὑπέμεινε, τὰς δὲ κρατίστας ἐπιλεξάμενος  
σπέρας ἀπέστειλε τῷ συνάρχοντι. αἱ δὲ διὰ τε ὄρων  
ἀφανῶς καὶ νύκτωρ τὰ πολλὰ ποιησάμενοι τὰς  
ὁδοὺς εἰσῆλθον εἰς τὸν χάρακα τοὺς πολεμίους  
λαθοῦσαι. ὁ μὲν οὖν Αἰμίλιος θρασύτερος ἐργόνοι  
25 τῇ παρουσίᾳ τῶν συμμάχων, οἱ δὲ πολέμιοι τῷ τε  
πλήθει τῷ σφετέρῳ εἰκῆ πύσννοι καὶ διὰ τὸ μῆ 1721  
ἐπεξίεναι τοὺς Ῥωμαίους εἰς μάχην ἐπαρθέντες  
ἀνέβαινον ἐπὶ τὸ ὄρος πυκνώσαντες τοὺς λόχους·  
καὶ οἱ Ῥωμαῖοι παρέντες αὐτοὺς ἀναβῆναι καθ'  
30 ἡσυχίαν, καὶ πολλὰ ποιεῖν περὶ τῷ σταυρώματι  
ἑάσαντες, ἐπειδὴ τὰ σημεῖα ἤρθη τῆς μάχης δια-  
σπάσαντες κατὰ πολλὰ μέρη τὸν χάρακα ἐπίπτου-

σιν αὐτοῖς· καὶ οἱ μὲν εἰς χεῖρας καταστάντες τοῖς  
ξίφεσιν ἐμάχοντο, οἱ δ' ἀπὸ τῶν ἐρμμάτων λίθοις  
τε καὶ σαυνίοις καὶ λόγχαις τοὺς ἐπιόντας ἔβαλλον,  
βέλος δὲ οὐδὲν ἄσκοπον ἦν πεπιλημένων γε ἐν βρα-  
χει χωρίῳ πολλῶν. ἀπαράττονται δὴ τοῦ λόφου 5  
πολλοὺς σφῶν ἀποβαλόντες οἱ Οὐολοῦσκοι, καὶ εἰς  
φυγὴν ὁμήσαντες μόγις εἰς τὸν ἴδιον ἀποσώζον-  
ται χάρακα. Ῥωμαῖοι δὲ ὡς ἐν ἀσφαλεῖ τέως ὄν-  
τες ἤδη κατέβαινον ἐπὶ τοὺς ἀγροὺς αὐτῶν· ἔξ ὧν  
ἐπισιτισμοὺς καὶ τᾶλλα ὄσων σπάνις ἦν ἐν τῷ χάρακι 10  
ἐλάμβανον.

2 LXXXVII. Ἐπειδὴ δὲ καθῆκεν ὁ τῶν ἀρχαι-  
ρεσιῶν καιρὸς, ὁ μὲν Αἰμίλιος ἔμεινε ἐπὶ στρατο-  
πέδου δι' αἰσχύνης ἔχων ἐπὶ συμφοραῖς οὐκ εὐσχή-  
μοσιν εἰς τὴν πόλιν εἰσελθεῖν, τὸ κράτιστον ἀπολω- 15  
λεκῶς τῆς στρατιᾶς. ὁ δὲ συνύπατος αὐτοῦ τοὺς ὑφ'  
ἐαυτὸν ἄρχοντας ἐπὶ στρατοπέδου καταλιπὼν εἰς  
τὴν Ῥώμην ᾤχετο· καὶ συγκαλέσας τὸν ὄχλον ἐπὶ  
τὰς ἀρχαιρεσίας, οἷς μὲν ὁ δῆμος ἐβούλετο δοθῆναι  
τὴν ὑπατείαν ἀνδράσιν ἐκ τῶν ὑπατευκότων, οὐ προῦ- 20  
θηκε τὴν ψηφοφορίαν, ἐπειδὴ οὐδ' αὐτοὶ μετήεσαν  
τὴν ἀρχὴν ἐκόντες, ὑπὲρ δὲ τῶν μετιόντων τοὺς τε  
λόχους ἐκάλεσε καὶ τὰς ψήφους ἀνέδωκεν. οὗτοι δ'  
ἦσαν, οὓς ἡ βουλή προεῖλετο καὶ οἷς παραγγέλλειν  
τὴν ἀρχὴν ἐκέλευσεν, οὐ σφόδρα τῷ δήμῳ κεχαρι- 25  
σμένοι. καὶ ἀπεδείχθησαν εἰς τὸν ἐπιόντα ἐνιαυτὸν  
ὑπατοὶ ὁ τε νεώτερος ἀδελφὸς τοῦ προθέντος τὰς  
ἀρχαιρεσίας ὑπάτου, Μάρκος Φάβιος Καίτωνος υἱὸς  
1723 καὶ Λεύκιος Οὐαλέριος Μάρκου υἱός, ὁ τὸν τρις  
ὑπατεύσαντα Κάσσιον κόνιας ἐπὶ τῇ τυραννίδι 30  
καὶ ἀποκτείνας. οὗτοι τὴν ἀρχὴν παραλαβόντες  
ὑπὲρ τῶν ἀποθανόντων ἐν τῷ πρὸς Ἀντιάτας πολέ-

μὴ στρατιωτῶν ἡξίουν ἑτέρους καταγράφειν, ἵνα τὸ  
 ἔλλιπές ἀναπληρωθῇ τῶν λόγων. καὶ δόγμα ποιησά-  
 μενοι βουλῆς προέγραψαν ἡμέραν, ἐν ἣ παρῆναι  
 τοὺς ἔχοντας ἡλικίαν στρατεύσιμον ἔδει. μετὰ τοῦτο  
 5 θόρυβος ἦν πολὺς κατὰ τὴν πόλιν ὅλην, καὶ λόγοι  
 τῶν πενεστάτων στασιώδεις οὐκ ἀξιούντων οὔτε βου-  
 λῆς δόγμασιν ὑπηρετεῖν οὔτε ὑπάτων ἐξουσίᾳ πειθαρ-  
 χεῖν, ὅτι τὰς περὶ τῆς κληρουχίας ὑποσχέσεις ἐψεύ-  
 σαντο πρὸς αὐτούς· συνιόντες τε κατὰ πλήθος ἐπὶ  
 10 τοὺς δημάρχους ὠνειδίζον αὐτοῖς προδοσίαν, καὶ  
 κατεβῶων ἐπικαλούμενοι τὴν ἐξ ἐκεῖνων συμμαχίαν.  
 τοῖς μὲν οὖν ἄλλοις οὐκ ἔδοκει καιρὸς ἀρομύτων  
 εἶναι πολέμου συνεστῶτος ὑπερορίου τὰς πολιτικὰς 1724  
 ἔχθρας ἀναξωπυρεῖν· εἰς δὲ τις ἐξ αὐτῶν Γάτος Μαί-  
 15 μιος οὐκ ἔφη προδώσειν τοὺς δημοτικούς, οὐδ' ἐπι-  
 τρέψειν τοῖς ὑπάτοις στρατιᾶν καταγράφειν, εἰ μὴ  
 πρότερον ἀποδείξωσι τοὺς ὀριστὰς τῆς δημοσίας  
 γῆς, καὶ τὸ περὶ τῆς κληρουχίας ψήφισμα γράψαντες  
 εἰς τὸν δῆμον ἐξευέγκωσιν. ἀντιλεγόντων δὲ πρὸς  
 20 ταῦτα τῶν ὑπάτων, καὶ πρόφασιν ποιουμένων τοῦ  
 μηδὲν αὐτῷ συγχωρεῖν ὧν ἡξίου τὸν ἐν χερσὶν ὄν-  
 τα πόλεμον, οὐκ ἔφη προσέξειν αὐτοῖς τὸν νοῦν,  
 ἀλλὰ κωλύσειν ἀπάσῃ δυνάμει τὴν καταγραφὴν. καὶ  
 ἐποίει ταῦτα· οὐ μὴν ἰσχυρὸς γε μέχρι τέλους. οἱ γὰρ  
 25 ὑπατοὶ προελθόντες ἔξω τῆς πόλεως ἐν τῷ παρακει-  
 μένῳ πεδίῳ τοὺς στρατηγικοὺς δίφρους ἔθηκαν·  
 ἐνταῦθα καὶ τὸν στρατιωτικὸν ἐποιούντο κατάλογον,  
 καὶ τοὺς οὐχ ὑπακούοντας τοῖς νόμοις, ἐπειδὴ αὐ-  
 τοὺς ἄγειν οὐχ οἳοῖ τ' ἦσαν, εἰς χορήματα ἐξημίου·  
 30 ὅσοις μὲν χωρία ὑπῆρχεν, ἐκκόπτουτες ταῦτα καὶ 1725  
 τὰς αὐλὰς καθαιροῦντες· ὅσων δὲ γεωργικὸς ὁ βίος  
 ἦν ἐν ἀλλοτρίοις κτήμασι, τούτων ἄγοντές τε καὶ

φέροντες τὰ παρεσκευασμένα πρὸς τὴν ἐργασίαν  
 ζεύγη τε βοικὰ καὶ βοσκήματα καὶ ὑποζύγια ἀχθο-  
 φόρα καὶ σκευὴ παντοῖα, οἷς γῆ τ' ἐξεργάζεται καὶ  
 καρποὶ συγκομίζονται. ὁ δὲ κωλύων τὴν καταγρα-  
 φὴν δημάρχος οὐδὲν ἔτι ποιεῖν ἦν δυνατός· οὐδενὸς 5  
 γὰρ εἰσι τῶν ἔξω τῆς πόλεως οἱ τὴν δημορχικὴν  
 ἔχοντες ἐξουσίαν κύριοι· περιγέγραπται γὰρ αὐτῶν  
 τὸ κράτος τοῖς τεύχεσι, καὶ οὐδὲ ἀπανλισθῆναι τῆς  
 πόλεως αὐτοῖς θέμις, ὅτι μὴ πρὸς ἓνα καιρὸν, ἐν ᾧ  
 πᾶσαι θύουσιν αἱ τῆς πόλεως ἀρχαὶ κοινὴν ὑπὲρ 10  
 τοῦ Δατίων ἔθνους τῷ Διὶ θυσίαν ἐπὶ τὸ Ἄλβα-  
 νῶν ὄρος ἀναβαίνουσαι. τοῦτο διαμένει μέχρι τῶν  
 καθ' ἡμᾶς χρόνων τὸ ἔθος, τὸ μηθενὸς εἶναι τῶν  
 ἔξω τῆς πόλεως τοὺς δημάρχους κυρίους· καὶ δὴ καὶ  
 τὸν ἐμφύλιον Ῥωμαίων πόλεμον τὸν ἐπὶ τῆς ἐμῆς 15  
 1726 ἡλικίας, ὃς μέγιστος τῶν πρὸ αὐτοῦ πολέμων ἐγένετο,  
 ἢ κινήσασα πρόφασις ἐπὶ πολλαῖς ἄλλαις δόξασα μεί-  
 ζων εἶναι καὶ μόνῃ ἀποχωρῶσα διαστῆσαι τὴν πόλιν  
 ἦδε ἦν, ὅτι τῶν δημάρχων τινὲς ἐξεληλάσθαι τῆς πό-  
 λεως αἰτιώμενοι βία πρὸς τοῦ τότε κατέχοντος τὰ 20  
 κατὰ τὴν Ἰταλίαν ἡγεμόνος, ἵνα μηδενὸς εἶεν ἔτι κύ-  
 ριοι, ἐπὶ τὸν ἐν τῇ Γαλατίᾳ τὰ στρατόπεδα κατέ-  
 χοντα ὡς οὐκ ἔχοντες ὅποι τράπωνται κατέφυγον. ὁ  
 δὲ τῇ προφάσει ταύτῃ χρησάμενος, ὡς ἀρχῇ δήμου  
 παναγεί τὸ κράτος ἀφαιρεθείση παρὰ τοὺς ὄρκους 25  
 τῶν προγόνων αὐτὸς ὁσίως καὶ σὺν δίκῃ βοηθῶν, αὐ-  
 τὸς τε σὺν τοῖς ὅπλοις ἦλθεν εἰς τὴν πόλιν καὶ τοὺς  
 ἀνδρας ἐπὶ τὴν ἀρχὴν κατήγαγε.

LXXXVIII. Τότε δ' οὖν οἱ δημόται τῆς δη-  
 μαρχικῆς ἐξουσίας οὐδὲν ἀπολαύοντες ὑφείντο τοῦ 30  
 1727 θράσους καὶ προσιόντες τοῖς ἐπὶ τῆς στρατολογίας  
 τιταγμένοις τὸν ἱερὸν ὄρκον ἄμυνσαν, καὶ ὑπὸ τὰς

σημαίας κατεγράφοντο. ἐπεὶ δὲ τὸ ἔλλιπες τῶν λό-  
 χων ἐξεπληρώθη, διεκληρώσαντο τὰς ἡγεμονίας τῶν  
 στρατοπέδων οἱ ὑπατοί· καὶ ὁ μὲν Φάβιος τὴν ἐπὶ  
 τῇ βοηθείᾳ τῶν συμμάχων ἀποσταλίσαν δύναμιν  
 5 παρελάμβανεν, ὁ δὲ Οὐολούσκιοι τὴν ἐν Οὐολούσκιοις  
 στρατοπεδεύουσαν ἄγων τοὺς νεωστὶ καταγραφέν-  
 τας. μαθοῦσι δὲ τὴν παρουσίαν αὐτοῦ τοῖς πολε-  
 μίοις ἐδόκει στρατιάν τε ἐτέραν μεταπέμπεσθαι καὶ  
 ἐν ἰσχυροτέρῳ τὸ στρατόπεδον ποιήσασθαι χωρίῳ,  
 10 καὶ μηδὲν ἐκ τοῦ καταφρονεῖν αὐτῶν ἐτι προπετὲς  
 κινδύνευμα ὡς πρότερον ὑπομένειν. ἐργόνει ταῦ-  
 τα διὰ ταχέων, ἀμφοτέροις τε παρέστη τοῖς ἡγεμόσι  
 τῶν δυνάμεων ὁμοία περὶ τοῦ πολέμου γνώμη, τὰ  
 ἑαυτῶν φυλάττειν ἐρύματα εἰάν τις ἐπίη, τοῖς δὲ  
 15 τῶν πολεμίων ὡς βία κρατηθησομένοις μὴ ἐπιχει-  
 ρεῖν. καὶ ὁ διὰ μέσου χρόνος οὐκ ὀλίγος ἐγένετο  
 ἐν φόβῳ τῶν ἐπιχειρήσεων τριβόμενος· οὐ μέντοι καὶ  
 εἰς τέλος γε διαμένειν ἐν τοῖς ἐγνωσμένοις ἐδυνήθη-  
 σαν. ὁπότε γὰρ ἐπισιτισμοῦ χάριν ἢ τῶν ἄλλων 1728  
 20 ἐπιτηδείων τινός, ὧν ἀμφοτέροις ἔδει, μοῖρά τις  
 ἀποσταλείη τῆς στρατιᾶς, συμβολαί τε αὐτῶν ἐγι-  
 νοντο καὶ πληγαί, καὶ τὸ νικᾶν οὐκ αἰεὶ παρὰ τοῖς  
 αὐτοῖς ἔμενε· πολλάκις δὲ συμπλεκόμενων ἀλλήλοις  
 ἀπέθνησκόν τε οὐκ ὀλίγοι καὶ τραυματῆαι πλείους  
 25 ἐγίνοντο. τοῖς μὲν οὖν Ῥωμαίοις τὸ ἀπαναλούμε-  
 νον τῆς στρατιᾶς οὐδεμία οἰκοθεν ἐπιούσα ἐπικουρία  
 ἐξεπλήρου, τὸ δὲ τῶν Οὐολούσκων στρατόπεδον ἄλ-  
 λων ἐπ' ἄλλοις ἠκόντων πολλὴν αὐξήσιν ἐλάμβανε·  
 καὶ τούτῳ ἐπαρθέντες οἱ ἡγεμόνες ἐξῆγον ἐκ τοῦ χά-  
 30 ρακος τὴν δύναμιν ὡς εἰς μάχην.

LXXXVIII. Ἐξεληθόντων δὲ καὶ τῶν Ῥωμαίων  
 καὶ παραταξαμένων, ἰσχυρὰ μάχη γίνεται καὶ ἰπ-

πέων καὶ πεζῶν καὶ ψιλῶν ἴση πάντων χρωμένων  
 προθυμία τε καὶ ἐμπειρία, καὶ τὸ νικᾶν ἐκάστου  
 παρ' ἑαυτὸν μόνον τιθεμένου· ὡς δὲ νεκροὶ τε αὐ-  
 τῶν πολλοὶ ἐκατέρωθεν ἐν ᾧ ἐτάχθησαν χωρίῳ πε-  
 5 σόντες ἔκειντο, καὶ ἡμιθνήτες ἐτι πλείους τῶν νε-  
 1729 κρῶν, οἱ δὲ παρὰ τὸν ἄγωνα καὶ τὰ δεινὰ ἐτι διαμέ-  
 νοντες ὀλίγοι ἦσαν, καὶ οὐδὲ οὗτοι δεῖν τὰ πολέ-  
 μου ἔργα δυνάμενοι, βαρυνόντων μὲν αὐτοῖς τῶν  
 σκεπαστηρίων τὰς εὐανύμους χεῖρας διὰ πλῆθος τῶν  
 ἐμπεπηγῶτων βελῶν, καὶ οὐκ ἑαυτῶν ὑπομένειν 10  
 τὰς προσβολάς, τετριμμένων δὲ τῶν ἐγχειριδίων τὰς  
 ἀκμάς, ἔστι δὲ ὧν καὶ καταγόντων ὄλων, οἷς οὐδὲν  
 ἐτι ἦν χρῆσθαι, τοῦ τε κόπου, ὃς δι' ὅλης ἡμέ-  
 ρας ἀγωνιζομένοις αὐτοῖς πολὺς ἐργόνει, παραλύν-  
 15 τος τὰ νεῦρα καὶ τὰς πληγὰς ἀσθενεῖς ποιούντος, 15  
 ἰδρωτός δὲ καὶ δίψης καὶ ἀσθματος, οἷα ἐν πυργῶ  
 ὄρα ἔτους τοῖς πολλὴν χρόνον ἀγωνιζομένοις συμ-  
 πίπτειν φιλεῖ, παρ' ἀμφοτέροις γινομένων, τέλος  
 οὐδὲν ἔλαβεν ἀξιόλογον ἢ μάχην, ἀλλ' ἀγαπητῶς ἀμ-  
 20 φότεροι τῶν στρατηγῶν ἀνακαλουμένων ἀπῆλθον ἐπὶ 20  
 1730 τοὺς ἑαυτῶν χάρακας· καὶ οὐκέτι μετὰ τοῦτ' ἐξήσαν  
 εἰς μάχην οὐδέτεροι, ἀλλ' καθήμενοι παρεφύλατ-  
 τον ἀλλήλων τὰς ἔνεκα τῶν ἐπιτηδείων γινομένας  
 ἐξόδους. ἔδοξε μέντοι καὶ λόγος ἦν ἐν τῇ Ῥώμῃ πο-  
 25 λὺς, ὡς δυναμένη τότε νικᾶν ἢ Ῥωμαίων δυνάμεις 25  
 ἱκυσία μηδὲν ἐργάσασθαι λαμπρὸν διὰ μίσος τε  
 τοῦ ὑπάτου καὶ ὀργῆν, ἣν εἶχε πρὸς τοὺς πατρι-  
 κίους ἐπὶ τῷ φενακισμῷ τῆς κληρουχίας. αὐτοὶ δὲ  
 οἱ στρατιῶται τὸν ὑπάτου ὡς οὐκ ἱκανὸν στρατη-  
 30 γεῖν ἠτιῶντο, γράμματα πέμποντες ὡς τοὺς ἐπι- 30  
 τηδείους ἑαυτῶν ἕκαστοι. καὶ τὰ μὲν ἐπὶ στρατοπέ-  
 δου γινόμενα τοιαῦτα ἦν· ἐν αὐτῇ δὲ τῇ Ῥώμῃ



πολλά δαιμόνια σημεῖα ἐφαίνετο δηλατικά θείου  
 χόλου κατὰ τε φωνὰς καὶ ὄψεις ἀήθεις. πάντα δὲ  
 εἰς τοῦτο συντέμνεν, ὡς οἱ τε μάντιες καὶ οἱ τῶν  
 ἱερῶν ἐξηγηταὶ συνενέγκαντες τὰς ἐμπειρίας ἀπεφαί-  
 5 νοντο, ὅτι θεῶν [χολοῦσθαι] τινες οὐ κομίζονται τὰς 1731  
 νομίμους τιμὰς οὐ καθαρῶς οὐδὲ ὁσίως ἐπιτελου-  
 μένων αὐτοῖς τῶν ἱερῶν. ζήτησις δὴ μετὰ τοῦτο  
 πολλὴ ἐκ πάντων ἐγένετο, καὶ σὺν χρόνῳ μήνυσις  
 ἀποδίδεται τοῖς ἱεροφάνταις, ὅτι τῶν παρθένων  
 10 μία τῶν φυλαττουσῶν τὸ ἱερόν πῦρ, Ὀπιμία ὀνο-  
 μα αὐτῇ, τὴν παρθενίαν ἀφαιρεθεῖσα μιαινέει τὰ  
 ἱερά. οἱ δὲ ἐκ τε βασιάνων καὶ τῶν ἄλλων ἀποδεί-  
 ξων μαθόντες, ὅτι τὸ μνηνόμενον ἦν ἀδίκημα ἀλη-  
 θές, αὐτὴν μὲν τῆς κορυφῆς ἀφελόμενοι τὰ στέμ-  
 15 ματα καὶ πομπεύσαντες δι' ἀγορᾶς ἐντὸς τείχους  
 ζῶσαν κατάρουξαν· δύο δὲ τοὺς ἐξελεγχθέντας δια-  
 πράξασθαι τὴν φθορὰν μαστιγώσαντες ἐν φανερωῶ  
 ἀπέκτειναν. καὶ παραχορήμα μετὰ τοῦτο καλὰ τὰ  
 ἱερά καὶ τὰ μαντεύματα ὡς ἀφεικότων αὐθις τῶν  
 20 θεῶν τὸν χόλον ἐγένετο.

LXXX. Ὡς δὲ καθῆκεν ὁ τῶν ἀρχαιρεσιῶν  
 χρόνος, ἐλθόντων τῶν ὑπάτων πολλὴ σπουδὴ καὶ 1732  
 παράταξις ἐγένετο τοῦ δήμου πρὸς τοὺς πατρικίους  
 περὶ τῶν παραληφόμενων τὴν ἡγεμονίαν ἀνδρῶν.  
 25 ἐκεῖνοι μὲν γὰρ ἐκ τῶν νεωτέρων ἐβούλοντο τοὺς δρα-  
 στηρίους τε καὶ ἥμιστα δημοτικῶς ἐπὶ τὴν ὑπατείαν  
 προαγαγεῖν· καὶ μετῆει τὴν ἀρχὴν κελυσθεῖς ὑπ'  
 αὐτῶν ὁ υἱὸς Ἀππίου Κλαυδίου τοῦ πολεμιωτάτου  
 τῷ δήμῳ δοκούντος εἶναι, μεστὸς ἀνθαδείας ἀνήρ  
 30 καὶ θράσους, ἐταίροις τε καὶ πελάταις ἀπάντων  
 πλείστον τῶν καθ' ἡλικίαν δυνάμενος· ὁ δὲ δήμος  
 ἐκ τῶν πρεσβυτέρων τε καὶ τῶν πείρασαν ἤδη δεδωκό-

των τῆς ἐπιεικειᾶς τοὺς προνοησομένους τοῦ κοινῆ  
 συμφέροντος ὀνομάζων ἡξίου ποιεῖν ὑπάτους. αἱ  
 τε ἀρχαὶ διειστήκεσαν καὶ τὰς ἀλλήλων ἀνέλκον  
 ἐξουσίας. ὁπότε μὲν γὰρ οἱ ὑπάτοι καλοῖεν τὸ πλη-  
 5 θος ὡς ἀποδείξοντες τοὺς μετιόντας τὴν ἀρχὴν 5  
 ὑπάτους, οἱ δῆμαρχοι τοῦ κωλύειν ὄντες κύριοι  
 διέλκον τὰ ἀρχαιρεσία· ὁπότε δ' αὖ πάλιν ἐκεῖνοι  
 καλοῖεν ὡς ἀρχαιρεσιάσοντα τὸν δῆμον, οὐκ ἐπέτρε-  
 1732 πον οἱ ὑπάτοι, τὴν ἐξουσίαν ἔχοντες τοῦ συγκαλεῖν  
 τοὺς λόχους καὶ τὰς ψήφους ἀναδιδόσαι. κατηγο- 10  
 ραί τε ἀλλήλων ἐγίνοντο καὶ συνεχεῖς ἀψιμαχίαι  
 καθ' ἐταιρίας συνισταμένων, ὥστε καὶ πληγὰς ἀλ-  
 λήλοις διδόναι τινὰς ὑπ' ὀργῆς, καὶ οὐ μακρὰν  
 ἀποσχεῖν τὴν στάσιν τῶν ὄπλων. ταῦτα μαθοῦσα  
 ἡ βουλή πολὺν ἐσκόπει χρόνον, ὅ τι χρήσεται τοῖς 15  
 πράγμασιν, οὔτε βιάσασθαι δυναμένη τὸν δῆμον  
 οὔτε εἶξαι βουλομένη. ἦν δὲ ἡ μὲν ἀνθαδεσττέρα  
 γνώμη διατάτορα ἐλέσθαι τῶν ἀρχαιρεσιῶν ἕνεκα,  
 ὃν ἂν ἠγῶνται κράτιστον εἶναι· τὸν δὲ λαβόντα τὴν  
 ἐξουσίαν τοὺς τε νοσοποιούς ἐκ τῆς πόλεως ἐξελεῖν, 20  
 καὶ εἰ τι ἡμάρτηται ταῖς πρότερον ἀρχαῖς ἐπανορ-  
 θάσασθαι, τὸν τε κόσμον τοῦ πολιτεύματος ὃν βού-  
 λεται καταστησάμενον ἀνδράσι τοῖς κρατίστοις ἀπο-  
 δοῦναι τὰς ἀρχάς· ἡ δὲ ἐπιεικεσττέρα μεσοβασιλεῖς ἐλέ-  
 σθαι τοὺς πρεσβυτάτους τε καὶ τιμιωτάτους ἀνδρας, 25  
 οἷς ἐπιμελὲς ἔσται τὰ περὶ τὰς ἀρχάς ὅπως κράτισται  
 γενήσονται προνοηθῆναι, τὸν αὐτὸν τρόπον ὄνπερ  
 1733 ἐπὶ τῶν βασιλέων τῶν ἐκλιπόντων ἐγίνοντο. ταύτη  
 προσθεμένων τῇ γνώμῃ τῶν πλειόνων, ἀποδείκνυ-  
 ται πρὸς αὐτῶν μεσοβασιλεὺς Αὐλὸς Σεμπρώνιος 30  
 Ἀτρατίνος· αἱ δὲ ἄλλαι κατελύθησαν ἀρχαί. οὗτος  
 ἐπιτροπεύσας τὴν πόλιν ἀστασίαστον ὅσας ἐξῆν ἡμέ-

ρας, ἕτερον ἀποδείκνυσιν ὥσπερ αὐτοῖς ἔθος ἦν Σπόριον Λάρκιον. κακείνος συγκαλέσας τὴν λοχίτιν ἐκκλησίαν καὶ τὰς ψήφους κατὰ τὰ τιμήματα ἀναδούς, ἐκ τῆς ἀμφοτέρων εὐδοκίσεως ἀποδείκνυσιν ὑπάτους, 5 Γάϊον Ἰούλιον τὸν ἐπικαλούμενον Ἰουλον ἐκ τῶν φιλοδημοτικῶν, καὶ Κόιντον Φάβιον Καίσιωνος υἱὸν τὸ δεύτερον ἐκ τῶν ἀριστοκρατικῶν. καὶ ὁ μὲν δῆμος οὐδὲν ἐκ τῆς προτέρας ὑπατείας αὐτοῦ πε- 10 πουθῶς εἶσε τυχεῖν ταύτης τῆς ἐξουσίας τὸ δεύ- 15 τερον, μισῶν τὸν Ἀππιον καὶ ὅτι ἐκεῖνος ἀτιμασθῆ- ναι ἐδόκει σφόδρα ἠδόμενος· τοῖς δ' ἐν τέλει διαπε-πραγμένοις δραστηρίων ἄνδρα καὶ οὐδὲν ἐνδῶσοντα τῷ δήμῳ μαλακὸν ἐπὶ τὴν ὑπατείαν παρελθεῖν, κατὰ γνώμην ἐδόκει κεχωρημέναι τὰ τῆς διχοστασίας.

LXXXXI. Ἐπὶ τῆς τούτων ἀρχῆς Αἰκανοὶ μὲν 1735 εἰς τὴν Λατίνων χώραν ἐμβαλόντες ἀπήλασαν ἀνδρά-ποδα καὶ βοσκήματα πολλὰ ληστρικῆ ἐφόδῳ χρησά-μενοι· Τυρρηγῶν δὲ οἱ καλούμενοι Οὐιεντανοὶ τῆς Ῥωμαίων γῆς πολλὴν ἠδίκησαν προνομαῖς. τῆς δὲ 20 βουλῆς τὸν μὲν πρὸς Αἰκανοὺς πόλεμον εἰς ἕτερον ἀναβαλομένης χρόνου, παρὰ δὲ Οὐιεντανῶν δίνας αἰτεῖν ψηφισαμένης, Αἰκανοὶ μὲν ἐπειδὴ τὰ πρῶτα αὐτοῖς κατὰ νοῦν ἐχώρησε, καὶ οὐθεὶς ὁ καλύσων τὰ λοιπὰ ἐφαίνετο, θράσει ἐπαρθέντες ἀλογίστῳ, 25 ληστρικῆν μὲν οὐκέτι στρατείαν ἐγνώσαν ποιεῖσθαι, δυνάμει δὲ βαρεῖα ἐλάσαντες ἐπὶ πόλιν Ὀριῶνα κατὰ κράτος αἰροῦσι· καὶ διαρπάσαντες τὰ τε ἐκ τῆς χώ- 1736 ρας καὶ τὰ τῆς πόλεως ἀπήσαν εὐπορίαν πολλὴν ἀρό-μενοι. Οὐιεντανοὶ δὲ πρὸς τοὺς ἀπὸ τῆς Ῥώμης ἦκου- 30 τας ἀποκρινάμενοι, ὅτι οὐκ ἐξ αὐτῶν εἶησαν οἱ προνο-μεύοντες τὴν χώραν, ἀλλ' ἐκ τῶν ἄλλων Τυρρηγῶν, ἀπέλυσαν τοὺς ἄνδρας οὐδὲν τῶν δικαίων ποιή-

σαντες· καὶ οἱ πρόσβεις ἐπιτυγχάνουσι τοῖς Οὐιεν- 5 τανοῖς λείαν ἐκ τῆς αὐτῶν χώρας ἄγουσι. ταῦτα παρ' αὐτῶν ἢ βουλή μαθοῦσα πολεμεῖν τε ἐψηφίσατο Οὐιεντανοῖς καὶ τοὺς ὑπάτους ἀμφοτέρους ἐξά- 5 γειν τὴν στρατιάν. ἐγένετο μὲν οὖν περὶ τοῦ δόγ- 10 ματος ἀμφιλογία, καὶ πολλοὶ ἦσαν οἱ τὸν πόλεμον οὐκ ἐῶντες ἐκφέρειν τῆς τε κληρουχίας ὑπομιμνή-σκοντες τοὺς δημοτικούς, ἧς γε πέμπτον ἔτος ἐψη- 15 φισμένης ὑπὸ τοῦ συνεδρίου κενῆ πιστεύσαντες ἐλ- 1737 πίδι ἐξηπάτητο, καὶ κοινὸν ἀποφαίνοντες πόλεμον 20 εἰ κοινῆ χρήσεται γνώμη πᾶσα Τυρρηγία τοῖς ὁμο-εθνεῖσι βοηθοῦσα. οὐ μὴν ἰσχυρὰν γε οἱ τῶν στασια-στῶν λόγοι, ἀλλ' ἐκύρωσε καὶ ὁ δῆμος τὸ τῆς βουλῆς δόγμα τῆ Σπορίου Λαρκίου γνώμη τε καὶ παρακλή- 15 σσει χρησάμενος. καὶ μετὰ ταῦτ' ἐξῆγον τὰς δυνάμεις 20 οἱ ὑπατοὶ· στρατοπεδευσάμενοι δὲ χωρὶς ἀλλήλων οὐ μακρὰν ἀπὸ τῆς πόλεως καὶ μέναιντες ἡμέρας συχνάς, ἐπειδὴ οὐκ ἀντεξῆγον οἱ πολέμοι τὰς δυνάμεις, προ-νομεύσαντες αὐτῶν τῆς γῆς ὅσην ἐδύνατο πλείστην 25 ἀπήγον ἐπ' οἴκου τὴν στρατιάν. ἄλλο δὲ ἐπὶ τῆς τού- 30 των ὑπατείας λόγου ἄξιον οὐδὲν ἐπράχθη.

# ΔΙΟΝΥΣΙΟΥ

ΑΔΙΚΑΡΝΑΣΕΩΣ

ΡΩΜΑΙΚΗΣ ΑΡΧΑΙΟΛΟΓΙΑΣ

ΛΟΓΟΣ ΕΝΑΤΟΣ.

Τῷ δὲ μετὰ τούτους ἔτει διαφορᾶς γενομένης τῷ  
δήμῳ πρὸς τὴν βουλὴν περὶ τῶν ἀποδειχθησομένων  
ὑπάτων· οἱ μὲν γὰρ ἤξλου ἀμφοτέρους ἐκ τῶν ἀρι-  
στοκρατικῶν ἐπὶ τὴν ἀρχὴν προαγαγεῖν, ὁ δὲ δῆμος  
5 ἐκ τῶν ἐαυτῶ κεχαρισμένων· γνωσιμαχήσαντες πρὸς  
ἀλλήλους ἢ βουλὴ καὶ ὁ δῆμος τέλος συνέπεισαν ἀλ-  
λήλους ἀφ' ἐκάστης μερίδος ὑπάτον αἰρεθῆναι· καὶ  
ἀποδείκνυται Καίσιον μὲν Φάβιος τὸ δεύτερον ὑπὸ  
1739 τῆς βουλῆς ὁ τὸν Κάσιον ἐπὶ τῇ τυραννίδι κολύνας,  
10 Σπόριος δὲ Φούριος ὑπὸ τῶν δημοτικῶν, ἐπὶ τῆς  
ἐβδομηκοστῆς καὶ πέμπτῃς ὀλυμπιάδος ἀρχοντος  
Ἀθήνησι Καλλιάρχου, καθ' ὃν χρόνον ἐστράτευσε  
Ἐρένης ἐπὶ τὴν Ἑλλάδα. ἄρτι δὲ παρεληφόντων αὐ-  
τῶν τὴν ἀρχὴν Λατίνων τε πρέσβεις ἤκου ἐπὶ τὴν  
15 βουλὴν δεόμενοι πέμψαι σφίσι τὸν ἕτερον τῶν ὑπά-  
των μετὰ δυνάμεως, ὃς οὐκ ἐάσει προσωτέρω χωρεῖν  
τὴν Αἰκανῶν καταφρόνησιν· καὶ Τυρρηνία πᾶσα

1730

ἠγγέλλετο κεκινημένη καὶ οὐ διὰ μακροῦ χωρήσου-  
σα εἰς πόλεμον. συνήχθη γὰρ εἰς κοινὴν ἐκκλησίαν  
τὸ ἔθνος, καὶ πολλὰ Οὐιεντανῶν δεηθέντων συνά-  
ρασθαι σφίσι τοῦ κατὰ Ῥωμαίων πολέμου, τέλος  
ἐξήνεγκεν ἐξεῖναι τοῖς βουλομένοις Τυρρηνῶν μετ- 5  
έχειν τῆς στρατείας· καὶ ἐγένετο χεῖρ ἀξιόμαχος ἢ  
τοῖς Οὐιεντανοῖς ἐκουσίως τοῦ πολέμου συναιρομένη.  
1740 ταῦτα μαθοῦσι τοῖς ἐν τέλει Ῥωμαίων ἔδοξε στρατιάς  
τε καταγράφειν καὶ τοὺς ὑπάτους ἀμφοτέρους ἐξε-  
ναι, τὸν μὲν Αἰκανοῖς τε πολεμήσοντα καὶ Λατί- 10  
νοῖς τιμαρὸν ἐσόμενον, τὸν δὲ ἐπὶ Τυρρηνίας ἄξοντα  
τὰς δυνάμεις. ἀντέπραττε δὲ πρὸς ταῦτα Σπόριος  
Ἰκίλιος τῶν δημάρχων εἰς· καὶ συνάγων εἰς ἐκ-  
κλησίαν τὸν δῆμον ὁσημέραι τὰς περὶ τῆς κληρου-  
χίας ὑποσχέσεις ἀπήτει παρὰ τῆς βουλῆς, καὶ οὐδὲν 15  
ἔφη συγχωρήσειν οὔτε τῶν ἐπὶ πόλεμον, οὔτε τῶν  
κατὰ πόλιν ὑπ' αὐτῆς ψηφιομένων ἐπιτελεσθῆναι,  
ἐὰν μὴ τοὺς δέκα ἄνδρας ἀποδείξωσι πρότερον ὀρι-  
στὰς τῆς δημοσίας χώρας, καὶ διέλωσι τὴν γῆν ὡς  
ὑπέσχοντο τῷ δήμῳ. ἀπορομένη δὲ τῇ βουλῇ καὶ 20  
ἀμηχανούσῃ τί χρὴ ποιεῖν Ἀππίος Κλαύδιος ὑπο-  
τίθεται σκοπεῖν, ὅπως διαστήσεται τὰ τῶν ἄλλων  
1741 δημάρχων πρὸς αὐτόν, διδάσκων, ὅτι τὸν καλύοντα  
καὶ ἐμποδῶν μινόμενον τοῖς δόγμασι τῆς βουλῆς  
ιερόν ὄντα καὶ νόμῳ τὴν ἐξουσίαν ἔχοντα ταύτην 25  
ἄλλως οὐκ ἔστι παύσαι τῆς δυναστείας, ἐὰν μὴ τις  
ἕτερος τῶν ἀπὸ τῆς ἰσῆς τιμῆς καὶ τὴν αὐτὴν ἐξου-  
σίαν ἐχόντων τὰναντία πράττη, καὶ οἷς ἂν ἐκεῖνος  
ἐμποδῶν γένηται ταῦτα μὴ καλύῃ. συνεβούλευέ τε  
τοῖς αὐθις παραληφόμενοις τὴν ἀρχὴν ὑπάτοις τοῦ- 30  
το πράττειν καὶ σκοπεῖν, ὅπως ἔξουσί τινας ἀεὶ τῶν  
δημάρχων οἰκείουσιν σφίσι καὶ φίλοις· μίαν εἶναι λέ-

γων τῆς ἐξουσίας τοῦ ἀρχείου κατάλυσιν, ἐὰν στασιάζωσι πρὸς ἀλλήλους οἱ ἄνδρες.

II. Ταύτην εἰσηγησάμενον τὴν γνώμην Ἀππίου, δόξαντες αὐτὸν ὀρθῶς παραινεῖν οἱ τε ὑπατοὶ καὶ τῶν ἄλλων οἱ δυνατώτατοι, πολλῇ θεραπείᾳ διεπράξαντο τοὺς τέτταρας ἐκ τῶν δημάρχων οἰκείους τῇ βουλῇ γενέσθαι. οἱ δὲ τέως μὲν λόγῳ μεταπέθειν τὸν Ἰκίλιον ἐπεχείρουν ἀποστῆναι τῶν περὶ τῆς κληρουχίας πολιτευμάτων, ἕως οἱ πόλεμοι λάβωσι τέλος· ὡς δ' ἠναντιοῦτο καὶ διαμύνητο λόγον τε τὸν αὐθαδέστατον εἰπεῖν ἐτόλμησε τοῦ δήμου παρόντος, ὅτι μᾶλλον ἂν βούλοιο Τυρρηνοὺς καὶ τοὺς ἄλλους πολεμίους κρατήσαντας τῆς πόλεως ἐπιθεῖν, ἢ τοὺς κατέχοντες τῆς χώρας τὴν δημοσίαν ἀφείναι, δόξαντες ἀφορμὴν εἰληφέναι καλὴν πρὸς αὐθάδειαν τσαούτην τοῦ τἀναντία λέγειν τε καὶ πράττειν, οὐδὲ τοῦ δήμου τὸν λόγον ἠδέως δεξαμένου, κωλύειν αὐτὸν ἐφησαν, καὶ φανερῶς ἐπραττον ὅσα τῇ βουλῇ τε καὶ τοῖς ὑπάτοις δοκολῆ· μονωθεῖς δὲ Ἰκίλιος οὐδενὸς ἔτι κύριος ἦν. μετὰ τοῦτο ἡ στρατιὰ κατεγράφετο, καὶ ὅσων ἔδει τῷ πολέμῳ πάντα ὑπηρετεῖτο, τὰ μὲν ἐκ τῶν δημοσίων, τὰ δὲ ἐκ τῶν ἰδίων ἀπάσῃ προθυμίᾳ· καὶ διὰ τάχους οἱ ὑπατοὶ διακληρωσάμενοι τὰ στρατεύματα ἐξήεσαν, Σπόριος μὲν Φούριος ἐπὶ τὰς Αἰκανῶν πόλεις, Καίσιον δὲ Φάβιος ἐπὶ Τυρρηνοὺς. Σπορίῳ μὲν οὖν ἅπαντα κατὰ νοῦν ἐχώρησεν οὐχ ὑπομεινάντων εἰς χεῖρας ἐλθεῖν τῶν πολεμίων, καὶ πολλὰ ἐκ τῆς στρατείας ἐξεγένετο χρήματά τε καὶ σώματα λαβεῖν. ἐπῆλθε γὰρ ὀλίγου δεῖν πᾶσαν ὄσση οἱ πολεμιοὶ χώραν κατεῖχον ἄγων καὶ φέρων, καὶ τὰ λάφυρα τοῖς στρατιώταις ἅπαντα ἐχαρίσατο. δοκῶν δὲ καὶ τὸν προ-

τοῦ χρόνου εἶναι φιλόδημος, ἔτι μᾶλλον ἐκ ταύτης τῆς στρατηγίας ἐθεράπευσε τὸ πλήθος. καὶ ἐπειδὴ παρήλθεν ὁ χρόνος τῆς στρατείας ἄγων τὴν δύναμιν ὀλόκληρόν τε καὶ ἀπαθῆ, χρήμασιν εὐπορον κατέστησε τὴν πατρίδα.

III. Καίσιον δὲ Φάβιος ὁ ἕτερος τῶν ὑπάτων, οὐδενὸς χειρὸν στρατηγήσας, ἀφηρέθη τὸν ἐκ τῶν ἔργων ἔπαινον παρ' οὐδὲν ἀμάσθημα ἴδιον, ἀλλ' ὅτι τὸ δημοτικὸν οὐκ εἶχεν εὐνοῦν, ἐξ οὗ τὸν ὑπατον Κάσιον ἐπὶ τῇ τυραννίδι κρίνας ἀπέκτεινεν. οὔτε γὰρ ὅσα δέοι σὺν τάχει στρατηγῷ κελεύσαντι τοὺς ὑπηκόους πειθαρχεῖν, οὐθ' ὅσα τῷ προθύμῳ καὶ ἐν πρόποντι χρησαμένους βία κατασχεῖν, οὐθ' ὅσα λάθρα τῶν ἀντιπολεμίων χωρία εἰς πλεονεξίαν εὐθετα σφετερίσασθαι, οὔτ' ἄλλο πράττειν οὐδὲν ἔτοιμοι ἦσαν, ἐξ οὗ τιμὴν τινα ὁ στρατηγὸς καὶ δόξαν ἀγαθὴν ἐξοίσεσθαι ἐμελλε. καὶ τὰλλα μὲν αὐτῶν, ὅσα ὑβρίζοντες τὸν ἡγεμόνα διετέλουν, ἐκείνῳ τε ἦττον λυπηρὰ ἦν καὶ τῇ πόλει βλάβης οὐ μεγάλης αἰτία· ὃ δὲ τελευτῶντες ἐξειργάσαντο κίνδυνον οὐ μικρὸν ἠνεγκε καὶ πολλὴν αἰσχύνην ἀμφοῖν. γενουμένης γὰρ παρατάξεως ἐν τῷ μεταξὺ τῶν λόφων, ἐφ' οἷς ἦσαν ἰστροποπεδευκότες ἀμφοτέροι, πάσῃ τῇ παρ' ἐκατέρων δυνάμει, πολλὰ καὶ καλὰ ἔργα ἀποδειξάμενοι καὶ τοὺς πολεμίους ἀναγκάσαντες ἄρξαι φρυγῆς, οὐτ' ἠκολούθησαν ἀπιούσι τοῦ στρατηγοῦ πολλὰ ἐπιμελεύοντος οὔτε παραμείναντες ἐκπολιορκῆσαι τὸν χάρακα ἠθέλησαν, ἀλλ' ἐάσαντες ἀτελεῖς ἔργον καλὸν ἀπήεσαν εἰς τὴν αὐτῶν στρατοπεδείαν. ἐπιχειρησάντων δ' αὐτοκράτορα τὸν ὑπατον ἀναγορευσαί τινων μέγα ἐμβοήσαντες ἀθροοὶ κακίζούσῃ τῇ [τε] φωνῇ τὸν ἡγεμόνα [καὶ] ἐλοιδόρουν, ὡς πολ-

λοὺς σφῶν καὶ ἀγαθοὺς ἀπολωλεκότα δι' ἀπειρίαν 1740  
 τοῦ στρατηγεῖν· καὶ ἄλλη πολλὴ βλασφημία καὶ ἀγα-  
 νακτῆσει χορησάμενοι λύειν τὸν χάρακα καὶ ἀπάγειν  
 σφᾶς εἰς τὴν πόλιν ἤξιουν, ὡς οὐχ ἱκανοὺς ἐσομέ-  
 5 νους ἂν ἐπίωσιν οἱ πολέμιοι δευτέραν ὑπομεῖναι  
 μάχην. καὶ οὔτε μεταδιδάσκοντος ἐπέιδοντο τοῦ  
 ἡγεμόνος, οὔτε ὀλοφρομένου καὶ λικετεύοντος ἔπα-  
 σχόν τι πρὸς τὰς δεήσεις, οὔτε ἀπειλὰς καὶ ἀνατά-  
 σεις, ὁπότε καὶ ταύταις χρῆσασαίτο, δι' εὐλαβείας  
 10 ἐλάμβανον, ἀλλὰ πρὸς ἅπαντα τραχυνόμενοι ταῦτα  
 διέμενον. τοσαύτη δ' ἀναρχία καὶ καταφρόνησις τοῦ  
 ἡγεμόνος πᾶσιν ἐξ αὐτῶν παρέστη, ὥστε περὶ μέσας  
 νύκτας ἐξαυαστάντες τὰς τε σιγητὰς ἔλνον καὶ τὰ  
 ὅπλα ἀνελάμβανον καὶ τοὺς τραυματίας ἐβάσταζον  
 15 οὐδενὸς κελεύσαντος.

III. Ταῦτα ὁ στρατηγὸς μαθὼν ἠναγκάσθη πᾶσι  
 δοῦναι τὸ παράγγελμα τῆς ἐξόδου, δεισὰς τὴν  
 ἀναρχίαν αὐτῶν καὶ τὸ θράσος. οἱ δὲ ὥσπερ ἐκ  
 φυγῆς ἀνασωζόμενοι τάχει πολλῶ, συνάπτουσι τῇ  
 20 πόλει περὶ τὸν ὄρθρον. καὶ οἱ ἐπὶ τῶν τειχῶν ἀγνο- 1747  
 ῆσαντες, ὅτι φίλιον ἦν στράτευμα, ὅπλα τ' ἐνεδύοντο  
 καὶ ἀλλήλους ἀνεκάλουν, ἢ τ' ἄλλη πόλις, ὡς ἐπὶ  
 συμφορᾷ μεγάλη, ταραχῆς ἐγερόναι μεστὴ καὶ θορύ-  
 βου· καὶ οὐ πρότερον ἀνέφραξαν αὐτοῖς τὰς πύλας  
 25 οἱ φύλακες, ἢ [ἕως] λαμπρᾶν τε ἡμέραν γενέσθαι καὶ  
 γνωσθῆναι τὸ οἰκεῖον στράτευμα. ὥστε πρὸς τῇ  
 αἰσχύνη, ἣν ἐκ τοῦ καταλιπεῖν τὸν χάρακα ἠνέγ-  
 καντο, καὶ κίνδυνον οὐ τὸν ἐλάχιστον αὐτοῦς ἀναρ-  
 ρίψαι, σκότους ἀπιόντας διὰ τῆς πολεμίας ἀτάκτως.  
 30 εἴ γ' οὖν τοῦτο καταμαθόντες οἱ πολέμιοι ἐκ ποδὸς  
 ἀπιούσιν αὐτοῖς ἠκολούθησαν, οὐδὲν ἂν ἐκάλυ-  
 σεν ἅπασαν ἀπολωλέναι τὴν στρατιάν. τῆς δὲ ἀλό-

γου ταύτης ἀπάρσεως ἢ φυγῆς τὸ πρὸς τὸν ἡγεμόνα  
 ἐκ τοῦ δήμου μίσος ὥσπερ ἔφην αἴτιον ἦν, καὶ ὁ  
 φθόνος τῆς ἐκείνου τιμῆς, ἵνα μὴ θριάμβου κατα-  
 γωγῇ κοσμηθεὶς ἐπιφανέστατος γένηται. τῇ δ' ἐξῆς  
 ἡμέρᾳ μαθόντες οἱ Τυρρηνοὶ τὴν ἀπαρσιν τῶν 5  
 Ῥωμαίων, νεκροὺς τ' αὐτῶν ἐσκόλευσαν καὶ τραυ-  
 1748 ματίας ἀράμενοι ἀπήνεγκαν τὰς τε καταλειφθεί-  
 σασ ἐν τῷ χάρακι παρασκευάσας· πολλὰ δ' ἦσαν,  
 ὡς εἰς χρόνιον παρεσκευασμένοι πόλεμον· διε-  
 φόρησαν· καὶ ὡς δὴ κρατοῦντες τῆς χάρας τῶν 10  
 πολεμίων τὴν ἐγγυτάτω λεηλατήσαντες, ἀπήγον τὴν  
 στρατιάν.

V. Οἱ δὲ μετὰ τούτους ἀποδειχθέντες ὕπατοι,  
 Γναῖος Μάλλιος καὶ Μάρκος Φάβιος τὸ δεύτερον 15  
 ἄρχειν αἰρεθεῖς, ψήφισμα τῆς βουλῆς ποιησαμένης  
 στρατὸν ἐξάγειν ἐπὶ τὴν Οὐιεντανῶν πόλιν ὅσον ἂν  
 πλεῖστον δυνηθῶσι, προὔθηκται ἡμέραν ἐν ἣ τὸν  
 κατάλογον ἐμελλον ποιήσεσθαι τῆς στρατιᾶς. γινο-  
 μένου δὲ αὐτοῖς ἐμποδῶν ἐπὶ κωλύσει τῆς καταγρα-  
 φῆς ἑνὸς τῶν δημάρχων, Τεβερίου Ποντοφικίου καὶ 20  
 τὸ περὶ τῆς κληρουχίας ψήφισμα ἀνακαλουμένου, θε-  
 ραπεύσαντες τῶν συναρχόντων αὐτοῦ τινὰς, ὥσπερ  
 1749 ἐποίησαν οἱ πρό αὐτῶν ὕπατοι, διέστησαν τὸ ἀρ-  
 χεῖον· καὶ μετὰ τοῦτ' ἐπραττον ἐπὶ πολλῆς ἐξου-  
 σίας τὰ δόξαντα τῇ βουλῇ. γενομένης δὲ τῆς κατα- 25  
 γραφῆς ἐν ὀλίγαις ἡμέραις, ἐξήεσαν ἐπὶ τοὺς πολε-  
 μίους, δύο μὲν ἐκάτερος ἄγων Ῥωμαίων τάγματα  
 τῶν ἐξ αὐτῆς καταγραφέντων τῆς πόλεως, οὐκ ἐλάττω  
 δὲ ταύτης χεῖρα τὴν ὑπὸ τῶν ἀποίκων τε καὶ ὑπη-  
 κόων ἀποσταλεῖσαν. ἀφίκετο δ' αὐτοῖς παρὰ τοῦ 30  
 Λατίνων τε καὶ Ἑρνίκων ἔθνους διπλάσιον τοῦ κλη-  
 θέντος ἐπικουρικόν. οὐ μὴν ἐχρήσαντο γε παντί·

πολλήν δὲ χάριν αὐτοῖς εἰδέναι φήσαντες τῆς προ-  
 θυμίας, ἀπέλυσαν τῆς ἀποσταλείσης θυνάμεως  
 τὴν ἡμίσειαν. ἔταξαν δὲ καὶ πρὸ τῆς πόλεως τρίτου  
 ἐκ θυεῖν ταγμαίων τῶν ἐν ἀκμῇ στρατόν, φύλακα  
 5 τῆς χώρας ἐδόμενον, εἴ τις ἑτέρα δύναμις πολεμίων  
 ἐκ τοῦ ἀδοκίμου φανεῖη· τοὺς δὲ ὑπὲρ τὸν στρατιω-  
 τικὸν κατάλογον, οἷς ἔτι δύναμις ἦν ὄπλων χρήσεως,  
 ἐν τῇ πόλει κατέλιπον ἄκρας τε καὶ τεύχη φυλάξου-  
 10 τας. ἀγαρόντες δὲ πλησίον τῆς Οὐιεντανῶν πόλεως  
 τὰς θυνάμεις, κατεστρατοπέδευσαν ἐπὶ λόφοις θυεῖν  
 οὐ μακρὰν ἀφ' ἐστῆκόσιν ἀπ' ἀλλήλων. ἦν δὲ καὶ ἡ 1750  
 τῶν πολεμίων δύναμις ἐξεστρατευμένη πρὸ τῆς πό-  
 λεως πολλή τε καὶ ἀγαθή. συνελήλυθεσαν γὰρ ἐξ  
 ἀπάσης Τυρρησίας οἱ δυνατώτατοι τοὺς ἑαυτῶν  
 15 πενέστας ἐπαρόμενοι, καὶ ἐγένετο τοῦ Ῥωμαικοῦ  
 στρατοῦ μείζον τὸ Τυρρηρικὸν οὐκ ὀλίγω. τοῖς δ'  
 ὑπάτοις τό τε πλῆθος ὄρωσι τῶν πολεμίων καὶ τὴν  
 λαμπρότητα τῶν ὄπλων πολὺ δέος ἐνέπεσε, μὴ ποτε  
 οὐχ ἱκανοὶ γένωνται στασιαζούσῃ θυνάμει τῇ σφε-  
 20 τέρα πρὸς ὁμοιοῦσαν τὴν τῶν πολεμίων ἀντιταξά-  
 μενοι ὑπερβαλέσθαι· ἐδόκει τε αὐτοῖς ἐχθροσάμενοις  
 τὰ στρατόπεδα τρίβειν τὸν πόλεμον ἐκδεχομένοις,  
 εἴ τινα δῶσει πλεονεξίας ἀφορμὴν αὐτοῖς τὸ τῶν  
 πολεμίων θράσος ἀλογίστω καταφρονήσει ἐπαρθέν.  
 25 ἀκροβολισμοὶ δὲ μετὰ τοῦτο συνεχεῖς ἐγίνοντο καὶ  
 ψιλῶν συμπλοκαὶ βραχεῖαι, μέγα δὲ ἡ λαμπρὸν ἔργον  
 οὐδέν.

VI. Οἱ δὲ Τυρρηνοὶ ἀχθόμενοι τῇ τριβῇ τοῦ  
 πολέμου δειλίαν τε ὠνειδίζον τοῖς Ῥωμαίοις, ἐπειδὴ 1751  
 30 οὐκ ἐξήσαν εἰς μάχην, καὶ ὡς παρακεχωρηκότων  
 αὐτῶν σφίσι τῆς ὑπαίθρου μέγα ἐφρόνου. καὶ ἔτι  
 μάλλον ἐπήρθησαν εἰς ὑπεροψίαν τοῦ ἀντιπάλου

στρατοῦ καὶ καταφρόνησιν τῶν ὑπάτων, δόξαντες  
 καὶ τὸ θεῖον αὐτοῖς συμμαχεῖν. τοῦ γὰρ ἑτέρου τῶν  
 ὑπάτων Γναίου Μαλλίου κεραννὸς εἰς τὸ στρατήριον  
 ἐμπροσθὴν τὴν τε σκητὴν διέσπασε καὶ τὴν ἐστίαν  
 ἀνέτρεψε καὶ τῶν πολεμιστηρίων ὄπλων τὰ μὲν 5  
 ἐσπίλωσε, τὰ δὲ περιέκαυσε, τὰ δ' εἰς τέλος ἠφάνι-  
 σεν· ἀπέκτεινε δὲ καὶ τὸν λαμπρότατον αὐτοῦ τῶν  
 ἵππων, ᾧ παρὰ τοὺς ἀγῶνας ἐχορήτο, καὶ τῶν θερα-  
 πόντων τινάς. λεγόντων δὲ τῶν μάντεων τοῦ τε χά-  
 ρακος ἄλωσιν προσημαίνειν τοὺς θεοὺς καὶ τῶν 10  
 ἐπιφανεστάτων ἀνδρῶν ἀπώλειαν, ἀναστήσας τὴν  
 δύναμιν ὁ Μάλλιος ἀπήγγελε περὶ μέσας νύκτας ἐπὶ  
 τὸν ἕτερον χάρακα καὶ μετὰ τοῦ συνάρχοντος κατ-  
 εστρατοπέδευσε. μαθόντες οὖν οἱ Τυρρηνοὶ τὴν  
 ἀπανάστασιν τοῦ στρατηγοῦ, καὶ δι' ἄς αἰτίας ἐγένε- 15  
 1752 νετο παρὰ τινων αἰχμαλώτων ἀκούσαντες, ἐπήρθη-  
 σάν τε ταῖς γνώμαις ἔτι μάλλον, ὡς πολεμοῦντος  
 τοῖς Ῥωμαίοις τοῦ δαιμονίου, καὶ πολλὴν εἶχον ἐλ-  
 πίδα κρατήσῃ αὐτῶν· οἱ τε μάντις ἀκριβέστερον  
 τῶν ἄλλοθί ποιν δοκοῦντες ἐξητακέναι τὰ μετάρσια, 20  
 πόθεν τε αἱ τῶν κεραννῶν γίνονται βολαὶ καὶ τίνες  
 αὐτοὺς ὑποδέχονται μετὰ τὰς πληγὰς ἀπιόντας τό-  
 ποι, θεῶν τε οἷς ἕκαστοι ἀποδίδονται καὶ τίνων  
 ἀγαθῶν ἢ κακῶν μηνυταί, χωρεῖν ὁμόσε τοῖς πολε-  
 μίοις παρήρουν διαιρούμενοι τὸ γενόμενον τοῖς 25  
 Ῥωμαίοις σημεῖον κατὰ τάδε. ἐπειδὴ τὸ βέλος εἰς  
 ὑπάτου σκητὴν κατέσκηψεν, ἐν ἣ τὸ στρατήριον  
 ἐνήν, καὶ πᾶσαν αὐτὴν ἄχρι τῆς ἐστίας ἠφάνισεν,  
 ὅλη προσημαίνειν τὸ δαιμόνιον τῇ στρατιᾷ τοῦ χά-  
 ρακος ἐκλειψῖν βίᾳ κρατηθέντος, καὶ τῶν ἐπιφανε- 30  
 στάτων ὄλεθρον. εἰ μὲν οὖν, ἔφασαν, ἔμειναν ἐν ᾧ  
 1753 κατέσκηψε χωρὶς τὸ βέλος οἱ κατέχοντες αὐτό, καὶ

μὴ μετηνέγκαντο τὰ σημεῖα ὡς τοὺς ἑτέρους, μίας τε παρεμβολῆς ἀλώσει καὶ ἐνὸς ὀλέθρου στρατοῦ τὸ νειμεσῶν αὐτοῖς δαιμόνιον ἀπεπλήρωσεν ἂν τὸν χόλον· ἐπειδὴ δὲ σοφώτεροι τῶν θεῶν εἶναι ζητούντες εἰς τὸν ἕτερον χάρακα μετεστρατοπέδευσαν, καταλιπόντες ἔρημον τὸν τόπον, ὡς οὐ τοῖς ἀνθρώποις τοῦ θεοῦ προδηλοῦντος τὰς συμφορὰς, ἀλλὰ τοῖς τόποις, κοινὸς ἅπασιν αὐτοῖς ὁ παρὰ τοῦ δαίμονος ἦξει χόλος, τοῖς τε ἀπαναστάσι καὶ τοῖς ὑποδεξαμένοις. καὶ ἐπειδὴ ἀλώναι σφῶν τὸν ἕτερον χάρακα βία θείας ἐπιθεσπιζούσης ἀνάγκης οὐ περιέμειναν τὸ χρεῶν, ἀλλ' αὐτοὶ παρέδωσαν τοῖς ἐχθροῖς, ἐκεῖνος ὁ χάραξ ὁ τὸν ἐκλειφθέντα ὑποδεξάμενος ἀντὶ τοῦ καταλειφθέντος ἀλώσεται βίᾳ κρατηθεῖς.

15 VII. Ταῦτα παρὰ τῶν μάντεων οἱ Τυρρηνοὶ ἀκούσαντες, μέρει τινὶ τῆς ἑαυτῶν στρατιᾶς τὴν ἐρημωθείσαν ὑπὸ τῶν Ῥωμαίων καταλαμβάνονται στρατοπεδείαν ὡς ἐπιτείχισμα ποιησόμενοι τῆς ἐτέρας· ἦν 1754 δὲ πᾶν ἔχυρον τὸ χωρίον καὶ τοῖς ἀπὸ Ῥώμης ἐπὶ τὸ στρατόπεδον ἰοῦσι κωλύσεως ἐν καλῷ κείμενον. 20 πραγματευσάμενοι δὲ καὶ τᾶλλα, ἐξ ὧν πλεονεκτήσκειν τοὺς πολεμίους ἐμελλον, ἐξῆγον εἰς τὸ πεδίον τὰς δυνάμεις. μενόντων δὲ τῶν Ῥωμαίων ἐφ' ἡσυχίας, προσιππεύοντες ἐξ αὐτῶν οἱ τολμηρότατοι καὶ πλησίον τοῦ χάρακος ἰστάμενοι, γυναικῶς τε ἀπεκάλουν ἅπαντας καὶ τοὺς ἡγεμόνας αὐτῶν τοῖς δειλοτάτοις τῶν ζώων εἰκέναι λέγοντες ἐκάκιζον, καὶ 25 δυεῖν θάτερον ἤξιον· εἰ μὲν ἀντιποιοῦνται τῆς περὶ τὰ πολέμια ἀρετῆς, καταβάντας εἰς τὸ πεδίον μιᾶ τὸν ἀγῶνα κρῖναι μάχῃ· εἰ δὲ ὁμολογοῦσιν εἶναι κακοί, παραδόντας τὰ ὄπλα τοῖς κρείττοσι καὶ δίκαις ὑποσχόντας ὧν ἔδρασαν, μηδενὸς ἔτι τῶν με-

γάλων ἑαυτοὺς ἀξιοῦν. τοῦτ' ἐποιοῦν ὁσημέραι· καὶ ἐπεὶ οὐδὲν ἐπέβαινον, ἀποτειχίζειν αὐτοὺς ἐγνωσαν 1755 ὡς λιμῶ προσαναγκάσουτες παραστήναι. οἱ δὲ ὑπατοὶ περιεώρων τὰ γινόμενα μέχρι πολλοῦ, δι' ἀνανδρίαν μὲν ἢ μαλακίαν οὐδεμίαν· ἀμφοτέρω γὰρ 5 εὐψυχοὶ τε καὶ φιλοπόλεμοι ἦσαν· τὸ δὲ τῶν στρατιωτῶν ἐθελόκακόν τε καὶ ἀπρόθυμον, διαμένον ἐν τοῖς δημοτικοῖς, ἐξ οὗ περὶ τῆς κληρουχίας διεστasiaσαν, ὑφορώμενοι· ἔτι γὰρ αὐτοῖς ἔναυλα καὶ πρὸ ὀμμάτων ἦν, ἃ τῷ παρελθόντι ἐνιαυτῷ κατὰ τὸ 10 ἔργον τῆς περὶ τὸν ὑπατον τιμῆς αἰσχρὰ καὶ ἀνάξια τῆς πόλεως εἰργάσαντο, παραχωρήσαντες τῆς νίκης τοῖς ἡττηθεῖσι καὶ φυγῆς ὄνειδος οὐκ ἀληθές ὑπομείναντες, ἵνα μὴ καταγάγῃ τὸν ἐπινίκιον θρό- 15 αμβον ὁ ἀνήρ.

VIII. Βουλόμενοι δὴ τὸ στασιάξον ἐν τῆς στρατιᾶς ἐξελεῖν εἰς τέλος καὶ καταστήσαι πάλιν εἰς τὴν ἐξ ἀρχῆς ὁμόνοιαν ἅπαν τὸ πλῆθος, καὶ εἰς ἐν τοῦτο πᾶσαν εἰσφερόμενοι βουλήν τε καὶ πρόνοιαν, ἐπειδὴ οὔτε κολάσει μέρους τινὸς σωφρονέστερον ἀπο- 20 1756 δοῦναι τὸ λοιπὸν ἦν πολὺ καὶ αὐθαδὲς ὑπάρχου καὶ τὰ ὄπλα ἐν ταῖς χερσὶν ἔχον, οὔτε πειθοῖ προσαγαγέσθαι λόγων τοὺς οὐδὲ πεισθῆναι βουλομένους, δύο ταύτας ὑπέλαβον ἔσεσθαι τῶν στασιαζόντων αἰτίας τῆς διαλλαγῆς, τοῖς μὲν ἐπιεικτεστέρας 25 μετεληφῶσι φύσεως· ἐνῆν γὰρ τι καὶ τοιοῦτον ἐν τῷ πολλῷ· τὴν ἐπὶ τοῖς ὀνειδισμοῖς τῶν πολεμίων αἰσχύνῃ· τοῖς δὲ δυσαγάγοις ἐπὶ τὸ καλόν, ἦν ἅπαντα δέδοικεν ἀνθρώπου φύσις ἀνάγκην. ἵνα δὲ ταῦτα γένοιτο ἀμφοτέρω, ἐφῆκαν τοῖς πολεμίοις λόγῳ τε 30 αἰσχύνειν καλίζοντας σφῶν ὡς ἀνανδρον τὴν ἡσυχίαν, καὶ ἔργοις ὑπεροφίας τε καὶ καταφρονήσεως

πολλῆς γινομένοις ἀναγκάζειν ἀγαθοὺς γενέσθαι τοὺς ἐκουσίως εἶναι μὴ βουλομένους. γινομένων γὰρ τούτων, πολλὰς ἐλπίδας εἶχον ἦξιεν ἐπὶ τὸ στρατήγιον ἅπαντας ἀγανακτοῦντας καὶ καταβοῶν-  
 5 τας καὶ κελεύοντας ἠγεῖσθαι σφῶν ἐπὶ τοὺς πολεμίους· ὅπερ καὶ συνέβη. ὡς γὰρ ἤρξαντο τὰς ἐξόδους τοῦ χάρακος ἀποταφρεύειν τε καὶ ἀποσταυροῦν οἱ πολέμιοι, δυσανασχετήσαντες οἱ Ῥωμαῖοι ἐπὶ τῷ  
 10 ἔργῳ, τέως μὲν κατ' ὀλίγους, ἔπειτα ἀθρόοι συντρέχοντες ἐπὶ τὰς σιληνάς τῶν ὑπάτων, ἐκεκράγεσάν τε καὶ προδοσίαν αὐτοῖς ἐνεκάλουν, καὶ εἰ μὴ τις ἠγγίσειται σφίσι τῆς ἐξόδου, δίχα ἐκείνων αὐτοὶ τὰ ὄπλα ἔχοντες ἐπὶ τοὺς πολεμίους ἔλεγον ἐξελεύσεσθαι. ὡς δ' ἔξ ἀπάντων ἐγίνετο τοῦτο, παρεῖναι τὸν χρόνον  
 15 ὃν περιέμενον οἱ στρατηγοὶ νομίσαντες, ἐκέλευον τοῖς ὑπηρέταις συγκαλεῖν τὸ πλῆθος εἰς ἐκκλησίαν· καὶ προελθὼν Φάβιος τοιάδε εἶπε·

VIII. Βραδεία μὲν ἡ ἀγανάκτησις ὑμῶν γίνεται περὶ ὧν ὑβρίζεσθε ὑπὸ τῶν πολεμίων, ἄνδρες στρα-  
 20 τιῶταί τε καὶ ἠγεμόνες· καὶ τὸ βουλόμενον ἑκάστου χωρεῖν ὁμόσε τοῖς ἐναντίοις πολὺ τοῦ δέοντος ὕστερον φαινόμενον ἄωρόν ἐστι. παλαιότερον γὰρ ἔτι τοῦθ' ὑμᾶς ἔδει πράττειν, ὅτε πρώτου αὐ-  
 25 τοὺς εἶδετε καταβαίνοντας ἐκ τῶν ἐρυμάτων καὶ μάχης ἄρχειν βουλομένους. τότε γὰρ δήπου καλὸς ὁ περὶ τῆς ἠγεμονίας ἦν ἄγων καὶ τοῦ Ῥωμαίων φρονήματος ἄξιος. νῦν δὲ ἀναγκαῖος ἤδη γίνεται,  
 30 καὶ οὐδ' ἂν τὸ κράτιστον λάβῃ τέλος ὁμοίως καλός. εὖ δὲ καὶ νῦν ποιεῖτε ὅμως ἐπανορθώσασθαι τὴν βραδυτῆτα βουλόμενοι καὶ τὰ παραλειφθέντα ἀναλαβεῖν· καὶ πολλή χάρις ὑμῖν τῆς ἐπὶ τὰ κρά-  
 τιστα ὁρμῆς, εἴτ' ὑπ' ἀρετῆς γίνεται· κρεῖττον γὰρ

[ἔστιν] ὁψὲ ἀρξασθαι τὰ δέοντα πράττειν ἢ μηδέ-  
 ποτε· εἴτ' οὖν ἅπαντες ὁμοίους ἔχετε περὶ τῶν συμ-  
 φερόντων λογισμούς, καὶ ἡ προθυμία τῆς ἐπὶ τὸν ἀγῶνα ὁρμῆς ἅπαντας ἡ αὐτὴ κατέληψε. νῦν δὲ  
 5 φοβούμεθα, μὴ τὰ περὶ τῆς κληρουχίας προσκρού-  
 σματα τῶν δημοτικῶν πρὸς τοὺς ἐν τέλει μεγάλης αἰτία τῷ κοινῷ γένηται βλάβης· ὑπόψια τε ἡμᾶς κατέληψεν, ὡς ἡ περὶ τῆς ἐξόδου καταβολὴ καὶ ἀγα-  
 10 νάκτησις οὐκ ἀπὸ τῆς αὐτῆς προαιρέσεως παρὰ πάντων γίνεται· ἀλλ' οἱ μὲν ὡς τιμωρησόμενοι  
 1760 τοὺς πολεμίους προθυμείσθε τοῦ χάρακος ἐξελεῖν, οἱ δὲ ὡς ἀποδρασόμενοι. ἐξ ὧν δὲ παρέστηκεν ἡμῖν ταῦτα ὑποπτέειν, οὐ μάντις εἰσὶν οὐδὲ στοχασμοί, ἀλλ' ἔργα ἐμφανῆ καὶ οὐδὲ ταῦτα πα-  
 15 λαϊά, ἀλλ' ἐν τῷ παρελθόντι ἐνιαυτῷ γενόμενα,  
 ὡς ἅπαντες ἴστε, ὅτε ἐπὶ τοὺς αὐτοὺς πολεμίους τούτους πολλῆς καὶ ἀγαθῆς ἐξελεύσεως στρατιᾶς, καὶ τῆς πρώτης μάχης τὸ κράτιστον ἡμῖν λαβούσης τέλος, δυνηθέντος ἂν τοῦ τότε ἄγοντος ὑμᾶς ὑπά-  
 20 του Καίσιωνος, ἀδελφοῦ δὲ ἐμοῦ τουδὶ καὶ τὸν  
 χάρακα τῶν πολεμίων ἐξελεῖν καὶ νίκην τῇ πα-  
 τρίδι καταγαγεῖν λαμπροτάτην, φθονήσαντες αὐτῷ δόξης τινές, ὅτι δημοτικὸς οὐκ ἦν, οὐδὲ τὰ κεχα-  
 25 ρισμένα τοῖς πένησι διετέλει πολιτευόμενος, τῇ πρώτῃ νυκτὶ μετὰ τὴν μάχην ἀνασπᾶσαντες τὰς  
 σιληνάς ἄνευ παραγγέλματος ἀπέδρασαν ἐκ τοῦ χάρακος, οὔτε τὸν κίνδυνον ἐνθυμηθέντες τὸν κατα-  
 30 ληφόμενον αὐτοὺς ἀτάκτως καὶ χωρὶς ἠγεμόνος ἀπι-  
 1760 όντας ἐκ πολεμίας γῆς καὶ ταῦτα ἐν νυκτί, οὔτε τὴν αἰσχύνην ὅση καθέξειν αὐτοὺς ἐμελλεν ὑπολογισά-  
 μιν, ὅτι παρεχώρουν τοῖς πολεμίσι τῆς ἠγεμονίας, τὸ γοῦν ἐφ' ἑαυτοῖς μέρος, καὶ ταῦτα οἱ νικήσαντες



τοῖς κερρατημένοις. τούτους δὴ τοὺς ἄνδρας ὀρω-  
 δοῦντες, ᾧ ταξίαρχοί τε καὶ λοχαγοὶ καὶ στρατιῶ-  
 ται, τοὺς οὐτ' ἄρχειν δυναμένους οὔτε ἄρχεσθαι  
 βουλομένους πολλοὺς καὶ αὐθάδεις ὄντας καὶ τὰ  
 5 ὄπλα ἔχοντας ἐν χερσίν, οὔτε πρότερον ἐβουλόμεθα  
 μάχην συνάπτειν οὔτε νῦν ἐτι θαρσοῦμεν ἐπὶ τοι-  
 οῦτοις συμμάχοις τὸν ὑπὲρ τῶν μεγίστων ἀγῶνα  
 ἄρασθαι, μὴ κωλύματα καὶ βλάβαι γένωνται τοῖς  
 ἅπαντα τὰ καθ' ἑαυτοὺς πρόθυμα παρεχομένοις. εἰ  
 10 μέντοι κἀκείνων ὁ θεὸς ἐπὶ τὰ κρείττω τὸν νοῦν ἄρει  
 νῦν καὶ καταβαλόντες τὸ στασιάζον, ὑφ' οὗ νῦν  
 πολλὰ καὶ μεγάλα βλάπτεται τὸ κοινόν, ἢ γε δὴ εἰς τοὺς  
 τῆς εἰρήνης ἀναβαλόμενοι καιροῦς, [ἤδη] ἐπανορθώ-  
 σασθαι βούλονται τὰ παρελθόντα ὀνειδίη τῇ νῦν ἀρετῇ,  
 15 μὴδὲν ἐτι τὸ κωλύσον ἔστω χωρεῖν ὑμᾶς ἐπὶ τοὺς  
 πολεμίους, τὰς ἀγαθὰς προβαλλομένους ἐλπίδας. 1701  
 ἔχομεν δὲ πολλὰς μὲν καὶ ἄλλας ἀφορμὰς εἰς τὸ νι-  
 κᾶν, μεγίστας δὲ καὶ κυριωτάτας ἄς τὸ τῶν πολεμιῶν  
 ἀνόητον [ἡμῶν] παρέχει, οἳ γε πλήθει στρατιᾶς μα-  
 20 κρῶ προὔχοντες ἡμῶν, καὶ τούτω μόνῳ δυνηθέντες  
 ἂν πρὸς τὰς ἡμετέρας τόλμας τε καὶ ἐμπειρίας ἀντέ-  
 χειν, ἀπεστερήκασι τῆς μόνης ὠφελείας ἑαυτοὺς ἀπα-  
 ναλῶσαντες τὸ πλεῖον τῆς δυνάμεως μέρος εἰς τὰς  
 τῶν φρουριῶν φυλακὰς. ἔπειτα δέον αὐτοὺς σὺν  
 25 εὐλαβείᾳ καὶ λογισμῶ σῶφρονι πράττειν ἕκαστα,  
 ἐνθυμουμένους πρὸς οἷους ἄνδρας καὶ πολὺ ἀλκι-  
 ματέρους αὐτῶν ὁ κίνδυνος ἔσται, θαρσέως καὶ  
 ἀπερισκέπτως ἐπὶ τὸν ἀγῶνα χωροῦσιν, ὡς ἅμαχοι  
 [δὴ] τινες καὶ ὡς ἡμῶν καταπεπληγῶτων αὐτούς. αἱ  
 30 γοῦν ἀποταφρεύσεις καὶ αἱ μέχοι τοῦ χάρακος ἡμῶν  
 καθιππεύσεις καὶ τὰ πολλὰ ἐν λόγοις τε καὶ  
 ἔργοις ὑβρίσματα τοῦτο δύναται. ταῦτά τε δὴ ἐν- 1702

θυμούμενοι, καὶ τῶν προτέρων ἀγῶνων μεμνη-  
 μένοι πολλῶν ὄντων καὶ καλῶν ἐν οἷς αὐτοὺς ἐνι-  
 κᾶτε, χωρεῖτε μετὰ προθυμίας καὶ ἐπὶ τόνδε τὸν  
 ἀγῶνα καὶ ἐν ᾧ ἂν ὑμῶν ἕκαστος χωρῖον ταχθῆ,  
 τοῦτο ὑπολαβέτω καὶ οἶκον εἶναι καὶ κληῖρον καὶ 5  
 πατρίδα καὶ ὃ τε σώζων τὸν παραστάτην ἑαυτῷ  
 πράττειν τὴν σωτηρίαν ὑπολαβέτω, καὶ ὁ ἐγκατα-  
 λιπὼν τὸν πέλας ἑαυτὸν ἠγείσθω τοῖς πολεμίοις  
 προδιδόναι. μάλιστα δ' ἐκεῖνο μεμνησθαι προσήκει,  
 ὅτι μενόντων μὲν ἀνδρῶν καὶ μαχομένων ὀλίγον τὸ 10  
 ἀπολλύμενόν ἐστιν, ἐγκλιναύτων δὲ καὶ φευγόντων  
 κομιδῇ βραχὺ τὸ σωζόμενον.

1703 X. Ἔτι δὲ αὐτοῦ λέγοντος τὰ εἰς τὸ γενναῖον  
 ἐπαγωγὰ, καὶ πολλὰ μεταξὺ τῶν λόγων ἐκχέουτος 15  
 δάκρυα, λοχαγῶν τε καὶ ταξίαρχων καὶ τῶν ἄλλων  
 στρατιωτῶν ἕκαστον ᾧ συνηδεῖ τι λαμπρὸν ἔργον  
 ἐν μάχαις ἀποδειξαμένῳ κατ' ὄνομα ἀνακαλοῦντος,  
 καὶ πολλὰ καὶ μεγάλα τοῖς ἀριστεύσασιν κατὰ τὴν  
 μάχην φιλάνθρωπα δώσειν ὑπισχνουμένου πρὸς τὸ  
 τῶν πράξεων μέγεθος, τιμὰς τε καὶ πλούτους καὶ 20  
 τὰς ἄλλας βοηθείας, ἀναβοήσεις ἐξ ἀπάντων ἐγίνοντο  
 θαρρεῖν τε παρακλεινομένων καὶ ἄρειν ἐπὶ τὸν ἀγῶνα  
 ἀξιούντων. ἐπειδὴ δὲ ἐπαύσατο προέρχεται τις  
 ἐκ τοῦ πλήθους, Μάρκος Φλαβολήσιος ὄνομα, ἀνὴρ  
 δημοτικὸς μὲν καὶ αὐτουργός, οὐ μὴν τῶν ἀπερριμ- 25  
 μένων τις, ἀλλὰ τῶν ἐπαινουμένων δι' ἀρετὴν καὶ τὰ  
 πολέμια ἄλκιμος, καὶ δι' ἄμφω ταῦτα ἐνὸς τῶν ταγμα-  
 1704 των τῇ λαμπροτάτῃ ἀρχῇ κεκοσμημένος, ἢ τὰς ἐξή-  
 κοντα ἐκατονταρχίας ἐπεσθαί τε καὶ τὸ κελευόμενον  
 ὑπηγετεῖν κελεύει ὁ νόμος. τούτους Ῥωμαῖοι τοὺς 30  
 ἠγμένους τῇ πατρίᾳ γλώττῃ περιμοπίλους καλοῦσιν.  
 οὗτος ὁ ἀνὴρ ἦν δὲ πρὸς τοῖς ἄλλοις μέγας τε καὶ

καλὸς ἰδεῖν· στὰς ὄθεν ἅπασιν ἐμελλεν ἔσεσθαι φανερός, Ἐπεὶ τοῦτο, ἔφησεν, ὦ ὑπατοί, δεδοίκατε μὴ τὰ ἔργα ἡμῶν οὐχ ὅμοια γένηται τοῖς λόγοις; ἐγὼ πρῶτος ὑμῖν ὑπὲρ ἑαυτοῦ τὸ βέβαιον τῆς ὑποσχέσεως ἐκ τῆς μερίστης πίστεως παρεξομαί· καὶ ὑμεῖς δέ, ὦ πολῖται τε καὶ τῆς αὐτῆς κοινωνοὶ τύχης, ὅσοι διεγνώκατε εἰς ἴσον καταστήσαι τὰ ἔργα τοῖς λόγοις, οὐκ ἂν ἀμαρτάνοιτε τὸ αὐτὸ ποιοῦντες ἐμοί. Ταῦτ' εἰπὼν καὶ τὸ ξίφος ἀνατείλας, ὤμοσε τὸν ἐπιχώριόν τε Ῥωμαίοις καὶ κράτιστον ὄρκον, τὴν ἀγαθὴν ἑαυτοῦ πίστιν, νικήσας τοὺς πολεμίους ἦξεν εἰς τὴν πόλιν, ἄλλως δὲ οὐ. τοῦτον ὁμόσαντος τοῦ Φλάβολίου τὸν ὄρκον, πολὺς ἐξ ἀπάντων ἐπαινος ἐγένετο· καὶ αὐτίκα οἱ τε ὑπατοὶ ἀμφοτέροισι τὸ αὐτὸ ἔδρων καὶ οἱ τὰς ἐλάττους ἔχοντες στρατηγίας χιλιάρχοι τε καὶ λοχαγοί, τελευτῶσα δὲ ἡ πληθὺς. ἐπεὶ δὲ τοῦτ' ἐγένετο, πολλὴ μὲν εὐθυμία πᾶσιν ἐπέπεσε, πολλὴ δὲ φιλότιμος ἀλλήλων, θάρσος τε αὐτῶν καὶ μένος· καὶ ἀπελθόντες ἐκ τῆς ἐκκλησίας, οἱ μὲν ἵπποις χαλινούσιν ἐνέβαλον, οἱ δὲ ξίφη καὶ λόγχας ἔθηγον, οἱ δὲ τὰ σκεπαστήρια τῶν ὀπλῶν ἐξέματτον· καὶ ὀλίγον πᾶσα ἦν ἔτοιμος εἰς τὸν ἀγῶνα ἢ στρατιά. οἱ δὲ ὑπατοὶ τοὺς θεοὺς εὐχαῖς τε καὶ θυσίαις καὶ λιταῖς ἐπικαλεσάμενοι τῆς ἐξόδου σφίσι γενέσθαι ἡγεμόνας, ἐξῆγον ἐκ τοῦ χάρακος ἐν τάξει καὶ κόσμως τὸν στρατόν. καὶ οἱ Τυρρηνοὶ κατιόντας αὐτοὺς ἐκ τῶν ἐρυμάτων ἰδόντες, ἐθαύμασαν τε καὶ ἀντεπεξῆσαν ἀπάσῃ τῇ δυνάμει.

XI. Ὡς δὲ εἰς τὸ πεδίου ἀμφοτέροισι κατέστησαν, καὶ τὸ πολεμικὸν ἐσήμηναν αἱ σάλπιγγες, ἔθεον ἀλαλάξαντες ὁμοσε· καὶ συμπεσόντες ἀλλήλοισι ἵππεῖς τε ἵππεῦσι καὶ πεζοὶ πεζοῖς ἐμάχοντο, καὶ

πολὺς ἐξ ἀμφοτέρων ἐγένετο φόνος. οἱ μὲν οὖν τὸ δεξιὸν ἔχοντες τῶν Ῥωμαίων κέρας, οὗ τὴν ἡγεμονίαν εἶχεν ὁ ἕτερος τῶν ὑπᾶτων Μάλλιος, ἐξέωσαν τὸ καθ' ἑαυτοὺς μέρος, καὶ καταβάντες ἀπὸ τῶν ἵππων ἐμάχοντο πεζοί. οἱ δὲ ἐν τῷ εὐωνύμῳ κέρατι ταχθέντες ὑπὸ τοῦ δεξιοῦ τῶν πολεμίων ἐνκλωῦντο. ἦν γὰρ ἡ Τυρρηνῶν φάλαγξ κατὰ τοῦτο τὸ χωρίον ὑπερπετής τε καὶ οὐκ ὀλίγη μείζων τῆς ἐτέρας. παρερρήγνυτο δὴ ταύτῃ τὸ Ῥωμαϊκὸν στρατευμα καὶ πολλὰς πληγὰς ἐλάμβανεν. ἡγεῖτο δὲ τούτου τοῦ κέρας Κόντος Φάβιος, πρεσβευτῆς καὶ ἀντιστράτηγος ὢν, ὁ δις ὑπατεύσας· καὶ μέχρι πολλοῦ ἀντεῖχε τραύματα λαμβάνων παντοδαπά· ἔπειτα λόγχῃ βληθεὶς εἰς τὰ στέθρα μέχρι τῶν σπλάγχχνων ἐλθούσης τῆς αἰχμῆς ἔξαιμος γενόμενος πίπτει. ὡς δὲ τοῦτ' ἤκουσεν ὁ ἕτερος τῶν ὑπᾶτων, Μάρκος Φάβιος· ἦν δὲ κατὰ μέσῃν τὴν φάλαγγα τεταγμένος· τοὺς κρατίστους τῶν λόχων ἀναλαβὼν καὶ τὸν ἕτερον τῶν ἀδελφῶν Καίσωνα Φάβιον ἀνακαλεσάμενος, παρήλαυνεν [ἐπὶ] τὴν ἑαυτοῦ φάλαγγα καὶ μέχρι πολλοῦ προελθὼν, ἐπειδὴ παρήλλαξεν τὸ δεξιὸν τῶν πολεμίων κέρας, ἤλαυνεν ἐπὶ τοὺς κυκλούμενους. ἐμπροσθεν δὲ αὐτοῖς, φόνον τε τοῖς ἐν χερσὶ ποιεῖ πολλὸν καὶ φυγὴν τῶν πρόσω· τὸν τε ἀδελφὸν ἔτι ἐμπνέοντα καταλαβὼν αἴρεται. ἐκεῖνος μὲν οὖν οὐ πολλὸν ἔτι χρόνον ἐπιβιούς ἀποθνήσκει· τοῖς δὲ τιμωροῦσιν αὐτῷ θυμὸς ἔτι μείζων παρέστη [καὶ μείζων] πρὸς τὸ ἀντίπαλον· καὶ οὐδὲν ἔτι τῆς ἰδίας ψυχῆς προνοούμενοι σὺν ὀλίγοις εἰς μέσους ἐμπροσθεν τοὺς μάλιστα συνεστηκότας τῶν πολεμίων, σωροὺς ἐξεπλήθουν νεκρῶν. κατὰ μὲν δὴ τοῦτο τὸ μέρος ἔκαμεν ἡ Τυρρηνῶν φάλαγξ, καὶ οἱ πρότε-

ρον ὠσάμενοι τοὺς πολεμίους ὑπὸ τῶν κερρατημέ-  
νων ἀνεκόπησαν. οἱ δὲ τὸ εὐώνυμον ἔχοντες κέρας  
κάμνοντες ἤδη καὶ φυγῆς ἄρχοντες, ἔνθα ὁ Μάλλιος  
ἦν, ἐτρέψαντο τοὺς καθ' ἑαυτούς. παλτῶ γάρ τις βα-  
170 λῶν τὸν Μάλλιον διὰ τοῦ γόνατος ἄχρι τῆς ἰνυίας δι-  
ήρεισε τὴν λόγχην· καὶ τὸν μὲν οἱ περὶξ ἄραντες ἐπὶ  
τὴν παρεμβολὴν ἀπεκόμιζον, οἱ δὲ πολέμιοι τὸν ἡγε-  
μόνα τῶν Ῥωμαίων τεθυηκέναι δόξαντες ἐπερρώ-  
σθησαν, καὶ παραβοηθησάντων αὐτοῖς τῶν ἐτέρων  
10 ἐνέκειντο τοῖς Ῥωμαίοις οὐκ ἔχουσιν ἡγεμόνα. ἠναγ-  
κάσθησαν δὲ πάλιν οἱ Φάβιοι καταλιπόντες τὸ εὐώ-  
νυμον κέρας τῷ δεξιῷ βοηθεῖν· καὶ οἱ Τυρρηνοὶ  
προσιόντας αὐτοὺς στίφει καρτερῶ μαθόντες τῆς μὲν  
ἐπὶ πλέον διώξεως ἀποτρέπονται, πυκνώσαντες δὲ  
15 τοὺς λόχους ἐμάχοντο ἐν τάξει, καὶ πολλοὺς μὲν τῶν  
σφετέρων ἀπέβαλον, πολλοὺς δὲ καὶ τῶν Ῥωμαίων  
ἀπέκτειναν.

XII. Ἐν ᾧ δὲ ταῦτ' ἐγίνετο, οἱ τὸν χάρακα τὸν  
ἐκλειφθέντα ὑπὸ τοῦ Μαλλίου καταλαβόμενοι Τυρ-  
20 ρηνοὶ συνθήματος ἀρθέντος ὑπὸ τοῦ στρατηγῶ  
σὺν τάξει πολλῶ καὶ προθυμίᾳ μεγάλη χωροῦντες  
ἐπὶ τὸν ἕτερον ἠπείγοντο τῶν Ῥωμαίων χάρακα,  
ὡς οὐκ ἀξιοχρέω δυνάμει φυλαττόμενον. καὶ ἦν ἡ  
δόξα αὐτῶν ἀληθής. ἔξω γὰρ τῶν τριαρίων καὶ ὀλί-  
25 γων ἄλλων τῶν ἐν ἀκμῇ τὸ λοιπὸν πλήθος ἐμπό-  
ρων τε καὶ θεραπόντων καὶ χειροτεχνῶν ἦν ἐν αὐτῷ·  
γίνεται τε πολλῶν εἰς ὀλίγον συνελαθέντων χωρίου·  
περὶ γὰρ ταῖς πύλαις ὁ ἀγὼν ἦν· ὄξεϊα καὶ χαλεπὴ  
μάχη, καὶ νεκροὶ παρ' ἀμφοτέρων πολλοί. ἐν τού-  
30 τῳ τῷ ἔργῳ ὃ τε [Μάλλιος] ὑπάτος ἐκβοηθῶν ἅμα  
τοῖς ἱππεῦσιν, ἐπειδὴ ὁ ἵππος ἔπεσε συγκατενεχθεὶς  
καὶ ἀδύνατος ὢν ἀναστήναι ὑπὸ πλήθους τραυμάτων,

ἀποθνήσκει καὶ πολλοὶ καὶ ἀγαθοὶ περὶ αὐτὸν  
ἄλλοι νέοι. μετὰ δὲ τὸ πάθος τοῦτο εὐθύς ὁ χάραξ  
ἠλίσκετο, καὶ τέλος εἶχε τοῖς Τυρρηνοῖς τὰ μαν-  
τεύματα. εἰ μὲν οὖν ἐταμειύσαντο τὴν παρούσαν  
εὐτυχίαν καὶ διὰ φυλακῆς εἶχον τὸν χάρακα, τὰς 5  
1770 τε ἀποσκνεῦσ τῶν Ῥωμαίων κατέσχον καὶ αὐτοὺς  
αἰσχυρῶς ἀπελθεῖν ἠνάγκαζον· νῦν δὲ πρὸς ἀρπα-  
γὴν τῶν ἀπολειφθέντων τραπόμενοι καὶ ἀναψύ-  
χοντες τὸ λοιπὸν οἱ πλείους, καλὴν ἄγραν ἐκ τῶν  
χειρῶν ἀφῆρέθησαν. ὡς γὰρ ἀπηγγέλθη θατέρον τῶν 10  
ὑπάτων ἢ τοῦ χάρακος ἄλωσις, ἠπείγετο σὺν τοῖς  
ἀρίστοις ἱππέων τε καὶ πεζῶν. καὶ οἱ Τυρρηνοὶ μα-  
θόντες αὐτὸν ἐπιόντα περιεστεφάνωσαν τὸν χάρακα,  
μάχη τε αὐτῶν γίνεται καρτερά, τῶν μὲν ἀνασώσα-  
σθαι βουλομένων τὰ σφέτερα, τῶν δὲ μὴ πασσυδι 15  
διαφθαρωῶσιν ἄλόντος τοῦ χάρακος δεδοικῶτων.  
χρόνου δὲ γινομένου πλείονος καὶ τῶν Τυρρηνῶν  
πολλὰ πλεονεκυόντων· ἦν γὰρ αὐτοῖς ἐξ ὑπερδε-  
ξίαν τε χωρίων καὶ πρὸς ἀνθρώπους δι' ἡμέρας 20  
ὅλης κευμηκῶτας ἢ μάχη· Τίτος Σίγκιος ὁ πρε-  
σβυτῆς καὶ ἀντιστράτηγος, κοινωσάμενος τῷ ὑπά-  
τῳ τὴν αὐτοῦ διάνοιαν τὸ ἀνακλητικὸν ἐκέλευε  
1771 σημαίνειν, καὶ καθ' ἕν ἅπαντας γενομένους μιᾷ  
προσβάλλειν πλευρᾷ τοῦ χάρακος, καθ' ὃ μάλιστα  
τὸ χωρίον ἦν ἐπιμαχώτατον· τὰ δὲ κατὰ τὰς πύλας 25  
εἶλασε μέρη κατὰ τινα εἰκότα λογισμόν, ὃς οὐκ  
ἐψεύσατο αὐτόν, ὅτι σωθήσεσθαι μὲν ἐλπίσαντες  
οἱ Τυρρηνοὶ μεθήσονται τοῦ χάρακος, ἐν ἀπογνώ-  
σει δὲ τούτου γενομένοι κνκλώσεως τε πάντοθεν ὑπὸ  
τῶν πολεμίων γενομένης καὶ οὐδεμιᾶς ὑπαρχούσης 30  
ἐξόδου ἀναγκαῖον ἔξουσι τὸ εὐτολμον. γενομένης δὲ  
καθ' ἕν χωρίου τῆς προσβολῆς οὐκέτι πρὸς ἄλλην οἱ

Τυρρηνοὶ ἐτρόποντο, ἀλλ' ἀνοίξαντες τὰς πύλας ἐπὶ τὸν ἑαυτῶν ἀνεσώζοντο χάρακα.

XIII. Ὁ δ' ὑπάτος ἐπειδὴ τὸ δεινὸν ἀπεώσατο, παρεβόηθει πάλιν τοῖς ἐν τῷ πεδίῳ. αὕτη μερίστη λέγεται τῶν πρὸ αὐτῆς γενέσθαι Ῥωμαίοις μάχη, πλήθει τε ἀνθρώπων καὶ μήκει χρόνου καὶ τῷ ἀγχι-  
 5 στρόφῳ τῆς τύχης. αὐτῶν μὲν γὰρ τῶν ἐκ τῆς πό-  
 1771 λεως Ῥωμαίων ἢ κρατίστη τε καὶ ἐπίλεκτος ἀκμῆ  
 1174 δισμυρίων μάλιστα πεζῶν ἐγένετο, καὶ τῶν συντεταγ-  
 10 μένων τοῖς τέτταρσι τάγμασιν ἱππέων ὁμοῦ τι χιλίων  
 καὶ διακοσίων, ἀποίκων δὲ καὶ συμμάχων ἑτέρα το-  
 σαύτη. χρόνος δ' ἐμηκύνθη τοῦ ἀγῶνος ὀλίγῳ πρό-  
 15 τερον τῆς μεσημβρίας ἀρχάμενος μέχρι δύσεως ἡλίου.  
 τὰ δὲ τῆς τύχης μέχρι πολλοῦ τῆδε καὶ τῆδε νίκαις  
 1175 τε καὶ ἤτταις ταλαντευόμενα διέμεινεν· ὑπάτου δὲ  
 θάνατος ἐγένετο καὶ πρεσβευτοῦ δις ὑπατεύσαντος  
 καὶ ἄλλων πολλῶν ἠγεμόνων καὶ ταξίαρχων καὶ λο-  
 χαγῶν, ὅσων οὐδέπω πρότερον. τὸ μέντοι κράτος τοῦ  
 ἀγῶνος ἐδόκει περὶ τοὺς Ῥωμαίους γερονέαι κατ'  
 20 ἄλλο μὲν οὐδέν, ὅτι δὲ τῆ ἐπιούσῃ νυκτὶ καταλιπόν-  
 τες τὸν χάρακα οἱ Τυρρηνοὶ ἀνέξευξαν. τῆ δ' ἐξῆς  
 ἡμέρᾳ πρὸς ἀρπαγὰς τῆς ἐκλειφθείσης ὑπὸ τῶν Τυρ-  
 ρηνῶν παρεμβολῆς οἱ Ῥωμαῖοι τραπόμενοι καὶ ταφὰς  
 ποιησάμενοι τῶν σφετέρων νεκρῶν ἀπῆλθον εἰς τὸν  
 1773 25 ἑαυτῶν χάρακα. ἐκεῖ δ' ἐκκλησίαν ποιησάμενοι τοῖς  
 ἀγωνισαμένοις λαμπρῶς τὰς ἀριστείους ἀπέδοσαν τι-  
 μάς, πρῶτῳ μὲν Καίσωνι Φαβίῳ τῷ τοῦ ὑπάτου  
 ἀδελφῷ μεγάλα καὶ θαυμαστά ἔργα ἀποδειξαμένῳ·  
 30 δευτέρῳ δὲ τῷ Σικκίῳ, τῷ διαπραξαμένῳ τὸν χάρακα  
 ἀνασσεῶσθαι· τρίτῳ δὲ Μάρκῳ Φλαβολήῳ τῷ ἠγε-  
 μόνι τοῦ τάγματος, τοῦ τε ὄρκον χάριν καὶ τῆς παρὰ  
 τὰ δεινὰ ῥώμης. διαπραξάμενοι δὲ ταῦτα καὶ μέιναν-

τες ἡμέρας ὀλίγας ἐπὶ τοῦ χάρακος, ὡς οὐδείς ἀντε-  
 5 ἐξῆει τῶν πολεμίων μαχησόμενος, ἀπήεσαν ἐπ' οἴκου.  
 πάντων δὲ τῶν κατὰ τὴν πόλιν, ὡς ἐπὶ μερίστῳ ἀγῶνι  
 κάλλιστον τέλος εὐληφότε, τὴν ἐπινίκιον τιμὴν τοῦ  
 θριάμβου τῷ περιόντι ὑπάτῳ προσθεῖναι βουλομένων, 5  
 ἤρρησάτο τὴν χάριν αὐτῶν ὁ ὑπάτος, οὔτε ὅσιον εἶναι  
 λέγων οὔτε θεμιτὸν ἐπ' ἀδελφοῦ θανάτῳ καὶ συνάφ-  
 10 χοντος ἀποβολῆ πομπεύειν καὶ στεφανηφορεῖν· ἀπο-  
 θεῖς δὲ τὰς σημαίας καὶ τοὺς στρατιώτας ἀπολύσας  
 1174 ἐπὶ τὰ οἰκεῖα τὴν ὑπατείαν ἀπωμόσατο, δευτεῖν ἔτι μη-  
 10 νῶν εἰς τὸν ἐνιαύσιον χρόνον λειπομένων, ἀδύνατος  
 ὦν τὰ τῆς ἀρχῆς ἔτι πράττειν. ἑταλαιπώρει γὰρ  
 ὑπὸ τραύματος ἐξαισίου καὶ ἦν κλινοπετής.

XIII. Ἐλομένης δὲ τῆς βουλῆς μεσοβασιλεῖς τῶν  
 ἀρχαίφρασιων ἔνεκα, καὶ τοῦ δευτέρου μεσοβασιλέως 15  
 συγκαλέσαντος εἰς τὸ πεδίον τοὺς λόχους, ἀποδείκνυ-  
 ται Καίσων Φάβιος ὁ τὰ ἀριστεῖα λαβὼν ἐκ τῆς  
 μάχης, ἀδελφὸς δὲ τοῦ τὴν ἀρχὴν ἀποθεμένου, τὸ  
 τρίτον ὑπάτος· καὶ σὺν αὐτῷ Τίτος Οὐεργίνιος. οὗτοι  
 διαλαχόντες τὰς δυνάμεις ἐξήεσαν εἰς τὴν ὑπαιθρον· 20  
 Φάβιος μὲν Αἰκανοῖς πολεμήσων προνομούουσι τοὺς  
 Λατίνων ἀγρούς, Οὐεργίνιος δὲ Οὐιεντανοῖς. Αἰκα-  
 νοὶ μὲν οὖν, ἐπειδὴ στρατὸν ἐλευσόμενον ἐπ' αὐτοὺς  
 ἔγνωσαν, ἀναστάντες ἐκ τῆς πολεμίας διὰ τάχους  
 ἀπῆλθον εἰς τὰς ἑαυτῶν πόλεις· καὶ μετὰ ταῦτα 25  
 1175 λεηλατουμένης τῆς σφετέρας γῆς ἠνείχοντο, ὥστε  
 πολλῶν κρατῆσαι χορημάτων τὸν ὑπάτον καὶ σωμάτων  
 καὶ ἄλλης λείας ἐξ ἐφόδου. Οὐιεντανοὶ δὲ κατ' ἀρχὰς  
 ἐντὸς τείχους μένοντες, ἐπειδὴ καιρὸν ἔχειν ἔδοξαν  
 ἐπιτήδειον, ἐπέθεντο τοῖς πολεμίοις ἐσκεδασμένοις 30  
 ἀπὸ τὰ πεδία καὶ πρὸς ἀρπαγὴν τετραμμένοις τῆς  
 λείας. ἔχοντες δὲ πολλὴν καὶ συντεταγμένην δύναμιν  
 16\*

ἐμβάλλουσιν εἰς αὐτούς, καὶ τήν τε λείαν ἀφαιροῦν-  
 ται, καὶ τοὺς ὁμοσε χωροῦντας, οὓς μὲν ἀποκτείνου-  
 σιν, οὓς δ' εἰς φυγὴν τρέπουσι· καὶ εἰ μὴ Τίτος  
 Σίκκιος πρεσβευτῆς τότε ὢν στίφει συντεταγμένω  
 5 πεζῶν τε καὶ ἱππέων παραβοηθήσας ἐπέσχευ αὐτούς,  
 οὐδὲν ἂν τὸ κωλύσον ἦν πάσαν ἀπολέσθαι τὴν στρα-  
 τιάν. ἐκείνου δ' ἐμποδῶν γενομένου συνελθεῖν ἔφθα-  
 σαν οἱ λοιποὶ οἱ καθ' ἓνα διεσκεδασμένοι· πάντες  
 δὲ ἐν ταύτῳ γενομένοι λόφον τινα καταλαμβάνονται  
 10 περὶ δαίλην ὄψιαν, καὶ τὴν ἐπιούσαν νύκτα ἐν τούτῳ  
 ἔμειναν. ἐπαρθέντες δὲ Οὐιεντανοὶ τῷ κατορθώματι  
 πλησίον τοῦ λόφου τίθενται τὰ ὄπλα, καὶ τοὺς ἐκ  
 τῆς πόλεως ἐκάλουν ὡς κατακεκλεικότες τοὺς Ῥωμαίους 1770  
 εἰς χωρίον, ἔνθα οὐδὲν τῶν ἐπιτηδείων ἔμελλον ἔξειν,  
 15 καὶ προσαναγκάσουτες οὐκ εἰς μακρὰν παραδοῦναι  
 σφίσι τὰ ὄπλα. γίνεταί τε αὐτῶν συχνοῦ ἐλθόντος  
 ὄχλου δύο στρατεύματα περὶ τὰς ἐπιμάχους λαγόνας  
 τοῦ λόφου, πολλὰ δὲ ἄλλα φρονῖρια βραχύτερα κατὰ  
 τοὺς ἦπτον ἐπικαίρους τόπους· καὶ πάντα ἦν μεστὰ  
 20 ὄπλων. ὁ δ' ἕτερος τῶν ὑπάτων Φάβιος γραμμάτων  
 παρὰ τοῦ συνάρχοντος ἀφικομένων ἐπιγνοὺς [ὡς] ὅτι  
 ἐν ἐσχάτοις εἰσὶν οἱ κατακλεισθέντες ἐν τῷ λόφῳ,  
 καὶ κινδυνεύουσιν εἰ μὴ τις αὐτοῖς βοηθήσει λιμῷ  
 ἀλῶναι, ἀναστήσας τὸν στρατὸν ἦγεν ἐπὶ τοὺς Οὐιεν-  
 25 τανοὺς σὺν τάξει· καὶ εἰ μὴ βραδύτερον ἡμέρα διή-  
 νυσε τὴν ὁδόν, οὐδὲν ἂν ὤνησεν, ἀλλὰ διεφθαρυμένην  
 τὴν ἐκεῖ στρατιάν κατέλαβε. πιεζόμενοι γὰρ τῇ σπά-  
 νει τῶν ἀναγκαίων οἱ κατέχοντες τὸν λόφον ἐξῆλθον  
 ὡς τὸν εὐπρεπέστατον αἰρησόμενοι τῶν θανάτων,  
 30 καὶ συμβαλόντες τοῖς πολεμίοις ἐμάχοντο κεκμηκότες  
 οἱ πλείους τὰ σώματα λιμῷ τε καὶ δίψει καὶ ἀγρυπνίᾳ  
 καὶ τῇ ἄλλῃ κακώσει. μετ' οὐ πολὺ δὲ ὡς τὸ τοῦ 1771

Φαβίου στρατεύματα προσῖον ὥφθη πολὺ τε καὶ συν-  
 τεταγμένον, θάρσος μὲν ἔφερε τοῖς σφετέροις, δέος  
 δὲ τοῖς πολεμίοις· καὶ οἱ Τυρρηνοὶ οὐκέτι ἀξιόμαχοι  
 εἶναι νομίσαντες πρὸς ἀγαθὴν τε καὶ ἀκμῆτα δύνα-  
 μιν εἰς ἀγῶνα χωρεῖν, ὥχοντο ἐκλιπόντες τοὺς χάρα- 5  
 κας. ὡς δ' εἰς ταῦτο συνῆλθον αἱ τῶν Ῥωμαίων  
 δυνάμεις ἀμφοτέραι, στρατόπεδόν τε ποιοῦνται μέγα  
 πλησίον τῆς πόλεως ἐν ἐχυρῷ, καὶ πολλὰς ἡμέρας  
 αὐτόθι διατρίψαντες καὶ τὴν ἀρίστην τῶν Οὐιεντα-  
 νῶν χώραν λεηλατήσαντες ἀπῆγον ἐπ' οἴκου τὴν 10  
 στρατιάν. ὡς δ' ἔγνωσαν οἱ Οὐιεντανοὶ τὰς δυνά-  
 μεις τῶν Ῥωμαίων ἀφειμένας ἀπὸ τῶν σημαίων, τὴν  
 εὐξανον ἀναλαβόντες νεότητα, ἦν τε αὐτοὶ συντεταγ-  
 μένην εἶχον καὶ τὴν παρὰ τῶν πλησιοχώρων παροῦ-  
 σαν, ἐμβάλλουσιν εἰς τὰ προσκειμένα τῇ σφετέρῃ 15  
 χώρα πεδία, καὶ διαρπάξουσι καρπῶν τε καὶ βοσκη-  
 μάτων καὶ ἀνθρώπων ὄντα μεστὰ. κατέβησαν γὰρ ἐκ  
 τῶν ἐρυμάτων οἱ γεωργοὶ χιλοῦ τε τῶν βοσκημάτων  
 1778 ἕνεκα καὶ ἐργασίας τῶν ἀγρῶν, πιστεύοντες τῇ σφε-  
 τέρα στρατιᾷ προκαθημένη καὶ οὐ φθάσαντες ἀπελ- 20  
 θούσης ἀνασκευάσασθαι πάλιν, οὐδ' ἐλπίσαντες  
 τοσαῦτα κινηκωμένους τοὺς Οὐιεντανοὺς ταχέειαν  
 οὕτως ἀντεπιχείρησιν κατὰ τοῦ ἀντιπάλου ποιήσεσθαι.  
 αὕτη χρόνου μὲν μήκει βραχεῖα ἐγένετο ἢ τῶν Οὐιεν-  
 τανῶν εἰς τὴν Ῥωμαίων γῆν ἐμβολή, πλήθει δὲ χώ- 25  
 ρας ἦν ἐπλήθον ἐν τοῖς πένυ μεγάλῃ, καὶ ἀχθηδόνια  
 σὺν αἰσχύνη Ῥωμαίοις ἀήθη παρέσχευ ἄχρι Τεβέ-  
 ρειῶς τε ποταμοῦ καὶ ὄρους Ἰανίλου στάδια τῆς  
 Ῥώμης οὐδ' εἴκοσιν ἀφεστῶτος ἀφικομένη. [ἦ δὲ]  
 κωλύσουσα γὰρ δύναμις ἐπὶ πλείον χωρεῖν τὰ πολέ- 30  
 μια οὐκ ἦν ὑπὸ σημαίαις. ἔφθασε γοῦν τὸ τῶν

Οὐιεντανῶν στράτευμα πρὶν συνελθεῖν τε καὶ λοχι- 1777  
σθῆναι τοὺς Ῥωμαίους ἀπελθόν.

XV. Συναχθείσης δὲ μετὰ τοῦτο τῆς βουλῆς ὑπὸ  
τῶν ὑπάτων, καὶ σκέψεως γενομένης τίνα χρὴ πολε-  
5 μείν τοῖς Οὐιεντανοῖς τρόπον, ἢ νικῶσα ἢ γνώμη,  
στράτευμα συνεστηκὸς ἔχειν ἐπὶ τοῖς ὁρίοις, ὃ διὰ  
φυλακῆς ἔξει τὴν χώραν θυραυλοῦν καὶ αἰεὶ μένον  
ἐν τοῖς ὅπλοις. ἐλύπει δ' αὐτοὺς ἢ τε εἰς τοὺς φρου-  
ροὺς δαπάνη πολλὴ σφόδρα ἐσομένη, τοῦ τε κοινοῦ  
10 ταμείου διὰ τὰς συνεχεῖς στρατείας ἐξαναλουμένου  
καὶ τῶν ἰδίων βίων ἀπειρηκῶτων ταῖς εἰσφοραῖς·  
καὶ ἔτι μᾶλλον ἢ τῶν ἀποσταλησομένων φρουρῶν  
καταγραφὴ τίνα τρόπον ἂν γένοιτο, ὡς οὐκ ἂν 1780  
ἐκουσίῳν γέ τινων προκειμένων ἀπάντων, καὶ μὴ ἐκ  
15 διαδοχῆς ἀλλὰ συνεχῶς ταλαιπωρεῖν ὑποστησομέ-  
νων. ἀθιμονούσης δ' αὐτῆς ἐπ' ἀμφοτέροις τούτοις,  
συγκαλέσαντες οἱ δύο Φάβιοι τοὺς μετέχοντας τοῦ  
σφετέρου γένους καὶ βουλευσάμενοι μετ' αὐτῶν  
ὑπέσχοντο τῇ βουλῇ τοῦτο τὸ κινδύνευμα αὐτοὶ  
20 περὶ πάντων ἐκόντες ὑπομενεῖν, πελάτας τε τοὺς  
ἑαυτῶν ἐπαγόμενοι καὶ φίλους καὶ τέλεσι τοῖς ἰδίοις  
ὅσον ἂν χρόνον ὁ πόλεμος διαμμένη στρατεύομενοι.  
ἀγασθέντων δ' αὐτοὺς ἀπάντων τοῦ γενναίου τῆς  
προθυμίας, καὶ τὸ νικᾶν παρ' ἐν τοῦτο τὸ ἔργον  
25 τιθεμένων, κλεινοὶ καὶ περιβόητοι καθ' ὅλην τὴν  
πόλιν οὐτε ἐξήεσαν ἀναλαβόντες τὰ ὅπλα σὺν  
εὐχαῖς καὶ θυσίαις. ἤγειτο δ' αὐτῶν Μάρκος Φά-  
βιος ὃ τῷ παρελθόντι ὑπατεύσας ἔπει καὶ νικήσας  
τοὺς Τυρρηνοὺς τῇ μάχῃ, τετρακισχιλίους μάλιστα  
30 ἐπαγόμενος, ὧν τὸ μὲν πλεῖον πελατῶν τε καὶ ἐταί-  
ρων ἦν, ἐκ δὲ τοῦ Φαβίων γένους ἕξ καὶ τριακόσιοι  
ἄνδρες. εἶπετο δ' αὐτοῖς μετ' οὐ πολὺ καὶ ἡ Ῥωμαίων 1781

δύναμις, ἧς ἤγειτο Καίσιον Φάβιος ὁ ἕτερος τῶν  
ὑπάτων. γενόμενοι δὲ ποταμοῦ Κρεμέρα πλησίον, ὃς  
οὐ μακρὸν ἀπέχει τῆς Οὐιεντανῶν πόλεως, ὑπὲρ ὄχθου  
τινὸς ἀποτόμου καὶ περιρρῶγος ἐπετέλιζον αὐτοῖς  
φρούριον ἱκανὸν φυλάττεσθαι τοσαύτη στρατιᾷ τὰ 5  
φρούς τε ὀρυξάμενοι περὶ αὐτὸ διπλᾶς καὶ πύργους  
ἐγείραντες πυκνοὺς· καὶ ὀνομάσθη τὸ φρούριον ἐπὶ  
τοῦ ποταμοῦ, Κρεμέρα. οἷα δὲ πολυχειρίας τε ἐργα-  
ζομένης καὶ ὑπάτου συλλαμβάνοντος, θάττον ἢ κατὰ  
δόξαν ἐτελέσθη τὸ ἔργον. καὶ μετὰ τοῦτο ἐξαγαγὼν τὴν 10  
δύναμιν παρήλασεν ἐπὶ θάτερα [τὰ] μέρη τῆς Οὐιεντα-  
νῶν χώρας τὰ πρὸς τὴν ἄλλην ἐστραμμένα Τυρρηνίαν,  
ἐνθα ἦν τοῖς Οὐιεντανοῖς τὰ βοσκήματα, οὐδέποτε  
στρατὸν ἤξειν Ῥωμαίων ἐκεῖ προσδεχομένους. περι-  
βαλόμενος δὲ πολλὴν λείαν ἀπῆγεν ἐπὶ τὸ νεόκτι- 15  
στον φρούριον, χαίρων ἐπὶ τῇ ἄρῃ κατ' ἀμφοτέρα,  
1782 τῆς τε οὐ διὰ μακροῦ τῶν πολεμίων τιμωρίας ἕνεκα,  
καὶ ὅτι τοῖς φρουροῖς τοῦ χωρίου πολλὴν ἐμελλε παρ-  
εξεῖν εὐπορίαν. οὐδὲν γὰρ οὔτ' εἰς τὸ δημόσιον  
ἀπήνεγκεν, οὔτε τοῖς στρατευομένοις ἰδιώταις ἀπέ- 20  
νευμεν, ἀλλὰ καὶ πρόβητα καὶ ὑποζύγια καὶ ξεύγη  
βοικὰ καὶ σίδηρον καὶ τᾶλλα ὅσα εἰς γεωργίαν ἐπι-  
τήδεια ἦν τοῖς περιπόλοις τῆς χώρας ἐχαρίσατο. ταῦτα  
διαπραξάμενος ἀπῆγεν ἐπ' οἴκου τὴν στρατιάν. τοῖς  
δὲ Οὐιεντανοῖς μετὰ τὸν ἐπιτειχισμόν τοῦ χωρίου 25  
κακῶς πάνυ τὰ πράγματ' εἶχεν, οὔτε τὴν γῆν ἔτι  
δυναμένους ἀσφαλῶς γεωργεῖν οὔτε τὰς ἐξωθεν  
εἰσαγομένας ἀγορὰς δέχεσθαι. νείμαντες γὰρ εἰς τέτ-  
ταρα μέρη τὴν στρατιάν οἱ Φάβιοι, τῷ μὲν ἐνὶ διε-  
φύλαττον τὸ χωρίον, τοῖς δὲ τρισὶ τὴν χώραν τῶν 30  
πολεμίων ἄγοντές τε καὶ φέροντες αἰεὶ διετέλουν·  
καὶ πολλάκις τῶν Οὐιεντανῶν ἐκ τοῦ φανεροῦ τε

αὐτοῖς ἐπιθεμένων χειρὶ οὐκ ὀλίγη καὶ εἰς χωρία ἐνέδρως κατεχόμενα ὑπαγομένων, περιῆσαν ἀμοτέρας καὶ πολλοὺς νεκροὺς ποιήσαντες ἀσφαλῶς ἀπήσαν εἰς τὸ χωρίον. ὥστε οὐδ' ὁμόσε χωρεῖν αὐτοῖς 1784  
 5 ἔτι οἱ πολέμιοι ἐτόλμων, ἀλλὰ τειχῆρεις μένοντες τὰ πολλὰ καὶ κλέπτοντες τὰς ἐξόδους διετέλουν, καὶ ὁ μὲν χειμῶν ἐκεῖνος οὕτως ἐτελεύτα.

XVI. Τῷ δὲ κατόπιν ἔπει Λευκίου τε Αἰμιλίου καὶ Γαίου Σερουιλίου τὴν ὑπατείαν παρεληφότεων 10 ἀπηγγέλη Ῥωμαίοις, ὅτι Οὐλοῦσκοι καὶ Αἰκανοὶ συνθήκας πεποίηνται στρατίας κατ' αὐτῶν ἅμα ἐξάγειν, καὶ οὐ διὰ μακροῦ εἰς τὴν χώραν ἐμβαλοῦσι· καὶ ἦν ἀληθῆ τὰ λεγόμενα. θάπτον γοῦν ἢ προσεδόκα τις ἀμφοτέροι τὰς δυνάμεις ἔχοντες ἐδήουν τὴν 15 κατὰ σφῶν ἕκαστοι χώραν, ὡς οὐχ ἱκανῶν ἐσομένων Ῥωμαίων τῷ τε Τυρρηρικῷ πολέμῳ ἀντέχειν καὶ σφῶς ἐπιόντας δέχεσθαι. καὶ ἕτεροι αὐδῆς ἦκοντες, ἐκπεπολεμῶσθαι πρὸς αὐτοὺς Τυρρηρικῶν ἀπήγγελλον· ὅλην καὶ παρεσκευάσθαι Οὐιεντανοῖς κοινὴν ἀποστέλειν 20 συμμαχίαν. κατέφυγον γὰρ ὡς αὐτοὺς ἀδύνατοι 1784 ὄντες ἐξελεῖν δι' ἑαυτῶν τὸ φρούριον Οὐιεντανοί, συγγενείας τε ὑπομνησκόντες καὶ φιλίας καὶ ὄσους μετ' αὐτῶν ἦραντο πολέμους διεξιόντες· ἀντὶ πάντων δὲ τούτων ἀξιοῦντες συνάρασθαι σφίσι τοῦ κατὰ 25 Ῥωμαίων πολέμου, ὡς σφῶν τε προκαθημένων Τυρρηρίας ὅλης καὶ τὸν πόλεμον ἀνακαχευόντων τὸν ἀπὸ Ῥώμης ῥέοντα κατὰ πάντων τῶν ὁμοειδῶν. καὶ οἱ Τυρρηνοὶ πεισθέντες ὑπέσχοντο πέμψειν αὐτοῖς ὄσῃν ἠξίουσιν συμμαχίαν. ταῦτα ἢ βουλή μαθοῦσα 30 ἐψηφίσατο τριστῶς ἐπέμψειν στρατίας, καὶ γενομένων ἐν τάχει τῶν καταλόγων, Λεύκιος μὲν Αἰμίλιος ἐπὶ Τυρρηνοὺς ἐπέμφθη· συνήρατο δ' αὐτῷ τῆς

ἐξόδου Καίσιων Φάβιος, ὁ νεωστὶ τὴν ἀρχὴν ἀποθέμενος, δεηθεὶς τῆς βουλῆς ἐπιτρέψαι αὐτῷ τοῖς ἐν Κρεμέρα συγγενέσιν, οὓς ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ φρουρήσοντας τὸ χωρίον ἐξήγαγε, συνειναί τε καὶ τῶν αὐτῶν ἀγῶνων μετέχειν· καὶ ἐξῆλθε σὺν τοῖς ἀμφ' 5 αὐτὸν ἐξουσία κοσμηθεὶς ἀνθυπάτω. Γάιος δὲ 1785 Σέργιος ὁ ἕτερος τῶν ὑπάτων ἐπὶ Οὐλοῦσκους ἐστράτευσε· Σερούιος δὲ Φούριος ἀνθύπατος ἐπὶ τὸ Αἰκανῶν ἔθνος. ἐκάστῳ δ' αὐτῶν δύο μὲν τάγματα Ῥωμαίων εἶπετο, Λατίνων δὲ καὶ Ἑρνίκων καὶ τῶν 10 ἄλλων συμμάχων οὐκ ἐλάττω τῆς Ῥωμαικῆς δυνάμεως. τῷ μὲν οὖν ἀνθυπάτῳ Σερούιῳ κατὰ νοῦν ὁ πόλεμος ἐχώρησε καὶ σὺν τάχει. μῖα γὰρ ἐτρέψατο τοὺς Αἰκανοὺς μάχῃ καὶ ταύτῃ δίχα πόνου, τῇ πρώτῃ 15 τὸς πολεμίους ἐκπλήξας ἐφόδῳ· καὶ τὸ λοιπὸν 1786 ἐδήουν τὴν γῆν αὐτῶν καταπεφευγόντων εἰς τὰ ἐρύματα. Σερουιλίῳ δὲ θατέρῳ τῶν ὑπάτων ὑπὸ σπουδῆς τε καὶ ἀνθαδείας ἐπὶ τὸν ἀγῶνα χωρήσαντι πολὺ τὸ παρὰ γνώμην ἀπήντησε, καρτερῶς πάνυ τῶν Οὐλοῦσκων ἀντιταξαμένων, ὥστε ἠναγκάσθη πολλοὺς 20 καὶ ἀγαθοὺς ἄνδρας ἀπολέσας μηκέτι χωρεῖν ὁμόσε τοῖς πολεμίῳις, ἀλλ' ἐν τῷ χάρακι ὑπομένων ἀκροβολισμοῖς καὶ ψιλῶν συμπλοκαῖς διαφέρειν ἔγνω τὸν πόλεμον. Λεύκιος δ' Αἰμίλιος ὁ πεμφθεὶς ἐπὶ Τυρρηρίας, εὐρῶν ἐξεστρατευμένους πρὸς τῆς πόλεως 25 τοὺς Οὐιεντανοὺς καὶ σὺν αὐτοῖς πολὺ τὸ παρὰ τῶν ὁμοειδῶν ἐπικουρικόν, οὐδὲν ἔτι μελλήσας ἔργου εἶχετο· ἡμέραν δ' ἀφ' ἧς τὸν χάρακα ἔθετο μίαν διαλιπὼν ἐξῆγε τὰς δυνάμεις εἰς μάχην, θρασέως πάνυ τῶν Οὐιεντανῶν ὁμόσε χωρούντων. ἰσορρόπου 30 δὲ τοῦ ἀγῶνος γινομένου, τοὺς ἱππεῖς ἀναλαβὼν ἐνσειεὶ τοῖς πολεμίῳις κατὰ τὸ δεξιὸν κέρας, καὶ ἐπειδὴ

τοῦτο διεσάλευσεν ἐπὶ θάτερον ἐχώρει, ὅπου μὲν ἰππασίμου εἶη χωρίου ἀπὸ τῶν ἰππων μαχόμενος, ὅπου δὲ ἀνιππου ἀποκαταβαίνων τε καὶ πεζὸς ἀγωνιζόμενος. πονούτων δὲ τῶν κεράτων ἀμφοτέρων οὐδ' οἱ κατὰ μέσον ἐτι ἀντεῖχον, ἀλλ' ἐξεώσθησαν ὑπὸ τῶν πεζῶν, καὶ μετὰ τοῦτο πάντες ἔφυγον ἐπὶ τὸν χάρακα. ὁ δ' Αἰμίλιος ἠκολούθει τοῖς φεύγουσι συντεταγαμένην τὴν δύναμιν ἔχων, καὶ πολλοὺς διέφθειρε. γενόμενος δὲ πλησίον τοῦ χάρακος καὶ προσβαλὼν ἐκ διαδοχῆς, ἐκείνην τε παρέμεινε τὴν ἡμέραν καὶ τὴν ἐπιούσαν νύκτα· τῇ δ' ἐξῆς ἡμέρᾳ κόπῳ τε καὶ τραύμασι τῶν πολεμίων καὶ ἀγρυπνίᾳ ἀπειρηκό- 1787 των, ἐγκρατὴς γίνεται τοῦ χάρακος. οἱ δὲ Τυρρηνοί, ὡς εἶδον ἐπιβαίνοντας ἤδη τοὺς Ῥωμαίους τοῖς πε- 15 ρισταυρώμασιν, ἐκλιπόντες τὸ στρατόπεδον ἔφυγον, οἱ μὲν εἰς τὴν πόλιν, οἱ δ' εἰς τὰ πλησίον ὄρη. ταύτην μὲν οὖν τὴν ἡμέραν ἐν τῷ χάρακι τῶν πολεμίων ἔμεινε ὁ ὑπάτος· τῇ δ' ἐξῆς ἡμέρᾳ στεφανώσας τοὺς ἀριστεύσαντας ἐν τῇ μάχῃ ταῖς ἐκπρεπεστάταις δω- 20 ρεαῖς, πάντα τὰ ἐγκαταληφθέντα ἐν τῷ χάρακι ὑποξυρία τε καὶ ἀνδράποδα καὶ σκηναῖς πολλῶν ἀγαθῶν γεμούσας τοῖς στρατιώταις ἐχαρίσατο. καὶ ἐγένετο ἐν πολλῇ εὐπορίᾳ τὸ τῶν Ῥωμαίων στρατεύμα, ὡς ἐξ οὐδεμιᾶς ἐτέρας πώποτε μάχης. ἀβροδίατον γὰρ δὴ 25 καὶ πολυτελὲς τὸ τῶν Τυρρηνῶν ἔθνος ἦν οἴκοι τε καὶ ἐπὶ στρατοπέδου, ὑπεραγάμενον ἔξω τῶν ἀναγ- 1788 καίων πλοῦτου τε καὶ τέχνης ἔργα παντοῖα πρὸς ἡδονὰς μεμηχανημένα καὶ τροφάς.

XVII. Ταῖς δ' ἐξῆς ἡμέραις ἀπειρηκότες ἤδη τοῖς κακοῖς οἱ Οὐιεντιανοὶ τοὺς πρεσβυτάτους τῶν πολιτῶν ἰκετηρίας φέροντας ἀπέστειλαν ὡς τὸν ὑπάτου ὑπὲρ τῆς εἰρήνης διαλεξομένους. καὶ οἱ ἄνδρες

ὄλοφρυόμενοί τε καὶ ἀντιβολουῦντες καὶ τὰλλ' ὅσα ἐπαγωγὰ ἦν εἰς ἔλεον μετὰ πολλῶν δακρύων διεξιόντες, πείθουσι τὸν ὑπάτου ἐπιτρέψαι σφίσι πρεσβευτὰς εἰς Ῥώμην τοὺς ὑπὲρ τῆς καταλύσεως τοῦ πολέμου πρὸς τὴν βουλὴν διαλεξομένους ἀποστεῖλαι· 5 ἕως δ' ἂν οἱ πρέσβεις ἀφίκωνται φέροντες τὰς ἀποκρίσεις, μηδὲν αὐτῶν κικουργεῖν τὴν χώραν. ἵνα δὲ αὐτοῖς ἐγγένηται ταῦτα πράττειν, σίτόν τε ὠμολόγησαν τῇ Ῥωμαίων στρατιᾷ διμήνου παρέξειν, καὶ χρήματα εἰς ὀψωνιασμόν ἕξ μηνῶν, ὡς ὁ κρατῶν ἔταξε. 10 καὶ ὁ μὲν ὑπάτος λαβὼν τὰ κομισθέντα καὶ διαδοὺς τῇ στρατιᾷ ποιεῖται τὰς πρὸς αὐτοὺς ἀνοχάς. ἡ δὲ βουλὴ τῆς πρεσβείας ἀκούσασα, καὶ τὰ τοῦ ὑπάτου 1789 γράμματα δεξαμένη πολλὴν ποιουμένου παράκλησιν καὶ παραινοῦντος ὡς τάχιστα καταθέσθαι τὸν πρὸς 15 τοὺς Τυρρηνοὺς πόλεμον, δόγμα ἐξήνεγκε, διδόναι τὴν εἰρήνην ὡς ἤτοῦντο οἱ πολέμιοι· ἐφ' οἷς δὲ δικαίους αὕτη γένηται τὸν ὑπάτου καταστήσασθαι Λεύκιον Αἰμίλιον, ὡς ἂν αὐτῷ φανῇ κράτιστα ἔξειν. ταύτας λαβὼν τὰς ἀποκρίσεις ὁ ὑπάτος σπένδεται πρὸς τοὺς 20 Οὐιεντιανούς, ἐπισικιστέραν μᾶλλον ἢ συμφορωτέραν τοῖς κικρατηκόσι ποιησάμενος εἰρήνην, οὔτε χώραν αὐτῶν ἀποταμόμενος οὔτε χρημάτων ἄλλον ἐπιθεις ζημίαν, οὔτε ὀμῆρων δώσει τὸ πιστὸν ἐν τοῖς συγκειμένοις βεβαιωσάμενος. τοῦτ' αὐτῷ μέγαν ἠνεγκε 25 φθόνου, καὶ τοῦ μὴ λαβεῖν παρὰ τῆς βουλῆς τὰς ἐπὶ τοῖς κατορθωμένοις χάριτας αἴτιον ἐγένετο. ἐνέστησαν γὰρ αὐτῷ τὸν θρίαμβον αἰτουμένῳ τὴν αὐθάδειαν αἰτιώμενοι τῶν συνθηκῶν, ὅτι οὐ μετὰ κοινῆς γνώμης αὐτὰς ἐπραξε. ἵνα δὲ μὴ πρὸς ὕβριν ἢ πρὸς 30 ὀργὴν λάβῃ τὸ πρᾶγμα, ἐπὶ Οὐολούσκους αὐτὸν ἐψηφίσαντο τὴν δύναμιν ἀπάγειν ἐπικουρίας τοῦ συνάφ-



χουτος ἔνεκα, εἰ δύναιτο κατορθώσας τὸν ἐκεῖ πόλεμον· ἦν γὰρ ἐν αὐτῷ πολὺ τὸ ἀνδρείον· ἀφανίσαι τὰς ἐπὶ τοῖς προτέροις ἀμαρτήμασιν ὀργάς. ὁ δὲ ἀνὴρ ἀγανακτῶν ἐπὶ τῇ ἀτιμίᾳ πολλὴν ἐποίησατο τῆς βουλῆς ἐν τῷ δήμῳ κατηγορίαν, ὡς ἀχθομένης ἐπὶ τῷ λελύσθαι τὸν πρὸς τοὺς Τυρρηνοὺς πόλεμον. ἔφη δὲ τοῦτ' αὐτοὺς ἐξ ἐπιβουλῆς καὶ ὑπεροφίας τῶν πενήτων ποιεῖν, ἵνα μὴ τῶν ὑπερογίων ἀπαλλαγέντες πολέμῳ ἀπαιτῶσι τὰς περὶ τῆς κληρουχίας ὑποσχέσεις, πολλοστὸν ἔτος ἤδη φρενακίζόμενοι πρὸς αὐτῶν. ταῦτα καὶ πολλὰ τούτοις ὅμοια [καὶ] δι' ὀργῆς ἀκράτου τῶν πατρικίων ὀνειδῆ κατασκεδάσας, τὴν τε συστρατευσαμένην αὐτῷ δύναμιν ἀπέλυσε τῶν σημείων, καὶ τὴν μετὰ Φουρίου τοῦ ἀνθυπάτου διατρίβονσαν ἐν Αἰκανοῖς μεταπεμφόμενος ἀφῆκεν ἐπὶ τὰ σφέτερα· ἐξ ὧν πολλὴν πάλιν ἐποίησεν ἐξουσίαν τοῖς 1791  
δημάρχοις κατηγορεῖν τῶν βουλευτῶν ἐν ταῖς ἐκκλησίαις καὶ διστάναι τοὺς πένητας ἀπὸ τῶν εὐπόρων.

XVIII. Μετὰ δὲ τούτους παραλαμβάνουσι τὴν ὑπατείαν Γάιος Ὀράτιος καὶ Τίτος Μενήμιος ἐπὶ τῆς ἑβδομηκοστῆς καὶ ἕκτης Ὀλυμπιάδος, ἦν ἐνίκα στάδιου Σκάμανδρος Μιτυληναῖος ἄρχοντας Ἀθήνησι Φαίδωνος. τούτοις κατ' ἀρχάς μὲν ὁ πολιτικὸς θόρυβος ἐμποδῶν ἐγένετο πράττειν τὰ κοινά, ἡρεθισμένου τοῦ δήμου καὶ οὐδὲν ἑῶντος ἔτερον ἐπιτελεῖσθαι τῶν κοινῶν, ἕως ἂν μερίσθῃ τὴν δημοσίαν γῆν· χρόνῳ δ' ὕστερον εἶξε τὰ παρακινουῦντα καὶ ταραττόμενα τῇ ἀνάγκῃ συγχωρήσαντα, καὶ ἐπὶ τὰς στρατείας ἐκούσια ἦλθε. Τυρρηνοῦν γὰρ αἱ μὴ μετασχούσαι 30  
τῆς εἰρήνης ἑνδεκα πόλεις ἀγορᾶν ποιησάμεναι κοινὴν κατηγοροῦν τοῦ Οὐιεντανῶν ἔθνος, ὅτι τὸν πρὸς Ῥωμαίους πόλεμον οὐ μετὰ κοινῆς γνώμης κατε-

1792 λύσαντο, καὶ θυεῖν θάτερον αὐτοὺς ἠέλιον πράττειν, ἢ λύειν τὰ πρὸς Ῥωμαίους ὁμολογηθέντα, ἢ πολεμεῖν σφίσι μετ' ἐκείνων. οἱ δὲ Οὐιεντανοὶ τῆς μὲν εἰρήνης τὴν ἀνάγκην ἠτιῶντο, ὅπως δ' ἂν αὐτὴν καταλύσαντο εὐπρεπῶς εἰς κοινὸν ἐτίθεσαν σκοπεῖν. 5  
ἔπειτα ὑποτίθεται τις αὐτοῖς ἐγκλημα ποιησαμένοις τὸν ἐπιτειχισμόν τῆς Κρεμέρας καὶ τὸ μὴ ἀπανίστασθαι τοὺς φρουροὺς ἀπ' αὐτῆς, λόγῳ μὲν πρῶτον ἀξιούν αὐτοὺς ἐκλιπεῖν τὸ χωρίον· ἐὰν δὲ μὴ πείθῃσι 10  
πολιορκεῖν τὸ φρούριον, καὶ ταύτην ἀρχὴν ποιήσασθαι τοῦ πολέμου. ταῦτα συνθέμενοι ἀπηλλάττοντο ἐκ τοῦ συλλόγου· καὶ μετ' οὐ πολὺ Οὐιεντανοὶ μὲν ἀποστείλαντες πρεσβείαν ὡς τοὺς Φαβίους ἀπήτουν παρ' αὐτῶν τὸ φρούριον, Τυρρηνία δὲ πᾶσα ἦν ἐν τοῖς 15  
ὅπλοις. ταῦτα Ῥωμαῖοι αἰσθόμενοι, Φαβίων αὐτοῖς ἐπιστειλάντων, ἔγνωσαν ἀμφοτέρους ἐκπορεύεσθαι τοὺς ὑπάτους ἐπὶ τὸν πόλεμον, τὸν τε ἀπὸ Τυρρηνίας ἐπαγόμενον σφίσι καὶ τὸν ἔτι πρὸς Οὐολούσκους 1793  
συνεστῶτα. Ὀράτιος μὲν οὖν ἄγων δύο τάγματα καὶ ἀπὸ τῶν ἄλλων συμμάχων τοὺς ἱκανοὺς ἐξήγαγε τὴν 20  
δύναμιν ἐπὶ Οὐολούσκους. Μενήμιος δὲ τοσαύτην στρατιάν ἐτίθει ἄγων ἐπὶ Τυρρηνοὺς ἔμελλε ποιεῖσθαι τὴν ἔξοδον. παρασκευαζομένου δ' αὐτοῦ καὶ τρίβοντος τὸν χρόνον, ἔφθη τὸ ἐν Κρεμέρα φρούριον ἐξαιρεθὲν ὑπὸ τῶν πολεμίων, καὶ τὸ Φαβίων γένος 25  
ἅπαν ἀπολόμενον. περὶ δὲ τῆς κατασχούσης τοὺς ἀνδρας συμφορᾶς διττὸς φέρεται λόγος, ὁ μὲν ἦττον πιθανός, ὁ δὲ μᾶλλον τῆς ἀληθείας ἀπτόμενος. θήσω δὲ αὐτοὺς ἀμφοτέρους ὡς παρέλαβον.

XVIII. Τινὲς μὲν οὖν φασιν, ὅτι θυσίας ἐπιστάσης πατρίου, ἦν ἔδει τὸ Φαβίων ἐπιτελέσαι γένος, 30  
οἱ μὲν ἄνδρες ἐξήλθον ὀλίγους ἐπαγόμενοι πελάτας

ἐπὶ τὰ ἱερὰ, καὶ προήεσαν οὔτε διερευνόμενοι τὰς  
 ὁδοὺς οὔτε ὑπὸ σημαίαις τεταγμένοι κατὰ λόχους, ἄγ-  
 θύμως δὲ καὶ ἀφυλάκτως ὡς ἐν εἰρήνῃ τε καὶ διὰ  
 φιλίας γῆς πορευόμενοι. οἱ δὲ Τυρρηνοὶ προεγνα- 1794  
 5 κότες αὐτῶν τὴν ἔξοδον, ἐλόγησαν τῆς ὁδοῦ χωρίου  
 μέρει τῆς στρατιᾶς, τὴν δὲ λοιπὴν δύναμιν συντε-  
 ταγμένην ἔχοντες οὐ πολλῶ ὕστερον ἠκολούθουν. ὡς  
 δ' ἐπλησίασαν οἱ Φάβιοι ταῖς ἐνέδραις, ἐξαναστάντες  
 τοῦ λόχου οἱ Τυρρηνοὶ προσπίπτουσιν αὐτοῖς, οἱ μὲν  
 10 κατὰ μέτωπον, οἱ δ' ἐκ τῶν πλαγίων, καὶ μετ' οὐ  
 πολὺ ἢ τῶν ἄλλων Τυρρηνῶν δύναμις προσέβαλεν  
 ἐκ τῶν κατόπιν· καὶ περιστάντες αὐτοῖς πανταχόθεν,  
 οἱ μὲν σφενδόναις, οἱ δὲ τόξοις, οἱ δὲ σαννίοις τε καὶ  
 λόγχαις στοχαζόμενοι, τῷ πλήθει τῶν βελῶν ἅπαντας  
 15 κατειργάσαντο. οὗτος μὲν οὖν ἦττον ἔμοιγε πιθανὸς  
 φαίνεται εἶναι λόγος. οὔτε γὰρ εἰκὸς ἀπὸ στρατοπέ-  
 δου θυσίας ἕνεκα τοὺς ὑπὸ ταῖς σημαίαις τοσοῦτους  
 ἄνδρας εἰς τὴν πόλιν ἀναστρέφειν ἄνευ ψηφίσματος  
 βουλῆς, δυναμένων τῶν ἱερουργῶν καὶ δι' ἑτέρων  
 20 ἐπιτελεσθῆναι τῶν μετεχόντων μὲν τοῦ αὐτοῦ γένους,  
 προβεβηκότων δὲ ταῖς ἡλικίαις· οὐτ' εἰ πάντες ἀπε-  
 ληλύθεισαν ἐκ τῆς πόλεως, καὶ μηδεμίαν μοῖραν τοῦ 1795  
 Φαβίων γένους ἐν τοῖς ἐφεστίοις ὑπελείπετο, πάντα  
 εἰκὸς ἦν τοὺς κατέχοντας τὸ φρουρίον ἐκλιπεῖν αὐτοῦ  
 25 τὴν φυλακὴν· ἤρουν γὰρ ἂν καὶ τρεῖς ἢ τέτταρες  
 ἀφικόμενοι συντελέσαι ὑπὲρ τοῦ γένους ὅλου τὰ ἱερὰ.  
 διὰ μὲν δὴ ταύτας τὰς αἰτίας οὐκ ἔδοξέ μοι πιστὸς  
 εἶναι [ἕδε] ὁ λόγος.

XX. Ὁ δὲ ἕτερος, ὃν ἀληθέστερον εἶναι νομίζω  
 30 περὶ τε τῆς ἀπωλείας τῶν ἀνδρῶν καὶ τῆς ἀλώσεως  
 τοῦ φρουρίου, τοιόσδε τις ἐστίν. ἐξιόντων ἐπὶ τὰς  
 προνομίας τῶν ἀνδρῶν πολλὰκις καὶ διὰ τὸ κατορθοῦν

ἐν ταῖς πείραις συνεχῶς προσωτέρω προχωρούντων,  
 οἱ Τυρρηνοὶ παρεσκευασμένοι στρατιᾶν συχρῆν ἐν  
 τοῖς ἔγγιστα χωρίοις λαθόντες τοὺς πολεμίους κατε-  
 στρατοπέδευσαν. ἔπειτ' ἀποστέλλοντες ἐκ τῶν χωρίων  
 ποιμένας τε καὶ βουκόλια καὶ φορβάδων ἀγέλας ἵππων 5  
 ἐπὶ νομῆν τῷ λόγῳ, προὔκαλουντο τοὺς ἄνδρας ἐπὶ  
 1796 ταῦτα· οἱ δ' ἐξιόντες τοὺς τε ἀνθρώπους συνήραζον  
 καὶ τὰ βοσκήματα περιήλανον. τοῦτο συνεχῶς οἱ  
 Τυρρηνοὶ ποιοῦντες καὶ προαγόμενοι τοὺς πολεμίους  
 αἰεὶ προσωτέρω τοῦ χάρακος, ἐπειδὴ διέφθειραν αὐ- 10  
 τῶν τὸ προνοητικὸν τοῦ ἀσφαλοῦς ταῖς συνεχέσιν  
 ὠφελείαις δελεάσαντες, ἐγκαθίζουσι λόχους ἐν τοῖς  
 ἐπικαίροις τῶν χωρίων νύκτωρ, καὶ ἕτεροι τὰς ὑπερ-  
 δεξιόους τῶν πεδίων καταλαμβάνονται σκοπιάς· τῇ  
 δ' ἐξῆς ἡμέρᾳ προπέμφαντες ὀλίγους τινὰς ἐνόπλους, 15  
 ὡς δὴ φυλακῆς ἕνεκα τῶν νομέων, ἀφήκαν ἐκ τῶν  
 χωρίων πολλὰς ἀγέλας. ὡς δ' ἀπηγγέλη τοῖς Φα-  
 βίοις, ὅτι τοὺς πλησίον ὑπερβαλόντες λόφους ἐν ὀλί-  
 γῳ δὴ τιμὴ χρόνῳ μεστὸν εὐρήσουσι τὸ πεδῖον παν-  
 τοίων βοτῶν, καὶ τὴν φυλάττουσαν αὐτὰ χεῖρα οὐχ 20  
 ἱκανήν, ἐξῆλθον ἐκ τοῦ φρουρίου φυλακὴν τὴν ἀρ-  
 κοῦσαν ἐν αὐτῷ καταλιπόντες· καὶ διανύσαντες  
 σπουδῇ καὶ μετὰ προθυμίας τὴν ὁδὸν ἐπιφαίνονται  
 τοῖς φύλαξι τῶν βοσκημάτων συντεταγμένοι· κἀκεῖνοι  
 οὐ δεξάμενοι αὐτοὺς ἔφευγον. οἱ δὲ Φάβιοι, ὡς ἐν 25  
 ἀσφαλεῖ δὴ ὄντες, τοὺς τε νομῆεις συνελάμβανον καὶ  
 1797 τὰ βοσκήματα περιήλανον. ἐν δὲ τούτῳ οἱ Τυρρηνοὶ  
 ἐκ τῆς ἐνέδρας ἀναστάντες κατὰ πολλὰ χωρία προσ-  
 πίπτουσι [αὐτοῖς] πανταχόθεν. καὶ οἱ μὲν πλείους  
 τῶν Ῥωμαίων ἐσκεδασμένοι καὶ ἀλλήλοις ἀμύνειν 30  
 οὐχ οἰοῖ τε ὄντες, ἐνταῦθα ἀπόλλυνται. ὅσοι δ' αὐτῶν  
 συνεστηκότες ἦσαν προθυμούμενοί τι καταλαβέσθαι

χωρίον ἀσφαλές καὶ πρὸς τὰ ὄρη σπεύδοντες, εἰς ἕτερον ἐπιπίπτουσι λόχον ἐν ὕλαις καὶ νάπαις ὑποκαθήμενον. καὶ γίνεται αὐτῶν μάχη καρτερά καὶ φόνος ἐξ ἑκατέρων πολὺς. ἀπεώσαντο δ' οὖν καὶ τούτους ὅμως, καὶ πληρώσαντες τὴν φάραγγα νεκρῶν ἀνέδραμον ἐπὶ λόφον οὐ ῥάδιον ἀλῶναι· ἐν ᾧ τὴν ἐπιούσαν νύκτα ἄποροι τῶν ἀναγκαίων ἠύλλισαντο.

XXI. Τῇ δ' ἐξῆς ἡμέρᾳ μαθόντες τὴν κατασχούσαν τοὺς σφετέρους τύχην οἱ κατέχοντες τὸ φρούριον, καὶ ὅτι τὸ μὲν πλεῖον ἀπόλωλε τῆς στρατιᾶς μέρος ἐν ταῖς ἀρπαγαῖς, τὸ δὲ κράτιστον ἐν ὄρει πολιορκεῖται κατακεκλεισμένον ἐρήμῳ, καὶ εἰ μὴ ταχεῖά τις αὐτοῖς ἔσται βοήθεια, σπάνει τῶν ἀναγκαίων φθάσουσιν ἐξαιρεθέντες, ἐξήσαν κατὰ σπουδὴν ὀλίγους πάνυ καταλιπόντες ἐν τῷ φρουρίῳ φύλακας. καὶ αὐτοὺς οἱ Τυρρηνοὶ πρὶν ἢ συμμίξει τοῖς ἑτέροις ἐπικαταδραμόντες ἐκ τῶν χωρίων κυκλοῦνται τε, καὶ πολλὰ γενναῖα ἔργα ἀποδειξαμένους διαφθείρουσιν ἅπασας σὺν χρόνῳ. μετ' οὐ πολὺ δὲ καὶ οἱ τὸν λόφον καταλαβόμενοι λιμῷ τε καὶ δίψῃ πιεζόμενοι ὁμοσε χωρεῖν τοῖς πολεμίοις ἔγνωσαν· καὶ συμπεσόντες ὀλίγοι πρὸς πολλοὺς ἔωθεν ἀρξάμενοι μέγροι νυκτὸς ἐμάχοντο· καὶ τοσοῦτον ἐποίησαν τῶν πολεμίων φόνου, ὥστε τοὺς σωροὺς τῶν νεκρῶν ἐμποδῶν αὐτοῖς εἶναι τῆς μάχης πολλαχῇ κερυμένους. οἱ δὲ Τυρρηνοὶ πλεῖον ἢ τὸ τρίτον τῆς στρατιᾶς μέρος ἀπολωλεκότες καὶ περὶ τοῦ λοιποῦ δεισαντες, μικρὸν ἀνασχόντες τὰ ὄπλα διὰ τῶν ἀνακλητικῶν ἐπεκηρυκεύοντο πρὸς τοὺς ἄνδρας, ἄδειαν αὐτοῖς ὑπισχνόμενοι καὶ δίοδου, ἐὰν τὰ ὄπλα ἀποθῶνται καὶ τὸ φρούριον ἐκλίπωσιν. οὐ προσδεξαμένων δὲ τῶν ἀνδρῶν τὰς προκλήσεις, ἀλλὰ τὸν εὐγενῆ θάνατον αἰρουμένων, ἐπήεσαν αὐ-

τοῖς αὐθις ἐκ διαδοχῆς, συστάδην μὲν καὶ ἐκ χειρὸς οὐκέτι μαχόμενοι, πρόσωθεν δὲ βάλλοντες ἀθροοὶ λόγχαις καὶ χερμαῖσι· καὶ ἦν νικητῶ παραπλήσιος ἢ πληθὺς τῶν βελῶν. οἱ δὲ Ῥωμαῖοι συστρεφόμενοι κατὰ λόχους προσέτρεχον αὐτοῖς οὐχ ὑφισταμένοις, καὶ πολλὰς πληγὰς λαμβάνοντες ὑπὸ τῶν πέριξ ὑπέμενον. ὥς δὲ τὰ τε ξίφη πολλοῖς ἀχρηστα ἦν, τὰ μὲν ἀπεστομασμένα τὰς ἀκμὰς, τὰ δὲ κατεαρότα, καὶ τῶν ἀσπίδων τὰ πέριξ ἔντος ἐχόμενα διετέθρουπτο, ἐξαι-  
μοὶ τε οἱ πλείους καὶ καταβελεῖς καὶ παράλυτοι τὰ μέλη διὰ πλῆθος τραυμάτων ἦσαν, καταφρονήσαντες αὐτῶν οἱ Τυρρηνοὶ χωροῦσιν ὁμοσε· καὶ οἱ Ῥωμαῖοι προσπίπτοντες ὥσπερ θηρία δόρατά τε αὐτῶν ἐπιλαμβανόμενοι κατέκλων, καὶ ξίφη δραπτόμενοι κατὰ τὰς ἀκμὰς ἀπέσπων, καὶ περικυλίοντες εἰς τὴν γῆν τὰ σώματα συνεφύροντο θυμῷ τὸ πλεῖον ἢ δυνάμει διαγωνιζόμενοι. ὥστε οὐκέτι συνήεσαν αὐτοῖς εἰς χεῖρας οἱ πολέμιοι, τό τε καρτερικὸν ἐκπληττόμενοι τῶν ἀνδρῶν, καὶ τὴν ἀπόνοιαν ἦν προσειλήφεσαν κατὰ τὴν ἀπόγνωσιν τοῦ ξιῆν δεδιότες· ἀλλ' ἀποστάν-  
τες αὐθις βάλλον ἀθροοὶ καὶ ξύλοις καὶ λίθοις καὶ ὄτῳ ἄλλῳ ἐντύχοιεν, καὶ τελευτῶντες ἐγκατέχωσαν αὐτοὺς τῷ πλήθει τῶν βελῶν. διαφθείραντες δὲ τοὺς ἄνδρας ἔθεον ἐπὶ τὸ φρούριον, ἔχοντες τὰς τῶν ἐπιφρανεστάτων κεφαλὰς, ὥς ἐξ ἐφόδου τοὺς ἐκεῖ παρα-  
ληφόμενοι. οὐ μὴν ἐχώρησέ γε αὐτοῖς κατὰ τὴν ἐλπίδα τὸ ἔργον· οἱ γὰρ καταλειφθέντες ἐν αὐτῷ, ζηλώσαντες τὸ εὐγενὲς τοῦ θανάτου τῶν τε ἐταίρων καὶ τῶν συγγενῶν, ἐξῆλθον ὀλίγοι παντάπασιν ὄντες, καὶ πολὺν ἀγωνισάμενοι χρόνον τὸν αὐτὸν τρόπον τοῖς ἑτέροις ἅπαστες διεφθάρησαν· τὸ δὲ χωρίον ἤρημον οἱ Τυρρηνοὶ παρέλαβον. ἐμοὶ μὲν δὴ ὁ λόγος

οὗτος πιστότερος ἐφαίνετο πολὺ τοῦ προτέρου· φε-  
ρονται δὲ ἐν γραφαῖς Ῥωμαίων ἀξιοχρόους ἀμφοτέρω.  
XXII. Τὸ δὲ συναπτόμενον τούτοις ὑπὸ τινων,  
οὔτε ἀληθὲς ὄν οὔτε πιθανόν, ἐκ παρακούσματος δέ  
5 τινος πεπλασμένον ὑπὸ τοῦ πλήθους, ἄξιον μὴ παρα-  
λιπεῖν ἀνεξέταστον. λέγουσι γὰρ δὴ τινες, τῶν ἕξ  
καὶ τριακοσίων Φαβίων ἀπολομένων, ὅτι ἐν μόνου  
ἐλείφθη τοῦ γένους παιδίον, πρᾶγμα οὐ μόνου ἀπί-  
θανον, ἀλλὰ καὶ ἀδύνατον εἰσάγοντες. οὔτε γὰρ ἀτέ-  
10 κνους τε καὶ ἀγάμους ἅπαντας εἶναι δυνατὸν ἢν τοὺς 1802  
ἐξεληθόντας εἰς τὸ φρούριον Φαβίου. ὁ γὰρ ἀρχαῖος  
αὐτῶν νόμος γαμῆν τε ἠνάγκαζε τοὺς ἐν ἡλικίᾳ, καὶ  
τὰ γεννώμενα ἅπαντα ἐπάναγκες τρέφειν· ὄν οὐκ  
ἂν δήπου κατέλυσαν οἱ Φάβιοι μόνου πεφυλαγμένον  
15 ἄχρι τῆς ἑαυτῶν ἡλικίας ὑπὸ τῶν πατέρων. εἰ δὲ δὴ  
καὶ τοῦτο θεῖη τις, ἀλλ' ἐκεῖνό γε οὐκ ἂν ἔτι συγγω-  
ρήσειε, τὸ μὴδ' ἀδελφούς αὐτῶν εἶναι τισιν ἡλικίαν  
ἔτι παιδῶν ἔχοντας. μύθοις γὰρ δὴ ταῦτά γε καὶ  
πλάσμασιν ἔοικε θεατρικοῖς. οἱ δὲ πατέρες αὐτῶν,  
20 ὅσοι παῖδας ἔτι ποιεῖν εἶχον ἡλικίαν, τσαύτης κατα-  
σχούσης τὸ γένος ἐρημίας οὐκ ἂν ἐκόντες τε καὶ ἄκου-  
τες ἑτέρους παῖδας ἐποίησαντο, ἵνα μήτε ἰσθὰ ἐκλει-  
φθῆ πατρῶα μήτε δόξα τηλικαύτη διαφθαρῆ γένους;  
εἰ μὴ ἄρα οὐδὲ πατέρες αὐτῶν τισιν ἐλείποντο, ἀλλὰ  
25 πάντα εἰς ταῦτο συνῆλθεν ἐπὶ τῶν ἕξ καὶ τριακοσίων  
ἀνδρῶν ἐκείνων ταῦτα τὰ ἀδύνατα· μὴ παῖδας ἀν- 1803  
τοῖς καταλειφθῆναι νηπίους, μὴ γυναῖκας ἐγκύους,  
μὴ ἀδελφούς ἀνήβους, μὴ πατέρας ἐν ἀκμῇ. ταύτη  
μὲν δὴ τὸν λόγον ἐξετάξω οὐκ ἀληθῆ νενόμικα, ἐκεῖ-  
νον δ' ἀληθῆ· τῶν τριῶν ἀδελφῶν, Καίσιωνός τε  
καὶ Κοῖντου καὶ Μάρκου τῶν ὑπατευσάντων τὰς συν-  
30 χεῖς ἐπὶ ὑπατείας, ἐγκαταλειφθῆναι πείθεται

Μάρκου παιδίον, καὶ τοῦτ' εἶναι τὸ λεγόμενον ἐκ τοῦ  
Φαβίων οἴκου λοιπόν. οὐδὲν δὲ κωλύει τῷ μηκέτι  
τῶν ἄλλων ἐπιφανῆ τινα καὶ λαμπρὸν ἔξω τοῦ ἐνὸς  
τοῦδε ἀνδρωθέντος γενέσθαι ταύτην παραστῆναι  
τοῖς πολλοῖς τὴν δόξαν, ὅτι μόνος ἐκεῖνος ἐκ τοῦ Φα- 5  
βίων γένους ἐστὶ λοιπός· οὐχ ὡς μηδενὸς ἄλλου ὄν-  
τος, ἀλλ' ὡς μηδενὸς ἐκεῖνοις ὁμοίου· ἀρετῇ τεκμαι-  
ρομένοις τὸ συγγενές, οὐ φύσει· καὶ περὶ μὲν τούτων  
ταῦθ' ἱκανά.

XXIII. Οἱ γοῦν Τυρρηνοὶ τοὺς τε ἀνδρας δια- 10  
φθείραντες καὶ τὸ ἐν τῇ Κρεμέρᾳ φρούριον παραλα-  
βόντες, ἐπὶ τὴν ἄλλην στρατιάν τῶν Ῥωμαίων ἦγον  
1804 τὰς δυνάμεις. ἔτυχε δὲ οὐ μακρὰν κατεστρατοπεδευ-  
κῶς ὁ ἕτερος τῶν ὑπάτων Μενήμιος οὐκ ἐν ἀσφαλεῖ  
χωρίῳ· καὶ ὅτε ἡ Φαβίων συγγένεια καὶ τὸ πελατι- 15  
κὸν αὐτῶν ἀπώλλυντο, τριάκοντά που σταδίου ἀπέ-  
χεν ἀπ' οὗ τὸ πάθος ἐγένετο τόπου, δόξαν τε οὐκ  
ὀλίγοις παρέσχε, γνοὺς ἐν οἴοις κακοῖς ἦσαν οἱ Φά-  
βιοι, μηδεμίαν αὐτῶν ποιήσασθαι φροντίδα τῆς τε  
ἀρετῆς καὶ δόξης τοῖς ἀνδράσι φθονῶν. τοιγαροῦν 20  
μετὰ ταῦτα ὑπαχθεὶς ὑπὸ τῶν δημάρχων εἰς δίκην  
ἐπὶ ταύτῃ μάλιστα τῇ αἰτία ἐάλω. σφόδρα γὰρ ἐπέν-  
θησεν ἡ Ῥωμαίων πόλις ἀνδρῶν τοσούτων καὶ τοιού-  
των ἀρετῆς ἀποκειραμένη, καὶ πρὸς ἅπαν τὸ δόξαν  
αὐτοῖς αἴτιον γεγυμέναι τῆς τοιαύτης συμφορᾶς πι- 25  
κρῶς καὶ ἀπαραιτήτως εἶχεν· τὴν δὲ ἡμέραν ἐκείνην  
ἐν ἣ τὸ πάθος ἐγένετο μέλαιναν τε καὶ ἀποφράδα  
τίθεται, καὶ οὐδενὸς ἂν ἔργου ἐν ταύτῃ χρηστοῦ ἄρ-  
ξατο, τὴν τότε συμβᾶσαν αὐτῇ τύχην ὀττενομένη.  
ὡς δὲ πλησίον ἐγένοντο τῶν Ῥωμαίων οἱ Τυρρηνοί, 30  
συνιδόντες αὐτῶν τὸ στρατόπεδον· ἦν δ' ὑπὸ λαγόνι  
1805 κείμενον ὄρους· τῆς τε ἀπειρίας τοῦ στρατηγοῦ κατε-

φρόνησαν, καὶ τὸ δοθὲν ὑπὸ τῆς τύχης [πλεονέκτημα] ἀραπητῶς ἔλαβον. καὶ αὐτίκα τοὺς ἱππεῖς ἀναλαβόντες κατὰ τὴν ἐτέραν πλευρὰν τοῦ λόφου, οὐθενὸς καλύοντος ἀνέβησαν ἐπὶ τὴν κορυφὴν. καταλαβόμενοι δὲ τὸν ὑπὲρ [τῆς] κεφαλῆς τῶν Ῥωμαίων κόρυμβον, ἔθεντο ἐν τούτῳ τὰ ὄπλα, καὶ τὴν ἄλλην δύναμιν ἀσφαλῶς ἀναβιβάσαντες ὑψηλῶ χάρακι καὶ βαθείᾳ τάφρῳ τὴν παρεμβολὴν ὠχυρώσαντο. εἰ μὲν οὖν συνιδῶν ὁ Μενήμιος, οἷον ἔδωκε πλεονέκτημα τοῖς πολεμοῖς, μετέγνω τε τὴν ἀμαρτάδα καὶ εἰς ἀσφαλέστερον ἀπήγε χωρίου τὴν στρατιάν, σοφὸς ἂν ἦν· νῦν δὲ δι' αἰσχύνης λαμβάνων τὸ δοκεῖν ἡμαρτηκέναι, καὶ τὸ αὐθαδὲς πρὸς τοὺς μεταδιδάσκοντας φυλάττων, εἰς αἰσχύνης ἄξιον πτώμα ἔπεσεν. οἷα γὰρ ἔξ ὑπερδεξίαν αὐτοῦ τόπων οἱ πολέμιοι τὰς ἐξόδους ἐκάστοτε ποιοῦμενοι πολλὰ ἐπλεονέκτου, ἀγοράς τ' αὐτῶν ἀγομένους ὑπὸ τῶν ἐμπόρων ἀρπάζοντες, καὶ τοῖς ἐπὶ χιλὸν ἢ ὕδωρ ἐμπορευομένοις ἐπιτιθέμενοι καὶ περιεστῆκει τῷ μὲν ὑπάτῳ μήτε καιροῦ εἶναι 1806 κυρίῳ ἐν ᾧ τὸν ἀγῶνα ἐμελλε ποιεῖσθαι μήτε τόπου, ἃ δοκεῖ μεγάλα εἶναι κατηγορήματα ἡγεμόνων στρατηγίας ἀπειρών· τοῖς δὲ Τυρρηνοῖς ἀμφοτέρω ὡς ἐβούλουτο εἶχε ταῦτα. καὶ οὐδὲ τότε ἀπαναστήναι τὴν στρατιάν ὁ Μενήμιος ὑπέμεινεν, ἀλλ' ἐξαγαγὼν 25 παρέταξεν ὡς εἰς μάχην, καταφρονήσας τῶν τὰ συμφέροντα ὑποτιθεμένων. καὶ οἱ Τυρρηνοὶ τὴν ἀνοιαν τοῦ στρατηγοῦ μέγα εὐτύχημα ἠγησάμενοι, κατέβαινον ἐκ τοῦ χάρακος οὐκ ἐλάττους ἢ διπλάσιοι τῶν πολεμίων ὄντες. ὡς δὲ συνέπεσον ἀλλήλοις, φόνος 30 ἐρίγνετο τῶν Ῥωμαίων πολὺς οὐ δυναμένων ἐν τῇ τάξει μένειν. ἐξώθουν γὰρ αὐτοὺς οἱ Τυρρηνοὶ τοῦ τε χωρίου τὴν φύσιν ἔχοντες σύμμαχον καὶ τῶν

ἐφρονηκότων κατόπιν· ἐτάξαντο γὰρ ἐπὶ βάθος· ἐμπτώσει πολλῇ συνεργοῦμενοι. πεσόντων δὲ τῶν ἐπιφανεστάτων λοχαγῶν, ἢ λοιπῇ τῶν Ῥωμαίων δύναμις ἐγκλίνασα ἐφευγεν ἐπὶ τὸν χάρακα· οἱ δ' ἠκολούθουν, καὶ τὰς τε σημαίας αὐτῶν ἀφαιροῦνται καὶ τοὺς τραυματίας συλλαμβάνουσι καὶ τῶν νεκρῶν γίνονται κύριοι. καὶ κατακλείσαντες αὐτοὺς εἰς πολιορκίαν καὶ δι' ὅλης τῆς λοιπῆς ἡμέρας προσβολὰς ποιησάμενοι πολλὰς καὶ οὐδὲ τὴν νύκτα ἀφέντες, αἰρουῦσι τὸν χάρακα ἐκλιπόντων αὐτὸν τῶν ἔνδον, καὶ γίνονται πολλῶν σωμάτων τε καὶ χρημάτων ἐγκρατεῖς· οὐδὲ γὰρ ἀποσκευάσασθαι δύναμιν ἔσχον οἱ φεύγοντες, ἀλλ' ἀραπητῶς αὐτὰ τὰ σώματα διέσωσαν, οὐδὲ τὰ ὄπλα πολλοὶ φυλάττοντες.

XXIII. Οἱ δ' ἐν τῇ Ῥώμῃ τὴν τε ἀπώλειαν τῶν 15 σφετέρων καὶ τὴν ἄλωσιν τοῦ χάρακος μαθόντες· ἤκου γὰρ οἱ πρῶτοι διασωθέντες ἐκ τῆς τροπῆς πολλῆς ἔτι νυκτὸς οὔσης· εἰς μέγαν θόρον βον ὥσπερ εἰ 1808 κὸς κατέστησαν· καὶ ὡς αὐτίκα δὴ μάλα τῶν πολεμίων ἐπὶ σφᾶς ἔλευσομένων, ἀρπάζαντες τὰ ὄπλα, 20 οἱ μὲν τὰ τεῖχην περιεστεφάνουν, οἱ δὲ πρὸ τῶν πυλῶν ἐτάξαντο, οἱ δὲ τὰ μετέωρα τῆς πόλεως κατελαμβάνοντο. ἦν δὲ δρόμος ἄτακτος ἀνὰ τὴν πόλιν ὅλην καὶ βοή συμμιγῆς, καὶ ἐπὶ τοῖς στέγεσι τῶν οἰκῶν εἰς ἀκτὴν καὶ ἀγῶνα εὐτρεπῆς ὁ κατοικίδιος ὄχλος, 25 πυρσοὶ τε συνεχεῖς, οἷα δὲ ἐν νυκτὶ σκοταῖα ὑπὸ λαμπάδων καὶ ἀπὸ τεγῶν τοσοῦτοι τὸ πλήθος ἦροντο, ὥστε συναφῆς εἶναι δοκεῖν τοῖς πρόσωθεν ὁρᾶσι τὸ σέλας καὶ δόξαν ἐμπιμπραμένης πόλεως παρασχεῖν. καὶ εἰ τότε οἱ Τυρρηνοὶ τῶν ἐκ τοῦ χάρακος ἀφελειῶν 30 ἅπαντα ἂν διέφθαρτο ἢ στρατεύσασα ἐπ' αὐτοὺς δύ-

ναμῖς· νῦν δὲ πρὸς ἀρπαγὰς τε τῶν ἐγκαταλειφθέντων ἐν τῷ χάρακι τραπόμενοι, καὶ ἀναπαύσει τὰ σώματα δόντες, μεγάλου εὐτυχήματος ἑαυτοὺς ἐστέρησαν. τῇ δ' ἐξῆς ἡμέρᾳ τὰς δυνάμεις ἄγοντες ἐπὶ τὴν Ῥώμην, καὶ σταδίους ἀμφὶ τοὺς ἑκκαίδεκα ἀποσχόντες, ὄρος ἕξ οὗ σύνοπτός ἐστιν ἡ Ῥώμη τὸ καλούμενον Ἰάνικλον καταλαμβάνονται· ὅθεν ὀρμώμενοι τὴν Ῥωμαίων χώραν ἠγρόν τε καὶ ἔφερον ἀκόλυτοι κατὰ πολλὴν τῶν ἐνδοῦ ὑπεροφίαν, μέχρι τοῦ παραγενέσθαι τὸν ἕτερον τῶν ὑπάτων Ὀρέτιον ἄγοντα τὴν ἐν Οὐλολούσχοις δύναμιν. τότε δὴ ἐν τῷ ἀσφαλεῖ Ῥωμαῖοι νομίσαντες εἶναι, καὶ τὴν ἐν τῇ πόλει νεότητα καθοπλίσαντες, ἐξῆλθον εἰς τὴν ὑπαιθρον. ὡς δὲ τὴν τε πρώτην μάχην ἀπὸ σταδίων ὀκτὼ τῆς πόλεως ποιησάμενοι παρὰ τὸ τῆς Ἑλπίδος ἱερὸν ἐνίκησάν τε καὶ ἀπεώσαντο τοὺς ἀντιταξαμένους, καὶ μετὰ ταύτην αὐθις ἑτέρα πλείονι δυνάμει τῶν Τυρρηνοῶν ἐπελθόντων παρὰ ταῖς Κολλίναις καλουμέναις πύλαις [ποιησάμενοι] λαμπρῶς ἠγωνίσαντο, [καὶ] ἀνέπνευσαν ἐκ τοῦ θέους καὶ τὸ ἔτος τοῦτο ἐτελεύτα.

XXV. Τῷ δ' ἐξῆς ἔτει περὶ τὰς θερινὰς μάλιστα τροπὰς Σεξτίλλου μηνὸς παραλαμβάνουσι τὴν ὕπατείαν ἄνδρες ἔμπειροι πολέμων, Σερούιός τε Σερουίλιος καὶ Ἀύλος Οὐεργίνιος· οἷς ὁ πρὸς τοὺς Τυρρηνοὺς πόλεμος καίτοι μέγας καὶ χαλεπὸς ὦν χροσὸς ἐφαίνετο παρὰ τὸν ἐντὸς τείχους ἐξεταζόμενος. ἀσπόρον γὰρ τῆς χώρας ἐν τῷ παρελθόντι χειμῶνι διὰ τὸν ἐπιχειρισμὸν τοῦ πλησίον ὄρους καὶ τὰς συνεχεῖς καταδρομὰς γενομένης, καὶ οὐδὲ τῶν ἐμπόρων ἔτι τὰς ἔξωθεν ἐπεισαρόντων ἀγορὰς, σπάνις ἰσχυρὰ σίτου τὴν Ῥώμην κατέσχε μεστὴν οὖσαν ὄχλου τοῦ τε κατοικιδίου καὶ τοῦ συναρρογηκότος ἐκ τῶν ἀγρῶν. τῶν μὲν γὰρ

ἐν ἡβῃ πολιτῶν ὑπὲρ τὰς ἑνδεκα μυριάδας ἦσαν, ὡς ἐκ τῆς ἔγγιστα τιμήσεως εὐρέθη, γυναικῶν δὲ καὶ παίδων καὶ τῆς οἰκετικῆς θεραπείας ἐμπόρων τε καὶ τῶν ἐργαζομένων τὰς βαναύσους τέχνας μετοίκων· οὐδενὶ γὰρ ἐξῆν Ῥωμαίων οὔτε κάπηλον οὔτε χειροτέχνην βίον ἔχειν· οὐκ ἔλαττον ἢ τριπλάσιον τοῦ πολιτικοῦ πλήθους· οὐκ ἦν παραμυθῆσασθαι ῥάδιον, ἀγανακτοῦντας ἐπὶ τῷ πάθει καὶ συντρέχοντας εἰς τὴν ἀγορὰν καὶ καταβοῶντας τῶν ἐν τοῖς τέλεσιν, ἐπὶ τε τὰς οἰκίας τῶν πλουσίων κατὰ πλήθος ὄθουμένων, καὶ διαρπάζειν ἐπιχειροῦντας ἄτερ ὠνῆς τὰς ἀποκειμένας αὐτοῖς τροφάς. οἱ δὲ δήμαρχοι συνάγοντες αὐτοὺς εἰς ἐκκλησίαν καὶ κατηγοροῦντες τῶν πατρικίων ὡς αἰεὶ τι κακὸν ἐπὶ τοῖς πένησι μηχανωμένων, καὶ πάνθ' ὅσα πώποτε δεινὰ κατὰ τὴν ἀτέμενων, καὶ ἀφύλακτον ἀνθρώποις τύχην ἐκείνων ἔργα λέγοντες, ὕβριστὰς εἶναι πικροὺς ἐξειργάσαντο. τοιοῦτοις συνεχόμενοι κακοῖς οἱ ὑπατοὶ πέμπουσι τοὺς συνωνησομένους σίτον ἐκ τῶν σύνεγγυς τόπων μετὰ πολλῶν χρημάτων, καὶ τὸν ἐν ταῖς οἰκίαις ἔταξαν εἰς τὸ δημόσιον ἀναφέρειν τοὺς εἰς τὸν ἑαυτῶν βίον πλείονα τοῦ μετρίου παραθεμένους, τιμὴν ὀρίσαντες ἀποχωρῶσαν. ταῦτα δὴ καὶ ἄλλα πολλὰ μηχανώμενοι τοιαῦτα, ἐπέσχον τῶν πενήτων τὰς παρανομίας καὶ ἀναστροφὴν ἔλαβον τῆς εἰς τὸν πόλεμον παρασκευῆς.

XXVI. Ἐπεὶ δ' αἱ μὲν ἔξωθεν ἐβράδυνον ἀγοραί, τὰ δ' ἐντὸς τείχους τροφῆς ἐχόμενα πάντα καταλάτο, ἀποστροφῇ δὲ τῶν κακῶν οὐδεμία ἦν ἑτέρα, ἀλλὰ δεῖν θάτερον ἐχρῆν, ἢ τοὺς πολεμίους ἐκβαλεῖν ἐκ τῆς χώρας ἀπάσῃ δυνάμει παρακινδυνεύσαντας, ἢ τειχῆρεις μένοντας ὑπὸ λιμοῦ τε καὶ στάσεως δια-

φθαρήναι· τὸ κουφότερον αἰρούμενοι τῶν κακῶν ἐγνώσαν ὁμοίε χωρεῖν τοῖς ἐκ τῶν πολεμίων δεινοῖς. προαγαρόντες δὲ τὰς δυνάμεις ἐκ τῆς πόλεως περὶ μέσας νύκτας διέβησαν τὸν ποταμὸν ἐπὶ σχεδίαις, καὶ πρὶν ἡμέραν λαμπρὰν γενέσθαι πλησίον τῶν πολεμίων κατεστρατοπέδευσαν. τῇ δ' ἐξῆς ἡμέρᾳ προσελθόντες ἔταξαν ὡς εἰς μάχην τὸν στρατόν. εἶχε δὲ τὸ μὲν δεξιὸν τῶν κεράτων Οὐεργίνιος, τὸ δ' εὐάνυμον Σερουίλιος. ἰδόντες δ' αὐτοὺς εὐτρεπεῖς ὄντας οἱ 5 Τυρρηνοὶ πρὸς τὸν ἀγῶνα σφόδρα ἐχάρησαν, ὡς ἐν τῷ τότε κινδύνῳ κατὰ νοῦν χωρήσαντι τὴν Ῥωμαίων καθελοῦντες ἀρχὴν, εἰδότες ὅτι πᾶν ὅσον ἦν κράτιστον στρατιωτικὸν αὐτῶν εἰς τὸν ἀγῶνα ἐκείνον ᾤρητο, καὶ δι' ἐλπίδος ἔχοντες, ἐν ᾗ πολὺ τὸ κοῦφον 1811 ἦν, φραδίως αὐτῶν κρατήσκειν, ἐπειδὴ τὴν μετὰ Μενηρίου δύναμιν ἐν δυσχωρίαις παραταξαμένην σφίσει ἐνίκησαν. γενομένης δ' ἰσχυρᾶς καὶ πολυχρονίου μάχης, πολλοὺς μὲν ἀποκτείναντες Ῥωμαίων, πολλῶ δ' ἔτι πλείονας τῶν σφετέρων ἀποβαλόντες ἀνεχώρου 20 ρον βάδην ἐπὶ τὸν χάρακα. ὁ μὲν οὖν Οὐεργίνιος τὸ δεξιὸν κέρας ἔχων οὐκ εἶα διώκειν τοὺς σφετέρους, ἀλλ' ἐπὶ τῷ κατορθώματι μένειν· ὁ δὲ Σερουίλιος ὁ τεταγμένος ἐπὶ θατέρου κέρας ἐδίωκε τοὺς καθ' ἑαυτὸν ἐπόμενος ἄχρι πολλοῦ. ὡς δ' ἐν τοῖς μετεώροις ἐγένετο, ὑποστρέψαντες οἱ Τυρρηνοί, καὶ τῶν ἐκ τοῦ χάρακος ἐπιβοηθησάντων, ἐνσείουσιν αὐτοῖς. οἱ δ' ὀλίγον τιὰ δεξάμενοι χρόνου ἐγκλίνουσι τὰ νῶτα, καὶ κατὰ τοῦ λόφου διωκόμενοι σποράδες ἀπώλλυντο. μαθὼν δὲ Οὐεργίνιος ἐν οἴαις ἦν τύχαις ἢ τὸ ἀριστερὸν κέρας κατέχουσα στρατιά, πᾶσαν ἔχων τὴν δύναμιν ἐν τάξει πλαγίαν ἤγε διὰ τοῦ ὄρους ὁδόν. γενομένος δὲ κατὰ νύκτου τῶν διωκόντων τοὺς σφετέρους, 1815

μέρος μὲν τι ταύτη καταλείπει τῆς στρατιᾶς καλύσεως ἔνεκεν τῶν ἐκ τοῦ χάρακος ἐπιβοηθησάντων, τὸ δὲ λοιπὸν αὐτὸς ἄγων ἐπεφέρειτο τοῖς πολεμοῖς. ἐν δὲ τούτῳ καὶ οἱ μετὰ τοῦ Σερουιλίου θαρσύναντες τῇ παρουσίᾳ τῶν σφετέρων ὑποστρέφουσί τε καὶ καταστάτες ἐμάχοντο. κινκλωθέντες δὲ ὑπ' ἀμφοῖν οἱ Τυρρηνοὶ καὶ οὔτε πρόσω διεκπορευθῆναι δυνάμενοι διὰ τοὺς ὁμοίε χωροῦντας, οὔτε ὀπίσω φεύγειν ἐπὶ τὸν χάρακα διὰ τοὺς κατόπιν ἐπιόντας, οὐκ ἀνάδρωσ ἀτυχῶς δ' οἱ πλείους κατεκόπησαν. γενομένης 10 δ' οἰκτρᾶς νίκης περὶ τοὺς Ῥωμαίους, καὶ οὐ παντάπασιν εὐτυχῆς τέλος εἰληφότος τοῦ ἀγῶνος, οἱ μὲν ὑπατοὶ πρὸ τῶν νεκρῶν καταστρατοπεδευσάμενοι τὴν ἐπιούσαν νύκτα ἠύλισαντο· οἱ δὲ κατέχοντες τὸ Ἰάνικλον Τυρρηνοί, ἐπειδὴ οὐδεμία παρὰ τῶν οἰκοθεν 15 ἤρχετο ἐπικουρία, καταλιπεῖν ἔκριναν τὸ φρούριον καὶ ἀναστρατοπεδεύσαντες νυκτὸς ἀπῆραν εἰς τὴν Οὐιεντανῶν πόλιν ἐγγυτάτω σφίσι τῶν Τυρρηνίδων πόλεων κειμένην. τοῦ δὲ χάρακος αὐτῶν οἱ Ῥωμαῖοι κρατήσαντες τὰ τε χρήματα διαρπάξουσιν, ὅσα ὑπελεί- 20 ποντο ἀδύνατα ὄντα ἐν φυγῇ φέρεσθαι, καὶ τραυματίας λαμβάνουσι πολλοὺς, τοὺς μὲν ἐν ταῖς σινηαῖς ἀπολειφθέντας, τοὺς δὲ ἀνὰ τὴν ὁδὸν ἄπασαν ἐστρωμένους. ἀντείχοντο γάρ τινες γλιχόμενοι τῆς οἰκαδε ὁδοῦ καὶ διεκατέρου παρὰ δύναμιν ἀκολουθοῦντες, 25 εἶτα βαρυνόμενων αὐτοῖς τῶν μελῶν ἡμιθνήτες κατέρρεον ἐπὶ τὴν γῆν· οὗς οἱ τῶν Ῥωμαίων ἱππεῖς ἐπὶ πολὺ τῆς ὁδοῦ προσελθόντες ἀνείλουτο· καὶ ἐπειδὴ οὐδὲν ἔτι πολέμιον ἦν καθελόντες τὸ φρούριον καὶ τὰ λάφυρα ἄγοντες ἤκου εἰς τὴν πόλιν, τὰ σώματα 30 τῶν ἐν τῇ μάχῃ τελευτησάντων κομίσαντες, οἰκτρὰν ὄψιν ἄπασι τοῖς πολίταις διὰ πληθὸς τε καὶ ἀρετῆν

τῶν ἀπολομένων. ὥστε ὁ μὲν δῆμος οὔτε ἐορτάζειν ὡς καλὸν ἀγῶνα κατορθώσας ἤξειο, οὔτε πενθεῖν ὡς ἐπὶ μεγάλη καὶ ἀνηκέστῳ συμφορᾷ· ἡ δὲ βουλὴ τοῖς μὲν θεοῖς τὰς ἀναγκαίους ἐψηφίσατο θυσίας, 5 τὴν δ' ἐπιπέμπειν τοῦ θριάμβου πομπὴν οὐκ ἐπέτρεψε ποιήσασθαι τοῖς ὑπάτοις. μετ' οὐ πολλὰς δ' ἡμέρας ἀγορᾶς ἐπλήσθη παντοδαπῆς ἡ πόλις, τῶν τε δημοσίων πεμφθέντων καὶ τῶν εἰσθότων ἐμπορευέσθαι πολλὴν εἰσαγαρόντων σῆτον, ὥστ' ἐν τῇ προτέρᾳ πάντας εὐετη- 10 ρία γενέσθαι.

XXVII. Καταλυθέντων δὲ τῶν ὑπαιθρίων πολέμων, ἡ πολιτικὴ στάσις αὐθις ἀνεκαίετο τῶν δημάρχων πάλιν ταραττόντων τὸ πλῆθος, καὶ τὰ μὲν ἄλλα πολιτεύματα διεσκέδασαν αὐτῶν ἀντιπαττόμενοι πρὸς 15 ἕκαστον οἱ πατριῖοι· τὴν δὲ κατὰ Μενηρίου δίκην τοῦ νεωστὶ ὑπατεύσαντος καίτοι πολλὰ πραγματευθέντες ἀδύνατοι ἐγένοντο διαλυθεῖν· ἀλλ' ὑπαχθεῖς ὁ ἀνὴρ εἰς δίκην ὑπὸ [τῶν] δουρῶν δημάρχων Κοῦντου Κωνσιδίου καὶ Τίτου Γενυλίου, καὶ λόγον ἀπαιτού- 20 μενος τῆς στρατηρίας τοῦ πολέμου τέλος οὔτ' εὐτυχὲς οὔτ' εὐπρεπὲς λαβούσης, μάλιστα δὲ διαβαλλόμενος ἐπὶ τῷ Φαβίῳ ὀλέθρῳ καὶ τῇ Κρεμέρας ἀλώσει, δικάζοντος τοῦ δημοτικοῦ ὄχλου κατὰ φυλάς, οὐ παρ' ὀλίγας ψήφους ὤφλεν, υἱὸς ὢν Ἀργίππα Μενηρίου 25 τοῦ καταγαρόντος ἐκ τῆς φυγῆς τὸν δῆμον καὶ διαλλάξαντος πρὸς τοὺς πατρικίους, ὃν ἀποθανόντα ἡ βουλὴ ἐκ τῶν δημοσίων χρημάτων λαμπροτάταις ἐκόσμησε ταφαῖς, αἱ δὲ γυναῖκες αἱ Ῥωμαίων ἐνιαύσιον ἐπέδθησαν χρόνον πορφύραν καὶ χρυσὸν ἀποθέμεναι. 30 οὐ μέντοι θανάτου γε αὐτῷ οἱ καταδικασάμενοι ἐτίμησαν, ἀλλ' ἐκτίσματος ὁ πρὸς μὲν τοὺς νῦν ἐξεταζόμενον βίου γέλωτος ἂν ἄξιον φανείη, τοῖς δὲ τότε

ἀνθρώποις αὐτουργοῖς οὔσι καὶ πρὸς αὐτὰ τὰ ἀναγκαῖα ζῶσι, μάλιστα δ' ἐκείνῳ τῷ ἀνδρὶ πενίαν κληρονομήσαντι παρὰ τοῦ πατρὸς ἀφνὲς ἦν καὶ βαρὺ, δισχίλων ἀριθμὸς ἀσσαρίων. ἦν δὲ ἀσσαρίον τότε χάλκεον νόμισμα βάρος λιτριάτων, ὥστε τὸ σύμπαν ὄφλημα 5 ταλάντων ἐκκαίδεκα εἰς ὀλίγην χαλκοῦ γενέσθαι. καὶ τοῦτο ἐπίφθορον ἐφάνη τοῖς τότε ἀνθρώποις· καὶ ἐπανορθώσασθαι βουλόμενοι αὐτό, τὰς μὲν χρηματικὰς ἔπαυσαν ζημίας, μετήνεγκαν δ' εἰς προβάτων ἐκτί- 10 σματα καὶ βοῶν, τάξαντες καὶ τούτων ἀριθμὸν ταῖς ὕστερον ἐσομέναις ὑπὸ τῶν ἀρχόντων τοῖς ἰδιώταις ἐπιβολαῖς. ἐκ δὲ τῆς Μενηρίου καταδίκης ἀφορμῆν αὐθις εἰλήφισαν οἱ πατριῖοι τῆς πρὸς τὸ δημοτικὸν ὀργῆς, καὶ οὔτε τὴν κληρουχίαν ἐπέτρεπον ἐτι αὐτῷ 15 ποιέσθαι, οὔτ' ἄλλο ἐβούλοντο ἐνδιδόναι μαλακὸν οὐδέν. μετ' οὐ πολὺ δὲ καὶ τῷ δήμῳ μετέμελε τῶν δεδικασμένων, ἐπειδὴ τὴν τελευταίην τοῦ ἀνδρὸς ἐπέθετο· οὐδὲ γὰρ εἰς ἀνθρώπων ἐτι συνῆλθεν ὀμιλίας, οὐδ' ἐν δημοσίῳ τινὶ πρὸς οὐδενὸς ὤφθη τόπων· 20 ἔξόν τε αὐτῷ τὴν ζημίαν ἐκτίσαντι μηδενὸς ἀπελαύ- νησθαι τῶν κοινῶν· ἔτοιμοι γὰρ ἦσαν οὐκ ὀλίγοι τῶν ἐπιτηδείων αὐτοῦ τὴν καταδίκην ἀπαριθμεῖν· οὐκ ἠξίωσεν, ἀλλὰ θανάτου τὴν συμφορὰν τιμησάμενος οἰκοί μὲνων καὶ οὐδένα προσιέμενος ὑπὸ τε ἀθυμίας καὶ σίτων ἐποχῆς μαρανθίαις ἀπέστη τοῦ βίου. καὶ 25 τὰ μὲν ἐν τούτῳ πραχθέντα τῷ ἐναιυτῷ τοιαύδε ἦν.

XXVIII. Ποπλίου δὲ Οὐαλερίου Ποπλικόλα καὶ Γαῖου Ναυτίου παραλαβόντων τὴν ἀρχὴν, ἕτερος ἀνὴρ πάλιν τῶν πατρικίων Σερούιος Σερονίλιος, ὁ τῷ παρελθόντι ὑπατεύσας ἔπει, μετ' οὐ πολὺν ἢ τὴν 30 ἀρχὴν ἀποθέσθαι χρόνον εἰς τὸν ὑπὲρ τῆς ψυχῆς ἀγῶνα ἤχθη. οἱ δὲ προθέντες αὐτῷ τὴν ἐν τῷ δήμῳ δίκην



δύο τῶν δημάρχων ἦσαν, Λεύκιος Καϊδίσιος καὶ Τι-  
 τος Στατίος, οὐκ ἀδικήματος ἀλλὰ τύχης ἀπαιτοῦντες  
 λόγου, ὅτι κατὰ τὴν πρὸς Τυρρηνοὺς μάχην ὠσάμενος  
 ἐπὶ τὸν χάρακα τῶν πολεμίων ὁ ἀνὴρ θρασύτερον <sup>1821</sup>  
 5 μᾶλλον ἢ φρουμιώτερον, ἐδιώχθη τε ὑπὸ τῶν ἔνδου  
 ἀθρόων ἐπεξελθόντων καὶ τὴν κρατίστην νεότητα  
 ἀπέβαλεν. οὗτος ὁ ἄγων ἀπάντων ἐφάνη τοῖς πατρι-  
 κίοις ἀγῶνων βαρύντατος, ἡγανάκτου τε συυιόντες  
 πρὸς ἀλλήλους καὶ δεινὸν ἐποιοῦντο, εἰ τὰς εὐτολ-  
 10 μίας τῶν στρατηγῶν καὶ τὸ μηδένα κίνδυνον ὀκνεῖν,  
 ἐὰν ἐναντιωθῆ ταῖς ἐπιβολαῖς αὐτῶν τὸ δαιμόνιον,  
 εἰς κατηγορίαν ἄξουσιν οἱ μὴ στάντες παρὰ τὰ δεινά·  
 δειλίας τε καὶ ὄκνου καὶ τοῦ μηδὲν ἔτι καινουργεῖν  
 τοὺς ἡγεμόνας, ὅφ' ὧν ἐλευθερία τε ἀπόλλυται καὶ  
 15 ἡγεμονία καταλύεται, τοὺς τοιοῦτους ἀγῶνας αἰτίους  
 ἔσεσθαι κατὰ τὸ εἶκος ἐλογίζοντο. παρακλήσει τε  
 πολλῇ ἐχρῶντο τῶν δημοτικῶν μὴ καταγινῶναι τοῦ  
 ἀνδρός τὴν δίκην, διδάσκοντες ὡς μεγάλα βλάψουσι  
 τὴν πόλιν ἐπὶ ταῖς ἀτυχίαις τοὺς στρατηγούς ζημιού-  
 20 τες. ἐπεὶ δ' ὁ τοῦ ἀγῶνος ἐνέστη χρόνος, παρελθὼν  
 εἰς τῶν δημάρχων κατηγορήσῃ τοῦ ἀνδρός, Λεύκιος  
 Καϊδίσιος, ὅτι δι' ἀφροσύνην τε καὶ τοῦ στρατηγεῖν <sup>1822</sup>  
 ἀπειρίαν εἰς πρόδηλον ἄγων ὄλεθρον τὰς δυνάμεις  
 ἀπώλεσε τῆς πόλεως τὴν κρατίστην ἀκμὴν, καὶ εἰ  
 25 μὴ ταχεῖα τοῦ κακοῦ γινῶσις ἐγένετο τῷ συνυπάτῳ,  
 καὶ κατὰ σπουδὴν ἄγων τὰς δυνάμεις τοὺς τε πολε-  
 μίους ἀνέστειλε καὶ τοὺς σφετέρους ἔσωσε, μὴδὲν  
 ἂν γενέσθαι τὸ κωλύσον ἅπασαν ἀπολωλέναι τὴν ἐτέ-  
 ραν δύναμιν καὶ τὸ λοιπὸν ἡμίσειαν ἀντὶ διπλασίας  
 30 εἶναι τὴν πόλιν. τοιαῦτα εἰπὼν μάρτυρας ἐπηγάγετο  
 λοχαγούς τε ὅσοι περιῆσαν, καὶ τῶν ἄλλων στρατιω-  
 τῶν τινας, οὐ τὸ ἑαυτῶν αἰσχροὺν ἐπὶ τῇ τότε ἥττη

τε καὶ φυγῇ ζητοῦντες ἀπολύσασθαι τὸν στρατηγὸν  
 ἠτιώοντο τῆς περὶ τὸν ἄγωνα δυσποτυμίας. ἔπειτα οἱ-  
 κτου ἐπὶ τῇ συμφορᾷ τῶν τότε τεθνηκότων καταγέ-  
 μενος πολὺν καὶ τὸ δεινὸν ἀνξήσας, τὰ τε ἄλλα ὅσα  
 εἰς φθόνον κοινῇ κατὰ τῶν πατρικίων λεγόμενα τοὺς 5  
 μέλλοντας ὑπὲρ τοῦ ἀνδρός δεήσεσθαι ἀνείρξειν ἐμε-  
 λεν ἐκ πολλῆς ὑπεροψίας διελθὼν, παρέδωκε τὸν  
 λόγον.

1023 XXVIII. Παραλαβὼν δὲ τὴν ἀπολογίαὶν ὁ Σε-  
 ρουίλιος εἶπεν· Εἰ μὲν ἐπὶ δίκην με κεκλήκατε, ὦ <sup>10</sup>  
 πολῖται, καὶ λόγον ἀπαιτεῖτε τῆς στρατηγίας, ἔτοι-  
 μός εἰμι ἀπολογήσασθαι· εἰ δὲ ἐπὶ τιμωρίαν κατε-  
 γνωσμένην, καὶ οὐδὲν ἔσται μοι πλεον ἀποδείξαντι.  
 ὡς οὐδὲν ὑμᾶς ἀδικῶ, λαβόντες τὸ σῶμα ὅ τι πάλαι  
 βούλεσθε χρῆσθε. ἐμοὶ τε γὰρ κρεῖττον ἀκρίτω ἀπο- <sup>15</sup>  
 θανεῖν μᾶλλον, ἢ λόγου τυχόντι καὶ μὴ πείσαντι  
 ὑμᾶς· δόξαίμι γὰρ σὺν δίκῃ πάσχειν ὅ τι ἂν μου κα-  
 ταγινῶτε· ὑμεῖς τ' ἐν ἐλάττωι αἰτία ἔσεσθε ἀφελό-  
 μενοὶ μου τὸν λόγον καὶ ἐν ᾧ καὶ εἰ τι ἀδικῶ ὑμᾶς  
 ἀδελόν ἐστιν ἔτι ταῖς ὀργαῖς χαρισάμενοι. ἔσται δέ <sup>20</sup>  
 μοι ἢ διάνοια ὑμῶν ἐκ τῆς ἀκροάσεως καταφανής,  
 1024 θοροῦβον τε καὶ ἡσυχίαν εὐκάζουσι, πότερον ἐπὶ τιμω-  
 ρίαν ἢ ἐπὶ δίκην κεκλήκατέ με. Ταῦτ' εἰπὼν ἐπέσχε·  
 σιγῆς δὲ γενομένης καὶ τῶν πλείστων ἐμβοησάντων  
 θαρρεῖν τε καὶ ὅσα βούλεται λέγειν, παραλαβὼν τὸν <sup>25</sup>  
 λόγον πάλιν ἔλεξεν· Ἄλλ' εἰ τοὶ δικασταῖς ὑμῖν, ὦ  
 πολῖται, καὶ μὴ ἐχθροῖς χρῆσομαι, θαδίως πείσειν  
 ὑμᾶς οἴομαι, ὅτι οὐδὲν ἀδικῶ. ποιήσομαι δὲ τὴν ἀρ-  
 χὴν τῶν λόγων ἐξ ὧν ἅπαντες ἴστε. ἐγὼ κατέστην  
 ἐπὶ τὴν ἀρχὴν σὺν τῷ κρατίστῳ Οὐερρινίῳ, κατ' ὄν <sup>30</sup>  
 χρόνον ἐπιτειχίσαντες ὑμῖν οἱ Τυρρηνοὶ τὸν ὑπὲρ τῆς  
 πόλεως λόγον, πάσης ἐκράτου τῆς ὑπαλθρου [ἀρχῆς],

καὶ ἐν ἐλπίδι ἦσαν τοῦ καταλύειν ἡμῶν τὴν ἀρχὴν ἐν τάχει. λιμὸς δὲ πολὺς ἦν ἐν τῇ πόλει καὶ στάσις καὶ τοῦ τί χρῆ πρόκειται ἀμνηστία. τοιοῦτοις δὴ καιροῖς ἐπιστάς οὕτως ταραχώδεσι καὶ φοβεροῖς, τοὺς 5 μὲν πολεμίους ἅμα τῷ συνάροχοντι ἐνίκησα διτταῖς μάχαις καὶ ἠνάγκασα καταλιπόντας τὸ φρούριον ἀπελθεῖν· τὸν δὲ λιμὸν οὐκ εἰς μακρὰν ἔπανσα τροφῆς ἀφθόνου πληρώσας τὰς ἀγοράς, καὶ τοῖς μετ' αὐτὸν 1820 ὑπάτοις τὴν τε χώραν παρέδωκα ὅπλων πολεμίων 10 ἐλευθέρων, καὶ τὴν πόλιν ὑγιῆ πάσης νόσου πολιτικῆς, εἰς ἃς κατέβαλον αὐτὴν οἱ δημαγωγοῦντες. τίνοσ οὖν ἀδικήματος ὑπεύθυνός εἰμι ὑμῖν; εἰ μὴ τὸ νικᾶν τοὺς πολεμίους ἐστὶν ὑμᾶς ἀδικεῖν. εἰ δ' ἀποθανεῖν τισι τῶν στρατιωτῶν κατὰ τὴν μάχην εὐφυχῶς 15 ἀγωνιζομένοις συνέπεσε, τί Σερουίλιος τὸν δῆμον ἀδικεῖ; οὐ γὰρ δὴ θεῶν τις ἐγγυητὴς τοῖς στρατηγοῖς τῆς ἀπάντων ψυχῆς τῶν ἀγωνιζομένων γίνεται, οὐδ' ἐπὶ διακειμένοις καὶ δητοῖς τὰς ἡγεμονίας παραλαμβάνομεν, ὥστ' ἀπάντων κρατῆσαι τῶν πολεμίων καὶ 20 μηδένα τῶν ἰδίων ἀποβαλεῖν. τίς γὰρ ἂν ὑπομείνειεν 1820 ἄνθρωπος ἂν ἅπαντα καὶ τὰ τῆς γνώμης καὶ τὰ τῆς τύχης εἰς ἑαυτὸν ἀναλαβεῖν; ἀλλὰ τὰ μεγάλα ἔργα μεγάλων ἀεὶ κινδύνων ἀνούμεθα.

XXX. Καὶ οὐκ ἐμοὶ ταῦτα πρώτῳ πολεμίους 25 ὁμοίως χωρήσαντι συνέβη παθεῖν, ἅπασιν δ' ὡς εἶπεῖν ὅσοι μάχας παρακεκινδυνευμένας σὺν ἐλάττωσι ταῖς σφετέραις δυνάμεσι πρὸς μείζονας τὰς τῶν ἐχθρῶν ἐποίησαντο. ἐδίωξαν γὰρ ἤδη τινὲς ἐχθρούς, καὶ αὐτοὶ ἔφυγον· καὶ ἀπέκτεινάν τε τῶν ἐναντίων πολ- 30 λούς, καὶ ἀπώλεσαν ἔτι πλείους τῶν σφετέρων. ἐὼ γὰρ λέγειν, ὅτι πολλοὶ καὶ τὸ παράπαν ἠττηθέντες σὺν αἰσχύνῃ τε καὶ βλάβῃ μεγάλη ἀνέστρεψαν, ἂν οὐδεὶς

τῆς τύχης δέδωκε δίκας· ἱκανὴ γὰρ ἡ συμφορὰ, καὶ τὸ μηδενὸς ἐπαίνου τυχεῖν, [ὡς δ'] εἰ καὶ μηδὲν ἄλλο, μεγάλη τοῖς ἡγεμόσιν καὶ χαλεπὴ ζημία. οὐ μὴν ἄλλ' ἔργω τοσοῦτου δέω λέγειν, ὃ πάντες οἱ μέτριοι 5 δίκαιον εἶναι φήσουσιν, ὡς οὐ δεῖ με τύχης εὐθύναις 1827 ὑπέχειν, ὥστ' εἰ καὶ μηδεὶς ἄλλος τοιόνδε ἀγῶνα ὑπέμεινεν εἰσελθεῖν, ἐγὼ μόνος οὐ παραιτοῦμαι, ἀλλὰ συγχωρῶ τὴν τύχην ἐξετάζεσθαι τὴν ἐμὴν οὐκ ἦττον τῆς γνώμης, ἐκεῖνο προειπών· ἐγὼ τὰς ἀν- 10 θρωπίας πράξεις τὰς τε δυστυχεῖς καὶ τὰς εὐτυχεῖς 10 οὐκ ἐκ τῶν κατὰ μέρος ἔργων πολλῶν οὕτων καὶ ποι- κίλων ὁρῶ κρινομένης, ἀλλ' ἐκ τοῦ τέλους· καὶ ὅταν μὲν τοῦτο χωρήσῃ κατὰ νοῦν, κἂν τὰ μεταξὺ πολλὰ 15 ὄντα μὴ καθ' ἡδονὰς γένηται, οὐδὲν ἦττον ἐπαινου- μένας ὑπὸ πάντων ἀκούω καὶ ζηλουμένας καὶ τῆς 15 ἀγαθῆς νομιζομένας τύχης· ὅταν δὲ πονηρὰς λάβωσι τελευτάς, καὶ ἂν ἅπαντα τὰ πρὸ τοῦ τέλους ἐκ τοῦ ἀρίστου γένηται, οὐ τῇ σπουδαίᾳ τύχῃ τῶν πραξάν- 20 των ἀποδιδόμενας, ἀλλὰ τῇ κακῇ. τοῦτον δὲ τὸν σκοπὸν προελόντες αὐτοὶ ἐξετάζετε καὶ τὴν ἐμὴν τύ- 20 χην, ἢ παρὰ τοὺς πολέμους κέχρημαι. καὶ ἂν μὲν 1828 εὐρητε ἠττημένον με ὑπὸ τῶν πολεμίων πονηρὰν καλεῖτέ μου τὴν τύχην· ἂν δὲ κεκρατηκότα τῶν ἐχθρῶν ἀγαθὴν· περὶ μὲν οὖν τῆς τύχης, οὐκ ἀγνοῶν 25 ὅτι φορτικοὶ πάντες εἰσὶν οἱ περὶ αὐτῆς λέγοντες, 25 ἔχων δ' ἔτι πλείω λέγειν παύσομαι.

XXXI. Ἐπειδὴ δὲ καὶ τῆς γνώμης κατηγοροῦσί μου, προδοσίαν μὲν οὐ τολμῶντες ἐπικαλεῖν οὐδ' ἀνανδρίαν, ἐφ' οἷς αἱ κατὰ τῶν ἄλλων στρατηγῶν γίνονται κρίσεις, ἀπειρίαν δὲ τοῦ στρατηγεῖν καὶ 30 ἀφροσύνην, ὅτι κίνδυνον ὑπέμεινα οὐκ ἀναγκαῖον ἐπὶ τὸν χάρακα τῶν πολεμίων ὠσάμενος, βούλομαι

καὶ περὶ τούτου λόγον ὑποσχέιν ὑμῖν, προχειρότατον μὲν τούτ' ἔχων εἰπεῖν, ὅτι τὸ μὲν ἐπιτιμᾶν τοῖς γενομένοις πάνν ῥάδιον καὶ παντὸς ἀνθρώπου, τὸ δὲ παραβάλλεσθαι πράγμασι καλοῖς χαλεπὸν καὶ ὀλίγων·  
 5 καὶ ὅτι οὐχ ὡσπερ τὰ γεγονότα φαίνεται ὅποια ἔστιν, οὕτω καὶ τὰ μέλλοντα ὅποια ἔσται· ἀλλ' ἐκεῖνα μὲν αἰσθήσεσι καὶ πάθεσι καταλαμβάνομεθα, ταῦτα δὲ μαντείαις καὶ δόξαις εἰκάζομεν, ἐν αἷς πολὺ τὸ ἀπα-  
 10 τηλόν· καὶ ὅτι ῥᾶστον ἀπάντων ἐστὶ λόγῳ στρατηγεῖν πολέμους ἔξω τοῦ δεινοῦ βεβηκότας, ὃ ποιούσιν οἱ κατηγοροῦντες ἐμοῦ. ἀλλ' ἵνα ταυτ' ἀφῶ, φέρε πρὸς θεῶν, εἶπατέ μοι, μόνος ἢ πρῶτος ὑμῖν ἐγὼ φαίνομαι βιάσασθαι φρούριον ἐπιβαλόμενος καὶ πρὸς ὑψηλὰ χω-  
 15 τέρων στρατηγῶν, ἢ πολλῶν μετ' ἄλλων ὑμέ- τέρων στρατηγῶν, ἔξ ὧν οἱ μὲν κατέρωθασαν, τοῖς δ' οὐκ ἐχώρησεν ἢ πείρα κατὰ νοῦν; τί δή ποτ' οὐκ τοὺς ἄλλους ἀφέντες ἐμὲ κρίνετε, εἰ ταῦτα ἀστρατη-  
 20 γησίας καὶ ἀφροσύνης ἔργα νομίζετε; πόσα δ' ἄλλα τούτου τολμηρότερα τοῖς ἡγεμόσιν ἐπεισι πράττειν, ὅταν τὸ ἀσφαλὲς καὶ λελογισμένον ἤμιστα οἱ καιροὶ δέχωνται; οἱ μὲν γε τὰς σημαίας ἀρπάσαντες τῶν σφετέρων ἔρριψαν εἰς τοὺς πολεμίους, ἵνα τοῖς βλα-  
 25 κεύουσι καὶ ἀποδειλιῶσιν ἐκ τοῦ ἀναγκαίου παραστή τὸ εὐψυχον ἐπισταμένους, ὅτι τοὺς μὴ ἀνασώσαντας  
 30 τὰ σημεῖα ὑπὸ τῶν στρατηγῶν δεῖ σὺν αἰσχύνῃ ἀποθανεῖν· οἱ δ' εἰς τὴν τῶν πολεμίων χώραν ἐμβαλόν- τες ἔλυσαν τὰ ξεύγματα τῶν ποταμῶν οὓς διέβησαν, ἵνα τοῖς φεύγειν διανοουμένοις ἄπορος ἢ τοῦ σωθῆναι ἐλπίς φανεῖσα θάρσος παραστήσῃ καὶ μένος ἐν ταῖς  
 30 μάχαις· οἱ δὲ τὰς σκιηὰς καὶ τὰ σκευοφόρα κατακαύ- σαντες ἀνάγκην ἐπέδηκαν τοῖς σφετέροις ἐκ τῆς πο- λεμίας ὅσων δέονται λαμβάνειν. ἔῶ τᾶλλα μυρία

ἄντα λέγειν, καὶ ὅσα τολμηρὰ ἔργα καὶ ἐνθυμήματα ἕτερα στρατηγῶν ἱστορία τε καὶ πείρα παραλαβόντες ἔχομεν, ἐφ' οἷς οὐδεὶς πώποτε τῶν ψευσθέντων τῆς ἐλπίδος ὑπέσχε δίκας. εἰ μὴ ἄρα ἔχει τις ὑμῶν αἰτιά-  
 5 σασθαί με, ὅτι προβαλὼν τοὺς ἄλλους εἰς προὔπτον ὄλεθρον, αὐτὸς ἔξω τοῦ κινδύνου τὸ σῶμα εἶχον. εἰ δὲ μετὰ πάντων τε ἐξηταζόμεν καὶ τελευταῖος ἀπηλ-  
 10 λαττόμην καὶ τῆς αὐτῆς τοῖς ἄλλοις μετεῖχον τύχης, τί ἀδικῶ; καὶ περὶ μὲν ἐμοῦ ταυτ' ἱκανὰ εἰρήσθω. XXXII. Περὶ δὲ τῆς βουλῆς καὶ τῶν πατρι-  
 1831 κίων, ἐπειδὴ τὸ κοινὸν ὑμῶν μῖστος, ὃ διὰ τὴν κωλυ-  
 10 θείσαν κληρουχίαν ἔχετε, καὶ ἐμὲ λυπεῖ, καὶ οὐδὲ ὁ κατήγορος αὐτὸ ἀπεκρύψατο, ἀλλὰ μέρος οὐκ ἐλάχι-  
 15 στον ἐποίησατο τῆς ἐμῆς κατηγορίας, βούλομαι βραχέα εἰπεῖν πρὸς ὑμᾶς. ἔσται δὲ μετὰ παρηρησίας ὁ λόγος·  
 20 ἄλλως γὰρ οὐτ' ἐν ἐγῶ δυναίμην λέγειν οὐθ' ὑμῖν ἀκούειν συμφέροι. οὐ δίκαια ποιεῖτε οὐδ' ὅσια, ὧ δημοταί, τῶν μὲν εὐεργεσιῶν ἄς εὐρεσθε παρὰ τῆς βουλῆς πολλῶν οὐσῶν καὶ μεγάλων οὐκ εἰδότες αὐτῇ  
 25 χάριν· εἰ δέ τι δεομένοις ὑμῖν ἔξ οὐ συγχωρηθέντος μεγάλα βλάπτειτ' ἐν τῷ κοινόν, οὐ φθονοῦσα ὑμῖν, ἀλλὰ τὸ συμφέρον τῆς πόλεως ὀρώσα, ἠναντιώθη, τοῦτο δι' ὀργῆς λαμβάνοντες. ἔδει δὲ ὑμᾶς μάλιστα  
 30 μὲν ὡς ἀπὸ τοῦ κρατίστου τὰ βουλευμάτα αὐτῆς γε- νόμενα καὶ ἐπὶ τῶ πάντων ἀγαθῶ δεχομένους ἀπο-  
 1832 στήναι τῆς σπουδῆς· εἰ δὲ ἀδύνατοι ἦτε κατασχέιν ἀσύμφορον ἐπιθυμίαν λογισμῶ σώφρονοι, μετὰ τοῦ πείθεσθαι τῶν αὐτῶν ἀξιοῦν τυγχάνειν, ἀλλὰ μὴ μετὰ τοῦ βιάσασθαι. αἱ γὰρ ἐκούσιοι δωρεαὶ τοῖς τε προε-  
 30 μένοις ἠδίους τῶν ἠναγκασμένων εἰσί, καὶ τοῖς λαμ- βάνουσι βεβαιότεραι τῶν μὴ τοιούτων. ὃ μὰ τοὺς θεοὺς οὐ λογίζεσθε ὑμεῖς, ἀλλ' ὑπὸ τῶν δημαγωγῶν,  
 18

ὥσπερ θάλαττα ὑπ' ἀνέμων ἄλλων ἐπ' ἄλλοις ἐπανι-  
 σταμένωσαν, ἀνακινούμενοί τε καὶ ἀγροαινούμενοι οὐδὲ  
 τὸν ἐλάχιστον χρόνον ἐν ἡσυχίᾳ καὶ γαλήνῃ διακει-  
 σθαι τὴν πόλιν ἔατε. τοιγάρτοι περίεστιν ἡμῖν κρείτ-  
 5 τωνα ἡγρεῖσθαι τῆς εἰρήνης τὸν πόλεμον· ὅταν μὲν γε  
 πολεμῶμεν τοὺς ἐχθροὺς κακῶς ποιοῦμεν, ὅταν δὲ  
 εἰρήνην ἄγωμεν τοὺς φίλους. καίτοι, ὦ δημόται, εἰ  
 μὲν ἅπαντα τὰ βουλευμάτα τοῦ συνεδρίου καλὰ καὶ  
 συμφέροντα ἡγρεῖσθ' εἶναι, ὥσπερ ἔστι, τί οὐχὶ καὶ  
 10 τοῦτο ἐν ἑξ' αὐτῶν ὑπολαμβάνετε εἶναι; εἰ δὲ μηδὲν  
 ἀπλῶς τὴν βουλὴν τῶν δεόντων οἴεσθε φρονεῖν, ἀλλ' 1833  
 αἰσχροῶς καὶ κακῶς τὴν πόλιν ἐπιτροπεύειν, τί δή  
 ποτε οὐχὶ μεταστησάμενοι αὐτὴν ἀθρόαν, αὐτοὶ ἄρ-  
 χετε καὶ βουλευέτε καὶ τοὺς ὑπὲρ τῆς ἡγεμονίας πο-  
 15 λέμους ἐκφέρετε, ἀλλὰ περικνίζετε αὐτὴν καὶ κατὰ  
 μικρὰ διαλύετε τοὺς ἐπιφανεστάτους ἀναρπάζοντες ἐν  
 ταῖς δίκαις; ἄμεινον γὰρ [ἦν] ἅπασιν ἡμῖν κοινῇ πο-  
 λεμείσθαι, ἢ καθ' ἕνα ἕκαστον ἰδίᾳ συκοφαντεῖσθαι.  
 ἀλλὰ γὰρ οὐχ ὑμεῖς αἴτιοι τούτων, ὥσπερ ἔφη, ἀλλ'  
 20 οἱ συνταράττοντες ὑμᾶς δημαγωγοὶ οὔτε ἄρχεσθαι  
 ὑπομένοντες οὔτε ἄρχειν εἰδότες. καὶ ὅσον μὲν ἐπὶ  
 τῇ τούτων ἀφροσύνῃ τε καὶ ἀπειρίᾳ πολλάκις ἂν ὑμῖν  
 τόδε τὸ σκάφος ἀνεγράπῃ· νῦν δ' ἢ τὰ τούτων σφάλ-  
 ματα ἐπανορθοῦσα, καὶ ἐν ὀρθῇ πλεῖν παρέχουσα  
 25 ὑμῖν τῇ πόλει, ἢ πλεῖστα δεινὰ ὑπ' αὐτῶν ἀκούουσα  
 ἔστι βουλή. ταῦτα εἰτε ἡδέα ἔστιν ὑμῖν ἀκούειν εἰτε  
 ἀνιαρά, μετὰ πάσης ἀληθείας εἰρηταί μοι καὶ τετόλ-  
 μηται· καὶ μᾶλλον αἰροίμην ἂν παρορησίᾳ συμφε- 1834  
 ροσύη τῷ κοινῷ χρώμενος ἀποθανεῖν, ἢ τὰ πρὸς ἡδο-  
 30 νῆν ὑμῖν λέγων σεσῶσθαι.

XXXIII. Τοιούτους εἰπὼν λόγους καὶ οὔτε πρὸς  
 ὄλοφρυμους καὶ ἀνακλαύσεις τῆς συμφορᾶς τραπό-

μενος, οὔτε ἐν δεήσεσι καὶ προκλυσιμοῖς ἀσχήμοσι  
 ταπεινὸς φανείς, οὔτ' ἄλλην ἀγεννή διάθεσιν ἀπο-  
 δειξάμενος οὐδεμίαν, παρέδωκε τὸν λόγον τοῖς συνα-  
 γορεύειν ἢ μαρτυρεῖν βουλομένοις. πολλοὶ μὲν οὖν  
 καὶ ἄλλοι παριόντες ἀπέλκνον αὐτὸν τῆς αἰτίας, μά- 5  
 λιστα δὲ Οὐεργίνιος ὁ κατὰ τὸν αὐτὸν ὑπατεύσας  
 χρόνον καὶ τῆς νίκης αἴτιος εἶναι δοκῶν· ὅς οὐ μόνον  
 ἀναίτιον αὐτὸν ἀπέφαινε, ἀλλὰ καὶ ὡς κράτιστον  
 ἀνδρῶν τὰ πολέμια καὶ στρατηγῶν φρονιμώτατον  
 ἐπαινεῖσθαι τε καὶ τιμᾶσθαι ὑπὸ πάντων ἡξίου. ἔφη 10  
 δὲ δεῖν, εἰ μὲν ἀραθὸν οἴονται τέλος εἰληφέναι τὸν  
 πόλεμον ἀμφοτέροις σφίσι τὴν χάριν εἰδέναι· εἰ δὲ  
 πονηρὸν ἀμφοτέρους ζημιούῃ· κοινὰ γὰρ αὐτοῖς καὶ  
 1835 τὰ βουλευμάτα καὶ τὰ ἔργα καὶ τὰς ἐκ τοῦ δαιμονίου  
 τύχας γερονένοι. ἦν δὲ οὐ μόνον ὁ λόγος τοῦ ἀνδρός 15  
 ἀλλὰ καὶ ὁ βίος πεῖθων, ἐν ἅπασιν ἐξητασμένος ἔργοις  
 ἀραθοῖς. προσῆν δὲ τούτοις, ὁ πλεῖστον ἐκίνησεν  
 οἴκτου, ὄψεως σχῆμα συμπαθές, οἷον περὶ αὐτοὺς  
 τοὺς πεπονθότας ἢ μέλλοντας πάσχειν τὰ δεινὰ γί-  
 νεσθαι φιλεῖ. ὥστε καὶ τοὺς προσήκοντας τοῖς ἀπο- 20  
 λωλόσι καὶ δοκοῦντας ἀδιαλλάκτως ἔχειν πρὸς τὸν  
 αἴτιον σφίσι τῆς συμφορᾶς, μαλακωτέρους γενέσθαι  
 καὶ ἀποθέσθαι τὴν ὀργήν, ὡς ἐδήλωσαν. ἀναδο-  
 θεισῶν γὰρ τῶν ψήφων οὐδεμία φυλὴ τοῦ ἀνδρός  
 κατεψηφίσατο. ὁ μὲν οὖν τὸν Σερουίλιον καταλαβὼν 25  
 κίνδυνος τοιούτου τέλους ἔτυχευ.

XXXIII. Οὐ πολλῶ δ' ὕστερον χρόνῳ στρατιὰ  
 Ῥωμαίων ἐξῆλθεν ἐπὶ Τυρρηνοὺς ἄγοντος θατέρου  
 τῶν ὑπᾶτων Ποπλίου Οὐαλερίου. συνέστη γὰρ αὐτίς  
 ἢ Οὐιεντανῶν δύναμις προσθεμέναν αὐτοῖς Σαβί- 30  
 ναν, οἱ τέως ὀκνοῦντες αὐτοῖς συνάρασθαι τοῦ πο-  
 1880 λέμου ὡς ἀδυνάτων ἐπιεμένοις, τότε ἐπειδὴ τὴν τε  
 18\*

Μενηνίου φυγήν ἐγνωσαν καὶ τὸν ἐπιτειχισμὸν τοῦ  
 πλησίον τῆς Ῥώμης ὄρους, τεταπεινωσθαι νομίσαν-  
 τες τὰς τε δυνάμεις τὰς Ῥωμαίων καὶ τὸ φρόνημα  
 τῆς πόλεως ἠττησθαι, συνελάμβανον τοῖς Τυρρηνοῖς  
 5 πολλὴν ἀποστελλαντες δύναμιν. οἱ δὲ Οὐιεντανοὶ τῇ  
 τε σφετέρᾳ δυνάμει πεποιδότες καὶ τῇ Σαβίνων  
 νεωστὶ ἠκούσῃ καὶ τὰς παρὰ τῶν ἄλλων Τυρρηνοῶν  
 ἐπικουρίας περιμένοντες, προθυμίαν μὲν εἶχον ἐπὶ τὴν  
 Ῥώμην ἐλαύνειν τῇ πλείονι τῆς σφετέρας στρατιᾶς,  
 10 ὡς οὐδενὸς αὐτοῖς ὁμῶσε χωρήσοντος, ἀλλὰ διενεῖν  
 θάτερον, ἢ ἐκ τειχομαχίας αἰρήσοντες τὴν πόλιν ἢ  
 λιμῶ κατεργασόμενοι. ἐφθασε δὲ τὴν ἐπιχειρήσειν  
 αὐτῶν ὁ Οὐαλέριος, ἐν ᾧ ἔτι ἐμελλον ἐκεῖνοι καὶ τοὺς  
 ὑστερίζοντας συμμάχους ἀνέμενον, αὐτὸς ἀγαγὼν  
 15 Ῥωμαίων τὴν κρατίστην ἀκμὴν καὶ τὸ παρὰ τῶν συμ-  
 μάχων ἐπικουρικόν, οὐκ ἐκ τοῦ φανεροῦ ποιησάμε-  
 νος τὴν ἔξοδον, ἀλλ' ὡς μάλιστα λήσεσθαι αὐτοὺς  
 ἐμελλε. προελθὼν γὰρ ἐκ τῆς Ῥώμης περὶ δειλὴν  
 ὄψιαν καὶ διαβὰς τὸν Τέβερην οὐ μακρὰν ἀποσχὼν τῆς  
 20 πόλεως κατεστρατοπέδευσεν· ἔπειτ' ἀναστήσας τὴν  
 στρατιάν περὶ μέσας νύκτας ἤγειν ἐν τάξει, καὶ πρὶν  
 ἡμέραν γενέσθαι θάτερον χάρακι τῶν πολεμίων ἐπέ-  
 βαλε. δύο γὰρ ἦν στρατόπεδα χωρὶς μὲν τὸ Τυρρη-  
 νοῶν, ἐτέρωθι δὲ τὸ Σαβίνων, οὐ διὰ μακροῦ ἀλλή-  
 25 λων ἀπέχοντα. πρώτη δὲ προσαγαγὼν τὴν δύναμιν  
 τῇ Σαβίνων στρατοπεδείᾳ, καθυπνωμένων ἔτι τῶν  
 πλείστων καὶ οὐδεμιᾶς οὔσης ἀξιολόγου φυλακῆς,  
 οἷα ἐν φιλίᾳ τε γῆ καὶ κατὰ πολλὴν ὑπεροψίαν τῶν  
 πολεμίων οὐδαμῇ ἀγγελλομένων, ἐξ ἐφόδου γίνεται  
 30 ταύτης ἐγκρατῆς. τῶν δὲ ἀνθρώπων οἱ μὲν ἐν ταῖς  
 κοιταῖς ἔτι ὄντες κατεσφάγησαν, οἱ δὲ ἀνιστάμενοι  
 ἀρτίως καὶ τὰ ὄπλα ἐνδυνόμενοι, οἱ δὲ ὠπλισμένοι

μὲν, σποράδες δὲ καὶ οὐκ ἐν τάξει ἀννόμενοι· οἱ  
 δὲ πλείστοι φεύγοντες ἐπὶ τὸν ἕτερον χάρακα ὑπὸ  
 τῶν ἰππέων καταλαμβανόμενοι διεφθάρησαν.

XXXV. Τοῦτον δὲ τὸν τρόπον ἀλόντος τοῦ τῶν  
 1838 Σαβίνων χάρακος, ἤγε τὴν δύναμιν ὁ Οὐαλέριος ἐπὶ 5  
 τὸν ἕτερον, ἔνθα ἦσαν οἱ Οὐιεντανοὶ χωρίον οὐ πάνυ  
 ἐχυρὸν κατελιηφότες. λαθεῖν μὲν οὐκ ἐτί ἐνεδέ-  
 χετο τοὺς προσιόντας τῷ χάρακι· ἡμέρα τε γὰρ ἦν  
 ἤδη λαμπρά, καὶ τῶν Σαβίνων οἱ φεύγοντες ἀπήγ-  
 γειλαν τοῖς Τυρρηνοῖς τὴν τε αὐτῶν συμφορὰν καὶ 10  
 τὴν ἐπ' ἐκείνους ἔλασιν· ἀναγκαῖον δὲ ἦν ἐκ τοῦ  
 κατεροῦ τοῖς πολεμίοις συμφέρεσθαι. γίνεται δὲ  
 μετὰ τοῦτο πάσῃ προθυμίᾳ τῶν Τυρρηνοῶν ἀγωνιζο-  
 μένων πρὸ τῆς παρεμβολῆς ὄξεϊα μάχη καὶ φόνος  
 ἀμφοτέρων πολὺς, ἰσορροπὸς τε καὶ μέχρι πολλοῦ 15  
 ταλαντευομένη τῆδε καὶ τῆδε ἢ κρίσις τοῦ πολέμου.  
 ἔπειτα ἐνέδοσαν οἱ Τυρρηνοὶ ὑπὸ τῆς Ῥωμαικῆς ἔξω-  
 σθέντες ἵππου καὶ ἀπεχώρησαν εἰς τὸν χάρακα, ὁ δ'  
 ὑπατος ἠκολούθει, καὶ ἐπειδὴ πλησίον ἐγένετο τῶν  
 ἐρυμάτων· ἦν δὲ φαύλως κατεσκευασμένα καὶ τὸ 20  
 χωρίον ὥσπερ ἔφην οὐ πάνυ ἀσφαλές· προσέβαλε  
 1839 κατὰ πολλὰ μέρη τό τε λοιπὸν ἐκείνης τῆς ἡμέρας  
 μέρος ἐπιταλαιπωρῶν καὶ οὐδὲ τὴν ἐπιούσαν νύκτα  
 ἀναπανσάμενος. οἱ δὲ Τυρρηνοὶ ταῖς συνεχέσι κακο-  
 παθειαῖς ἀπειρηκότες ἐκλείπουσι τὸν χάρακα περὶ 25  
 τὸν ὄρθρον· καὶ οἱ μὲν εἰς τὴν πόλιν ἔφευγον, οἱ δ'  
 εἰς τὰς πλησίον ὕλας ἐσκεδάσθησαν. γενόμενος δὲ  
 καὶ τούτου τοῦ χάρακος ἐγκρατῆς, ἐκείνην μὲν τὴν  
 ἡμέραν ἀνέπανσε τὴν στρατιάν, τῇ δ' ἐξῆς τὰ τε λά-  
 φυρα ὅσα ἐξ ἀμφοτέρων εἰλήφει τῶν στρατοπέδων 30  
 διένειμε τοῖς ἀγωνισαμένοις πολλὰ ὄντα, καὶ τοὺς  
 ἀριστεύσαντας ἐν ταῖς μάχαις τοῖς εἰωθόσιν ἐκόσμι

στεφάνους. ἦν δ' ὁ κράτιστα πάντων ἀγωνίσασθαι δόξας  
καὶ τρεψάμενος τὴν Οὐιεντανῶν δύναμιν Σερούλιος  
ὁ τῷ προτέρῳ ὑπατεύσας ἔπει καὶ τὴν ἐπὶ τοῦ δήμου  
δίκην ἀποφυγῶν, πρεσβευτῆς τότε τῷ Οὐαλερίῳ συμ-  
5 πεμφθεὶς, καὶ ἐπὶ τῇ ἀριστείᾳ τῆδε τὰς νομιζομένας  
εἶναι μεγίστας παρὰ Ῥωμαίοις δωρεὰς οὗτος ἦν ὁ  
πρῶτος ἐξενεγκάμενος. μετὰ ταῦτα τοὺς τε τῶν πο-  
λεμίων σκυλεύσας νεκροὺς ὁ ὕπατος καὶ τῶν ἰδίων  
ταφὰς ποιησάμενος, ἐξῆγε τὴν στρατιάν καὶ πλησίον  
10 τῆς Οὐιεντανῶν πόλεως καταστήσας, προῦκαλεῖτο  
τοὺς ἔνδον. ὡς δ' οὐδεὶς ἐξῆει μαχησόμενος ἄπορον  
ὄρθῳ χρῆμα ἐκ τειχομαχίας αὐτοὺς ἐλεῖν ἐχυρὰν  
σφόδρα ἔχοντας πόλιν, τῆς γῆς αὐτῶν πολλὴν κατα-  
δραμῶν εἰς τὴν Σαβίνων ἐνέβαλε. λεηλατήσας δὲ  
15 κἀκεῖνην ἔτι ἀνέραιον οὐσαν ἐπὶ πολλὰς ἡμέρας καὶ  
βαρεῖαν ἤδη τὴν ἀποσκευὴν ἔχων ταῖς ὠφελείαις,  
ἀπῆγεν ἐπ' οἴκου τὴν δύναμιν· καὶ αὐτῷ ὁ μὲν δῆμος  
πρὸ πολλοῦ τῆς πόλεως ὄντι ἐστεφανωμένος ὑπήντα  
λιβανωτοῖς τε θυμιῶν τὴν πάροδον καὶ κρατῆρσι με-  
20 λικράτου κεκραμένοις ὑποδεχόμενος τὴν στρατιάν·  
ἢ δὲ βουλὴ τὴν τοῦ θριάμβου πομπὴν ἐψηφίσατο.  
ὁ δὲ ἕτερος τῶν ὑπάτων Γάιος Ναύτιος, ᾧ προσέκειτο  
κατὰ κληρῶν ἢ τῶν συμμάχων Λατίνων τε καὶ Ἐρνί-  
κων φυλακῆ, βραδυτέραν ἐποιήσατο τὴν ἔξοδον· οὔτε  
25 ἀπορία οὔτε ὄκνη τοῦ κινδύνου κρατηθεὶς, τὴν δ'  
ἀδηλότητα τοῦ πρὸς Οὐιεντανοὺς πολέμου, παραδο-  
κῶν, ἢ ἐάν τι συμβῆ πταῖσμα περὶ τὴν ἐκεῖ στρα-  
τιάν ἐν ἐτοιμίᾳ τις ὑπάρχη τῇ πόλει συνεστῶσα δύ-  
ναμις, ἢ κωλύσει τοὺς πολεμίους εἰς τὴν χώραν ἐμ-  
30 βαλεῖν, ἐὰν ὅσπερ οἱ πρότερον ἐλάσαντες ἐπὶ τὴν  
Ῥώμην ἐπιτειχίζεν τινὰ κατὰ τῆς πόλεως χωρία ἐπι-  
βάλλονται. ἐν δὲ τῷ μεταξὺ τούτου χρόνῳ καὶ ὁ κατὰ

τῶν Λατίνων πόλεμος, ὃν ἐπῆγον αὐτοῖς Αἰκανοὶ τε  
καὶ Οὐολούσκοι τέλος εὐτυχὲς ἔσχε· καὶ παρῆσαν τι-  
νες ἀγγέλλοντες μάχην νικηθέντας ἀπειληλυθέναι τοὺς  
πολεμίους ἐκ τῆς χώρας αὐτῶν, καὶ μηδεμιᾶς τοῖς  
5 συμμάχοις ἔτι δεῖν βοήθειας κατὰ τὸ παρόν· ὁ μὲντοι  
Ναύτιος οὐδὲν ἤτιον ἐπειδὴ τὰ ἐν τῇ Τυρρηνίᾳ  
πράγματα καλῶς σφίσι ἐχώρησεν ἐξῆγε τὴν στρα-  
τιάν. ἐμβαλὼν δ' εἰς τὴν Οὐολούσκων χώραν καὶ  
πολλὴν αὐτῆς διεξελθὼν ἔρημον ἀφειμένην, ἀνδρα-  
πόδων μὲν καὶ βοσκημάτων ὀλίγων πάνυ ἐκράτησεν,  
10 ἀρούρας δὲ αὐτῶν ἐν ἀκμῇ τοῦ σίτου ὄντος ἐμπρή-  
σας, καὶ ἄλλα οὐκ ὀλίγα τῶν ἐν τοῖς ἀγροῖς λωβησά-  
μενος, οὐδενὸς ὁμῶσε χωροῦντος ἀπῆγε τὴν στρατιάν·  
1842 ταῦτα μὲν ἐπὶ τούτων τῶν ἀνδρῶν ἐπράχθη.

XXXVI. Οἱ δὲ διαδεξάμενοι τούτους ὕπατοι 15  
Αὔλος Μάλλιος καὶ Λεύκιος Φούριος, ψηφισαμένης  
τῆς βουλῆς τὸν ἕτερον αὐτῶν στρατιάν ἐπὶ Οὐιεντα-  
νοὺς ἄγειν, ἐκληρώσαντο περὶ τῆς ἔξοδου καθάπερ  
αὐτοῖς ἔθος ἦν. καὶ λαχὼν Μάλλιος ἐξῆγε τὰς δυνά-  
μεις διὰ ταχέων, καὶ πλησίον τῶν πολεμίων κατε- 20  
στρατοπέδευσεν. οἱ δὲ Οὐιεντανοὶ τειχήρεις γενό-  
μενοι τίως μὲν ἀντεῖχον, καὶ διεπρεσβεύοντο πρὸς  
τε τὰς ἄλλας τὰς ἐν Τυρρηνοῖς πόλεις, καὶ πρὸς τοὺς  
νεωστὶ συμμαχήσαντας αὐτοῖς Σαβίνους, βοήθειαν  
ἀξιούντες ἀποστεῖλαι σφίσι διὰ ταχέων. ὡς δ' ἀπάν- 25  
των ἀπετύγχανον καὶ τὰς τροφὰς ἀπαναλώκεσαν,  
ὑπὸ τῆς ἀνάγκης τοῦ λιμοῦ βιασθέντες ἐξῆλθον ὡς  
τὸν ὕπατον, λικτηρίας φέροντες οἱ πρεσβύτατοί τε  
αὐτῶν καὶ τιμιώτατοι, περὶ καταλύσεως δεόμενοι τοῦ  
1843 πολέμου. τοῦ δὲ Μαλλίου κελεύσαντος αὐτοῖς ἀργύριον 30  
τε εἰς ὀψωνιασμὸν ἐναντιοῦ τῇ στρατιᾷ καὶ διμήνου  
τροφὰς ἀποφέρειν, ὅταν δὲ ταῦτα ποιήσωσιν εἰς

Ῥώμην ἀποστέλλειν τοὺς διαλεξομένους τῇ βουλῇ περὶ τῶν διαλύσεων, ἐπαινέσαντες ταῦτα καὶ διὰ ταχέων τό τε ὄψάμιον τῇ στρατιᾷ καὶ τὸ ἀντὶ τοῦ σίτου συγχωρηθῆν ὑπὸ τοῦ Μαλλίου κατενεργόντες 5 ἀργύριον, ἦκου εἰς τὴν Ῥώμην· καὶ καταστάντες ἐπὶ τὴν βουλὴν συγγνώμης ἐπὶ τοῖς γεγενοσὶ τυχεῖν ἠξίουσι, καὶ εἰς τὸν λοιπὸν χρόνον ἀπαλλαγῆς τοῦ πολέμου. πολλῶν δὲ λεχθέντων εἰς ἀμφοτέρω τὰ μέρη λόγων, ἐνίκησεν ἡ σπένδεσθαι παραινοῦσα τὸν πρὸς 10 αὐτοὺς πόλεμον γνώμη, γίνονται τ' ἀνοχαὶ τοῦ πολέμου πρὸς αὐτοὺς τεσσαρακονταετῆς. καὶ οἱ μὲν ἀπήεσαν, πολλὰς τῇ πόλει τῆς εἰρήνης χάριτας εἰδότες· ὁ δὲ Μάλλιος ἀφικόμενος εἰς τὴν πόλιν, ἐπὶ τῇ καταλύσει τοῦ πολέμου τὸν πεζὸν θρίαμβον αἰτησά- 15 μενος, ἔλαβεν. ἐγένετο δὲ καὶ τιμησῖς ἐπὶ τῆς τούτων ἀρχῆς, καὶ ἦσαν οἱ τιμησάμενοι πολῖται σφᾶς τε 1844 αὐτοὺς καὶ χρήματα καὶ τοὺς ἐν ἡβῆ παιδας ὀλίγω πλείους τρισχιλίων τε καὶ δέκα μυριάδων.

XXXVII. Οἱ δὲ μετὰ τούτους παραλαβόντες τὴν 20 ὑπατον ἀρχὴν, Λεύκιος Αἰμίλιος Μάμερκος τὸ τρίτον, καὶ Ουόπισκος Ἰούλιος, ἐπὶ τῆς ἑβδόμης καὶ ἑβδομηκοστῆς ὀλυμπιάδος, ἦν ἐνίκα στάδιον Δάντης Ἀργεῖος, Ἀθήνησι δὲ ἀρχοντος Χάρητος, ἐπίπονου σφόδρα καὶ ταραχώδη τὴν ἀρχὴν διετέλεσαν, εἰρήνην 25 μὲν ἄγοντες ἀπὸ τῶν ἔξωθεν πολέμων· ἐν ἡσυχίᾳ γὰρ ἦν πάντα τὰ διάφορα· ὑπὸ δὲ τῶν ἐν τῇ πόλει στάσεων αὐτοὶ τε εἰς κινδύνους ἀχθέντες καὶ τὴν πόλιν ὀλίγου δεήσαντες ἀπολέσαι. ὥς γὰρ ἀνεπαύσατο τῶν στρατειῶν τὸ πλῆθος, ἐπὶ τὴν διανομὴν εὐθὺς 30 ὤρμησε τῶν δημοσίων ἀργῶν. ἦν γὰρ τις ἐν τοῖς δημο-ἀρχοῖς θρασὺς καὶ λέγειν οὐκ ἀδύνατος ἀνὴρ, Γναῖος Γενύκιος, ὁ παραθήρων τὰς ὀργὰς τῶν πενήτων. 1845

οὔτος ἐκκλησίας συνάγων ἐκάστοτε καὶ ἐκδημαγωγῶν τοὺς ἀπόρους, προσηνάγκαζε τοὺς ὑπάτους τὰ ὑπὸ τῆς βουλῆς ψηφισθέντα περὶ τῆς κληρουχίας συντελεῖν. οἱ δ' οὐχ ὑπήκουον, οὐ τῇ ἑαυτῶν ἀρχῇ λέγοντες ἐπιτετάχθαι τὸ ἔργον ὑπὸ τῆς βουλῆς, ἀλλὰ τοῖς 5 μετὰ Κάσσιον καὶ Οὐεργίνιον ὑπάτοις, πρὸς οὓς [καὶ] τὸ προβούλευμα ἐγράφη· καὶ ἅμα οὐδ' εἶναι νόμους εἰς αἰὲ κυρίουσ' ἃ ψηφίζεται τὸ συνέδριον, ἀλλὰ πολιτεύματα καιρῶν ἐνιαύσιον ἔχοντα ἰσχύν. αὐτάς προβαλλομένων τῶν ὑπάτων τὰς αἰτίας, ἀδύ- 10 νατος ὦν ὁ Γενύκιος αὐτοὺς ἀναγκάσαι μείζονα ἔξουσίαν ἔχοντας ἰταμὴν ὁδὸν ἐτρέπετο. τοῖς γὰρ ὑπατεύουσασι τὸ ἔμπροσθεν ἔτος Μαλλίῳ τε καὶ Λευ- 1846 κίῳ δίκην ἐπήνεγκε δημοσίαν, καὶ προεῖπεν ἦκειν ἐπὶ τὸν δῆμον ἀπολογησομένους, ὁρίσας ἀντικρὺς τὴν 15 αἰτίαν τῆς δίκης, ὅτι τὸν δῆμον ἀδικούσιν οὐκ ἀποδείξαντες τοὺς δέκα ἄνδρας, οὓς ἐψηφίσατο ἡ βουλή, τοὺς ποιησομένους τὴν τῶν κλήρων διανομὴν. τοῦ δὲ μὴ τῶν ἄλλων τινὰς ὑπάτων ἄγειν ἐπὶ τὴν δίκην, δώδεκα γενομένων τῶν μεταξὺ ἀρχείων, ἀφ' οὗ τὸ 20 προβούλευμα ἐγράφη, τούτους δὲ προβαλέσθαι τοὺς ἄνδρας μόνους τῆς ψευθεΐσης ὑποσχέσεως, ἐπεικεῖς ἔφερον αἰτίας· καὶ τελευτῶν ἔφη μόνως ἂν οὕτως ἀναγκασθῆναι τοὺς ἐν ἀρχῇ τότε ὄντας ὑπάτους κληρουχῆσαι τὴν γῆν, ἐὰν ἑτέρους τινὰς ἴδωσι δίκην 25 τῷ δήμῳ διδόντας, ἐνθυμηθέντας, ὅτι καὶ σφίσι αὐτοῖς συμβήσεται τὸ αὐτὸ παθεῖν.

XXXVIII. Ταῦτ' εἰπὼν καὶ παρακαλέσας ἅπαντας ἦκειν ἐπὶ τὴν δίκην, καθ' ἰερῶν τε ὁμόσας ἢ μὴν ἐμμενεῖν τοῖς ἐγνωσμένοις καὶ πάσῃ προθυμίᾳ τῶν 30 ἀνδρῶν κατηγορήσειν, ἡμέραν προεῖπεν ἐν ἣ τὴν δίκην ἐμελλεν ἐπιτελέσειν. τοὺς δὲ πατρικίους ὡς

ξμαθον ταῦτα πολὺ δέος εἰσέροχεται καὶ φροντίς, ὅτω  
 χρῆ τρόπῳ τοὺς τε ἄνδρας ἐκλύσασθαι τῆς αἰτίας καὶ  
 τοῦ δημαγωγοῦ τὸ θράσος ἐπισχεῖν. καὶ δὴ ἐδέδοκτο  
 αὐτοῖς, εἴ τι ψηφίσαιτο κατὰ τῆς ἀρχῆς τῶν ὑπάτων  
 5 ὁ δῆμος, μὴ ἐπιτρέπειν αὐτῶ κατὰ τὸ καρτερόν ἐν-  
 σταμένους καὶ εἰ δέοι καὶ εἰς ὄπλα χωροῦντας. οὐ  
 μὴν ἐδέησέ γε τῶν βιαίων οὐδενὸς αὐτοῖς, ταχειαν  
 λαβόντος τοῦ κινδύνου καὶ παραδόξου τὴν λύσιν· μιᾶς  
 γὰρ ἡμέρας οὔσης ἔτι λοιπῆς τῆ δίκῃ, νεκρὸς Γενύσιος  
 10 ἐπὶ τῆς ἑαυτοῦ κοίτης εὐρέθη, σημεῖον οὐδὲν ἔχων  
 οὔτε σφαγῆς οὔτε ἀγχόνης οὔτε φαρμάκου οὔτ' ἄλλου  
 τῶν ἐξ ἐπιβουλῆς θανάτων οὐδενός. ὡς δ' ἐγνώσθη  
 τὸ πάθος, καὶ προηνέχθη τὸ σῶμα εἰς τὴν ἀγοράν,  
 δαιμόνιον τι κωλύσεως συγκύρημα ἔδοξεν εἶναι, καὶ  
 15 αὐτίκα ἡ δίκη διελέλυτο. τῶν γὰρ ἄλλων οὐδεὶς ἐτόλμα  
 δημάρχων ἀνακαλεῖν τὴν στάσιν, ἀλλὰ καὶ τοῦ Γενυ-  
 κίου κατεγίνωσκον πολλὴν μανίαν. εἰ μὲν οὖν μηδὲν  
 ἔτι πολυπραγμονοῦντες οἱ ὑπατοὶ διετέλεσαν, ἀλλ'  
 ἀφῆκαν ὡς ὁ δαίμων ἐκοίμησε τὴν στάσιν, οὐδεὶς ἂν  
 20 αὐτοὺς ἔτι κατέλαβε κίνδυνος· νῦν δὲ εἰς ἀνθάδειαν  
 καὶ καταφρόνησιν τοῦ δημοτικοῦ τραπόμενοι καὶ τὸ  
 τῆς ἀρχῆς κράτος ὅσον ἐστὶν ἐπιδειξάμενοι,  
 κακὰ ἐξεργάσαντο μεγάλα. προθέντες γὰρ στρατο-  
 λογίαν καὶ τοὺς οὐχ ὑπακούοντας ταῖς τε ἄλλαις ζη-  
 25 μίαις καὶ πληγαῖς θάβδαν προσαναγκάζοντες, εἰς  
 ἀπόνοιαν ἐποίησαν τραπέσθαι τοῦ δημοτικοῦ τὸ πλεόν,  
 ἀπὸ τοιαύτης μάλιστα αἰτίας.

XXXVIII. Ἀνήρ τις ἐν τῶν δημοτικῶν τὰ πολέ-  
 μια λαμπρός, Βολέρων Πόπλιος, ἡγεμονίαν ἐσχηκώς  
 30 λόχων ἐν ταῖς προτέραις στρατείαις, τότε ἀντὶ λοχα-  
 γοῦ στρατιώτης πρὸς αὐτῶν κατεγράφετο. ὡς δὲ  
 ἠγναντιοῦτο καὶ οὐκ ἤξιον χώραν ἀτιμοτέραν λαβεῖν

οὐδὲν ἡμαρτηκῶς ἐν ταῖς προτέραις στρατείαις, δυσ-  
 ανασχετοῦντες οἱ ὑπατοὶ τὴν παρορησίαν αὐτοῦ, τοῖς  
 θάβδουχοις ἐκέλευσαν τὴν ἐσθῆτα τε περικαταροῦσαι  
 καὶ ταῖς θάβδοις τὸ σῶμα ξαίνειν. ὁ δὲ νεανίας τοὺς  
 τε δημάρχους ἐπεκαλεῖτο, καὶ εἴ τι ἀδικεῖ κρίσιν ἐπὶ  
 5 τῶν δημοτῶν ὑπέχειν ἤξιον. ὡς δ' οὐ προσεῖχον αὐτῶ  
 τὸν νοῦν οἱ ὑπατοὶ, ἀλλὰ τοῖς θάβδουχοις ἄγειν καὶ  
 τύπτειν ἐπεκελεύοντο, οὐκ ἀνασχετὸν ἡγησάμενος  
 εἶναι τὴν ὕβριν αὐτὸς ἑαυτῶ ταμίαις τῆς δίκης γίνεται.  
 1850 τὸν τε γὰρ πρῶτον προσελθόντα τῶν θάβδουχων παῖων  
 εἰς τὸ πρόσωπον ἐναντίας πυγμαῖς νεανίας καὶ ἐρω-  
 μένος ἀνήρ ἀνατρέπει καὶ τὸν ἐπὶ τούτῳ· ἀγανακτη-  
 σάντων δὲ τῶν ὑπάτων καὶ πᾶσιν ἅμα τοῖς ὑπηρέταις  
 προσελθεῖν κελευσάντων, δεινὸν τι τοῖς παροῦσι τῶν  
 δημοτικῶν ἐφάνη· καὶ αὐτίκα συστραφέντες ἀθρόοι καὶ  
 15 ἀναβοήσαντες τὸ παρακλητικὸν τῆς ἀλλήλων ὀργῆς,  
 τὸν τε νεανίσκον ἐξήρπασαν καὶ τοὺς θάβδουχοὺς  
 ἀπέστησαν παίοντες καὶ τελευτῶντες ἐπὶ τοὺς ὑπά-  
 τους ὤρμησαν, καὶ εἰ μὴ καταλιπόντες ἐκείνοι τὴν  
 ἀγορὰν ἐφυγον, ἀνήκεστον ἂν τι κακὸν ἐξεργάσαντο.  
 20 ἐν δὲ τούτῳ διειστήκει πᾶσα ἡ πόλις, καὶ οἱ τέως  
 ἡσυχάζοντες δήμαρχοι τότε ἡγριοῦντο καὶ τῶν ὑπάτων  
 κατηγοροῦν. περιειστήκει τε ἡ περὶ τῆς κληρουχίας στά-  
 σις εἰς ἐτέραν μείζονα διὰ τὸν ὑπὲρ τοῦ κόσμου τῆς πολι-  
 1851 τείας ἀγῶνα. οἱ μὲν γε πατρίμοι τοῖς ὑπάτοις ὡς κατα-  
 λυομένης αὐτῶν τῆς ἐξουσίας συναγανακτοῦντες, τὸν  
 ἐπιβαλεῖν τοῖς ὑπηρέταις τολμήσαντα κατὰ κρημοῦ  
 βαλεῖν ἤξιον. οἱ δὲ δημοτικοὶ συστρέψαντες αὐτοὺς  
 κατεβόων τε καὶ παρεκελεύοντο μὴ προδιδόναι σφῶν  
 τὴν ἐλευθερίαν, ἀλλ' ἐπὶ τὴν βουλὴν τὸ πρῶγμα ἄγειν  
 30 καὶ τῶν ὑπάτων κατηγορεῖν καὶ δίκης τινὸς παρ'  
 αὐτῶν ἤξιον τυχεῖν, ὅτι τὸν ἐπικαλεσάμενον τὴν ἐκ



τῶν δημάρχων βοήθειαν, καὶ ἐν τῷ δήμῳ κρίσιν  
 ὑπέχειν εἴ τι πλημμελεῖ βουλόμενον, οὐδετέρου τυχεῖν  
 εἶασαν τῶν δικαίων, ἀλλ' ἐν ἀνδραπόδου μοίρᾳ τὸν  
 ἐλεύθερον καὶ πολίτην ἔθεντο παίειν ἐπικελευόμενοι.  
 5 ἀντιτεταγμένων δὴ τούτων καὶ οὐδετέρων εἴξει βουλο-  
 μένων τοῖς ἑτέροις, ἅπας ὁ λοιπὸς τῆς ὑπατείας  
 ἐκείνης ἐδαπανήθη χρόνος, οὔτε πολεμικαῖς πράξεσι  
 κοσμηθεὶς καλαῖς οὔτε πολιτικαῖς λόγου ἀξίαις.

XXXX. Ἐπιστάντων δὲ τῶν ἀρχαιρεσίων ὑπατοὶ  
 10 μὲν ἀπεδείχθησαν Λεύκιος Πινάριος καὶ Πόπλιος  
 Φούριος. ἐν ἀρχῇ δὲ τοῦ ἔτους εὐθύς ὀπίσθια τινὸς 1852  
 ἢ πόλις ἐπληρώθη καὶ φόβου δαιμονίου τεράτων τε  
 καὶ σημείων πολλῶν γινόμενων. καὶ οἱ τε μάντιες  
 ἅπαντες καὶ οἱ τῶν ἱερῶν ἐξηγηταὶ χόλου δαιμόνων  
 15 μηνύματα εἶναι τὰ γινόμενα ἀπέφαινον, ἱερῶν τινῶν  
 οὐχ ὀσίως οὐδὲ καθαρῶς ἐπιτελουμένων. καὶ οὐ μετὰ  
 πολὺ νόσος ἐνέσκηψεν εἰς τὰς γυναικας ἢ καλουμένη  
 λοιμική, καὶ θάνατος ὅσος οὐπω πρότερον, μάλιστα  
 δ' εἰς τὰς ἐγκύμονας. ὠμοτοκοῦσαί τε γὰρ καὶ νεκρὰ  
 20 τίκτουσαι συναπέθνησκον τοῖς βρέφεσι, καὶ οὔτε  
 λιτανεῖαι πρὸς ἔδρασι καὶ βωμοῖς γινόμεναι θεῶν,  
 οὔτε καθαρτήριοι θυσίαι περὶ τε πόλεως καὶ οἰκῶν  
 ἰδίων ἐπιτελούμεναι παῦλαν αὐταῖς ἔφερον τῶν κα-  
 κῶν. ἐν τοιαύτῃ δὲ συμφορᾷ τῆς πόλεως οὐσης τοῖς  
 25 ἐξηγηταῖς τῶν ἱερῶν γίνεται μῆνυσις ὑπὸ δούλου τινός,  
 ὅτι μία τῶν ἱεροποιῶν παρθένων τῶν φυλαττουσῶν  
 τὸ ἀθάνατον πῦρ Ὀρβινία τὴν παρθενίαν ἀπολώλεκε  
 καὶ τὰ ἱερὰ θύει τὰ τῆς πόλεως οὐκ οὔσα καθαρά. 1853  
 κάκεινοι μεταστήσαντες αὐτὴν ἀπὸ τῶν ἱερῶν, καὶ  
 30 προθέντες δίκην, ἐπειδὴ καταφανῆς ἐγένετο ἔλεγ-  
 χθεῖσα, ῥάβδοις τε ἐμαστίγωσαν καὶ πομπεύσαντες  
 διὰ τῆς πόλεως ζῶσαν κατώρουξαν. τῶν δὲ διαπραξα-

μένων τὴν ἀνοσίαν φθορὰν ὁ μὲν ἕτερος ἑαυτὸν  
 διεχρήσατο, τὸν δὲ ἕτερον οἱ τῶν ἱερῶν ἐπίσκοποι  
 συλλαβόντες ἐν ἀγορᾷ μάστιξιν αἰκισάμενοι καθάπερ  
 ἀνδραπόδου ἀπέκτειναν. ἢ μὲν οὖν νόσος ἢ κατα-  
 σκήψασα εἰς τὰς γυναικας καὶ ὁ πολὺς αὐτῶν φθόρος 5  
 μετὰ τοῦτο τὸ ἔργον εὐθύς ἐπαύσατο.

XXXI. Ἡ δ' ἐκ πολλοῦ χρόνου διαμένουσα ἐν  
 τῇ πόλει στάσις, ἣν οἱ δημόται πρὸς τοὺς πατρικίους  
 ἔστασίαζον, ἀνίστατο πάλιν. ὁ δ' ἐξεγείρων αὐτὴν  
 δήμαρχος ἦν Πόπλιος Βολέρων, ὁ τῷ πρόσθεν ἐπι- 10  
 αὐτῷ τοῖς περὶ Αἰμίλιόν τε καὶ Ἰούλιον ὑπάτοις  
 ἀπειθήσας, ὅτε αὐτὸν ἀντὶ λοχαγοῦ στρατιώτην κατ-  
 1854 ἔγραφον, οὐ δι' ἄλλο τι μᾶλλον ἀποδειχθεὶς ὑπὸ τῶν  
 πενήτων τοῦ δήμου προστάτης· γένος τε γὰρ ἐκ τῶν  
 ἐπιτυχόντων ἦν καὶ τεθραμμένος ἐν πολλῇ ταπεινότητι 15  
 καὶ ἀπορίᾳ· ἀλλ' ὅτι τὴν ἀρχὴν τῶν ὑπάτων βασι-  
 λικὸν ἔχουσαν ἀξίωμα τέως, πρῶτος ἔδοξεν ἰδιώτης  
 ἀνὴρ ἀπειθείᾳ ταπεινώσαι, καὶ ἔτι μᾶλλον διὰ τὰς  
 ὑποσχέσεις ἃς ἐποιεῖτο μετιῶν τὴν ἀρχὴν κατὰ τῶν  
 πατρικίων, ὡς ἀφαιρησόμενος αὐτῶν τὴν ἰσχύν. ὅς 20  
 ἐπειδὴ τάχιστα ἐγένετο αὐτῷ λωφῆσαντος τοῦ δαι-  
 μονίου χόλου τὰ πολιτικὰ πράττειν, συναγαγὼν τὸν  
 δῆμον εἰς ἐκκλησίαν νόμον εἰσφέρει περὶ τῶν δημαρ-  
 χικῶν ἀρχαιρεσίων, μετὰ τὴν αὐτὰ ἐκ τῆς φρατριακῆς  
 ψηφοφορίας, ἣν οἱ Ῥωμαῖοι κυρίατην καλοῦσιν, ἐπὶ 25  
 τὴν φυλετικὴν. τίς δὲ τούτων διαφορὰ τῶν ἀρχαιρεσίων  
 ἐγὼ σημανῶ. τὰς μὲν φρατριακὰς ψηφοφορίας ἔδει  
 1855 προβουλευσαμένης τῆς βουλῆς καὶ τοῦ πλήθους κατὰ  
 φράτρας τὰς ψήφους ἐπενέγκαντος, καὶ μετ' ἀμφοτέρω  
 ταῦτα τῶν παρὰ τοῦ δαιμονίου σημείων τε καὶ οἰωνῶν 30  
 μηδὲν ἐναντιωθέντων, τότε κυρίας εἶναι· τὰς δὲ  
 φυλετικὰς μήτε προβουλεύματος γενομένου μήτε τῶν

ἰερέων τε καὶ οἰωνοσκόπων ἐπιθεσπισάντων, ἐν ἡμέρᾳ  
 μιᾷ τελεσθείσας ὑπὸ τῶν φυλετῶν τέλος ἔχειν. καὶ  
 ἦσαν ἐκ τῶν λοιπῶν τετάρων δημάρχων οἱ συνεισ-  
 φέροντες αὐτῷ δύο δημάρχοι τὸν νόμον· οὓς προσε-  
 5 ταιρισάμενος ἐλαττόνων ὄντων τῶν μὴ ταῦτά βουλο-  
 μένων περιῆν. οἱ δ' ὑπάτοι καὶ ἡ βουλὴ καὶ πάντες  
 οἱ πατρίοιοι κωλύειν ἐπεχείρουν τὸν νόμον· ἀφικό-  
 μενοί τε κατὰ πληθὸς εἰς τὴν ἀγορὰν, ἐν ἧ' προεῖπον  
 οἱ δημάρχοι κυρώσειν τὸν νόμον ἡμέρᾳ, παντοδαπούς  
 10 διηλθον λόγους, τῶν τε ὑπάτων καὶ τῶν πρεσβυτά-  
 των ἐκ τῆς βουλῆς καὶ ἄλλου παντὸς ὅτῳ βουλομένῳ  
 ἦν τὰς ἐνούσας ἐν τῷ νόμῳ διεξιόντος ἀτοπίας. ἀντι-  
 λεξάντων δὲ τῶν δημάρχων καὶ αὐθις τῶν ὑπάτων,  
 καὶ μέχρι πολλοῦ τῆς ἀψιμαχίας τῶν λόγων ἐκμηκυν-  
 15 θείσης, ἐκείνην μὲν τὴν ἐκκλησίαν διέλυσεν εἰς νύκτα  
 συγκλεισθεὶς ὁ χρόνος. προθέντων δὲ πάλιν τῶν δημ-  
 άρχων εἰς τρίτην ἀγορὰν τὴν περὶ τοῦ νόμου διά-  
 γνωσιν, καὶ συνελθόντος ἔτι πλείονος εἰς αὐτὴν ὄχλου,  
 τὸ παραπλήσιον τῷ προτέρῳ συνέβη γενέσθαι πάθος.  
 20 τοῦτο συνιδῶν ὁ Πόπλιος ἔγνω μῆτε τοῖς ὑπάτοις  
 ἐπιτρέπειν ἔτι τοῦ νόμου κατηγορεῖν, μῆτε πατρι-  
 κίους ἔαν τῇ ψηφοφορίᾳ παρεῖναι· καθ' ἑταιρείας  
 γὰρ ἐκεῖνοι καὶ κατὰ συστροφᾶς ἅμα τοῖς ἑαυτῶν πε-  
 λάταις οὐκ ὀλίγοις οὔσι πολλὰ μέρη τῆς ἀγορᾶς κατ-  
 25 εἶχον, ἐπικελεύοντές τε τοῖς κατηγοροῦσι τοῦ νόμου  
 καὶ καταθορυβοῦντες τοὺς ἀπολογουμένους καὶ ἄλλα  
 πολλὰ πράττοντες ἀνοσμίας τε καὶ βίας τῆς ἐν ταῖς  
 ψήφοις μηνύματα.

XXXXII. Ἐπέσχε δὲ αὐτοῦ τὰ βουλευμάτα ὄντα  
 30 τυραννικὰ ἑτέρα συμπεσοῦσα θεήλατος συμφορᾶ. νό-  
 σος γὰρ ἦψατο λοιμικὴ τῆς πόλεως, γενομένη μὲν  
 καὶ κατὰ τὴν ἄλλην Ἰταλίαν, μάλιστα δὲ πλεονάσασα 1856

κατὰ τὴν Ῥώμην· καὶ οὔτε ἀνθρωπίνῃ βοήθειᾳ ἤρκει  
 τοῖς κάμνουσιν οὐδεμία, ἀλλ' ἐν τῷ Ἴσῳ οἱ τε σὺν  
 πολλῇ θεραπευόμενοι φροντίδι, καὶ οἷς μηδὲν ἐγίνετο  
 τῶν δεόντων ἀπέθνησκον· οὔτε λιτανεῖαι θεῶν καὶ  
 5 θυσίαι καὶ ἐφ' οὓς ἀνθρώποι τελευταίους ἐν ταῖς τοι-  
 αῖσδε ἀναγκάζονται καταφεύγειν συμφοραῖς, οἱ κατὰ  
 ἄνδρα τε γινόμενοι καὶ ὑπὲρ τοῦ κοινοῦ καθαροί,  
 τότε προσωφέλου, οὔτε ἄλλο τι τῶν δοκούντων κου-  
 φίξειν τὴν νόσον, διέκρινέ τε τὸ πάθος οὐχ ἡλικίαν  
 οὐ φύσιν οὐ θώμην ἢ ἀσθένειαν σωματῶν οὐ τέχνην,  
 10 ἀλλὰ γυναιξί τε ἐνέπιπτε καὶ ἀνδράσι καὶ γηραιοῖς  
 καὶ νέοις. οὐ [μὴν] πολὺν δὲ κατέσχε χρόνον· ὅπερ  
 αἴτιον ἐγένετο τοῦ μὴ σύμπασαν διαφθαρεῖν τὴν  
 πόλιν· ἀλλὰ ποταμοῦ δίκην ἢ πυρὸς ἀθρόα τοῖς  
 ἀνθρώποις ἐμπесоῦσα τὴν τε προσβολὴν ὄξειαν καὶ 15  
 1858 τὴν ἀπαλλαγὴν ταχείαν ἔλαβεν. ὥς δὲ τὸ δεινὸν  
 ἐλώφησεν ἐπ' ἐξόδῳ τῆς ἀρχῆς ὧν ὁ Πόπλιος, ἐπειδὴ  
 οὐκ ἐδύνατο κυρῶσαι τὸν νόμον ἐν τῷ περιόντι χρό-  
 νῳ τῶν ἀρχαιρεσίων ἐπιστάντων, μετήει πάλιν τὴν  
 20 δημαρχίαν εἰς τὸν ἐπιόντα ἐνιαυτόν, πολλὰ καὶ με-  
 γάλα τοῖς δημόταις ὑπισχνούμενος· καὶ ἀποδείκνυται  
 πάλιν δημάρχος ὑπ' αὐτῶν καὶ δύο τῶν συναρχόν-  
 των. οἱ δὲ πατρίοιοι πρὸς τοῦτο ἀντεμνησάντο  
 πικρὸν ἄνδρα καὶ μισόδημον καὶ μηδὲν ἐλαττώσοντα  
 τῆς ἀριστοκρατίας ἐπὶ τὴν ὑπατείαν προαγαγεῖν, 25  
 Ἄππιον Κλαύδιον υἱὸν Ἀππίου τοῦ πλείστα τῷ δήμῳ  
 περὶ τὴν κάθοδον ἐναντιωθέντος. καὶ αὐτὸν πολλὰ  
 ἀντειπόντα καὶ οὐδ' εἰς τὸ πεδίον ἐλθεῖν βουληθέντα  
 ἔνεκα τῶν ἀρχαιρεσίων, οὐδὲν ἦττον προεβούλευσάν  
 τε καὶ ἐψηφίσαντο ἀπόντα ὑπάτου.  
 30 XXXXIII. Τελεσθέντων δὲ τῶν ἀρχαιρεσίων κατὰ  
 1860 πολλὴν εὐπέτειαν· οἱ γὰρ πένητες ἐξέλιπον τὸ πε-

δῖον, ἐπειδὴ τὸν ἄνδρα τόνδε ὀνομασθέντα ἤκουσαν·  
 παραλαμβάνουσι τὴν ὑπατείαν Τίτος Κοίντιος Καπι-  
 τωλῖνος καὶ Ἀππίος Κλαύδιος Σαβῖνος, οὔτε τὰς  
 φύσεις οὔτε τὰς προαιρέσεις ἔχοντες ὁμοίας. Ἀππίου  
 5 μὲν γὰρ ἦν γνώμη περισπᾶν περὶ τὰς ἔξω στρατείας  
 τὸν ἄργον καὶ πένητα δῆμον, ἵνα τῶν τε καθ' ἡμέ-  
 ραν ἀναγκαίων ἐκ τῆς πολεμίας εὐπορῶν τοῖς αὐτοῦ  
 πόνοις, ὧν ἐν χρεῖα μάλιστα ὑπῆρχε, καὶ τὰ συμφέ-  
 ροντα τῇ πόλει διαπραττόμενος, ἤμιστα τοῖς ἐκ τοῦ  
 10 συνεδρίου διοικοῦσι τὰ κοινὰ δυσμενῆς τε καὶ χαλε-  
 πὸς ἢ πολέμου δὲ πᾶσαν ἔσσεσθαι πρόφασιν εὐλογον  
 ἀπέφαινεν ἡγεμονίας ἀντιποιοιμένη πόλει καὶ ὑπὸ  
 πάντων ἐπιφθονομένη, κατὰ τε τὸ εἰκὸς τοῖς γεγο-  
 νόσιν ἤδη τὰ μέλλοντα εἰκάξειν ἡξίου, ἐπιλεγόμενος  
 15 ὅσαι ἤδη κινήσεις ἐγένοντο ἐν τῇ πόλει, ὅτι πᾶσαι  
 κατὰ τὰς ἀναπαύλας ἐγένοντο τῶν πολέμων. Κοιν-  
 1800 τίω δὲ οὐκ ἐδόκει πόλεμον ἐκφέρειν οὐδένα, ἀγαπη-  
 τὸν ἀποφαίνοντι, εἰ πρὸς τοὺς ἀναγκαίους τε καὶ  
 ἔξωθεν ἐπαγομένους κινδύνους καλούμενος ὁ δῆμος  
 20 εὐπειθῆς γένοιτο, καὶ διδάσκοντι, ὥς εἰ βίαν προσ-  
 ἄξουσι τοῖς μὴ πειθομένοις εἰς ἀπόνοιαν ἀναγκά-  
 σουσιν ἐλθεῖν τὸ δημοτικόν, ὥσπερ καὶ οἱ πρὸ αὐτῶν  
 ἐποίησαν ὑπατοὶ· ἐξ ὧν κινδυνεύσειν αὐτοὺς δυεῖν  
 θάτερον, ἢ δι' αἵματος καὶ φόνων καταπαῦσαι τὴν  
 25 στάσιν, ἢ θεραπεύειν αἰσχυρῶς ὑπομῆναι τὸ δημο-  
 τικόν. ἦν δ' ἡ τοῦ μηνὸς ἐκείνου ἡγεμονία τῷ Κοιν-  
 τίω προσήκουσα, ὥστε ἀναγκαῖον ἦν τὸν ἕτερον τῶν  
 ὑπάτων μηδὲν ἄκοιτος ἐκείνου ποιεῖν. οἱ δὲ περὶ τὸν  
 30 τῷ πρόσθεν ἐνιαυτῷ οὐ δυναθέντα ἐπικυρωθῆναι νό-  
 μον πάλιν εἰσέφερον, προσγράψαντες αὐτῷ καὶ τὸ τῶν  
 ἀγορανόμων ἄρχεῖον ἐν ταῖς αὐταῖς ψηφοφορεῖσθαι

ἐκκλησίαις, καὶ πάντα τὰλλα ὅσα ἐν τῷ δήμῳ πρῶτ-  
 1861 τεσθᾶι τε καὶ ἐπικυροῦσθαι δεήσει ὑπὸ τῶν φυλε-  
 τῶν ἐπιψηφίζεσθαι κατὰ ταυτό· ὅπερ ἦν ἄρα τῆς μὲν  
 βουλῆς κατάλυσις φανερά, τοῦ δὲ δήμου δυναστεία.

XXXXIII. Τοῦτο μαθοῦσι τοῖς ὑπάτοις φροντῖς 5  
 εἰσῆει καὶ λογισμός, ὅπως ἂν ἐν τάχει καὶ σὺν τῷ  
 ἀσφαλεῖ τὸ παρακινουῖν καὶ στασιάζον ἐξαιρεθῆ. ὁ μὲν  
 οὖν Ἀππίος ἐπὶ τὰ ὄπλα καλεῖν γνώμην ἐδίδου τοὺς  
 βουλομένους σώζεσθαι τὴν πάτριον πολιτείαν· εἰ δέ  
 τινες ἐναντιωθήσονται σφίσι πρὸς τὰ ὄπλα, τούτους 10  
 ἐν πολεμίᾳ ποιεῖσθαι μοῖρα. ὁ δὲ Κοίντιος λόγῳ  
 πεῖθειν ἔπειθε τοὺς δημοτικούς καὶ μεταδιδά-  
 σκειν, ὥς δι' ἄγνοιαν τοῦ συμφέροντος εἰς ὀλέθρια  
 βουλευόμενα φερομένους· ἐσχάτης μανίας ἔργον εἶναι  
 λέγων, ἃ παρ' ἐκόντων ἔξεστι φέρεσθαι τῶν συμπο- 15  
 λιτενομένων, ταῦτα παρ' ἀκόντων βούλεσθαι λαμβά-  
 1862 νειν. ἐπαινεσάντων δὲ καὶ τῶν ἄλλων τῶν συμπαρα-  
 ληφθέντων εἰς τὸ συνέδριον τὴν Κοιντίου γνώμην,  
 παρελθόντες εἰς τὴν ἀγορὰν οἱ ὑπατοὶ λόγον ἤτοῦντο  
 παρὰ τῶν δημάρχων καὶ χρόνον. μόλις δ' ἀμφοῖν 20  
 τυχόντες, ἐπειδὴ καθῆκεν ἦν ἠτήσαντο παρ' αὐτῶν  
 ἡμέραν, ὄχλον παντοδαποῦ συνεληλυθότος εἰς τὴν  
 ἀγορὰν, οὐ ἀμφοτέροι παρσκευάσαντο σύμμαχον  
 ἑαυταῖς ἐκ παρακλήσεως αἱ ἀρχαί, παρήσαν ὥς κατη-  
 1863 γορήσοντες τοῦ νόμου. ὁ μὲν οὖν Κοίντιος, τά τε ἄλλα 25  
 ἐπιεικῆς ὢν ἀνῆρ καὶ δῆμον οἰκειώσασθαι λόγῳ πι-  
 θανώτατος, πρῶτος αἰτησάμενος τὸν λόγον, ἐπιδέξιόν  
 τινα καὶ κεχαρισμένην ἅπασιν διεξῆλθε δημηγορίαν·  
 ὥστε τοὺς ὑπὲρ τοῦ νόμου λέγοντας εἰς πολλὴν ἐλ-  
 θεῖν ἀμηχανίαν, οὔτε δικαιοτέρα λέγειν ἔχοντας οὔτε 30  
 ἐπιεικέστερα. καὶ εἰ μηδὲν ἔτι πολυπραγμονεῖν ὁ  
 συνῆπατος αὐτοῦ προέλλετο, συγγνούς ἂν ὁ δῆμος ὡς

οὔτε δίκαια οὔτε ὅσια ἀξίων ἔλυσε τὸν νόμον· νῦν δ' [ὑπ'] ἐκείνου λόγον διελθόντος ὑπερήφανου καὶ βαρύν ἀκουσθῆναι πένησι, χαλεπὸς εἰς ὄργην ἐγένετο καὶ ἀμείλικτος καὶ εἰς ἔριν ἤλθεν ὅσην οὐπα πρότε- 1864  
 5 ρου. οὐ γὰρ ὡς ἐλευθέρους τε καὶ πολίταις ὁ ἀνὴρ διαλεγόμενος, οἱ τοῦ θεῖναι τὸν νόμον ἢ λῦσαι κύριοι ἦσαν, ἀλλ' ὡς ἐν ἀτίμοις ἢ ξένοις ἢ μὴ βεβαίως ἔχουσι τὴν ἐλευθερίαν ἐξουσιάζων, πικρὰς καὶ ἀνυπομονήτους ἐποιήσατο κατηγορίας, τῶν τε χρεῶν 10 τὰς ἀποκοπὰς αὐτοῖς ὄνειδίζων καὶ τῶν ὑπάτων τὴν ἀπόστασιν προφέρων, ὅτε τὰ ἱερὰ σημεῖα ἀρπάσαντες ᾤχοντο ἐκ τοῦ στρατοπέδου φυγὴν ἐπιβάλλοντες ἑαυτοῖς ἐκούσιον· τούς τε ὄρκους ἀνακαλούμενος, οὓς ᾤμοσαν τὰ ὄπλα περὶ τῆς γειναμένης αὐτοῦς γῆς 15 ἀναλαμβάνοντες, οἷς κατ' αὐτῆς ἐκείνης ἐχρήσαντο. τοιγάρτοι θαυμαστὸν οὐδὲν ἔφησεν αὐτοῦς ποιεῖν, εἰ θεοὺς μὲν ἐπιορκήσαντες, ἡγεμόνας δὲ καταλιπόντες, πόλιν δ' ἔρημον εἶναι τὸ καθ' ἑαυτοῦς μέρος ἀφέντες, ἐπὶ δὲ πίστει συγχύσει καὶ νόμων ἀνα- 20 τροπῇ καὶ πολιτεύματος πατρίου φθορᾷ ποιησάμενοι τὴν κάθοδον, οὐ μετριάξουσιν οὐδὲ χρηστοὺς δύναται πολίτας ἑαυτοῦς παρασχεῖν, ἀλλ' αἰεὶ τινος ὀρέ- 1865 γονται πλεονεξίας καὶ παρανομίας, τοτὲ μὲν ἀρχὰς ἐξεῖναι σφίσι ἀξιοῦντες αὐτοῦς ἐφ' ἑαυτῶν ἀποδει- 25 κνύει, καὶ ταύτας ἀνυπευθύνους ποιοῦντες καὶ παναγεῖς· τοτὲ δὲ εἰς ἀγῶνας ὑπὲρ τῶν ἐσχάτων κινδύνων καθιστάντες οὓς αὐτοῖς δόξειε τῶν πατρικίων, καὶ τὰ νόμιμα δικαστήρια, οἷς περὶ θανάτου καὶ φυ- γῆς ἢ πόλις πρότερον ἐχρήτο, μεταφέροντες ἐκ τῆς 30 καθαρωτάτης φυλῆς ἐπὶ τὸν ὑπαρτώτατον ὄχλον· τοτὲ δὲ νόμους εἰσφέροντες οἱ θῆτες καὶ ἀνέστιοι 1866 κατὰ τῶν εὐπατριδῶν τυραννικοὺς καὶ ἀνίστους, καὶ

οὐδὲ τοῦ προβουλευσαί περὶ αὐτῶν ἐξουσίαν τῇ βουλῇ καταλείποντες, ἀλλ' ἀφαιρούμενοι καὶ ταύτην αὐτῆς τὴν τιμὴν, ἣν ἐκ τοῦ παντὸς εἶχεν ἀναμφίλε- κτον χρόνου, βασιλευομένης τε καὶ τυραννουμένης τῆς 5 πόλεως. πολλὰ δὲ καὶ ἄλλα τούτοις ὅμοια προσθεῖς 5 καὶ οὐδενὸς οὔτε πικροῦ πράγματος οὔτε βλασφημοῦ ὀνόματος φρεσάμενος, τελευτῶν ἐκείνον ἔτι προσέθη- κεν τὸν λόγον, ἐφ' ᾧ μάλιστα ἢ πληθὺς ἡγανά- κτησεν, ὅτι χρόνον οὐδένα παύσεται στασιάζουσα 10 περὶ παντὸς χρόματος ἢ πόλις, ἀλλ' αἰεὶ τινα καινὴν 10 ἐπὶ παλαιᾷ νοσήσει νόσον, ἕως ἂν ἢ τῶν δημάρχων ἐξουσία διαμένη· διδάσκων, ὅτι πράγματος παντὸς πολιτικοῦ καὶ κοινοῦ τὰς ἀρχὰς προσήκει σκοπεῖν, ὅπως εὐσεβεῖς ἔσονται καὶ δίκαιοι. φιλεῖν γὰρ ἐκ μὲν 15 τῶν ἀγαθῶν σπερμάτων χρηστοὺς γίνεσθαι καὶ εὐ- 1867 τυχεῖς τοὺς καρπούς, ἐκ δὲ τῶν πονηρῶν κακοὺς καὶ ὀλεθρούς.

XXXXV. Εἰ μὲν οὖν, ἔφη, ἦδε ἢ ἀρχὴ μεθ' ὁμο- νοίας εἰσῆλθεν εἰς τὴν πόλιν ἐπὶ τῷ πάντων ἀγαθῷ παριούσα σὺν οἰωνοῖς τε καὶ ὀττειαῖς, πολλῶν ἂν 20 ἡμῖν ἐγένετο καὶ μεγάλων ἀγαθῶν αἰτία, χαρίτων ὁμοφροσύνης εὐνομίας ἐλπίδων χρηστῶν παρὰ τοῦ δαιμονίου μυρίων ἄλλων· νῦν δέ, [ἐπεὶ] βία γὰρ αὐ- τὴν εἰσῆγαγε καὶ παρανομία καὶ στάσις καὶ πολέμου 25 δέος ἐμφυλίου καὶ πάντα τὰ ἐχθίστα ἐν ἀνθρώποις, 25 τί οὖν ἔτι καὶ μέλλει χρηστὸν ἔσεσθαι ποτε ἢ σωτή- ριον, τοιαύτας λαβούσης τὰς ἀρχὰς; ὥστε περιττόν 1868 ἔστιν ἡμῖν ἴασιν καὶ ἀλεξήματα τῶν ἀναβλαστανόν- των ἐξ αὐτῆς κακῶν ζητεῖν, ὅποσα εἰς ἀνθρώπινον πίπτει λογισμὸν, μενούσης ἔτι τῆς πονηρᾶς ὀξείας. 30 οὐ γὰρ ἔσται πέρας οὐδ' ἀπαλλαγὴ τῶν δαιμονίων χόλων, ἕως ἂν ἦδε ἢ βάσκανος ἐρινὺς καὶ φαγέδαινα 19\*

ἐγκαθημένη πάντα σήπη και διαφθείρη τὰ καλά.  
 ἀλλ' ὑπὲρ μὲν τούτων ἕτερος ἔσται λόγος και καιρὸς  
 ἐπιτηδειότερος· νῦν δ' ἐπεὶ τὰ παρόντα εὖ τίθεσθαι  
 5 χρή, πᾶσαν εἰρωνείαν ἀφείδ' τάδε ὑμῖν λέγω· οὔτε  
 ὅδε ὁ νόμος οὔτ' ἄλλος οὐδέ τις, ὃν οὐχ ἢ βουλή προ-  
 βουλεύσει, κύριος ἐπὶ τῆς ἐμῆς ὑπατείας γενήσεται,  
 ἀλλὰ και λόγοις ἀγωνιούμαι περὶ τῆς ἀριστοκρατίας,  
 καὶ εἰς τὰ ἔργα δέη χωρεῖν οὐδ' ἐν τούτοις τῶν  
 ἐναντιουμένων λελείψομαι· και εἰ μὴ πρότερον  
 10 ἔγνωτε ὅσην ἰσχὺν ἔχει τὸ τῶν ὑπάτων κράτος, ἐπὶ  
 τῆς ἐμῆς ἀρχῆς μαθήσεσθε.

XXXXVI. Ἄππιος μὲν δὴ ταῦτα εἶπεν. ἐκ δὲ τῶν  
 δημάρχων ὁ πρεσβύτατος και πλείστου ἀξιώματος  
 τυγχάνων, Γάιος Λαιτώριος, ἀνὴρ ἐν τε τοῖς πολέ- 1869  
 15 μοις ἐγνωσμένος εἶναι ψυχὴν οὐ κακὸς και τὰ πολι-  
 τικά πράττειν οὐκ ἀδύνατος, ἀνίσταται πρὸς ταῦτα  
 ἀπολογησόμενος· και διῆλθε ὑπὲρ τοῦ δήμου λόγον  
 πολὺν ἀπὸ τῶν ἄνωθεν ἀρξάμενος· ὡς πολλὰς μὲν  
 και χαλεπὰς στρατείας οἱ βλασφημούμενοι πρὸς αὐ-  
 20 τοῦ πένητες ἐστρατεύσαντο, οὐ μόνον ἐπὶ τῶν βασι-  
 λέων, ὅτε τὴν ἀνάγκην ἂν τις ἠτιάσατο, ἀλλὰ και  
 μετὰ τὴν ἐκείνων ἐκβολὴν ἐλευθερίαν κτώμενοι τῇ  
 πατρίδι και ἡγεμονίαν· ἀμοιβὴν δ' οὐδεμίαν ἐκομί-  
 25 σαντο παρὰ τῶν πατρικίων, οὐδ' ἀπήλαυσαν οὐδενὸς  
 τῶν κοινῶν ἀγαθῶν, ἀλλ' ὡς πολέμῳ ἀλόντες ἀφηρε-  
 θησαν ὑπ' αὐτῶν και τὴν ἐλευθερίαν, ἣν ἀνασώσα-  
 σθαι βουλόμενοι καταλιπεῖν ἠναγκάσθησαν τὴν πα-  
 τρίδα πόθῳ γῆς ἑτέρας, ἐν ἣ τὸ μὴ ὑβρίζεσθαι αὐτοῖς  
 30 ἐλευθέρους οὔσιν ὑπάρξει· και οὔτε βιασάμενοι τὴν  
 βουλήν οὔτε πολέμῳ προσαναγκάσαντες εὔροντο τὴν  
 ἐπὶ τὰ σφέτερα κάθοδον, ἀξιούση δὲ και δεομένη τὰ  
 1870 ἐκλειφθέντα ἀπολαβεῖν εἰζάντες ἔδωκαν. τοὺς τε

ὄρκους διεξήει και τὰς συνθήκας τὰς ἐπὶ τῇ καθόδῳ  
 γενομένας ἀνεκαλείτο· ἐν αἷς ἦν ἀμνηστία μὲν πρῶ-  
 του ἀπάντων, ἔπειτα ἐξουσία τοῖς πένησιν ἀρχὰς  
 ἀποδεικνύναι, τιμωροὺς μὲν ἔσομένας σφίσιν αὐτοῖς,  
 τοῖς δὲ κατισχύειν βουλομένοις ἀντιπάλους. διεξελ- 5  
 θῶν δὲ ταῦτα τοὺς νόμους ἐπεδείκνυτο, οὗς ὁ δῆμος  
 ἐπεκύρωσεν οὐ πρὸ πολλοῦ, τὸν τε περὶ τῶν δικα-  
 στηρίων τῆς μεταγωγῆς, ὡς ἔδωκεν ἢ βουλή τῷ  
 δήμῳ τὴν ἐξουσίαν κρῖνειν οὗς ἂν αὐτοῖς δόξειε τῶν  
 πατρικίων, και τὸν ὑπὲρ τῆς ψηφοφορίας, ὅς οὐκ ἔτι 10  
 τὴν λοχίτιν ἐκκλησίαν, ἀλλὰ τὴν κουριάτιν ἐποίει  
 τῶν ψήφων κυρίαν.

1871 XXXXVII. Διεξελθὼν δὲ τὸν ὑπὲρ τοῦ δήμου  
 λόγον, ἐπιστρέψας ἐπὶ τὸν Ἄππιον· Ἐπειτα σὺ τολ-  
 μᾶς, εἶπε, λοιδορεῖσθαι τούτοις, δι' οὗς μεγάλη μὲν 15  
 ἐκ μικρᾶς, ἐπιφανῆς δ' ἐξ ἀδόξου γέγονεν ἢ πόλις;  
 και στασιαστὰς ἑτέρους ἀποκαλεῖς και φυγαδικὴν  
 τινα τύχην ὀνειδίξεις, ὥσπερ οὐχ ἀπάντων ἔτι τού-  
 των μεμνημένων τὸ καθ' ὑμᾶς, ὅτι στασιάσαντες οἱ  
 σοὶ πρόγονοι πρὸς τοὺς ἐν τέλει και τὴν ἑαυτῶν πα- 20  
 τρίδα καταλιπόντες ἐνθάδ' ἰδρύθησαν ἰκέται; εἰ μὴ  
 ἄρα ὑμεῖς μὲν ἐκλιπόντες τὴν ἑαυτῶν πατρίδα πόθῳ  
 τῆς ἐλευθερίας καλὸν ἔργον ἐπράττετε, Ῥωμαῖοι δὲ  
 τὰ ὅμοια ὑμῖν δεδρακότες οὐ καλόν. τολμᾶς δὲ και  
 τὴν τῶν δημάρχων ἐξουσίαν ὡς ἐπὶ κακῷ παρεληλυ- 25  
 θυῖαν εἰς τὴν πόλιν λοιδορεῖν, και πείθεισιν τουτουσί  
 καταλιῦσαι τὴν τῶν πενήτων ἐπικουρίαν τὴν ἱερὰν  
 και ἀκίνητον και μεγάλας ἠσφαλισμένην ἐκ θεῶν τε  
 και ἀνθρώπων ἀνάγκαις, ὧ μισοδημότατε και τυραν-  
 1872 νικώτατε; και οὐδὲ τοῦτο ἄρα ἐδυνήθησθε μαθεῖν, ὅτι 30  
 τῇ τε βουλῇ και τῇ σεαυτοῦ ἀρχῇ ταῦτα λέγων λοι-  
 δορεῖ; και γὰρ ἢ βουλή διαναστάσα [πᾶσα] πρὸς

τούς βασιλείς, ὧν οὐκέτι τὰς ὑπερηφανίας καὶ τὰς  
 ὕβρεις ὑποφέρειν ἤξιον, τὸ τῶν ὑπάτων ἀρχεῖον  
 κατεστήσατο, καὶ πρὶν ἐκείνους ἐξελάσαι τῆς πόλεως  
 ἐτέρους ἐποίησε τῆς βασιλικῆς ἐξουσίας κυρίους.  
 5 ὥστε ἂ περὶ τῆς δημαρχίας λέγεις, ὡς ἐπὶ κακῶ  
 παρεληλυθυίας, ἐπειδὴ τὴν ἀρχὴν ἀπὸ διχοστασίας  
 ἔλαβε, ταῦτα καὶ κατὰ τῆς ὑπατείας λέγεις. οὐδὲ  
 γὰρ ἐκείνην ἄλλη τις εἰσήγαγε πρόφασιν, ἀλλ' ἢ πρὸς  
 τοὺς βασιλείς τῶν πατρικίων στάσις. ἀλλὰ τί ταῦτά  
 10 σοι διαλέγομαι, ὡς χρηστῶ καὶ μετρίῳ πολίτῃ, ὃν  
 ἅπαντες ἴσασι οὗτοι σκαιὸν ὄντα διὰ γένος καὶ πι-  
 κρὸν καὶ μισόδημον καὶ τὸ θηριῶδες ὑπὸ φύσεως  
 οὐδέποτε ἐξημερῶσαι δυναμένον, ἀλλ' οὐχ ὁμόσε  
 χωρῶ σοι τὰ ἔργα ἐπίπροσθεν ποιησάμενος τῶν λό-  
 15 γων, καὶ δεικνυμι ὅσῃν ἰσχὺν ὁ δῆμος ἔχων λέληθέ  
 σε, ὃν οὐκ ἠσχύνθη ἀνέστιον καὶ ἄνυκτον καλῶν,  
 καὶ ὅσον ἦδε ἢ ἀρχὴ δυναμένη, ἦν σε ὁ νόμος ἐκτρέ- 1873  
 πεσθαι καὶ εἶκειν ἀναγκάζει; παρὲς δὲ καὶ αὐτὸς  
 ἅπασαν εἰρωνεῖαν ἔργου ἄρξομαι.  
 20 XXXXVIII. Ταῦτ' εἰπὼν, ὄρκον ὅσπερ μέγιστος  
 αὐτοῖς ἦν διομοσάμενος, ἢ τὸν νόμον ἐπικυρώσειν  
 ἢ τοῦ ζῆν μεθῆσεσθαι, σιωπῆς γενομένης ἐκ τοῦ  
 πλήθους καὶ ἐναγωνίου προσδοκίας ἐφ' ᾧ μέλλει  
 25 δρᾶν, ἐκέλευσε μεταχωρεῖν ἐκ τῆς ἐκκλησίας τὸν  
 Ἀππιον. ὡς δ' οὐκ ἐπείθετο, ἀλλὰ τοὺς ῥαβδούχους  
 παραστησάμενος καὶ τὸν ὄχλον, ὃν ἦγε παρασκευα-  
 σάμενος οἴκοθεν, ἀπεμάχετο μὴ παραχωρῆσαι τῆς  
 ἀγορᾶς, σιωπὴν ὑποκηρυξάμενος ὁ Λαιτώριος ἀνεῖ-  
 30 πειν, ὅτι τὸν ὕπατον εἰς φυλακὴν κελεύουσιν ἀπάγειν  
 καὶ ὁ μὲν ὑπηρέτης κελευσθεὶς ὑπ' αὐ-  
 τοῦ προσήγεν, ὡς τοῦ σώματος ἐπιληψόμενος· τῶν δὲ  
 ῥαβδούχων ὁ πρῶτος ἐπιτυχῶν παίων αὐτὸν ἀπήλασε.

κρανγῆς δ' ἐκ τῶν παρόντων γενομένης μεγάλης καὶ  
 ἀγανακτήσεως, ἴεται αὐτὸς ὁ Λαιτώριος παρακελευ-  
 1874 σάμενος τοῖς ὄχλοις ἀμύνειν, καὶ οἱ περὶ τὸν Ἀππιον  
 στίφος ἔχοντες νέων πολλὴν καὶ καρτερὴν ὑφίστανται.  
 καὶ μετὰ τοῦτο λόγοι τε ἀσχήμονες ἐγένοντο εἰς ἀλ- 5  
 λήλους καὶ καταβοαὶ καὶ σωμάτων ὠθισμοί· καὶ  
 τελευτῶσα εἰς χεῖρας ἀπέσκηψεν ἡ ἔρις, καὶ εἰς λίθων  
 ἤρξατο προβαίνειν βολάς. ἐπέσχε δὲ ταῦτα καὶ τοῦ  
 μὴ προσωτέρω χωρῆσαι τὰ δεινὰ Κοίντιος ἄτερος  
 τῶν ὑπάτων αἴτιος ἐγένετο, δεόμενός τε ἀπάντων 10  
 καὶ λιπαρῶν σὺν τοῖς πρεσβυτάτοις τῶν ἐκ τοῦ συν-  
 εδρίου καὶ εἰς μέσους τοὺς ἀψιμαχοῦντας ὠδοῦμε-  
 νος. ἦν δὲ καὶ τῆς ἡμέρας τὸ λειπόμενον βραχὺ μέ-  
 ρος, ὥστε ἀκούσιοι ἀπ' ἀλλήλων διελύθησαν. ταῖς 15  
 δ' ἐξῆς ἡμέραις αἱ τε ἀρχαὶ ἀλλήλαις ἐνεκάλουν·  
 ὁ μὲν ὕπατος τοῖς δημάρχοις, ὅτι καταλύειν αὐτοῦ  
 τὴν ἀρχὴν ἤξιον ἐς τὸ δεσποτήριον τὸν ὕπατον  
 ἀπάγειν κελεύσαντες· τῷ δὲ ὑπάτῳ οἱ δημαρχοί, ὡς  
 ἐμβεβληκότες πληγὰς σώμασιν ἱεροῖς καὶ καθωσιωμέ-  
 νοις ὑπὸ τοῦ νόμου· καὶ ὁ Λαιτώριος τὰ ἴχνη τῶν 20  
 πληγῶν εἶχεν ἐπὶ τῆς ὄψεως ἔτι φανερά· ἢ τε πόλις  
 1875 ὅλη διοιδοῦσα καὶ ἀγριανομένη διειστήκει. ἔπειτα  
 ὁ μὲν δῆμος ἐφρούρει τὸ Καπιτώλιον ἅμα τοῖς δημ-  
 ἀρχοῖς, οὔτε ἡμέρας οὔτε νυκτὸς ἐλείπων [αὐτοῦ]  
 τὴν φυλακὴν· ἢ δὲ βουλὴ συνιοῦσα πολλὴν καὶ ἐπί- 25  
 πουνον ἐποιεῖτο ζήτησιν, ὅπως χρὴ παῦσαι τὴν διχο-  
 στασίαν, τοῦ τε κινδύνου τὸ μέγεθος ἐνθυμουμένη,  
 καὶ ὅτι οὐδὲ τοῖς ὑπάτοις τὰ αὐτὰ παρεισθήκει φρο-  
 νεῖν. ὁ μὲν γὰρ Κοίντιος εἶκειν τῷ δήμῳ τὰ μέτρια  
 ἤξιον, ὁ δ' Ἀππιος μέχρι θανάτου ἀντέχειν. 30  
 XXXXVIII. Ὡς δ' οὐδὲν ἐγίνετο πέρας, χωρὶς  
 ἐκάστους ἀπολαμβάνων ὁ Κοίντιος, τοὺς τε δημάρχους

καὶ τὸν Ἀππιον, ἐδεῖτο καὶ ἐλιπάρει, καὶ τὰ κοινὰ τῶν ἰδίων ἀναγκαιότερα ἠγρεῖσθαι ἤξιον. ὁρῶν δὲ τοὺς μὲν ἤδη πεπειροτέρους γεγυότας, τὸν δὲ συν-  
 5 ἀρχοντα ἐπὶ τῆς αὐτῆς ἀδθαδείας μένοντα, πείθει τοὺς ἀμφὶ Δαιτώριον, ὑπὲρ ἀπάντων τῶν τε ἰδίων ἐγκλημάτων καὶ τῶν δημοσίων τὴν βουλὴν ποιῆσαι κυρίαν. ἐπεὶ δὲ τοῦτο διεπράξατο, συνεκάλει τὴν βουλὴν καὶ τοὺς δημάρχους πολλὰ ἐπαινέσας καὶ 1876 τοῦ συνάρχοντος δεηθεὶς μὴ ἀντιπράττειν τῇ σωτη-  
 10 ρίᾳ τῆς πόλεως ἐκάλει τοὺς εἰσθότους ἀποφαίνεσθαι γνώμας. πρῶτος δὲ κληθεὶς Πόπλιος Οὐαλέριος Ποπλικόλας γνώμην ἀπεφήνατο τήνδε· ὅσα μὲν ἀλλή-  
 15 οῖς ἐγκαλοῦσιν οἱ τε δήμαρχοι καὶ ὁ ὕπατος, ὑπὲρ αὐτῶν ἔπαθον ἢ ἔδρασαν ἐν τῇ ταραχῇ, ἐπειδὴ οὐκ ἐξ ἐπιβουλῆς οὐδ' οἰκείας πλεονεξίας ἔνεκον εἰς αὐτὰ κατέστησαν, ἀλλ' ὑπὲρ τῆς εἰς τὰ κοινὰ φιλοτιμίας, ἀφείσθαι δημοσίᾳ καὶ μηδεμίαν ὑπὲρ αὐτῶν εἶναι δίκην· περὶ δὲ τοῦ νόμου, ἐπειδὴ ὁ ὕπατος Ἀππιος οὐκ ἔα νόμον ἀπροβούλευτον εἰς τὴν ἐκκλησίαν ἐκ-  
 20 φέρειν, προβουλεύσαι μὲν περὶ τούτου τὸ συνέδριον· τοὺς δὲ δημάρχους ἅμα τοῖς ὑπάτοις ἐπιμέλειαν ποιή-  
 25 σασθαι τῆς τε ὁμοιοῖας τῶν πολιτῶν, ὅταν ἢ ψῆφος περὶ αὐτοῦ διαφέρῃται, καὶ τῆς εὐκοσμίας. ἐπαινε-  
 30 σάντων δὲ τὴν γνώμην ἀπάντων, εὐθύς ἀνέδωκε τὴν ὑπὲρ τοῦ νόμου ψῆφον ὁ Κοίντιος τῷ συνεδρίῳ, καὶ πολλὰ μὲν Ἀππίου κατηγορήσαντος, πολλὰ δὲ τῶν δημάρχων ἀντιλεξάντων, ἐνίκα παρὰ πολλὰς ψήφους ἢ τὸν νόμον εἰσφέρειν ἀξιούσα γνώμη. ἐπικυρωθέν-  
 30 τος δὲ τοῦ προβουλεύματος, αἶ τε ἴδιαι τῶν ἀρχόν-  
 30 των διαφοραὶ διελύθησαν, καὶ ὁ δῆμος ἀραπητῶς δεξάμενος τὸ συγχώρημα τῆς βουλῆς ἐπεψήφισε τὸν νόμον. ἀπ' ἐκείνου τοῦ χρόνου τὰ τῶν δημάρχων

καὶ ἀγόρανομον ἀρχαιρέσια μέχρι τοῦ καθ' ἡμᾶς χρόνου δίχα οἰωνῶν τε καὶ τῆς ἄλλης ὀττειας ἀπά-  
 5 σης αἰ φυλετικαὶ ψηφοφοροῦσιν ἐκκλησίαι. αὕτη λύσις ἐγένετο τῆς τότε κατασχούσης ταραχῆς τὴν πόλιν.

L. Καὶ μετ' οὐ πολὺ στρατιάς ἐδόκει Ῥωμαίοις καταγράφειν καὶ τοὺς ὑπάτους ἐκπέμπειν ἀμφοτέ-  
 10 ρους ἐπὶ τε Αἰκανοὺς καὶ Οὐολούσκους. δυνάμεις γὰρ ἐξ ἐκατέρων τῶν ἔθνῶν ἐξεληλυθέναι ἠγγέλ-  
 1878 λοντο μεγάλα καὶ προνομεύειν τοὺς Ῥωμαίων συμ- μάχους. παρασκευασθεισῶν δὲ τῶν δυνάμεων σύν τάχει, Κοίντιος μὲν Αἰκανοῖς πολεμήσων ὄχετο, Ἀπ-  
 15 πιος δὲ Οὐολούσκοις, κλήρω διαλαχόντες τὰς ἀρχάς. συνέβη δὲ τῶν ὑπάτων ἐκατέρω τὰ εἰκότα πάσχειν ἢ μὲν γὰρ τῷ Κοιντίῳ προσνεμηθεῖσα στρατιά τὴν 15 ἐπιεικειάν τε καὶ μετριότητα τοῦ ἀνδρὸς ἀσπαζομένη, πρόθυμος ἦν εἰς πάντα τὰ ἐπιτατόμενα, καὶ τὰ πλεῖστα αὐτοκέλευστος ὑφίστατο κινδυνεύματα δόξαν τῷ ἠγεμόνι καὶ τιμὴν πράττουσα· καὶ διεξῆλθε πολ-  
 20 λὴν τῆς Αἰκανῶν χώρας λεηλατοῦσα, οὐ τολμώντων εἰς χεῖρας ἔλθειν τῶν πολεμίων, ἐξ ἧς λάφυρα πολλὰ καὶ ὠφελείας μεγάλας ἐκτήσατο. χρόνον δὲ οὐ πολὺν ἐν τῇ πολεμίᾳ διατρέψασα παρῆν εἰς τὴν πόλιν ἀπα-  
 25 θῆς κακῶν, λαμπρὸν ἐπὶ τοῖς ἔργοις τὸν στρατηγὸν ἄγουσα. ἢ δὲ τῷ Ἀπίῳ συνεξεληθοῦσα δύναμις, μίσει τῷ πρὸς αὐτὸν πολλὰ ὑπερεῖδε τῶν πατρίων. τὰ τε γὰρ ἄλλα ἐθελοκακοῦσα ἐν ὅλῃ τῇ στρατείᾳ καὶ ὀλι-  
 30 γωροῦσα τοῦ ἠγεμόνος διετέλεσε, καὶ ἐπειδὴ μάχε-  
 1879 σθαι ἔδει τῇ Οὐολούσκων στρατείᾳ, κατασταθεῖσα ὑπὸ τῶν ἠγεμόνων εἰς τάξιν οὐκ ἤξιώσε τοῖς πολεμίοις εἰς χεῖρας ἵεναι· ἀλλ' οἱ τε λοχαγοὶ καὶ οἱ πρόμαχοι αὐτῶν, οἱ μὲν τὰ σημεῖα ὄψαντες, οἱ δὲ τὴν τάξιν

ἐγκαταλιπόντες, ἐπὶ τὸν χάρακα ἔφευγον. καὶ εἰ μὴ  
 θαναμάσαντες τὸ παράλογον τῆς φυγῆς αὐτῶν οἱ πο-  
 λέμιοι καὶ δείσαντες μὴ ἐνέδρα τις ἦ, τῆς ἐπὶ πλείον  
 διαΐξεως ἀπετράποντο, τὸ πλείον ἂν μέρος τῶν Ῥω-  
 5 μαίων διεφθάρτο. ἐποίουν δὲ ταῦτα φθόνῳ τοῦ ἡγε-  
 μόνος, ἵνα μὴ καλὸν ἀγώνισμα ὁ ἀνὴρ διαπραξάμενος  
 θριάμβῳ τε καὶ ταῖς ἄλλαις ἐπιλαμπρυνθῆ τιμαῖς.  
 τῇ δὲ κατόπιν ἡμέρᾳ τὰ μὲν ἐπιτιμῶντος αὐτοῖς τοῦ  
 ὑπάτου τῆς ἀδόξου φυγῆς, τὰ δὲ παρακαλοῦντος  
 10 αἰσχιστον ἔργον ἀναλύσασθαι καλῶ ἀγαθῶν, τὰ δὲ  
 ἀπειλοῦντος, εἰ μὴ στήσονται παρὰ τὰ δεινὰ, χρῆσε-  
 σθαι τοῖς νόμοις, ἀπειθείᾳ τε διεχρῶντο καὶ καταβοῇ  
 καὶ ἀπάγειν σφᾶς ἐκέλευον ἐκ τῆς πολεμίας, ὡς ἀδύ-  
 νατοι ἔτι ὄντες ὑπὸ τραυμάτων ἀντέχειν· κατεδή-  
 15 σαντο γὰρ αὐτῶν οἱ πολλοὶ τοὺς ὕγριεὺς χρωῶτας ὡς  
 τραυματῖαι· ὥστε ὁ Ἄππιος ἠραγκάσθη ἀπάγειν τὸν  
 στρατὸν ἐκ τῆς πολεμίας, καὶ οἱ Οὐλοῦσχοι ἀποιοῦ-  
 σιν ἐπόμενοι πολλοὺς αὐτῶν ἀπέκτειναν. ὡς δ' ἐν  
 τῇ φιλίᾳ ἐγένοντο, συναγαγὼν εἰς ἐκκλησίαν αὐτοὺς  
 20 ὁ ὕπατος, καὶ πολλὰ ὀνειδίσας, ἔφη χρῆσεσθαι τῇ  
 πατρίᾳ κατὰ τῶν λειποτακτῶν κολάσει. καὶ πολλὰ  
 δεομένων τῶν πρεσβευτῶν καὶ τῶν ἄλλων τῶν ἐν  
 τέλει μετριάσαι, καὶ μὴ συμφορὰν ἐπὶ συμφορᾷ  
 προσθεῖναι τῇ πόλει, λόγον οὐδενὸς αὐτῶν ποιησά-  
 25 μενος ἐκύρωσε τὴν κόλασιν. καὶ μετὰ τοῦτο οἱ λοχα-  
 γοὶ τε ὧν οἱ λόχοι ἔφυγον, καὶ οἱ πρόμαχοι τῶν ση-  
 μείων, ὅσοι τὰ σημεῖα ἀπολωλέκεσαν, οἱ μὲν πελέκει  
 τοὺς ἀχένας ἀπεκόπησαν, οἱ δὲ ξύλοις παιόμενοι  
 διεφθάρθησαν· ἐκ δὲ τοῦ ἄλλου πλήθους ἀπὸ δεκάδος  
 30 ἐκάστης εἰς ἀνὴρ ὁ λαχὼν κλήρῳ πρὸ τῶν ἄλλων<sup>1881</sup>  
 ἀπέθνησκεν. αὕτη Ῥωμαίοις πίκριός ἐστι κατὰ τῶν  
 λιπόντων τὰς τάξεις ἢ προεμένων τὰς σημείας ἢ κό-

λασις. καὶ μετὰ ταῦτα αὐτὸς τε μισούμενος ὁ στρα-  
 τηγὸς καὶ τῆς στρατιᾶς ὅσον ἔτι περιῆν κατηφὲς καὶ  
 ἄτιμον ἐπαρόμενος, τῶν ἀρχαιρεσίων καθηκόντων  
 ἀνέστρεψεν εἰς τὴν πατρίδα.

LI. Ἀποδειχθέντων δὲ μετ' ἐκείνους ὑπάτων<sup>5</sup>  
 Λευκίου Οὐαλερίου τὸ δεύτερον καὶ Τιβερίου Αἰμι-  
 λίου, βραχύν τινα χρόνον ἐπισχόντες οἱ δήμαρχοι, τὸν  
 ὑπὲρ κληρουχίας πάλιν εἰσήγον λόγον· καὶ προσιόν-  
 τες τοῖς ὑπάτοις ἤξιον βεβαιῶσαι τῷ δήμῳ τὰς  
 ὑποσχέσεις, ἃς ἐποιήσατο ἡ βουλὴ Σπορίου Κασσίου<sup>10</sup>  
 καὶ Πρόκλου Οὐεργινίου ὑπατευόντων, δεόμενοι τε  
 καὶ λιπαροῦντες. καὶ οἱ ὕπατοι αὐτοῖς συνελάμβανον  
 ἀμφοτέρους, Τιβέριος μὲν Αἰμίλιος κόνον τινὰ παλαιὸν  
 εἰς τὴν βουλὴν οὐκ ἄλογον ἀναφέρων, ὅτι τῷ πατρὶ  
 15 αὐτοῦ θριάμβον αἰτουμένῳ κατάγειν οὐκ ἐπέτρεψεν·<sup>1882</sup>  
 ὁ δὲ Οὐαλέριος ἀποθεραπεύσαι τοῦ δήμου τὴν ὀργὴν  
 βουλόμενος, ἣν εἶχε πρὸς αὐτὸν ἐπὶ τῷ Σπορίου  
 Κασσίου θανάτῳ, ὃν ἀπέκτεινεν ὡς ἐπιχειροῦντα  
 βασιλείᾳ ταμίας τότε ὦν Οὐαλέριος, ἄνδρα τῶν κατὰ  
 τὴν αὐτὴν ἡλικίαν γενομένων ἐπιφανέστατον ἐν ἡγε-  
 20 μονίαις τε πολέμων καὶ πολιτικαῖς πράξεσιν, ὃς καὶ  
 τὸ περὶ τῆς κληρουχίας πολίτευμα πρῶτος εἰσήγαγεν  
 εἰς τὴν πόλιν, καὶ δι' αὐτὸ μάλιστα ὑπὸ τῶν πατρι-  
 κίων, ὡς δῆμον αἰρούμενος πρὸ αὐτῶν, ἐμισήθη.  
 τότε δ' οὖν ὑποσχομένων τῶν ὑπάτων αὐτοῖς προ-  
 25 θήσειν ἐν τῇ βουλῇ τὸν ὑπὲρ τῆς διανομῆς τῶν δη-  
<sup>1883</sup>μοσίων κλήρων λόγον, καὶ τῆς ἐπικυρώσεως τοῦ νό-  
 μου συναρεῖσθαι, πιστεύσαντες αὐτοῖς οἱ δήμαρχοι  
 παρήσαν ἐπὶ τὴν βουλὴν καὶ λόγους διεξήλθον ἐπι-  
 εικεῖς. οἷς οὐδὲν ἀντιλέξαντες οἱ ὕπατοι, ὡς μὴ φι-  
 30 λονεικίας δόξαν ἀπενέγκαινο, γνώμην ἀποδείκνυσθαι  
 τοὺς πρεσβυτάτους ἤξιον. ἦν δ' ὁ πρῶτος ὑπ' αὐτῶν



κληθεὶς Λεύκιος Αἰμίλιος θατέρον τῶν ὑπάτων πα-  
 τήρ· ὃς ἔφη δοκεῖν αὐτῷ καὶ δίκαιον καὶ συμφέρον  
 ἔσσεσθαι τῇ πόλει, πάντων εἶναι τὰ κοινὰ καὶ μὴ ὀλί-  
 γων· τῷ τε δήμῳ πείθονται ὑπουργεῖν συνεβούλευεν,  
 ἵνα χάρις ἢ παραχώρησις αὐτῶν γένηται. πολλὰ γὰρ  
 καὶ ἄλλα μὴ δόντας αὐτῷ κατὰ προαίρεσιν, ὑπ'  
 ἀνάγκης συγκεχωρημέναι· τοὺς τε κατέχοντας τὰς  
 κτήσεις ὧν ἔκαρπώσαντο χρόνων λαθόντες ἤξιου  
 χάριον εἰδέναι, κωλυομένους δὲ μὴ φιλοχωρεῖν. ἔφη  
 τε, σὺν τῷ δικαίῳ, ὃ πάντες ὁμολογήσειαν ἰσχυρὸν  
 εἶναι, τὰ μὲν δημόσια κοινὰ πάντων εἶναι, τὰ δ' ἴδια  
 ἐκάστου τῶν νόμῳ κτησαμένων· καὶ ἀναγκαῖον ἤδη  
 τὸ πρᾶγμα ὑπὸ τῆς βουλῆς γεγυμέναι πρὸ ἑτῶν ἑπτα-  
 καίδεκα τὴν γῆν διανέμειν ψηφισαμένης. καὶ τοῦτ'  
 ἀπέφηεν ἐπὶ τῷ συμφέροντι τότε αὐτὴν βεβουλευ-  
 σθαι, ἵνα μήτε γῆ χέρος ἦ, καὶ ὁ τὴν πόλιν οἰκου-  
 ρῶν πένης ὄχλος μὴ ἀργός, ὥσπερ νῦν τοῖς ἄλλο-  
 τρείοις ἀγαθοῖς φθονῶν, ἐπιτρέφεται δὲ τῇ πόλει  
 νεότης ἐν ἐφεστίοις καὶ κλήροις πατρῶοις, ἔχουσα τι  
 καὶ ἐπὶ τῷ καλῶς τετράφθαι μέγα φρονεῖν· ἐπεὶ τοῖς  
 γε ἀκλήροις καὶ ἐκ τῶν ἀλλοτρίων κτημάτων, ἃ μι-  
 σθοῦ ἐργάζονται, γλίσχρως διατρεφομένοις, ἢ ἀρχή-  
 θεν μὴ ἐμφύεσθαι ἔρωτα γενεᾶς τέκνων, ἢ ἐμφύντα  
 πονηρὸν ἐκφέρειν καρπὸν καὶ οὐδ' εὐτυχῆ, ἐκ ταπει-  
 νῶν τε συμπορισθέντα οἷα εἰκὸς γάμων, καὶ ἐν κατ-  
 ἐπιτωχευμέναις τραφέντα τύχαις. ἐγὼ μὲν οὖν, ἔφη,  
 γνώμην ἀποδείκνυμαι, τὰ τε προβουλευθέντα ὑπὸ  
 τοῦ συνεδρίου καὶ διὰ τὰς μεταξὺ ταραχὰς παρειλ-  
 κυσμένα ἐμπεδοῦν τοὺς ὑπάτους, καὶ τοὺς ποιησομέ-  
 νους τὴν διανομὴν ἀνδρας ἀποδεικνύναι.

III. Ταῦτ' εἰπόντος Αἰμιλίου, δευτέρως κληθεὶς  
 Ἀππίος Κλαύδιος ὁ τῷ πρόσθεν ὑπατεύσας ἔτει τὴν

ἐναντίαν γνώμην ἀπεφήνατο, διδάσκων, ὡς οὐδ' ἢ  
 βουλή διανεῖμαι τὰ δημόσια [πράγματα] προαίρεσιν  
 ἔσχε· πάλαι γὰρ ἂν εἰληφέναι τὰ δόξαντ' αὐτῇ τέλος·  
 ἀλλ' εἰς χρόνον καὶ διάγνωσιν ἑτέραν ἀνεβάλετο,  
 παῦσαι προθυμουμένη τὴν τότε κατασχούσαν στάσιν,  
 ἣν εἰσήγεν ὁ τῇ τυραννίδι ἐπιχειρῶν ὑπατος καὶ  
 μετὰ ταῦτα δίκας δούς καλῶς· οὔτε οἱ μετὰ τὸ προ-  
 βούλευμα λαχόντες ὑπατοὶ τέλος τοῖς ἐψηφισμένοις  
 ἐπέθεσαν, ὀρῶντες ὅσων εἰσελεύσεται κακῶν εἰς τὴν  
 πόλιν ἀρχὴ συνεθισθέντων τὰ κοινὰ τῶν πενήτων  
 διαλαγχάνειν· αἱ τε μετ' ἐκείνους πεντεκαίδεκα ὑπα-  
 τεῖται, πολλῶν αὐταῖς ἐπαχθέντων ὑπὸ τοῦ δήμου  
 κινδύνων, οὐδὲν ὑπέμειναν ὃ μὴ συνέφερε τῷ κοινῷ  
 πρᾶττειν, διὰ τὸ μὴδ' ἐξεῖναι σφίσι κατὰ τὸ προβού-  
 λευμα τοὺς γεωμόρους ἀποδεικνύειν, ἀλλὰ τοῖς πρώ-  
 τοις ἐκείνοις ὑπάτοις. ὥστε οὐδ' ὑμῖν, ἔφησεν, ἂν  
 Οὐαλέριε καὶ σὺ Αἰμίλιε, γῆς ἀναδασμούς εἰσφέρειν,  
 οὓς οὐκ ἐπέταξεν ὑμῖν τὸ συνέδριον, οὔτε καλῶς  
 ἔχει προγόνων οὔσιν ἀγαθῶν, οὔτε ἀσφαλῶς. καὶ  
 περὶ μὲν τοῦ προβουλεύματος, ὡς οὐ κρατεῖσθε ὑπ'  
 αὐτοῦ οἱ τοσοῦτοις ὕστερον ὑπατεύσαντες χρόνοις,  
 ταῦθ' ἱκανά. περὶ δὲ τοῦ βιασαμένους τινὰς ἢ λα-  
 θόντας σφετερίσασθαι τὰ δημόσια βραχὺς ἀπαρκεῖ  
 μοι λόγος. εἰ γὰρ τις οἶδε καρπούμενόν τινα ὧν οὐκ  
 ἔχει κτήσιν ἀποδείξει νόμῳ, μῆνυσιν ἀπενεργάτω  
 πρὸς τοὺς ὑπάτους καὶ κρινάτω κατὰ τοὺς νόμους,  
 οὓς οὐ νεωστὶ δεήσει γράφειν· πάλαι γὰρ ἐγράφη-  
 σαν, καὶ οὐδεὶς αὐτοὺς ἠφάνικε χρόνος. ἐπεὶ δὲ καὶ  
 περὶ τοῦ συμφέροντος ἐποιεῖτο λόγους Αἰμίλιος, ὡς  
 ἐπὶ τῷ πάντων ἀγαθῷ τῆς κληρουχίας ἔσομένης,  
 οὐδὲ τοῦτο τὸ μέρος ἀνέλεγκτον ἔασαι βούλομαι. ἐμοὶ  
 γὰρ δοκεῖ τὸ αὐτόθι μόνον οὗτός γε ὄρᾶν, τὸ δὲ μέλ-

λον οὐ προσκοπεῖν, ὅτι [τὸ] μικρὸν εἶναι δοκοῦν ἔτι τῶν δημοσίων τοῖς ἀργοῖς καὶ ἀπόροις μεταδιδόναι, πολλῶν ἔσται καὶ μεγάλων κακῶν αἴτιον. τὸ γὰρ ἔθος τὸ συνεισπορευόμενον ἅμα τούτῳ καὶ διαμένον  
 5 ἐν τῇ πόλει καὶ μέγρι παντὸς ὀλέθριον ἔσται καὶ δεινόν· οὐ γὰρ ἐξαιρεῖ τὰς πονηρὰς ἐπιθυμίας ἐκ τῆς ψυχῆς τὸ τυγχάνειν αὐτῶν, ἀλλ' αὔξει καὶ πονηροτέρας ποιεῖ. τεκμήρια δ' ὑμῖν γενέσθω τούτων τὰ  
 10 *Αἰμιλλίου προσέχειν;*

LIII. Ἴστε δήπου πάντες, ὅσους ἐχειρωσάμεθα πολεμίους, καὶ ὅσην γῆν προενομεύσαμεν, καὶ ὅσα λάφυρα ἐκ τῶν ἀλόπτων χωρίων ἐλάβομεν, ὧν οἱ πολέμοι στερόμενοι τέως εὐδαίμονες ὄντες ἐν πολλῇ  
 15 νῦν καθεστήκασιν ἀπορία· καὶ ὅτι τούτων οὐδὲν ἀπηλάθησαν οὐδὲ μείον ἐκτήσαντο ἐν ταῖς διανομαῖς οἱ τὴν ἀπορίαν ὀδυρόμενοι. ἄρ' οὖν διὰ ταύτας τὰς ἐπικτήσεις ἐπανορθωσάμενοι φαίνονται τι τῆς παλαιᾶς τύχης καὶ προεληλυθότες εἰς ἐπιφάνειαν τοῖς  
 20 βίοις; ἐβουλόμην μὲν ἂν καὶ θεοῖς εὐξάμην, ἵνα ἦτον ἦσαν οἱ ἐπίσκηνοι λυπηροὶ τῇ πόλει. νῦν δὲ  
 25 ὄρατε γὰρ καὶ ἀκούετε αὐτῶν ὀδυρομένων, ὅτι ἐν ἐσχάτῃ εἰσὶν ἀπορία. ὥστε οὐδ' εἰ ταῦτα, ἃ νῦν αἰτοῦνται, καὶ ἔτι πλείω τούτων λάβοιεν, ἐπανορθώσονται τοὺς βίους. οὐ γὰρ ἐν ταῖς τύχαις αὐτῶν ἐνοικεῖ τὸ ἄπορον, ἀλλ' ἐν τοῖς τρόποις· οὐς οὐχ οἷον ὀβραχὺς οὗτος ἐκπληρώσει κληρὸς, ἀλλ' οὐδ' αἱ σύμ-  
 30 πασαι βασιλέων τε καὶ τυράννων δωραεῖ. δρασσομέν τε, εἰ καὶ ταῦτα συγχωρήσομεν αὐτοῖς, ὅμοια τοῖς πρὸς ἡδονὴν θεραπεύουσι τοὺς κάμνοντας ἰατροῖς. οὐ γὰρ τὸ νοσοῦν ὑγιασθήσεται τῆς πολιτείας μέρος, ἀλλὰ καὶ τὸ ὑγιαῖνον ἀπολαύσει τῆς νόσου. καθόλου

τε, ὧ βουλῇ, πολλῆς ὑμῖν δεῖ ἐπιμελείας τε καὶ φροντίδος, ὅπως ἂν σώσητε πάσῃ προθυμίᾳ διαφθειρόμενα τὰ ἦθη τῆς πόλεως. ὄρατε γὰρ εἰς ἃ προεληλυθεν ἡ τοῦ δήμου ἀκοσμία, καὶ ὡς οὐκέτι ἄρχεσθαι  
 5 πρὸς τῶν ὑπᾶτων ἀξιοί· ὧ γέ οὐ μετεμέλησε τῶν ἐνθάδε πραττομένων, ἀλλὰ καὶ ἐπὶ στρατοπέδῳ τὴν αὐτὴν ἀπεδείξατο ἀκοσμίαν, ὅπλα τε θίψας καὶ τάξεις ἐκλιπὼν καὶ σημεῖα πολεμίοις προέμενος καὶ φυγῇ  
 1890 πρὶν εἰς χεῖρας ἔλθειν ἐπονειδίστω χρησάμενος, ὥστε ἐμοῦ μόνου ἀφαιρησόμενος τὴν ἐκ τῆς νίκης δόξαν, 10 ἀλλ' οὐχὶ καὶ τῆς πατρίδος τὸ κατὰ τῶν ἐχθρῶν κράτος. καὶ νῦν Οὐολούσιοι κατὰ Ῥωμαίων ἵσταται τρόπαια, καὶ κοσμεῖται τοῖς ἡμετέροις λαφύροις τὰ ἐκείνων ἱερὰ καὶ ἐν ἀντήμασιν ἡλίκοις οὐκ ἄποτε αἱ πόλεις αὐτῶν εἰσιν, [αἱ] τέως ὑπὲρ ἀνδραποδισμοῦ 15 τε καὶ κατασκαφῆς τῶν ἡμετέρων δεόμεναι ἡγεμόνων. ἄρ' ἄγε δίκαιον ἢ καλὸν ἐπὶ τοιούτοις κατορθώμασι χάριν αὐτοῖς ὑμᾶς εἰδέναι, καὶ δημοσίαις ἐπικοσμεῖν  
 1891 δωραεῖς κληρουχήσαντας τὴν γῆν, ἧς πολέμοι κρατοῦσι τὸ κατὰ τούτους εἶναι μέρος; ἀλλὰ τί δεῖ τού- 20 τοῖς ἐγκαλεῖν, οἷς δι' ἀπαιδευσίαν τε καὶ δυσγένειαν ὀλίγος ἐστὶ τῶν καλῶν λόγος, ὄρωντας, ὡς οὐδ' ἐν νημα, ἀλλ' αὐθάδεια μὲν ἢ σεμνότης καλεῖται πρὸς ἐνίαν, μωρία δὲ ἢ δικαιοσύνη, μανικὸν δὲ τὸ ἀν- 25 δρεῖον, καὶ ἡλίθιον τὸ σῶφρον; ἃ δὲ μισητὰ παρὰ τοῖς προτέροις ἦν, ταῦτα πυργοῦνται τε νῦν καὶ θανάσια ἡλίκα φαίνεται τοῖς διεφθαρμένοις ἀγαθὰ, 1892 ἀνανδρία καὶ βωμολοχία καὶ κακοήθεια καὶ τὸ πανοὔργον [σοφόν] καὶ τὸ πρὸς πάντα ἰταμόν καὶ τὸ 30 μηδενὶ τῶν κρείττωνων εὐπειθές· ἃ πολλὰς ἤδη πόλεις ἰσχυρὰς λαβόντα ἐκ βάρβρων ἀνέτρεψε. ταῦθ'

ὑμῖν, ὦ βουλή, εἴτε ἡδέα ἐστὶν ἀκούειν εἴτε ἀνιαρά, μετὰ πάσης ἀληθείας καὶ παρρησίας εἴρηται, τοῖς μὲν πεισθησομένοις ὑμῶν ἐὰν ἄρα πεισθῆτε ἐν τε τῷ παρόντι χρήσιμα καὶ εἰς τὸ μέλλον ἀσφαλῆ· ἐμοὶ δέ, 5 ὃς ὑπὲρ τοῦ κοινῆ συμφέροντος ἰδίας ἀπεχθείας ἀναιροῦμαι, πολλῶν ἐσόμενα κινδύνων αἴτια. προορᾶν γὰρ ἱκανός εἰμι τὰ συμβησόμενα ἐκ λογισμοῦ, καὶ παραδείγματα ποιοῦμαι τὰ ἀλλότρια πάθη τῶν ἕμαντοῦ.

10 LIII. Ταῦτ' εἰπόντος Ἀππίου, καὶ τῶν ἄλλων ὀλίγου δεῖν πάντων τὴν αὐτὴν γνώμην ἀποφνηαμένω, ἢ μὲν βουλή διελύετο. οἱ δὲ δήμαρχοι δι' ὀργῆς ἔχοντες τὴν ἀποτυχίαν ἀπήεσαν, καὶ μετὰ τοῦτ' ἐσκόπου, ὅπως τιμωρήσονται τὸν ἄνδρα· ἔδοξε 1891 οὖν αὐτοῖς πολλὰ βουλευσαμένοις δίκη τὸν Ἀππίου ὑπαγαγεῖν θάνατον ἐχούση τὸ τίμημα. καὶ μετὰ ταῦτα ἐν ἐκκλησίᾳ τοῦ ἀνδρὸς κατηγορήσαντες, παρεκάλουν ἤκειν ἅπαντας εἰς τὴν ἀποδειχθησομένην 15 ἡμέραν ὡς διοίσοντας ὑπὲρ αὐτοῦ ψῆφον. ἃ δὲ κατηγορεῖν ἔμελλον, ταῦτα ἦν· ὅτι πονηρὰς ἐτίθει κατὰ τοῦ δήμου γνώμας, καὶ στάσις εἰσῆγεν εἰς τὴν πόλιν, καὶ δημάρχῳ χεῖρας ἐπήνεγκε παρὰ τοὺς ἱεροὺς νόμους, καὶ στρατιᾶς ἠγησάμενος σὺν βλάβῃ τε καὶ αἰσχύνῃ μεγάλη ἀνέστρεψε. ταῦτα προειπόντες ἐν 20 τῷ πλήθει, καὶ ρητὴν τινα ἀποδείξαντες ἡμέραν, ἐν ἣ τέλος ἔφησαν ἐπιθήσειν τῇ δίκῃ, παρήγγειλαν αὐτῷ παρεῖναι τότε ἀπολογησομένῳ. ἀγανακτούντων δὲ ἀπάντων τῶν πατρικίων καὶ παρεσκευασμένων ἀπάσῃ προθυμίᾳ σώζειν τὸν ἄνδρα, καὶ τὸν Ἀππίου 30 παρακαλούντων εἶξαι τῷ καιρῷ καὶ σχῆμα ταῖς παρούσαις τύχαις ἐροῦν μεταλαβεῖν, οὐδὲν ἔφη ποιήσειν ὁ ἀνὴρ οὔτ' ἀγεννὲς οὔτε τῶν προγεγονότων

ἔργων ἀνάξιον, μυρίους δ' ἂν ὑπομεῖναι θανάτους πρότερον ἢ γονάτων ἄφασθαί τινος· τοὺς τε ὑπὲρ αὐτοῦ δεῖσθαι παρεσκευασμένους διεκώλυεν, εἰπών, ὡς διπλασίως ἂν αἰδεσθῆι ταῦτα ὑπὲρ αὐτοῦ ποιούντας ἑτέρους ὄρων, ἃ μὴ αὐτὸς ὑπὲρ ἑαυτοῦ πράττειν 5 πρέποντα ἡγείται. ταῦτά τε δὴ καὶ πολλὰ ὅμοια τούτοις λέγων, καὶ οὔτε ἐσθῆτα ἀλλάξας οὔτε τὸ τῆς ὄψεως γαῦρον ἀλλοιώσας οὔτε φρονήματός τι ὑφέμενος, ὡς εἶδεν ὄρθην καὶ μετέωρον ἐπὶ τῇ προσδοκίᾳ τοῦ ἀγῶνος τὴν πόλιν, ὀλίγων ἔτι λειπομένων ἡμερῶν 10 ἑαυτὸν διεχρήσατο. οἱ μὲν δὴ προσήκοντες αὐτῷ νόσον ἐσκήπτοντο γενέσθαι τοῦ θανάτου αἰτίαν· προνεχθέντος δὲ τοῦ σώματος εἰς τὴν ἀγοράν, ὁ μὲν υἱὸς αὐτοῦ προσίων τοῖς δημάρχοις καὶ τοῖς ὑπάτοις, ἤξιον τὴν νόμιμον ἐκκλησίαν αὐτῷ συναγαγεῖν καὶ τὸν ἐν 15 ἔθει Ῥωμαίοις ὄντα ἐπὶ ταῖς ταφαῖς ἀγορεύεσθαι τῶν ἀγαθῶν ἀνδρῶν λόγον ἐπιτρέψαι περὶ τοῦ πατρὸς 1895 διελθεῖν. οἱ δὲ δήμαρχοι καλουμένης ἔτι τῆς ἐκκλησίας ὑπὸ τῶν ὑπάτων ἐνίσταντο, καὶ παρήγγειλλον τῷ μειρακίῳ τὸν νεκρὸν ἀποφέρειν. οὐ μὲν ὁ δὴ 20 μὸς γε ἠνέσχετο οὐδὲ περιεῖδε τὴν ὕβριν, ἄτιμον ἐκβληθῆναι τὸ σῶμα, ἀλλ' ἐπέτρεψε τῷ μειρακίῳ τὰς νομιζόμενας ἀποδοῦναι τῷ πατρὶ τιμὰς. Ἀππίος μὲν οὖν τοιαύτης τελευτῆς ἔτυχεν.

LV. Οἱ δ' ὑπατοὶ καταγράψαντες τὰς δυνάμεις 25 ἔξῃγον ἐκ τῆς πόλεως· Λένκιος μὲν Οὐαλέριος Αἰκανοῖς πολεμήσων, Τιβέριος δὲ Αἰμίλιος Σαβίνοις. καὶ γὰρ οὗτοι κατὰ τὸν τῆς στάσεως καιρὸν ἐνέβαλον εἰς τὴν Ῥωμαίων χώραν, καὶ πολλὴν αὐτῆς κακώσαντες ἀπῆλθον λείαν ἄφθονον περιβαλόμενοι. Αἰκανοὶ 30 μὲν οὖν πολλάκις εἰς χεῖρας ἐλθόντες καὶ πολλὰς πληγὰς λαβόντες, εἰς τὸν χάρακα ἐν ἔχρῳ χωρῶν 20

κείμενον κατέφυγον καὶ τὸ λοιπὸν οὐκέτι προήεσαν εἰς μάχην. ὁ δὲ Οὐαλέριος ἐπεχείρησε μὲν ἐκπολιορκεῖν αὐτῶν τὸ στρατόπεδον, ἐκωλύθη δ' ὑπὸ τοῦ δαιμονίου. προσιόντι γὰρ αὐτῷ καὶ ἤδη ἔργου ἔχο- 1896  
 5 μένω, ζόφος ἐξ οὐρανοῦ γίνεται καὶ ὄμβρος πολὺς, ἀστραπαὶ δὲ καὶ βρονταὶ σκληραὶ διασκεδασθείσης δὲ τῆς στρατιᾶς ὃ τε χειμῶν εὐθύς ἐπαύσατο καὶ πολλὴ κατέσχε τὸν τόπον αἰθρία. τοῦτό τε δὴ τὸ ἔργον ὄπτευσάμενος ὁ ὕπατος, καὶ τῶν μάλιστα 10 καλυόντων ἔτι πολιορκεῖν τὸ χωρίον, ἀποτραπείς τὴν γῆν αὐτῶν ἐνάκιον, καὶ ὅση ἐπέτυχε λεία τοῖς στρατιώταις ἅπασαν ἀφειλεῖσθαι ἐφείς, ἀπήγγεν ἐπ' οἴκου τὴν δύναμιν. Τιβερίω δὲ Αἰμιλίω διεξιόντι τὴν πολεμίαν σὺν πολλῇ καταφρονήσει κατ' ἀρχᾶς 15 καὶ οὐδὲν ἔτι προσδοκῶντι ἀντίπαλον, ἐπήλθεν ἡ Σαβίνων δύναμις καὶ γίνεται μάχη αὐτῶν ἐκ παρατάξεως μεσοῦσης μάλιστα τῆς ἡμέρας ἀρχαμένη μέχρι δύσεως ἡλίου. σκότους δ' ἐπιλαβάνοντος ἀνεχώρουν αἱ δυνάμεις ἐπὶ τοὺς ἑαυτῶν χάρακας 20 οὔτε νικᾶσαι οὔτε λειπόμεναι. ταῖς δ' ἐξῆς ἡμέραις νεκρούς τε τοὺς ἑαυτῶν ἐκήδευσαν οἱ ἡγεμόνες καὶ χάρακας ἐξωρῦξαντο, καὶ γνώμας τὰς αὐτὰς εἶχον ἐκότεροι, διὰ φυλακῆς τὰ οἰκεία ἔχειν καὶ μηκέτι ἀφχειν μάχης. ἔπειτα σὺν χρόνῳ τὰς σκηρὰς λύσαντες 1897  
 25 ἀπήγγον τὰς δυνάμεις.

LVI. Ἐν δὲ τῷ μετὰ τούτους τοὺς ὑπάτους ἔτει, κατὰ τὴν ἑβδομηκοστὴν καὶ ὀγδόην ὀλυμπιάδα, ἦν ἐνίκα στάδιον Παρμενίδης Ποσειδωνιάτης, Ἀθήνησι [δὲ] τὴν ἐνιαύσιον ἀρχὴν ἔχοντος Θεαργενίδου, κατε- 30 στάθησαν ὕπατοι Ῥωμαίων Ἀύλος Οὐεργίνιος Καλλιμοντανὸς καὶ Τίτος Νομίμιος Πρίσκο. ἄρτι δὲ αὐτῶν τὴν ἀρχὴν παρεληφότων, ἀγγέλλεται στρατιᾶ

Οὐολούσκων πολλὴ παροῦσα. καὶ μετ' οὐ πολὺ τῶν περιπόλιον τι τῶν Ῥωμαϊκῶν ἐξ ἐφόδου καταληφθὲν ἐκαίετο ἦν δὲ οὐ διὰ μακροῦ τῆς Ῥώμης, καὶ ὁ κα- 1898  
 πρὸς ἡγγελλε τοῖς ἐν τῇ πόλει τὸ πάθος. τότε μὲν οὖν, 5 καὶ γὰρ ἦν ἔτι νύξ, ἵππεῖς τινὰς ἀποστείλαντες ἐπὶ κατασκοπὴν οἱ ὕπατοι καὶ φυλακὰς καταστήσαντες ἐπὶ τοῖς τείχεσι καὶ αὐτοὶ ταξάμενοι πρὸ τῶν πυλῶν σὺν τοῖς εὐζωνοτάτοις, ἐξεδέχοντο τὰς παρὰ τῶν ἱπ- 10 πέων ἀγγελίας· ὡς δὲ ἡμέρα τε ἐγένετο, καὶ συνήθροιστο αὐτοῖς ἢ ἐν τῇ πόλει δύναμις, ἦγον ἐπὶ τοὺς 10 πολεμίους. οἱ δὲ διαρπάσαντες καὶ κατακαύσαντες τὸ φρούριον ἀπήεσαν διὰ τάχους. τότε μὲν οὖν οἱ ὕπατοι σβέσαντες τὰ ἔτι καιόμενα καὶ τοῦ χωρίου φυλακὴν καταλιπόντες ἀπήεσαν εἰς τὴν πόλιν· ὀλί- 15 γαις δ' ὕστερον ἡμέραις τὰς τε οἰκείας ἔχοντες δυνά- 15 μεις καὶ τὰς παρὰ τῶν συμμάχων ἐξήεσαν ἀμφοτέρω, Οὐεργίνιος μὲν ἐπὶ τὴν Αἰκανῶν, Νομίμιος δὲ ἐπὶ τὴν Οὐολούσκων· καὶ αὐτοῖς ἀμφοτέροις κατὰ γνώ- 20 μῃν τὰ τοῦ πολέμου ἐχώρησεν. Οὐεργινίω τε γὰρ Αἰκανοὶ δροῦντι τὴν χώραν αὐτῶν οὐκ ἐτόλμησαν εἰς 20 χεῖρας ἔλθειν, ἀλλὰ καὶ λόχον τινὰ ὑποκαθίσαντες ἐν ὕλαις ἐπιλέκτων ἀνδρῶν, οἱ ἔμελλον ἐσκεδασμένοις ἐπιθήσεσθαι τοῖς πολεμίοις, διήμαρτον τῆς ἐλπίδος ταχείας γενομένης τοῖς Ῥωμαίοις αἰσθήσεως καὶ μά- 25  
 1899 χης καρτεράς, ἐξ ἧς πολλοὺς τῶν σφετέρων οἱ Αἰκα- 25 νοὶ ἀπέβαλον· ὥστε οὐδ' εἰς πείραν ἐτέρας μάχης ἔτ' ἤρχοντο. Νομικίω τε ἄγοντι τὴν στρατιὰν ἐπὶ τὴν Ἀντιατῶν πόλιν, ἢ ἐν ταῖς πρώταις τότε τῶν Οὐολούσκων πόλεσιν ἦν, οὐδεμίᾳ ἡναντιώθη δύναμις, ἀλλ' ἀπὸ τῶν τειχῶν ἡναγκάζοντο ἕκαστοι ἀμύνεσθαι. 30 ἐν δὲ τούτῳ ἢ τε γῆ αὐτῶν ἢ πολλὴ ἐτμήθη, καὶ πολίχνη τις ἐπιθαλάττιος ἐάλω, ἢ ἐπιναίω τε καὶ 20\*

ἀγορᾷ τῶν εἰς τὸν βίον ἀναγκαίων ἐχρῶντο, ἐκ θαλάττης τε καὶ διὰ ληστηρίων τὰς πολλὰς ἐπαγόμενοι ὠφελείας. ἀνδράποδα μὲν οὖν καὶ χρήματα καὶ βοσκήματα καὶ τοὺς ἐμπορικοὺς φόρους ἢ στρατιὰ 5 συγχωρήσει τοῦ ὑπάτου διήρπασε· τὰ δ' ἐλεύθερα σώματα, ὅποσα μὴ ὁ πόλεμος ἐφθη διειργασμένος, ἐπὶ τὸ λαφυροπάλιον ἀπήχθη. ἐλήφθησαν δὲ καὶ νῆες τῶν Ἀντιατῶν εἴκοσι καὶ δύο μακρὰ καὶ ἄλλα νεῶν ὄπλα τε καὶ παρασκευαί. μετὰ ταῦτα κελύ- 1900

10 σαντος τοῦ ὑπάτου τὰς τε οἰκίας ἐνεπίμπρασαν οἱ Ῥωμαῖοι καὶ τοὺς νεωσοίκους κατέσκαπτον καὶ τὸ τεῖχος ἤρειπον ἐκ θεμελίων· ὥστε μὴδ' ἀπελθόντων σφῶν χρηστὸν ἔτι τοῖς Ἀντιάταις εἶναι τὸ φρούριον. ταῦτά τε δὴ ἐπράχθη χωρὶς ἑκατέρῃ τῶν ὑπάτων, 15 καὶ ἀμφοτέροις ἔτι κοινῇ στρατεία τοῖς ἀνδράσιν ἐπὶ τὴν Σαβίνων γῆν, ἣν δηώσαντες ἀπήγον ἐπ' οἶκον τὴν δύναμιν, καὶ ὁ ἐνιαυτὸς οὗτος ἐτελεύτα.

LVII. Τῷ δ' ἐξῆς ἔτει Τίτου Κοιντίου Καπετωλίνου καὶ Κοίντου Σερουιλίου Πρίσκου τὴν ὑπάτον 20 ἀρχὴν παρεληφόντων, ἣ τε οἰκεία δύναμις Ῥωμαίων ἅπασα ἐν τοῖς ὄπλοις ἦν, καὶ τὰ συμμαχικὰ ἐκούσια παρῆν, πρὶν ἐπαγγελθῆναι αὐτοῖς στρατείαν. καὶ 1901 μετὰ τοῦτο εὐχὰς τε ποιησάμενοι τοῖς θεοῖς οἱ ὑπάτοι καὶ καθήραντες τὸν στρατὸν ἐξήεσαν ἐπὶ τοὺς 25 πολεμίους. Σαβῖνοι μὲν οὖν, ἐφ' οὓς ὁ Σερουίλιος ἤλασεν, οὗτ' εἰς μάχην κατέστησαν, οὗτ' ἐξῆλθον εἰς τὴν ὑπαιθρον· μένοντες δ' ἐν τοῖς φρουρίοις, ἠνείχοντο γῆς τε αὐτοῖς ἐκτεμνομένης καὶ οἰκιῶν ἐμπιπραμένων θεραπείας τε αὐτομολούσης· ὥστε κατὰ 30 πολλὴν εὐπέτειαν ἀπελθεῖν ἐκ τῆς χώρας αὐτῶν τοὺς Ῥωμαίους ὠφελείαις τε βαρεῖς καὶ ἀγῆμασι λαμπροῦς, καὶ ἡ μὲν Σερουιλίου στρατεία τοῦτ' ἔσχε

τὸ τέλος· οἱ δὲ σὺν τῷ Κοιντίῳ στρατεύσαντες ἐπὶ τε Αἰκανοὺς καὶ Οὐολούσκους· συνελήλυθσαν γὰρ εἰς τὸν αὐτὸν τόπον ἐξ ἀμφοτέρων τῶν ἔθνων οἱ προαγωνιούμενοι τῶν ἄλλων, καὶ πρὸ τῆς Ἀντιατῶν 1902 πόλεως ἀντεστρατοπεδεύσαντο· θάπτον ἢ βάδην χωροῦντες ἐπιφαίνονται αὐτοῖς· καὶ οὐ πολὺν τόπον τοῦ χάρακος αὐτῶν ἀποσχόντες, ἐν ᾧ πρῶτον ὤφθησαν τε καὶ εἶδον ἐκείνους χωρίῳ ταπεινῷ ὄντι τὰς ἀποσκευὰς ἔθεντο, τοῦ μὴ δεδοικέναι τὰ πολέμια 10 πλήθει μακρῷ προὔχοντα δόξαν ποιῆσαι βουλόμενοι. ὡς δ' εὐτρεπῆ τὰ εἰς μάχην ἑκατέροις ἅπαντα ἦν, ἐξήεσαν εἰς τὸ πεδῖον, καὶ συμπεσόντες ἠγωνίζοντο μέχρι μεσοῦσης ἡμέρας οὔτε εἰκόντες τοῖς πολεμίοις οὔτε ἐπιβαίνοντες, ἀεὶ τε τὸ κάμνον μέρος ἀνισοῦντες τοῖς ἐπὶ ταῖς ἐφεδρείαις τεταγμένοις ἑκάτεροι. ἐν 15 δὲ τούτῳ μάλιστα οἱ Αἰκανοὶ καὶ Οὐολούσκοι πλήθει τῶν Ῥωμαίων προὔχοντες ἀνέφερον καὶ περιῆσαν, τῶν πολεμίων οὐκ ἐχόντων ἴσον τῇ προθυμίᾳ τὸ πλῆθος. ὁ δὲ Κοίντιος ὄρων νεκρούς τε πολλοὺς 20 τῶν σφετέρων καὶ τῶν περιόντων τοὺς πλείους τραυματίας, ἐμέλλησε μὲν ἀνακαλεῖσθαι τὴν δύναμιν, δείσας δὲ μὴ δόξαν παράσχη τοῖς πολεμίοις φυγῆς 1903 παρακινδυνευτέον σφίσι εἶναι ἔγνω. ἐπιλεξάμενος δὲ τῶν ἱππέων τοὺς κρατίστους κατὰ τὸ δεξιὸν ᾧ μάλιστα ἑκάμνον τοῖς σφετέροις παρεβοήθει. καὶ τὰ 25 μὲν ἐπιτιμῶν τοῖς ἠγεμόσιν αὐτοῖς τῆς ἀνανδρίας, τὰ δὲ τὴν ὑπομιμνήσκων τῶν προτέρων ἀγώνων, τὰ δὲ τὴν αἰσχύνην ἐπιλεγόμενος καὶ τὸν κίνδυνον, ὃς καταλήψεσθαι αὐτοὺς ἐμελλεν ἐν τῇ φυγῇ, τελευτῶν εἶπεν οὐκ ἀληθές, ὃ μάλιστα μὲν τοῖς σφετέροις θάρ- 30 σος παρέστηκε, τοῖς δὲ πολεμίοις δέος. ἔφη γὰρ ὅτι θάτερον αὐτῶν ἤδη κέρας ἐξέωσε τοὺς πολεμίους καὶ

ἐγγυς ἤδη ἐστὶ τοῦ ἐκείνων χάρακος. ταῦτ' εἰπὼν  
 ἐνσείει τοῖς πολεμίοις, καὶ καταβάς ἀπὸ τοῦ ἵππου  
 σὺν τοῖς ἀμφ' αὐτὸν ἐπιλέκτοις τῶν ἱππέων συστά-  
 5 δην ἐμάχετο. ἐκ δὲ τούτου τόλμα τις ἐμπίπτει τοῖς  
 κάμνουσι τέως, καὶ ὠθοῦνται ἅπαντες ὥσπερ ἑτεροί-  
 τινες γερονότες· καὶ οἱ Οὐλοῦσκοι, τῆδε γὰρ ἐκεί-  
 νοι ἐτάξαντο, μέχρι πολλοῦ διακαρτερήσαντες ἐνέκλι-  
 ναν. ὡς δὲ τούτους ὁ Κοίντιος ἀπεώσατο, ἀναβὰς  
 10 ἐπέειπεν τοῖς ἐκεῖ πεζοῖς τὸ ἠττώμενον τῶν πολεμίων  
 μέρος, καὶ παρεκελεύετο μὴ λείπεσθαι ἀρετῇ τῶν  
 ἐτέρων.

LVIII. Καὶ μετὰ τοῦτο οὐδὲν ἔτι διέμενε τῶν πο-  
 λεμίων, ἀλλὰ πάντες εἰς τὸν χάρακα ξυνέφυγον. οὐ  
 15 μέντοι δίωξις γε αὐτῶν ἐπὶ πολὺ ἐγένετο, ἀλλ' ἐν-  
 θύς οἱ Ῥωμαῖοι ἀπετράποντο, ὑπὸ κόπου τὰ σώματα  
 παρεμμένοι καὶ οὐδὲ τὰ ὄπλα ἔτι ὅμοια ἔχοντες. ὀλί-  
 γων δὲ διελθουσῶν ἡμερῶν, ἃς ἐσπείσαντο ταφῆς τε  
 τῶν οἰκείων νεκρῶν καὶ θεραπείας τῶν κεκμηκότων  
 20 ἔνεκα, παρεσκευασμένοι τὰ εἰς τὸν πόλεμον ἐλλεί-  
 ποντα, ἐτέραν ἠγωνίσαντο μάχην περὶ τῶ [τῶν] Ῥω-  
 μαίων χάρακι. προσελθούσης γὰρ ἄλλης δυνάμεως  
 τοῖς Οὐλοῦσκοις τε καὶ Αἰκανοῖς ἐκ τῶν πέριξ χω-  
 ρίων οὐ διὰ μακροῦ ὄντων, ἐπαρθεῖς ὁ στρατηγὸς  
 25 αὐτῶν, ὅτι καὶ πενταπλάσιοι τῶν πολεμίων ἦσαν οἱ  
 σφέτεροι, τὴν τε παρεμβολὴν τῶν Ῥωμαίων οὐκ ἐν  
 ἐχυρῶ οὔσαν ὄρων, κράτιστον ὑπέλαβεν εἶναι καιρὸν  
 ἐπιχειρεῖν αὐτοῖς. ἐνθυμηθεὶς δὲ ταῦτα περὶ μέσας  
 νύκτας ἤγε τὴν δύναμιν ἐπὶ τὸν χάρακα τῶν Ῥω-  
 30 μαίων, καὶ κύκλω περιστήσας ἐφρούρει μὴ λάθοιεν  
 ἀπίοντες. ὁ δὲ Κοίντιος, ὡς ἔμαθε τῶν πολε-  
 μίων τὸ πλήθος, ἀραπητῶς ἐδέξατο καὶ περιμείνας,

ἕως ἡμέρα τε ἐγένετο καὶ ὄρα πληθυνούσης μάλι-  
 στα ἀγορᾶς, κάμνοντας ἤδη τοὺς πολεμίους αἰσθή-  
 μενος ὑπὸ τε ἀγρυπτίας καὶ ἀκροβολισμῶν, καὶ  
 οὐ κατὰ λόχους οὐδὲ ἐν τάξει προσάγοντας, ἀλλὰ  
 5 πολλαχῇ κεκμημένους καὶ σποράδας, ἀνοίξας τὰς πύ-  
 λας τοῦ χάρακος ἐξέδραμεν ἅμα τοῖς ἐπιλέκτοις τῶν  
 ἱππέων· καὶ οἱ πεζοὶ πυκνώσαντες τοὺς λόχους ἠκο-  
 λούθουν. οἱ δὲ Οὐλοῦσκοι καταπλαγέντες αὐτῶν  
 τὸ θράσος, καὶ τὸ μανικὸν τῆς ἐφόδου βραχὺν ἀνα-  
 σχόμενοι χρόνον, ἀνακρούονται [τε] καὶ [ἅμα] ὑπο- 10  
 χωροῦσιν ἀπὸ τοῦ χάρακος καί, ἦν γὰρ τις οὐ πρόσω  
 τοῦ στρατοπέδου λόφος ὑψηλὸς ἐπιεικῶς, εἰς τοῦτου  
 1906 [οὔν] ἀνατρέχουσιν ὡς ἀναπαυσόμενοι τε αὐτίς καὶ  
 εἰς\* τάξει καταστησόμενοι. ἀλλ' οὐ γὰρ αὐτοῖς ἐξε-  
 γένετο καταστῆναι τε καὶ ἑαυτοὺς ἀναλαβεῖν, ἀλλ' 15  
 ἐκ ποδὸς ἠκολούθησαν αὐτοῖς οἱ πολέμιοι πλήσαντες  
 ὡς μάλιστα ἦν δυνατόν τοὺς λόχους, ἵνα μὴ κα-  
 ταρραχθῶσι πρὸς ἅπαντες χωρίον βιαζόμενοι. καὶ  
 γίνεται μέγας ἀγὼν ἐπὶ πολὺ μέρος τῆς ἡμέρας,  
 νεκροὶ τε πίπτουσι πολλοὶ ἀφ' ἑκατέρων. καὶ Οὐλο- 20  
 λούσκοι πλήθει τε ὑπερέχοντες καὶ τὸ ἐκ τοῦ τόπου  
 προσειληφότες ἀσφαλές, οὐδετέρου τούτων οὐδὲν  
 ἀγαθὸν ἀπήλαυσαν, ἀλλ' ὑπὸ τῆς Ῥωμαίων προθυ-  
 μίας καὶ ἀρετῆς ἐκβιασθέντες τὸν τε λόφον ἐξέλιπον  
 καὶ ἐπὶ τὸν χάρακα φεύγοντες οἱ πολλοὶ ἀπέθνησκον. 25  
 οὐ γὰρ εἶσαν αὐτοῖς οἱ Ῥωμαῖοι διώκοντες, ἀλλ' ἐκ  
 ποδὸς ἠκολούθησαν καὶ οὐ πρότερον ἀπετράποντο, ἢ  
 τὴν παρεμβολὴν αὐτῶν ἐλεῖν κατὰ κράτος. γενόμενοι  
 δὲ σωμάτων τε [ἐγκρατεῖς καὶ] ὅσα ἐγκατελήφθη τῶ  
 30 χάρακι καὶ ἵππων καὶ ὀπλων καὶ χρημάτων παμπόλ-  
 1907 λων κύριοι, τὴν μὲν νύκτα ἐκείνην αὐτόθι κατεστρα-  
 τοπέδευσαν, τῇ δ' ἐπιούσῃ ἡμέρᾳ τὰ εἰς πολιορκίαν

ἐπιτήδεια παρεσκευασμένος ὁ ὕπατος ἐπὶ τὴν Ἀν-  
 τιατῶν πόλιν οὐ πλείω ἀπέχουσαν τριάκοντα στα-  
 δίων ἦγε τὴν δύναμιν. ἔτυχον δὲ φυλακῆς ἕνεκα  
 τοῖς Ἀντιάταις Αἰκανῶν τινες ἐπίκουροι παρόντες  
 5 καὶ φυλάττοντες τὰ τείχη· οἱ τότε δειδόντες τὸ Ῥω-  
 μαίων τολμηρὸν δρασμὸν ἐκ τῆς πόλεως ἐπεχείρουν  
 ποιεῖσθαι. γενομένης δὲ τοῖς Ἀντιάταις γνώσεως,  
 κωλυόμενοι πρὸς αὐτῶν ἀπιέναι γνώμην ἐποιοῦντο  
 παραδοῦναι Ῥωμαίοις ἐπιούσι τὴν πόλιν. τοῦτο μα-  
 10 θόντες ἐκ μηνύσεως οἱ Ἀντιάται τῷ τε καιρῷ εἴκουσι,  
 καὶ κοινῇ μετ' ἐκείνων βουλευσάμενοι παραδιδόασι  
 τῷ Κοιντίῳ τὴν πόλιν, ἐφ' ᾧ Αἰκανοὺς μὲν ὑπο-  
 σπόνδους ἀπελθεῖν, Ἀντιάτας δὲ φρουρὰν δεῖξασθαι  
 καὶ τὰ κελεύόμενα ὑπὸ Ῥωμαίων ποιεῖν. ἐπὶ τοῦτοις  
 15 κύριος γεγόμενος τῆς πόλεως ὁ ὕπατος, καὶ λαβὼν  
 ὄψωνιά τε καὶ τᾶλλα ὅσων ἔδει τῇ στρατιᾷ καὶ φρου- 1908  
 ρὰν ἐγκαταστήσας, ἀπήγε τὴν δύναμιν· ἀνθ' ᾧ  
 αὐτὸν ἡ βουλὴ ὑπαντήσῃ τε φιλανθρωπῶς ἐδέξατο,  
 καὶ θριάμβον πομπῇ ἐτίμησεν.

20 LVIII. Ἐν δὲ τῷ μετὰ τούτους ἔτει ὕπατοι μὲν  
 ἦσαν Τιβέριος Αἰμίλιος τὸ δεύτερον καὶ Κόιντος Φά-  
 βιος, ἑνὸς τῶν τριῶν ἀδελφῶν υἱὸς τῶν ἡγησαμένων  
 τε τῆς ἀποσταλείσης φρουρᾶς εἰς Κρεμέραν, καὶ  
 διαφθαρέντων ἐκεῖ σὺν τοῖς πελάταις. ἡ δὲ βουλὴ,  
 25 τῶν δημάρχων ἀνακινούντων πάλιν τὸ πλήθος ἐπὶ  
 τῇ κληρουχίᾳ, καὶ συναγωνιζομένου θατέρου τῶν  
 ὑπάτων αὐτοῖς Αἰμιλίου, δόγμα ἐπεκύρωσε, θεραπεύ-  
 σαι τε καὶ ἀναλαβεῖν τοὺς πένητας βουλομένη, δια-  
 νειμαί τινὰ μοῖραν αὐτοῖς ἐκ τῆς Ἀντιατῶν χώρας,  
 30 ἣν τῷ προτέρῳ ἔτει δόρατι ἐλόντες κατέσχον. καὶ  
 ἀπεδείχθησαν ἡγεμόνες τῆς κληρουχίας Τίτος Κόιν-  
 τος Καπιτωλῖνος, ᾧ παρέδοσαν Ἀντιάται σφᾶς

1909 αὐτούς, καὶ σὺν αὐτῷ Λεύκιος Φούριος καὶ Αὔλος  
 Οὐεργίνιος. ἦν δ' οὐκ ἀγαπῶσι τοῖς πολλοῖς καὶ  
 πένησι Ῥωμαίων ἡ διανομὴ τῆς χώρας ὡς ἀπελευνο-  
 μένοις τῆς πατριδος, ὀλίγων τε ἀπογραφαμένων ἐδοξε  
 τῇ βουλή, ἐπειδὴ οὐκ ἀξιόχρεως ἦν ὁ ἀπόστολος, 5  
 ἐπιτρέψαι Λατίνων τε καὶ Ἑρυνίκων τοῖς βουλομένοις  
 τῆς ἀποικίας μετέχειν. οἱ μὲν δὴ εἰς Ἄντιον ἀπο-  
 σταλέντες κατένεμον τὴν γῆν τοῖς σφετέροις, μοῖραν  
 τινὰ ἐξ αὐτῆς τοῖς Ἀντιάταις ὑπολειπόμενοι. ἐν δὲ  
 τῷ μεταξὺ χρόνῳ στρατεία τῶν ὑπάτων ἀμφοτέρων 10  
 ἐγένετο, Αἰμιλίου μὲν εἰς τὴν Σαβίνων χώραν, Φα-  
 βίου δὲ εἰς τὴν Αἰκανῶν. καὶ τῷ μὲν Αἰμιλίῳ πο-  
 λὺν ἐν τῇ πολεμίᾳ μέναιμι χρόνον οὐδεμίᾳ δύνα-  
 1410 μιν ὑπήντησε μαχομένη περὶ τῆς γῆς· ἀλλ' ἀδεῶς  
 αὐτὴν κείρας ἐπειδὴ καθῆκεν ὁ χρόνος τῶν ἀρχαιρε- 15  
 σίων ἀπήγε τὰς δυνάμεις. Φαβίῳ δὲ Αἰκανοὶ πρὶν  
 εἰς ἀνάγκην ἐλθεῖν στρατιᾶς διαφθορείσης ἢ τειχῶν  
 ἀλισκομένῳ ἐπεκηρυκίσαντο περὶ διαλλαγῶν καὶ  
 φιλίας. ὁ δ' ὕπατος δύο τε μηνῶν τροφᾶς τῇ στρα-  
 20 τιᾷ καὶ δύο χιτῶνας κατ' ἄνδρα καὶ ἀργύριον εἰς 20  
 ὄψωνιασμὸν ἐξαμήνου καὶ εἴ τι ἄλλο κατήπειγεν  
 εἰσπραξάμενος, ἀνοχᾶς ἐποιήσατο πρὸς αὐτούς, ἕως  
 ἂν εἰς Ῥώμην ἀφικόμενοι παρὰ τῆς βουλῆς εὗρωται  
 τὰς διαλύσεις. ἡ μὲντοι βουλὴ ταῦτα μαθοῦσα τῷ  
 25 Φαβίῳ ἐπέτρεψεν αὐτοκράτορι διαλύσασθαι πρὸς 25  
 τοὺς Αἰκανοὺς, ἐφ' οἷς ἂν αὐτὸς προαιρηθῆται. μετὰ  
 τοῦτο συνθήκαι γίνονται ταῖς πόλεσι μεσιτεύσαντος  
 αὐτᾶς τοῦ ὑπάτου τοιαύδε· Αἰκανοὺς εἶναι Ῥωμαίων  
 ὑπηκόους πόλεις τε καὶ χώρας τὰς ἑαυτῶν ἔχοντας,  
 ἀποστέλλειν δὲ Ῥωμαίοις μηδὲν ὅτι μὴ στρατιάν, ὅταν 30  
 αὐτοῖς παραγγελθῇ, τέλεσι τοῖς ἰδίοις ἐκπέμποντας  
 1911 [αὐτὰς]. ταῦτα συνθέμενος ἀπήγε τὴν δύναμιν Φά-

βιος καὶ τὰς εἰς τὸν ἐπιόντα ἐνιαυτὸν ἀρχὰς ἅμα τῷ  
συννύπατῳ κατέστησεν

LX. Ἦσαν δ' οἱ ὑπ' αὐτῶν ἀποδειχθέντες ὕπα-  
τοι Σπόριος Ποστόμιος Ἀλβίνος, καὶ Κόιντος Σερούι-  
5 λιος Πρίσκιος τὸ δεύτερον. ἐπὶ τούτων ἔδοξαν Αἰκα-  
νοὶ παραβαίνειν τὰς πρὸς Ῥωμαίους νεωστὶ γενομένας  
ὁμολογίας ἀπὸ τῆς αἰτίας· Ἀντιατῶν ὅσοι μὲν  
εἶχον ἐφέστια καὶ κλήρους ἔμειναν ἐν τῇ γῆ, τὰ τε  
ἀπομερισθέντα σφίσι καὶ τὰ ὑπὸ τῶν κληρῶν  
10 ἀφαιρεθέντα κτήματα γεωροῦντες ἐπὶ ῥηταῖς τισι  
καὶ τεταγμέναις μοίραις, ἃς ἐκ τῶν καρπῶν αὐτοῖς  
ἐτέλουν· οἷς δ' οὐδὲν τούτων ἦν ἐξέλιπον τὴν πόλιν,  
καὶ ὑποδεχομένων αὐτοὺς προθύμως τῶν Αἰκανῶν,  
ἐκείθεν ὀρμώμενοι τοὺς Λατίνων ἀγροὺς ἐλήστευον.  
15 ἐν δὲ τούτῳ καὶ τῶν Αἰκανῶν ὅσοι τολμηροὶ τε καὶ 1912  
ἄποροι ἦσαν συνελάμβανον αὐτοῖς τῶν λησθησίων.  
ταῦτα Λατίνων ἀποδυναμῶν ἐπὶ τῆς βουλῆς, καὶ  
ἀξιούντων ἢ στρατιὰν πέμπειν, ἢ συγχωρῆσαι σφί-  
σιν αὐτοῖς τοὺς ἀρχαίτας πολέμου ἀμύνασθαι, μα-  
20 θόντες οἱ σύνοδοι στρατιὰν μὲν οὐτ' αὐτοὶ ἐψηφί-  
σαντο πέμπειν οὔτε Λατίνους ἐπέτρεψαν ἐξάγειν,  
πρεσβευτὰς δὲ ἐλόμενοι τρεῖς, ὧν ἡγείτο Κόιντος  
Φάβιος ὁ τὰς πρὸς τὸ ἔθνος συνθήκας ποιησάμενος,  
ἐντολὰς αὐτοῖς δόντες πυνθάνεσθαι παρὰ τῶν ἡγου-  
25 μένων τοῦ ἔθνους, πότερα κοινῇ γνώμῃ τὰ λησθησίων  
ἐξαποστέλλουσιν εἰς τε τὴν τῶν συμμάχων καὶ εἰς  
τὴν τῶν Ῥωμαίων γῆν· ἐγένοντο γὰρ τινες καὶ εἰς  
αὐτὴν καταδρομαὶ τῶν φυγάδων· ἢ τῶν κραττομέ-  
νων οὐδενός ἐστι τὸ κοινὸν αἴτιον· καὶ ἐὰν φῶσιν  
30 ἰδιωτῶν ἔργα εἶναι μὴ ἐπιτρέψαντος τοῦ δήμου, τὰ  
τε ἠρπασμένα ἀπαιτεῖν καὶ τοὺς ἐργασαμένους τὰ δι-  
κήματα ἐκδότους ἄγειν ἀφικόμενων δὲ τῶν πρε- 1913

σβευτῶν ἀκούσαντες τοὺς λόγους οἱ Αἰκανοί, πλα-  
γρίας αὐτοῖς ἔδοσαν ἀποκρίσεις, τὸ μὲν ἔργον οὐκ ἀπο-  
κοινῆς λέγοντες γνώμης γεγονέναι, τοὺς δὲ δρᾶσαν-  
τας οὐκ ἀξιούντες ἐκδιδόναι, πόλιν τε ἀπολαλεκότας  
καὶ ἀλήτας γενοτάς σφῶν τε ἐν τῇ πενίᾳ ἰκέτας· ἐφ' 5  
οἷς δὲ Φάβιος ἀγανακτῶν καὶ τὰς ψευθεΐσας πρὸς αὐτῶν  
ὁμολογίας ἀνακαλούμενος, ὡς εἶδεν εἰρωνευμένους  
τοὺς Αἰκανοὺς καὶ εἰς βουλήν χρόνον αἰτουμένους  
ξενισμοῦ τε χάριν ἐπικατέχοντας αὐτόν, ὑπέμεινέ τε  
κατοπεῦσαι τὰ ἐν τῇ πόλει πράγματα βουλόμενος· 10  
καὶ διεξιὼν πάντα τόπον κατὰ πρόφασιν θεωρίας δη-  
μόσιόν τε καὶ ἱερὸν, τὰ τε ἐργαστήρια πλήρη ὄρων  
ἅπαντα πολεμικῶν ὄπλων, τῶν μὲν ἤδη συντετε-  
λεσμένων, τῶν δ' ἐτι ἐν χερσὶν ὄντων, ἔγνω τὴν  
διάνοιαν αὐτῶν. καὶ ἀφικόμενος εἰς τὴν Ῥώμην 15  
ἀπήγγειλε πρὸς τὴν βουλήν ἃ τε ἤκουσε καὶ ἃ εἶδε.  
914 κακέλινη οὐδὲν ἐτι ἐνδοιάσασα τοὺς εἰρηνοδίκας ἐψη-  
φίσαστο πέμπειν καταγγέλλοντας Αἰκανοὺς τὸν πόλε-  
μον, ἐὰν μὴ τοὺς τε Ἀντιατῶν φυγάδας ἀπελάσσωσιν  
ἐκ τῆς πόλεως καὶ δίκας τοῖς ἡδικημένοις ὑπόσχω- 20  
ται. οἱ δὲ Αἰκανοὶ θρασυτέρας πρὸς τοὺς ἄνδρας  
ἐποίησαν τὰς ἀποκρίσεις, καὶ τὸν πόλεμον οὐκ ἀκού-  
σιοι δέχεσθαι ὁμολόγησαν. ἀλλὰ γὰρ οὐκ ἐξεγένετο  
Ῥωμαίοις στρατιὰν ἐν ἐκείνῳ τῷ ἐνιαυτῷ ἐπ' αὐτοὺς  
ἀποστεῖλαι, εἴτε τοῦ δαιμονίου κωλύοντος, εἴτε διὰ 25  
τὰς νόσους, αἱ κατέσχον τὴν πληθύν ἐπὶ πολὺ μέρος  
τοῦ ἔθνους· ἀλλὰ φυλακῆς ἕνεκα τῶν συμμάχων ὀλίγη  
τις ἐξελθοῦσα δύναμις, ἧς ἡγείτο Κόιντος Σερούιλιος  
ἄτερος τῶν ὑπάτων, ἐν τοῖς Λατίνων ὄροις διέτρι-  
ψεν. ἐν δὲ τῇ πόλει τὸν νεῶν τοῦ Πιστίου Διὸς 30  
Σπόριος Ποστόμιος ὁ συννύπατος αὐτοῦ καθιέρωσε  
μηνὸς Ἰουνίου ταῖς καλουμέναις Νάυαις ἐπὶ τοῦ



Ἐνναλίου λόφου, κατασκευασθέντα μὲν ὑπὸ τοῦ τε-<sup>1916</sup>  
λευταίου βασιλέως Ταρκυνίου, τῆς δὲ νομιζομένης  
παρὰ Ῥωμαίοις ἀνιερώσεως οὐ τυχόντα ὑπ' ἐκείνου.  
τότε δὲ τῇ βουλῇ δόξαν, ὁ Ποστόμιος ἔλαβεν αὐτοῦ  
5 τὴν ἐπιγραφὴν. ἄλλο δὲ οὐδὲν ἐπὶ τῶν ὑπάτων  
τούτων λόγου ἄξιον ἐπράχθη.

LXI. Ἐπὶ δὲ τῆς ἐνάτης καὶ ἑβδομηκοστῆς  
ὀλυμπιάδος, ἦν ἐνίκα Ξενοφῶν Κορίνθιος ἄρχοντας  
Ἀθήνησιν Ἀρχεδμήδου, παραλαμβάνουσι τὴν ὑπά-<sup>1910</sup>  
τείαν Τίτος Κοίντιος Καπιτωλίνος καὶ Κοίντος Φά-  
βιος Οὐιβουλανός· Κοίντιος μὲν τὸ τρίτον ἐπὶ τὴν  
ἀρχὴν ἀποδειχθεὶς ὑπὸ τοῦ δήμου, Φάβιος δὲ τὸ δεύ-  
τερον. οἷς ἡ βουλὴ ἀμφοτέροις στρατιᾶς μεγάλας  
καὶ εὖ παρεσκευασμένας παραδοῦσα ἐξέπεμψε. Κοίν-  
15 τιος μὲν οὖν ἐτάχθη φυλάττειν τὴν σφετέραν γῆν  
ὄσῃ τοῖς πολεμίοις ὄμορος ἦν, Φάβιος δὲ τὴν Αἰκα-  
νῶν δηοῦν· καὶ καταλαμβάνει τοὺς Αἰκανοὺς ἐπὶ  
τοῖς μεθορίοις ὑπομένοντας αὐτὸν σὺν δυνάμει πολλῇ.  
καὶ ἐπειδὴ τὰς παρεμβολὰς ἐν τοῖς κρατίστοις ἐκάτε-  
20 ροι χωρίοις κατεστήσαντο, προῆσαν εἰς τὸ πεδίον  
Αἰκανῶν προκαλεσαμένων καὶ ἀρξάντων τῆς μάχης,  
καὶ διέμειναν ἐπὶ πολὺ τῆς ἡμέρας ἐκθύμως καὶ φι-  
λοπόνως ἀγωνιζόμενοι, καὶ τὸ νικᾶν οὐ παρ' ἄλλον  
τινὰ ἢ παρ' ἑαυτὸν ἕκαστος τιθέμενος. ὡς δὲ τὰ ξίφη  
25 τοῖς πλείοσιν αὐτῶν διὰ τὰς συνεχεῖς πληγὰς ἀχρηστα  
ἐγερόναι, σημηνάντων τὸ ἀνακλιτικὸν τῶν ἡγεμόνων  
ἀπῆλθον ἐπὶ τοὺς χάρακας. καὶ μετὰ τοῦτο τὸ ἔργον<sup>1917</sup>  
ἀγῶν μὲν ἐκ παρατάξεως οὐκέτ' αὐτῶν ἐγένετο, ἀκρο-  
βολισμοὶ δὲ τινες καὶ συμπλοκαὶ ψιλῶν περὶ τε ὕδασι  
30 καὶ ἐν ἀγορᾷ παραπομπαῖς συνεχεῖς· κἀν τούτοις  
μέντοι τὰ πολλὰ ἦσαν ἰσόρροποι. ἐν ᾧ δὲ ταῦτ' ἐγι-  
νετο χρόνῳ μοῖρά τις ἀπὸ τῆς Αἰκανῶν στρατιᾶς

παρελθοῦσα καθ' ἑτέρας ὁδοὺς ἀφυλάκτους, ἐνέβα-  
λεν εἰς τὴν Ῥωμαίων γῆν, ἢ πλείστον ἀφειστήκει τῆς  
ὄμορου καὶ διὰ τοῦτο ἀφύλακτος ἦν· ἐξ ἧς ἀνθρώπους  
τε πολλοὺς συνήρπασε καὶ χρήματα, λαθοῦσά τε τοὺς  
σὺν τῷ Κοιντίῳ περιπόλους τῆς σφετέρας γῆς ἀπῆλ-<sup>5</sup>  
θεν ἐπὶ τὰ οἰκεία. τοῦτο συνεχῶς ἐγένετο καὶ πολλὴν  
παρεῖχεν αἰσχύνην τοῖς ὑπάτοις. ἔπειτα μαθὼν διὰ  
κατασκοπῶν τε καὶ αἰχμαλώτων ὁ Φάβιος ἐξεληλυ-  
θυῖαν ἐκ τοῦ χάρακος τῶν Αἰκανῶν τὴν κρατίστην  
δύναμιν, ἐν τῇ παρεμβολῇ καταλιπὼν τοὺς πρεσβυτά-<sup>10</sup>  
τους αὐτὸς ἐξῆλθε νύκτωρ ἰσπέων ἐπαγόμενος καὶ  
τοῦ πεζοῦ τὸ ἀκμαιότατον. οἱ μὲν οὖν Αἰκανοὶ διηρ-  
918 πακότες τὰ χωρία οἷς ἐνέβαλον ἀπήεσαν, ἐπαγόμενοι  
πολλὰς ἀφελείας· ὁ δὲ Φάβιος οὐ πολὺ προελθοῦσιν  
αὐτοῖς ἐπιφαίνεται καὶ τὴν τε λείαν ἀφαιρεῖται καὶ<sup>15</sup>  
μάχῃ τοὺς ὑπομεινάντας νικᾷ γενομένους ἀνδρας  
ἀγαθούς· οἱ δὲ λοιποὶ σποράδες ἐμπειρία ὁδῶν λα-  
θόντες τοὺς διώκοντας κατέφυγον εἰς τὸν χάρακα.  
ἐπεὶ δὲ ταύτη ἀνεκρούσθησαν οἱ Αἰκανοὶ τῇ συμφορᾷ  
παρὰ δόξαν σφίσι γενομένη, λύσαντες τὴν παρεμβο-<sup>20</sup>  
λὴν ὑπὸ νύκτα ἄρχοντο καὶ οὐκέτι τὸ λοιπὸν ἐξῆσαν  
ἐκ τῆς πόλεως· ἀλλ' ἠρείχοντο σίτον τε ὅς ἐν ἀκμῇ  
τότε ἦν συγκομιζόμενον ὑπὸ τῶν πολεμίων καὶ ἀγέ-  
λας βοσκημάτων ἀπελαννομένας ὀρῶντες, χρήματά  
τε διαπραξόμενα καὶ αὐτὰς πυρὶ διδομένας καὶ αἰχμα-<sup>25</sup>  
λώτους πολλοὺς ἀγομένους. τοῦτο διαπραξάμενος ὁ  
Φάβιος, ἐπειδὴ παραδοῦναι τὰς ἀρχὰς ἐτέροις ἔδει,  
τὴν δύναμιν ἀναστήσας ἀπῆγε· τὸ δὲ αὐτὸ καὶ Κοίν-  
τιος ἐποίει.

LXII. Ἀφικόμενοι δ' εἰς τὴν Ῥώμην ἀπέδειξαν<sup>30</sup>  
919 ὑπάτους Αὐλὸν Ποστόμιον Ἄλβον καὶ Σερούιον Φού-  
ριον. οἱ μὲν δὴ νεωστὶ παρειλίφεσαν τὴν ἀρχὴν· παρὰ

δὲ τῶν συμμάχων Λατίνων ἄγγελοι Ῥωμαίοις κατὰ σπουδὴν διαπεμφθέντες ἦκον. οὗτοι καταστάντες ἐπὶ τὴν βουλὴν διεσάφουν Ἀντιατῶν τὰ πράγματα οὐ βέβαια εἶναι, κρύφα τε διαπρεσβευομένων πρὸς αὐτοὺς Αἰκανῶν καὶ ἀναφανδὸν εἰσιόντων εἰς τὴν πόλιν ἀγορᾶς προφάσει πολλῶν Οὐολούσκων, οὓς ἐπήγοντο οἱ πρότερον ἐκλιπόντες τὴν πόλιν Ἀντιατῶν ὅτ' ἐκληρουχεῖτο διὰ πενίαν καὶ πρὸς Αἰκανοὺς ἀπαντομολήσαντες, ὥσπερ ἔφην. συνδιεφθάρθαι τε τοῖς 10 ἐπιχωροῖς ἅμα ἠγγελλον καὶ τῶν ἐποίκων συγχρούς· καὶ εἰ μὴ προκαταληφθήσονται φυλακῇ ἀξιόχρεω, ἀναστήσεσθαι τινα ἔλεγον ἀκακῆθεν ἀπροσδόκητον Ῥωμαίοις πόλεμον. τούτων οὐ πολλῶ ὕστερον ἕτεροι πεμφθέντες ὑπὸ Ἐρνίκων ἠγγελλον ἐξεληλυθέναι με- 15 γάλην δυνάμιν Αἰκανῶν καὶ ἐγκαθεζομένην ἐν τῇ σφετέρῃ γῆ φέρειν τε πάντα καὶ ἄγειν, στρατεύειν δὲ ἅμα τοῖς Αἰκανοῖς καὶ Οὐολούσκους τὴν πλείω τοῦ στρατοῦ μοῖραν παρεχομένους. πρὸς ταῦτα ἐψηφίσατο ἡ βουλή τοῖς μὲν Ἀντιατῶν ταράττουσι τὰ πράγματα· 20 ἦκον γὰρ ἀπολογησόμενοι τινες ἐξ αὐτῶν καὶ καταφανεῖς ἐγένοντο οὐδὲν ὑγιᾶς φρονοῦντες· φυλακὴν ἐτέραν πέμψαι, ἢ ἔμελλε δι' ἀσφαλείας ἔξειν τὴν πόλιν· ἐπὶ δὲ Αἰκανοὺς ἄγειν τὴν στρατιάν τὸν ἕτερον τῶν ὑπάτων Σερούιον Φούριον· καὶ ἐγένετο 25 ταχεῖα ἀμορῶν ἢ ἔξοδος. οἱ δὲ Αἰκανοὶ μαθόντες ἐξεληλυθυῖαν τὴν Ῥωμαίων στρατιάν, ἀναστάντες ἐκ τῆς Ἐρνίκων ἐχώρουν αὐτοῖς ὁμόσε. ἐπεὶ δὲ εἶδον ἀλλήλους, ἐκείνην μὲν τὴν ἡμέραν οὐ πολὺ διαστάντες κατέστρατοπέδευσαν· τῇ δ' ἐξῆς ἐπὶ τὸν χάρακα 30 τῶν Ῥωμαίων οἱ πολέμιοι ἦκον διαπείραν αὐτῶν τῆς γνώμης ληφόμενοι. ὥς δ' οὐκ ἐξήσσαν εἰς μάχην, ἀκροβολισμοῖς χρῆσάμενοι καὶ οὐδὲν ἀξιόλογον δρᾶ- 1921

σαντες σὺν μεγάλῳ ἀντήματι ἀπῆλθον. ὁ μόντοι Ῥωμαίων ὑπάτος ἐκλιπῶν τὸν χάρακα τῇ ἐπιούσῃ· τὸ γὰρ χωρίον οὐ λίαν ἀσφαλές ἦν· μετεστρατοπεδέυσασατο ἐν ἐπιτηδειοτέρῳ, ἔνθα τάφρον τε ὠρύξατο βαθυτέραν καὶ χάρακα ἐβάλετο ὑψηλότερον. τοῖς δὲ 5 πολεμίοις ταῦτα ὀρώσι πολὺ θράσος προσεγένετο· καὶ ἔτι μᾶλλον, ἐπειδὴ σύμμαχος αὐτοῖς ἀφίκετο στρατιὰ παρὰ τοῦ Οὐολούσκων τε καὶ Αἰκανῶν ἔθνους, οὐδὲν ἔτι διαμελλήσαντες ἐπήγον τῷ Ῥωμαίων 10 χάρακι.

LXIII. Ὁ δὲ ὑπάτος ἐνθυμούμενος, ὅτι οὐκ ἀξιόμαχος ἔσται ἢ σὺν αὐτῷ δυνάμεις ἀγωνιζομένη πρὸς ἀμφοτέρω τὰ ἔθνη, πέμπει τινὰς ἐκ τῶν ἰππέων γράμματα εἰς τὴν Ῥώμην κομίζοντας, δι' ὧν ἠέλιου ταχεῖαν αὐτοῖς ἐλθεῖν ἐπικουρίαν, ὥς κινδυνευούσης 15 ὅλης διαφθαρήναι τῆς σὺν αὐτῷ στρατιᾶς. ταῦτα ἐπιλεξάμενος ὁ συνύπατος αὐτοῦ Ποστόμιος ἦσαν δὲ 1922 μέσαι νύκτες μάλιστα ὅτε οἱ ἰππεῖς ἀφίκοντο· διὰ κηρύκων πολλῶν τοὺς βουλευτὰς ἐκ τῶν οἰκιῶν συνεκάλει· καὶ γίνεται δόγμα βουλῆς πρὶν ἡμέραν λαμ- 20 πρὰν γενέσθαι, Τίτον μὲν Κοίντιον τὸν ὑπατεύσαντα τὸ τρίτον, ἔχοντα τοὺς ἀκμαιοτάτους τῶν νέων πεζοὺς τε καὶ ἰππεῖς, ἀρχῇ κοσμηθέντα ἀνθυπάτω χωρεῖν ἐπὶ τοὺς πολεμίους ἐξ ἐφόδου· Αὔλον δὲ Ποστόμιον τὸν ἕτερον τῶν ὑπάτων τὰς λοιπὰς δυνάμεις 25 συναγαγόντα, ἃς ἔδει χρονιώτερον συνελθεῖν, ὥς ἂν αὐτῷ τάχος ἐγγένηται βοηθεῖν. ἡμέρα δὲ ἤδη διεπέφωσκε, καὶ ὁ Κοίντιος συνήγαγε τοὺς ἐθελοντὰς πεντακισχιλίους μάλιστα ἄνδρας· καὶ οὐ πολὺ ἐπισχῶν, ἐξῆγεν ἐκ τῆς πόλεως. τοῦτο ὑποπτεύσαντες 30 1923 ἔμελλον οἱ Αἰκανοὶ καὶ πρὶν ἐλθεῖν ἐπικουρίαν τοῖς Ῥωμαίοις προσβάλλειν τῷ χάρακι αὐτῶν, καὶ δια-

νοηθέντες ὡς βία καὶ πλήθει ἀλωσόμενον ἐξήλθον ἀδροῖοι διχῆ νειμαντες αὐτούς. γίνεται τε μέγας ἀγῶν δι' ὅλης τῆς ἡμέρας, ἰταμῶς αὐτῶν ἐπιβαινόντων τοῖς προτειχίσμασι κατὰ πολλὰ μέρη, καὶ οὔτε παλ-  
 5 τῶν οὔτε [βελῶν ἀπὸ] τόξων οὔτε χειρμάδων ἀπὸ σφενδόνης ἀφιεμένων ἀδιαλείπτους βολαῖς ἀνειργο-  
 μένων. ἐνθα δὴ παρακελευσάμενοι ἀλλήλοις ὁ τε ὕπατος καὶ ὁ πρεσβευτῆς ὕφ' ἕνα καιρὸν ἀναπετά-  
 10 σιν ἐπὶ τοὺς πολεμίους, κατ' ἄμφω τε τὰ μέρη τῆς προσβολῆς συρράξαντες αὐτοῖς ἀποτρέπουσι τοὺς ἐπι-  
 βαίνοντας τῷ χάρακι. τροπῆς δὲ γενομένης, ὁ μὲν ὕπατος ἐπ' ὀλίγον διώξας τοὺς καθ' ἑαυτὸν [τετα-  
 γμένους] ἀνέστρεψεν· ὁ δὲ ἀδελφὸς αὐτοῦ καὶ πρε-  
 15 σβευτῆς Πόπλιος Φούριος, ὑπὸ λήματός τε καὶ προ- 1924  
 θυμίας φερόμενος, ἄχρι τῆς παρεμβολῆς τῶν πολε-  
 μίων ἤλασε διώκων τε καὶ κτείνων. ἦσαν δὲ δύο σπείραι περὶ αὐτὸν οὐ πλείους ἀνδρῶν ἔχουσαι χιλίων. τοῦτο μαθόντες οἱ πολέμιοι περὶ πεντακισχιλλίους μά-  
 20 λιστα γενομένοι, χωροῦσιν ἐπ' αὐτὸν ἐκ τοῦ χάρακος· καὶ οὗτοι μὲν ἐξ ἐναντίας προσήεσαν, ἵππεῖς δ' αὐ-  
 τῶν κύκλω περιελάσαντες κατὰ νότον τοῖς Ῥωμαίοις ἐφίστανται. τούτῳ δὴ τῷ τρόπῳ κυκλωθέντες ὑπ' αὐτῶν οἱ σὺν τῷ Ποπλίῳ καὶ δίχα τῶν σφετέρων  
 25 ἀποληφθέντες, ἐξὸν αὐτοῖς σώζεσθαι παραδοῦσι τὰ ὄπλα· προὔναλοῦντο γὰρ αὐτοὺς εἰς τοῦτο οἱ πολέ-  
 μιοι καὶ περὶ πολλοῦ ἐποιοῦντο χιλίους Ῥωμαίων τοὺς ἀρίστους αἰχμαλώτους λαβεῖν, ὡς διὰ τούτων διαλύ-  
 σεις εὐρησόμενοι καλᾶς τοῦ πολέμου· καταφρονήσαν-  
 30 τες αὐτῶν καὶ παρακελευσάμενοι ἀλλήλοις μηδὲν ἀνάξιον πράξει τῆς πόλεως, μαχόμενοι καὶ πολλοὺς 1925  
 ἀποκτείναντες τῶν πολεμίων ἅπαντες ἀποθνήσκουσιν.

LXIII. Διαφθαρόντων δὲ τούτων, ἐπαρθέντες οἱ Αἰκανοὶ τῷ προτερήματι παρήσαν ἐπὶ τὸν χάρακα τῶν Ῥωμαίων, τὴν τε τοῦ Ποπλίου κεφαλὴν ἐπὶ δο-  
 ρατίου πεπηγυῖαν ἀναιτίνοντες καὶ τῶν ἄλλων ἀν-  
 5 δρῶν τῶν ἐπιφανῶν, ὡς δὴ τούτῳ καταπληξόμενοι 5  
 τοὺς ἐνδον καὶ ἀναγκάσοντας παραδοῦναι σφίσι τὰ  
 "πλα. τοῖς δὲ ἄρα πρὸς μὲν τὴν συμφορὰν τῶν ἀπο-  
 λωλότων ἑλεός τις παρέστηκε καὶ ἀνεκλάοντο αὐτῶν τὴν  
 τύχην· πρὸς δὲ τὸν ἀγῶνα θράσος διπλάσιον ἐνέφν,  
 καὶ τοῦ νικᾶν ἢ τὸν αὐτὸν ἐκείνοις τρόπον ἀποθανεῖν, 10  
 πρὶν εἰς πολεμίων χεῖρας ἔλθειν, καλὸς ἔρωσ. ἐκεί-  
 νην μὲν οὖν τὴν νύκτα παρεστρατοπεδευκότων τῷ χά-  
 ρακι τῶν πολεμίων, ἄγρουπνοὶ τε οἱ Ῥωμαῖοι καὶ ἐπι-  
 σκευάζοντες τὰ πεπονηκότα τοῦ χάρακος διετέλεσαν,  
 15 τὰ τε ἄλλα οἷς ἀπερῦκειν ἐμελλον αὐτοὺς εἰ περα- 1926  
 θεῖεν πάλιν τειχομαχεῖν πολλὰ καὶ παντοῖα εὐτρε-  
 πιζόμενοι. τῇ δ' ἐξῆς αἴτε προσβολαὶ πάλιν ἐγίνοντο,  
 καὶ ὁ χάραξ διεσπάτο κατὰ πολλὰ μέρη· καὶ πολλὰ-  
 κισ μὲν ὑπὸ τῶν ἐξιόντων κατὰ συστροφάς ἐκ τοῦ  
 χάρακος ἐξεκρούσθησαν οἱ Αἰκανοί, πολλάκις δ' ἀνε- 20  
 κόπησαν ὑπ' ἐκείνων οἱ θρασύτερον ἐπεξιόντες. καὶ  
 τοῦτο δι' ὅλης τῆς ἡμέρας ἐγίνετο· ἐνθα ὁ τε ὕπατος  
 ὁ τῶν Ῥωμαίων σαυνίῳ διὰ τοῦ θυρεοῦ διαπερουρη-  
 θείς τιτρώσκεται τὸν μηρόν, καὶ ἄλλοι συχνοὶ τῶν  
 ἐπιφανῶν ὅσοι περὶ αὐτὸν ἐμάχοντο· ἤδη δὲ τοῖς Ῥω- 25  
 μαίοις ἀπειρηκόσιν ἀπροσδόκητος ἐπιφαίνεται περὶ  
 δειλὴν ὀψίαν προσιῶν Κοίντιος, ἄγων τὴν ἐθελού-  
 σιον ἐπικουρίαν τῶν ἀχμαιοτάτων, οὓς ἰδόντες οἱ  
 πολέμιοι προσιόντας ἀνέστρεφον ἀφέντες τὴν πολιορ-  
 κίαν ἀτελεῖ· καὶ οἱ Ῥωμαῖοι ἐπεξεληθόντες αὐτοῖς 30  
 ἀπιούσι τοὺς ὑστερίζοντας ἐφόνεον. οὐ μέντοι ἐπὶ  
 πολὺν γε χρόνον ἐδίωξαν ἀσθενεῖς ὄντες οἱ πολλοὶ  
 21

ὑπὸ τραυμάτων, ἀλλὰ διὰ τάχους ἀνέστρεψαν. καὶ μετὰ ταῦτα διὰ φυλακῆς εἶχον ἑκάτεροι σφᾶς αὐτοὺς 1927 μένοντες ἐν ταῖς παρεμβολαῖς ἄχρι πολλοῦ.

LXV. Ἐπειτα Αἰκανῶν τε καὶ Οὐλοούσκων ἑτέρα 5 δύνამεις καλὸν ὑπολαμβάνουσα καιρὸν ἔχειν προνομεύσαι τὴν Ῥωμαίων γῆν, ἐξεστρατευμένης αὐτῶν τῆς κρατίστης δυνάμεως, ἐξῆλθε νυκτός· καὶ ἐμβαλοῦσα εἰς τὴν προσωτάτω χώραν, ἔνθα τοῖς γεωργοῖς δέος οὐδὲν εἶναι ἐδόκει, πολλῶν γίνονται χρημάτων καὶ 10 σωματίων ἐγκρατεῖς. οὐ μὴν καλὰς γε οὐδ' εὐτυχεῖς τὰς ἐσχάτας ἔσχον ἐκείθεν ἀπαλλαγᾶς. ὁ γὰρ ἕτερος τῶν ὑπάτων Ποστόμιος ἄγων τὴν συναχθεῖσαν ἐπικουρίαν τοῖς ἐν τῷ χάρακι πολιορκουμένοις, ὡς ἔμαθε τὰ γινόμενα ὑπὸ τῶν πολεμίων, ἐπιφαίνεται 15 αὐτοῖς ἐκ τοῦ ἀνελπίστου. οἱ δ' οὔτε κατεπλήρῃσαν οὔτε ἔδρυσαν αὐτοῦ τὴν ἔφοδον, ἀλλ' ἀποθέμενοι σχολῇ τὰς ἀποσκευὰς καὶ τὰ λάφυρα εἰς ἓν χωρίον ἔχρον καὶ φυλακὴν τὴν ἀρκουῶσαν ἐπὶ τούτοις κατα- 1928 λιπόντες, οἱ λοιποὶ συντεταγμένοι χωροῦσι τοῖς Ῥωμαίοις ὁμοσε· καὶ συμπεσόντες ἄξια λόγου ἔργα ἀπεδείκνυντο ὀλίγοι μὲν πρὸς πολλοὺς ἀγωνιζόμενοι· 20 συνέρρου γὰρ ἐκ τῶν ἀγῶν ἐπ' αὐτοὺς συχνοί, διεσκευασμένοι ψιλῇ ὀπλίσει πρὸς ἄνδρας ὅλα τὰ σώματα ἔχοντας ἐν φυλακῇ· ἐποίησάν τε πολλοὺς τῶν 25 Ῥωμαίων νεκροὺς καὶ μικροῦ ἐδέησαν ἐν ἀλλοτρίᾳ γῆ καταληφθέντες τρόπαια τῶν ἐλθόντων ἐπὶ σφᾶς αὐτοὺς ἀναστήσαι. ἀλλ' ὁ γε ὑπάτος καὶ οἱ σὺν αὐτῷ Ῥωμαίων ἱππεῖς ἐπίλεκτοι, ἀχαλινώτοις ἐπελάσαντες 1929 τοῖς ἵπποις κατὰ τὸ καρτερώτατόν τε καὶ ἄριστα μα- 30 χόμενον αὐτῶν μέρος, διασπῶσι τὴν τάξιν καὶ καταβάλλουσι συχνούς. διαφθαρέντων δὲ τῶν προμάχων, καὶ ἡ λοιπὴ δύναμις ἀποτραπεῖσα ἐνέκλινεν εἰς φυγὴν,

οἱ τε φυλάττοντες τὰς ἀποσκευὰς μεθέμενοι αὐτῶν ἀπιόντες ᾤχοντο ἀνὰ τὰ πλησίον ὄρη. κατ' αὐτὸν μὲν οὖν τὸν ἀγῶνα ὀλίγοι τινὲς αὐτῶν διεφθάρησαν, ἐν δὲ τῇ φυγῇ πάντων πολλοί, χώρας τε ἄπειροι ὄντες καὶ 5 ὑπὸ τῆς Ῥωμαίων ἵππου διωκόμενοι.

LXVI. Ἐν ᾧ δὲ ταῦτ' ἐρίνετο χρόνος, πεπυσμένος 5 ἄτερος τῶν ὑπάτων Σερούσιος ἐπὶ βοήθειαν αὐτῷ προσίοντα τ' ἐν συνύπατον δεισας μὴ ὑπαντήσωσιν αὐτῷ οἱ πολέμοι καὶ διακλείσωσι τῆς πρὸς αὐτὸν ὁδοῦ, 10 περισπᾶν αὐτοὺς διενοεῖτο προσβολὰς ποιούμενος τῷ χάρακι. ἀλλὰ γὰρ φθάσαντες αὐτὸν οἱ πολέμοι, ἐπειδὴ ἔγνωσαν τὴν συμφορὰν τῶν σφετέρων, ἦν ἀπήγγειλαν οἱ περισωθέντες ἐκ τῆς προνομῆς, λύσαντες τὴν παρεμβολὴν ἐν τῇ πρώτῃ νυκτὶ μετὰ τὴν μά- 15 χην εἰς τὴν πόλιν ἀπήρσαν, οὐχ ἅπαντα πεπραχότες ὅσα ἐβούλονται. χωρὶς γὰρ τῶν ἀποθανόντων ἐν τε ταῖς μάχαις καὶ κατὰ τὰς προνομᾶς, τοὺς ὑστερήσαντας ἐν τῇ τότε φυγῇ πολλῷ πλείους τῶν προτέρων ἀπέβα- 20 λον. οἱ γὰρ ὑπὸ καμάτου τε καὶ τραυμάτων βαρυνόμενοι σχολῇ προβαίνοντες, ἐγκαταλιπόντων αὐτοὺς τῶν μελῶν ἐπιπτον, μάλιστα δὲ περὶ τὰ νάματα καὶ ποταμούς ὑπὸ δίψης φλεγόμενοι· οὗς οἱ Ῥωμαίων ἱππεῖς καταλαμβάνοντες ἐφόρευον. οὐ μὲν δὴ οὐδὲ 25 Ῥωμαῖοι πάντα ἐκ τοῦ τότε ἀγῶνος εὐτυχηκότες ἀνέστρεψαν, ἄνδρας μὲν γὰρ ἀγαθοὺς καὶ πολλοὺς ἐν ταῖς μάχαις ἀπολωλέκεσαν, καὶ πρεσβευτὴν ἀπάντων 1931 λαμπρότατον γενόμενον ἐν τῷ ἀγῶνι· νίκην δ' οὐδεμίας ἤττονα τῇ πόλει φέροντες ἀνέστρεψαν. ταῦτ' ἐπ' ἐκείνων τῆς ἀρχῆς ἐπράχθη.

LXVII. Τῷ δὲ κατόπιν ἔτει, Λευκίου Αἰβουτίου 30 καὶ Ποπλίου Σερουιλίου Προίσκου παρεληφότων τὴν ἀρχὴν, οὐδὲν οὔτε κατὰ πολέμους ἔργον ἀπεδείξαντο

Ῥωμαῖοι λόγου ἄξιον οὔτε πολιτικόν, ὑπὸ νόσου κα-  
 κωθέντες ὡς οὔπω πρότερον λοιμικῆς ἢ τὸ μὲν πρῶ-  
 τον ἵππων τε φορβάδων καὶ βοῶν ἀγέλαις προσήλ-  
 θεν, ἀπὸ δὲ τούτων εἰς τε αἰπόλια καὶ ποιμνας κατέ-  
 5 σκηψε, καὶ διέφθειρεν ὀλίγον δεῖν πάντα τὰ τετρα-  
 ποδα· ἔπειτα τῶν νομέων τε καὶ γεωργῶν ἤψατο,  
 καὶ διελθούσα διὰ πάσης τῆς χώρας εἰς τὴν πόλιν  
 ἐνέπεσε. θεραπόντων μὲν οὖν καὶ θητῶν καὶ τοῦ  
 πένητος ὄχλου πλήθος ὅσον διέφθειρεν οὐ ῥᾶδιον ἦν  
 10 εὐρεῖν. κατ' ἀρχὰς μὲν γὰρ ἐπὶ ἀμάξαις σωρηδὸν οἱ  
 θνήσκοντες ἀπεκομίζοντο· τελευτῶντες δὲ ὧν ἐλά-  
 χιστος ἦν ὁ λόγος εἰς τὸ τοῦ παραρρέοντος ποταμοῦ  
 θεῖθρον ᾠθούντο. τῶν δ' ἐκ τοῦ βουλευτικῆς συνε-  
 15 δρίου τὸ τέταρτον μέρος συνελογίσθη διεφθαμένον,<sup>1932</sup>  
 ἐν οἷς ἦσαν οἱ τε ὑπατοὶ ἀμφοτέρω καὶ τῶν δημόρ-  
 χων οἱ πλείους. ἤρξατο μὲν οὖν ἡ νόσος περὶ τὰς  
 καλάνδας τοῦ Σεπτεμβρίου μηνός· διέμεινε δὲ τὸν  
 ἐνιαυτὸν ἐκείνον ὅλον, ἅπασαν ὁμοίως καταλαμβά-  
 20 νουσα καὶ διεργαζομένη φύσιν τε καὶ ἡλικίαν. γενο-  
 μένης δὲ τοῖς πλησιοχώροις γνώσεως τῶν κατεχόντων  
 τὴν Ῥώμην κακῶν, καλὸν ἠγησάμενοι καιρὸν Αἰκα-  
 νοί τε καὶ Οὐολοῦσκοι καταλύσαι τὴν ἀρχὴν αὐτῆς,  
 συνθήκας τε καὶ ὄρκους ἐποίησαντο πρὸς ἀλλήλους  
 25 περὶ συμμαχίας· καὶ παρασκευασάμενοι τὰ εἰς πο-  
 λιορκίαν ἐπιτηδεια ὡς εἶχον ἀμφοτέρω τάχους ἐξῆ-  
 γον τὰς δυνάμεις. ἵνα δὲ τὴν ἀπὸ τῶν συμμαχῶν  
 ἀφέλονται τῆς Ῥώμης ἐπικουρίαν εἰς τὴν Λατίνων τε  
 καὶ Ἑρνίκων γῆν πρῶτον ἐνέβαλον. ἀφικομένης δὲ  
 30 πρεσβείας ἐπὶ τὴν βουλήν ἀφ' ἐκατέρου τῶν πολε-  
 μουμένων ἐθνῶν ἐπὶ συμμαχίας παρακλήσιν, ὁ μὲν  
 ἕτερος τῶν ὑπάτων Λεύκιος Αἰβούτιος ἐκείνην ἔτυχε  
 τὴν ἡμέραν τεθνηκώς, Πόπλιος δὲ Σερουίλιος ἐγγὺς

1933 ὧν τοῦ θανάτου· ὃς ἔτι ὀλίγον ἐμπνέων συνεκάλει  
 τὴν βουλήν. τῶν δ' οἱ πλείους ἡμιθνήτες ἐπὶ κλιυ-  
 δίων κομισθέντες καὶ συνεδρεύσαντες, ἀπεκρίναντο  
 τοῖς παροῦσιν ἀγγέλειν τοῖς σφετέροις, ὅτι διὰ τῆς  
 5 ἑαυτῶν ἀρετῆς τοὺς πολεμίους ἀμύνεσθαι ἢ βουλή  
 αὐτοῖς ἐπιτρέπει, μέχρις ἂν ὁ ὑπάτος φάισῃ, καὶ ἡ  
 συναγωνιουμένη δύναμις αὐτοῖς συναχθῆ. ταῦτα  
 Ῥωμαίων ἀποκριναμένων Λατῖνοι μὲν ὅσα ἠδυνή-  
 θησαν ἐκ τῶν ἀγρῶν εἰς τὰς πόλεις ἀνασκευασάμε-  
 10 νοι φυλακὴν ἐποιούντο τῶν τειχῶν, τὰ δὲ ἄλλα πε-  
 ριεῶρων ἀπολλύμενα. Ἑρνίκες δὲ δυσανασχετοῦντες  
 ἐπὶ τῇ λύμῃ καὶ διαρπαγῇ τῶν ἀγρῶν, ἀναλαβόντες  
 τὰ ὄπλα ἐξήλθον. ἀγωνισάμενοι δὲ λαμπρῶς καὶ  
 πολλοὺς μὲν ἀποκτείναντες τῶν πολεμίων, πολλῶ δ'  
 15 ἔτι πλείους ἀποβαλόντες τῶν σφετέρων, ἐκβιασθέντες  
 εἰς τὰ τεῖχη κατέφυγον, καὶ οὐκέτι μάχης ἐπειρώντο.

LXVIII. Αἰκανοὶ δὲ καὶ Οὐολοῦσκοι προνομη-  
 1934 σάντες αὐτῶν τὴν χώραν, ἀδεῶς ἐπὶ τοὺς Τυσκλά-  
 νων ἀγροὺς ἀφίκοντο. διαρπάσαντες δὲ καὶ τούτους  
 οὐδενὸς ἀμνημονίου παρήσαν εἰς τοὺς Γαβίνων 20  
 ὄρους. ἐλάσαντες δὲ καὶ διὰ ταύτης ἀδεῶς τῆς γῆς  
 ἐπὶ τὴν Ῥώμην ἀφικνούντο. ἐθορύβησαν μὲν οὖν  
 ἰκανῶς τὴν πόλιν, οὐ μὴν κρατῆσαι γε αὐτῆς ἠδυνή-  
 θησαν· ἀλλὰ καίπερ ἐξασθενούντες οἱ Ῥωμαῖοι τὰ  
 σώματα καὶ τοὺς ὑπάτους ἀπολαλεκότες ἀμφοτέρω· 25  
 καὶ γὰρ ὁ Σερουίλιος ἐτεθνήκει νεωστὶ· καθοπλισά-  
 μενοι παρὰ δυνάμιν τοῖς τεύχεσιν ἐπέστησαν, τοῦ  
 περιβόλου τῆς πόλεως ὄντος ἐν τῷ τότε χρόνῳ ὅσος  
 Ἀθηναίων τοῦ ἄστεος ὁ κύκλος· καὶ τὰ μὲν ἐπὶ λό-  
 30 φοις κείμενα καὶ πέτραις ἀποτόμοις, ὑπ' αὐτῆς ἔστιν  
 ἄχρωμα τῆς φύσεως καὶ ὀλίγη δεόμενα φυλακῆς·  
 τὰ δ' ὑπὸ τοῦ Τεβέρρεως τετειχισμένα ποταμοῦ, οὐ τὸ

μὲν εὐρός ἐστὶν τετάρων πλέθρων μάλιστα, βάθος δὲ οἶόν τε ναυσὶ πλείσθαι μεγάλας, τὸ δὲ θεῦμα ὥσπερ τι καὶ ἄλλο ὄξυ καὶ δίνας ἐργαζόμενον μεγά-  
 5 ραν, ἣ ἦν ἐν τῷ τότε χρόνῳ μία ξυλοφρακτος, ἣν ἔλυνον ἐν τοῖς πολέμοις. ἐν δὲ χωρίον ὃ τῆς πόλεως ἐπιμαχάτατόν ἐστιν, ἀπὸ τῶν Αἰσκυλίνων καλουμέ-  
 10 νων πυλῶν μέχρι τῶν Κολλίνων, χειροποιήτως ἐστὶν ὀχυρόν. τάφρος τε γὰρ ὀρώρυνται πρὸ αὐτοῦ πλά-  
 15 τος ἢ βραχυτάτη μείζων ἑκατὸν ποδῶν, καὶ βάθος ἐστὶν αὐτῆς τριακοντάπουν· τεῖχος δὲ ὑπερανέστηκε τῆς τάφρου χάματι συνεχόμενον ἐνδοθεν ὑψηλῶ καὶ  
 20 πλατεῖ, οἶον μῆτε κριοῖς κατασεισθῆναι μῆτε ὑπορυ-  
 25 τομέναν τῶν θεμελίων ἀνατραπῆναι. τοῦτο τὸ χω-  
 30 ρίον ἐπὶ μὲν ἐστὶ μάλιστα ἐπὶ μῆκος σταδίων, πεν-  
 35 τήκοντα δὲ ποδῶν ἐπὶ πλάτος· ἐν ᾧ τότε οἱ Ῥωμαῖοι τεταγμένοι κατὰ πλήθος ἀνεῖρξαν τῶν πολεμίων τὴν ἔφοδον, οὔτε χελώνας χωστρίδας εἰδότην κατασκευά-  
 40 ζειν τῶν τότε ἀνθρώπων, οὔτε τὰς καλουμένας ἐλε-  
 45 πόλεις μηχανάς. οἱ μὲν δὲ πολέμοιοι ἀπογνόντες τῆς πό-  
 50 λεως τὴν ἄλωσιν ἀπήεσαν ἀπὸ τοῦ τείχους, καὶ δηώ-  
 55 σαντες τὴν χώραν ὄσσην διεξῆλθον ἀπῆγον ἐπ' οἴκου τὰς δυνάμεις.

LXVIII. Ῥωμαῖοι δὲ τοὺς καλουμένους ἀντιβα-  
 25 σιλεῖς ἐλόμενοι τῶν ἀρχαιρεσίων ἔνεκα, ὃ ποιεῖν εἰώθασιν ὅταν ἀναρχία κατάσχη τὴν πόλιν, ὑπάτους ἀπέδειξαν Λεύκιον Λοκρήτιον, καὶ Τίτον Οὐετούριον Γέμινον. ἐπὶ τῆς τούτων ἀρχῆς ἣ τε νόσος ἐπαύσατο καὶ τὰ πολιτικὰ ἐγκλήματα ἀναβολῆς ἔτυχε, τὰ τε  
 30 ἴδια καὶ τὰ κοινά, πειραθέντος μὲν αὐθις τὸ περὶ τῆς κληρουχίας πολίτευμα κινεῖν ἐνὸς τῶν δημάρχων Σέξτου Τιτίου, κωλύσαντος δὲ τοῦ δήμου καὶ εἰς

ἐπιτηδειότερους ὑπερθεμένου καιροῦς. προθυμία τε  
 1937 πολλῇ πᾶσιν ἐνέπεσε τιμωρήσασθαι τοὺς ἐπιστρα-  
 40 τεύσαντας τῇ πόλει κατὰ τὸν τῆς νόσου καιρόν· καὶ αὐτίκα τῆς βουλῆς ψηφισαμένης καὶ τοῦ δήμου τὸν πόλεμον ἐπικυρώσαντος κατεγράφοντο τὰς δυνάμεις, 5  
 οὐδενὸς τῶν ἐχόντων στρατεύσιμον ἡλικίαν οὐδ' εἰ  
 10 τινα ὁ νόμος ἀπέλυεν ἀξιοῦντος ἐκείνης ἀπολειφθῆ-  
 15 ναι τῆς στρατείας· νεμηθείσης δὲ τριχῆ τῆς δυνάμεως, μία μὲν ὑπελείφθη φυλάττειν τὴν πόλιν, ἥς ἠγεῖτο Κόιντος Φούριος ἀνὴρ ὑπατικός· αἱ δὲ δύο σὺν τοῖς 10  
 ὑπάτοις ἐξῆλθον ἐπὶ τε Αἰκανοὺς καὶ Οὐολούσκους. τὸ δὲ αὐτὸ τοῦτο καὶ ὑπὸ τῶν πολεμίων ἔτυχεν ἤδη  
 15 γεγονός. ἣ μὲν γὰρ κρατίστη δύναμις ἀφ' ἑκατέρου τῶν ἐθνῶν συνελθοῦσα ὑπαίθριος ἦν ὑπὸ δυσὶν ἠγε-  
 20 μόσι, καὶ ἔμελλεν ἀπὸ τῆς Ἑρνίκων γῆς ἐν ἣ τότε ἦν 15  
 1938 ἀρξαμένη πᾶσαν ἐπελεύσεσθαι τὴν Ῥωμαίων ὑπήκοον· ἣ δὲ ἦττον ἐκείνης χρησίμη τὰ οἰκεία πολίσματα ὑπε-  
 25 λείφθη φυλάττειν, μὴ τις ἔφοδος αἰφνίδιος πολεμίων ἐπ' αὐτὰ γένηται. πρὸς ταῦτα βουλευομένοις τοῖς  
 30 Ῥωμαίων ὑπάτοις ἐδόκει κράτιστα εἶναι ταῖς πόλεσιν 20  
 αὐτῶν πρῶτον ἐπιχειρεῖν, κατὰ τοιόνδε τινα λογισμόν, ὅτι διαλυθήσεται τὸ κοινὸν αὐτῶν στρατεύμα, εἰ πύ-  
 35 θοῖντο ἕκαστοι τὰ οἰκεία ἐν τοῖς ἐσχάτοις ὄντα κιν-  
 40 δύνουσι, καὶ πολὺ κρεῖττον ἠγήσεται τὰ σφέτερα σώ-  
 45 ζειν, ἢ τὰ τῶν πολεμίων φθεῖρειν. Λοκρήτιος μὲν 25  
 οὖν εἰς τὴν Αἰκανῶν ἐνέβυλεν, Οὐετούριος δὲ εἰς τὴν Οὐολούσκων. Αἰκανοὶ μὲν οὖν, τὰ ἔξω πάντα ἀπο-  
 50 λύμενα περιορῶντες, τὴν πόλιν καὶ τὰ φρούρια εἶχον ἐν φυλακῇ.

LXX. Οὐολούσκοι δὲ ὑπὸ τε θράσους καὶ αὐθα- 30  
 35 δείας προαχθέντες, τοῦ τε Ῥωμαϊκοῦ στρατεύματος ὡς οὐκ ἀξιωμαχοῦ ὄντος πρὸς τὸ ἑαυτῶν πλήθος συμφέ-

ρεσθαι καταφρονήσαντες, ἐξήλθον ἀγωνιούμενοι περὶ  
 τῆς γῆς, καὶ πλησίον τοῦ Οὐετούριου κατεστρατο-  
 πέδευσαν. οἷα δὲ φιλεῖ πάσχειν στρατιὰ νεοσύλλε-  
 κτος ἔκ τε πολιτικοῦ καὶ γεωργικοῦ πρὸς καιρὸν συνελ-  
 5 θόντος ὄχλου συναχθεῖσα, ἐν ἧ πολὺ καὶ τὸ ἄν- 1939  
 οπλον ἦν καὶ κινδύνων ἄπειρον, οἳ δ' εἰς χεῖρας ἔλ-  
 θειν τοῖς πολεμίοις ἐθάρασησεν· ἀλλ' ἅμα τῆ πρώτῃ  
 τῶν Ῥωμαίων ἐφόδῳ διαταραχθέντες οἱ πολλοὶ καὶ  
 οὔτε ἀλαλαγμὸν οὔτε ὄπλων κτύπον ἀνασχόμενοι,  
 10 προτροπάδην ἔφευγον εἰς τὰ τεῖχη· ὥστε πολλοὺς  
 μὲν ἐν ταῖς στενοχωρίαις τῶν ὁδῶν καταληφθέντας  
 ἀποθανεῖν, πολλῶ δὲ πλείους παρὰ ταῖς πύλαις  
 ὄθουμένους τῶν ἱππέων ἐπιδιωκόντων. Οὐολούσκοι  
 15 ἦτιῶντο τῆς ἀφροσύνης, καὶ οὐδὲν ἐτι παρακινδυ-  
 νεύειν ἐπειρῶντο. οἱ δὲ τὰς ἐν ὑπαίθρῳ στρατιάς  
 Οὐολούσκων τε καὶ Αἰκανῶν ἔχοντες ἡγεμόνες,  
 πνιθανόμενοι τὰ οἰκέα πολεμούμενα, γενναῖόν τι  
 καὶ οὔτοι δρᾶν ἐβουλεύσαντο, ἀναστάντες ἐκ τῆς  
 20 Ἐρυνίκων τε καὶ Λατίνων γῆς ἐπὶ τὴν Ῥώμην ἄγειν 1940  
 ὡς εἶχον ὄργῆς τε καὶ τάχους τὸν στρατόν, κατὰ τοιάν-  
 δε τινα καὶ αὐτοὶ δόξαν, ὅτι θυεῖν ἔργων καλῶν θάτε-  
 ρον αὐτοῖς κατορθῶσαι ὑπάρξει, ἢ τὴν Ῥώμην ἀφύ-  
 λακτον οὔσαν ἐλεῖν, ἢ τοὺς πολεμίους ἐκ τῆς ἑαυτῶν  
 25 χώρας ἐκβαλεῖν, ὡς δὴ τῶν ὑπάτων ἀναγκασθησο-  
 μένων πολεμουμένη τῇ πατρίδι βοηθεῖν. ταῦτα δια-  
 νοηθέντες ἦγον τὴν στρατιὰν ἐπιταχύνοντες, ἵν' ἔξ  
 ἀπροσδοκῆτου τῇ πόλει συμμίσξαντες εὐθύς ἔργου  
 ἔχωται.  
 30 LXXI. Ἀφικόμενοι τε μέχρι Τίσκελου πόλεως,  
 μαθόντες τὸν περίβολον τῆς Ῥώμης ὅλον πληθύοντα  
 ὄπλων, καὶ πρὸ τῶν πυλῶν τέτταρας ἐξεστρατευμένας

σπείρας, ἀνδρῶν ἑξακοσίων ἑκάστην, τῆς μὲν ἐπὶ τὴν  
 Ῥώμην ὁδοῦ ἀπετραπόμπο, τὴν δὲ ὑπὸ τῇ πόλει χώραν,  
 1941 ἦν ἐν τῇ προτέρῳ παρέλιπον εἰσβολῇ, ἐγκαθεζόμενοι  
 ἐδήουν. ἐπιφανέντος δ' αὐτοῖς θατέρου τῶν ὑπάτων  
 Λευκίου Λοκρητίου καὶ θεμένου τὴν παρεμβολὴν οὐ 5  
 πρόσω, καλὸν ὑπολαβόντες εἶναι καιρὸν, πρὶν ἔλθειν  
 τῷ Λοκρητίῳ τὴν ἑτέραν Ῥωμαίων δύναμιν σύμμαχον  
 ἢς Οὐετούριος ἠγεῖτο, συνάψαι μάχην, θέμενοι τὰς  
 ἀποσκευὰς ἐπὶ λόφου τινὸς καὶ δύο σπείρας ἐπ' αὐ-  
 ταῖς καταλιπόντες, οἱ λοιποὶ προῆλθον εἰς τὸ πεδίον· 10  
 καὶ συμβαλόντες τοῖς Ῥωμαίοις ἄνδρες ἀγαθοὶ κατὰ  
 τὸν ἀγῶνα ἐγίνοντο μέχρι πολλοῦ. μαθόντες δ' ἐκ τῶν  
 κατὰ νώτου φρουρῶν τινες καταβαίνουσιν ὑπὲρ ὄχθου  
 στρατιὰν ὑπέλαβον ἠκεῖν τὸν ἕτερον τῶν ὑπάτων  
 ἄγοντα τὴν σὺν αὐτῷ δύναμιν, καὶ δεισαντες μὴ 15  
 κυκλωθεῖεν ὑπ' ἀμφοῖν οὐκέτι διέμειναν, ἀλλ' εἰς  
 φυγὴν τρέπονται. ἐν τούτῳ τῷ ἀγῶνι οἳ τε ἡγεμόνες  
 αὐτῶν ἀμφοτέροι γενναίων ἀνδρῶν ἔργα ἀποδείξα-  
 1942 μενοι πίπτουσι, καὶ ἄλλοι πολλοὶ μαχόμενοι περὶ αὐ-  
 τοὺς ἀγαθοί· οἱ δὲ φυγόντες ἐκ τῆς μάχης, εἰς τὰς 20  
 ἑαυτῶν ἑκάστοι πατρίδας σκεδασθέντες ἀνεχώρησαν.  
 ἐκ δὲ τούτου πολλὴν ἄδειαν λαβὼν ὁ Λοκρητίος  
 ἐφθειρε τὴν Αἰκανῶν γῆν, καὶ Οὐετούριος τὴν  
 Οὐολούσκων, ἕως ὃ τῶν ἀρχαιρεσίων ἐπέστη καιρὸς.  
 τότε δ' ἀναστήσαντες τὰς δυνάμεις ἀπῆγον ἐπ' οἴκου 25  
 καὶ κατήγαγον ἀμφοτέροι τοὺς ἐπινικίους θοιάμβους·  
 Λοκρητίος μὲν, ἐπὶ τοῦ τεθρίππου παρεμβεβηκώς,  
 Οὐετούριος δὲ πεζὸς εἰσελαύνων. δύο γὰρ οὔτοι  
 θρόαμβοι δίδονται τοῖς ἡγεμόσιν ὑπὸ τῆς βουλῆς,  
 ὥσπερ ἔφην, τὰ μὲν ἄλλα τίμια ἔχοντες ἴσα, τῷ δὲ τὸν 30  
 μὲν ἱππικὸν εἶναι, τὸν δὲ πεζικόν, διαφέροντες.

# BIBLIOTHECA GRAECA

CURANTIBUS

FR. JACOBS ET VAL. CH. FR. ROST.

Aeschinis oratio in Ctesiphontem, notis instr. I. H. BREMI. <i>8 Ngr.</i>	—
8. mai. 1826 . . . . .	7 1/2
Aeschyli Agamemno, illustr. R. H. KLAUSEN. Ed. II. ed.	—
R. ENGER. 8. mai. 1863 . . . . .	1 7 1/2
— Choephorae, illustr. R. H. KLAUSEN. 8. mai. 1835	— 22 1/2
Anacreontis carmina, Sapphus et Erinnae fragmenta, anno-	—
tatt. illustr. E. A. MORBIUS. 8. mai. 1826 . . . . .	6
Aristophanis Nubes. Ed. illustr. praef. est W. S. TEUFFEL.	—
Ed. II. 8. mai. 1863 . . . . .	12
Delectus epigrammatum Graecorum, novo ordine conc. et	—
comment. instr. FR. JACOBS. 8. mai. 1826 . . . . .	18
Demosthenis conciones, rec. et explic. H. SAUPPE. Sect. I.	—
(cont. Philipp. I. et Olynthiacae I—III.) Ed. II. 8.	—
mai. 1845 . . . . .	10
Euripidis tragoediae, ed. PFLUGK et KLOTZ. Vol. I, II	—
et III. Sect. I—III. . . . .	4 27
Einzeln:	
Medea. Ed. II. 15 <i>ngl</i> — Hecuba. Ed. II. 12 <i>ngl</i>	
Andromacha. Ed. II. 12 <i>ngl</i> — Heraclidae. Ed. II. 12 <i>ngl</i>	
Helena. Ed. II. 12 <i>ngl</i> — Alcestis. Ed. II. 12 <i>ngl</i>	
Hercules furens. 18 <i>ngl</i> — Phoenissae. 18 <i>ngl</i> —	
Orestes. 12 <i>ngl</i> — Iphigenia Taurica 12 <i>ngl</i> — Iphi-	
genia quae est Aulide. 12 <i>ngl</i>	
Hesiodi carmina, recens. et illustr. C. GOETTLING. Ed. II.	—
8. mai. 1843 . . . . .	1 —
Einzeln:	
Theogonia. 7 1/2 <i>ngl</i> — Scutum Herculis. 5 <i>ngl</i> — Opera	
et dies. 10 <i>ngl</i> — Homeri certamen, fragmenta et vita	
Hesiodi. 15 <i>ngl</i>	
Homeri Ilias, varietat. lect. adi. SPITZNER. Sect. I—IV.	—
8. mai. 1832—36 . . . . .	1 15
Einzeln:	
Sect. I. lib. 1—6. 9 <i>ngl</i> — Sect. II. lib. 7—12. 9 <i>ngl</i>	
Sect. III. lib. 13—18. 13 1/2 <i>ngl</i> — Sect. IV. lib. 19—24. 13 1/2 <i>ngl</i>	
Die einzige Ausgabe der Ilias, welche den kritischen Apparat voll-	
ständig enthält.	
Lysiae et Aeschinis orationes selectae, ed. I. H. BREMI.	—
8. mai. 1826 . . . . .	15
Lysiae orationes selectae, ed. I. H. BREMI. 8. mai. 1826	—
Pindari carmina cum deperditarum fragm., variet. lect.	—
adi. et comment. illustr. L. DISSEN. Ed. II. cur.	—
G. SCHNEIDEWIN. Vol. I. 1843. . . . .	1 9
— Vol. II. Sect. I. II. (Comment. in Olymp. et Pyth.)	—
1846. 47. (à 15 Ngr.) . . . . .	1 —
Platonis opera omnia, recensuit, prolegomenis et commen-	—
tariis instruxit G. STALLBAUM. X Voll. (21 Sectiones).	—
8. mai. 1836—65., compl. . . . .	21 15



Platonis opera omnia. Einzeln:

Apologia Socratis et Crito. Ed. IV. 1858. 24 *ngl* —  
 Phaedo. Ed. IV. 1866. 27 *ngl* — Symposium c. ind.  
 Ed. III. 1852. 22½ *ngl* — Gorgias. Ed. III. 1861. 24 *ngl*  
 Protagoras. Ed. III. c. ind. 1865. 18 *ngl* — Politia  
 sive de republica libri decem. 2 Voll. Ed. II. 2 *vs* 15 *ngl*  
 Einzeln: Vol. I. Lib. I—V. 1858. 1 *vs* 12 *ngl*, Vol.  
 II. Lib. VI—X. 1859. 1 *vs* 3 *ngl* — Phaedrus. Ed.  
 II. 1857. 24 *ngl* — Menexenus, Lysis, Hippias uterque,  
 Io. Ed. II. 1857. 27 *ngl* — Laches, Charmides, Alci-  
 biades I. II. Ed. II. 1857. 27 *ngl* — Cratylus cum ind.  
 1835. 27 *ngl* — Enthydemus. 1836. 21 *ngl* — Meno  
 et Enthyphro itemque incerti scriptoris Theages, Erastae  
 et Hipparchus. 1836. 1 *vs* 12 *ngl* — Timaeus et Cri-  
 tias. 1838. 1 *vs* 24 *ngl* — Theaetetus. 1839. 1 *vs*  
 12 *ngl* — Sophista. 1840. 27 *ngl* — Politicus et incerti  
 auctoris Minos. 1841. 27 *ngl* — Philebus. 1842. 27 *ngl*  
 — Leges. Vol. I. Lib. I—IV. 1858. 1 *vs* 6 *ngl*, Vol. II.  
 Lib. V—VIII. 1859. 1 *vs* 6 *ngl*, Vol. III. Lib. IX—XII.  
 — Epinomis. 1860. 1 *vs* 6 *ngl*

Sophoclis tragoediae. rec. et explan. E. WUNDERUS. 2 Voll.  
 8. mai. 1847—57 . . . . . 3 —

Einzeln:

Philoctetes. Ed. III. 12 *ngl* — Oedipus tyrannus. Ed.  
 IV. 12 *ngl* — Oedipus Coloneus. Ed. III. 18 *ngl* —  
 Antigona. Ed. IV. 12 *ngl* — Electra. Ed. III. 12 *ngl* —  
 Aiax. Ed. III. 12 *ngl* — Trachiniae. Ed. II. 12 *ngl*  
 Thucydidis de bello Peloponesiaco libri VIII, explan. E. F.  
 Porro. 4 Voll. 8. mai. 1856—1866 . . . . . 4 —

Einzeln:

Lib. I. Ed. II. 1 *vs* — Lib. II. Ed. II. 22½ *ngl* — Lib. III.  
 18 *ngl* — Lib. IV. 15 *ngl* — Lib. V. 15 *ngl* — Lib. VI.  
 18 *ngl* — Lib. VII. 15 *ngl* — Lib. VIII. 15 *ngl* —  
 Indices et de historia Thucydidea commentatio. 20 *ngl*

Xenophontis Cyropaedia, comment. instr. F. A. BORNEMANN.  
 8. mai. 1838 . . . . . — 15

— Memorabilia (Commentarii), illustr. R. KÜHNER. 8. mai.  
 1858. Ed. II. . . . . — 26

— Anabasis (expeditio Cyri min.), illustr. R. KÜHNER. 1852. 1 6  
 Einzeln à 18 *ngl*:

Sect. I. Lib. I—IV. Sect. II. Lib. V—VIII.  
 — Oeconomicus, rec. et explan. L. BREITENBACH. 8. mai.  
 1841. . . . . — 15

— Agesilaus ex ead. recens. 8. mai. 1843 . . . . . — 12

— Hiero ex ead. rec. 8. mai. 1844. . . . . — 7½

— Hellenica, Sect. I. (lib. I. II.), ex ead. rec. 8. mai. 1853. — 12

— — Sect. II. (lib. III—VII.) ex ead. rec. 8. mai. 1863. 1 18

Unter der Presse befindet sich:

Pindari carmina edd. L. D SERN et F. W. SCHNEIDWIN. Sect. II.  
 Fasc. III.: Commentarius in Carmina Nemea et Isthmia nec  
 non in fragmenta ab E. DE LEUTSCH confectus.